ISSN 2229-547X VIDEHA

'विदेह' 244 म अंक 15 फरबरी 2018 (वर्ष 11 मास 122 अंक 244)

ऐ अंकमे अछि:-

१. संपादकीय संदेश

जगदीश प्रसाद मण्डलक ३ टा लघुकथा संग्रह

Go to the link below for download of old issues of VIDEHA Maithili e magazine in .pdf format and Maithili Audio/ Video/ Books/ paintings/ photo files. विदेहक पुरान अंक आ ऑडियो/ वीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ फोटो सभक फाइल सभ डाउनलोड करबाक हेतु नीचाँक लिंक पर जाउ।

VIDEHA ARCHIVE विदेह आर्काइव

Join official Videha facebook group.

Google समूह Join Videha googlegroups

Follow Official Videha Twitter to view regular Videha Live Broadcasts through Periscope.

विदेह जालवृत्तक डिसकसन फोरमपर जाउ।

संपादकीय

विदेह "नेपालक वर्तमान मैथिली साहित्य" विषयक विशेषांक निकालबाक नेयार केलक अछि जकर संयोजक श्री दिनेश यादव जी रहता।

अइ विशेषांकमे नेपालक वर्तमान मैथिली साहित्य केर मूल्यांकन रहत। अइ विशेषांक लेल सभ विधाक आलोचना-समीक्षा-समालोचना आदि प्रस्तावित अछि। समय-सीमा किछु नै जहिया पूरा आलेख आबि जेतै तहिये, मुदा प्रयास रहत जे एही साल मइ-जून धरि ई विशेषांक आबि जाए। उम्मेद अछि विदेहक ई प्रयास दूनू पायापर एकटा पूल जरूर बनाएत।

विदेह द्वारा संचालित "आमंत्रित रचनापर आमंत्रित आलोचकक टिप्पणी" शृंखलाक दोसर भागक घोषणा कएल जा रहल अछि। दोसर भागमे अइ बेर नीलमाधव चौधरी जीक रचना आमंत्रित कएल जा रहल अछि आ नीलमाधवजीक रचना ओ रचनाधर्मितापर टिप्पणी करबा लेल कैलाश कुमार मिश्रजीकेँ आमंत्रित कएल जा रहल छनि। दूनू गोटाकेँ औपचारिक सूचना जल्दिये पठाओल जाएत। रचनाकारक रचना ओ आलोचकक आलोचना जखने आबि जाएत ओकर अगिला अंकमे ई प्रकाशित कएल जाएत।

अइ शृंखलाक पहिल भाग कामिनीजीक रचनापर छल आ टिप्पणीकर्ता मधुकांत झाजी छलाह।

जेना की सभ गोटा जनै छी जे विदेह २०१५ मे तीन टा विशेषांक तीन साहित्यकारपर प्रकाशित केलक जकर मापदंड छल सालमे दूटा विशेषांक जीवित साहित्यकारक उपर रहत जइमे एकटा ६०-७० वा ओइसँ बेसी सालक साहित्यकार रहता तँ दोसर ४०-५० सालक (मैथिली साहित्यकार मने भारत आ नेपाल दूनूक)। ऐ क्रममे अरविन्द ठाकुर ओ जगदीश चंद्र ठाकुर "अनिल"जीपर विशेषांक निकलि चुकल अछि। आगूक विशेषांक किनकापर हुअए तइ लेल एक मास पहिनेसँ पाठकक सुझाव माँगल गेल छल। पाठकक सुझाव आएल आ ओइ सुझाव अंतर्गत विदेहक किछु अगिला विशेषांक परमेश्वर कापड़ि, वीरेन्द्र मल्लिक आ कमला चौधरी पर रहत। हमर सबहक प्रयास रहत जे ई विशेषांक सभ 2018 मे प्रकाशित हुअए मुदा ई रचनाक उपलब्धतापर निर्भर करत। मने रचनाक उपलब्धताक हिसाबसँ समए ऊपर-निच्चा भऽ सकैए। सभ गोटासँ आग्रह जे ओ अपन-अपन रचना editorial.staff.videha@gmail.com पर पठा दी।

विदेह सम्मान

विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी सम्मान

१.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी फेलो पुरस्कार २०१०-११

२०१० श्री गोविन्द झा (समग्र योगदान लेल)

२०११ श्री रमानन्द रेणु (समग्र योगदान लेल)

२.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०११-१२

२०११ मूल पुरस्कार- श्री जगदीश प्रसाद मण्डल (**गामक जिनगी**, कथा संग्रह)

२०११ बाल साहित्य पुरस्कार- ले.क. मायानाथ झा (जकर नारी चतुर होइ, कथा संग्रह)

२०११ युवा पुरस्कार- आनन्द कुमार झा (**कलह**, नाटक)

२०१२ अनुवाद पुरस्कार- श्री रामलोचन ठाकुर- (**पद्मानदीक माझी**, बांग्ला- मानिक बंद्योपाध्याय, उपन्यास बांग्लासँ मैथिली अनुवाद)

विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)

1.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी फेलो पुरस्कार 2012

2012 श्री राजनन्दन लाल दास (समग्र योगदान लेल)

2.विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)

२०१२ बाल साहित्य पुरस्कार - श्री जगदीश प्रसाद मण्डल केँ "**तरेगन**" बाल प्रेरक विहनि कथा संग्रह

२०१२ मूल पुरस्कार - श्री राजदेव मण्डलकेँ "**अम्बरा**" (कविता संग्रह) लेल।

2012 युवा पुरस्कार- श्रीमती ज्योति सुनीत चौधरीक "**अर्चिस**" (कविता संग्रह)

2013 अनुवाद पुरस्कार- श्री नरेश कुमार विकल "ययाति" (मराठी उपन्यास श्री विष्णु सखाराम खाण्डेकर)

विदेह भाषा सम्मान २०१३-१४ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)

२०१३ बाल साहित्य पुरस्कार श्रीमती ज्योति सुनीत चौधरी- "**देवीजी**" (बाल निबन्ध संग्रह) लेल।

२०१३ मूल पुरस्कार - श्री बेचन ठाकुरकेँ "**बेटीक अपमान आ छीनरदेवी**" (नाटक संग्रह) लेल।

२०१३ युवा पुरस्कार- श्री उमेश मण्डलकेँ "**निश्तुकी**" (कविता संग्रह)लेल।

२०१४ अनुवाद पुरस्कार- श्री विनीत उत्पलकेँ "**मोहनदास**" (हिन्दी उपन्यास श्री उदय प्रकाश)क मैथिली अनुवाद लेल।

विदेह भाषा सम्मान २०१४-२०१५ (समानान्तर साहित्य अकादेमी सम्मान)

२०१४ मूल पुरस्कार- श्री नन्द विलास राय (**सखारी पेटारी**- लघु कथा संग्रह)

२०१४ बाल पुरस्कार- श्री जगदीश प्रसाद मण्डल (**नै धारैए**- बाल उपन्यास)

२०१४ युवा पुरस्कार - श्री आशीष अनचिन्हार (**अनचिन्हार आखर**- गजल संग्रह)

२०१५ अनुवाद पुरस्कार - श्री शम्भु कुमार सिंह (**पाखलो** - तुकाराम रामा शेटक कोंकणी उपन्यासक मैथिली अनुवाद)

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान २०१२

अभिनय- मुख्य अभिनय ,

सुश्री शिल्पी कुमारी, उम्र- 17 पिता श्री लक्ष्मण झा

श्री शोभा कान्त महतो, उम्र- 15 पिता- श्री रामअवतार महतो,

हास्य-अभिनय

सुश्री प्रियंका कुमारी, उम्र- 16, पिता- श्री वैद्यनाथ साह

श्री दुर्गानंद ठाकुर, उम्र- 23, पिता- स्व. भरत ठाकुर

नृत्य

सुश्री सुलेखा कुमारी, उम्र- 16, पिता- श्री हरेराम यादव

श्री अमीत रंजन, उम्र- 18, पिता- नागेश्वर कामत

चित्रकला

श्री पनकलाल मण्डल, उमेर- ३५, पिता- स्व. सुन्दर मण्डल, गाम छजना

श्री रमेश कुमार भारती, उम्र- 23, पिता- श्री मोती मण्डल

संगीत (हारमोनियम)

श्री परमानन्द ठाकुर, उम्र- 30, पिता- श्री नथुनी ठाकुर

संगीत (ढोलक)

श्री बुलन राउत, उम्र- 45, पिता- स्व. चिल्टू राउत

संगीत (रसनचौकी)

श्री बहादुर राम, उम्र- 55, पिता- स्व. सरजुग राम

शिल्पी-वस्तुकला

श्री जगदीश मल्लिक,५० गाम- चनौरागंज

मूर्ति-मृत्तिका कला

श्री यदुनंदन पंडित, उम्र- 45, पिता- अशर्फी पंडित

काष्ठ-कला

श्री झमेली मुखिया,पिता स्व. मूंगालाल मुखिया, ५५, गाम- छजना

किसानी-आत्मनिर्भर संस्कृति

श्री लछमी दास, उमेर- ५०, पिता स्व. श्री फणी दास, गाम वेरमा

विदेह मैथिली पत्रकारिता सम्मान

-२०१२ श्री नवेन्दु कुमार झा

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान २०१३

मुख्य अभिनय-

(1) सुश्री आशा कुमारी सुपुत्री श्री रामावतार यादव, उमेर- १८, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) मो. समसाद आलम सुपुत्र मो. ईशा आलम, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(3) सुश्री अपर्णा कुमारी सुपुत्री श्री मनोज कुमार साहु, जन्म तिथि- १८-२-१९९८, पता- गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही,जिला- मधुबनी (बिहार)

हास्य अभिनय-

(1) **श्री ब्रह्मदवे पासवान उर्फ रामजानी पासवान** सुपुत्र- स्व. लक्ष्मी पासवान, पता- गाम+पोस्ट- औरहा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) टौसिफ आलम सुपुत्र मो. मुस्ताक आलम, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान (मांगनि खबास समग्र योगदान सम्मान)

शास्त्रीय संगीत सह तानपुरा :

श्री रामवृक्ष सिंह सुपुत्र श्री अनिरूद्ध सिंह, उमेर- ५६, गाम- फुलवरिया, पोस्ट- बाबूबरही, जिला- मधुबनी (बिहार)

मांगनि खबास सम्मान: मिथिला लोक संस्कृति संरक्षण:

श्री राम लखन साहु पे. स्व. खुशीलाल साहु, उमेर- ६५, पता, गाम- पकड़िया, पोस्ट- रतनसारा, अनुमंडल- फुलपरास (मधुबनी)

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान (समग्र योगदान सम्मान):

नृत्य -

(1) श्री हरि नारायण मण्डल सुपुत्र- स्व. नन्दी मण्डल, उमेर- ५८, पता- गाम+पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **सुश्री संगीता कुमारी सुपुत्री श्री रामदेव पासवान, उमेर- १६,** पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

चित्रकला-

(1) जय प्रकाश मण्डल सुपुत्र- श्री कुशेश्वर मण्डल, उमेर- ३५, पता- गाम- सनपतहा, पोस्ट बौरहा, भाया- सरायगढ़, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) श्री चन्दन कुमार मण्डल सुपुत्र श्री भोला मण्डल, पता- गाम- खड़गपुर, पोस्ट- बेलही, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार) संप्रति, छात्र स्नातक अंतिम वर्ष, कला एवं शिल्प महाविद्यालय- पटना।

हरिमुनियाँ / हारमोनियम

(1) **श्री महादेव साह सुपुत्र रामदेव साह, उमेर- ५८,** गाम- बेलहा, वार्ड- नं. ०९, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **श्री जागेश्वर प्रसाद राउत** सुपुत्र स्व. रामस्वरूप राउत, उमेर **६०,** पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

ढोलक/ ठेकैता/ ढोलकिया

(1) **श्री अनुप सदाय** सुपुत्र स्व. , पता- गाम- तुलसियाही, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **श्री कल्लर राम** सुपुत्र स्व. खट्टर राम, उमेर- ५०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

रसनचौकी वादक-

(1) वासुदेव राम सुपुत्र स्व. अनुप राम, गाम+पोस्ट- निर्मली, वार्ड न. ०७ , जिला- सुपौल (बिहार)

शिल्पी-वस्तुकला-

(1) श्री बौकू मल्लिक सुपुत्र दरबारी मल्लिक, उमेर- ७०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) श्री राम विलास धरिकार सुपुत्र स्व. ठोढ़ाइ धरिकार, उमेर- ४०, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

मूर्तिकला-मूर्तिकार कला-

(1) **घूरन पंडित सुपुत्र**- श्री मोलहू पंडित, पता- गाम+पोस्ट बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **श्री प्रभु पंडित सुपुत्र स्व.** , पता- गाम+पोस्ट- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

काष्ठ-कला-

(1) **श्री जगदेव साहु** सुपुत्र शनीचर साहु, उमेर- ३६, गाम- निर्मली-पुरर्वास, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **श्री योगेन्द्र ठाकुर सुपुत्र स्व. बुद्धू ठाकुर उमेर- ४५,** पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

किसानी- आत्मनिर्भर संस्कृति-

(1) श्री राम अवतार राउत सुपुत्र स्व. सुबध राउत, उमेर- ६६, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(2) श्री रौशन यादव सुपुत्र स्व. कपिलेश्वर यादव, उमेर- ३५, गाम+पोस्ट बनगामा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

अल्हा/महराइ-

(1) **मो. जीबछ** सुपुत्र मो. बिलट मरहूम, उमेर- ६५, पता- गाम- बसहा, पोस्ट- बड़हारा, भाया- अन्धराठाढ़ी, जिला- मधुबनी, पिन- ८४७४०१

जोगिरा-

श्री बच्चन मण्डल सुपुत्र स्व. सीताराम मण्डल, उमेर- ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री रामदेव ठाकुर सुपुत्र स्व. जागेश्वर ठाकुर, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

पराती (प्रभाती) गौनिहार आ खजरी/ खौजरी वादक-

(1) श्री सुकदेव साफी
सुपुत्र श्री ,
पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

पराती (प्रभाती) गौनिहार - (अगहनसँ माघ-फागुन तक गाओल जाइत)

(1) **सुकदेव साफी** सुपुत्र स्व. बाबूनाथ साफी, उमेर- ७५, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **लेल्हु दास** सुपुत्र स्व. सनक मण्डल पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

झरनी-

(1) **मो. गुल हसन** सुपुत्र अब्दुल रसीद मरहूम, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(2) **मो. रहमान साहब** सुपुत्र...., उमेर- ५८, गाम- नरहिया, भाया- फुलपरास, जिला- मधुबनी (बिहार)

नाल वादक-

(1) **श्री जगत नारायण मण्डल** सुपुत्र स्व. खुशीलाल मण्डल, उमेर- ४०, गाम+पोस्ट- ककरडोभ, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) श्री देव नारायण यादव सुपुत्र श्री कुशुमलाल यादव, पता- गाम- बनरझुला, पोस्ट- अमही, थाना- घोघड़डीहा, जिला- मधुबनी (बिहार)

गीतहारि/ लोक गीत-

(1) **श्रीमती फुदनी देवी** पत्नी श्री रामफल मण्डल, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(2) **सुश्री सुविता कुमारी** सुपुत्री श्री गंगाराम मण्डल, उमेर- १८, पता- गाम- मछधी, पोस्ट- बलियारि, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

खुरदक वादक-

(1) **श्री सीताराम राम** सुपुत्र स्व. जंगल राम, उमेर- ६२, पता- गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) श्री लक्ष्मी राम सुपुत्र स्व. पंचू मोची, उमेर- ७०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

काँरनेट-

(1) **श्री चन्दर राम** सुपुत्र- स्व. जीतन राम, उमेर- ५०, पता- गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **मो. सुभान**, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

बेन्जू वादक-

(1) श्री राज कुमार महतो सुपुत्र स्व. लक्ष्मी महतो, उमेर- ४५, गाम- निर्मली वार्ड नं. ०४, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) श्री घुरन राम, उमेर- ४३, गाम+पोस्ट- बनगामा, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

भगैत गवैया-

(1) **श्री जीबछ यादव** सुपुत्र स्व. रूपालाल यादव, उमेर- ८०, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **श्री शम्भु मण्डल** सुपुत्र स्व. लखन मण्डल, पता- गाम- बढियाघाट-रसुआर, पोस्ट मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

खिस्सकर- (खिस्सा कहैबला)-

(1) श्री छुतहरू यादव उर्फ राजकुमार, सुपुत्र श्री राम खेलावन यादव, गाम- घोघरडिहा, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल, पिन- ८४७४५२

(2) बैजनाथ मुखिया उर्फ टहल मुखिया-

(2)सुपुत्र स्व. ढोंगाइ मुखिया,
पता- गाम+पोस्ट- औरहा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

मिथिला चित्रकला-

(1) सुश्री मिथिलेश कुमारी सुपुत्री श्री रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार' पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) श्रीमती वीणा देवी पत्नी श्री दिलिप झा, उमेर- ३५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

खजरी/ खौजरी वादक-

(2) श्री किशोरी दास सुपुत्र स्व. नेबैत मण्डल, पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

तबला-

श्री उपेन्द्र चौधरी सुपुत्र स्व. महावीर दास, उमेर- ५५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री देवनाथ यादव सुपुत्र स्व. सर्वजीत यादव, उमेर- ५०, गाम- झाँझपट्टी, पोस्ट- पीपराही, भाया- लदनियाँ, जिला- मधुबनी (बिहार)

सारंगी- (घुना-मुना)

(1) श्री पंची ठाकुर, गाम- पिपराही।

झालि- (झलिबाह)

(1) **श्री कुन्दन कुमार कर्ण** सुपुत्र श्री इन्द्र कुमार कर्ण पता- गाम- रेबाड़ी, पोस्ट- चौरामहरैल, थाना- झंझारपुर, जिला- मधुबनी, पिन- ८४७४०४

(2) **श्री राम खेलावन राउत** सुपुत्र स्व. कैलू राउत, उमेर- ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

बौसरी (बौसरी वादक)

श्री रामचन्द्र प्रसाद मण्डल सुपुत्र श्री झोटन मण्डल, उमेर- ३०, बौसरी/बौसली/बासुरी बजबै छथि।
पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

श्री विभूति झा सुपुत्र स्व. कनटीर झा, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- कछुबी, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

लोक गाथा गायक

श्री रविन्द्र यादव सुपुत्र सीताराम यादव, पता- गाम- तुलसियाही, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

श्री पिचकुन सदाय सुपुत्र स्व. मेथर सदाय, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

मजिरा वादक (छोकटा झालि...)

श्री रामपति मण्डल सुपुत्र स्व. अर्जुन मण्डल, पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

मृदंग वादक-

(1) **श्री कपिलेश्वर दास सुपुत्र स्व. सुन्नर दास,** उमेर- ७०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)
(2) **श्री खखर सदाय** सुपुत्र स्व. बंठा सदाय, उमेर- ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

तान्पुरा सह भाव संगीत

(1) **श्री रामविलास यादव** सुपुत्र स्व. दुखरन यादव, उमेर- ४८, गाम- सिमरा, पोस्ट- सांगि, भाया- घोघड़डीहा, थाना- फुलपरास, जिला- मधुबनी (बिहार)

तरसा/ तासा-

श्री जोगेन्द्र राम सुपुत्र स्व. बिल्टू राम, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
श्री राजेन्द्र राम सुपुत्र कालेश्वर राम, उमेर- ५८, गाम- मझौरा, पास्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

रमझालि/ कठझालि/ करताल वादक-

श्री सैनी राम सुपुत्र स्व. ललित राम, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
श्री जनक मण्डल सुपुत्र स्व. उचित मण्डल, उमेर- ६०, रमझालि/ कठझालि/ करताल वादक, १९७५ ई.सँ रमझालि बजबै छथि। पता- गाम- बढियाघाट/रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

गुमगुमियाँ/ ग्रुम बाजा

श्री परमेश्वर मण्डल सुपुत्र स्व. बिहारी मण्डल उमेर- ४१, १९८० ई.सँ गुमगुमियाँ बजबै छथि।
श्री जुगाय साफी सुपुत्र स्व. श्री श्रीचन्द्र साफी, उमेर- ७५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

डंका/ ढोल वादक

श्री बदरी राम, उमेर- ५५, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)
श्री योगेन्द्र राम सुपुत्र स्व. बिल्टू राम, उमेर- ५५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

डंफा (होलीमे बजाओल जाइत...)

श्री जग्रनाथ चौधरी उर्फ धियानी दास सुपुत्र स्व. महावीर दास, उमेर- ६५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर),जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
श्री महेन्द्र पोद्दार, उमेर- ६५, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

नङेरा/ डिगरी-

श्री राम प्रसाद राम सुपुत्र स्व. सरयुग मोची, उमेर- ५२, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

विदेहक किछु विशेषांक:-

१) हाइकू विशेषांक १२ म अंक, १५ जून २००८
Videha_15_06_2008.pdf Videha_15_06_2008_Tirhuta.pdf 12.pdf
२) गजल विशेषांक २१ म अंक, १ नवम्बर २००८
Videha_01_11_2008.pdf Videha_01_11_2008_Tirhuta.pdf 21.pdf
३) विहनि कथा विशेषांक ६७ म अंक, १ अक्टूबर २०१०
Videha_01_10_2010 Videha_01_10_2010_Tirhuta 67
४) बाल साहित्य विशेषांक ७० म अंक, १५ नवम्बर २०१०
Videha_15_11_2010 Videha_15_11_2010_Tirhuta 70
५) नाटक विशेषांक ७२ म अंक १५ दिसम्बर२०१०
Videha_15_12_2010 Videha_15_12_2010_Tirhuta 72
६) नारी विशेषांक ७७म अंक ०१ मार्च २०११
Videha_01_03_2011 Videha_01_03_2011_Tirhuta 77
७) बाल गजल विशेषांक विदेहक अंक १११ म अंक, १ अगस्त २०१२
Videha_01_08_2012 Videha_01_08_2012_Tirhuta 111
८) भक्ति गजल विशेषांक १२६ म अंक, १५ मार्च २०१३
Videha_15_03_2013 Videha_15_03_2013_Tirhuta 126
९) गजल आलोचना-समालोचना-समीक्षा विशेषांक १४२ म, अंक १५ नवम्बर २०१३
Videha_15_11_2013 Videha_15_11_2013_Tirhuta 142
१०) काशीकांत मिश्र मधुप विशेषांक १६९ म अंक १ जनवरी २०१५
Videha_01_01_2015
११) अरविन्द ठाकुर विशेषांक १८९ म अंक १ नवम्बर २०१५
Videha_01_11_2015
१२) जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक १९१ म अंक १ दिसम्बर २०१५
Videha_01_12_2015
१३) विदेह सम्मान विशेषाक- २००म अक १५ अप्रैल २०१६/ २०५ म अक १ जुलाई २०१६
Videha_15_04_2016

Videha_01_07_2016

१४) मैथिली सी.डी./ अल्बम गीत संगीत विशेषांक- २१७ म अंक ०१ जनवरी २०१७

Videha_01_01_2017

लेखकसं आमंत्रित रचनापर आमंत्रित आलोचकक टिप्पणीक शृंखला

१. कामिनीक पांच टा कविता आ ओइपर मधुकान्त झाक टिप्पणी

VIDEHA 209th issue विदेहक दू सए नौम अंक

Videha_01_09_2016

विदेह ई-पत्रिकाक बीछल रचनाक संग- मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ रचनाक एकटा समानान्तर संकलन
विदेह:सदेह:२ (मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना २००९-१०)
विदेह:सदेह:३ (मैथिली पद्य २००९-१०)
विदेह:सदेह:४ (मैथिली कथा २००९-१०)
विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५]
विदेह मैथिली लघुकथा [विदेह सदेह ६]
विदेह मैथिली पद्य [विदेह सदेह ७]
विदेह मैथिली नाट्य उत्सव [विदेह सदेह ८]
विदेह मैथिली शिशु उत्सव [विदेह सदेह ९]
विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना [विदेह सदेह १०]

The readers of English translations of Maithili Novel "sahasrabadhani" and verse collection "sahasrabdik chaupar par" has intimated that the English translation has not been able to grasp the nuances of original Maithili. Therefore the Author has started translating his Maithili works in English himself. After these translations are complete these would be the official translations authorised by the Author of original work.-Editor

Maithili Books can be downloaded from:
https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/
Maithili Books can be purchased from:
http://www.amazon.in/
For the first time Maithili books can be read on kindle e-readers. Buy Maithili Books in Kindle format (courtesy Videha) from amazon kindle stores, these e books are delivered worldwide wirelessly:-
http://www.amazon.com/
अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

विदेह



मैथिली साहित्य आन्दोलन

विदेह- प्रथममैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA
सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर। सह-सम्पादक: उमेश मंडल। सहायक सम्पादक: राम विलास साहु, नन्द विलास राय, सन्दीप कुमार साफी आ मुन्नाजी (मनोज कुमार कर्ण)। सम्पादक- नाटक-रंगमंच-चलचित्र- बेचन ठाकुर। सम्पादक- सूचना-सम्पर्क-समाद- पूनम मंडल। सम्पादक- अनुवाद विभाग- विनीत उत्पल।

रचनाकार अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना (जकर मौलिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक गणक मध्य छन्हि) editorial.staff.videha@gmail.com कें मेल अटैचमेण्टक रूपमे .doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमे पठा सकै छथि। रचनाक संग रचनाकार अपन संक्षिप्त परिचयआ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठेता, से आशा करै छी। रचनाक अंतमे टाइप रहए, जे ई रचना मौलिक अछि, आ पहिल प्रकाशनक हेतु विदेह (पाक्षिक) ई पत्रिकाकेँ देल जा रहलअछि।

५ जुलाई २००४ कोँhttp://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html "भालसरिक गाछ"- मैथिली जालवृत्तसँ प्रारम्भ इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा "'विदेह'- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका" धरि पहुँचल अछि,जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब "भालसरिक गाछ"जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि। विदेह ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA

*सिद्धिरस्तु*

4th Edition

मधुमाछी

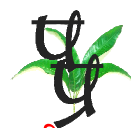


जगदीश प्रसाद मण्डल



मधुमाछी

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
निर्मली

समर्पण भाव

जिनगीक बीच-बीचमे मोड़ अबैए जे जिनगीक सीमांकान करैए। अही सीमांकनक पछाइत नव जिनगीक सूत्रपात सेहो होइए...।



ISBN : 978-93-87675-04-9

दाम : ₹ 251/-

चारिम संस्करण : 2017

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : दी साहु प्रिन्टिग प्रेस. निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

MADHUMACHHI
Collection of Short Stories by Sh. Jagdish Prasad Mandal.

कथाक सत्तैर

◌

मधुमाछी

जेठ मासक चिलचिलाइत रौदमे छिलमिलाइत मधुमाछीक समूह तरसैत-तलपैत रानीमाछी लग जाए रहल अछि।

सौनक सुहावन आ आसिनक मनभावन समैक विपरीत मास अछिए। ओना माघक गुज्जर, फागुनक मोजर, चैतक टिकुला आ बैशाखक कोषा पाबि जहिना गुलाबखासो, बम्बैयो आ सिनुरियो आम अपन कड़कड़ाइत जुआनीमे रंग-रूप-रस भरैक फेड़मे रहैए तहिना जमुनियाँ जामुनसँ गुलजामुन धरि करियाएल-ललियाएल रंगसँ सेहो अपन मुहों-कान आ देहो-दशा रंगि-रंगा रस-रसा गेले अछि। तँए कि पोखैर-झाँखैर अपन दिन-दुनियाँ-ले मत्थाहाथ दऽ नहि झखि-झखि झमान होएत सेहो बात तँ नहियेँ अछि। आसिनक आस पैबते जे पोखैर-झाँखैर भादोमे जलजलौ होइत जाठि-सँ-घाट धरि समगम बनि घाटक शोभा-सुन्दरसँ पवित्र नहान-घाट त्रिवेणी बनैत रहल, से आब अपन हहरैत जिनगीसँ खसैत-खसैत मुर्दघाट बनि बालुक तर पड़ि हेराएल जा रहल अछि। तहिना अथाहमे गड़ल जाठिक दशा सेहो बिगड़ले अछि। जे जाठि जौमुठिसँ संलग्न लबालब रहै छल से आइ धुर दसेक आँट-पेटक काद-कादोमे सिमैट गेल अछि आ आरो सिमटल जा रहल अछि..! सोभाविक अछि जे जे पानि अपने कानि रहल अछि ओ केना मनुखसँ माछी धरिक पेय भऽ सकैए। जे वसन्ती-

गुलाब वसन्ती-रस पीब चमैक उठल छल, चमकैत रहै छल, आइ ओकर एहेन दिन भऽ गेल जे अपने रस विहीन भेल असोथकित अछि। माने ई जे माटिक बेरसतासँ गाछक अपन अंग-अंग बेरस होइत-होइत फूल-कोढ़ी धरि एहेन बेरस बनि गेल जे..!

जेकर अपने मुँह-ठोर झड़ैक-झड़ैक झूड़ भेल छै, ओ केना मधुमाछीकेँ रस दऽ सकैए!

दिन भरिक थाकल-ठेहियाएल माछीक समूह एक राय बना-रानीमाछी लग पहुँच अपन निवेदन निवेदित करैत बाजल-

“काल नहि महाकाल, महाकाल नहि दुरकाल, दुरकालो नहि अकालक स्थितिमे पड़ि गेल छी! फूलक रस संचय करैत मधुरस बनबै-सिरजै छेलौं, रौदकल्लामे पड़ि कर्तव्यहीन भऽ रहल छी, तँए..?”

मधुमाछीक चिन्त्य मनक बेथासँ रानीमाछीकेँ चिन्तासँ चिन्तित केलक। चिन्तित होइते रानीमाछीकेँ चिन्तन चेतन जगौलक। जगिते चेतन मन बिचड़ऽ लगल। बाजल किछु नहि पुछलक-

“आरो किछु कहैक छह?”

आने समूह जकाँ मधुमाछियो एक-मुहरी छल, मुदा हवाक विषयमे चर्च करब छुटि गेल छेलै तँए ओ[1] अर्जीसँ फर्जी रहल। मुदा से भेल नहि। समूहेक एकटा माछी तनल। ओना समूहो ओकरा बातपर प्रतिरोध ठाढ़ नइ केलक मुदा एते चेतावनी तँ दाइए देलकै जे ‘चर्चमे आएल प्रश्न दोहरौल नइ जाए।’ ओना ओकर प्रश्न उठबैक कारण भेल जे जखन माछीक समूह ‘सबजन विचार’ बनबै छल तखन ओइ माछीक मन विर्ड़ोमे उड़ल विचारमे डुमि गेल छेलइ। भेल ई छेलै जे फुट-फुट सभ माछी चरौर करए गेल रहए, तहीकाल भुरकी जकाँ

[1] हवा

हवामे भूर भेल जइसँ विर्ड़ो जकाँ उठल, जे सुरकुनियाँ मारि अकासमे पहुँच गेल, ओही विर्ड़ोमे वेचारी माछी पड़ि गेल छल। जे बात मनमे उठलै। बाजल-

“जखन हवा तक संग दइले नइ अछि, सदिकाल विष-वर्षन करैए, तखन केना जीब आ अपन काजक पुरौनी केना करब?”

ओना रानीमाछी समूहक बेथा-कथा सुनलक मुदा बाजल किछु ने। बाजल एतबे-

“विचारल जाएत।”

विचारपर अपनो सहमैत मधुमाछीक समूह देलक। तत्काल सभ शान्त भऽ गेल। शान्तो केना ने होइत, कोनो कि गाम-गामक जत्था-जुलूस थोड़े छेलै जे राजधानी घेरऽ गेल छल, एक्केठाम छत्ताक समूह छै जइमे सभ बास करैए। मुदा रानीमाछी अपन परिवार, धन-सम्पैतक रक्षाक उपाय नइ करत तँ वंशो नाश हेतै आ सम्पैतोक क्षय हेतइ, तही डरसँ किछु विचारि काजो करब तँ छइहे।

सखी-सहेलीक बीच रानीमाछी भरमए लगल। पहिने अपन सखी सबहक बीच बिचड़ल। सखी भेल जे जे माछी मधु बनबैत आ सहेली ओ भेल जे भ्रमण करैत रस चूसि-चूसि पीबैत मुदा मधु संचय नहि करैत।

जइसँ मधुमाछीक शकल-सूरत रहितो विष-वमनेटा करैए संगे मधुमाछीकेँ कलंकित सेहो करैए। मुदा तैयो रानीमाछी ओकरा बिढ़नी-माछीक श्रेणीमे रखितो संगे रखिते अछि।

तँए कि ओ रानीमाछीक रक्षक नइ छी सेहो बात नहियेँ अछि। ओकरे चलैत छत्तोक रक्षा होइ छै आ माछियोक। नइ तँ तेहेन बीजकाठी लोक भऽ गेल अछि जे मधुक संग माछियोकेँ उला-पका कऽ खा जाएत।

रानीमाछी अपन सखी सबहक बैसार कऽ बैसकमे प्रस्ताव रखलक-

“हम सभ केना जीब, जइसँ धरतीपर अपन वंशो रहत आ मधुसँ जनसेवो जीबित रहत।”

बुढ़-पुरान मधुमाछी रानीमाछीक संग बैसार करऽ लगल आ जुआन-जहान आन-आन माछीक संग। एकसँ एक योद्धाक बीच बैसार गरमा-गरमीक संग शुरू भेल। एकटा माछी बाजल-

“राजाकेँ राजक फीकिर रहै छै रानीकेँ किए ने रहतै।”

कहि वेचारा चुप भऽ गेल। आगू किछु बजबे ने कएल जइसँ समूहक बीच प्रश्न-पर-प्रश्न लदा गेल। भाय, राजा-रानीमे कि फरक छै, राजाक पत्नी जीबितमे रानी भेल आ मुइला पछाइत माने विधवा भेला पछाइत राजा। मुदा से भेल नहि, पहिल प्रश्न उठा प्रश्नकर्ता चुप भऽ गेल छल। चुप कि ओहिना भेल आकि अपन विचार पुरा कऽ भेल। समूहमे सभ रंगक माछी रहबे करए। पहिल प्रश्नक समर्थनमे दोसर बाजल-

“हँ केहेन बढ़ियाँ तँ प्रश्न अछि। प्रश्नकर्ता अपन मनक वेग नइ बहौत तँ अनका वेगे काज चलतै। सुनिनिहार सुनलक कि नइ सुनलक, आकि सुनि कऽ अनठौलक तेकर दोखी प्रश्नकर्ता थोड़े भेल!”

एक तँ ओहिना दोसराक बले बल अबै छै, तैपर विचारक संगबे तँ आरो रंग पकड़ा देलकै। प्रश्नपर विवाद उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेल। भाय, बैसार छिऐ, एके आदमी घरक विचार अपना विचारे अपन जीवन-मरण देखैत करैए, मुदा वएह जखन कोनो समाजिक बैसारमे जाइए तखन ओ समूह बनि समस्याक समूल तकैए। जाबे समूल नइ भेटत ताबे जे किछु विचार हएत ओइमे कचड़ा रहबे करत...।

देखते-देखते बैसारमे घोल-फचक्का शुरू भेल। ने केकरो बात

कियो सुनिनिहार रहल आ ने एको मुँह चुप रहल। सभ अपने सूरे अनधुन बजैत। कियो सुरसा जकाँ सुरसुराइत तँ कियो गबदी मारि खुरखुराइत। सभ अपन-अपन ताकक तकिया बना घरक ताख दिस नजैर गड़ौने। मुदा बैसारो कि बैसार भेल, महादेवक बरियाती जकाँ सभ रंगक माछी बैसने देव-दानव एकत्रित भेल। देव मन्दिरमे जहिना हजारो-लाखो-करोड़ो अपन-अपन बेथा ऐ आशासँ कहैत जे सुफल पएब, तहिना।

सभकेँ अपन जिनगी अपन भविस छइ। सामंजस करैत एकटा अधवेसू बिढ़नी माछी बाजल-

“भाय, सभकेँ अपन-अपन ढोलो आ घेघो अपना-अपना गरदेनमे लटकल छह, केकर के सम्हारबहक! तँए सभ मीलि एहेन बाट बनाबह जइसँ सभ बटोही बनि बटगवनी गबैत अपना घरवारमे शान्त-चित्त जीबैत रही।”

तेसर माछीक ऐ विचारसँ गुलगुलाइत शोर शान्त दिसक बाट पकड़लक। मुदा बीच-बीचमे तैयो ओहिना उठि जाइ जहिना झगड़ाक पछाइत गारि-गरौबैल होइ छइ। भाय, गारि-गरौबैल चलैत मारि-मरौबैल भेल, मारि-मरौबैल भेला पछाइत फरिछा गेल। जे जेरगर छेलह से पटका मारलह। मुदा जे गारि-गरौबैलक पाछू पड़ि गेल तेकरा छत्तामे किए खोंचारै छहक आकि गोला मारै छहक। मुदा से भेल। गुलगुली गुणगुणी दिस बढ़ल। सभ अपन-अपन बेथा-कथा अपने-अपने गुणऽ लगल। मुदा ओझरी तेहेन रहै जे सोझरेबे ने करै, जइसँ गुण-गुणी कखनो-कखनो गुलगुली दिस बढ़ि जाइ तँ कखनो-कखनो सुनसुनी दिस। पोखैरक पानि जकाँ थीर होइत अवाज देख चारिम माछी बाजल-

“भाय, ओना ओझरी नइ छुटतौ। छुछुनरिक मंत्र जकाँ उनटा

गिनती करए पड़तौ।”

कहि चुप भऽ गेल। मुदा तेकर असैर भेल। भेल ई जे अधिजन ओहने रहै जेकरा साए तक गनऽ अबै। मुदा अभ्यास नइ रहने थोड़े-थोड़े धकमकेबो करइ। किछुकेँ जे अभ्यास रहै ओ दुनू हाथे थोपड़ी बजा देलक। जेकरा साए तक गनल अबै ओ सहजे कनी धकचुका गेल मुदा जेकरा साफे नइ गनऽ अबै, ओ रामधुन जकाँ थोपड़ी बजबए लगल। मुदा चारिम माछी जे बाजल छल ‘छुछुनरिक मंत्र’ ओकरा बुझैमे अपने धकमकी आबि गेलै जे थोपड़ीकेँ तँ दू-दिसिया मुँह होइ छै! नीको काजकेँ लोक थोपड़ीक संग सुआगत करैए आ अधलोक संग सेहो थोपड़ी बजा खिल्ली उड़बैए! विचारमे विचड़न करैत चारिम माछीक रंग-रूप देख पहिल माछी, जेकर पहिल सबाल छेलै, वएह समैक किल्लतक दोख लगबैत बाजल-

“भाय, दुखे कि सुखे मुदा भरि दिनक थाकल-ठेहियाएल सभ छह, सुतै बेर भऽ गेल तँए सुतनहि सभ दुख बिसरबह। ऐगला दिनक आगूक विचार करैक समए राखह।”

पहिल माछीक बात सुनि बेदम भेल मुरजन माछी सभ साँस छोड़लक। हरे-हरे कऽ बैसारसँ उठि सभ अपन-अपन शयनकक्ष दिस विदा भेल। सभ अपन-अपन हन्नामे पहुँच मनमना गेल मुदा तीनटा माछी नै मनमनाएल। अपन-अपन हन्ना छोड़ि तीनू निकलल। निकलबो केना ने करैत, जेठ मासक जरनी काजेटा नइ ने जरबै छै, पेटो जरबै छै आ सुतनियोँ जरबै छइ। जहिना बाट-घाटमे नवको यात्री आ पुरनो यात्रीक आ संगियोँ साथीक भेँट होइत तहिना तीनूक भेल। परिचय होइते तीन मन एकठाम ओहिना भेल जहिना बरियातीकेँ होइत। बरियातीमे जहिना बाघ-बकरी एके घाट नहाइत तहिना तीनू एकठाम बैस अपन जीवन-लीलाक चर्च शुरू केलक।

पहिल बाजल-

“जखन मरैयेक बेर आबि गेल तखन मछही तराजूपर जे जोखाइत रहब तइसँ नीक ने जे सोना-चानीक तुलापर तौलाइ?”

दोसर-तेसर बाजल किछु ने, बजबो केना करैत अगुतेलहा पंच थोड़े छल जे पहिनहि बाजि दैत जे ‘बुझि गेलियह बुझि गेलियह, तोहर मनक बात बुझि गेलियह।’ तेतबे नइ रहै, मनमे ईहो उठैत रहै जे केहनो दुख आकि बिपैत किए ने हुअए दोसर-तेसरक बीच बजने ओकर भार कमऽ लगै छै, आ कमैत-कमैत ओइठाम पहुँच जाइ छै जैठाम मानव-जनित दुख आ दैव-जनित दुखक सीमा पकड़ा जाइ छइ। तँए जे प्रश्न प्रश्नकर्ताक अछि ओइ प्रश्नक निदान सेहो ओकरा मनमे हेतइ। भलेँ ओ नइ बाजि पबैत हुअए।

किछु काल चुप रहला पछाइत दोसर माछी बाजल-

“भाय, तोहर विचार कनी-मनी बुझि पेलियह, कनी-मनी नइ बुझि पेलियह।”

‘कनी-मनी बुझि पेलियह’ सुनि पहिल माछीकेँ सवुर भेलइ। ओना सोलहन्नी सवुर नइ भेल, मुदा किछु तँ भेबे कएल। सवुर होइते मन विचड़ए लगलै। मनमे उठलै जे भरिसक भाषा दुआरे नीक जकाँ नहि बुझि पेलक। तँए जँ सोझ-मतिया सोझ-बतियामे कहबै तँ नीक जकाँ बुझि जाएत। बाजल-

“भाय देखहक, अपना सभ तँ सहजे माछीक श्रेणीमे छी, बुझिते छहक जे एकटा माछी ओहन होइए जे गाछपर रहैए, एकटा ओहन होइए जे तीसी फूलपर बास करैए, एकटा ओहन होइए जे गंदगीमे लेपटाएल रहैए, आ एकटा अपना सभ छह जे मौध सन अमृत बनबै छी मुदा कहबै छी माछीए।”

पहिल माछीक विचार सुनि दोसर माछीक मनमे जेना उपाय

उपकलै तहिना बाजल-

“भाय, देखा-देखी संसार चलै छै, अपना सभ तँ सहजे माछी छी आ जे देश-दुनियाँक जनगण-ले अमृते पैदा नहि स्वर्णमय संसार बनबैक शक्ति सेहो रखने अछि ओकरो तँ माछीए बुझल जाइ छइ।”

दुनूक विचार सुनि तेसर माछी बाजल-

“देखह भाय, ई बात मानि गेलियह जे देखा-देखी संसार चलै छै, मुदा संसार तँ बहुरंगी अछि, तइमे तूँ केकर देखसी करबह से ते तोरे ने विचारऽ पड़तह?”

तेसर माछीक विचार सुनि पहिल-दोसरकेँ जेना झकझोड़ि देलक, तहिना दुनू एकेबेर मुँह खोलि बाजल जइसँ कियो सुनिनिहारे ने भेल। केकर के सुनत।

दुनू दिससँ विचार तेना उठल जे सबहक कानमे विचारक बदला झड़े पड़ल। तेसर बाजल-

“एना जे सभ बजबे करबह तँ कहबहक केकरा आ सुनतह के? घेघ छल तोरा उछटि गेल मोरा! अपन-अपन गरदेनक घेघ अपने सम्हारने हेतह।”

तेसर माछीक बात सुनि दुनू माछीक मुँह बन्न भेल। मुदा जहिना तेसर अपन विचारपर विराम देलक तहिना पहिल आ दोसर सेहो देलक। जइसँ गुमा-गुमी, चुपा-चुपी पसरल।

मुदा किछु कालक पछाइत पहिल माछी गुमा-गुमी, चुपा-चुपी तोड़ैत बाजल-

“एना जे चुपा-चुपी, धुपा-धुपी करबह तखन एकठाम बैसलह किए?”

पहिल माछीक विचारकेँ दोसर टीपलक-

“भाय, तूँ तँ एक नम्बरमे छह तँए पहिने तोहीं अपन विचार बाजह।”

बोलेसँ विचारो आ दिशो अबै छइ। मुदा फड़िछाएल मन पहिलक तँए बिनु बिलमेने बाजल-

“भाय, सभकेँ अपन-अपन जिनगी-ले अपन-अपन काज स्वतंत्र करए पड़तह, तखने अपन स्वतंत्र बुधि स्वतंत्र काज दिस बढ़तह। जखने स्वतंत्र काजक संग स्वतंत्र विचार चलऽ लगतह तखने जिनगीक मर्म बुझबहक।”

पहिलक विचार सुनि दोसर एते गम्भीर भऽ विचारए लगल जे बकारे बन्न भऽ गेलइ। मुदा तेसरकेँ जेना नीन आबऽ लगलै तहिना हफुआइत बाजल-

“भाय, आब सुतैबेर भऽ गेल, काल्हि-ले ऐगला विचार राखह।”

तेसरक बात सुनि दोसरक धियान खुजलै। खुजिते बाजल-

“एना जे कोनो चीज विचारै काल ओंघी लगतह, तखन तँ ई आशा तोड़ि लएह जे ऐ बेटासँ पोता हएत!”

दोसरक बात जेना तेसरकेँ कबौछ जकाँ लगलै, तहिना लोहछैत बाजल- “तूँ केना बुझै छहक जे हमरा ओंघी लागल अछि?”

सामंजस करैत पहिल बाजल-

“भाय, तोरा के कहै छह जे ओंघी लागल छह।”

तेसर बाजल- “सुनलहक नइ?”

पहिल- “ओ अपना मने कहलकह। तीन गोरे जखन ऐठाम छी तखन तीनूक ने एक मन हएत जइसँ तीनू तीन मन भारी हएब।”

तेसर माछीक तामस कमल। कमिते बाजल- “अपन भार हम तोरे दइ छिअ। जे कहबह अन्ध-भक्त जकाँ सेवामे लागल रहबह।”

अपन विचार दैत पहिल बाजल- "काल्हि भिनसुरका समए रहलह। तीनू गोरे संगे चलि रानीकेँ अपन सभ दुखनामा सुनेबै, तखन जे बाँहि-बगल करत तेकर विचार पछाइत करब।"

थोपड़ी बजा तीनू बैसारक विसरजन केलक।

❍

तिथि : 07 मई 2015, शब्द संख्या : 1892

दनगर घास

कुसमए जहिना कोनो गाछीमे दिन-बिसरू गोटे मोजर निकैल टुकलाइत-जुआइत-कोसाइत आम पकि कऽ पूर्ण जिनगी पेब धरतीपर खसल केकरो भेटैत, जइसँ जहिना ओकर मन खुशियाइत तहिना सोनाय काकाकेँ सेहो भेलैन। अपन जिनगीक पचपनम बर्खमे एकटा नव विचार मनमे उठलैन। ओना नव विचार नइ छेलैन, परम्परामे चलिए अबैत अछि, मुदा अपन जिनगीक अनुभवमे नव अनुभव भेने सोनाय काका नव बुझलैन तँए मन खुशियेलैन...।

एहेन नव विचार मनमे उठैक आ नव खुशी अबैक कारण की? कारण भेलैन दुरकाल समैमे जीबैक, माने एहेन समैमे केना जीब..?

जीबैले पहिल खाहिंस लोककेँ पेटक होइ छै माने भोजनक। केहेन हुअए भोजन ईहो मूल प्रश्न भेल। अन-पानि, तीमन-तरकारी, दूध-दही-घीक संग फलो-फलहरी तँ दूषित भाइये गेल अछि तखन शुद्धता केना औत? जखन शुद्धते नइ औत तखन सही दिशामे स्वच्छ जिनगी चलत केना? दोरस हवा बहने जहिना मौनसून अबिसवासू बनैक उपक्रममे अबऽ लगैत तहिना सोनाय काका जिनगीकेँ अबिसवासू बाट पकड़ने देखलैन तँए सोचै-विचारैले मन मजबूर भेलैन। मजबूर होइते मनमे अनेको विचार एक संग उठि गेलैन, मुदा मन तँ मन छी, केकरो एकेटाक संग देत। चाहे साधु होउ आकि

असाधु। अपन सभ सबालकेँ सेरिया कऽ चौपेत रोटीक पपड़ा जकाँ चाहे परती खेतकेँ जहिना कोदारिसँ उनटा-उनटा छबे-छह उनटौल जाइए तहिना एक-एकटाकेँ सोनाय काका ओदारऽ लगला। पहिने अपन जिनगीक पपड़ा ओदरलैन। छह गोरेक परिवार अछि। माने दुनू परानी अपने, बेटा-पुतोहु आ दूटा पोता-पोती। गनल-गूथल तीन कट्ठा घराड़ी आ पाँच कट्ठा जोतसीम खेत अछि जे कोनो बेजाए नइ, मध्यम किस्मक अछि। मध्यम किस्मक खेतक माने भेल तीन फसिला उपजैबला।

अपन समतल ओकाइत, जइसँ समतल काजो आ जिनगियो सोनाय कक्काक छैन। छबो मुँह तँ खेबे-पीबे करत। मुदा तइ बिच्चेमे बड़का मोइन फुटैत रस्ता अवरूद्ध जकाँ भेल जा रहल छैन। अवरूद्ध ई जे अन्नक खेतीमे नव-नव चीजक सही उपयोग नइ भेने अन्न दूषित भऽ रहल अछि, जैठाम किसान परिवारमे दस बर्ख पुरान अन्नक रक्षाक बोध अछि ओ घटि रहल अछि...।

जैठाम दस बरखा-बीस बरखा घीओ आ मौधो सुरक्षित रखैक लूरि अछि तेकरो लोक बिसैर रहल अछि। बागुसँ अनाएल समए धरि अन्नक भण्डारन धरि जहर युक्त वस्तुक प्रयोग भऽ रहल अछि। ओना सुरक्षाक दृष्टिये नीको अछि, मुदा उपयोगक बेढंगपनासँ गड़बड़ तँ भाइये रहल अछि। तहिना पानियोँक दिशा-दशा बनियेँ रहल अछि। तीमन-तरकारीसँ खेबाक अधिकांश वस्तु एहने भेल जा रहल अछि। एहेन स्थितिमे केना जीब?

एकाएक पोखैरक असथिर पानि-हवा लगिते जेना डोलए लगैए तहिना सोनाय कक्काक मन डोलए लगलैन। जइसँ अखन धरिक जे जिनगी जीबैक सक्कत विचारक विवेक छेलैन ओ सिहरऽ लगलैन! सिहरऽ लगलैन ई जे जिनगी नइ बाँचत, विवेकहीन भऽ जाएत।

जहिना देहमे रोगक प्रवेश भेने मृत्युक शक्ति बढ़ऽ लगैत आ जिनगीक शक्ति क्षीणसँ क्षीणकाय हुअ लगैत तहिना हुअ लगलैन। खसैत मन ढलकैत पहाड़क चोटीसँ झहरैत विचार झहरऽ लगलैन...।

..जखन भँसैत धारमे छोट-छीन तनको-तिनको जान बँचा सकैए, पहाड़क तरहत्थीमे झाड़ो-झूड़क फूल-फड़ बँचा सकैए, तखन हम तँ पचपन बर्खक ओहन बुधिगर विवेकी छी जे डेगे-डेग पगे-पग अपन जाँघ असथिर रखैत मृत्युक मुहसँ किए ने बँचि सकै छी। ओना हवाकेँ रोकलो जा सकैए, बँचलो जा सकैए। मुदा तइले विज्ञान पढ़ब जरूरी होएत, से तँ सोनाय काकाकेँ छैन्हे। कम पढ़ल-लिखल रहनौं काका एते बात तँ बुझिते छैथ जे जहिना अपन कुल-मूलक इतिहास अपने बुझने हएत तहिना अपन जिनगी अपने जिनगीक विज्ञान पढ़ने हएत। की खाएब, की पीब तइले खेबा-पीबाक उपाय जानि करए पड़त, से तँ सोनाय काका केनहिये छैथ, तँए मनमे जीबैक सबुरो छैन्हे। ईहो आशा छैन्हे जे जँ अपन अनुकूल नइ हएत, तइले बोन-झाड़मे बैरक फड़ तँ अनेरूआ रहिते छै, तहू खा किछु दिन गूदस काइए सकै छी, तखन अनेरे जे मनकेँ मारि ओछाइन धड़बै छी ई अल्लढ़पना भेल। अपनो जिनगीक आगू बाट विचारि धरऽ पड़त। मन थीर भेलैन। समैक किरदानी देख जे तामस मनमे छेलैन तेकरा पानि पीब थीर केलैन।

ऐगला जिनगीक माने भेल काल्हि-ले करब, तखने ने काल्हि दिन जीब पएब। असथिर मन होइते तमाकुल खाइक मन भेलैन। चुनौटीसँ तमाकुल-चुन निकालि सानि चुनबऽ लगला। मुदा तइ बिच्चेमे अपन जिनगीक चुनियाएल विचार उपकऽ लगलैन। ओना चुनौटीसँ तमाकुल-चुन निकालि दुनूकेँ औंठाक घुस्सासँ नीक जकाँ चुना कऽ मिला नेने रहैथ, तँए दुनूक गरदा झाड़ैक मन भेलैन। दुनू तरहत्थीक बीच तेना समधानि-समधानि एक-दोसरक बीच पटकलैन

जे सभ गरदा हवामे उड़ि गेल। मुदा वएह उड़ि कऽ नाक लग पहुँच सुरसुरी भरलकैन तँए छीक भेलैन। पेटक सभटा बिकार-हवा नाक-मुँह दुनूसँ निकललैन। मनो हल्लुक भेलैन। भाय, हल्लुके मन ने हल्लुक खेनाइ-पीनाइक संग हल्लुक रहनाइयो नीक बुझैए, से तँ सोनाय काकाकेँ रहबे करैन। तँए बुधियो-विवेक ओते विचलित नहियेँ भेलैन।

सोनाय काकाकेँ मनमे उठलैन अपन काज, अपन परिवार आ अपन जिनगी। जिनगियो केतेटा, तँ छह गोरेक परिवारमे चारि गोरे काज करैबला दूटा टेल्हुक। टेल्हुक कि जे चारू गोरे जँ एक-एक कौरक घटबी कऽ लेत तहीसँ दिन-राति दुनू टनमन रहत। काजमे सुधार करऽ पड़त। तीन कट्ठा घराड़ीमे घर-आँगनसँ मालक थैर, घास-पात आ अगवास सहितमे दू कट्ठा अजवाइर अछि, एक कट्ठा चौमास अछि। चौमासक माने भेल सालो भरि तीमन-तरकारी उपजैबला खेत, तखन किए हाट-बजार दिस मुँह ताकब आ जहराएल-बिखाएल तीमन-तरकारी खाएब। अपन खेत अपन पेटक बीच समरस बनबैक जरूरत अछि। अपना खुट्टापर एकटा गाए रखने छी, जे छह मसुआ आमदनी अछि, आमदनियेँटा किए जे अपन भोजनो छी, मुदा ई केना बरहमसिया हएत? जँ से नइ हएत तँ आमदनी जे हुअए मुदा अपने केना जीब?

किछु क्षणक पछाइत सोनाय कक्काक नजैर थैरपर गेलैन, जाइते गाइक संग अठारह मासक गौड़ सेहो देखलैन। तीन मास पाल खेला तँ ओकरो भऽ गेल। खुट्टापर दूटा गाए रहत, छह गोरेक परिवारमे दूधेक धारमे बारहो मास बहैत रहब, कखनो घासक बोझ नेने घाट टपब तँ कखनो कुट्टीकट्टा-संगे झूलब! खुशी भेलैन।

गाइक सेवा-ले सुखल चाराक संग हरिअर घासो, खनिजो

पदार्थ आ अन्नो खुअबऽ पड़ै छइ। समुचित आहार गाएकेँ भेटत तखने ने ओ दूधक धार बहौत। तखैन? जोतसीम जमीन पाँचे कट्ठा अछि। तखन गाइक भोजन केना पुरत? अपन तँ भेल गाइक देल धन, मुदा ओकरो धनक तँ विचार अपने करऽ पड़त किने! सोनाय कक्काक मन ठमकलैन। ठमैकते पत्नियोँ आ बेटोकेँ शोर पाड़लखिन।

भिनसुरका समए, घरे-अँगनामे छिड़ियाएल दुनू गोरे, लगले आबि गेलैन। मुदा तैबीच जे आँगन बहारैत पुतोहु छेलैन, ओ अपन पुकार नइ सुनि बिच्चे आँगनमे बाढ़नि रखि कनसोह लइले दलानक देवाल लग कान सटा अखिहासऽ लगली। रघू तँ चुपेचाप आएल, बैसल। मुदा गोरहा पाथैत बुधनी गोबराएले हाथे आएल तँए पहुँचते बजली-

“कथीक हकवाहि छल, गोरहा पाथै छेलौं गोबराएले हाथ अछि। कहू।”

एक तँ भिनसुरका समए तैपर परिवारिक विचार करब, तँए सोनाय कक्काक मन सरोवरक पानि जकाँ शान्त भऽ असथिर भेल रहैन, मुदा पत्नीक झटहा तँ लागिये गेल रहैन। बजला-

“गोबराएले हाथ अछि तँ की हेतै, कोनो कि खाइ-पीबैक अछि जे गोबराएल हाथ देखबै छी।”

पतिक झटहाकेँ झटवाहि करैत बुधनी काकी बजली-

“इहए गोबरधन पहाड़ किसुनजी ओढ़ि व्रजवासीकेँ जान बँचौने रहथिन किने!”

पत्नीक बात जेना सोनाय काकाकेँ मनहर बनबए लगलैन तहिना मुस्कुराइत बजला-

“अपन गोबरधन पूजा बिसैर गेलौं जे दीयावातीक पराते गोबरक घर-आँगन बना, कोठी, ढक, बखारी बनबै छी आ ओइमे

दूबि-धान सजा कऽ गोधन पूजा करै छी।”

बगलमे बैसल रघूक मन अकछाए लगलै। ओना रघू तीस बर्खक जवान, पिता तुल्य रहितो माता-पिताक विचार नीक जकाँ नहि बुझि पबैत। अकछाइत मुँहक सुरखी देख बुधनियोँ काकी आ सोनाइयो काका अपन पाशा बदललैन। पाश बदलैत बुधनी काकी बजली-

“किए शोर पाड़लौं से पेटेमे राखब आकि उगलबो करब?”

पत्नीक विचार सुनि सोनाय काका गम्भीर भऽ गेला। गम्भीरता अबिते विचारलैन जे समैक चर्च माने प्रदूषित होइत जिनगीक चर्च करब अखन उचित नहि, एक तँ काजक समए छी, दोखर आड़िए-कोण बान्हैमे रहि जाएब, तइसँ नीक जे किए ने काजेक विचार करी। रघू दिस आँखि घुमा बजला-

“बौआ, परिवार तोरे छिअ, तोरे जिनगी देख हमरो खुशीसँ दिन बीतत, तँए तोरा नीक जकाँ बुझि लिअ पड़तह जे कौल्हुका दिन हमर केना चलत, केहेन चलत।”

सोनाय काका जे सोचि बाजल होथि मुदा बुधनी काकी बेटाक कान्हपर भार अबैत बुझलैन। बुझिते मनमे उठलैन जे माए-बाप अछैत बेटा भार तर पड़ि जाए, ई केहेन माए-बाप भेल! मनमे उठिते विचार झन-झना गेलैन। बजली-

“अखैन रघुआ कोन-जोकर अछि जे अपने देह छीपै छिऐ!”

सोनाइयो काका बुधनी काकीक बातमे ओझरा गेला। ओझरा ई गेला जे अपन हाथ-जुति नइ छोड़ऽ चाहै छैथ, आकि अखनो दूधपीबे बच्चा रघूकेँ बुझै छथिन। मुदा अपन विचारकेँ बेटा दिस मोड़ैत बजला-

“बौआ, जेना-जेना परिवार बढ़तह तेना-तेना खरचो बढ़तह।

माने ई जे खेनाइ-पीनाइसँ लऽ कऽ रहनाइ, पढ़नाइ-लिखनाइ, बिआह-दान सहित अनेको काज परिवारमे बढ़तह। तँए कमसँ कम अपनाकेँ एक सीमाक अन्तर्गत रखि परिस्थितिकेँ देखऽ पड़तह। चारि गोरे अखन घरमे कमासुत छी, आगू दिवरखौक नइ होइ तँए अखने नीक जकाँ विचारि काजक जड़ि मजगूत करैमे लगि जा।”

अन्ध-भक्त जकाँ रघू बाजल-

“बाबू, जाबे अहाँ दुनू गोरे जीबै छी...।”

रघूक बात सुनि सोनाय काका ओझरा गेला। ओझरा ई गेला जे एकरा की बुझल जाए, कान्ह पटकब आकि उठाएब? मुदा बुधनी काकी अपन एकक्षत्र वर्चस्व देख अठनियाँ हँसी हँसैत बजली-

“आब कि बेटा गरदेन उतारि कऽ पैरपर रखि देत तखन बुझबै। जहिना सभ दिन बेटा बुझैत एलिऐ तहिना ओहो माए-बाप बुझैत रहए, सहए ने भेल...।”

झाँपन-तोपन करैत मेघ जकाँ सोनाय कक्काक मन हुअ लगलैन। कखनो होइन जे ई की भेल? बुढ़िया फूसि छोड़ि एकरा की कहबै। मुदा फेर होइन जे परिवारक गाड़ी तँ एक-सूत्रेसँ ने चलत। तँए सभकेँ अनुकूल दिशाक जरूरत पड़िये जाइ छइ। पत्नीक महतकेँ ऊपर रखैत बजला-

“बौआ, माए जे कहलखुन से नीके-ले कहलखुन। मुदा घर-परिवार ओहिना नइ चलै छइ। घर-परिवारकेँ चलैक अपन रस्ता छइ। रस्ताक दूटा मुँह अछि, एकटा अछि ‘बुझब’ दोसर अछि ‘करब’। तँए...।”

पिताक विचार रघूकेँ नीक लगलै। मुदा बुधनी काकी महाभारतक वर्वरी जकाँ गरदेन कटा पहाड़पर जा बैसली। शान्त वातावरण देख सोनाय काका रघूकेँ लगमे बैसबैत अपन परिवारिक

स्थिति बुझबैत कहलखिन-

"बौआ, आब तोहू घीगर-पूतगर भेलह, तँए अपना गुजर-जोकर लूरियो-बुधि आ बातो-विचार नइ रहतह, तँ जिनगी बेठेकान बनि जेतह। तँए जहिना अखैन तक जहिना परिवारकेँ विचारक वा विचारवान परिवार बना जीबैत एलौं, तहिना आगूओ जीबैत रही, यएह भेल जिनगीक धार। एकरा बुझऽ पड़तह।"

पिताक बात सुनि रघू ठमैक गेल। ओना सभ बात रघू नइ बुझि पेलक, मुदा सोलहन्नी नइ बुझलक, सेहो तँ नहियेँ भेल। होइतो अहिना छै, कोनो गम्भीर विषयक कियो नाङैर पकैड़ नचैए तँ कियो मुँह पकैड़। एहेन स्थितिमे के केकरा किछु कहत। सवहिं नचाबे राम गोसाँइ, नर नाचे मरकट की माँही। मुदा से भेल नहि, पहाड़ेपर सँ बुधनी काकी बजली-

"गाममे केकरासँ हमर घर-परिवार अदूस रहल जे कियो आँखि देखौत।"

ओना बुधनी काकीक बात सुनि सोनाय कक्काक मनमे कुवाथ भेलैन, मुदा सबहक तँ सीमा छइ। बेटा आगू विचारक बातपर पत्नीकेँ डाँटबो ओते नीक नहि, जेते विचारकेँ मोड़ि परिवारक अनुकूल बनाएब हएत। तँए मनक तामसकेँ अपन खून अपने मने-मन पीब रघू दिस मुँह घुमा बजला-

"बौआ, माए की कहलखुन 'अदूस परिवार' से बुझलहक?"

रघू चुप्पे रहल। बेटाकेँ चुप देख सोनाय काका जिज्ञासु बुझि बुझबैत कहलखिन- "अदूस परिवार ओ भेल जेकरामे कोनो दोख नइ छै, से निमाहब...।"

'निमाहब' कहि सोनाय कक्काक मुँह ओहिना बन्न भऽ गेलैन जहिना बिजली गेने वत्तीकेँ होइ छइ। पिताक मुँह बन्न होइत देख जेना

रघूक मनक फड़की खुजल। बाजल-

"बाबू, मुँह किए बन्न भेल?"

बेटाक जिज्ञासा आ समैक गति-विधि देख सोनाय कक्काक मन तड़ैप उठलैन। मनमे उठलैन जे जेहेन समए भेल जा रहल अछि ओ एहेन दुरकाल बनल जा रहल अछि जैठाम एक संग अन्हर-बिहाड़ि, झाँट-बरखा, ओला-पाथरक संग ठनको खसै-खसैपर अछि, तैठाम जँ रघूकेँ सभ बात कहि देबइ तँ मन उबिअए लगतै, तइसँ नीक जे जे परिवारक अछि ओ केहेन अछि आ केहेन बनला पछाइत ओ समैक संग चलत।

बजला-

"बौआ, जखन समाजमे छी तखन बहुत बात बुझऽ देखऽ पड़तह, मुदा से नइ, लोके-लोक परिवार बनै छै, परिवारे-परिवार समाज बनै छै आ समाजे-समाज देश-बनै छइ। ई भेल अपन जिनगीक बाट-घाट। अही बीच अपनो जीबैत चलबह जइसँ परिवारोकेँ जिनगी भेटतह आ ओहो जीबैत चलतह।"

पिताक विचार सुनि रघूकेँ जेना जेठुआ बम्बै आमक बोनेलहा सुआद भेटल होइ तहिना बिहुसि उठल-

"बाबू, अहाँ खाली दहिना हाथक ओंगरीक इशारा करैत ने चलू, जेते देहमे दम अछि तइसँ पाछू नै हटब।"

सौनक पहिल फुहार जकाँ सोनाय कक्काक मनमे पड़लैन। आँखि उठा रघूक आँखिपर दैत बजला-

"बौआ, एकाएक समैमे भुमकम आबि गेल अछि! अइमे केना थीर भऽ कऽ रहबह, एकर परीक्षाक कठिन समए आबि गेल अछि।"

रघू बाजल-

"ई तँ भेल संकट, मुदा एकर मोचन केना हएत से ते अहीं ने विचारि कऽ कहब।"

विचारक बाट बेटाकेँ पकड़ैत देख सोनाय कक्काक मनमे स्वाती नक्षत्रक बून बाँसमे पड़ि गेने जहिना वंशलोचन बनि जाइ छै तहिना बुझि पड़लैन। छाती उघारि बजला-

"बौआ, आठ कट्ठा जमीनबला कियो अपन मोल बुझैए! अपने सभ बिकाए चाहैए! कीनिनिहारोक कमी छै, जे नइ कीनत। अहिना मनुखक खरीद-बिकरी दुनियाँमे होइ छै! मुदा दुनियाँ-दारीक बात छोड़ह।"

बात छुटैत सुनि रघूकेँ मनमे भेल जे जखने बात छुटत तखने काज छुटत, जखने काज छुटत तखने घरक गति छुटत जइसँ परिवारक नोकसान हएत...।

मुदा ई नइ बुझि पेलक जे गामेक बाधक खेत जकाँ परिवारमे छोट-पैघ, नीच-ऊँच, धार-धूर सभ किछु रहै छइ। तहीमे जँ इचना माछ जकाँ ओझरा जाएब तखन समाजक परिवार केना बनत?

विचारक जे दिशा अछि ओ काजक दिशाक अनुकूल चलैए। मुदा ऐठाम बोनिहारक ओकाइतबला सोनाय काका अपन स्वावलंबी जिनगी बना जीबैत एला अछि, आ आइक परिस्थितिमे केना ठाढ़ रहता, यएह विचार मनक मोइन बनि फुटऽ चाहै छैन, मुदा धकमका रहला अछि। धकमका ऐ दुआरे रहला अछि, जे दूटा बच्चा स्कूल जाइबला अछि ओकरा प्राइवेट स्कूल जाए देब आकि सरकारी। सार्वजनिक विद्यालयमे केतौ मकान नइ छै, तँ केतौ शिक्षक नहि, केतौ शिक्षक अछि तँ पढ़ौनिहार नहि...।

..एहेन स्थितिमे समैसँ मुकाबला करैक संस्कार पोतामे केना औत? मुदा लगले मन घूमि परिवारेक बीच आबि गेलैन। बजला-

"बौआ, जेतबे खेत-पथार छह तेकरे नीक जकाँ परेखह। केहेन काज आ केतेटा काज सम्हारैक शक्ति छह। तइ हिसाबसँ अपनाकेँ असथिर रखैत आगू बढ़ैक कोशिश करह।"

बिच्चेमे रघू टोनैत बाजल-

"बाबू, जाबे अहाँ मेहौत जकाँ परिवारमे छी, ताबे हम सभ पाइटे भेलौं किने, जेना-जेना अहाँ घुमब तेना-तेना हमहूँ सभ घुमब।"

बजैक बेगमे रघू बाजि गेल, मुदा ई नइ बुझि पेलक जे ई भेल अन्ध-भक्त। अहीठाम अबिसवास आ बिसवासक घाट छै, अबिसवासक घाटपर अन्धबिसवास सेहो बैसल अछि...।

सोनाय कक्काक मनमे ईहो नचैत रहैन जे बुधियारक काज बुड़िबकक खेलो तँ होइते अछि। जेना खुरपीक काज करैत माता-पिताकेँ देख बालो-बोध अपनो हाथमे खुरपी लैत खाधि खुनऽ लगैए। अपना बुझने तँ काजे करैए मुदा ओकरा खेलब छोड़ि की कहबै। कहबो केना ने करबै, मातो-पिताक सोभावो तँ काजक नहियेँ छैन, बाल-बोधकेँ बोधबे रहै छैन...।

मनक सभ काहो-कूह आ जालो-समाढ़केँ फरिच करैत सोनाय काका बजला-

"बौआ, गाममे जँ लोक जेरगर गाए पोसौ चाहत तँ नइ भऽ सकै छइ। ओना गाए अनमोल-रत्न छी, दूध सन वस्तु पैदा करैए, खेती-पथारीसँ जुड़ल उद्योग छी, मुदा गाम आ शहर-बजारक दू परिस्थिति अछि। जखन शहरमे नइ छी, तखन शहरक बात बुझनौं कोनो लाभ नहियेँ अछि।"

जेना रघूक तामस बजारवादपर उठल होइ तहिना ओही झोंकीमे बाजल-

"हँ-हँ छोड़ू शहर-बजारकेँ, अपन गामक बात बुझा दिअ।"

गामक बात आ अपन परिवारक बात, दुनूक दू सीमा छइ। परिवारक सीमा परिवारक आँट-पेटसँ अछि, गामक गामक आँट-पेटसँ। मुदा गाममे रहै छी, गामक बात नइ बुझबै तँ गौंआँ भेलिऐ कथीक। तँए गामक बातकेँ विचार रूपमे आ परिवारक बातकेँ काज रूपमे चलब नीक हएत। रघूकेँ बुझबैत सोनाय काका कहलखिन-

“बौआ, मानि लाए कियो गाममे दसटा गाए पोसि उद्योग ठाढ़ करए चाहैए, तेकरा-ले दसटा गाइयक जगहक संग हरिअर चारा-ले घासक खेतीक संग सभ कथुक जरूरत पड़तै। मुदा अधिकांश परिवार अछि केहेन? केकरो घर-थैर बनबैक जगह नइ छै, तँ केकरो घास उपजबैक खेत। शहर गाममे ई अन्तर सोझा-सोझी अछि। गाममे घासक बिकरी नइ अछि, शहरमे अछि। तैसंग ईहो अछि जे जेकरा चीज छै तँ करताइत नइ छै आ जेकरा...।”

पिताक विचार रघूकेँ बेलक काँट जकाँ मनमे गड़ल। बाजल-

“बाबू, छोड़ू गामक गप। जानए जअ आ जानए जत्ता। अपन परिवारक बात खाली बुझा दिअ जेते करैत रहब।”

एकाग्रताक बाट बेटाकेँ पकड़ैत देख सोनाय काका नवका बबाजी जकाँ रामधुन जकाँ तोपि देब नीक बुझलैन। ओ ई जे साइयो काज आगूमे रहतै, तइमे जेते कएल हेतै तेते बीछि-बीछि करत। कहलखिन-

“बौआ, परिवारक हिसाबसँ अपना सभ किछु अछि। तँए कोनो उपार्जनक क्षेत्र बना खाली चलैक अछि जइसँ परिवार चलैत रहत।”

पिताक विचार रघूकेँ जँचल। बाजल-

“खेती-जोकर खेत नइ अछि, तहूमे रौदी-दाहीक आफद सेहो ऐछे! तखन?”

सोनाय काका रघूकेँ बुझबैत कहलखिन-

“कट्ठा भरि जे वाड़ी अछि जइमे डेढ़िया परहक कलसँ पानियोंक काज भऽ जाइए, ओइमे बरहमसिया तीमन तरकारीक खेती केने बजारक जहरेलहा तीमन-तरकारी नइ कीनए पड़त। संगे परिवारमे जेते गोरे छी, तइ हिसाबे दूटा गाए परियाप्त भेल। नमहर काजसँ नमहर आमदनी हेबे करत, मुदा तइले नमहर खर्चक संग समैयोक तँ एकभगाह खर्च चाहबी करी...।”

पिताक बात सुनि रघूक मन जेना थीर भऽ गेल। मने-मन हिसाब जोड़ए लगल जे दूटा गाएकेँ खुअबै-पीअबै, दुहै-गाड़ै आ थैर-गोबर करैत परिवारक जेते गोरे छी, सबहक दिन खटि जाइए। छबे मास नइ ने तेकर पछाइत तँ दूटा दूधारू गाए खुट्टापर भाइये जाएत। रघूक मन असथिर भऽ गेल।

बाजल-

“परिवारक लोकक समस्या समाधानक उपाए भऽ गेल, मुदा जे उपाइयक साधन भेल तेकर समाधानक उपाय केना हएत?”

योजनाबद्ध ढंगसँ अपनाकेँ चलबैत आबि रहल सोनाय काका बजला-

“बौआ, गाए पोसैले थैर-घर छहे, सुखल चारा-ले गहुमक भूसी कीनि लेब, दवाइ-दारू बजारेमे भेटैए मुदा, हरिअर चाराक जोगार बिसवासू ढंगसँ करए पड़तह।”

पिताक बात सुनि रघू टपैक पड़ल- “से केना करब?”

हरिअर चाराक चर्च करैत सोनाय काका बजला-

“बौआ, हरिअर चारा एकटा भेल घास, दोसर भेल दुधिया घास। दुधिया घास दनगर चारा होइए। तँए नीक हेतह जे मक्के दुधिया घास छी जे बारहो मास उपजैबला घास छी। तीन खलमे पाँचो कट्ठाकेँ बाँटि तीनू समैक घास चक्रवत करैत रहब, दूधारू घास उपजबैत रहब,

दूधारू गाए दुहैत रहब, दुधिया जिनगी जीबैत रहब, दूधखौका दूधा-वैष्णव कहबैत रहब।”



तिथि : 13 मई 2015, शब्द संख्या : 2775

सझिया खेती

छोट-छीन गाम किसुनपुर। मुदा छोट-छीन ओहन नहि जे एकघरिया होइ। एकघरियाक माने भेल जे केतौ कोनो गाममे एक मैनजनीक आकि जवारेक बीच भोज-भातमे कोनो गाममे जँ एको घर रहल तँ ओकरो हिसाब भोजक गाममे भाइये जाइ छइ। तहूमे जँ कोनो कारणे एकघरिया एकजना रहला आ भोजमे उपस्थिति नइ भेला, तँए भोजैत गामक सोलहन्नी खेनिहारक हिसाब नइ करत, सेहो तँ उचित नहियेँ हएत। भलेँ अपन उगरल वौसक ढोल नइ पीटैथ ओ फराक भेल। चाहे गामक कियो खेने होथि आकि नहि।

मुदा से नहि, 1952 इस्वीसँ किसुनपुर पंचायत रहल, ओहन पंचायत नइ रहल जे एक गाममे दूटा, तीनटा आकि चारिटा पंचायत एके गाममे हुअए। ओहन पंचायत तँ किसुनपुर कहियो ने भेल मुदा एते तँ भेबे कएल जे हरेलहा-भुतियेलहा टोल-टपरा सहित सातटा गाम मिला पंचायत तँ बनबे कएल।

ओना जइ हिसाबक माने जइ तरहक पंचायतक संख्या बढ़ऽ लगल तइ हिसाबे पंचायतक गाम सभ कटऽ लगल, अबैत-अबैत दू गाम मिला किसुनपुर पंचायत बनले रहल।

ओना दुनू गाम समकश, मुदा शुरूसँ जे किसुनपुर नाम रहल से रहबे कएल। मुदा टोल-टपरा तैबीच एक-दू-तीन पंचायत टहैल

आएल।

वएह छोट-छीन गाम जे गाम तँ गामे रहल जे पंचायत घटैत-घटैत दू गामपर चलि आएल आ आब दुनू गामक सझिया नाम पंचायतक होउ, तइले बखेड़ा ठाढ़ भेल अछि। यएह दृश्य सुबल, सुमत आ सुकृत्तिक बीच तीन दिनसँ उठल अछि। तीन दिन पहिने पंचायतक नामकरणक आवेदन ऑफिसमे पड़ि गेल, तँए छोट-छीन गाम किसुनपुर तीनू गोरेक मनमे उठऽ लगल।

आने दिन जकाँ दोसैर साँझमे तीनू गोरे- सुबल, सुमत आ सुकृत्ति-क जुटान भेल। गामक टटका घटना, दू दिन तीनू गोरे आवेदनकेँ सेरिया कऽ बुझैमे लगौलक। तेसर दिन जखन रंग-रंगक चर्च मनमे घोंसियाएल तखन तीनूक मन फुरफुराएल, जे नइ अनका-ले तँ कम-सँ-कम अपनो हित-अपेछित, गौंआँ-समाज-ले तँ किछु विचार करब। सुबल बाजल-

“भैयारी, गाम बँटेने तँ समाजो बँटि जाएत!”

ओना ‘भैयारी’ सुनि सुकृत्तियो कान ठाढ़ केलक, मुदा सुमतक लुसफुसाइत मुँह देख अपन मुँह चुपे रखलक।

ओना सुवलोक नजैर सुकृत्तिपर सँ ससैर सुमतिये दिस बढ़ि गेल। नजैर मिलिते सुमत बाजल- “भैयारी, गाम बँटेने समाज नइ बँटाइ छै, गामक सम्बन्ध माटि-पानि, गाछ-बिरीछ इत्यादिसँ निरमित होइ छै आ समाज मनुख निरमित जिनगीसँ।”

ओना गामक टटका समाचार- पंचायतक नामकरण- अछि तँए जेतए-तेतए रंग-बिरंगक चर्च अहीपर चलए लगल। कोनो समाचार पत्रमे छपल-

‘जेते धनीकगर अछि ओ एक गाममे भऽ गेल आ जेते मझोलका आ बोनिहार अछि ओ एक गाममे पड़ि गेल!’

समुच्चा अकासमे तेहेन ने हवा पसैर गेल अछि जे पुरबा बहैए आकि पछबा, उतरंग बहैए आकि दछिनाहा तेकर कोनो थाहे ने। अकासो तँ अकासे छी। धरती थोड़े छी जे कोनो हवा बहौ, गाछ-बिरीछ अपन पातसँ ओकरा निवेदित करैत आगू बाट धरबैत रहैए। मुदा अकासक संग तँ से नइ अछि। कखनो कास-पटेरक फूल सेने उड़ैए तँ कखनो महाकाश बनि धरतीपर ठनका-पाथर खसबैए...। गपे-सप्पमे समए ससैर गेल, तीनू गोरे अपना-अपना ऐठाम गेल।

चौकक सटले माने दस लग्गा हटि कऽ एकटा खाली घर अछि, माने ओहन घर जेकर घरवारी दिल्लीमे घर बना ऐ घरकेँ बिसैर ओइ घरमे रहैए। पक्काक घर। चाकर ओसार। वएह बैसारक जगह। घन्टा-दू-घन्टा तीनू गोरे बैस गामक गतिविधि गामक लोकक बीच केहेन अछि, अपनामे विचार-विमर्श सभ दिन करिते अछि। ओना तीनू गोरे- सुबल, सुमत, सुकृत्ति- तीन जातियोक आ तीन टोलोक, मुदा तीनू एक उमेरिया। किछु मास किछु सालक अन्तर, तँए छोट-पैघ माने उमेरक हिसाबसँ, तीनूक मनसँ हरा गेल आ संग-तुरियाक रूप पकैड़ लेलक, जइसँ सासुरक चौठारीसँ लऽ कऽ देश-दुनियाँक चौठारी तकक विचार-विमर्श अपनामे करिते अछि। ओना एकटा बात आरो बीचमे अछि, किछु मास वा किछु साल वा बर्खक एकटा अर्थ ईहो होइए जे दिनक टुटल मास किछु मास भेल आ सालक किछु मास टुटल सेहो किछु साल भेल। आ दोसर, किछु मासक माने भेल- दू-चारि-छह मास, तहिना किछु सालक माने दू-चारि-पाँच साल भेल। तँए ऐठाम पहिलुका माने किछु दिन टुटल मास आ किछु मास टुटल सालसँ अछि।

शुरूक दिनमे तीनूक माता-पिता गामक स्कूलमे नाओं लिखा देलखिन। किछु छी तँ विद्यालय छी, पढ़ल-लिखल जँ हरो जोतत तँ कागजक पतियानी जकाँ सिरौड़ सोझ हेबे करत। एकठाम रहने,

खेलने-कुदने, खेने-पीने, घुमने-फिरने, तीनूक समाजिक जातिमे ह्रास अनलक। जइसँ तीनूक घर-आँगन आएब-जाएब, खाएब-पीअब, काज-उदम, पाबैन-तिहार संग मिलि मनौने समाजक बीच, माने गामक बीच, एक बेवहारिक नव समाजक रूपमे बनियेँ गेल अछि। नव समाजक माने ई जे जइ गाममे जातीय दूरी एते बनल अछि, जैठाम एक-दोसरक हाथक पानि नइ पीबऽ चाहैए तैठाम जँ एकसत्तैरमे एक ओसारपर एक-दोसरक ऐठाम तीनू खेबो-पीबो करैए आ बातो-विचार एक रखने अछि।

गामक स्कूलसँ पचमा पास केला पछाइत सुबलक मनमे उठल जे आन गाम जा पढ़बसँ नीक खेतो-पथार ऐछे, खुट्टापर महींसो ऐछे तखन चाहबे कि करी, जेकरा खाहिंस छै ओ नोकरी-ले पढ़ह। तँए नीक जे अखड़ाहा खुनि कुश्ती लड़ैत रहब, ओहिना तँ खलीफा नइ बनि जाएब। तैसंग देहमे गुद्दो बढ़त आ खूनो बढ़त जइसँ तागतो बढ़त। जुगो तेहेन आबि गेल अछि जे साउओ-पचास लऽ कऽ घरसँ नइ बहरा सकै छी कि आबि सकै छी। से नइ तँ अपन अखड़ाहासँ खेत-पथार धरि खूब मेहनत करब, जहिना दण्ड-बैठक केलासँ देहमे तागत अबै छै तहिना ने कोदारियो-खुरपी चलौने अबै छइ। जेते दिन जीब निरोग बनि कऽ जीब। अनेरे दुनियाँक चक्कर-भक्करमे कथीले पड़ब, तइसँ नीक जे अपन नोन-रोटीक जोगार करैत रहब,चैनसँ दिन कटैत रहत, मनमाफित खुशीसँ जिनगी जीबैत रहब...।

ओना सुबल स्कूल छोड़ला पछाइत माता-पिताक संग परिवारिक काजमे लागि गेल मुदा सुमतो आ सुकृत्तियो आगूक पढ़ाइ दिस बढ़ल। सुमत आ सुकृत्तिक सम्बन्ध बढ़ैत-बढ़ैत हाइ स्कूल तक पहुँच गेल, मुदा सुबलक सम्बन्धमे कमी आएल। ओना कमीक अनेको कारण भेल, एक तँ स्कूलक जिनगी दोसर अखड़ाहाक जिनगी। मुदा असली कारण भेल स्कूली शिक्षा आ बेवहारिक शिक्षाक

बीच दूरी। दुनूक दू दिशा, दू उदेस अछिए। तैसंग काजोक दूरी बढ़ल। सुबलक किसानी जिनगी शुरू भऽ गेल मुदा सुमतो आ सुकृत्तियो स्कूली विद्यार्थी-क-विद्यार्थी बनल-क-बनले रहि गेल।

मैट्रिक परीक्षाक फार्म सुमतो आ सुकृत्तियो भड़लक। बीचमे जबरदस बाढ़ि आएल, सुमतक घराड़ियो आ खेतो बेसी चपगर तँए, घरो खसि पड़लै आ चासो दहा गेलइ। ओना सुवलो आ सुकृत्तियोक उपजा-वाड़ी दहेलै मुदा घर बँचल रहलै। फार्म भरैसँ लऽ कऽ परीक्षाक बीचक समए सुमतक एहेन भऽ गेलै जे पढ़ाइक संग परीक्षो छुटि गेलइ।

आब ऐगला साल फेर फार्म भरऽ पड़त तेकर पछाइत परीक्षा हएत। मुदा तइ बिच्चेमे परिवारक चक्का पाछू दिस ससैर गेल। अखन मैट्रिकेमे छी जँ बी.एओ तक पढ़ऽ चाहब तैयो पाँच बर्ख समए लगत, टुटल घरसँ खर्चा जुटाएब, हड्डीसँ खून निकालब हएत। पाँचे बर्खमे परिवार ओतए पहुँच जाएत, जेतएसँ अबैमे बहुत समैयौ आ श्रमोक जरूरत पड़त। तइसँ नीक जे ढेरबा जवान भाइये गेल छी, जाबे चेतन जवान बनब, ताबे कनी दिके-कि-सिके, सम्पैत तँ अपनो ऐछे, किए ने अपन सुभ्यस्त जिनगी बनबैक परियास करी...। यएह सोचि सुमत मैट्रिकक परीक्षा छोड़ि अपन जिनगीक बाट पकड़लक।

जइ दिन सुकृत्ति मैट्रिकक सर्टिफिकेट नेने कौलेजमे नाओं लिखबऽ गेल तइ दिन सासुर जाइत धीआ जकाँ गामक सखी-बहिनपाक नाच मनमे हुअ लगलै। नाच ई हुअ लगलै जे गामक एक बैचमे तीन गोरे विद्यालयमे भर्ती भेलौं, सुबल गाममे अखड़ाहा खुनि देहक शक्ति-ले डण्ड-बैठक करैत कुश्ती करए लगल तँ सुमत दिनक मारल वौआ रहल अछि! अही माटि-पानिक ने हमहूँ छी जे आगू पढ़ैले बढ़ि रहल छी। इत्यादि...।

सुकृत्तिक मनमे एहेन विचार किए उठितै जे सभ लोककेँ समाजक खुट्टा बनि समाज-ले ठाढ़ हुअ पड़त। गाम की छी एकरा नीक जकाँ चिन्हऽ पड़त। मुदा अनठेकानलो गोटे गोलासँ जहिना पाकल आम टुटि गोलवाहक हाथमे अबिते खुशी होइ छै तहिना सुकृत्तियोक मनमे उठलै। किए ने उठैत, बेटा भेने तँ लोक राज-पाट लूटा दइए, मुदा तैबीच एकटा बात तँ ऐछे जे 'बेटा जनमब' आ 'बेटा बनब' दुनू दू छी। अनठेकानले किए ने कौलेज प्रवेश दिनक खुशी सुकृत्तियोकेँ भेल होइ मुदा मनमे एते तँ उठबे केलै जे कौलेजक शिक्षाक माने एतबे नइ होइ छै जे अपन सिलेवसे भरि अपनाकेँ समेट अध्ययन करी। बल्की कौलेज-शिक्षणक माने एक स्तर होइए, ओइ स्तरक अनुकूल जिनगीक उपयोगीक हर क्षेत्रक अध्ययन करब होइ छइ।

मुदा विचारक दौरमे सुकृत्तिक मन बेसी काल नै अँटकल, अँटकबो केना करैत, पहिल दिन कौलेजक दू-महला मकानपर नजैर पड़लै जइसँ कनी-कनी थरथरी आबिये गेल रहै। माघ मासक बच्चाकेँ जहिना जाड़सँ दुनू ठोर थरथराइत रहै छै, जइसँ अपन मनक पीड़ा माता-पिताकेँ सुपुट बोलमे नहि बुझा पबैए तहिना सुकृत्तियो थरथराइत मन विवेकक विचार नीक जकाँ बुझैले नइ अँटकल। मुदा कौलेजमे प्रवेश तँ भाइये गेल।

सात दिनक पछाइत जखन सुकृत्ति अध्ययन करैक खियालसँ कौलेज दिस डेग उठौलक तँ अपन परिवारक विचित्र-चित्र आँखिक सोझमे लटैक गेलइ। लटैकते अपन दायित्वक बोध जगलै। अपन पैतृक परिवारक पहिल सीढ़ीपर डेग उठि रहल अछि, अहिना उठल चलैत रहए। पहाड़सँ झरना होइत झहड़ैत पानि जहिना गलीए-कुचीए बहैत विशाल धारमे परिणत होइत समुद्रमे चिर स्थायी भऽ जाइए तहिना ने जिनगियो छी।

इकोनोमिक्स ऑनर्सक संग सुकृत्ति कौलेजसँ निकैल दुनियाँ दिस तकलक। मुदा अध्ययनक विषयक प्रभाव अध्ययन कर्ताक जिनगी आ विचारपर कमो-बेस पड़िते अछि। तहूमे सुकृत्तिकेँ अर्थशास्त्र मनलग्गू विषय भऽ गेल। किए ओ साहित्यिक पत्रिका पढ़त आकि गीत-संगीतक पोथी। जखन-कखनो समाचार पत्र पढ़बो करैत तँ सोझे ओइ पन्ना दिस नजैर दौग जाइ जेतए खेत-पथारसँ लऽ कऽ कल-कारखाना, बैंक-बेपार धरिमे आर्थिक चर्च रहैत। मुदा जखन अपन समीक्षा माने अपना परिवारक समीक्षा अर्थशास्त्रीय दृष्टिसँ केलक तँ अधजरूआ टार्च जकाँ भकइजोत भेल। दस बीघा जमीन अछि। करोड़ोक पूजी भेल। जँ ओकरा खाली बेचि कऽ बैंकमे रखि देब तखन जेते बैंक सुइद देत तेते दरमाहाक नोकरी कहाँ भेटत। तहूमे देखै छी जे हजारक आँटा-चक्की चला दस गोरेक परिवार ठाठसँ चलैए, लाखक कारोवारी तँ आरो बढ़ि दस लाख-बीस लाखक बिआहो बेटा-बेटीक करैए, हमरा तँ तहूसँ बेसी सम्पैत अपने अछि...।

सक्कत मनसँ सुकृत्ति विचारि लेलक जे गाममेमे रहब, हजारो उपयोगी कारोबार अछि जएह मन मानत सएह करब मुदा करब अप्पन कारोबार।

गाम अबिते, गाममे बास करिते सुकृत्तिकेँ मन पड़ल गामक स्कूल आ स्कूलक संगी। ओना ई विचार गाम एलाक छह मासक पछाइत सुकृत्तिकेँ जगल। शुरूमे माने, गाम एलापर जखन सुकृत्ति अपना नजैरे माने आर्थिक दृष्टिये विचारए तँ बुझि पड़ै जे किसानी जिनगी घाटामे चलि रहल छै, खर्चक अनुकूल उपज नइ भऽ रहल छै, तँए बिनु लगामक घोड़ा जकाँ अनेरो केकरो खेत देख कहऽ लगैत-

'ऐ खेतमे समैपर पटौनी नइ देलहक?'

तँ केकरो कहैत-

'खादक दुआरे जजात गड़बड़ा गेलह!'

तँ केकरो ई कहैत-

'कीटनाशक नइ देलहक तँए पीलूए सभटा खा गेलह!'

मुदा एक दिन बाताबातीमे सुकृत्तिक संग विवाद फँसि गेल। भेल एना- टमाटरक खेतमे एकटा किसान गलल-पचल फड़ो आ गाछो देख पीड़ासँ पीड़ित रहैथ, तही काल सुकृत्ति अपन गाछी घूमि कऽ अबैत रहए। टमाटरक खेत देख अपन पीड़ा जनबैत सुकृत्ति बाजल-

"भाय साहैब, नीक जकाँ तर्दूत नइ केलिऐ?"

अपन कठिन मेहनैतसँ ओ किसान खेती केने छला जे पालामे गलि गेल छेलैन, तैपर सुकृत्तिक बोल घापर नून छीटब सन हुनका लगलैन। खिसिया कऽ बजला-

"ईह! अनेरे भदबरिया बेंग जकाँ टर्र-टर्र बजै छैथ!"

किसानक बात सुनि सुकृत्ति भरमे-सरमे चुपे रहि गेल। बाजल किछु ने। मुदा किसानो ऐ ताकमे अपन कानकेँ तकिया रखलैन जे आगू किछु बाजत तखन ने कड़ुएलहा तरकारी खाएत जे केहेन होइ छइ। तँए ओहो चुप रहला। हलाँकि सुकृत्तियो ओतएसँ विदा भऽ गेल।

रस्तामे मड़ुयाएल-मुरझाएल सुकृत्तिक मन ग्लानिसँ गलऽ लगल। अन्हार जकाँ जिनगीक रस्तामे पसैर गेलइ। अपने-आप धिक्कार मनमे उठलै। उठिते विचार जगलै जे हाइए स्कूलमे पढ़ने रही जे मनुख समाजिक प्राणी छी। समाज बिना रहि नइ सकैए आ जँ रहबो करत तँ ओ या तँ देवते बनि रहत या नै तँ जानवरे बनि।

दोसर साँझक अन्हार जकाँ फेर सुकृत्तिक मनमे अन्हार बढ़ल।

मुदा सौंझुका तरेगन जकाँ एकटा विचार मनमे जगलै। जगिते भक्क लगलै- नीको विचार केना केकरो देल जाए? चोटाएल साँप जकाँ सुकृत्तिक विचार नाङैर पटकैत रहि गेल मुदा समुचित जवाब नहि पाबि सकल। अनायास मन पड़लै सुबल आ सुमत। बच्चेसँ तीनू गोरे संगी रहलौं, समैक चक्रमे तीनू छिड़िया गेलौं मुदा आइयो तँ तीनू गोरे अही गाममे छी, गामेक माटि-पानिपर जीब रहल छी। दुनू गोरे ऐठाम जा किए ने अपन अध्ययनकेँ बेवहारिक रूपमे प्रयोग करी। जेना मन आरो चमकलै। छोट-छोट बेसी रंगक खेती केने लाभक अपेक्षा श्रमक क्षय बेसी होइ छै, तँए जँ सझिया खेती रूपमे ऐकेँ बढ़ौल जाए तँ श्रमानुकूल लाभो बेसी आ बहुतायत उत्पादनो भऽ सकैए। किए ने अपन पुरान संगियौं सबहक संग विचारक आदान-प्रदान करी। जाबे अर्थशास्त्रक सिद्धान्तकेँ बेवहारिक रूप जमीनपर नइ उतारल जाएत ताबे विषयक मोल की। जँ मोले नइ तँ अनेरे लोक पढ़त किए।

दुनू संगी- सुवलो आ सुमतो- स्नातक संगी- सुकृत्ति-केँ देखते दुनूक मन सौनक मोर जकाँ नाचि उठल। नचबो केना ने करैत, हेराएल ओहन संगी भेटल जेकर जरूरत समाजकेँ छइ। ओना दू रस्ते संगी होराइत अछि, एक काजक दौड़मे, अगुआ-पछुआ आकि हेरा-भोथिया कऽ, आ दोसर हेराइत अछि अकाजक बनि। जेकरा बाट चलनिहार संग छोड़ि दैत अछि। मुदा से नहि, काजमे आब तीनू संगीक बिछुड़न भेल, जे ऐगला दिनक ऐगला काजेमे फेर संगी बनत।

सुकृत्ति पहिने सुमत ऐठाम गेल, ओना सुमतो अखैन तक समाजमे पहचान बना नेने अछि।

पहचान ई छै जे गामक भीतर जँ कियो ओहन लोक आबि जाइ छैथ, जिनकर अपन कोनो सम्बन्धी नइ छैन, ओ सोझे सुमतक ऐठाम पहुँच जाइ छैथ।

हेराएल संगीकेँ देख सुमत दुनू हाथे दुनू बाँहि पजिया छाती-सँ-छाती मिलौलक। सुमतक संग सुबल ऐठाम पहुँचते सुकृत्ति देखलक जे जेना सीमाबंदीक विवादमे दू देशक सीमाकातक लोककेँ होइत, तहिना सुबलकेँ भऽ रहल छल।

कान बुच्च, घुट्ठी पातर आ भारी देह सुबलक देख सुकृत्ति बाजल-

“भाय तूँ तँ गामक पहलमान जकाँ लगै छह!”

जहिना कम पानिमे नावकेँ लग्गीक बदला पएरे-जाँघेसँ आगू बढ़ौल जाइत तहिना सुबलक मनमे सेहो भेल। बाजल-

“भाय, कान बुच्च दुनियाँ सुन्न। अपन गाम छी अपने गामक बीच खेती-पथारी करैत महींस पोसैत दिवस गूदस करै छी, अपन मनक मालिक छी अपना मोजेमे मनमौजीसँ जीबै छी।”

पारखी सुकृत्ति परखि गेल जे सुबल कोन जिनगी आ कोन झण्डा नेने समाजमे ठाढ़ अछि। किए ने अखने तीनू गोरेक बीच विचारि ली जे भरि दिन जे जेतऽ रही मुदा साँझू-पहरमे सभ दिन एकठाम बैस सभ कियो अपनो आ अपन गामो-समाजक विषयमे विचार-विमर्श करी। सुकृत्तिक मनमे ईहो उठल जे समाजकेँ हमर केते खगता छै आ केते खगताकेँ हमरा बुते पुरौल हएत। तीनूक बीच समय निर्धारित भऽ गेल। निर्धारित समायानुसार तीनू गोरेक बीच अनवरत विचार-विमर्श शुरू भेल।

पहिल दिनक बैसारक पछाइत गाममे जेना नव जागरणक दीप नेँसा गेल होइ तहिना भरि गाम चकमकाएल। ओना बैसारक दुनू घन्टाक समए चिन्हे–परिचएमे खतम भऽ गेल। जे भेल मुदा एक अध्यायक समापन तँ भेबे कएल। चिन्हा-परिचए पहिल दिन जरूरतो ऐछे, ऐ दुआरे जे जिनगीमे केकरा की बिसाएल आ केकरा की

बिखाएल, तैसंग ईहो जे के केकरापर बिसाएल अछि आ के केकरापर बिखाएल अछि तेकर मुँह-मिलानियोँ तँ अहिना सम्भव अछि।

चिन्हा-परिचयक क्रममे सुकृत्ति सुबलकेँ पुछलक-

“भैयारी, दुनियाँमे लोक बुधिक पूजा करैत ज्ञान-शक्ति पबैए, आ अहाँ देहे-शक्ति पाबि एते मगनमे रहै छी एकर की कारण?”

बाल-बोधकेँ जहिना ठोरेपर ‘सीता-राम’ रहै छै जे असगरोमे सन्यासी जकाँ खेलबो करैत रहैए आ ‘सीतो-राम, सीतो राम’ करैत रहैए, तहिना सुबलमे बुझि पड़ल। साले-साल कातिक मासमे भागवत-कथा जोतखी कक्काक मुहेँ सुनैत सुबल एकटा कथा सीखिये नेने अछि, जेकर साले-साल ड्राइवरी लाइसैंस जकाँ रेनुअलो होइते रहल छइ। कृष्णकेँ गैबार-महींसवार मानि अपनोकेँ महींसवार बुझिते अछि, संगीक संग जहिना कृष्ण खेलाइ-धुपाइ छला तहिना बाध-सँ-अखड़ाहा धरि अपनो खेलेबे-धुपेबे करै छी! तखन कमीए की रहल। बाजल-

“भैयारी, सभ सुख अही धरतीपर छै, भरि दिन कण्ठ फारि-फारि लोक चिचिआइत रहैए जे झूठ बाजब पाप छी। झूठ बाजब पाप छी। मुदा अपन भरि दिनक काजसँ निचेन भेला पछाइत साँझुका गायित्री-बन्धन जकाँ पाछू उनैट भरि दिनक जिनगीपर नजैर दइ छी, तखन कहाँ कखनो बुझि पड़ैए जे झूठ पाप छी। झूठ पाप ओकरा-ले अछि जे झूठ बजैए, ओकरा-ले किए पाप रहत जे झूठ बजिते ने अछि।”

सुबलक विचारक जिनगी सुकृत्तिकेँ सकताएल बुझि पड़लै। जहिना जइ घरक खुट्टा जेते सक्कत आ सुरेब रहल ओ घर ओते टिकाउओ आ सुन्दरो बनल रहैए तहिना समाज रूपी घर-ले सेहो खगता अछि। ओना असारो सुरेब होइए मुदा जेकरा सक्कत कहै छिऐ

वएह छी लकड़ीक शील-गुण। जेकरामे शील-गुण नइ रहत ओ असार ओहन लकड़ी सदृश्य छी जे भरि बरसाते कहिऔ आकि साल लगैत-लगैत तेहेन दिवरियाह भऽ जाइए जे माटिपर पएर रखनिहार अपने माटि भऽ जाइए! तखन ओ अपने केना ठाढ़ रहत आ माथ परहक छप्परकेँ केना बँचा कऽ रखने रहत?

सुबलपर सँ सुकृत्तिक नजैर सुमतपर पड़ल। धारक बहता पानि जकाँ सुमतक जिनगी देखलक। देखते किसान परिवारक आचार-विचारक महत बुझलक।

आइक युगमे केकरा एते पलखति छै जे अपन सख-सेहन्ता छोड़ि बाप-दादाक देल आचार-विचार जोगा कऽ रखत। जे चलि गेल से चलि गेल! तँए विचारैक अछि जे ऐगला एकैसम पीढ़ीक बेटा-बेटी-ले खेबा-पीबासँ लऽ कऽ मन-मनोरथ धरिक ने प्रबन्ध करि कऽ रखैक अछि।

जिनगी की छी, यएह ने जे प्राण छूटल दुनियाँ छूटल! मने-मन जखन सुकृत्ति गौर केलक तँ बुझि पड़लै जे समाजक धार अखनो ओइ रूपमे बहि रहल अछि जइमे नीक-सँ नीक विचार विचरण करैए। जरूरत अछि रस्तासँ ओकरा समेट धारमे प्रवाहित करैक।

एकाएक सुकृत्तिक मनमे सझिया खेतीक पन्ना उनटल। पन्ना उनैटते चुप्पी टुटलै-

“भैयारी, मन जखन धन दिस बढ़ै छै आ सुधन भेट जाइ छै, तखन जे मनक तृप्ति होइ छै ओ बिआहक बरियातीक भोज आकि पीकनीकक एकांत भोजसँ थोड़े भेटत।”

सुकृत्तिक विचार सुमत तँ अदहा-छिदहा बुझलक मुदा सुबल महाभारतक अभिमन्युक संगी- भीम- जकाँ वौआइत रहल। वौएबो केना ने करैत, जैठाम सुकृत्ति सन स्नातक संगी, सुमत सन समाजक

विचारवान संगी रहत, तैठाम अपन माथ-खपाएब सुबल नीक किए बुझैत। अपन निरमौल अपन दुनियाँ छै, जखैन-जखैन पलखैत होइ छै तखैन-तखैन कृष्ण-कृष्ण करैए, नइ पलखैत होइ छै तँ काज-काज करैए। आखिर काजे ने काम-धाम आ कामे-धाम ने राम-राम!

अपन विचार रखि सुकृत्ति दुनू संगीक विचार बुझऽ चाहलक। सुमत सुबल दिस तकलक तँ बुझि पड़लै जे भरिसक सुबलक मन कदमक गाछपर मचकी झूलै छै तँए भरिसक सुकृत्तिक विचार सुनबे ने केलक। मुदा अपने तँ सुनलौं। सुनि कऽ जँ किछु बाजब नहि तँ संगीक संगपना केना भेल। बाजल-

“भैयारी, जखन एक गाममे तीनू गोरे बच्चेसँ संगी रहलौं, बीचमे किछु दिन वैदिक पद्धैत जकाँ बिछुड़ि गेल छेलौं, तँए एते दिनक बिछुड़लाहाकेँ बिसरू आ आब केना संगी बनल रहब से सोचू?”

कहि सुमत सुबलक समरथन पबैले पुन: बाजल-

“की भैयारी?”

सुमतक विचार पाबि सुबल गदगदाइत गदा उठबैत बाजल-

“भैयारी, सभ कियो जखन एके गाम-समाजमे छी तखन जँ एकठाम बैस एको पहर कृष्ण-धुनमे नइ बितेलौं, तखन ऐ जिनगीकेँ धो-धो चाटब।”

समतल खेत जकाँ सुकृत्तिक मनमे भेल। बाजल-

“सझिया खेती?”

‘सझिया खेती’ सुनि सुबलक मन टनटनाएल। जहिना घण्टी टाँगल हाथीक प्रवेश गाममे होइते धिया-पुता बुझि जाइए जे रस्तापर हाथी अबैए तहिना सुबलक मनमे टनटनाएल। टनटनाएल ई जे नाना-मुहेँ पचासो दिन सुनने जे बौआ, सझिया बहु नीक मुदा सझिया

खेती नइ नीक।

मुदा संगीक बातकेँ सोझे ठुकरा देब सेहो नीक नहि। तँए किछु अपन ओहन विचार नइ राखब तखन नइ मानब केना हएत। बाजल-

“भैयारी, गामक भैयारीक खेतीमे देखै छी जँ दू भाँइक भैयारी अछि, दुनूमे भिनौज अछि, तइमे जँ एकटा परदेशी भेला तँ हुनकर खेत सेहो ने रसे-रसे उपजे बिसैर जाइ छैन।”

सुबलक विचारकेँ ग्रहण करैत सुकृत्ति बाजल-

“भैयारी, ओहन नहि।”

फेर सुबल बाजल-

“अपना तीनियेँ गोरेमे सौंसे गामक सझिया खेती केना हएत? जखैन कि अपना तीनू गोरे तँ तीन टोलोक आ तीन जातियोक छी।”

सुबलक विचार सुकृत्तिकेँ जँचल, मुदा समाजिक बेवस्था तँ समाजकेँ बुझला पछाइत केलापर हएत, ऐठाम तँ तीनियेँ गोरेक बात अछि। बाजल-

“भैयारी, ओहो नहि।”

‘ओहो नइ’ सुनि सुबल ठमैक गेल, मुदा सुमतक मनमे जेना पहिनेसँ उठल रहै तहिना बाजल-

“भैयारी, जाति-जातिक बीच पेशेवर खेती सेहो सझिया होइए..?”

“सेहो नै, भैयारी।”

मुदा लगले हाथ सुमत बाजल-

“जँ कोनो सझिया मशीन लऽ तीनू गोरे ओकर कच्चा माल-ले एके रंगक खेती करब?”

सुकृत्ति-

“ओहो नहि।”

जिज्ञासु मुँह बाँबि सुबल बाजल-

“तखन?”

अपन विचार रखैत सुकृत्ति बाजल-

“भैयारी, सभकेँ अपन-अपन खेत अछि, सभ रंगक सेहो अछि। तँए ओकर उपजक सझिया।”

‘उपजक सझिया’ सुबलकेँ बुझैमे नइ आएल। बाजल-

“नीक जकाँ नइ बुझलौं, भैयारी?”

सुकृत्ति बुझबैत बाजल-

“एक समैमे माने एक मौसममे अनेको रंगक अनेको फसिल होइए, ओइमे सझिया। किछु चीजक एक गोरे करब, किछु चीजक दोसर गोरे आ किछु चीजक तेसर गोरे, ओइमे तीनू गोरे अदैल-बदैल बेसी वस्तुक लाभ लेब।”

❍

तिथि : 23 मई 2015, शब्द संख्या : 3135

मुफतिया माल

हेमकान्त बाबू आ दिवाकान्त काका लङ्गोटिया संगी। ओहन लङ्गोटिया संगी नहि, जे कुश्तीक अखड़ाहाक होइए, आ ने वएह जे बुढ़ाड़ीमे घर-परिवार छोड़ि वा छुटि गेने लङ्गोटा धारण करैत लङ्गोटिया संगीक संग तीर्थ-व्रर्त, कीर्तन-भजनमे अपन दिवस गमबैत अछि। ओहो लङ्गोटिया संगी नहि, जे बाल-बोधकेँ बोधि माए जखन लङ्गोटा पहिरा बच्चाकेँ आँगनसँ अगुआ टोल-पड़ोसक बच्चाक संग खेलैले छोड़ि दइत।

हेमकान्त बाबू आ दिवाकान्त कक्काक बीच ओहन लङ्गोटिया सम्बन्ध छैन जे गामक स्कूलमे दुनू गोरेकेँ लङ्गोटा पहिरौने पिता दाखिला करौलखिन। तहियेसँ दुनू गोरेक बीच सम्बन्ध रहलैन। भिनसुरका समाचारमे जहिना रेडियो-टी.बी. रातुक घटना सबहक प्रसारण करैत, तहिना सौंझुका समाचारमे दिनुका घटना प्रसारित करिते अछि।

वएह भिनसुरका समाचार गाम-समाजक सुनै-बुझैले चाह पीब पान खा दिवाकान्त काका पलंगपर सँ उठि विदा होइते रहैथ तखने भातीज- रवि शंकर- आबि कहलकैन-

“काका, अनर्थ भऽ रहल अछि!”

दिवाकान्त काका तीन साल पहिने कौलेजसँ सेवा निवृत्ति भेल

छैथ, भातीजक बातक कोनो अरथे ने लगलैन। अर्थो केना लगितैन, जे शब्द अपने अनर्थ अछि ओकर अर्थे की हएत। तैबीच रवि शंकर ऐ ताकमे दिवाकान्त दिस आँखि उठा-उठा तकैत जे काका अकचकाइत किछु बजता, मुदा से किछु ने देखलक। देखबो केना करैत काका अपने अथाहमे उगऽ-डुमऽ लगला। तखन केना केकरो घटना सुनि अकचकेबे करितैथ। मुदा से भेल नहि। खगेन्द्र जकाँ खगक भाषा बुझैक खियालसँ दिवाकान्त काका पुछलखिन-

“बौआ, रातिमे कोनो तेहेन घटना केतौ भेल?”

घुमौन बात बजैक कारण रवि शंकरक रहै जे दुनू गोरे माने हेमकान्तो बाबू आ दिवाकान्तो कक्काक बीच घनिष्ठ सम्बन्ध, तँए परदाक बीच अपन विचार रखने छल।

मुदा घटना तँ घटना छी। ओना घटनोक प्रसारण केते ढंगसँ होइते अछि, केतौ तिलकेँ तार बना प्रसारण होइत तँ केतौ तारकेँ तिल बना देल जाइए, तँए तिलकेँ तिल आ तारकेँ तार कहि प्रसारित नइ होइए, एहनो तँ नहियेँ अछि, सेहो तँ होइते अछि। कनी आगू ससरैत रवि शंकर बाजल-

“काका, अहाँक संगीकेँ तँ..?”

कहि रवि शंकर चुप भऽ गेल। ‘संगी’ सुनि दिवाकान्त काकाकेँ मन आगू बुझैक हुलास जगलैन। बजला-

“बौआ, एना तम्माक मुड़ी छोपि कऽ नइ बाजह।”

ओना रवि शंकरो बुझैत जे तेलिया-फुलिया लगा दिवाकान्त काका ने अपने बजै छैथ आ ने अनके मुँहक नीक लगै छैन। मुदा बुझैक जिज्ञासा तँ छैन्हे। रवि शंकर बाजल-

“काका, हेमकान्त काकाकेँ बेटा कपार फोड़ि देलकैन।”

'बेटा कपार फोड़ि देलकैन' सुनिते दिवाकान्त कक्काक माथमे कठझालि जकाँ झन्न दऽ उठलैन। रवि शंकरोक मनमे भेल जे भरिसक संगीक कपार फुटब सुनि काका बेथा गेला, बेथापर बेथा लादब नीक नहि। तँए जान छोड़ा घसैके जाएब नीक हएत। बाजल-

"काका, कनी दूध-ले जाएब, परसुका नोत अछि, जाइ छी।"

'हँ-हूँ' दिवाकान्त काका किछु ने बजला। रवि शंकर चलि गेल।

एक संग अनेको प्रश्न दिवाकान्त कक्काक मनमे सिनेमाक रील जकाँ नाचए लगलैन। ऐ अवस्थामे बेटा कपार फोड़ि देलकैन! ओना रेडियो-अखबारमे एहेन समाचारक कमी नहियेँ रहैए मुदा लगक लोक सभ दिन हेमकान्त रहला। जखन समाचार कानमे पहुँच गेल तखन जँ खोज-पुछारि नइ करिऐन, जिज्ञासा नइ करिऐन सेहो केहेन हएत। मुदा खोजो-पुछारि करै-करैमे भेद तँ अछिए। नीक काजक खोज-पुछारि आ अधला काजक खोज-पुछारिमे अन्तर तँ अछिए। अधला काजक खोज-पुछारिक एकटा माने ईहो तँ ऐछे जे व्यंग्य-स्वरूप खोज-पुछारि करऽ आएल छैथ!

मुदा लगले मनमे उठि गेलैन जे हमरा कान तक समाचार आबि गेल से हेमकान्त केना बुझता जे हमर आशा भेँट करैक वा जिज्ञासा करैक हेतैन। फेर लगले मनमे उठि गेलैन जे ई तँ भेल अपन मुँह नुकाएब। नीक आकि बेजए ओ केलैन, बेटा हुनका कपार फोड़लकैन, आ मुँह नुकाबी हम, ईहो तँ नीक नहियेँ हएत। असमंजसमे पड़ल दिवाकान्त काकाकेँ ने अक् चलैन आ ने बक्। मुदा लगले भेलैन जे रवि शंकर तँ एतबे बाजल जे 'बेटा कपार फोड़ि देलकैन।' किए फोड़लकैन, केना फोड़लकैन से तँ नइ बाजल तँए धड़फड़ा कऽ पहुँचबो आ जर-जिगेसा करबो जरूरी नहियेँ अछि। कोनो कि हम डॉक्टर छी जे मलहम-पट्टी करबैन। मन थीर भेलैन।

थीर होइते मन नचलैन। मन नचलैन ई जे धड़फड़मे हेमकान्तक ऐठाम जाएबो नीक नहियेँ, दुनू बापुतक बीचक बात छी। जखने एक दिस जाएब तखने दोसर दिससँ जाएब।

होइते छै जे दू गोरेक झगड़ामे जखने एकसँ कियो गप करैए तखने दोसर बुझैए जे किछु सिखा-बुधी कऽ रहल अछि। दिवाकान्तकेँ फेर भेलैन जे हेमकान्ते बाबूटा हमरा अपन संगी नइ बुझै छैथ, से नइ ने अछि। गामक के कहए जे कौलेजोक चिनहरबा, अड़ोसो-पड़ोसियो आ गौंआँ-घरूआ तँ बुझिते अछि। से नइ तँ पहिने नीक जकाँ घटनाक घटित घटक बुझि कऽ जाएब वा नइ जाएब से विचारब। संगबे रहला तँ स्कूल-कौलेजक पढ़ाइ आ नोकरी धरिक रहला, एकर माने ई नइ ने भेल जे जइ घटनामे हेमकान्तक कपार फुटलैन तइमे हम हुनकर संग रहिऐन। जाइ कि नइ जाइ, तेकर हँ-निहँस दिवाकान्त काका काइए ने पाबि रहल छैथ। मनमे उड़ी-बीड़ी तँ लगले छैन।

फेर भेलैन जे दोसर-तेसरसँ पुछि कऽ पहिने भँजिया ली आ पछाइत जाएब आकि नइ जाएब से विचार कऽ लेब। मुदा लगले भेलैन जे गामोक लोक तँ बेसी तीन-तसिये अछि, कियो हेमकान्त दिससँ बाजत तँ कियो शिलाकान्त दिससँ, जइसँ नीक जकाँ भाँजो लगब तँ कठिने अछि। दिवाकान्त कक्काक नजैर घुमैत-फिड़ैत उमाकान्तपर पड़लैन। उमाकान्ते गाममे एहेन लोक अछि जे दूध-पानि बेड़ा कऽ बजैए। जइसँ सत् बात बुझैमे आबि जाएत।

मुदा लगले फेर भेलैन जे जँ कहीं उमाकान्तोकेँ अपन देखल-सुनल नइ होइ आ उहो उड़न्तीए कहि दिअए तैयो तँ भाँज नहियेँ पएब। फेर भेलैन जे हाथ-पर-हाथ रखि चुपचाप बैसबो तँ नीक नहियेँ हएत। से नइ तँ उमाकान्ते ऐठाम पहुँच भाँज लगाएब नीक रहत।

तहूमे वेचारा जँ अपने काने सुनने हएत सेहो कहिये देत आ जँ केकरो आनक मुँहक सुनने हएत सेहो कहिये देत। किछु अछि उमाकान्त तँ बागर धान जकाँ आनसँ नमहर तँ अछिए। सेठ-साहुकार जकाँ लौली-बाजी दइ बला नहियेँ अछि...। यएह सोचि दिवाकान्त काका उमाकान्तसँ भेँट करऽ विदा भेला।

संयोग कहियौ आकि घटना, उमाकान्तो हेमकान्ते बाबू ऐठामसँ अबैत रस्तेमे रहए कि दिवाकान्त कक्काक नजैर पड़लैन। कोनो नीक बोल सुनैले वचनामृतक खगता होइते अछि। दिवाकान्त काका बजला-

"उमाकान्त, तोँ बड़ भाग्यशाली छह, बहुत दिन जीबह!"

दिवाकान्त कक्काक आसिर वचन सुनि उमाकान्तोक मन ठनकल, ठनकल ई जे एना अगुरवारे तँ दिवाकान्त काका कहियौ आसीर-वचन नहि कहै छला, आइ किए..?

फेर लगले उमाकान्तक नजैर दुनू गोरे- दिवाकान्त-हेमकान्त-क सम्बन्धपर पहुँच गेल, बाजल-

"काका..!"

'काका' कहि उमाकान्त चुप भऽ गेल। उमाकान्तकेँ चुप होइत देख दिवाकान्त कक्काक मन तर-ऊपर हुअ लगलैन। जँ नीक समाचार रहैत तँ ढोल पीट-पीट बजैत, मुदा बकार बन्न भऽ गेलै! जरूर किछु तेहेन बात अछि जे बजै ने चाहैए। दिवाकान्त काका कहलखिन-

"उमा, तोँ अपनाकेँ आन किए बुझै छह। बेटा-भातिज भऽ कऽ एना धखाइ किए छह?"

दिवाकान्त कक्काक विचार उमाकान्तक मनकेँ उत्साहित केलक। उत्-सुक मने उमाकान्त बाजल-

"काका, बजैत लाज होइए, तँए...।"

'तँए' सुनि उमाकान्तकेँ हड़बड़बैत दिवाकान्त काका कहलखिन-

"कनीको रखि-जोगा कऽ नइ बाजह। तोरा धाख कथीक होइ छह।"

उमाकान्त बाजल-

"काका, हेमकान्त कक्काक पत्नी आठ-नअ बर्ख पहिने मरलखिन से तँ बुझले अछि।"

"हँ-हँ किए ने बुझल रहत। हुनकासँ एक साल पहिने हमरो पत्नी मुइली। दसम बरखी एक मास पहिने केने छेलिऐन। हिनकर दस तँ हुनकर नअ बर्ख भेबे केलैन।"

दिवाकान्त कक्काक बहैत मनकेँ अपना दिस मोड़ैत उमाकान्त बाजल- "ओ[2] केहेन धुड़फन्दा लोक छैथ से तँ बुझले अछि।"

'धुड़फन्दा' सुनि दिवाकान्तो कक्काक मन धुड़खेल खेलऽ लगलैन। बजला-

"बौआ उमाकान्त, तोरा बुझल हेतह की नइ, हम ओइ बिआहोमे बरियाती रही, राज मोरंगमे की-की भेल से की कहबह।"

कहि काका विस्मित हुअ लगला। दिवाकान्त काकाकेँ विस्मित होइत देख उमाकान्तोक जिज्ञासा जगल। बाजल-

"काका, एना किए अदहे मुहसँ निकलल आ अदहा मुहेँमे रहि गेल?"

एक तँ ओहिना दिवाकान्त काका, जहियासँ कौलेज छोड़लैन

[2] हेमकान्त

तहियासँ वतरसिया[3] भऽ गेल छैथ तैपर उमाकान्तक मोलामा पाबि दिवाकान्त काका बमैक कऽ उगलऽ लगला-

"उमा बौआ, हेमकान्त बेटाक बिआहक बात-चीत पक्का केलैन। तेरह लाख नगद, अतिरिक्त आधुनिक वस्त्र-जात आ तीन साए बरियातीक बेवस्था। कन्याँगतोक मनमे मस्ती चढ़ले रहै, हरे-हरे सभ किछु गछिए नै लेलकैन जे अगुरवारे दाइओ देलकैन। बरियातीमे हमहूँ रही।"

उमाकान्त-

"तखन तँ अहाँकेँ सभ बात बुझले अछि।"

जहिना रटल बात उझकी मारि-मारि मुहसँ निकलऽ चाहैत तहिना दिवाकान्तो कक्काक मनमे उझकी उठैत रहैन, ओना तेरह लाख रूपैआ सुनि उमाकान्तकेँ अपन समाचारक सत्यापन भऽ गेल। सत्यापन ई जे वएह रूपैआ कपार फोड़ै-फोड़बैक कारण छल। मुदा आरो बेसी भाँज लगबैक जिज्ञासा उमाकान्तक मनमे जगले रहइ। जागल लोक जहिना आँखि उठा-उठा चारूकात तकैत तहिना उमाकान्तो आगूक बात बुझैक कोशिशमे पियासल बटोहीक नजैर गढ़ि, दिवाकान्त काकापर समधानल तीर छोड़लक। तीर जेना दिवाकान्त कक्काक बीचला छातीमे लगल होइन तहिना छातीक पीड़ासँ पीड़ित होइत बजला-

"बौआ उमा, छाँह-छूँहमे बात बुझिये गेलौं, मुदा तेकरा अखन रहऽ दहक, बूढ़-पुरान भेलौं, कखन छी कखन नइ रहब, तेकर कोनो ठीक अछि।"

आगूक बात दिवाकान्त कक्काक मनेमे रहैन आकि तइ बिच्चेमे

[3] वात रोगसँ पीड़ित

अपन गोटी लाल होइत देख उमाकान्त बाजल-

"काका, अहूँ जँ तगेदे भरोसे रहब जे उमाकान्त फल्लाँ-फल्लाँ बात पुछत तखन ओकरा बुझा कऽ कहबै से अहीं कहू जे अहाँ सन भेल?"

ओना दिवाकान्त काका दृष्टिकूटो आ चिक्कारियो भाषाक अनुभवी शिक्षक कौलेजमे बुझल जाइ छला, मुदा विद्यालय आ समाजमे की दूरी बनल अछि सेहो तँ बुझिते छैथ। तँए सेवा निवृतिक पछाइत दिवाकान्त काका कौलेजक विषयकेँ कौलेजेमे निवृत्ति कऽ समाजमे समाजिक विषय धारण कऽ अपन बदलैत परिवेशमे अपनोकेँ समावेश काइए रहल छैथ।

'अहीं कहू जे अहाँ सन भेल?' पैछला बातक फल-फूल भेल। दिवाकान्त कक्काक मनमे भेलैन जे ठीके उमाकान्त बाजल। किछु छी तँ बेटा-भातीज छी जँ ओकरा पुछै भरोसे रहब आ जँ ओकरा ओ बात बुझले ने होइ, तखन की पुछत। तेतबे किए जँ ओकरा बुझले रहितै तँ अनेरे दोहरा कऽ अपन समए किए दुइर करैत...।

..रेही चलैत मटकूरमे जहिना पानि-मक्खन चारू दिस पेनी-सँ-छिप्पी धरि नचैत रहैए तहिना दिवाकान्त कक्काक मन नचलैन। नचिते बजला-

"बौआ, धड़फड़ाएल नै ने छह?"

उमाकान्त अपन सुतरैत लक्ष्य देख गुलेतीमे गोलीक निशान साधि बाजल-

"काका, अधपोखैरयामे जहिना जुड़शीतलक दिन थाल-कोदो आ पानि एकबट्ट भऽ जाइए तहिना ने आइ समाजक पोखैरमे भऽ गेल अछि! भरि दिन कोनो आन काज करैक मन थोड़े हएत।"

श्रोता-वक्ताक अनुकूल वातावरण होइत देख दिवाकान्त काका

बजला- "बौआ, तोहर घर जँ लग रहितऽ तँ तोरे ऐठाम जेतौं, चाहो पीबतौं आ गपो-सप्प करितौं। मुदा अखन तँ हमरा डेढ़िये पर छह, तँए दलानेपर चलह। चाहो-पान खाएब पीब आ अपन अनुभवक किछु किछु बातो कहबह।"

पिपाशु लोक उमाकान्त, तँए समाजक काजक बात-विचार सुनै-करैक समैकेँ अधला नइ बुझि उपयोगीए बुझैत अछि। तैसंग मनमे ईहो उठि गेलै जे अपन दरबज्जापर लोक भरिमुँह बजैए, सेहो गर देख उमाकान्त बाजल-

"बहुत दिनक पछाइत दुनू बापुतक बीच गप-सप्प हएत काका। तँए जहाँ धरि पार लगत तेते गप काइए लेब।"

एक तँ भिनसुरका उखड़ाहाक नरमाएल मन, तैपर जराएल समाचार सुनि दिवाकान्त कक्काक मन इनहोर पानि जकाँ खौलैत रहबे करैन। बजला-

"बौआ, आगि-छाइ कि अगुतेने मानत, ई नइ अबिसवास करह जे चाह नइ पीब। ओना आनक पुतोहु जकाँ हमर पुतोहु बतकेहलि नइ छैथ, ओ बुझि गेली। तैबीच अपना सभ मुँह चुपे किए राखब।"

नोइसिक शीशीक मुन्ना खोलि दिवाकान्त काका नाकमे भिड़ौलैन। भिड़ैबते छीका भेलैन। छीका होइते बजला-

"बौआ, औझुका बात ताबे तरमे रहऽ दहक, अपन इस्कूलेक जिनगी लगसँ पहिने पैछला बात सुनबै छिअ।"

हेमकान्त बाबू आ दिवाकान्त कक्काक गाम सटले, बड़का गामक टोले जकाँ। मुदा दुनू वित्तीय गाम तँए दूटा नाम तँ अछिए। ओना नाम दू रहितो दिनानुदिनक किरिया-कलाप दुनू गामक एकरंगाहे अछि। एकबधू खेत, जोड़ल सड़क आ जोड़ल स्कूल तँ अछिए।

दुनू गोरे एके जातिक सेहो छैथे। मुदा एक जाति रहितो दुनूक

कुल-मूलमे कनी तरपट, तँए समाजिक भोजो-भात आ कुटुमो-कुटमारक सम्बन्ध नहियेँ होइत अछि। मुदा केतबो दूरी किए ने होइ, बेकतीगतो सम्बन्ध आ आन-आन तरहक काजो उदेमक सम्बन्ध तँ छैन्हे।

दिवाकान्त काका तेज गतिये बाजथि, तँए उमाकान्त पजरल चुल्हिक खोरनी जकाँ बीच-बीचमे खोरनी चलाएब नीक बुझलक। ओना खोरनी चलबैक पाछू उमाकान्तक मनमे ईहो रहै जे धाराक प्रवाहमे केते झूठो बात खढ़-पात जकाँ अलगि जाइए, सेहो हएत। बाजल-

"नमहर जिनगीक नमहर खेरहा हएत, तँए कनी..?"

उमाकान्तक इशारा दिवाकान्त काका बुझि गेला। बजला-

"बौआ, हेमकान्तो आ हमहूँ दुनू गोरे संगे गामक स्कूलमे भर्ती भेलौं। शुरूहेसँ ओ चंगला, चंगलाक माने- झूठ-सत् आ सही-गलतकेँ ओइ रूपे मिश्रण करैत भषो आ काजो बना लइत जेकरा बूझब-परिखब भारी अछि। हमरा सन-सन अनेको ओहन छैथे जे नइ बुझि पाबि रहला अछि। हमहूँ कि भाँज बुझितौं, गुण भेल जे दृष्टिकूटो आ चिक्कारियो भाषा कनी पढ़ि लेलौं।"

दिवाकान्त कक्काक खुलल छाती देख उमाकान्त बुझि गेल जे कक्काक बातपर कनी-कनी जँ ऊपरसँ पानिक छिच्चा जकाँ दैत रहबैन तँ अनेरे ने सोगर बनल रहता। बाजल-

"काका, धिया-पुता गपक अखन कोन बजैक खगता अछि...।"

वतरसिया दिवाकान्त काका छैथे, चौकियेक ओछाइनपर दुनू ठेहुन सोझ करैत मुस्की दैत बजला-

"ई तँ पेनी कहलियह उमा, अइमे एतबे बूझह जे जहिना लोअर

प्राइमरी स्कूलसँ हाइ स्कूलक दसमा धरिक विद्यार्थीक रिजल्ट सिरिफ परीक्षेक कॉपी जाँचि टा शिक्षक नइ दइ छथिन, किलासमे प्रश्नोत्तरक संग विद्यार्थीक लगनो देख दइ छथिन, तँए दसमा तक नीके-ना रहलौं। मुदा मैट्रिकक परीक्षामे हमरासँ पनरह-बीस नम्बर ओकरे बेसी रहइ। ओना फस्ट डिवीजन दुनू गोरेकेँ भेल, तँए ओइपर कान-बात नइ देलिऐ।"

उमाकान्तक मनक ब्रह्म जगल। जेना ओ बुझि गेल जे किछु रहस्यक बात छिपल अछि, जे खोलए चाहै छैथ मुदा खोलि नइ पाबि रहला अछि। पोखैरक घाटपर पानिकेँ धफाड़ि जहिना फरिच बनाएल जाइए तहिना उमाकान्त बाजल-

"काका, जखन बचपनेक बात उठेलौं तखन तेना कऽ कहिऔ जे दोहरा कऽ पुछऽ नइ पड़ए।"

तैबीच पुतोहु चाह नेने आबि गेलैन। शराबक शीशी देखते पिआककेँ जहिना मन चटपटाए लगै छै तहिना दिवाकान्तो कक्काक मन चटपटेलैन। बजला-

"बौआ उमा, दुनियाँमे भगवान केकरो पुतोहु देलखिन तँ हमरो देलैन। हमर चौबीसो घन्टाक खटनी हिनका बुझल छैन। कखन चाह पीब, कखन पानि, आ कखन खेनाइ खाएब तइ सबहक हिसाबे अपनाकेँ परिवारमे ठाढ़ रखने छैथ।"

सोझहामे बजलासँ जँ बड़प्पनक भाव अबैत अछि, तँ की सत-बातक भाव नइ औत? एबे करत...।

..चाहक घोंट लइते जेना दिवाकान्त कक्काक कण्ठ सड़ास भेलैन। बीचमे टभैक पड़ला-

"बौआ, लगला सूरमे एकटा आरो बात सुनि लएह, बिनु कहने जँ आगू बढ़ि जाएब तँ ओ बिच्चेमे हेरा जेतह।"

दिवाकान्त कक्काक मनक उत्फुल विचार देख उमाकान्त बाजल-

"काका, अहाँकेँ कि मुँह रोकने छी। हमहूँ कियो आन छी जे...।"

सह पाबि सहैट दिवाकान्त काका बजला-

"बौआ, जइ दिन मैट्रिकक सर्टिफिकेट लइले गेलौं, तखन जे हेमकान्तक डेट ऑफ वर्थ मिलेलौं तँ हमरासँ चारि बर्ख कम रहइ।"

बीचमे टोन दैत उमाकान्त बाजल-

"नइ बुझलौं, काका?"

'नइ बुझलौं' सुनि दिवाकान्त कक्काक मनमे भेलैन जे भरिसक मोटगर शब्दक प्रयोग भऽ गेल तँए उमाकान्त नइ बुझि पेलक। सिलौटपर जहिना कोनो वस्तुक चटनी हलसँ पीस हल्लुक बनौल जाइए, जइसँ ओ चाटै-जोकर भऽ जाइए, तहिना दिवाकान्त काका मेहियबैत बजला-

"उमेरक चोरीमे कि-कि फड़ै छै से भरिसक उमा तोरा नजैरमे नइ छह। खाएर छोड़ह नइ छह तँ नइ छह, मुदा एते बुझि कऽ आँखिक मोटरी बान्हि रखिहऽ जे ओइ-गाछ[4]मे नोकरीक अन्तिम ओ समए नुकाएल ऐछे जइमे उच्च कोटिक दरमाहाक संग उच्च पद सेहो नुकाएल अछि। तैसंग नुकाएल अछि, एकसँ अनेक बिआह, तैसंग छिपल अछि कम उमेरमे पैघ बात बुझैक श्रेय।"

बिच्चेमे उमाकान्त बाजल-

"काका, एना नइ घुरिया कऽ कहियौ सोझुका बात कहियौ।"

समगम होइत दिवाकान्त काका बजला-

[4] उमेरक चोरिक गाछ

"बौआ उमा, जाधैर केकरो अपन उचित उमेर रहल ताधैर ओ बढ़ैत-बढ़ैत फुनगी तक पहुँच गेल। ओतैसँ माने फुनगीए-परसँ चोरौलहा उमेर आबि खसैए आ पदो-प्रतिष्ठा आ दरमहो पबैत रहैए।"

बिच्चेमे उमाकान्त टोकारा भरलक-

"ओऽ ऽ ऽ!"

उमाकान्तक 'ओ' सुनि दिवाकान्तकेँ जेना अपन 'म' जगलैन तहिना बजला-

"बौआ, अखन तूँ दुनियाँक छकल-बकल नइ बुझि रहलह अछि, तँए अन्हराएल बुझि पड़ैत हेतह। मुदा से नइ, लोको ते लोको छी किने, केतौ मरद लोक बनल रहैए आ केतौ घरवाली बनि मौगी बनि जाइए। जखने मौगी बनैए तखने ने ओ मौगियाह पुरुख बनि, एकसँ अनेक बिआह करैए।"

बिच्चेमे उमाकान्त टिपलक-

"काका, कनी दोहरा कऽ कहियौ, नीकसँ नइ बुझलौं।"

धारक बहैत पानि जहिना पोखैर-इनारक असथिर पानिक सुधि बिसैर गंगा सागर दिस बढ़ैत रहैए तहिना दिवाकान्त काका दुनियाँक सभ सुधि बिसैर बजला-

"बौआ, बेसियो उमेरबला सभ पाकल केश रंगा, पाथरक दाँत बना मोछ कटा कऽ नव कवरिया जकाँ अपनाकेँ जुआन कहि केतेको बिआह कऽ लइए।"

मुस्की दैत उमाकान्त बाजल- "बेस बात काका कहि देलौं।"

अपन विचार जहिना दोसर बुझि कऽ मानि लइए, तैकाल जे खुशी बजनिहारकेँ होइ छै तहिना दिवाकान्तो काकाकेँ भेलैन। अठनियाँ हँसी हँसैत बजला-

"बौआ, उमेर चोरा लोक कमे उमेर कहि बड़का उमेरबलाक कान काटि कहिते अछि किने जे हम एतबी उमेरमे एते पढ़ि-गुनि नेने छी। उमेर रहत पचास बर्खक आ कहत जे बारहे बर्खमे माता सरस्वती हमरा सपनौती विद्या देने छैथ।"

किछु खेलाक पछाइत आकि पीलाक पछाइत जहिना मन भरि जाइ छै, अघा जाइ छै तहिना उमाकान्तोकेँ भेल। बाजल-

"काका, जलखै बेर भऽ गेल। भुखक तरास जगि रहल अछि। दोसर दिन आरो सुनब।"

दुनू हाथसँ उमाकान्तकेँ असथिर करैत दिवाकान्त काका कहलखिन-

"जलखै-बेर भऽ गेल तँ की हेतै, हमहूँ सभ अन्ने खाइ छी।"

पुतोहुकेँ सोर पाड़ि कहलखिन-

"जलखैयोक ओरियान करब।"

दिवाकान्त कक्काक आग्रह सुनि उमाकान्त बाजल-

"काका, जखन अहाँ अपन पेटक बात कहऽ चाहै छी तँ हमहूँ कहै छी दोहरा कऽ समए नै लगाएब, सभ बात बुझिये लेब।"

दिवाकान्त कक्काक मनमे ऐगला बात जेना उत्फाल मचबऽ लगलैन तहिना भेलैन। बजला-

"आलतू-फालतू बात छोड़ह ऐगला बात कहै छिअ।"

'ऐगला बात' सुनि उमाकान्तो अपन पियासल आँखि दिवाकान्त कक्काक आँखिपर देलक। आँखि-सँ-आँखि मिलिते दिवाकान्त काका बजला-

"पड़ोसिया गामक भाग्य जगल। एकटा कौलेज खुगल। ता हेमकान्तो आ हमहूँ- दुनू गोरे एम.ए. पास कऽ नेने रही। हेमकान्त

धुड़फन्दा लोक सभ दिनक, अगुआ कऽ कौलेजक हेड प्रोफेसर भऽ गेल। पाछूसँ हमरो बहाली भेल। सातम नम्बरक प्रोफेसर हमहूँ भेलौं। भगवानो ओकरे दहिन भेलखिन। दरमाहाक संग मुफतिया मालक जोगार सेहो कऽ देलखिन। उमेर तीन साल घटाइए नेने रहए, अपन सिहन्ता हम मनेमे मारि लेलौं, जे ई जिनगी इन्चार्य बनै-जोकर नइ अछि। तरे-तर मनक त्रिवेणी-घाट मरने-घाट बनि गेल।”

मनक उमकी उमाकान्तक जगि गेल। बाजल-

“काका, अनेरे केहेन लोकक जड़ि बीटियबै छी! छोड़ू, औझुका बात सुना दइ छी।”

दुनू हाथसँ उमाकान्तकेँ रोकैत दिवाकान्त काका बजला-

“भने अखैन तोहूँ छहे, विचारेक बात अछि। ई कहऽ जे खोज-पुछारि करऽ जाइ की नहि। अपराधीक हार होउ कि जीत, खोज-पुछारि की करत से के कहलक।”

‘विचार’ सुनि उमाकान्त ठमकऽ लगल। उमाकान्तकेँ ठमकैत देख दिवाकान्त काका बजला-

“बौआ, बरियातीक बात कहि दइ छिअ।”

उमाकान्तक मनमे भेल जे भरिसक फेर रजनी-सजनीक खिस्सा जकाँ सात दिन लगौता। तँए बिच्चेमे बाजल-

“बरियातीक बात छोड़ि दियौ काका, ऐगला कहियौ।”

उमाकान्तकेँ बिच्चेमे अँटकबैत दिवाकान्त काका बजला-

“बौआ, हेमकान्तक दोसर बिआह केना भेल से बुझल छह?”

ई प्रसंग सुनि उमाकान्तक जिज्ञासा जगल। बाजल-

“बेसी तेलिया-फुलिया कहैमे नइ लगाएब। सोझ-साझ कहियौ।”

खखास करैत दिवाकान्त काका कहऽ लगलखिन-

“बिआह होइले गेल शिलाकान्तक आ भऽ गेल शिलाकान्तक बापक।”

कहि देवाकान्त काका मुस्कुराए लगला। मकै आकि धान जहिना खापरिमे पहिने चनकैए तखन दोसर-तेसर रूप बदैल लाबा बनैए तहिना दिवाकान्त कक्काक चनकी उमाकान्तक मुँहकेँ लाबा बना देलक। हँसैत उमाकान्त बाजल-

“काका, कुमरम किनकर भेल रहैन?”

जहिना हँसी उमाकान्तक तहिना बतीसो दाँतक बतीसोअना हँसैत दिवाकान्त काका कहलखिन-

“कुमरमेटा केँ की कहै छहक जे तेरह लाख रूपैओ बेटेक नामसँ बैंकमे जमा भेल।”

‘तेरह लाख रूपैआ’ सुनि जेना उमाकान्तक मनमे औझुका घटना नाचि उठल। बाजल-

“ई केना भेल?”

दिवाकान्त-

“ई भेल जे सिनूरदानक समए शिलाकान्त रूसि रहल। सिनूरदान करैले तैयारे ने भेल। हेमकान्तकेँ बजा आँगन लऽ गेलैन। चालू-पुरजा लोक हेमकान्त सभ दिनक, सिनूर उठा कन्याक माङमे लगबैत बाजल-

‘बेटा नइ सिनूरदान करत तँ बेटाक बाप करत!’

..अपन चलाकी सुतारै दुआरे हेमकान्त जोर-जोरसँ चारि-पाँच बेर बाजिते रहल।”

छुब्ध होइत उमाकान्त बाजल-

“काका, कनी सोझरा कऽ कहियौ।”

अपन भारीपन देख दिवाकान्त काका आगूक बात बाजऽ लगला-

“बौआ, ओना हम सभ कौलेजक आठ-नअटा शिक्षक एकठाम बैसकखानामे रही। आँगनमे गल-गूल भेल। किछु गोरे, शिक्षकोमे सँ आ किछु परिवारो-समाजक बरियाती आँगन गेला,एक स्वरसँ सभ कहि देलखिन जे बिआह हेमकान्तेक भेलैन। कोनो पहिलुका रचल रचना छलै कि अनहोनी से अखनो धरि नइ बुझि पेलौं अछि।”

जिज्ञासा करैत उमाकान्त बाजल-

“लड़की केना राजी भेलैन?”

दिवाकान्त-

“लड़कीकेँ कि विचारैक पलखैत भेटल। तीन-चारि दिन विधि-बेवहारक होहामे बीति गेल। जाबे कन्याक मन थीर भेलैन, ताबे तँ शीलहरण भेल कन्याक विचारो-हरण ने भऽ जाइए।”

नमहर साँस छोड़ैत उमाकान्त बाजल-

“काका, वएह तेरह लाख रूपैआक लेनी-देनीक झंझट दुनू बापूत- हेमकान्त-शिलाकान्तक बीच भेल। धचगर बेटा एक्के बाँसक टोन तेना कपारपर मारलकैन जे बिच्चे–बीच ढाहियो देलकैन आ तरे-तर थौकचो केने छैन।”

नमहर निसाँस छोड़ैत दिवाकान्त काका बजला-

“जेकरा खोज-पुछारि करऽ जाएब ओ तँ भाइये गेल। केते दिन जीब, आब किए मन मोलि करब।”



तिथि : 29 मई 2015, शब्द संख्या : 3231

मथाहाथ

जेठ मास। उपनाइन, मूड़न आ बिआह-दुरागमनक संग घरवासक धुर-झार लगन चलैत। लोककेँ जेना मनेसँ हेरा गेल जे आगूओ लगन हएत कि नहि। सभ एकमुहरी जे जेते काज अगुआ कऽ भऽ जाइ छै, ओतेसँ परिवार निचेन भऽ जाइए। तँए अपना-अपनीकेँ सभ काजक पाछू जी-जानसँ भीरल।

मुदा से नइ, धिया-पुताक बाढ़ि एने अहिना होइ छइ। तहूमे हम सभ मिथिलामे बास करै छी किने जैठाम माटि-पानि, रौद-वसात बारहो मासक बारहो मौसम बनौनहि अछि। जइसँ बारहो विरहिनीसँ लऽ कऽ मनुख धरिक जनन शक्ति ऐछे, तँए ओइ जनन शक्ति धारिणीकेँ किए ने नमन करबैन।

तीन बजेक बेरूका समए, रौदक संग उमस अपन सोल्हो श्रृंगार केने, हवा गुम, तहूमे पैछला सालक छह-मसिया रौदी गाछो-बिरीछक सेखी उतारिये देने अछि। मुदा तैयो रस्ता-पेरापर राही-बटोही बाजा-गाजाक संग डाला-पौतीक गाड़ी-सवारी धुर-झार चलिते अछि।

परसूक सात ठामक नौत-हकार लाल काकाकेँ छैन। छह ठामक तँ परिवारक बुझि परिवारकेँ सुमझा देलखिन मुदा सातम सासुरक छिऐन तँए अपना सिरे रखि विचारै छला।

चाह पीबैक मन हमरो भेल। एकटा नवका गप नेने लाल काका

लग पहुँचलौं। मथाहाथ देने किछु विचारैत रहैथ, चाह नइ पीने रहैथ, मुदा वेरूका चाह पीबैक समए भाइये गेल अछि।

हमर यात्रा नीक छल जे पहिने चाहेक आग्रह भेल आकि लाले कक्काक यात्रा नीक छेलैन जे बिनु बजौनहि दोसर कजबिचरी विचारक भेट गेलैन, ई तेहल्ला जानैथ। अहाँ कहब जे विचारक तँ विचारवान होइए मुदा से छी नहि। हम छी जे जखन विचारैक विषय, कुतरूमक चटनी जकाँ हलसँ पीसा गेल रहैए तखन आँगुर भीड़ा जीहमे लगा चाटि लइ छी। से लालो काका बुझै छैथ। जहिना नवका गप सुनबैक गर हमरा लागल तहिना काजक विचार करैक गर हुनको लगलैन तँए दुनू गोरेक यात्रा शुभ-शुभ रहल।

चाह आएल, दुनू गोरे चाह पीलौं, पान आएल, पानो खेलौं। बड़ चिक्कन बड़ बढ़ियाँ, मुदा अपना दरबाजापर लाल काका अपन समस्या अगुआ कऽ किए सुनौता, तँए हमर बात सुनैले आँखि-कान ठाढ़ केलैन।

हम सोचलौं जे मथोहाथ कि लोक बिपैतिये पड़ने दइए, बिपैतक जड़िओ खोदियबै काल सेहो लोक मथाहाथ दइते अछि। से जँ नइ देत तँ आनक माथा अपनामे भीड़तै केना। जेबीसँ एकटा परचा नेने आगूमे देखबैत कहलयैन-

“काका, अपना देशमे तेते ने गाड़ी-सवारी बढ़ि गेल जे वायु-प्रदूषण भेने साँस लेब कठिन भऽ गेल अछि।”

कहि परचा आगूमे देलिऐन। हमर बात सुनि लाल काका मने-मन बाघ जकाँ गुम्हरऽ लगला मुदा बजला किछु ने। दोहरा कऽ किछु बाजब अपनो ने उचित बुझलौं, मुदा पियासल नजैर नजैरपर जरूर देलिऐन। नजैर पड़िते नजराना देलैन-

“बौआ, जइ गाममे सवारीक नामपर अखनो टायरगाड़ी, घोड़ा

आ पैडिलबला साइकिल अछि, दू-पहियो इंजिनबला गाड़ीसँ भेँटो ने भेल छै तैठाम गाड़ी-सवारीक धुआँसँ वायु प्रदूषण हएत?”

कहि चुप भऽ गेला। मने-मन भेल जे ई तँ केकर दिनक पइर भऽ गेल जे सबालक जवाब सवाले भेल। जमल आगिकेँ खोंरनीसँ, इंजिनकेँ नोजलसँ आ मनुखकेँ नारी पकैड़ जहिना गति-विधि जाँचल जाइए तहिना काकाकेँ खोंरनीसँ खोरियबैत पुछलयैन-

“काका, जे कहलिऐ से नइ बुझि पेलौं।”

ओना लाल कक्काक मन नौत-पिहानीसँ लऽ कऽ जेठुआ धुर-झार लगन दिस देखैत रहैन, तइ बीचमे उठौल हमर सबाल छल। तँए जनु अनमनाएले जकाँ उत्तर देलैन-

“बाउ, दुनियाँ बड़ीटा छै, रंग-बिरंगक देश-कोस, रंग-बिरंगक चालि-ढालि आ रंग-बिरंगक बात-विचार अछि, तहीमे ने अपनो सभ छी।”

बुझि पड़ल जे काका किछु बजबऽ चाहै छैथ। मुदा दू गोरेक गप-सप्प जँ बेरा-बेरी नइ चलत तखन फलो तँ नहियेँ निकलत। एकटा भेल वक्ता दोसर भेल श्रोता, मुदा अभाव तँ अछि कर्ताक। हूँहकारी भरैत कहलयैन-

“हँ, से तँ छीहे। एकरा के काटत। आ जँ काटत तँ ओकरो हाथक ओंगरी काटि लेबइ!”

हमर बात सुनि लाल कक्काक मन चढ़लैन। बजला-

“रमेश! वकिंगधम सन एहनो चौराहा अछि जैठाम लाखो गाड़ी टपैए, आ एहनो तँ गाम ऐछे जैठाम माटियोक चौराहा ऐछे नहि।”

कक्काक बात नीक लागल। सह दैत कहलयैन-

“हँ से तँ अछिए।”

धारक पानि जकाँ लालो कक्काक मन बहैत आगू बढ़लैन। बजला-

“बौआ, अपन गाम केहेन अछि। एकर विचार करब अपना सबहक पहिल काज छी।”

मुड़ी डोलबैत कक्काक सूरमे अपन सूर मिलबैत बजलौं-

“हँ से तँ छीहे।”

जेना लालो काकाकेँ हमर बात बुझले रहैन कि की, सिनेमाक रील जकाँ दोसर दृश्य जोड़ैत बजला-

“बाउ, अहाँ जेकरा वायु प्रदूषण कहै छिऐ, ओ केना होइए, केते रंगक अछि, पहिने एकर ने विचार करब।”

पौरुकाँ साल ‘वायु पुराण’ पढ़ने रही, सभ बात तँ नहि, मुदा उनचास रंगक वायु अछि, से मने अछि। लाल कक्काक बात ओराएलो ने रहैन कि बिच्चेमे बजलौं-

“व्यास बाबा उनचास रंगक वायु कहने छैथ।”

जेना हुनको गर भेटलैन कि की, धाँइ दऽ बजला-

“बस, भने तूँ व्यास बाबाक विचार मन पाड़ि देलह। व्यास बाबाक सखारीमे की सभ सजल अछि, से तँ बुझले छह। अनेको रंगक वस्तु-जात भरल अछि। ओही सखारीकेँ खोलि-खोलि देखहऽ जे माँ जगदम्बा की सभ साजि-साजि रखने छैथ।”

कहि चुप भऽ गेला। मनमे भेल जे तेहेन विचार लाल काका आगूमे रखि देलैन जे हमरा तँ तीन साल पुराण सबहक नामे भँजियबैमे लगि जाएत। तरका बात[5] बुझैमे तँ जिनगीए टपि जाएत, तखन बुझब कहिया आ विचारब कहिया। मुदा सबालो तँ ओहने अछि जेकरा

[5] रहस्यमय बात

नकारलो नइ जा सकैए। ईहो नइ कहल जा सकैए जे लाल काका अनेरे हमरा कि कहि देलैन। चुप छोड़ि दोसर उपाइए की। मुदा जइ रस्तामे पहाड़ पड़ि जाए आकि धार पड़ि जाए चाहे कटारि पड़ि जाए, से टपब कठिन अछि, मुदा बगलि कऽ दोसर रस्ता तँ पकड़ल जा सकैए। कहलयैन-

“काका, अपना सबहक प्रदूषण दूषण अछि कि भूषण?”

लाल काकाकेँ हमर बात नीक लगलैन। मुदा बुझि पड़ल जे जहिना कटहर खेलहाकेँ कण्ठ लग कटहरेक सुआद, लताम खेलहाकेँ लतामेक सुआद आ दारू पीलहाकेँ दारूएक सुआद लटकल रहैए तहिना भरिसक छैन। मुदा तैयो शहरसँ पड़ा गामक विचारमे घुमैत बजला-

“बौआ, गाम नामेक नइ होइए कामोक होइए।”

मनमे भेल जे लाल काका की कहि देलैन। पुछलयैन प्रदूषणक बात आ कहि देलैन नाम-गाम आ काम-धामक बात। जेना कछु खेबाक इच्छा जगिते मन ओहने चटपटए लगैत जेहेन वस्तु खेबाक इच्छा होइए, तहिना भेल। मुँहक ठोर चटपटाइत देख, बजला-

“बौआ, मनुखे नहि आनो-आनो जीव-जन्तु वायु साँस लेबो करैए आ छोड़बो करैए। जइसँ ओकर जिनगीक धार बहैत रहै छइ। मुदा प्रश्न तँ ओतौ उठिये जाइए जे केहेन वायु लइए आ केहेन छोड़ैए।”

लाल कक्काक विचारक समतूल अपनाकेँ नहि पाबि कहलयैन-

“गामक बात तँ छुटिये गेल!”

हमर बात सुनिते लाल काका चौंकला। चौंकला ई जे गाम तँ समुद्रोसँ गहींर पहाड़ोसँ ऊँच आ दुनियाँसँ नमहर अछि, ओकर पार पुराएब असान थोड़े अछि! तखन तँ जएह अछि तेहीसँ भरब, सैह ने।

बजला-

"बौआ, बम्बइमे जे हवा अछि ओ गामक हवासँ भिन्न अछि, हजारो रंगक हवा अकासमे पसरल अछि, जेकरा जेते दम छै से तेते जगह छेकने अछि।"

लाल कक्काक बात ठीकसँ बुझि नइ पेलौं तँए हूँहकारी देब छुटि गेल। मुदा हूँहकारी बन्न भेने ओ बुझि गेला। बजला-

"बौआ, नीक-सँ-नीक, पवित्र-सँ-पवित्र वायु सेहो वायुमण्डलमे अछि आ अधला-सँ-अधला, मधुर-सँ-मधुर, अमृत-सँ-अमृत, तीत-सँ-तीत आ जहर-सँ-जहराएल वायु सेहो अछि। मुदा वायुमण्डल तँ वायुमण्डल छी, सबहक छी, सभ रहबे करत।"

लाल कक्काक सोझ बात सुनि बुझबो केलौं आ नीको लागल। जे से सभ किछु मधुरे जकाँ मीठो अछि आ खटमिठो अछि। तँए आगू बुझैले कान उठेलौं। आकि लाल काका बजला-

"बड़-बड़ लीला अछि मनरंगमे, बौआ!"

बुझि पड़ल जे हमरोसँ बेसी लाले काका मधुरमणि बनि गेला अछि। मधुमाछीक तान भरैत कहलयैन-

"काका, जाए दियौ वायुकेँ हवामे। अपना सभ जेतए छी तेतुक्का...।"

आगू बजैले रहबे करी आकि बिच्चेमे लाल काका ऊपरे लोकि लेलैन, बजला-

"हवासँ कि पानि-माटि कम खेलाड़ी अछि?"

गपक क्रममे तँ हूँहकारी भरि देलिऐन मुदा लगले मन पचतए लगल जे ई की हूँहकारी भरि देलिऐन! जहिना माटि असथिर रहैबला तहिना ने पानियोँ अछि! मुदा खेलाड़ी तँ खेलक मैदानमे खेलैए। जेना-

जेना मन मुड़ियाइत जाए तेना-तेना मुँहक सुर्खी सेहो मलिन होइत जाए। कण्ठक पानि सेहो धीरे-धीरे सुखए लगल। मुदा से लाल काका बुझि गेला। केना बुझि गेला से तँ ओ जानैथ। बजला-

"बौआ, माटियेक धरती बनल छै आ धरतीयेक खेतसँ गाम-घर, देस-कोस बनल अछि। कहैले तँ माटिये छी मुदा माटियोक तँ अनेको रंगक रूप-रंग अछिए। नीको अछि अधलो अछि। तैसंग नीकोमे नीक अछि आ अधलोमे अधला अछि। मुदा छी तँ धरतीए। जेकरा छोड़ल तँ नहियेँ जा सकैए। तँए ईहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए जे सभमे एके रंग गुण-अवगुण छइ। केकरो सोना उपजबैक गुण छै तँ केकरो हीरा। केकरो पाथर उपजबैक गुण छै तँ केकरो कोयला।"

ओना लाल कक्काक बात सुनैमे नीक लगैत रहए मुदा मन जेना भरि कऽ अगधा गेल तहिना अकछए लगल। कहलयैन-

"उखराहा उसरैपर भऽ गेल, अपराहणक सभ काज पछुआ रहल अछि।"

हमर अकछाएल विचार लाल काकाकेँ नीक नइ लगलैन, बजला-

"मन अकछा जाए तँ चारि डेग टहैल आबी चाहे चाह पीब ली। मन ठीक भऽ जेतह। मुदा अधखिज्जू धान जहिना चाउर नइ भेल, अधपक्कू आम जहिना पाकल आम नइ भेल तहिना अधखिजू बातो तँ विचार नहियेँ ने भेल।"

लाल कक्काक विचार सुनि अपनो विचार जगल, जगिते उठल-माटिक चर्च काका केलैन, मुदा पानिक तँ छुटले छैन। केना नइ मनमे कुवाथ हेतैन जे तेहेन जुग-जमाना आबि गेल जे कियो केकरो बात-विचारमे रहैक कोन बात जे सुनौं ने चाहैए। जखन कि मरियाएल मन लगले जगजियारो नहियेँ बनि सकैए। मुदा समए संग देलक, तखने

एकटा झमटगर बरियाती छोट-पैघ सतरहटा गाड़ीमे गाजा-बाजाक संग पीह-पाह करैत रस्ते-रस्ते पास करए लगल, जइसँ हमरो कान ठाढ़ भेल आ लालो कक्काक कान ठाढ़ भेलैन।

दुनू गोरेक आँखियो चकोना होइत रस्ता दिस बढ़ल, ताबे बरियाती सोझहा आबि गेल। जेना-जेना बरियाती आगू बढ़ैत गेल तेना-तेना दुनू गोरेक मनो बदलैत गेल। लालो काका पाछूक छुटल बात बिसैर गेला आ अपनो मन लगन दिस बढ़ि गेल। बरियातीक चाल-चूल जखन शान्त भऽ गेल तखन लाल काका बजला-

"बौआ, आब कि तोहूँ कोनो बाल-बोल रहलह जे दुनियाँ-दारीक गप-सप्प नइ बुझबहक।"

कहि चुप भऽ गेला। लाल काकाकेँ चुप होइते मन उधियए-उफनए लगल जे कक्काक नजैरमे आब हमहूँ बाल-बोध नइ रहलौं। मुदा दुनियाँ-दारीक बात बुझब ओते असान अछि जे लाले काका कहने हम लगले चेतन भऽ जाएब। सामंजस्य करैत बजलौं-

"काका, आब कि लोक बेटा-बेटीक बिआह थोड़े करैए, आब तँ धुड़-खेल खेलैए।"

अनठेकानले विचारक तीर जेना लाल काकाकेँ छातीक बीच हृदयमे लगि गेलैन। एकाएक अपन जिनगीक धारमे पहुँच गम्भीर होइत बजला-

"बौआ, संग मिलि करी काज, हारने-जीतने कोनो ने लाज। एकटा विचार करैक अछि।"

'एकटा विचार करैक अछि।' लाल कक्काक मुहेँ सुनिते हमरा अपने-आपमे विचारवानक भान भेल। देह-हाथक संग बुधियो-विवेककेँ असथिर केलौं। असथिर करिते आँखि उठा लाल कक्काक आँखिपर देलिऐन जे केहेन बात उठा विचार करता। हमर हाव-

भावसँ लाल काका बुझि गेला जे रमेश बुझै-विचारैले तैयार भऽ गेल तँए विचारैक विचार रखैत बजला-

"बौआ, परसूका लगनमे सात ठामसँ नोत-हकार आएल अछि।"

हमरो मन असथिरे रहए, बिच्चेमे टोनैत कहलयैन-

"एहेन शुभ समाचार तँ लछमी पात्रे आकि लछमिनियेँ परिवारक होइए, तखन ऐसँ नीक की हएत।"

अपना मने तँ हम सकारात्मक विचार लाल काकाकेँ देलिऐन मुदा से हुनका मनमे नइ पचलैन। मन भीन-भीना गेलैन, जे से मुँहक रूखि मलिन हुअ लगलैन। मलिन होइत चेहरा देख मनमे हुअए जे एहेन बीचमे कोन विचार आबि गेल जे सकारात्मक नकारात्मक रूपमे बदैल गेल! कोनो भाँजे ने बुझि पबैत रही। एकटा युक्ति सूझल, सूझल ई जे जेना-जेना लाल कक्काक चेहरा मलिन भेल जाइ छैन तेहने शीशाक जँ ऐना बना देखब तखन स्पष्ट रूपे बुझि पाएब...।

..हमर बात जेते लाल काकाकेँ बेधने रहैन तइ हिसाबे नहि, कनी बीच-बचाव करैत बजला-

"बौआ, सातो नोत-हकार कि एके रंगक अछि। केतौ बिआह तँ केतौ मूड़न, केतौ दुरागमन तँ केतौ घरवास अछि। जँ सातो काज कनियोँ हटल-हटल रहैत तँ अपने जा सातो पूरि लइतौं। मुदा से सम्भव अछि।"

संयोग नीक रहल मुहसँ निकैल गेल-

"जिनकर-जिनकर काज छिऐन तिनका-तिनका सुमझा दियनु। माने ई जे परिवारक बीचोमे काज हटल-हटल अछिए। जँ किनको नैहरमे काज छिऐन तँ पहिने नैहरवाली वा मात्रिकबला चाहे सासुरबलाक पहिल काज भेल, तखन ने समधियौरबलाक हएत।

तहूमे जँ समधियौरबलाकेँ अपने सासुरमे आकि मात्रिकमे काज रहत तखन ओ समधियौर केना जाएत?”

हमर बात सुनि लाल कक्काक मन टनमनेलैन। टनमनाइते टनटनाइत बजला-

“हँ, सएह केलौं। सातमे छअटा कें तहिना सुमझा देलिऐ बाँकी एकटा रहल।”

लाल कक्काक मन हल्लुक होइते कहलयैन-

“सातटा काजमे जँ छअटा निपैट गेल, तखन एकटा की भेल। ओ तँ लबे-दुआमे चलि जाएत।”

चरिचकिया गाड़ीमे जहिना एकटा चक्का जाम भेने बाँकी ओहो तीनू अपना चालिये नहि चलि, घिसियाइत चलैए, लालो कक्काकेँ भरिसक तहिना भेलैन। अपन सासुरक जिनगी दिस नजैर दौड़ गेलैन। दौड़ ई गेलैन जे अनका जकाँ सासुरोकेँ अखन धरि सासुर कहाँ बुझलौं, जिनकर घर-दुआर माने नैहरक परिवार छेलैन हुनके काजो-उदेम सुमझा देने छेलिऐन। वएह ने काज-उदेममे ऐगला बाहन बनि जाइ छेली आ काजक निमरजना करै छेली। मुदा आब...।

‘मुदा आब’क माने पैछला साल लाल काकी मरि गेलखिन। नैहरसँ आएब-जाएब, लेन-देन, नीक-बेजए सभ लाले काकीक हथौटी छेलैन, जे आब...।

अपने लाल काका बोझ परहक आँटी जकाँ अपनाकेँ बुझै छला। जहिना सिल्ली आगू अगो भलेँ सूपक वस्तु भेल, पथारक नै भेल। मुदा भेल तँ अगोए। तहिना लालो काका अगो रहितो बोझे परहक आँटी जकाँ रहैत आएल छैथ। बिआहक पछाइत बर-कन्याकेँ परिवारिक बनि परिवार बसाएब जिम्मा भेबे कएल। जे केतेकेँ अबूहो लगै छै आ केते जिम्मा बुझि कन्हेठो लइते अछि। एहने स्थितिमे लाल

काका सासुरक नौत पुरैक विचारमे मथाहाथ दऽ बैस कऽ विचार करैक सूर-सार करिते रहैथ कि हम पहुँचल रही।

जइ समए लाल कक्काक बिआह भेल रहैन तइ समए लाल काकी बीस बर्खक छेली। तीन बहिन आ चारि भाँइ रहैथ। जे अखैन चारिम सीढ़ीपर पहुँच गेल छैथ। एक भाए आ एक बहिन लाल काकीसँ छोट रहैन। चारि भाँइक भैयारीक पिताक बेटी लाल काकी छेली। ओना चारू भैयारीमे सहोदर-पितियौत लगा तेरह भाँइ आ एगारह बहिन छेली। मुदा परिवार शामिल रहने सम्बन्धमे कोनो दूरी नहियेँ छेलैन। आने काज जकाँ माता-पिताक श्राद्ध बेटा-बेटीकेँ पालव-पोसव, बिआह-दान परिवारक नियमित काज छेलैने। जेकरा वैदिक पद्धैत कहियौ आकि मैथिल पद्धैत कहियौ।

पहिल पीढ़ी बीतैत-बीतैत माने चफलगर बाल-बच्चा भेला पछाइत चारू भैयारीमे भिनौज भेल। दू भाँइक एक-एक-टा बेटा दिल्लीमे नोकरी करऽ गेला, जैठाम नव कमाइओ आ नव हवो-वसातसँ भेँट भेलैन। जइसँ भैयारीमे भिनौजक सम्भावना बनल। सम्भावना ई जे अखन धरि चारू भाँइक सम्मिलित परिवारमे सम्मिलित कारोबार आ काजो-उदेम छेलैन। मुदा दिल्लीक आमदनी दुनू भाँइकेँ नैतिक मतिपर प्रहार करैत आर्थिक मति दिस बढ़ौलकैन।

आर्थिक मतिक संस्कारमे गति सेहो आबिये रहल छल मुदा तइसँ एकटा विर्डो जकाँ झोंक उठल। जइसँ चारू भाँइक बीच भीन-भिनौज भेलैन।

मनुखसँ लऽ कऽ घर-आँगन, खेत-पथारक संग कुटुमो-कुटमारे बँटा गेलैन। अपन-अपन सासुर तँ बँटा गेलैन मुदा मात्रिक रहि गेलैन सझिया। बीस-एक्कैस बर्खक अवस्थामे लाली सासुर एली। शुरूहेसँ लाल कक्काक मन उछटल रहैन, तँए बात-बातमे, विचार-विचारमे आ

काज-काजमे किछु-ने-किछु तरपट परिवारसँ अलग बुझिये पड़ैन जे अपन सीमा-सरहद अमीनसँ नापी करा काइम कऽ नेने छला। कोन काजमे केते समए लगाएब आ कोन काजमे केते हमर खगता छै, ओतेकेँ पूर्ति करब दायित्व भेल। जइसँ कोन तरहक सम्बन्ध आदमी-आदमीसँ, परिवार-परिवारसँ राखब।

लालो काकीक नैहरक जिनगी ओहन रहलैन जे केना सहोदर बहिन आ पितियौत बहिन एके थारीमे खेबो करै छेलौं, खेतो-पथार जाइ छेलौं आ हाटो-बजार, मेला-ठेला करै छेलौं। हाट-बजार आकि मेला-ठेला जाइए काल बाबू पाइ गनि कऽ दऽ दइ छला आ ओइ काजकेँ हम सभ पुरेने अबै छेलौं।

पचीस बर्खक अवस्थामे लाल काकीकेँ तीन सालक बेटा कोरामे रहैन आ तइ समैमे सत्ताइस-अट्ठाइस बर्खक लाल काका रहैथ। लाल कक्काक पितो सासुरक सम्बन्ध लाले काकाकेँ सुमझा देने छेलखिन।

लाल काकाकेँ सासुरसँ मूड़नक नौत एलैन। पिता पहिनहि सासुरक भार लाल काकाकेँ सुमझाइए देने छेलखिन। मूड़नक काजक विचार जखन लाल काका करए लगला तखन किछु वाध्यता सेहो भेलैन। भेलैन ई जे बच्चाक मूड़नसँ पहिलुका जिनगीक जेते अनुभव माएकेँ होइ छैन तेते बापकेँ नहि। केतेटा बच्चाकेँ केते बेर जाँतल-पीचल जाए, केते बेर दूध पिऔल जाए, कोन स्थितिमे केना राखल जाए, ऐ मानेमे माइए ने गुरु, पिता तँ चेला जकाँ कखनो तेल तँ कखनो जाफर, कखनो पसीदक पात तँ कखनो मधु आनि-आनि पुरौथिन।

सासुरक मूड़नक नौत लाल काका भिनौजीक भार तर पहिल बेर पड़ला। सेहो सुगर देख लाले काकीकेँ सुमझा देने छेलखिन। ओना

जखन लाल काकीकेँ नैहरक नौत आएल रहैन तखन अपनो बेटा मूड़न जोग भऽ गेल रहैन। सवा दुइए बर्खक बच्चाक मूड़न नैहरमे रहैन जखन कि अपन बच्चा पौने तीन बर्खक रहैन। से तरपट भेल दिन-बेरागनक दुआरे। मुदा तँए कि आगूक एगारम मासमे लाल काकी बेटाक मूड़न नइ करती सेहो बात तँ नहियेँ अछि। तँए अपनो सिरचढ़ मूड़नक काज देख लालो काकी मूड़नक भार उठबैत-उठबैत नैहरक सभ भार लाल काकी कन्हेठ नेने छेली जइसँ लाल काकाकेँ कन्हापर भार कहियो पड़बे ने केलैन।

थकमकाएल मन लाल काकाकेँ रहबे करैन। थकमकाएल ई जे परसुके नौत छी, अखैन तक विचारबो ने केलौं जे जाइ कि नइ जाइ, जाइ तँ केना जाइ, जँ जाइयेक विचार हएत तँ काल्हिये भरि ओरियान करैक समए अछि। अपन सिरचढ़ काज देख, लाल काका नमहर साँस छोड़ैत कहलैन-

“बौआ रमेश, तोहूँ कोनो आन छिअ, बाँटि कुटि खाइ राजा घर जाइ।”

जहिना झँपले-तोपल बात लाल काका बजला, हमहूँ तहिना झँपैत कहलयैन-

“काका, अनेरे लोक दुनियाँक मगजमारीमे अपनो मगजकेँ मारैए। तइसँ नीक जे...।”

आगूक बात मुहसँ निकलब बाँकीए रहए कि बिच्चेमे टोनियबैत लाल काका बजला-

“भने कहै छह। कहह जे आब ऐ चौथापनमे जे सासुरक मूड़नक नोत पुड़ऽ जाएब से केहेन हएत। ओइ गाममे लोक नइ अछि, कोनो कि रौदीमे सभटा सुखाइए गेल।”

लाल कक्काक चपचपी देख हमहूँ टोकारा देलिऐन-

“काका, कनी फरिछा कऽ कहियौ।”

लाल काका बजला-

“सासुरसँ नोत आएल अछि। चारिम सीढ़ीपर परिवार चलि रहल अछि। केते कहबह, सोझहे बुझहक जे हमरा सासु-ससुरक एक परिवारसँ चालीस परिवार बनि गेल अछि।”

मने-मन कक्काक मन टोनलयैन तँ बुझि पड़ल जे लालो काका सासुरक नौत पुरैक विचारमे नहियेँ छैथ। तँए नीक हएत जे हुनके मनक अनुकूल विचार दिऐन जे हरे-हरे कऽ मानि लेता। कहलयैन-

“काका, अहाँ कोन लटारममे पड़ल छी, अपना बेटाक हम मूड़न करेलौं, सोझहे जनमौटी केस कटा नाइक रजिष्टरमे नाओं दर्ज करा देलिऐ! सवा सेर चाउर आ ओकर संगी-तुरीया जे होइ छै- दालि-तरकारी से दऽ देलिऐ, वेचारा खुशीसँ अपन नीक देखैत बच्चाकेँ असिरवाद दैत चलि गेल।”

हमर बात जेना लाल काकाकेँ नीक लगलैन। तहिना मुड़ी डोलौलैन। शतरंजक गोटी जकाँ चाललौं-

“काका, जाबे लाल काकी छेली, ताबे ओ अपन निमाहलैन। आब ते ओहो नहियेँ छैथ, तखन अनेरे कोन मायाजालमे ओझरए चाहै छी।”

जहिना बहैत पानिमे चुट्टी खढ़ो-पातक सहारा पाबि अपन जान बँचा लइए तहिना लालो काकाकेँ भेलैन। बजला-

“भने कहलह।”

कहलयैन-

“जाबे लाल काकी मर्तलोकमे छेली ताबे सम्बन्ध छल, जखन ओ मृत्यु लोकमे चलि गेली तखन अनेरे...।”

धड़फड़ाइत लाल काका बजला-

“तखन?”

कहलयैन-

“काका, अहाँकेँ अपने चारि जुगक अनुभव अछि, तखन...।”

लाल काका बजला-

“बहुत चीज बिसरियो गेलिऐ।”

❍

तिथि : 02 जून 2015, शब्द संख्या : 2923

पहपैट

केता मासक पछाइत गुरु काकासँ भेँट होइक सम्भावना बनल। सेहो अहिना नइ बनल, चाहक दोकानपर उड़न्ती सुनलौं जे ससपेंड भऽ गुरु काका गामेमे बैसल छैथ। ओना गुरु कक्काक नाओं सुनि थकमकेलौं, थकमकेलौं ई जे पुरान सम्बन्ध अपनो अछि आ परिवारोक बीच रहबे कएल अछि। तँए कनतोपि, लागल-लागल चाहो पीबी आ गौआँ-घरूआक मुँह की कुचड़ै-कचड़ै छै से सुनबो करी। एक गोरे बाजल-

“गुरु काकाकेँ घूस लइके कोनो औझुके आदत छिऐन जे पहिल दिन घूस लेलैन आ पकड़ा कऽ नोकरी छोड़ि गाम आबि बैसल छैथ!”

शतरंजक गोटी जकाँ दोसर गोरे थोड़े आगूक सह दैत कहलकै-

“मीता, तोरा नीक जकाँ नइ बुझल छौ, किरानी भऽ कऽ हाकिमोक कान कटैए!”

तैपर तेसर कहलकै- “एहेन लोककेँ अहिना हुअए। आब बुझथुन जे बुढ़ाड़ीमे घी-ढारी केहेन होइ छै!”

तैबीच चाहक दोकानबला चेतौनी दैत बाजल-

“देखू! गहिंकी सभ बाहर ठाढ़ छैथ, अहाँ सभ एक कप चाह नइ पीब आ भरि दिन दोकान छेकने रहब।”

दोकानदारक बातक असैर भेल। बाहरमे ठाढ़ गहिंकी सेहो जोर दैत दोकानदारकेँ तखने टोकलकै-

“कियो तोहर चाह पाइ दऽ कऽ पीबै छह आ कियो मंगनीए पीबै छह जे कियो ठाढ़े-ठाढ़ पीबए आ कियो घन्टाक-घन्टा बैस बात बनबैत पीबए!”

गुरु कक्काक चर्च तर पड़ि गेल। दोसरे गप अगुआ कऽ आगूमे ठाढ़ भऽ गेल। दोकानदारोक आ बाहरमे ठाढ़ भेल गहिंकियोक बात सुनि मनमे अपन गलतीक बोध भेबे कएल। जँ गुरुए कक्काक घटना छिऐन तँ की ओ कोनो बाँटल छैथ जे हुनका ऐठाम जा कऽ पुछि नइ सकै छएैन, तखन अनेरे चाहक दोकानपर एतेकाल बैसबे किए केलौं।

गुरु काका हमर स्कूलेक संगी छैथ। समाजक बेसी लोक हुनका गुरुए काका कहै छैन, तँए हमहूँ कहलौं। ओना नाओं बहकानन छिऐन। बी.ए.तक दुनू गोरे संगे पढ़लौं। बी.ए. केला पछाइत हुनका जिला कार्यलयमे किरानीक नोकरी भेलैन आ हम स्कूलक शिक्षक छी। एहेन होइते छै जे केकरो निर्धरित नाओं लऽ कऽ चिन्हल जाइ छै तँ केकरो तहूसँ कम करि कऽ चिन्हल जाइ छै आ केकरो बेसी करि कऽ चिन्हल जाइ छै आ केकरो तहूसँ बेसी चिन्हल जाइ छइ।

रहै छी दुनू गोरे एके गाममे, मुदा टोल दू अछि। बीचमे कनीटा पाँतर छइ। पाँतरो ओहन नइ अछि जे कोसक-कोस मटियारी माटिक धनखेतीक होइ। बीघा दसेक पाँतर छै सेहो गाछीए-बिरछीसँ झाँपल अछि।

एक गाम, एकठाम रहितो बेसी दिनपर भेँट होइक कारण ईहो अछि जे ओ जिला कार्यालयमे किरानीक नोकरी करै छैथ आ हम स्कूलक शिक्षक छी से तँ अहुँकेँ बुझले अछि जे दुनू गोरेक काजो आ

काजक रूटिंगोमे एते दूरी बनि गेल अछि जे लङ्गोटिया संगी रहितो, एक गाम-समाजक रहितो मासो-मास ने वएह भेँट होइ छैथ आ ने हमहीं भेँट होइ छिऐन।

नोकरीमे दुनू गोरेक काज उनटा-पुनटा भऽ गेल अछि जइसँ एक-दोसरक बीच जरूरतो नहियेँ जकाँ रहैए। उनटा-पुनटा काज ई अछि जे ओ भरि दिन लिखनीबला काज करै छैथ आ हम पढ़नी-पढ़ौनीबला काज करै छी। दोसर रूटिंगक हेर-फेर सेहो अछि।

ओना दुनू गोरे गामेसँ जाइ-अबै छी, माने डेढ़ कोसपर हुनको ऑफिस छैन आ डेढ़-पोने-दू कोसपर हमरो स्कूल अछि। ओ मोटर साइकिलसँ जाइ-अबै छैथ आ हम एक-सलिया, दू-सलिया, तीन-सलिया सेनरेले साइकिलसँ जाइ-अबै छी। तीन सालपर अधोर दाममे बेचि नवका कसा लइ छी। अजमाएल ऐछे तीस-चालीस मिनट जाइमे लगैए। साढ़े दस बजे स्कूल खुजैक समए छै, साढ़े नअ बजे घरपर सँ चलै छी, स्कूलक चौकपर पान खाइत-खाइत समए भऽ जाइए, घण्टी बजैत ऑफिस पहुँच जाइ छी।

मुदा बहकाननकेँ से नइ छैन। भोरे नहा कऽ कहियो चाहो पीबै छैथ आ कहियो नहियों पीबै छैथ, तहिना जलखैयोक छैन। कल्लौक तँ छैन्हे। छुट्टी दिन छोड़ि कहियो दिनक खेनाइ घरमे नइ खाइ छैथ। अफसरक ऑफिस खुजैसँ पहिने किरानी सबहक ऑफिस आने ठाम जकाँ खुजिते छैन। काज करौनिहारोक कमी तँ नहियेँ अछि, केतबो सकाल बहकानन ऑफिस पहुँचै छैथ तइसँ पहिनहि चाहक दोकान, जलखैक दोकान सुआगत करैले ठाढ़ रहिते छैन। ओना काजोक भीर बेसीए छैन। एकटा छोट-छीन काजमे घन्टो-घन्टा माथ धुननाइ, घन्टा-घन्टा भरि लिखनाइक संग आमद-खर्चक हिसाब लगौनाइ तँ छैन्हे। धइन हुनके कही जे एते सम्हारि चलै छैथ।

ओना चौकपर सँ गामपर अबैत-अबैत ईहो बातक जानकारी भेल जे स्थानीय सी.आइ.डी.क नोकरी केनिहार अपने काजे गेल। जेना आन पहिने अपन परिचए दऽ दैत रहैन तेना ओ सी.आइ.डी.क परिचए नइ दऽ गामक परिचए देलकैन। मुदा बहकानन जहिना सभकेँ अपन परिचए काजसँ पहिने दऽ दैत तहिना देलकैन। गर देख ओ अपने नोट अपने हाथे पहिने धरा पाछू धऽ लेलकैन!

तीन दिन ससपेंड भेना भऽ गेलैन। लोक किछु बजैए, तइसँ थोड़े हएत। किताबोमे अछि आ बुझनिहारो बुझै छैथ जे पृथ्वी गोल छै, मुदा आँखिक सोझमे चापट नै अछि सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। तँए चाहे दोकानपर मन बना लेलौं जे बहकाननक खोज-पुछारि करऽ जरूर जाएब अछि।

फेर मनमे भेल जे काने-कान तँ केता गोरेक मुहेँ सुननहि छी जे बिना घूस नेने कोनो काज दिस बहकानन तकबो ने करै छैथ। केहनो इमानदार अफसर किए ने ऑफिसमे होथु, किरानीक हाथ पकड़ब कठिन तँ अछिए। कारणो अछि, मात्र दसखते टा ने अफसर करता आ जे घन्टा-दू-घन्टा, तीन घन्टा तक कलमक धार बहौलक ओ की ओहिना धारमे हेलल! तँए तेकर मुकाबला करब तँ कठिन अछिए। भाय! बड़ इमानदार छह तँ तोरा इमानदारीक भाषामे बुझबैक अछि, दसखतक पछातिक रखबार तँ हमहीं छी, अपन रखबारि केना छोड़ि देब।

चौक-चौराहा होइत दस बजे घरपर पहुँचलौं। मनमे उड़ी-बीड़ी लगले रहए जे संजोगो संग देलक। रबि दिनक छुट्टी अपनो हाथ लगले रहए। भूत जकाँ लङ्गोटिया संगी बहकानन लङ्गोटा पकैड़ लेलक, ने केम्हरो जाए दिअए आ ने लङ्गोटा छोड़ए। कखनो मनमे हुअए जे नहेने तँ सिनूर दहा जाइ छै, आ हम कि कोनो बहिखत लिखि देने छिऐन जे

अहाँ लङ्गोटिया संगी छी, नीक करब कि अधला करब हम संगी रहबे करब!

मुदा पत्नीक चपेटमे पड़ि गेलौं। चपेट ई जे जही गामक अपन पत्नी तेही गामक बहकाननोक पत्नी। पत्नीकेँ भाँज लगि गेलैन जे बहिन पेटकान लधने अछि। आब तिलकोरक तड़ुआ केतएसँ औत।

आगू-आगू पत्नी आ पाछू-पाछू अपने विदा भेलौं। बहकानन दरबज्जेपर बैस बेरूका चाह पीबैत रहैथ। अपने दरबज्जापर बैसलौं आ पत्नी सुरसुराएल दही-चूड़ा जकाँ अँगने पहुँचली। मुदा बहकानन एते रच्छ रखलैन जे पहुँचते पत्नीकेँ कहलखिन-

"बहू दिनक पछाइत मीतक भेँट-घाँट अछि, संगे चाह पीब।"

मनमे नचैत रहए तीन दिनक ससपेन्शनमे घर बैसल छैथ। अपने ने अपन सफाइ करैत दसठाम बजता जे एना-नइ-एना भेल। तँए तइ ताकमे रही। मुदा बहकाननक मन मिसियो भरि मलिन नहि, जे नोकरीमे ससपेन्शन कलंक छी। मनमे ई गदगदी बहकाननकेँ रहबे करैन जे दस-दस दिन, पनरह-पनरह दिनक छुट्टीमे केना रहै छी, तहिना बुझब। गामक लोक कियाँने गेलै जे हम ससपेंड भऽ गाममे छी। तँए पिछराह गाछ जकाँ देहमे छल-छली रहबे करैन।

दुनियाँ-दारीक गप होइत-हबाइत दिन लहसि गेल, आँगनसँ पत्नियोक समाद आबए लगल जे घर-अँगना करैक समए भऽ गेल, साँझ-बातीक बेर लगिचाएल जाइए।

'साँझ-बातीक बेर लगिचाएल जाइए' पत्नीक ई चिक्कारी भाषा रहैन। आनकेँ बुझल होइ आकि नइ मुदा अपने तँ बुझिते छी। असलमे चिक्कारी भाषा बजैक पत्नियोकेँ बाध्यता रहैन। बाध्यता ई रहैन जे बहिनक मुहेँ अपन बेथा कम आ लोकक मुहेँ सुनल बातक बेथा बेसी रहैन, जइसँ मन अकछा गेलैन। तँए साँझ-बातीक बहाना

बना लगले-लगले समाद पठबथि। ओना एकबेर झोंकपर समदिये दिअए कहियो देलिऐन-

"पहिल साँझ साँझ-बाती नइ पड़त तँ दोसर साँझमे पड़त आ जँ सेहो संजोग नइ बैसत तँ तेसर साँझमे देब। साँझ तँ साँझे छी।"

असलमे जहिना पत्नीक कान सुनैत-सुनैत तोपा गेलैन तहिना अपन कान ओहिना ठाढ़ रहए जे बहकानन किछु बजता तखन ने अराँची जकाँ खोंइचा सोहि दाना निकालि मुँहमे लेब! आकि बड़ धड़फड़ाएल छी तँ बिनु खोंइचा छीलिनहि मुँहमे लऽ लेब! आ जँ ओइमे पिल्लू होइ? मिरचाइक पिल्लूकेँ ने कड़ू तेलमे छौंक दऽ तरि कऽ खाइए मुदा अराँची आकि इलाइचीकेँ तँ से नइ अछि, काँचे खाए पड़त।

ओना बहकानन शुरूहेसँ पिछराह रहल, मुदा पीछराहो तँ पीछराह छी। केते रंगक चेहरा बना ठाढ़ अछिए। जेना लतामो गाछ पीछराह होइए आ सफेदक गाछ सेहो पीछराह होइए, मुदा दुनूकेँ एक बुझब नेनमैत हएत। नेनमैत ई जे लतामक गाछ पीछराहो रहैए तँ ओकरामे जड़ियेसँ सीढ़ी जकाँ डारि बनल रहै छै, संगे धड़ो धरियबै-जोकर रहै छइ। मुदा सफेद तँ सफेद छी, निच्चाँ-ऊपर एके रंग! ने पँजियबै-जोकर आ ने डारि-टहनी। तहिना माटियोक अछि। चिक्कनि माटि वा मटियार माटिक पीछरपन आ खरिआइ माटि वा बलुआह माटिक पीछरपन, एके रंग थोड़े होइए।

अन्तो-अन्त बहकानन अपन बात नहियेँ खोललैन। खोलबो कि करितैथ, सभकेँ बुझले अछि घूसक अपराधमे ससपेंड होउ आ घूस दऽ कऽ पिण्ड कटा गंगा लाभ भऽ जाउ! मुदा औहुना उठि विदा हएब नीक बुझि बजलौं-

"बहक! बहकैत-बहकैत एते ने बहैक जाइ जे बेसम्हार भऽ

जाइ, अखन जाइ छी फेर भेँट-घाँट हेतइ। कहिया तक गाममे छह?”

मुस्कुराइत बहकानन बाजल-

“तीनटा सी.एल बाँकी छल, मास अन्तिम छीहे तँए सोचलौं जे अपन हिसाब-किताब फरियैबते चली। काल्हि भरि छिअ।”

सुनि विदा तँ भऽ गेलौं। मुदा पत्नीक मन खसल-क-खसले देखलयैन।

❍

तिथि : 05 जून 2015, शब्द संख्या : 1369

इजोरिया राति

साढ़े पाँच बजे भोरे पिताजीक फोन पहुँचल। रिसिभ करैत प्रणाम केलिऐन। प्रणामक जवाब दैत पिताजी कहलैन-

“दादी कहै छथुन जे जाबे बेकलाक मुँह नइ देखब ताबे परान नइ छूटत।”

‘बड़बढ़ियाँ’ कहि पिताजीकेँ जवाब देलिऐन। मोबाइल रखिते मनक मोबाइल टनटनाएल। मनमे उठल दादी-माँ। ओही दादीक मुँहक बात आ हाथक काज देख आइ केरल सन पैघ शहरमे प्राइवेट ट्रान्सपोर्टक ओहन नोकरी करै छी जइमे सभ सुविधा मौजूद अछि! प्लेनसँ पटना होइत आइए गाम पहुँच जाएब। मुदा...।

लगले मन बदैल गेल, बदैल ई गेल जे जखन दादीक वचन छैन जे तोरे मुँह देखै दुआरे प्राण अँटकल अछि, तँ दू-चारि दिन देहेक कष्ट ने हेतैन, मनक तँ नइ हेतैन, दू-चारि दिनक पछाइते गाम जाएब। हँ-निहँस नीक जकाँ केनौं ने रही कि फेर मनमे उठि गेल- औझुका काज, औझुका रूटिंग। नहा-धो कऽ कपड़ा पहीरि चाह पीब, समुद्रमे बनल विवेकानन्दक स्मारक देखए अठबारे सभ रबिकेँ जाइते छी, ओकरे तैयारीमे रही आकि तखने गामसँ फोन आएल छल। उठि कऽ विदा होइक विचार मनमे उठबे कएल कि अगुआ कऽ उठि गेल- गाम जाएब।

केकरो किछु कहैक जरूरत ऐछे नहि, आठ बजेक प्लेन पकैड़ लेब, सोझहे पटना दस बजे पहुँचा देत, दू-अढ़ाइ घन्टामे पटनासँ गामक सीमान तक बस पहुँचा देत, जँ ओतएसँ पएरो जाएब, तैयो दिन लहसैत आइए गाम पहुँच जाएब। सएह केलौं।

ठीक दस बजे पटना हवाइ अड्डापर पहुँच गेलौं। पहुँचते विचार भेल जे बिनु पुछने-कहने गाम विदा भऽ गेल छी, गाम तँ गामे छी, अंगदक लंका। जे जाएब तँ असान अछि मुदा घूमि आएब कठिन। एक-दू दिनक बात रहैत तखन तँ अगर-मगर करैत छुट्टियो बँचा लितौं। मुदा तहूमे मैयाँसँ अन्तिम भेँट छी।

समए बेठेकान अछि। तैसंग ईहो तँ ऐछे जे अदहा रस्तासँ बेसी दूर पहुँचिये गेल छी, कहबैन जे पटना काजे आएल छेलौं, घूमि कऽ अखन केरल नइ आएब, गाम जाएब जरूरी भऽ गेल। दादी-माँ चलचलौ भऽ गेली अछि। ओना उमेरो भाइये गेल छैन, झुनकुट बुढ़ भाइये गेल छैथ।

स्टेशनसँ निकैल मुसाफिरखनासँ पहिनहि अपन कम्पनीक मालिककेँ फोनसँ सूचित केलौं। पछाइत गामक नम्बर मिला फोन लगेलौं। भैया फोन उठौलैन। प्रणाम करैत पुछलयैन-

“भैया, की समाचार अछि, दादी-माँ केना छैथ?”

भैया जवाब देलैन-

“सभ पूरबते अछि। दादी-माँ सँ गप करह।”

गोड़ लगैत दादी-माँकेँ पुछलयैन-

“मन नीक अछि किने, दादी-माँ?”

जेना ठोरेपर जवाब लटकल रहैन तहिना उत्तर देली-

“बौआ, पहिने गाम आबह तखन निचेनसँ गप करब।”

कहलयैन-

“पटना पहुँच गेल छी, कनीयेँकालक पछाइत गाम पहुँच जाएब। की सभ खाइ-पीबैक मन होइए कहू कीनने आएब।”

जवाब देली-

“सब दिन अपना हाथक खेलौं, आब ऐ उमेरमे अनका हाथक खाएब! किछो ने अनिहह। अपने सब किछु अछि।”

दादी-माँक जनम ओहन परिवारमे भेलैन जे जाति विभाजित समाजमे विभाजित जातिक बीच जातिक उच्च कोटिक परिवार छेलैन। एक शाखाक बीच अखन सात डारिमे विभाजित समुदाय अछि। माने एक जातिक बीच सात जाति बनि ठाढ़ अछि, जइमे एक-दोसरक बीच काफी दूरी बनियोँ गेल अछि आ बनियोँ रहल अछि। जेकर एलेक्शने-एलेक्शन रिनुअलो होइते अछि। अहुना समाजिक स्तरपर खान-पानक बीच छुआ-छूत अछिए।

दादी-माँक पिता शिक्षक। ओइ समैक शिक्षक जइ समैमे खाली पेट भरि खेनाइटा होइ छेलैन। जखन कि परिवारो समटले, छबे गोरेक परिवार रहैन। परिवारमे असगरे काजकर्ता पुरुख पिता रहैन, बाँकी पाँचो या तँ महिला छेलैन या तँ बाल-बच्चा। ओना पान-सात बीघा खेतो रहैन मुदा मालगुजारीक अभावमे केता बेर निलाम होइत रहलैन। मुदा शिक्षकक रूपमे जुरमाना माफ करैत आपस कऽ देल जाइ छेलैन।

दादी-माँक पिता घरसँ बाहर रहने ने माल-जाल खुट्टापर पोसने रहैथ आ ने खेती-पथारी अपना सिरे करै छला। कहैले बँटाइ लगौने रहथिन मुदा बँटाइयो तँ बँटेदार किसान आ बँटाइ लगौनिहार मालिकक बीचक कारोबार छी। तँए जेहेन जे बँटेदार किसान तेहेन तेकरा लाभ।

मास्टर साहैब सोझमतिया लोक, जे-जे बँटेदार कहैन- माने रौदी भऽ गेने हमर खर्चा डुमि गेल ओकर अदहा तँ अहाँकेँ दिअ पड़त, तहिना कहियो दाही कहि तँ कहियो कीड़ी-फतिंगीक प्रकोप कहि मास्टरे साहैबक ऊपर खाइन खसा दैन, मास्टरो साहैब बुझैथ जे दू गोरेक बीचक विवाद छी, ऐमे अनकर किए समए लेब। समैए ने सभ किछु छी, जँ समैक मालिक अपने बनि जाइ तँ कोन मलिकाना बाँकीए रहल। दुनू गोरे- माने बँटेदार मालिक आ बँटेदार किसान-क बीच अन्तो-अन्त यएह पनचैती होइन जे जे भेल से बीतल समैमे भेल, आबसँ धुअल-पखारल दुनू गोरे भेलौं। माने किनको ऊपर कोनो देनी-लेनी नइ रहल।

ओना मास्टर साहैबक जातिक बीच प्रतिबन्ध छेलैन जे महिला खेत-पथारक काज नइ करती, तैसंग शिक्षकक परिवार रहने अनुकूलतो छेलैन। माल-जाल नइ पोसती। नइ पोसैक कारण छल, अपने हाथे गाए दूहब परहेज छेलैन। ओना परिवारक सदस्यक चरित्र गठन जे छेलैन ओ इमानदारीक गठन छेलैन। जइसँ झूठ बाजब, केकरो कोनो वस्तु परोछमे छुअब, केकरो अवाच कथा कहब सभसँ परहेज छेलैन। मुदा कर्मठ इमानदार तँ मेहनतेक बलपर ठाढ़ होइत अछि, तेकर अभाव परिवारमे रहबे करैन।

हमरा परिवारमे दादी-माँक बिआह नइ हेबाक चाहिऐन। ओ शिक्षकक बेटी, शारीरिक श्रमसँ हटि पलित रहैथ, जखन कि हमर परिवार खेतमे काज करैबला छेहा बोनिहार, परिवारक बुत्ता बोनियेँ छल। मुदा जतिआरे बन्हन तँ एहेन होइते अछि जे कुल-मूलक जोड़ तकैए। जखन कि जोड़ हेबा चाही काजक जे जिनगीक बुनियाद छी। धन-सम्पैत नहि। कुल-मूलक रक्छा ठाढ़ जिनगी भेला पछाइते ठाढ़ रहि सकैए।

बस स्टेण्डमे उतैरते भैयाकेँ फोन करैत कहलयैन-

"कनी दादीकेँ फोन दियनु।"

फोन लइते दादी बजली-

"के छिअँ बेकला?"

"हँ"

"तोरेले बेकल छी।"

"किए बेकल छी?"

"साल भरिसँ तोरा नइ देखलियौ, तँए मन बेकल भऽ गेल।"

मनमे भेल जे जँ आइ हमहूँ गामे रहितौं, तखन दादी-माँकेँ एना बेकल होइक कोनो सम्भावने ने रहैत। मुदा...। अपनो कमजोरी केतौ-ने-केतौ जरूर अछि। चाहितौं तँ जैठाम नोकरी करै छी तहूठाम दादी-माँकेँ रैखतिऐन तैयो बेकल होइक सम्भावना नै रहैत। मुदा सबालो तँ सबाल छी, दादी तक परिवारकेँ बाहरक नोकरी केनिहार जे कियो रखने होथि, वएह टा ऐ परिस्थितिकेँ आँकि सकै छैथ। पाशा बदलैत आस लगा कहलयैन-

"दादी, ताबे अहाँ चाहपर नजैर दियौ, हम पहुँच रहल छी। दुनू गोरे संगे चाह पीब।"

दादी कि आब ओ दादी छैथ, आब तँ बेटा-पुतोहु, पोता-पोतीसँ भरल-पूरल परिवारक दादी छैथ, तहूमे जखन हमरा देखैले एते बेकल छैथ, तखन हमर चाहक तृष्णा सुनि आरो बेकल हेबे करती। एके मुहेँ, लगले सुरे जोरसँ बजली-

"एक गोरे आगू जा कऽ देखहक, कनियाँ अहाँ जल्दी चुल्हि पजाइर चाहक बरतन चढ़ाउ।"

अपना घरसँ कनी पाछूए रही आकि डेढ़ियापर ठाढ़ दादी-माँपर

नजैर पड़ल। मनमे तूफान जकाँ उठि गेल जे पहिने पएर छूबि गोड़ लागि किछु कहबैन आकि पहिने दुनू हाथ जोड़ि फरिक्केसँ कहैत लग पहुँच पएर छूबि किछु कहिऐन। मुदा से भेल नइ, अगुआ कऽ बजैसँ पहिने ऐगला बाहन जकाँ दादीए बजली-

"बौआ, खाइ-पीबैमे दीक ते ने होइ छह?"

दादीक बात सुनि मनमे हँसियो लगए आ ईहो हुअए जे दादी-माँ परिवारक नमहर इतिहास पुरुख सन छैथ, ओहिना थोड़े बजली। सभ कालखण्डक अपन खण्डित आ बिखण्डित इतिहास अछि...।

..ताबे दरबज्जापर पहुँच गेलौं। सभ किछु पहिनेसँ ओरिया कऽ दादी-माँ रखने छेली। पहुँचते पहिने पएर धो चौकीपर बैसलौं। दादियो-माँ बैसली, चाहो आएल। जेना दादी-माँसँ असगरे कोनो खास गप करब। तहिना परिवारक सभ कियो ओतएसँ सहैट गेला। खाएर जे से...।

दू-घोंट चाह पीब पुछलयैन-

"दादी, आइक समैमे खाएब-पीब कोनो तेहेन समस्या नइ रहि गेल अछि, तखन किए एहेन बात पुछलौं?"

हमर बात जेना दादी-माँक हृदैमे पहुँच गेलैन तहिना बजली-

"बौआ, उकड़ू आ सुकड़ू समए होइ छइ। जइ दिन ऐ घरमे बास लेलौं तइ दिनमे नैहरमे कहियो कोनो खेती-पथारीक काज नइ केने छेलौं। पेट बोनियाँ परिवारमे आबि गेलैं। बाधक रखबारक खोपड़ी जकाँ घर, अपना बीतो भरि जमीन नहि। दिनक-दिन बोइन-बुत्ता होइ छल, तइसँ कहुना-कहुना दुनू साँझ भरि पेट कि अदहा पेट खाइ छेलौं...।"

बिच्चेमे दादी ठमैक गेली। जेना आँखिक नोर मुँहमे चलि गेल होइन तहिना। एका-एक बाजबसँ रूकब देख पुछलयैन-

"तब की भेल?"

विस्मित होइत दादी बजली-

"मघाइर समए रहै, दौन-दोगौन, नार-पात समटा गेलइ। बोनिहारक काज हेरा गेल। मुदा से चेतलौं। चेतलौं ई जे, ताबे ससुर जीबते रहैथ, ओछाइन पकैड़ नेने रहैथ, कहलयैन- बाबू, एक गोरेक कमाइसँ परिवार ठाढ़ नइ रहत। परिवार ठाढ़ हएब भेल परिवार जनक ठाढ़ हएब, परिवार-जन ताबे तक नइ ठाढ़ रहत जाबे पेटमे दाना नइ रहतै। तइले तँ परिवारेक लोक ने सोचि-विचारि किछु करता।"

बिच्चेमे पुछलयैन-

"तैपर ओ की कहलैन?"

कहऽ लगली-

"बौआ, जहिना निरोग युवकक विचारमे आ रोगाएल-बुढ़ाएलक विचारमे पारिस्थितिक अनुकूल बदलाव अबै छै तहिना ससुर कहलैन, नीक-अधलाक विचार करैत आगू डेग उठाएब।"

फेर पुछलयैन- "तेकर बाद की केना भेल?"

कहलैन-

"नैहरमे खेत-पथारक काज करब वर्जित छल, मालो-जाल तहिना छल। मुदा ऐठाम खेत-पथार जाएब वर्जित नइ अछि। रहल बात परदा-पौसक, सोचलौं तेकरो रस्ता किछु-ने-किछु लगत। खेत-तमनीक समए आबि गेल छल। अन्हार-इजोत तँ रातिये-दिन ने होइए। रातिके पतिक संग कोदरवाहि शुरू केलौं। दू मासक कठिन मेहनैत चारि मासक जिनगी बना देलक। आठे मासक घटबी रहल, जे बोनिहारक अनुकूल समए छीहे। नैहरमे फूलक गाछ रोपि फुलवाड़ीक काज करिते छेलौं, ओहो लूरि रहबे करए। मनमे भेल, फुलबाड़ीए ने

बाड़ियो बनैए! तखन तँ फूल-फूलमे अन्तर छइ। कोनो फूल नीक फलो नीक सुगंधो दइए आ किछु सुगंधेटा आ किछु एहनो तँ ऐछे जे ने नीक फले दइए आ ने नीक सुगंधे।”

दादीक बात सुनि मनमे भेल- बाप रे! जँ दादी अबैसँ पहिने मरि गेल रहितैथ तँ एहेन अमृत वचन केतएसँ अबितए। गद-गद मने कहलयैन- “दादी, अहाँ कहियो ने मरब।”

जेना दादियोकेँ बुझले रहैन तहिना बजली-

“मासमे एक्के दिन मरैक डर होइए, बौआ। बाँकी उनतीस दिन कोन काल हमरा सोझा औत।”

दादी-माँ की कहलैन, से बुझबे ने केलौं। मुदा एक दिन आ उनतीस दिन मन रहल। पुछलयैन-

“दादी, ई की कहलिऐ- एक दिन आ उनतीस दिन?”

दादी बजली-

“बौआ, हमर जनम इजोरिया रातिमे भेल अछि तँए खाली इजोरियाक एकादसीक डर होइए जे कहीं...।”



तिथि : 07 जून 2015, शब्द संख्या : 1512

तीन जुगिया भाय

केता बरीसक पछाइत तीन जुगिया भाय भेँट भेला। सेहो कि ओहिना थोड़े भेला, भेला तखन जखन आँखि मिचौनी ओझरीमे तेना ओझरा गेलौं जे बिनु हुनके ओझरी छुटब कठिन भऽ गेल। लाख नाङैर पटपटेलौं मुदा जेते ओझरी छोड़बऽ चाही तइसँ बेसी लागिये जाए। बेसीक माने एक्के रंगक नइ, केतेको रंगक लगि जाए। कखनो छोटका ओझरी नमहर बनि जाए, तँ कखनो अनठिया आबि मन घोर कऽ दिअए। कखनो ओझरी-सोझरी मिलि अधसोझरू बनि जाए...।

भेल ई जे नअ बजे रातिमे मुड़नियाँ भोज खा कऽ आबि ओछाइन पकैड़ लेलौं। निशाँएल मन रहबे करए, माने अन्नक निशाँ फुटे आ बर-बरीक निशाँ फुटे चढ़ल रहए, मुदा ऐ सबहक कोनो मद्दी नइ, असल रहै जे भरि पेट सुअन भेटल, तेकर निशाँ चढ़ल रहए। ओछाइनपर अबिते हाफी करैत निनियाँ देवीकेँ आवाहन केलिऐन कि जेना ओहो हमरे बाट तकैत रहैथ तहिना धड़धड़ाएले आबि वर दैत सुता देलैन।

नीन पड़िते बिसैर गेलौं जे मुड़नक भोज तँ खा लेलौं मुदा खाइक हिसाब जोड़बे ने केलौं जे कोन वस्तु केना बनौल गेल, केना परसल गेल आ केते खेलौं। जँ से हिसाब नइ जोड़ि लितौं तँ जश-अजश केना बिलैहतौं।

निशाँएल मनक निशाँ रातिक निशाँएल नीन सन्ध्या बेलाकेँ एक्के बेर धोबिया घाट जकाँ तेना उठा कऽ फेकलक जे तेसर घाटपर पहुँचा देलक। संध्या बेलासँ सोझहे प्रात: बेलामे पहुँच गेलौं।

तीन भोरमे नीन टुटल, नीन टुटिते मुँह-कानमे पानि लेलौं। पानि लइते पढ़ै-लिखैक विचार मनमे उठल। पेटक अन्न जखन करोटिया लइ छै तखन चाहक क्षुधा तँ कम मुदा किछु करैक क्षुधा बढ़िते छइ। जहिना सभकेँ बढ़ै छै तहिना बढ़ल। ओना ओछाइनपर सँ उठि मुँह-कानमे पानि लऽ लेने रही, मुदा अन्हारे-अन्हार घरो आ घरक ओसारो रहबे करइ। ई काज- मुँह-कानमे पानि लेब- अन्हारेमे कऽ नेने रही। असलमे अन्हारोमे एहेन ठेकनाएल जगह अछि, जे दिनोमे आँखि मूनि जा सकै छी आ अन्हारोमे आँखि ताकियो कऽ आ मूनियोँ कऽ जा सकै छी। जहिना इतिहासक बात अछि-

‘चारि बाँस चौबीस गज अंगुल अष्ट प्रमाण

एते पर सुलतान है, मत चूको चौहान।’

तहिना अपनो घर-ओसार नपले अछि जे केते डेग टपने घरसँ निकलै छी, आ केते डेग टपने ओसारसँ...।

खेनिहारो सभ अपन नाप बनौनहि छैथ जे केते कौर कखैन खाएब। मुदा केते कौर कखैन खाएब तहूले तँ हिसाबक रेखागणित पढ़ऽ पड़त। जँ से नइ पढ़ि नेने रहब तखन तँ अनेरे जलखै बेरमे भरिपेटा कलौ खा लेब आ कलौ बेरमे अधपेटा जलखै चाहे जलपान जकाँ गिलास भरि पानि पीब लेब। तहिना बेरहट बेर रौतुका भरिपेटा कलौ खाएब आ बाइस बेरमे दिनका। जइसँ अनेरे दिन-रातिक बीच किरिया-कलाप करै-धरैमे कटमटीक संग कटकटी हेबे करत...।

मुदा से अपन हिसाब रेखागणितक डाँरि खींच, एक-दोसरसँ मुँह-मिलानी करैत खाइ-पीबैक हिसाब जोड़ि नेने छी। जोड़ि एना नेने

छी जे केतेटा दिन-रातिमे की सभ करैक अछि। जे सभ करैक अछि तइले केते उर्जा आ समैक जरूरत अछि इत्यादि...।

समए तँ समए छी। ओ अहाँ विचारे नइ अपने विचारे अपने गतिये चलैत आबि रहल अछि, चलितो अछि आ आगूओ चलिते रहत। दिनो-राति एना सटल अछि जे रहत दिन आ देखबै जे राति अछि आ रहत राति तँ बुझि पड़त जे दिन अछि। माने ई जे दिनक बारह बजेसँ सेकेण्डो भरि आगू बढ़ने रातिक हिसाब हुअ लगैए आ बारह बजे रातिक पछाइत दिनक। मुदा ऐ पछड़ासँ अपनाकेँ कात रखैत अपन दिन-रातिक निरमान कऽ नेने छी। केने एना छी, अन्हारमे आँखि छोट पड़ि जाइए तँए दुनियाँक तामैन-कोरैन करैमे बाधा हएत मुदा घर-अँगना भरिक दुनियाँ बना, जइमे डिबिया वा बिजलीक बौल लगा इजोत करैत दिने जकाँ बना कऽ धऽ तँ सकै छी।

पढ़ैक विचार मनमे औनाइत रहए, मुदा अन्हारे-अन्हार पसरल। ने अकासमे शुक्ल पक्षक चान आ ने घरमे बिजली-लाइन, आ ने कोनो दोसर इजोतक जोगाड़। ओना देशक आजादीक पैंसैठ बर्खक पछाइत बजलीक दर्शन गाममे भेल। जइ बीच तीन पीढ़ी ससैर कऽ आजादी-आजादी रटैत वंशक तीन सीढ़ी आगू बढ़ि गेल।

छोट-छीन हमर गाम रामनगर कोसिकन्हासँ बहुत हटल, कसवा कातक गाम छी । ओना कोसिकन्हासँ हटल रहने कोसी बाढ़िक आकि कमला बाढ़िक आकि नेपालक बर्खाक संग पहाड़क पिघलल बर्फक धफाड़ नइ पड़ैए, सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। कोसी बाढ़िसँ केतौ खूब उपजा हुअए आकि कोनो गामे गंगा लाभ भऽ जाए मुदा हमरा गामक तँ एते उपकार भेबे कएल जे चारि इस्वी[6]क बाढ़ि भीत घरकेँ भगा, ईंटा-पाथर दिस पठेबे केलक। तँए कि लोक चारि

[6] 2004

इस्वीसँ पहिलुका भीत घरकेँ बिसरियो तँ नहियेँ सकैए।

उन्नैस साए साठि-बासैठक करीब दरभंगासँ आगू बढ़ि बिजली झंझारपुरो दिस घुसकल। तइसँ पहिने गामक लोक किए सोचता जे बिजलियो सँ समाजमे इजोत अबै छइ। गामे-गाम केतौ पानिक कहात, केतौ अन्नक कहात तँ छेलैहे आ अछियो।

लोकक स्थिति आजादीक समए बदसँ बदतर छल। जहिना शासनक तहिना जीविकोपार्जनक। झंझारपुर-फुलपरास बिजली पहुँचने गामो-गाममे बिजलीक चर्च उठल। तेकर पछाइत जे पंचवर्षीय चुनाव भेल, तइमे गामक बिजलियो मुद्दा बनल। संयोग नीक रहल, गामक पच्छिम-उत्तर भागकेँ पकड़ैत, इसान कोणसँ दछिन मुहेँ घूमि पुबरिया सौंसे गामक सीमा पकड़ने काज आगू बढ़ल।

रामनगरक बगलेक गाममे बिजलीक इजोत हुअ लगल। केते चुनावमे लोक बिजलीक आश्वासनपर भोँट बिलहलक, मुदा गामक आँखि बिजलीक मुँह नइ देखलक।

नब्बे इस्वीक पछाइत गाममे बिजलीक सरकारी मंजूरी भेटल, ठीकेदारक माध्यमसँ कोटानुकूल पोल पहुँचल। गामक कोटा! एकेटा टोलमे गड़ैत-गड़ैत पोल सठि गेल। जे जोगीकेँ मन भाबए से वैद फरमाबए।

सरकारोक संग मजबूरी, बिजलीक उत्पादने नइ, तँ बिलहाएत की ऐहवक फड़। ई टोल, उ टोलक माने एक टोल, दोसर टोल तैसंग गामक सभ टोलक लोक झंझट उठौलक। लूटमे चरखा नफ्फा होइते अछि। बिजली गाममे पहुँचबे ने कएल, पहुँच गेल गामे झंझट।

नव शताब्दीक पदारपन भेल, गामक एक टोलमे बिजली पहुँच गेल जइमे पोल गड़ाएल छल। एते दिनक जे झंझट छल तइमे आरो सुधार भेल। मुदा झंझट लधले रहल, कनी-मनी अखनो अछिए।

रामनगर-ले बीस साए पनरह इस्वी शुभ रहल, बिजली लगि गेल। अपनो घरमे लगल।

पानि पीला पछाइत जखन बिजलीक स्विचपर आँगुर देलौं तँ बिजली नहि। पढ़ैले मन ओंघरनियाँ मारए लगल। मुदा बिजलीक इजोत नहि। गैस लाइटपर टॉर्च देलिऐ तँ बर्नल भंगठल बुझि पड़ल। बुझि पड़ल जे कोनो पार्ट छुटि कऽ खसि पड़ल छइ।

जहिना घर अन्हार गुप-गुप तहिना मनो अन्हार गुप-गुप भऽ गेल। ओही गुप-गुप अन्हारमे लालटेन मन पड़ल। रैकक तरमे लालटेन राखल। झोलाएल। गरदा-माटिसँ सौंसे देह भरल। चिन्हमे एबे ने करए जे कहियो यएह रोशनी दइ छल जइ रोशनाइसँ लिखै-पढ़ै छेलौं। रैकक तरसँ लालटेन निकालि, ओकरा कपड़ासँ झाड़ि-झूड़ि-पोछि-पाछि चिक्कन बनेलौं, मुदा टॉर्चक इजोतमे केतबो चिक्कनसँ साफ केलौं तैयो दोग-सान्हिमे गरदा लगल रहबे करइ। शीशा साफ करैत जखन लालटेनक बर्नल खोललौं तँ खजाना भरल तेलमे सूतक बाती भीजि सोगर बनि जरैले तैयार देखलौं। देखते मन खुशी भेल।

सलाइ सोझहेमे रहए, लालटेन नेसि रोशनीकेँ प्रणाम केलिऐन कि तीन जुगिया भाय नजैरक सोझमे आबि गेला। मुदा रोशनीक भकभकीमे झल-फल होइत रहने नीक जकाँ चीन्ह नइ सकलयैन।

लालटेन उठा किताबक रैक दिस बढ़ेलौं तँ थकियाएल किताबक थाकसँ कोन निकालि पढ़ब, से ताँइयेँ ने कऽ पबैत रही। एके थाकमे ऋृग्वेद, उपनिषद्, वेदान्त दर्शन, श्रीमद् भागवत, महाभारतक संग तुलसीकृत रामायणिक संग अध्यात्म रामायण, वाल्मीकि रामायणिक संग वुद्धदेवक संग्रहावली, कबीरदासक बीजक, सूरदासक सूरसागर, जायसीक पद्मावतक संग विवेकानन्दक विचार सजल छल।

जँ पहिने विचारि नेने रहितौं जे फल्लाँ पोथी पढ़ब, तखन तँ अस्पतालक केहनो सम्पन्न लाश कक्षसँ नम्बर मिला सर्र दऽ निकालि लइतौं, मुदा से भेल नहि। थाकि हारि असोथकित भऽ ओछाइनपर ओंघरा विचारऽ लगलौं, तँ बुझि पड़ल जे एतेकाल सँ अनेरे टप्पा-टोइया देलौं।

पोथी पढ़ब, मुदा कोन पोथी पढ़ब से विचार केने बिना ओझराएल छी। लगले मन पड़ि गेल- पोथी ने ही ज्ञान दिया है, पोथी ने गुमराह किया है...।

जखन पढ़ैले एतेकाल सँ मन ओंघरनियाँ दइए, तखन ओहन निर्दयी माइयो बनब नीक नहि जे बच्चा भूखसँ कनैत ओंघरनियाँ दिअए आ ओकरा दिस तकबो ने करिऐ।

लालटेनक इजोतक जे फकफकी रहै ओ टेमीक ऊपरक मोमड़ी जरैत काल तक फकफकाएल, मुदा जखन ओ अपन पुरान स्वरूपकेँ ज्योतिमे जरा लेलक, तखनसँ इजोतो फरिछा गेल। साफ, सुन्दर, सुहावन रोशनी अन्हारमे अपन रंग-रोशनाइ घोरि देलक। रोशनाइ घोराइते तीन जुगिया भाय अपन पोथी-पतरा नेने आगूमे आबि कहलैन-

“इजोतमे आँखि बन्न केने किए पड़ल छह, सुधीर?”

तीन जुगिया भाइक बात कानमे पड़िते आँखि सुरसुरा उठल। धड़फड़ा कऽ उठि भायकेँ गोड़ लागि ओछाइनपर बैसबैत अपनो बैसैत कहलयैन-

“भाय, आइ अहाँकेँ गंगा-कोसी धार जकाँ द्रुत गतिये बहैत देख मनमे असीम खुशी अछि।”

असीम खुशी सुनि, जहिना तराजूपर एक पलड़ामे वस्तु-जात आ दोसरमे बटिखाड़ा रखि तौलल जाइ छै तहिना तौलैत तीन जुगिया

भाय बजला-

“सुधीर, आइ जेतए पहुँच गेल छी, तइसँ आगूओ देखब अछि आ पाछूओ केँ मन राखब अछि, जँ से नइ रखि चलब आ कहबै जे बेटा परदेश गेने बापकेँ बिसैर गेल, से कहने थोड़बे हएत।”

तीन जुगिया भाइक विचार सुनि मन ठमकल। मुदा तेहेन ताड़-खजूर जकाँ विषयक जड़ि रोपि देलखिन जे बारह बर्खे जड़िये बन्हाएत। फरीच होइमे केते समैए रहल अछि जे ओछाइन धेने रहब। अपनो धड़फड़ाइत आ भाइयोकेँ धड़फड़बैत कहलयैन-

“भाय, जखन अपन मनक बेथा अपन रोशनीक रोशनाइ घोरि-लिखि कहऽ चाहै छी, तँ कहिये दिअ। मुदा सूर्योदयसँ पहिने अपन विचार समेट लेबए पड़त।”

जेना व्याकरणक संक्षेपण तीन जुगिया भायकेँ ठोरेपर रहैन तहिना बजला-

“तोरा अबूह बुझि पड़ै छह, फोरनसँ पेसतर हमर विचार उसैर जाएत।”

भाइक विचार सुनि मनमे भेल जे अपनो चुकने ने कहीं असले चुइक जाए। विचारकेँ सम्हारि कहलयैन-

“भाय, उपयोगीकेँ तेना फड़िया कहियौ जे अन्हारोमे रस्ता हेराए नहि। एकर माने ई नइ जे भूतकेँ भुतिया भूमिके छोड़ि दिऐ।”

हमर बात तीन जुगिया भायकेँ नीक लगलैन। बजला-

“सुधीर, बीतल समैक संग बीतल जिनगी बीतल, एकर माने ई कखनो ने भेल जे ओ जिनगीए ने छल। जीवनक सभ किछु रहितो जिनगी समटल-बान्हल छल, तँए..?”

भाइक अलंकारिक शैली सुनि मनमे भेल विचारैमे जँ कनीयोँ

तल-बिचल भेल, तखन तँ अनेरे देवतासँ दानव भऽ जाएत आ बिच्चेमे मानव हेरा जाएत। जखन मानवे हेरा जाएत तखन जाएब केम्हर! कहलयैन-

"भाय, एना जँ एकेटा शब्दकेँ बेर-बेर कहबै तँ हम भोथिया जाएब। तँए कनी...।"

हमर बात सुनिते भाय मुस्की भरलैन। मुस्कीक संग मुहसँ निकललैन-

"सुधीर, भूमिकामे बेसी नइ कहबह, एतबे बुझि लएह जे शक्तिक रूपमे आगि अबैसँ पहिने हमर-तोहर पूर्वज ऐ धरतीपर स्वतंत्र रूपे विचरण करै छला, फल-फूल साग-पात सभ खाइ छला। दिन-रातिक बीच जीबैत एला, आगि एला पछाइत शक्तिक रूपमे उपयोग करैत आइ हम बिजलीक रोशनीमे पहुँच गेल छी।"

हूँहकारी भरैत कहलयैन-

"अइमे के काट-खोंट करत?"

जेना तीन जुगिया भायकेँ सह भेटलैन तहिना सम्हारि बजला-

"सुधीर, आगूक रोशनीक चर्च करैसँ पहिने एकटा मन रखिहह।"

मनमे भेल जे बजला किछु ने, तँ एकटा की भेल। पचीस-पचासमे ने एकटा, दूटा आकि तीनटा हएत आ जेतए किछु ने रहत तेतए एकटा की भेल? पुछलयैन-

"भाय, एकटा की कहलिऐ? मन रखैले कहलौं मुदा एकटा तँ दूटा होइए। एकटा होइए एकटा[7] मिसिया आ दोसर होइए एक नम्मर काज, विचार, ज्ञान, रस्ता, जिनगी। से कनी बेरा कऽ पहिने कहियौ,

[7] अकटा

तखन मन रखै जोकर जे एकटा हएत तेकरा राखब, जे नइ रखै जोकर हएत तेकरा एक नम्मरमे नइ राखब।"

भाइयोकेँ जेना हमर विचार नीक लगलैन। बजला-

"अपनो विचार सदिकाल यएह रहैए जे कोनो लाइ-लपटाइमे नइ रही आ ने केकरो लाइ-लपटाइ दिस ठेलिऐ।"

हूँहकारी भरैत कहलयैन-

"एहने चाहै छी।"

पहिने जेना सेरिया कऽ साँस खिंच लेलैन तहिना एके सूरे बजला-

"सुधीर, ठनका-पाथर भलेँ मनुखसँ पहिने जनम लऽ लेने हुअए, मुदा जहियासँ मनुख जनम लेलक तहियासँ कहियो ओकरा गुदानलक नहि।"

मनमे भेल जे बीचमे ई की कहि देलैन। सालक-साल देखै छी जे ठनकासँ केते लोक मरैए, पानिमे डुमि कऽ से मारि लोक मरैए आ गुदानलक केना नइ? फेर भेल जे भाय किछु छैथ तँ तीन जुगिया छैथ, अपने मने अबिसवासो करबकेँ नीक नहियेँ कहल जाएत, कहलयैन-

"भाय, कनी नीक जकाँ विचारक खोंइचा छोड़ा कहबै तखन ने एक जुगियोकेँ मन रहतैन जे इलायचीक माने फोकले इलायची नहि, दनोबला इलायची होइते छइ। भलेँ संग-संग रहने ओकरो देह-हाथ ओहिना किए ने होउ।"

भायकेँ जेना नीक लगलैन तहिना बजला-

"बौआ सुधीर, किरिणो फुटैपर आबि गेल आ गपक मुँह- नाङैर छुटले रहि गेल, तँए नीक हएत...।"

'नीक'क आगू की बजितैथ से तँ ओ जानैथ मुदा हमरो मन

औगुता कऽ धड़फड़ा गेल तँए बिच्चेमे टोनी बना टोनि देलिऐन-

"भाय, ठनका-पाथरबला..?"

हुनको जेना मनमे नचिते रहैन तहिना बतीसो मोती छिटकबैत बजला-

"बौआ, केतबो ठनका-पाथर किए ने खसल-पड़ल मुदा ई बात झूठ छै जे हमर वंश जहियासँ धरतीपर आएल तहियासँ जीबित अछि।"

भाइक बात सुनि मनमे छह-पाँच उठऽ लगल जइसँ आँखियो आ कानो हुनका दिससँ ससैर अपना दिस अबऽ लगल। जे भाय बुझि गेला। बिच्चेमे टोनीकेँ छिलैत बजला-

"बौआ, जँ वंश जीबित नइ रहैत तँ हमर जनम केना भेल। तँए हम जीबित वंशक जीबित मनुख छी।"

पूबमे सूर्यक लाली अन्हारमे बिजलीक इजोत जकाँ पसरऽ लगल। भाय बजला-

"बिजली बहुत पैघ सम्पैत मनुखक छी, तँए जे जेते उत्पादित पूजी बना उपयोग करता, हुनका ओते नीक हेतैन आ जे जेहेन करता से तेहेन पौता।"



तिथि : 12 जून 2015, शब्द संख्या : 2010

अँगनेमे हेरा गेलौं

कमला धारक छहर टुटने अपना गामकेँ के कहए जे समुच्चा इलाकामे बाढ़ि पसैर गेल। पोखैर-झाँखैरसँ लऽ कऽ गाछी-बिरछी धरि समुद्र जकाँ एक रंग भऽ गेल। रस्ता-पेरा बन्न भेने अपनो आ गामोक लोककेँ चौ-अन्नीसँ बत्तीस-अन्नी धरि बैसारी भऽ गेल। बैसारीमे गामक साहित्य प्रेमी सबहक विचार भेलैन जे अखन साहित्य सृजनक अनुकूल परिस्थिति अछि तँए साहित्यिक आयोजन गाममे हुअए। रस्ता-पेरा खुजल रहने ने बहबाड़ि जकाँ करैए, मुदा से तँ बढ़िसँ घेराएल अछि, तँए एकमुहरी युवजनक विचार भऽ गेल।

साहित्यिक आजोयजनक बीच कथा पाठ आ ओकर समीक्षाक विचार ताँइ होइत पनरह तारीकक दिन निर्धारित भऽ गेल, जेकरा आइ सात दिन बाँकी छइ।

कोनो गाम आकि कोनो समाजमे नव काज भेने गामो आ समाजोक सभ किछु नव-नव रूप धारण करऽ लगैए जइसँ गामो नव आ समाजो नव देखैमे आबिये जाइए।

छह दिन बीतल, सातममे दिन आइ छी। आइए तीन बजे अपराहणसँ कार्यक्रम अछि। रंग-रंगक कथाकार एकठाम बैस कथो सुनौता आ अपनो सुनता आ तैपर समीक्षा केनिहार समीक्षा करता। नवान पाबैन जकाँ नवको अन्न आ पुरनो अन्न अग्नि-आहूत हेबे

करत।

गामक जे पुरान लिखबैया छैथ आ गाम-समाजमे साहित्यिक मंच नइ बनने मंचपर कथा वाचैक अवसर नइ भेटलैन हुनको तँ अवसर भेटबे करतैन। संगे जे नवतुरिया नानी-दादीक खिस्सा कागजपर कलमसँ लिखि तैयार करत ओहू नवतुरियाकेँ तँ मंच भेटबे करत, तँए पढ़ल-लिखल समाजमे आरो बेसी खुशी।

अपन बिआहक मरबा देख जहिना बर-कन्याकेँ खुशी होइत तहिना रंगर मंच सजल आ सभ रंगक बेवस्था देख सभ साहित्य प्रेमीकेँ खुशी भेलैन। जे साहित्यिक प्रति पगला गेल छैथ सेहो पहुँचला, आ जे भाड़ा-किराया-फीस लऽ मंचपर जाइ-अबै छैथ, सेहो पहुँचला। तहूमे बाढ़िक समए, मोटबरे ब्लौकेसँ राशनक उठाव भऽ गेल। तँए आमदनियोँक चकचकी रहबे करैन।

गोल-मोल मंच सजल जेकर ऐगला पतियानीमे अपनो बैसल रही। भाषासँ प्रेम रहने साहित्योसँ कनी-मनी लगाव अछिए। से जँ नइ राखब तँ शब्दक ऑपरेशन करैक अपन रोजगारे बन्न भऽ जाएत, कारखाना जकाँ कच्चे मालक अभाव भऽ जाएत...।

..माने ई जे पारा मेडिकल जकाँ कथाक भाषेटा केँ ऑपरेशन करैक लूरि सीखि डॉक्टर छी। तँए मजबूरियो अछि, दूटा बातो सुनि कथेकारक लागि-भागिमे सटल रहै छी, सटल की रहै छी जे सटाएल रहै छी।

गामक कथाकारकेँ पहिल समैक अवसर कथा-पाठ करैक भेटल। दिनेश भाय, कथा वाचन शुरू केलैन, सोझहा-सोझहीमे हमहीं पड़ैत रहिऐन, तँए हमरे दिस ताकि-ताकि कथा वाचन केलैन। एक तँ गौंआँ तहूमे परिवारसँ जुड़ल, केना नइ दिनेश भायकेँ हमर अपेक्षा होइतैन। कियो बाहरक होथु आकि गामेक आन टोलक, तिनकासँ तँ

हम लग छेलिऐन। मुदा संजोग कहू कि दुर्जोग भाषाक ताकमे शीर्षकेमे हम हेरा गेलौं। शीर्षकक ऑपरेशन करैमे बुधि, विवेक, मन, नजैर सभ समटा कऽ ऑपरेशनक पाछू लगि गेल। आँखि तँ दिनेश भाइक आँखिसँ मिलैत रहल मुदा शीर्षकेक शब्दमे तेना घुरिया गेलौं जे कानसँ धियान हटि गेल।

समीक्षकक बीच समीक्षा शुरू भेल। पहिल समीक्षक दुतकारि देने छेलैन दिनेश भाइक कथाकेँ। दोसर कनी सम्हारलकैन मुदा तैयो वे-सम्हारे बुझि पड़ैत रहैन। तेसर नम्बरक समीक्षक हम रही। कथा तँ सुनलौं नइ, की समीक्षा करब! ठाढ़ होइत बजलौं-

“दिनेश भाय, अखनो धरि अहाँ-कथाक शीर्षकक भाँज नइ लगल, से कनी आबो फरिछा दिअ।”

अपना विचारे दिनेश भाइक कथाक जड़िकेँ हम तर तक रोपैक कोशिश करैत बाजल रही। मुदा दिनेश भाइक मन खटमिट्ठी जकाँ रहैन।

गुम्हैर कऽ बजला-

“बड़ समीक्षक बनै छैथ!”

दिनेश भाइक मन रूष्ट बुझि पड़ल। तँए कनी पाछू हटैत चुपे ऐ आशामे रहलौं जे दिनेश भाइक तामस कमलैन कि ओहिना छैन, आकि आरो चढ़ि गेलैन। से दोहरा कऽ किछु बजता तखने बुझब।

हमरासँ पहिलुका समीक्षकक समीक्षा मनकेँ घोर बना घोड़ैत रहैन जइसँ तामस कमितैन की जे आरो तेजे होइत गेलैन।

बजला-

“एहेन रही ते आगूमे नइ बैसी। एकोरती तोरा आँखिमे पानि रहलह, ओहिना ओतेकाल आँखि चढ़ा आँखि मिलौने रहलह!”

अपन हारल रही कि हेराएल रही से निरणाइए ने कऽ पबैत रही। दिनेश भाय मुहेँ-काने बोकिया देलैन, मुदा की करितौं। चुप-चाप सभटा घोंटैत अँगनेमे हेराएल रहलौं।

❍

तिथि : 14 जून 2015, शब्द संख्या : 605

परिचय

नाओं : जगदीश प्रसाद मण्डल
जन्म : 5 जुलाई 1947 ई.,
माता : स्व. मकोबती देवी।
पिता : स्व. दल्लू मण्डल।
पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।
पता : गाम- बेरमा, भाया- तमुरिया,
प्रखण्ड- लखनौर, अनुमण्डल- झंझारपुर,
जिला- मधुबनी, (बिहार) पिन : 847410, **मो.** 9931654742

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा। **जीविकोपार्जन :** कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती) **शिक्षा :** एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र) **साहित्य लेखन :** 2001 ईस्वीक पछाइतसँ...। **सम्मान/पुरस्कार :** ‘विदेह सम्मान’, ‘विदेह भाषा सम्मान’, ‘टैगोर लिटिरेचर एवार्ड’, ‘वैदेह सम्मान’, ‘यात्री सम्मान’, ‘विदेह बाल साहित्य पुरस्कार’ तथा ‘कौशिकी साहित्य सम्मान’सँ सम्मानित/पुरस्कृत।

मौलिक रचना संसार- 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन- उपन्यास। 26. कल्याणी, 27. सतमाए, -28. समझौता, 29. तामक तमघैल, 30. बीरांगना- एकांकी। 31. तरेगन, 32. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 33. शंभुदास, 34. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 35. गामक जिनगी, 36. अर्द्धांगिनी, 37. सतभैंया पोखैर, 38. गामक शकल-सूरत, 39. अपन मन अपन धन, 40. समरथाइक भूत, 41. अप्पन-बीरान, 42. बाल गोपाल, 43. भकमोड़, 44. उलबा चाउर, 45. पतझाड़, 46. लजबिजी, 47. उकड़ू समय, 48. मधुमाछी, 49. पसेनाक धरम, 50. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 51. फलहार, 52. खसैत गाछ, 53. एगच्छा आमक गाछ, 54. शुभचिन्तक, 55. गाछपर सँ खसला, 56. डभियाएल गाम, 57. गुलेती दास, 58. मुड़ियाएल घर, 59. बीरांगना, 60. स्मृति शेष, 61. बेटीक पैरुख, 62. क्रान्तियोग, 63. त्रिकालदर्शी, 64. पैंतीस साल पछुआ गेलौं- लघु कथा संग्रह। ○ ○ ○



पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड न. 06,
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

`251

ISBN : 978-93-87675-04-9

गामक जिनगी

जगदीश प्रसाद मण्डल



गामक जिनगी

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
निर्मली

टैगोर साहित्य पुरस्कारसँ पुरस्कृत
एवं विदेह साहित्य सम्मानसँ सम्मानित

समर्पण

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक ढेरपर बैसल
फुलबाड़ी लगौनिहार
तथा
नव विहान अननिहारकेँ
समरपित

ISBN : 978-93-87675-18-6

दाम : ₹ 250/- For Hard Copy

पाँचम संस्करण : 2017

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : दी साहु प्रिन्टिग प्रेस. निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

GAMAK JINGI
Collection of Short Stories by Sh. Jagdish Prasad Mandal.

दू शब्द

1942-43 क बंगालक अकालक विषयमे अमर्त्य सेन लिखै छथि जे ऐ अकालमे बंगालमे लाखक-लाख लोक मुइलाह (फेमीन इन्क्वायरी कमीशनक अनुसार 15 लाख) मुदा अमर्त्यक एकोटा सर-सम्बन्धीक मृत्यु ओहिमे नहि भेल। तहिना मिथिलाक 1967 ईस्वीक अकालमे भारतक प्रधानमंत्रीकेँ देखाओल गेलन्हि जे केना मुसहर लोकनि बिसाँढ़ खा कऽ अकालसँ लड़ि रहल छथि, मुदा एहिपर कथा लिखल गेल 2009 ईस्वीमे जगदीश प्रसाद मण्डलजी द्वारा। आ ऐ विलम्बक कारण सेहो स्पष्ट अछि। मैथिली साहित्यमे जे एकभगाह प्रवृत्ति रहल अछि, ताहि कारणसँ अमर्त्य सेन जकाँ हमरो साहित्यकार सभ ओइ महाविभीषिकासँ ओतेक प्रभावित नहि भेल होएताह। आ एतए जगदीश प्रसाद मण्डल जीक कथा मैथिली कथा धाराक यात्राकेँ एकभगाह होएबासँ बँचा लैत अछि।

ऐ संग्रहक सभटा कथा उत्कृष्ट अछि, रिक्त स्थानक पूर्ति करैत अछि आ मैथिली साहित्यक पुनर्जागरणक प्रमाण उपलब्ध करबैत अछि।

-गजेन्द्र ठाकुर
सम्पादक-
विदेह ई पत्रिका
www.videha.co.in

कथाक सत्तैर-

भैंटक लावा

पैछला बाढ़ि मोन पड़िते देह भुटैक जाइए। रोइयाँ-रोइयाँ ठाढ़ भऽ जाइए। बाढ़िक विकराल दृश्य आँखिक आगू नाचए लगैए। घोड़ोसँ तेज गतिसँ पानि दौगैत। बाढ़ियो छोटकी नहि, जुअनकी नहि, बुढ़िया। बुढ़िया रूप बना नृत्य करैत। केकरा कहूँ बड़की धार आ केकरा कहूँ छोटकी, सभ अपन-अपन चीन-पहचीन मेटा समुद्र जकाँ बनि गेल। जेमहर देखू तेमहर पाँक घोराएल पानि, निछोहे दच्छिन-मुहेँ दौगल जाइत। केतेक गाम-घर पजेबाक नइ रहने घर-विहीन भऽ गेल। इनार, पोखैर, बोरिंग, चापाकल पानिक तरमे डुबकुनियाँ काटए लगल। एहेन भयंकर दृश्य देख लोककेँ डरे छने-छन पियास लगलोपर पीबैक पानि नइ भेटैत। जीवन-मरण आगूमे ठाढ़ भऽ झिक्कम-झिक्का करैत। घर खसल, घरक कोठी खसल, कोठीक अन्न भँसल। जेहने दुरगैत घरक तेहने गाइयो-महींस, गाछो-बिरीछ आ खेतो-पथारक।

घरक नूआँ-वस्तर आ बासन-कुसनक संग आनो-आन समानक मोटरी बान्हि माथपर लऽ अपनो डाँड़मे दू भत्ता खरौआ डोरी बान्हि आ बेटोक डाँड़मे बान्हि आगू-आगू मुसना आ पाछू-पाछू घरवाली-जीबछी, बेटी-दुखनीकेँ कोरामे लऽ कन्हा लगौने पोखैरक ऊँचका महार दिस चलल।

अखन धरि ओ महार बोन-झाड़ आ पर-पैखानाक जगह छल, जइमे साँप-कीड़ा बसेरा बनौने, बाढ़ि ओकरा घराड़ी बना देलक।

जहिना इजोतमे छाँह लोकक संग नै छोड़ैत, तहिना बर्खा बाढ़िक संग छोड़ैले तैयार नहि। निच्चाँ पानिक तेज गति आ ऊपरसँ बर्खाक नमहर बून। महारपर मुसनाकेँ पहुँचैसँ पहिनहि बीस-पच्चीस गोरे अप्पन-अप्पन धिया-पुता, चीज-वौस आ माल-जालक संग पहुँच चुकल छल। महारपर पहुँच मुसना रहैक जगह हियाबए लगल। शौच करैक ढलान लग खाली जगह देख मुसना मोटरी रखलक। मोटरी रखि बिसनाइरिक डारि तोड़ि खड़ा बनौलक। ओइ खड़ासँ खड़ंए लगल। एक बेर खरैड़ कऽ देखलक तँ मनमे पड़पन नइ भेलइ। फेर दोहरा कऽ खरैड़ चिक्कन बनौलक। चिक्कन जगह देख दुनू बेकतीक मनमे चैन भेलइ। मोटरी खोलि मुसना एकटा बोरा निकालि चारिटा बत्तीक खुट्टा गाड़ि, खरौआ

जौड़सँ ओइ चारू खूटकेँ बत्तीमे बान्हि घर बनौलक। दोसर बोरा निच्चाँमे ओछा धियो-पुतोकेँ बैसौलक आ समानो रखलक।

चिन्तासँ दुनू परानी मुसनाक मुँह सुखाएल। एक दिस दुनू बच्चाकेँ देखए आ दोसर दिस गनगनाइत बाढ़िकेँ। माथपर दुनू हाथ दऽ जीबछी मने-मन कोसी-कमला महरानीकेँ गरियेबो करैत आ जान बँचबैले निहोरो करैत। दुनू बच्चो कखनो बाढ़ि देख हँसैत तँ कखनो जाड़े कनैत। बाढ़िक वेगमे एकटा घर भँसियाएल अबैत देख मुसना बाँसक टोन आ कुरहैर लऽ दौगल। पानिमे पैस हियाबए लगल जे कोन सोझे घर औत। ठेकना कऽ हाँइ-हाँइ पाँचटा खुट्टा ठोकलक। आस्ते-आस्ते घर आबि कऽ खुट्टामे अड़कल, खुट्टामे अड़ल घर देख घरवालीकेँ हाक पाड़ि कहलक-

"हाँसू नेने आउ। घरक समचा सभ उघि-उघि लऽ जाउ।"

घरक ऊपरमे एकटा कुकुर सेहो भँसैत आएल। लोकक सुन-गुन पाबि कुकुर कुदि कऽ महारपर चलि गेल। ठाठक बत्तीमे जहाँ मुसना हाँसू लगौलक कि एकटा साँप लप-दे हाथेमे हबक मारि देलकै। थालमे गड़ल खुट्टा घरक भार नहि सम्हारि सकल। पाँचो खुट्टा पानिमे गिर पड़ल। घर भँसि गेलइ। खूब जोरसँ मुसना कनबो करैत आ हल्लो करैत जे हौ लोक सभ, दौड़ै जाइ जा हौ, हमरा साँप काटि लेलक।

मुसनाक कानब सुनि जीबछी सेहो बपहारि काटए लगल। बपहारि कटैत घरवालीकेँ मुसना कहलक-

"हे गइ दुखनी माए, नाग डँसि लेलकौ। छाती लग बिख आबि गेल। कनीए बाँकी अछि कण्ठ छुबैले। धिया-पुताकेँ हाक पाड़ि कनी मुँह देखा दे। आब नै बँचबौ।"

जीबछी हल्लो करैत आ घरबलाक बाँहि पकैड़ ऊपरो करैत। महारक किनछैरमे पहुँच जहाँ ऊपर हुअ लगल कि दुनू गोरे पिछैर कऽ तरे-ऊपरे निच्चाँमे खसि पड़ल। दुनू परानी भीजल तँ रहबे करए, आरो नहा गेल। मुदा तैयो ओरिया-ओरिया कऽ ऊपर भेल। महारपर आबि जीबछी चुनक कोहीसँ चुन निकालि दाढ़मे लगौलक। साँपक बिख झाड़निहार गाममे एकोटा नहि। मुदा रौदिया अही बेरक दशमीमे चनौरा गहबरमे चाटी सिखने छल। सभ कियो रौदियाक खोज करए लगल।

रौदिया माछ मारैले सोहत लऽ कऽ बाध दिस गेल छल। एक गोरे ओकरा

बजा अनलक। अबिते रौदिया सोहत कातमे रखि हाथ-पएर धोइ मुसना लग आबि बाजल-

"हौ भाय, हमर चाटी सिद्ध नइ भेल अछि, किएक तँ हम अखन धरि गंगा स्नान नै केलौं हेन। मुदा तैयो बिसहाराकेँ सुमैर देखै छिऐ।"

मुसनाकेँ आगूमे बैसा रौदिया हाथेसँ जगहकेँ झाड़ि चाटी रखलक। सभ रौदिया दिस देखैत। मुदा चाटी चलबे ने कएल। बाढ़ि दुआरे आन गामसँ झाड़निहार आ चट्टिबाहकेँ बजाएब महाग मोसकिल रहए। सभ निराश भऽ गेल। छाती पीटि-पीटि जीबछी कनबो करए आ देवी-देवताकेँ कबुलो करए। मुदा ढोढ़ साँप कटने छेलै तँए बिख लगबे ने केलइ।

गोसाँइ लूक-झूक करए लगला। गामक ढेरबा, बुढ़ आ जुआन स्त्रीगण सभ चँगेरियो आ चँगेरोमे काँच माटिक दियारी लऽ लऽ पोखैरक घाट लग जमा भऽ कमला महरानीकेँ साँझ दऽ गीत गाबए लगल। बच्चा सभ जय-जयकार करैत। तैबीच लुखिया कमला महरानीकेँ पाठी कबुला केलक, सुबधी एक सेर मधुर। दोसर साँझ धरि गीत-गाबि सभ घुमि कऽ आएल।

एक रफ्तारमे बाढ़ि पाँच दिन रहल। मुदा पोह फटिते छठम दिन पानि कमए लगलै। बाढ़िक पानि जहिना हुहुआ कऽ अबैए, तहिना जाइए।

बेर झुकैत-झुकैत घर-अँगनाक पानि निकैल गेल मुदा थाल-खिचार रहबे करए। सातम दिनसँ लोक घर ठाढ़ करए लगल। बाढ़ि सटैकते लोक परदेश दिस पड़ाए लगल। गाममे ने एक्कोटा धानक गब बँचल आ ने खेत रोपैले बीरार। नारक टाल सभ केतए भँसि कऽ गेल तेकर ठेकान नहि। गहुमक भुस्सी भुसकाँड़ेमे सड़ि-सड़ि गोबर बनि गेल। मनुखसँ बेसी दिक्कत माल-जालकेँ भऽ गेलइ। आमक पात, बाँसक पात आन-आन गाछ सबहक पात काटि-काटि माल-जालकेँ लोक खुबए लगल। आन-आन गामसँ नार, भुस्सी कीनि-कीनि आनए लगल। मुदा माल-जाल तैयो अनधुन मुइलै। जे बँचल रहै, ओहो सुखा कऽ संठी जकाँ भऽ गेलइ। तैपर सँ रंग-बिरंगक बेमारी सभ सेहो आबि गेलइ। केकरो खुरहा तँ केकरो पेट-झर्ड़ी। ..किछु गोरे अपन सभ मालकेँ कुटमैती सभमे दऽ आएल।

चारिक अमल। पिसुआ भांग पीब श्रीकान्त मैदान दिससँ आबि दलानपर बैस चाह पिबैत रहैथ। सोगसँ अधमरु जकाँ भेल श्रीकान्त मने-मन सोचैथ जे महाजनी तँ चलिए गेल जे आब अपनो साल भरि की खाएब..! अगते धान

सबाइ लगा देलौं। बड़ पैघ गलती भेल जे एक्को बखाड़ी पछुआ कऽ नै रखलौं। मुदा एक बखाड़ी रखनहि की होइत। के केकरा मदैत करत। ठीके कहब छै जे सभकेँ अपना भरोसे जीबा चाही। भने दुआर परहक बखाड़ीक धान सठि गेल। कियो दरबज्जापर औत तँ देखा देबइ। मुदा अपनो तँ जरूरत ऐछे, से केतएसँ आनब? लऽ दऽ कऽ घरक कोठीमे जे चाउर अछि, ओतबे अछि। एक्को धूर धान नै बँचल जे अगहनोक आशा हएत। आब अवादो तँ नहियेँ हएत, आगू रब्बियेक आशा रहल। जे सभ दिन कीनि-बेसाहि कऽ खाइए ओकरा तँ किछु नहि, मुदा हमरा लोक की कहत..?

चाह पिबते-पिबते श्रीकान्तकेँ चोन्ह आबए लगलैन। मन पड़लैन- 'बाबा कहने रहैथ जे दरबज्जापर जँ कियो दू-सेर वा दू-टका मांगैले आबए तँ ओकरा ओहिना नै घुमबिहक। ओइसँ लछमी पड़ाइ छथिन।'

जीबछीकेँ अबैत देख श्रीकान्त हाक पाड़लखिन। सालो भरि जीबछी हुनके कुटाउन कऽ गुजर करै छल। चाउर-चूड़ा कुटैमे जीबछी गाममे सभसँ बेसी लूरिगर।

श्रीकान्तक लग आबि जीबछी हँसैत कहलकैन-

"एते किए सोगाएल छैथ काका! हिनका एते छैन तहन एते दुख होइ छैन, हमरा तँ किछु ने अछि तँए की मरि जाएब।"

जीबछीक बात सुनि भखरल स्वरमे श्रीकान्त बजला-

"जहिना सभ किछु बाढ़िमे दहा गेल तहिना जँ अपनो सभ तूर भँसि जइतौं, से नीक होइत। जाबे परान छुटैत, तेतबे काल ने तकलीफ होइत मुदा आगू तँ दुख नै काटए पड़ैत।"

मुस्कियाइत जीबछी कहलकैन-

"एक्केटा बाढ़िमे एते चिन्ता करै छैथ काका! कनी नीक आकि कनी अधला, दिन तँ बितबे करतैन।"

चीलम पिबैत मुसना ओसारपर बैसल। कसि कऽ सौंठ मारि मने-मन सोचए लगल- अगहन-पूस दुनू मास मुसहैन खुनि-खुनि गुजर करै छेलौं। दस सेर जमो भऽ जाइ छल आ गुजरो कऽ लइ छेलौं। ओहो चलि गेल। ने एक्को गब केतौ धान बँचल आ ने गाममे एकोटा मूस..!

दोसर दम चिंच धुआकेँ घोटिते मनमे एलै- मूसक तीमन आ धुसरी

चाउरक भात जँ जाड़क मासमे भेटए तँ ऐसँ नीक दोसर की हएत। एहेन खेनाइ तँ रजो-महरजोकेँ सिहिन्ते लगल रहतैन। ओ-हो-हो! भगवान गरीबेक सुख छीनि लेलैन..!

मुसनाक पहिलुका नाओं मकसूदन छल। मुदा मूस आ मुसहैनसँ बेसी सिनेह रहने लोक मुसना कहए लगलै।

जीबछी आँगनक चुल्हिपर रोटी पकबैत। इनारपर हाथ-पएर धोय मुसना लोटामे पानि नेने आँगन आबि जलखै करैले बैसल।

टिनही छिपलीमे रोटी-नून लऽ जीबछी पतिक आगूमे देलक। अँगनामे दुखबाकेँ नइ देख मुसना जोरसँ शोर पाड़लक।

पिताक अवाज सुनिते दुखबा दौगल आबि धुराएले हाथे-पएरे आबि खाइले बैस रहल। दुनू बापूत खाए लगल। चुल्हिये लगसँ मुस्कियाइत जीबछी बाजल-

"केकरो किछु हौउ मुदा जेकरा लूरि रहतै ओ जीबे करत। ऐठाम देखै छिऐ जे एक्के दहारमे किदैन बहारक खिस्सा अछि। सभ हाकरोस करैए!"

मुँहक रोटी मुसना हाँइ-हाँइ चिबा जीबछी दिस देखैत बाजल-

"तेते ने माछ भँसि-भँसि आएल अछि जे खत्ता-खुतीमे सह-सह करैए। कनी पानि तँ कम हौउ। जखने पानि कम भऽ उपछै-जोकर भेल आकि मछबारि शुरू कऽ देब। खेबो करब आ बेचबो करब। हरिदम दू पाइ हाथेमे रहत।"

अपन नहिराक बात मन पड़िते जीबछी बाजए लगल-

"हमरा नैहरमे पच्छिमसँ गंडक आ पूबसँ कोसीक बाढ़ि सभ साल अबै छेलइ। तैबीच जे धार अछि ओकर पानि तँ घुमैत-फिरैत रहिते छल। सगरे गाम साउनेसँ जलोदीप भऽ जाइ छेलइ। टापू जकाँ एकटा परती-टा सुखल रहै छेलइ। ओइपर सौंसे गामक लोक बरसाती घर बना रहै छल। कातिक अबैत-अबैत खेत सभ जागए लगै छेलइ। तेकर पछाइत लोक खेती करै छल। गहिंरका खेत आ खाधि-खुधिमे भैंटक गाछ सोहरी लागल जनमै छेलइ। अगहन बितैत-बितैत ओ तोड़ैबला हुअ लगै छेलइ। हम सभ ओइ भैंटकेँ तोड़ि-तोड़ि आनी, ओकरे दाना निकालि सुखा कऽ लावा भूजी। तेते लावा हुअए जे अपनो खाइ आ बेचबो करी। ..काल्हि गिरहत काका ऐठाम जाएब आ कहबैन जे चौरीमे जे मनसम्फे भैंट जन्मल अछि, ओ हमरा दऽ दिअ।"

अखन धरि दुनू परानी मुसना, चाउर आ चूड़ाक कुट्टी करै छल, सेहो ढेकीमे। किएक तँ गाममे एक्कोटा छोटको मशीन धनकुटियाक नै छल। अधिकतर परिवार अपन-अपन ढेकी-उक्खैर रखै छल। मुसना सेहो कुट्टी दुआरे अपन ढेकी-उक्खैर रखने अछि। नीक चाउर बनबैमे जीबछीकेँ सभ लोहा मानैए। ऐ बेर तँ धनकुट्टी चलत नहि। मुदा बाढ़िमे आन गामसँ तेते भैंट दहा कऽ चौरीमे आएल जे सापरपिट्टा गाछ सौंसे चौरीमे जनैम गेल अछि। तँए जीबछी मने-मन चपचपाइत। दोसरकेँ भैंटक भाँज बुझले नहि। सभ दिन नहाइ बेरमे जीबछी चौरी जा भैंट देख-देख अबैत। चौरगर-चौरगर पात सौंसे चौरीकेँ छेकने। थोड़बे दिनमे गोटि-पँगरा फूल हुअ लगलै। फूल देख जीबछीक मनमे होइ जे एतेटा फुलवाड़ी इन्द्रो भगवानकेँ हेतैन की नहि... ।

पाँचे दिनमे सौंसे चौरी फूल फुला गेल। अगता फूलक पत्ती झड़ि-झड़ि खसए लगल, फूलमे नुकाएल फड़ निकलए लगल। गोल-गोल, हरिअर-हरिअर। फड़ देख जीबछी आमदनी बुझि, चौरीक कातमे बैस नव-नव योजना मने-मन बनबए लगल, ऐ बेर एकटा खूब निम्मन महींस कीनब। जँ महींस-जोकर आमदनी नै हएत तँ दूटा गाइए कीनि लेब। अप्पन तँ सम्पैत भऽ जाएत। ओकरे खूब चराएब-बझाएब। ओहीसँ तँ चारू परानीक गुजर चलत। जिनगी भरि तँ कुटाउने करैत रहलौं मुदा ऐ बेर कमलो महरानी आ कोसियो महरानी दुख हइर लेलैन।

मने-मन जीबछी कोसी-कमलाकेँ गोड़ लगलक। गोड़ लगिते मनमे उठलै- अपन धन हएत, तैपर सँ मेहनत करब तँ कोन दरिदराहा दुख आबि कऽ हम्मर सुख छीनि लेत। मजगूत घर बान्हब, बेटा-बेटीक बिआह करब। नाति-पोता हएत, बाबा-दादी बनि कऽ जेते दिन जीबी ओ की देवलोकसँ कम भेल। अहीले ने सभ हरान अछि। केलासँ सभ किछु होइ छै, बिनु केने पतरो फुसि।

घनगर गाछ देख जीबछीक मनमे एलै, बीच-बीचमे सँ जँ गाछ उखारि देबै तँ सौरखियो करहर भऽ जाएत आ छेहर गाछ रहने फड़ो नमहर हएत आ दन्नो नीक। अखनेसँ आमदनी शुरू भऽ जाएत।

उत्साहित भऽ जीबछी भैंटक कमठौन शुरू केलक। मुदा करहर उखाड़ैमे तेते डाँड़ दुखाइ जे हूबा कमए लगलै। कमठौन छोड़ि देलक।

देखते-देखते फड़मे लाली पकड़ए लगलै।

अगता फूल अगता फड़ भेल। नमहर-नमहर, पोछल-पोछल, गोल-गोल

पुष्ट, रंगल फड़ देख जीबछी बुझि गेल जे आब ई तोड़ैबला भऽ गेल। दोसर दिनसँ फड़ तोड़ैक विचार जीबछी मने-मन कऽ लेलक।

दोसर दिन भोरे जीबछी रोटी पका, दुनू बच्चो आ अपनो दुनू परानी खेनाइ खा प्लास्टिकक बोरा लऽ फड़ तोड़ैले विदा हुअ लगल कि धक-दे मन पड़लै, बोरामे तँ फड़ राखब मुदा पानिमे तोड़ि-तोड़ि कथीमे रखब। फड़ तोड़ैले तँ झोरा नीक जे अपना अछि नहि! आब की करब?

..लगले जीबछी पुरना साड़ीकेँ फाड़ि दूटा झोरा सीलक। झोरा सीबि बोरो आ झोरोकेँ चौपेत एकटा झोरामे रखि, दुनू बच्चो आ दुनू गोरे अपनो, चौर दिस विदा भेल।

फड़क रूप-रंगसँ जीबछीक मन गदगद। मुदा अनभुआर काज बुझि मुसना तर्क-वितर्क करैत। चौरक कात पहुँच ऊपरका खेत जे सुखाएल छल तइमे दुनू बच्चो, बोरो आ रोटियो-पानिकेँ रखि दुनू परानी भैंट तोड़ैले पानिमे पैसल।

पानिमे पैसते जीबछीक नजैर भैंटक फड़क ऊपरे-ऊपर नाचए लगलै। जहिना केकरो रूपैआक थैली भेटलासँ खुशी होइ छै, तहिना जीबछीक मनमे भेलइ। एक टकसँ देख जीबछी दुनू हाथे हाँइ-हाँइ फड़ तोड़ए लगल। खिच्चा फड़ देख जीबछी पतिकेँ कहलक-

"जुएलके फड़टा तोड़ब, अजोहा अखन छोड़ि दियौ। पछाइत तोड़ब।"

झोरा भरिते जीबछी ऊपर आबि-आबि बोरामे रखैत। मुसनो सएह करैत। दुनू बोरा भरि गेल। ऊपर आबि जीबछी पतिकेँ कहलक-

"कनी काल सुस्ता लिअ। पानिमे निहुरल-निहुरल डाँड़ो दुखा गेल हएत। अहाँ एत्तै रहू, हम एक बेर अँगनासँ रखने अबै छी।"

जीबछी एकटा बोरा उठा आँगन विदा भेल। एक तँ पानिक भीजल, दोसर ओजनगर वस्तु। मुदा जीबछी भारी बुझबे ने करए। किएक तँ सम्पैतक मोटरी रहै किने! आँगन आबि ओसारपर बोरा रखि पुनः जीबछी चौर दिस रमकल विदा भेल। लग आबि पतिकेँ कहलक-

"हम बोरा लइ छी, अहाँ दुनू बच्चो आ डोलोकेँ सम्हारने चलू।"

दुनू बच्चाक संग एक हाथमे डोल नेने आगू-आगू मुसना आ माथपर बोरा नेने पाछू-पाछू जीबछी विदा भेल। थोड़े दूर बढ़लापर जीबछी पतिकेँ कहलक-

"भगवान दुःख हइर लेलैन।"

मुदा स्त्रीक बात सुनि मुसनाकेँ ओ खुशी नहि एलै जे जीबछीकेँ रहए। आँगन आबि जीबछी पहिलुके बोरा लग दोसरो बोरा रखि भानसक ओरियान करए लगल। चारिम दिन पहिलुके खेप भैंट तोड़ै काल मुसनाकेँ एकटा ठेंगी बाँहिमे पकैड़ लेलकै। जे शुरूमे नै बुझलक। मुदा जहन ठेंगी भरि पोख खून पीब भरिया गेल, तहन नजैर पड़लै। ठेंगीकेँ देखते मुसनाक परान उड़ि गेलइ। थरथर काँपए लगल। खूब जोरसँ घरवालीकेँ कहलक-

"बाप रे बाप! देहक सभटा खून ठेंगी पीब लेलक। कोन पाप लागल जे ऐ मौगिया भाँजमे पड़लौं। एक तँ बाढ़िक मारल छी जे भरि पोख अन्न नै होइए, सुखा कऽ संठी भेल छी। तैपर जेहो खून देहमे छेलए सेहो ठेंगीए पीब गेल। झब-दे आउ नहि तँ हम पानियेँमे खसि पड़ब।"

पतिक बातकेँ अनठबैत जीबछी हाँइ-हाँइ फड़ो तोड़ैत आ मने-मन बजबो करैत-

"जेना नाग डँसि नेने होइ तहिना अड़ाहैए। भभटपन ने देखू! एहने-एहने पुरुख बुते परिवार चलत!"

दुनू झोरा भरिते जीबछी मुसना लग आबि हाथेसँ ठेंगी पकैड़ एकटा चिचोरमे बान्हि देलक। मुदा जैठाम ठेंगी धेने रहै तैठामसँ छर्र-छर्र खून बहैत। अपन दहिना औंठासँ जीबछी दाबि देलक। कनीए कालक पछाइत खून बन्न भऽ गेलइ। जीबछी फेर फड़ तोड़ैले पानिमे पैसल। मुसना बैसले रहल। थोड़े कालक पछाइत जीबछी बाजल-

"आउ ने, आब किछु ने हएत।"

जीबछीक बात सुनि मुसना आँखि गुड़ैर कऽ बाजल-

"ई मौगिया, जान मारैपर लगल अछि! होइ छै जे कहुना मरि जाए। कोनो कि दुनियाँमे सँएक कमी छइ, दोसर कऽ लेत।"

दुनू बच्चा दिस देखैत मुसना फेर बाजल-

"मुदा ऐ टेल्हुक सबहक की हेतइ। बिलैट कऽ मरत की नहि?"

पति दिस देख जीबछी मुस्कियाइत बाजल-

"नइ तोड़ब तँ नइ तोड़ू। ओतै बैस बच्चा सभकेँ खेलाउ।"

दुनू बोरा भरि कऽ जीबछी आँगन अनलक। सभकेँ सम्हारने मुसनो आएल। आँगन आबि जीबछी चुल्हि पजारि भानस कऽ दुनू बच्चो आ अपनो दुनू परानी खेलक। खा कऽ हाँसू लऽ भैंटक फड़ चीरि-चीरि दाना निकालए लगल। लाल-लाल, गोल-गोल दाना। मुसना सेहो दाना निकालए लगल। दुनू बच्चा दुनू भाग बैस दूटा फड़केँ गुड़कबैत खेलैत।

दानाकेँ एकटा चटकुन्नीपर थोपि-थोपि रखैत जाए। मुदा कनीए कालक पछाइत मुसनाकेँ चीलम पीबैक मन भेलइ। उठि कऽ चुल्हि लग जा आगियो तापए लगल आ चीलमो पीबए लगल। दानाक ढेरी देख जीबछी गर अँटबए लगल जे एते राखब केतए। गुनधुन करैत। एकाएक नैहरक बात मन पड़लै। मन पड़िते मुहसँ हँसी फुटलै।

जीबछीकेँ हँसैत देख मुसना अह्लादित भऽ पुछलक-

"अँइ गइ, कोन सोनाक तमघैल तोरा भेट गेलौ हेन जे एना खिखिआइ छेँ?"

मुदा पाशा बदलैत जीबछी बाजल-

"अखन तँ अन्हार भऽ गेलै, काल्हि भोरे एकटा खाधि अँगनेमे टाट सटा कऽ खुनि देबइ।"

भोरे उठि मुसना ढक जकाँ गोल-मोल खाधि खुनलक। जीबछी दुलेब कऽ लेब सुखौलक। ओइमे भैंटक दाना सुखा-सुखा रखैत गेल। ऊपरसँ टाटक झँपना बना मुसना झाँपि देलक।

मास दिनक मेहनतसँ जीबछीक आँगन भैंटक दानासँ भरि गेल। अनभुआर चीज तँए चोरी-चपाटीक कोनो डरे नहि। ..भरल आँगन देख जीबछीक मनमे समुद्रक लहैर जकाँ खुशी हिलकोर मारए लगलै। कनडेरिये आँखिए मुसना दिस देख मुस्कियाए लगल। घरवालीक मुस्की देख मुसना खिसिया कऽ बाजल-

"हमरा देख-देख तोरा हँसी लगै छौ। हँसि ले, जेते हँसमें से हँसि ले। जाबे जीबै छियौ ताबे। भगवान केलखुन आ मरलियौ तहन तोहर हँसी नगरक लोक देखतौ।"

मुदा जीबछी-ले धैनसन। किएक तँ खुशीसँ मन एते भरल रहै जे घरबलाक बात ओइमे पैसबे ने केलइ।

मने-मन जीबछी लावा भुजैक विचार करए लगल। लावा भुजैले एकटा नमहर खापैड़ चाही। बाउल रखैले एकटा कोहा चाही। लाड़ैन तँ अपनो खड़हीसँ बना लेब आ बाउलो नदी कातसँ लऽ आनब। जहन कुमहैन ओइठाम जाएब तँ कँचकूह ताकि कऽ एकटा नमहर तौला लऽ आएब। ओकरे खापैड़ बना लेब। बाउल धिपबैले मझोलको कोहासँ काज चलि जाएत। एकटा सरबा सेहो चाही। किएक तँ बाउल जे देबै से तँ हाथसँ नै हएत। ओइमे एकटा बत्तीक डाँट लगबए पड़त। लगा लेब। मुसनाकेँ कहलक-

"लावा भुजैले जारैन सेहो ओरियाबए पड़त।"

लावाक नाओं सुनि मुसनाक मनमे खुशी भेलइ। मुस्कियाइत बाजल-

"अखन टेंगारी सुड़िया लइ छी। बेरू-पहर गिरहत कक्काक गाछीसँ बाँझियो आ सुखल ठौहरियो सभ आनि देब।"

भरि दिनमे दुनू परानी जीबछी सभ कथूक ओरियान कऽ लेलक।

पराते भने जीबछी लावा भुजब शुरू केलक। दू चुल्हिया चुल्हि। एक मुँहमे खापैड़, दोसरमे कोहा। खापैड़मे भैंटक दाना भुजैत आ कोहामे बाउल धिपबैत। पहिल घानी भुजि जीबछी एक चुटकी चुल्हिमे दऽ दोसर घानी भुजब शुरू केलक। दोसर घानीक लावा देख जीबछीक मन तर-ऊपर हुअ लगलै। पहिलुका घानीक लावा चँगेरीमे लऽ दुनू बच्चो आ घरोबलाकेँ आगूमे देलक।

आगूमे लावा देख मुसना मने-मन सोचए लगल, ई मौगिया बड़ लूरिगर अछि। एहेन स्त्री भगवान सभकेँ देथुन। कहू जे अखन तक हम जे बुझितो ने छेलौं से आइ खाइ छी। धिया-पुताकेँ पोसब कोन बड़का भारी बात जे समाजो-ले लोक बहुत किछु कऽ सकैए।

लावाक गमक पुर्बा हवामे मिलि सौंसे गामकेँ सुगन्धित कऽ देलक। सुगन्ध पाबि टोलोक आ गामोक स्त्रीगण सभ लावा किनैले एक्के-दुइए जीबछीक आँगन आबए लगली। मुदा एक्केटा जवाब जीबछी सभकेँ दैत-

"पहिने गिरहत काकाकेँ खुएबैन, तहन केकरो देब।"

भरि दुपहर जीबछी लावा भुजलक। दू छिट्टा भेलइ। दुनू छिट्टा लावा घरमे रखि ओइमे सँ एक मुजेला लऽ साड़ीसँ झाँपि जीबछी मुसनाकेँ कहलक-

"हम गिरहत काका ओइठाम जाइ छी। अहाँ अँगनेमे रहब।"

कहि जीबछी माथपर मुजेला नेने श्रीकान्त ऐठाम विदा भेल।

जीबछीक माथपर मुजेला देख श्रीकान्त गौर करैत मुस्किया कऽ पुछलखिन-

"बड़ खुशी देखै छी लछमी महरानी। मुजेलामे की चोरा कऽ अनलौं हेन। कनी हमरो देखए दिअ?"

अनसुनी करैत जीबछी मुस्कियाइत आँगन जा गिरहतनीक आगूमे मुजेला रखि कहलकैन-

"काकी, थोड़ेकेँ लाइ बना लिहैथ आ अखन कनीमे नोन-मरीच-तेल मिला कऽ दौथ, जे काकाकेँ दऽ अबै छिऐन।"

छिपलीमे लावा नेने जीबछी दरबज्जापर जा श्रीकान्तक आगूमे देलकैन। ओ छिपलीमे उज्जर-उज्जर रमदाना-लावा जकाँ लावाकेँ निंगहारि-निंगहारि देखए लगला। जीबछी कहलकैन-

"काका, की निंगहारै छथिन, पहिने एक मुट्ठी मुँहमे दऽ कऽ देखथुन ने। भैंटक लावा छिऐ।"

एक मुट्ठी उठा श्रीकान्त मुँहमे लेला। लावाक कोमलता आ सुआद पाबि श्रीकान्त खुशीसँ पत्नीकेँ हाक पाड़ि कहलखिन-

"एते सुन्नर वस्तुकेँ अखन धरि जनितौं ने छेलौं। धन्य अछि कमलपुरवालीक ज्ञान आ लूरि जे एहेन सुन्नर हेराएल वस्तुकेँ ऊपर केलक। साक्षात् देवी छी कमलपुरवाली। जाउ, सन्दूकसँ एकजोड़ साड़ी आ आँगी निकालने आउ। जीबछीकेँ अपना ऐठामसँ पहिरा कऽ विदा करब। गरीब-दुखियाक देवी छी कमलपुरवाली।"

सभ दिन जीबछी लावा भुजैत आ अँगनेसँ लोक सभ कीनि-कीनि लऽ जाइत। पनरह दिनक जमा कएल रूपैयो आ फुटकुरियो जीबछी मुसनाकेँ गनैले आगूमे देलक।

पाइ देख मुसनाक मन उड़ि गेल। मुहसँ ठहाका निकलल। एक टकसँ मुसना जीबछी दिस देख कैंचा गिनए लगल।

❍

शब्द संख्या : 3100

बिसाँढ़

पैछला चारि सालसँ रौदी भेने गामक सुर्खीए बेदरंग भऽ गेल। जे गाम हरिअर-हरिअर गाछ-बिरीछ, अन्नसँ लहलहाइत खेत, पानिसँ भरल इनार-पोखैर, सैंकड़ो रंगक चिड़ै-चुनमुनी, हजारो रंगक कीट-पतंगसँ लऽ कऽ गाए-महींस आ बकरीसँ भरल रहै छल ओ मरनासन्न भऽ गेल। सुन-मसान जकाँ बीरान। सबहक मनमे एक्केटा विचार अबैत जे आब ई गाम नइ रहत। जँ रहबो करत तँ खाली माटिए-टा। किएक तँ जइ गाममे खाइले अन्न नै उपजत, पीबैले पानि नइ रहत तइ गामक लोक की हवा पीब कऽ रहत?

जइ मातृभूमिक महिमा अदौसँ सभ गबैत एला ओ भूमि चारिए सालक रौदीमे पेटकान लाधि देलक। मुदा तैयो लोकक टुटैत आशाक वृक्षमे नव-नव फुलक कोढ़ी टुस्साक संग जरूर निकैल रहल अछि। निकलबो केना ने करत, आखिर जनकक राज मिथिला छिऐ किने। जइ राज्यमे बारह-बर्खक रौदीक फल सीता सन भेटल तइ राज्यमे, हो-ने-हो जँ कहीं ओहने फल फेर भेटए! ..एक दिस रौदीक सघन मृत्युवाण चलैत तँ दोसर दिससँ आशाक प्रज्वलित वाण सेहो ओकर मुकाबला करैत। जेकर हँसेरियो नमहर।

एहनो स्थितिमे दुनू परानी डोमनक मनमे जीबैक ओहने आशा बनल रहल, जेहने सुभ्यस्त समैमे। कान्हपर कोदारि नेने आगू-आगू डोमन आ माथपर सिंगही माछ आ बिसाँढ़सँ भरल पथिया नेने पाछू-पाछू सुगिया, जिनगीक गप-सप्प करैत बड़की पोखैरसँ आँगन अबैत रहए। चानिक पसीना दहिना हाथसँ पोछि, मुस्कियाइत सुगिया बाजल-

"जेकरा खाइ-पीबैक ओरियान करैक लूरि-उहि छै ओ कथीक चिन्ता करत?"

पत्नीक बात सुनि डोमन पाछू घुमि सुगियाक चेहरा देख, बिनु किछु बजने नजैर निच्चाँ केने आगू डेग बढ़बए लगल। किएक तँ खाइक ओते चिन्ता मनमे नहि, जेते पानि पीबैक।

डोमनकेँ अपन खेत-पथार नहि। मुदा दुनू बेकती तेहेन मेहनती जे नहियोँ

किछु रहने नीक-नहाँति गुजर करैत। गिरहस्तीक सभ काजक लूरि रहितो डोमन कोनो गिरहस्तसँ बन्हाएल नहि, ओना समए-कुसमए अपन काज नइ रहने बोइनो कऽ लइत। ओना, अपना खेत नइ रहने खेती तँ नहियेँ करैत मुदा दस कट्ठा मरूआ धरि सभ साल बटाइ रोपि लैत, जइसँ पाँच मन अन्नो घर लऽ अबैत। मरूआ-बीआ तैयार करैमे बेसी मेहनत होइए। सभ दिन बीआ पटबए पड़ैए। शुरूहे रोहैणमे बड़की पोखैरक किनछैरमे डोमन बीआ पाड़ि लइत। लगमे पानि रहने पटबैयोक सुविधा। आरू बीराड़ तँए बीओ नीक उमझैत। पनरहे दिनमे रोपाउ भऽ जाइत। मिरगिसरामे बर्खा होइते डोमन सभ साल अगते मरूआ रोपि लैत, मुदा ऐ बेर से नइ भेलइ। बर्खा नइ भेने बीआ बीराड़ेमे बुड़हा गेलइ। एक्को धूर मरूआक खेती गाममे नहि भेल। तेतबे नहि, अखन धरि कियो ने धानक बीराड़क खेत जोतलक आ ने बीआ बागु केलक।

रौदीक आगम सबहक मनमे हुअ लगल। मुदा तैयो केकरो मनमे अन्देशा नहि! किएक तँ ढेनुआर नक्षत्र सभ पछुआएले रहए।

जहिना रोहैण-मिरगिसरा फोंक गेल तहिना अदरो। समए सेहो खूब तबि गेल। दस बजेसँ पहिनहि लोक बाधसँ आँगन आबि जाइत, किएक तँ लू लगैक डर सबहक मनमे। मरूआ खेती नइ भेने दुनू परानी डोमनक मनमे चिन्ता पैसए लगल। दोसर दिन बड़की पोखैरसँ दुनू परानी पुरैनक पातक बोझ माथपर नेने अँगना अबैत बाटमे सुगिया बाजल-

"ऐ बेर एक्को कनमा मरूआ नइ भेल। बटाइयो केने आन साल ओते भऽ जाइ छल जे सालो भरि जलखै चलि जाइ छेलए। ऐ बेर तँ जलखैयो बेसाहिये कऽ चलत।"

माथ परहक पुरैनक पातक बोझसँ पानि चुबैत। जे डोमनो आ सुगियोकेँ अधभिज्जु कऽ देने। नाक परहक पानि पोछैत डोमन उत्तर देलक-

"कोनो कि अपनेटा नइ भेल आकि गाममे केकरो नइ भेलइ। अनका होइतै आ अपना नै होइत तहन ने दुख होइतए। मुदा जब केकरो नइ भेलै तँ हमरे किए दुख हएत। जे दसक गति हेतै से अपनो हएत। अपना तँ पुरैन-पातक रोजगारो अछि आ जेकरा ईहो ने छइ?"

पतिक उत्तर सुनि सुगिया मिरमिराइत बाजल-

"हँ, से तँ ठीके। मुदा ठनका ठनकै छै तँ कियो अपने माथपर ने हाथ दइए। तहन तँ ई रौदी इसरक डाँग छी! लोकक कोन साध!"

अखन धरिक समैकेँ कियो रौदी नइ बुझलक। सबहक मनमे यएह होइत जे ई भगवानक लीले छिऐन। कोनो साल अगतेसँ पानि हुअ लगैत तँ कोनो साल अन्तमे होइत। कोनो साल बेसियो होइत तँ कोनो साल कम्मो आ कोनो-कोनो साल नहियेँ होइत। जइ साल अगते बिहरिया हाल भऽ जाइत ओइ साल समैपर गिरहस्ती चलैत मुदा जइ साल पचता बर्खा होइत तइ साल अधखड़ू खेती भऽ जाइत...।

जखन हथियो नक्षत्र धरिमे बर्खा नइ भेल तखन सबहक मनमे आबए लगलै जे ऐ बेर रौदी भऽ गेल। ओहिना जोतल-बिनु-जोतल खेतसँ गरदा उड़ैत। घास-पातक केतौ दरस नहि। मुदा तँए कि लोक हारि मानि लेत? कथमपि नहि! सभ दिनसँ गामक लोकमे सीना तानि कऽ जीबैक जे अभियास बनल अछि ओ पीठ केना देखौत...। भऽ सकैए जे इन्द्र भगवानकेँ कोनो चीजक दुख भऽ गेल हेतैन। जइसँ बिगैड़ कऽ एना केलैन। तँए हुनका वौसब जरूरी अछि। जखने फेर सुधैर जेता तखनेसँ सभ काज सुढ़िया जाएत। ..यएह सोचि कियो भूखल-दूखलकेँ अन्न दान करैत, तँ कियो कीर्तन-अष्टयाम-नवाह, तहिना कियो चंडी, विष्णु यज्ञ-जप, तँ कियो महादेवक पूजा इत्यादि। अनेको रंगक बौसैक ओरियान लोक सभ शुरू केलक। जनिजाति सभ सेहो कमला-कोसीकेँ छागर-पाठी कबुलए लगली। जँ हुनकर महिमा जगतैन तँ बिनु बर्खोक बाढ़ि अनती। बाढ़ि औत पोखैर-झाँखैरसँ लऽ कऽ चर-चौरी, डोह-डाबर सभ भरत। रौदी कमत। अदहा-छिदहा उपजो हेबे करत...।

बर्खाक मकमकी देख नेंगरा काका महाजनी बन्न कऽ लेलैन। ओ बुझि गेला जे ऐ बेरक रौदी ऐगला साल बिसाएत। मुदा सोझमतिया बौकी काकी सभटा चाउर सबाइ लगा लेलैन। ओना बौकी काकीक लहनो छोट, खाली चाउरेक, सेहो पाबैने-तिहार धरि समटल रहै छैन। बौकी काकीक महाजनी मातृ-नौमी, पितृ-पक्षसँ शुरू भऽ पाहुन-परक होइत दुर्गापूजा-कोजगरा होइत दिवाली-परेब, गोवर्धनपूजा-भरदुतिया आ छठि होइत सामा धरि अबैत-अबैत सम्पन्न भऽ जाइ छैन। किएक तँ समाकेँ सभ नवका चूड़ा खुअबैत। खुएबे-टा नहि करैत, संगे भारो दइत। ताधैर कोला-कोली धानो पकि जाइत। मुदा ई बात बौकी काकी बुझबे ने केलैन जे ऐ बेर रौदी भऽ गेल। तँए अपनो खाइले नहि रखली। जहिना बोनिहार-किसान तहिना महाजन बौकियो काकी भऽ गेली।

अगहन अबैत-अबैत सभकेँ चिन्ता हुअ लगलै जे अपने की खाएब आ

माल-जालकेँ की खुआएब। किएक तँ कातिक धरिक ओरियान, अपनो आ मालो-जाल-ले तँ अधिकांश लोक पहिनहिसँ करि कऽ रखैत। जे ऐबेर नेंगरा काका छोड़ि सबहक सठि गेलैन..! अन्तमे धानोक बीआ सभ कुटि-छाँटि कऽ खा गेल। ..ऐबेर धानक कोन गप जे हाल दुआरे रब्बियो-राइ हएब कठिन। एकाएक सबहक भक्क खुजल। भक्क खुजिते मनमे चिन्ता समाए लगलै। जेना-जेना समए बितैत तेना-तेना चिन्तो फौदाइत। एक तँ ओहिना चुल्हि सभ बन्न हुअ लगल, ऊपरसँ सुरसा जकाँ समए मुँह बाबि सबहक आगूमे ठाढ़। चिन्तासँ लोक रोगाए लगल। भोर होइते धिया-पुताक बाजा सौंसे गाममे बजए लगैत। मौगी पुरुखकेँ करमघट्टू तँ पुरुख मौगीकेँ राक्षसनी कहए लगल। जइसँ धिया-पुताक बाजाक संग दुनू परानीक नाच शुरू भऽ जाइत। मुदा एहेन समए भेलोपर दुनू परानी डोमनक मनमे एक्को मिसिया चिन्ता नहि। किएक तँ जुड़ेशीतलसँ पुरैनक पातक रोजगारा शुरू केलक। रोजगारो नमहर। बावन बीघाक बड़की पोखैर। जइमे सापरपिट्टा पुरैनक गाछ। बजारो नमहर। निर्मली, घोघरडीहाक संग झंझारपुरक नबको आ पुरनो बजार। ..असगरे सुगिया केते बेचत। पुरैनक पात किननिहार हलुआइसँ लऽ कऽ मुरही-कचड़ीवाली धरि। तैपर सँ भोज-काजमे सेहो बिकाइत। तँए आठ दिनपर पार लगौने रहए।

भरि दिन डोमन पत्ता तोड़ि-तोड़ि जमा करैत। एक दिन सुगिया पातकेँ सेरिया-सेरिया तेसरा दिनपर भोरुके गाड़ीसँ बेचैले जाइत। जे पात उगैर जाइ ओकरा डोमन सुखा-सुखा रखैत। किएक तँ सुखेलहो पातक बिकरी होइए।

आइ निर्मलीसँ पात बेच कऽ सुगिया आबि पतिकेँ कहलक-

"रौदी भेने अपना चलतीए आबि गेल!"

चलतीक नाओं सुनि मुस्कियाइत डोमन पुछलक-

"से की?"

"सभ पात बेचनिहार वेपारी थस लऽ लेलक। सभ गामक पोखैर सुखि गेलै, जइसँ सबहक कारबार बन्न भऽ गेलइ। अपनेटा पात बजार पहुँचैए। आइ तँ जहाँ गाड़ीसँ उतरलौं कि दोकानदार आबि-आबि बुझू जे लुझि लेलक। टीशनेपर छुहुक्का उड़ि गेल।"

डोमन-

"अहाँकेँ लूरि नै छेलए जे दाम बढ़ा दैतिऐ, एकक दू होइत।"

सुगिया-

"ऐगला खेपसँ सएह करब। आब तँ बड़ी सेहो जुआइत हएत किने?"

डोमन-

"गोटे-गोटे जुआएल अछि। अखन बीछि-बीछि तोड़ए पड़त, तँए पाँच दिन आरो छोड़ि दइ छिऐ।"

तेसर साल चढ़ैत-चढ़ैत गामक एकटा बड़की पोखैर आ पाँचटा इनार छोड़ि सभ सुखि गेल। नमहर आँट-पेटक बड़की पोखैर। किएक तँ दाँइत खुनने अछि किने? लोकक खूनल थोड़े छिऐ। देव अंश अछि। तँए ने गामक सभ अपन बेटाकेँ उपनयनो आ बिआहोमे ओही पोखैर जा पहिने नहबैए। तेतबे नहि, छठिमे हाथो उठबैए। हमरा इलाकाक पृथ्वीक बनाबट सेहो अजीब अछि। बुझू तँ माटिक पहाड़। पाँच साए फुटसँ निच्चाँ धरि ने बाउल अछि आ ने पानि। शुद्ध माटि। जइसँ ने एक्कोटा चापाकल आ ने बोरिंग गाममे। पानि दुआरे गाम-गामक लोककेँ पड़ाइन लगि गेल। माल-जाल उपैट गेल। सभटा गाए-माल चाहे तँ लोक बेच लेलक वा खढ़ पानि दुआरे मरि गेलइ। अदहासँ बेसी गाछो-बिरीछ सुखि गेल। चिड़ै-चुनमुनी इलाका छोड़ि देलक। जे मूस अगहनमे अंग्रेजी बाजा बजा-बजा सत-सतटा बिआह करै छल ओहो या तँ बिलेमे मरि गेल वा केतए पड़ा गेल तेकर ठेकान नहि। हमरो गामक अदहासँ बेसीए लोक पड़ा गेल। मुदा तैयो जिबठगर लोक गाम छोड़ैले तैयार नहि। पुरुख सभ गाम छोड़ि परदेश खटैले चलि गेल। मुदा बाल-बच्चा आ जनि-जाति गामेमे रहल।

पोखैर-इनारकेँ सुखैत देख लोक पानि पीबैले बड़कीए पोखैरक कतबाहिमे कूप खुनि लेलक। अपन-अपन कूप सभकेँ। पानिक कमी नहि। तीन सालक जे रौदी परोपट्टा-ले बाम भऽ गेल अछि, ओ डोमन दुनू परानी-ले दहीन भऽ गेल। काज तँ आने साल जकाँ मुदा आमदनी दोबर-तेबर भऽ गेलइ। गामक जमीनोक दर घटल। जइसँ डोमन खेत कीनए लगल। ओना सुगियाक इच्छा खेत किनैक नहि। किएक तँ मनमे होइ जे अहिना सभ दिन रौदी रहत आ खेत सभ पड़ता। तँए अनेरे खेत लऽ कऽ की करब। घास-पानिक दुआरे मालो-जाल लेब नीक नहियेँ हएत।

डोमनक मनमे आशा रहै जे जहिना लूल्हियो कनियाँ बेटा जनमा कऽ गिरथाइन बनि जाइए तहिना ने पानि भेने परतियो खेत हएत।

योगी-तपस्वीक भूमि मिथिला अदौसँ रहल। जे अपन देह जीव-जन्तुक

कल्याण-ले गला लेलैन। ओ की ऐ बातकेँ नहि जनै छला? जरूर जनै छला! तँए ने गाममे अठारह गण्डा[1] पोखैर, सत्ताइस गण्डा[2] इनारक संग-संग चौरीमे सैंकड़ो कोचाढ़ि-बिरइ खुनि पानिक बखाड़ी बनौने छला। सोल्होअना बरखे भरोसे नहि, अपनो जोगार केने छला।

तीन साल तँ दुनू परानी डोमन चैनसँ बितौलक। मुदा चारिम साल अबैत-अबैत बेचैन हुअ लगल। गामक सभ पोखैर-इनार तँ पहिनहि सुखि गेल छल। लऽ दऽ कऽ बड़की पोखैरटा बँचल रहइ। तहूमे आब सुखैत-सुखैत मात्र कठ्ठा पाँचेमे पानि बँचल। सुखल दिस पुरैनियोँ उपैट गेल। खाली बीचमे जे पानि अछि मात्र ओहीमे पुरैनक गाछ बँचल, मुदा तइमे जाँघ भरिसँ ऊपरे गादि छइ। पैसब महाग मोसकिल अछि। पएर दैते सरसरा कऽ जाँघ भरि गड़ि जाइत अछि। के जान गमबए पैसत। निराशाक जंगलमे डोमन वौआए लगल। मनमे हुअ लगलै, जहिना गामक लोक चलि गेल तहिना हमहूँ चलि जाएब। जानि कऽ परानो गमाएब नीक नहि। जिनगी बँचत, समए-साल बदलतै तँ फेर घुमि कऽ आएब नइ तँ केतौ मरि जाएब। जहिना गामक सभ किछु बिलैट गेल, समाजक लोक बिलैट गेल, तहिना हमहूँ बिलैट जाएब...।

पतिकेँ चिन्तित देख सुगिया पुछलक-

"किछु होइए की? एना किए मन खसल अछि?"

पत्नीक प्रश्न सुनि डोमन आँखि उठा कऽ देख पुनः आँखि निच्चाँ कऽ लेलक। आँखि निच्चाँ करिते सुगिया दोहरा कऽ पुछलक-

"मन-तन खराप अछि?"

नजैर उठबैत डोमन बाजल-

"तन तँ नइ खराब अछि मुदा तनेक दुख देख मन सोगाएल अछि। जइ आशापर अखन धरि खेपलौं ओ तँ चलिए गेल जे ऐगलोक कोनो आशा नइ देखै छी। की करब आब?"

सुगिया-

"अपना केने किछु ने होइ छइ। जे भगवान जन्म देलैन आ मुँह चीरने

[1] 72 टा

[2] 108 टा

छैथ, अहारो तँ वहए ने देता। तइले एते चिन्ता किए करै छी?”

डोमन-

“सभ किछु बिलैट गेल। एहेन सुन्दर गाम छल सेहो उपैट रहल अछि। खाली माटिटा बँचल अछि। की माटि खुनि-खुनि खाएब? बिनु अन-पानिक कए दिन ठाढ़ रहब?”

“चिन्ता छोड़ू। जहिया जे होइक हेतै से हेतइ। अखन तँ पाइनो ऐछे आ अन्नो अछिए। जाधैर ऐ धरतीपर दाना-पानी लिखल हएत ताधैर भेटबे करत। जहिया उठि जाएत तहिया केकरो रोकने रोकेबै। तइले एते चिन्ता किए करै छी?”

कहि सुगिया भानसक ओरियानमे जुटि गेल।

पत्नीक बात सुनि डोमन मने-मन सोचए लगल जे हमरा तँ मरैयोक डर होइए मुदा एकरा कहाँ होइ छइ! ई तँ मरैयो-ले तैयारे अछि। ..फेर मनमे उठलै, जीवन-मृत्युक बीच सदासँ संघर्ष होइत आएल अछि आ होइत रहत। तइसँ पाछू हटब कायरता छी। जे मनुख कायर अछि ओ कोन जिनगीक आशामे अनेरे दुनियाकेँ अजबारने अछि। पुनः अपना दिस तकलक। अपना दिस तकिते डोमनकेँ मनमे उठलै, जनु जीबैक बाट हेरा गेल अछि तँए एते चिन्ता दबने अछि...।

तमाकुल चुना कऽ डोमन मुँहमे लेलक। तमाकुल मुँहमे लइते डोमनकेँ अपन माए-बापसँ लऽ कऽ पैछला पुरखा दिस घोड़ा जकाँ नजैर दौगलै। मुदा केतौ रूकलै नहि। जाइत-जाइत मनुखक जड़िमे पहुँच गेलइ। पुनः घुमि कऽ आबि माए लग अँटैक गेलइ। मन पड़लै माइक संग बितौलहा जिनगी। मन पड़लै माइक ओ बात जे दस बर्खक अवस्थामे रौदी बितौने छल।

रौदी मन पड़िते बड़की पोखैरक बिसाँढ़ आ अन्है माँछ डोमनक आँखिक सोझमे आबि गेल। कनी काल धरि गुम्म भऽ मन पाड़ए लगल।

मन पड़लै, अही पुरैनक जड़िमे तँ बिसाँढ़ो फड़ैए। अल्हुए जकाँ। जहिना माटिक तरमे अल्हुआक सिरो आ अल्हुओ रहै छै तहिना पुरैनक जड़िमे सिरो आ बिसाँढ़ो रहैए। अनासुरती मुहसँ निकललै-

“बाप रे! बाबन बीघाक पोखैरमे तँ केते-ने-केते बिसाँढ़ हेतइ। ओकरे खुनैमे माछो भेटत। खाधि बना-बना सिंही-माङुर रहैए।”

एक पंथ दू काज। मनमे खुशी अबिते पत्नीकेँ हाक पाड़ि डोमन कहलक-

“भगवान बड़ीटा छथिन। जहिना अरबो-खरबो जीव-जन्तुकेँ जन्म देने छथिन तहिना ओकर अहारोक जोगार केने छथिन।”

पतिक बात सुनि सुगिया अकबका गेल। जेना किछु बुझबे ने केलक। मुँह बाबि पति दिस तकैत रहल। पत्नीकेँ टकटक तकैत देख डोमन बाजल-

“चुल्हि मिझा दियौ। घुमि कऽ आएब तखन भानस करब।”

पतिक उत्साह देख सुगियाक मनमे शंका भेलै जे मन ने तँ सनैक गेलैन हेन! अखने मुर्दा जकाँ पनिमरू छला आ लगले की भऽ गेलैन! दोसर बात परखैक खियालसँ सुगिया किछु बाजल नहि, चुप-चाप ठाढ़ रहल।

डोमन फेर बाजल-

“की कहलौं! पहिने आँच मिझा दियौ, घरक फट्टक लगा दियौ आ छिट्टा लऽ कऽ संगे चलू।”

सुगिया पुछलक-

“केतए।”

“बड़की पोखैर।”

“किए?”

“एहेन-एहेन सैयो रौदी कटैक खेनाइ पोखैरमे दाबल अछि। आनैले चलू।”

सवाल-जवाब नहि कऽ सुगिया आगि पझा, फट्टक लगा छिट्टा लऽ तैयार भेल। घरसँ कोदारि निकालि डोमन विदा भेल। आगू-आगू डोमन आ पाछू-पाछू सुगिया। बड़की पोखैरक महारपर पहुँचल। पहुँचते डोमन हाथक इशारासँ देखबैत पत्नीकेँ कहलक-

“जेते पोखैरक पेट सुखल अछि ओइमे तेते खाइक वस्तु गड़ाएल अछि। ने खाइक कमी रहत आ ने पीबैक पानिक। जेना-जेना पानि सुखैत जेतै तेना-तेना कूपकेँ गहींर करैत जाएब। जेते पुरैनक गाछ सुखाएल अछि ओइमे घौर्छा जकाँ बिसाँढ़ फड़ल हएत।”

पोखैर धँसि डोमन तीन डेग उतरे-दछिने आ तीन डेग पूबे-पछिमे नापि कोदारिसँ चेन्ह देलक। एक धूर भरिमे। उत्तरबरिया-पुबरिया कोणपर कोदारि

मारलक। माटि तेते सक्कत जे कोदारि धँसबे ने कएल। दोहरा कऽ फेर जोरसँ कोदारि मारलक। कोदारि फेर नइ धँसल। आगू दिस देख डोमन हियाबए लगल जे किछु दूर आगूक माटि नरम हएत। खुनैमे असान हएत। मनक खुशी उफैन कऽ आगू बढ़लै, बाजल-

“अँइ यइ ढोरबा माए, हम पुरुख नै छी? देखियौ! हमरा माटि गुदानबे ने करैए! अहाँ हमरासँ पनिगर छी, दू छअ मारि कऽ देखियौ तँ।”

“पहिने हमर चूड़ी-साड़ी पहिर लिअ आ हमरा अपन धोती दिअ। तहन कोदारि पाड़ि कऽ देखा दइ छी।”

मुस्कियाइत दुनू आगू-मुहेँ ससरल। एक लग्गा आगू बढ़लापर माटि नरम बुझि पड़लै। कोदारि मारि कऽ देखलक तँ माटि सहगर लगलै। एक धूर नापि डोमन खुनए लगल। पहिलुके छअमे एकटा बिसाँढ़क लोली जगलै। लोल देखते उछैल कऽ बाजल-

“हे देखियौ! यएह छी बिसाँढ़!”

“लोल देखने नै बुझब। सौंसे खुनि कऽ देखा दिअ?”

पत्नीक बात सुनि डोमनकेँ शंका भेलै जे हो-ने-हो कहीं अधेपर सँ ने कटि जाए। तँए लोल पकैड़ डोला कऽ हाथेसँ उखाड़ए लगल। मुदा नइ उखड़लै। कनी हटि दमसा कऽ दोसर छअ मारलक। छअ मारिते एक बीतक देखलाहा आ तैसंग दूटा आरो देखलक। तीनूकेँ खुनि दुनू परानी डोमन निंगहारि-निंगहारि बिसाँढ़ देखए लगल।

उज्जर-उज्जर। नाम-नाम। लठिआहा बाँस जकाँ गोल-गोल। मोट। हाथीक दाँत जकाँ चिक्कन। बित भरिसँ हाथ भरिक। पाव भरिसँ आध सेर धरिक।

पत्नी दिस नजैर उठा कऽ डोमन देखलक तँ पचास वर्षक आगूक जिनगी बुझि पड़लै। पति दिस नजैर उठा कऽ सुगिया देखलक तँ चूड़ीक मधुर स्वर आ चमकैत मांगक सिनुर देखलक।

छिट्टा भरि बिसाँढ़ आ सेर चारिए-क सिंही माछ नेने दुनू परानी- डोमन आ सुगिया खुशीसँ हलसैत विदा भेल।



शब्द संख्या : 2516

पीरारक फड़

गोल-गोल हरिअर-हरिअर भुआ जकाँ सोहरी लागल डारिमे, जेहने हरिअर पात तेहने फड़, यएह छी पीरारक फड़। पाँचेटा पुरान गाछ गाममे, बड़का-बड़का आम, जामुन आ शिशो गाछक जन्म ओ पाँचो पीरारक गाछ देखने। साए बर्खक करियाबाबा बजैत-

‘जहियासँ मोन अछि ओ पाँचो गाछ ओहिना बुझि पड़ैए। एते ठनका खसल, बिहाड़ि आएल मुदा ओइ पाँचो गाछक रोइयाँ-भगन नइ भेलइ।’

दस गजसँ नमहर नहि, ने मेघडम्मर जकाँ बहुत पसरल आ ने छिड़ियाएल। छोट-छीन बर्खाकेँ रोकि पानिक बूनकेँ माटिक मुँह नइ देखए दइत। घनगर पात सजा-सजा पाँचो गाछ सजल। सोहत केर कोथी सन चोखगर काँट सभ डारिकेँ पहरेदार जकाँ सजौने। छरगर-छरगर डारिमे चौरगर-चौरगर पात, जेना इन्द्रकमल वा तगर फूलक होइत। तहिना फूलो।

पाँचो पीरारक गाछ सैयो बिहाड़ि आ हजारो बर्खाक संग नमहरसँ छोट धरि सैयो बेर पाथरक चोट खेलक। तेतबे नहि, केतेको बाढ़ि-रौदीकेँ सेहो हँसैत-हँसैत सहलक। जहिना गामक उत्तरबरिया बाधमे एक्के आड़िपर पतियानी लगा पाँचो गाछ ठाढ़ तहिना देखैयोमे पाँचो एक्के रंग। ने नमहर ने छोट डारि जे एक-दोसरसँ हक-हिस्सा-ले झगड़ैत। पाँचोमे अटुट प्रेम। जहन पाँचो फूलसँ सजैत तहन बुझि पड़ैत जे एक-दोसरक जुआनीक रंग देख ह्रदैसँ खिलखिला-खिलखिला हँसैत हुअए।

एतेक नमहर जिनगीमे ने कियो जड़िकेँ तामि-कोरि पानि देलक आ ने ठारिकेँ छकैड़-छुकैड़ गाछकेँ सुन्दर बनौलक। सोल्होअना देखभाल भगवानेक ऊपर। तँए पाँचो गाछ स्वाभिमानसँ भरल जे केकरो एहसान रूपी कर्ज जिनगीमे नै लेलौं। हरिदम पाँचो हँसैत-इठलाइत मन्द हवामे झूमैत...।

पहिने पाँचो गाछक फूल फुला फड़ बनि झड़ि जाइत, पछाइत फड़ पूर्ण जिनगीक सुख भोगि अन्तिम अवस्थामे आबि पवन रूपी नौतहारीकेँ पठा चिड़ै-चुनमुनीकेँ बजा-बजा अपन शरीर दान करैत, यएह पाँचो गाछक जिनगी भरिक

धरम रहल।

ओइ गाछसँ हटिए कऽ लोक अपन खेतक जोत-कोर आदि करैत जे ओइ गाछपर सुगबा साँप रहैए। सुगबा साँप लोककेँ देखैमे अबिते ने छै किएक तँ ओ हरिअर-लत्ती जकाँ होइए। जेकरा कटलासँ स्वर्ग-नरकक द्वार अनेरे खुजि जाइ छइ। बीचमे केतौ कोनो रूकाबट नै होइए।

उत्तरबारि बाधक रखबारि रतना करै छल। दू साल पहिनहि दुनू परानी रतना मरि गेल। दू सालसँ कियो बाधक रखबारि करैले तैयारे ने होइत। डर होइ जे पीरारक गाछपर सुगबा साँप रहैए, के अपन जान गमौत, दू-चारि सेर अन्न सालमे हएत कि नइ हएत।

साल भरि पहिने पिचकुन नोकरी करैले मोरंग गेल। रौदियाह समए भेने जखन किसानो सबहक दशा नीक नहि, तखन जन-बोनिहारक चर्चे की। साँझक-साँझ चुल्हि नै पजरैत। गरीब-गुरबा गाए-बकरी बेच-बेच कियो मोरंग, कियो सिलीगुड़ी, तँ कियो आसाम नोकरी करए गेल। पिचकुन सेहो रखबारीवाली नवकी कनियाँसँ पनरह रूपैआ कर्जा लऽ गेल। अखन धरि गाममे पिचकुनकेँ बकलेले-ढहलेल लोक बुझैत। जेते गोरेक मेड़िया नोकरी करए गेल छल ओइमे सँ किछु गोरे विराटनगर, किछु गोरे रंगैली, किछु गोरे सिलीगुड़ी आ किछु गोरे आसाम गेल। पिचकुनमाकेँ बकलेल बुझि सभ छोड़ि अपन-अपन गर लगबए लगल। असगरे पिचकुनमा इटहरी चौकसँ थोड़े आगू जा एकटा गाछक निच्चाँमे बैस चूड़ा आ घुघनी खाए लगल। खाइते छल आकि दू गोरे कें उत्तर-मुहेँ जाइत देख चूड़ा-घुघनीकेँ गमछाक खोंचैड़मे लऽ खाइते पाछू-पाछू विदा भेल। खेबो करए आ गप्पो-सप्प करए।

जाइत-जाइत धनकुटाक करीब पहुँचल। जइ दुनू गोरेक संग रहए ओ दुनू किसान। ओहीमे सँ एक गोरे पिचकुनकेँ नोकरी रखि लेलक। मरद-मौगी मिला पचासोसँ बेसी जन मंगत राम खटबैत। मंगत राम सखुआ-लकड़ीक तीन महला घर बनौने। किछु खेत पहाड़ोपर छइ। जइमे मरूआ, सामी-कौनी इत्यादि उपजबैत, तैसंग नेबो समतोला सबहक गाछ सेहो रोपने अछि।

पहाड़क ऊपरमे चमकैत रौदकेँ पिचकुन उजड़ा पहाड़ बुझैत। छोट-छोट गाछसँ लऽ कऽ पैघ-पैघ गाछक जंगल। छोट-छोट पहाड़सँ लऽ कऽ नमहर-नमहर पहाड़ देख पिचकुन मने-मन सोचए जे दोसर दुनियाँमे चलि एलौं। मुदा रस्ताक ठेकान रहने भरोस रहै जे तीन दिनमे अपन गाम चलि जाएब। बड़का-

बड़का बखाड़ी, नारक बड़का-बड़का टाल देख पिचकुन मने-मन खुशी होइत जे मालिक खूब धनिक अछि। कहियो नोकरीसँ हटौत नहि। जखन गाम जाइक मन हएत छुट्टी लऽ कऽ चलि जाएब आ फेरो चलि आएब। रस्तो तँ देखले अछि।

साल भरि नोकरी केला पछाइत पिचकुनकेँ गाम अबैक मन भेलइ। जहियासँ पिचकुन नोकरी कऽ रहल छल तैबीच एक्को पाइ घर नै पठौलक। पठैबतए केना? ने डाकघरक ज्ञान रहै आ ने केकरो अबैत-जाइत देखइ।

एकटा थारूनसँ पिचकुनकेँ लाट-घाट भऽ गेलइ। अठारह-उन्नैस बर्खक ओ थारून। मंगते रामक जन। ओकर नाओं छल धनियाँ। पिचकुनक संग अबैले धनियाँ राजी भऽ गेल। साल भरिक पछाइत पिचकुन गाम जाएत तँए माए-ले ऊनी स्वीटर, चद्दैर आ अपना-ले फुलपेन्ट, भरि बाँहिक स्वीटर, चद्दैर किनलक। समाज सभ-ले समतोला किनलक। कपड़ा, समतोला आदिक मोटरी बान्हि, रूपैआकेँ फुलपेन्टक जेबीमे लऽ मोटरीमे रखि बन्हलक। बटखर्चा-ले मुरही लऽ लेलक।

धनियाँ अपन धएल-धरल रूपैआ, कपड़ा सभ बान्हि रातिए-मे तैयार भेल। जंगल-झार दुआरे रातिमे नै निकलल। भुरूकबा उगिते दुनू गोरे अपन-अपन मोटरी लऽ चुपचाप विदा भेल। जही रस्तासँ पिचकुन गेल रहए ओही रस्ते चलल। इटहरी आबि दुनू गोरे बस पकड़लक। बससँ बथनाहा आबि पएरे विदा भेल। कोसीमे नावपर पार भऽ निर्मली तक पएरे आएल। निर्मलीमे टेन पकैड़ गाम आएल।

फुलपेन्ट कमीज आ पैरमे चप्पल पहिरने, बाबड़ी उनटौने, कान्हपर मोटरी नेने आगू-आगू पिचकुन आ पाछू-पाछू धनियाँ आबि माएकेँ गोड़ लगलक। टोल-पड़ोसक लोक पिचकुनकेँ चिन्हबे ने करैत। पिचकुन माएकेँ गोड़ लागि ओलतीमे चप्पल खोलि माएकेँ घर लऽ जा मोटरी खोलि रूपैआक गड्डी चुपचाप देखौलक। देखते बुझू ऊसरमे दुभि जनैम गेल। रूपैआक गड्डी देख माइक मोन उड़ि गेलइ। हँसोथि-पसोथि कऽ सभ कपड़ा समैट, रूपैआ तरमे घोंसिया मोटरी बान्हि मुनेसरी धरैनपर रखलक। धनियाँ ओसारपर बैसल। धनियाँक सम्बन्धमे माए पिचकुनकेँ पुछलक-

"ई कनियाँ के छेथिन?"

मुसकी दैत पिचकुन कहलक-

"तोरे पुतोहु। ओतै बिआह कऽ लेलौं।"

एक्के-दुइए टोलक जनिजाति कनियाँ देखए आबए लगली। पिचकुनक माए सभकेँ एक-एकटा समतोला देलक। एकटा दसटकही जेबीसँ निकालि पिचकुन माएकेँ दैत कहलक-

"माए, भूख लगल अछि, जो दोकानसँ बेसाहि सभ किछु लऽ आन। पहिने भानस कर। ताबे हम नहा लइ छी। तीन दिनक रस्ताक झमारल छी, ओंघीसँ देह भँसियाइए।"

पुतोहुकेँ देख मुनेसरी सौंसे टोल पुतोहु देखैले हकार देलक। तैसंग जातिक भोजो गछलक।

सातम दिन पिचकुन दुनू परानी साँझमे सोमनी दादीक ऐठाम गेल, आँगनमे बिछान बिछा सोमनी दादी पोता-पोती सभकेँ खेलबैत रहैथ।

दादीकेँ पिचकुन गोड़ लागि इशारासँ धनियाकेँ सेहो गोड़ लगैले कहलक। धनियाँ दादीकेँ गोड़ लगलकैन। ओछाइनिक कोणपर बैस पिचकुन आँखिक इशारासँ दादीकेँ जाँतैले सेहो कहलक। धनियाँ सोमनी दादीकेँ जाँतब शुरू केलक तखने पिचकुन सोमनी दादीकेँ कहए लगल-

"दादी, गाममे तँ सभ बकलेले-ढहलेल बुझै छेलए। साल भरि पहिनहि मोरंग गेलौं। कमेबो केलौं आ ओतै बिआहो कऽ लेलौं। आब गाममे रहब। गाममे अहाँ सभसँ पैघ छी, दुनू परानीकेँ असिरवाद दिअ।"

उत्तरबारि बाधमे, सभसँ बेसी खेत सोमनी दादीक, जइ बाधमे दू सालसँ रखबार नहि। पिचकुनकेँ दादी उत्तरबारि बाध रखबारि करैले कहलक। संगे पाँच कट्ठा खेत बटाइयो करैले कहलक। ..रोजी देख पिचकुन गछि लेलक। दादियो खोपड़ी बन्हैले दूटा बाँस, एक बोझ खढ़ आ एक मुट्ठी साबे गछि लेलखिन।

दोसर दिन पिचकुन दुनू परानी उत्तरबारि बाध जा कऽ खोपड़ी बन्हैक जगह टेबलक। एकटा ऊँचगर परती, जैपर बरसातोमे पानि नै अँटकैत। ओही जगहकेँ पिचकुन हियबैत रहए। आ एमहर धनियाँक नजैर पीरारक गाछपर पड़लै। गाछ लग जा फड़केँ तजबीज करए लगल। फड़ देख धनियाँ साड़ीक फाँड़ बान्हि गाछपर चढ़ि गेल। गाछमे लुबधल पीरारक फड़ देख धनियाँक मन चपचपा गेल। तीमन करैले दसटा तोड़ियो लेलक। जेना केकरो माटिमे गड़ल

रूपैआक तमघैल भेटलासँ खुशी होइत तहिना धनियाँक मोन खुशीसँ चपचपा गेलइ। पिचकुन कोदारिसँ परतीकेँ छिलए-बनबए लगल। मने-मन धनियाँ एक मनसँ ऊपरे फड़ एक-एकटा गाछमे ठेकलक। खुशीसँ धनियाँक मुहसँ गीत निकलए लगल। गीत गुनगुनाइत धनियाँ पिचकुनकेँ हाक पाड़ि बाजल-

"तकदीर जागि गेल। देखै छिऐ गाछमे कोंकची लगल फड़! काल्हिसँ तोड़ि-तोड़ि हाट लऽ जाएब। खूब महग बिकाएत।"

पिचकुनकेँ बुझले ने। धनियाँक बातपर बिसवासे ने करए। खिसिया कऽ पुछलक-

"अहाँ चिन्है छिऐ जे की छिऐ? जँ लोक खइतै तँ अहिना लुधकी लगल रहितै?"

जहिना पीरार देख मने-मन धनियाँ अपन गरीबीकेँ खुशहाली दिस बढ़ैत देखए, गरीबीक मनमे अमीरीक ज्योति अबैत देखए। तहिना सौंसे बाधक रखबारिक संग पाँच कट्ठाक बँटाइक खुशी पिचकुनक मनमे। तँए पत्नीक संग रक्का-टोकी नै करब उचित बुझि पिचकुन बाजल-

"हमरा हाट-बजार करैक लूरि नै अछि, केना बेचब?"

धनियाँ नैहरमे हाटो-बजार करै छल। खेतीक सभ काजक लूरि सेहो छेलइ। तेतबे नहि, हाँस-बत्तक पोसबो करए आ हाट जा बेचबो करए। निर्भीक भऽ धनियाँ बाजल-

"कड़चीक लग्गी बना कऽ सभ दिन तोड़बो करब आ हाट जा बेचबो करब। अहाँ संगमे रहब आ देखबै।"

आसिन आबि गेल। बर्खा ठमकल। सवारी समए। अधिक बर्खा भेने खेत सभमे धान ऊपरा-ऊपरी। जेतए धरि नजैर जाइत तेतए धरि एकरंग हरिअर धान बुझि पड़ैत। बेर टगिते धानक पातपर ओसक बून चमकए लगैत। जहिना कोनो बाला हरिअर साड़ी, हरिअर आँगीक संग माथमे मंगटिका पहिर देखैमे लगैत तहिना खेत रूपी बाला देखैमे लगैत। मन्द-मन्द पुर्बा हवा चलए लगल। जेतै बैसू तेतै आलस आबि जाएत। बाधमे तीनठाम पानि बहैले कटारि। जइसँ ऊपरका खेतक पानि निचला खेत दिस बहैत। पिचकुन तीनू कटारिकेँ दुनू भागसँ बान्हि अपियारी बनौलक। अपियारीक पानि उपैछते अनेरूआ माछ कुदि-कुदि ओइमे फँसए लगल। धनियाँ अपियारियो ओगरैत आ माछो बिछैत।

पिचकुन छिट्टामे लऽ हाटो जा बेचैत आ गामोमे घुमि-घुमि बेचए लगल। दोसर-दोसर माछ बेचनिहार पिचकुनकेँ एकटा साइकिल कीनि लइले कहलक। माथपर माछक छिट्टा लऽ घुमने देहो महकै।

साइकिलक नाओं सुनि पिचकुनक सूतल मन फुरफुरा कऽ उठल। मुदा साइकिल चढ़ब नै अबैए! पिचकुन थतमतमे पड़ि गेल। थतमतमे पड़ल पिचकुनक मनमे थोड़े कालक पछाइत उठलै, जहन साइकिल भऽ जाएत तहन चढ़ब सिखबो करब आ जाबे सीखल नै हएत ताबे पैछला सीटपर छिट्टा रखि गुड़काइए कऽ घुमि-घुमि बेचब...।

हाटसँ घुमैत काल पिचकुन धनियाकेँ कहलक-

"अधपुराने एकटा साइकिल कीनि लेब।"

आमदनीक खुशी धनियाकेँ रहबे करए। मुस्कियाइत बाजल-

"जहन साइकिले कीनब तँ अधपुरान किए कीनब? लबके कीनि लिअ।"

जितिया पाबैन। मरूआ रोटी माछक पाबैन। एक दिन पहिनहि पिचकुनकेँ माछक बेना लोक सभ दऽ गेल। सुतली रातिमे पिचकुन चहा-चहा कऽ उठैत आ घरवालीकेँ कहैत-

"अपियारीक सभ माछ बीछि लेलक।"

मुदा धनियाँ सपना बुझि फेर सुति रहए। ..अन्हरोखे दुनू परानी पिचकुन टौहकी-छिट्टा लऽ अपियारी लग गेल। अन्हार रहने माछ देखबे ने करए। एकटा अपियारी लग पिचकुन बैसल आ दोसर लग धनियाँ। बीड़ी लगा-लगा पिचकुन पिबैत। फरिच्छ होइते एकटा अपियारीमे पिचकुन आ दोसरमे धनियाँ पैसल। दुनू गोरे माछ बिछए लगल।

जितिया छी, माछ हएत की नहि, तँए लोक दुआरे लोक अपियारीए लग पहुँचए लगल। तरजू-बैटखाड़ा नइ रहने पिचकुन अन्दाजेसँ बेचए लगल। छिट्टासँ ऊपरे माछ बीकि गेलइ। बँचलाहा माछ दुनू परानी आँगन नेने आएल। अदहासँ बेसीए अँगनोमे बीकल। पाबैनक दिन रहने हाटक भरोसे रहब पिचकुन नीक नै बुझि धनियाकेँ कहलक-

"झब-दे जलखै बनाउ, अखने माछ बेचए जाएब।"

हाँइ-हाँइ कऽ धनियाँ रोटी पका माछक सन्ना बनौलक। खा कऽ पिचकुन साइकिलपर छिट्टा लादि अँगने-अँगने माछ बेचए विदा भेल। बारह बजैत-बजैत

सभटा माछ बीकि गेलइ।

रौद तीखर। पिचकुन माछ बेच पसिखाना पहुँच गेल। पसिखाना ताड़ी पिआकसँ भरल। दुनू परानी पासी गहिंकी सम्हारैमे तंग-तंग। बैसैक जगह नहि। तँए पिचकुन पासी लग जा एक बम्मा ताड़ी लऽ ठाढ़े-ठाढ़ पीब कैंचा दऽ साइकिलपर चढ़ि विदा भेल। धनियाकेँ भाँज लगि गेलै जे पिचकुन ताड़ी पीबैए। दूरेसँ पिचकुनकेँ साइकिलपर अबैत देख धनियाँ ओसारपर ओछाइन ओछा सुजनी ओढ़ि कुहरए लगल। ..आँगन अबिते पिचकुन धनियाकेँ कुहरैत देख लगमे जा पुछलक-

"की-इ-इ होइ-इ-इ अए-ए-ए?"

पिचकुनक बोली सुनि धनियाँ आरो जोर-जोरसँ कुहरए लगल। धनियाँक मुँह उघारैत पिचकुन फेर पुछलक। तैपर नकियाइत धनियाँ बाजल-

"मरि जाएब! बड़का दुख पकैड़ लेलक! छाती दुखाइए! जाउ दोकानसँ करूतेल नेने आउ। सगरे देह मालिस करू, तखने छूटत।"

लटपटाइते पिचकुन शीशी लऽ दोकानसँ तेल आनि धनियाकेँ मालिस करए लगल। कड़ घुमि-घुमि धनियाँ पिचकुनसँ भरि पोख मालिस करौलक। जखन पिचकुनकेँ हाथ दुखा गेलै तखन धनियाँ बाजल-

"आब, कन्नी मन हल्लुक लगैए।"

मन हल्लुक सुनि पिचकुनक मनमे आशा जगलै। फेर मालिस करए लगल। धीरे-धीरे पिचकुनोक निशाँ उतरै आ धनियोँक तामस कमइ। पिचकुन खुशी जे घरवाली बँचि गेल, आ धनियाँ खुशी जे ताड़ी पीबैक नीक सजा देलिऐन।

आसिन कातिकक आमदनीसँ पिचकुनक जिनगीक नींव पड़ल, पीरारसँ लऽ कऽ माछ तकमे नीक कमेलक। जइ पिचकुनक जिनगी गरीबीसँ जर्जर छल जे जानवरोसँ बत्तर जिनगी जीबैत रहए, ओ पिचकुन जहिना मनुख जानवरक विकसित रूप छी तहिना जानवरक जिनगी टपि मनुखक जिनगीमे प्रवेश केलक। जहिना हमर पूर्वज खोपड़ी बना रहै छला आ धीरे-धीरे आइ नीक मकानमे रहै छैथ तहिना पिचकुन माटिक भीतक देबालक घर बनबैक विचार केलक। ओना पानि पीबैक अपना कोनो उपाय नइ छै जेकरा-ले आगू साल जोगार करैक विचार दुनू परानी मिलि केलक। ओना, खाली घरे आ पानियेँक

दिक्कत पिचकुनकेँ नहि। ने घरमे सुतैले चौकी आ ने भानस करैले बरतन छै, मुदा सेहो सभ रसे-रसे जोगार करैक विचार केलक।

सौंसे बाधमे धान फुटि कऽ लबल। हरिअर-उज्जर-लाल-कारी शीशसँ बाध चमकए लगल। दुनू परानी पिचकुन घर-आँगन छोड़ि भरि-भरि दिन बाधेमे रहए लगल। जँ बाधमे नै रहैत तँ साँढ़-पाड़ाक उपद्रव, घसवहिनीक उपद्रवसँ गिरहस्तक-मुहेँ फज्झैत सुनैत।

साँझू-पहरकेँ धनियाँ सोमनी दादी लग जा खेतमे लुबधल धानक प्रशंसा करैत। सोमनी दादी हृदैसँ धनियाकेँ असिरवाद दइत। सामा पाबैन भऽ गेल। गोटि‍-पँगरा खेतक धान सेहो पाकए लगल। बैसारी देख धनियाँ पिचकुनकेँ कहलक-

"पीरारक गाछक जड़िकेँ तामि-कोरि सेरिया दियौ जे आगू नीक-नहाँति फड़त।"

धनियाँक बात सुनि पिचकुन बढ़ियाँ जकाँ पीरारक गाछक जड़िकेँ तामि

तामि बकरी भेराड़ी मिलल छाउर पाँचो गाछक जड़िमे चारि-चारि पथिया दऽ दू-दू घैल पानि सेहो देलक। ..पनरहे दिनक पछाइत पाँचो गाछक रंग बदैल हरिअर-कचोर भऽ गेल। सभ मुड़ीमे नवका कलश सेहो कलशल। जहिना मनुख अपन बच्चाकेँ सेवा करैत तहिना दुनू परानी पिचकुन पीरारक गाछकेँ करए लगल।

अपन सेवा देख पाँचो पीरारक गाछ हृदैसँ दुनू परानी-धनियाकेँ असिरवाद देबए लगल।

❍

शब्द संख्या : 2064

अनेरुआ बेटा

तेसर साँझ। अन्हरियाक चौठ रहने चान तँ नइ उगल रहै मुदा पूबसँ धाही छिटकए लगल छेलइ। सुनसान अन्हार देख किछु क्षण पहिनहि एकटा कुमारि-कन्याँ, समाजमे लोक-लाज बँचबैक खिआलसँ अपन दस दिनक जन्मल बच्चाकेँ रस्ताक किनछैरमे रखि अढ़े-अढ़ आँगन चलि गेल। बच्चाकेँ नअ दिन तँ झाँपि-तोपि कऽ बेमारीक बहन्ना बना रखलक। मुदा घटना खुलै दुआरे दसम दिन जी-जाँति कऽ फेकलक नहि, रस्ताक कातमे ओरिया कऽ रखि देलक।

पाँचे-सात मिनटक पछाइत गंगाराम हाटसँ घर अबैत रहए। जनमौटी बच्चाक रुदन सुनलक, एकाएक पएर अस्थिर भऽ गेलइ। बीच बाटपर ठाढ़ भऽ अवाजकेँ अकानए लगल। ई अवाज तँ कोनो जानवर-जन्तुक वा चिड़ै-चुनमुनीक तँ नइ छी! मनुखक बच्चाक बोली बुझि पड़ैए..!

अकचकाइत गंगारामक मनमे उठलै, ऐठाम मनुखक बच्चाकेँ बोली भऽ केना सकैए? तहूमे केकरो देखबो ने करै छिऐ। ..बाँसक गाड़ल खुट्टा जकाँ गंगाराम बीच बाटपर ठाढ़ भऽ गेल। कनी काल ठाढ़ रहि ओ आस्ते-आस्ते बच्चा दिस पएर बढ़ौलक। झल-अन्हार रहने अधिक दूर देखबो ने करै छल। अगल-बगलक खेतसँ लऽ सौंसे बाधमे कीड़ी-मकोड़ी सभ अपन-अपन स्वरमे कियो माए-बापकेँ हाक पाड़ैत, तँ कियो अरामसँ गीत गबैत। जइसँ सौंसे बाधमे अनघोल मचल।

लग पहुँच गंगाराम बच्चाकेँ निहारए लगल। एक मन कहलकै-

'ई तँ मनुखक बच्चा छी।'

लगले दोसर मन कहलकै-

'ऐठाम बच्चा आएल केना?'

तरकारीबला झोरा दुभिपर रखि, दहिना हाथ बच्चाक देहपर दऽ हसोंथए लगल। देह सिहैर गेलइ। सगर देहक रोइयाँ ठाढ़ भऽ गेलइ। मुदा मनमे खुशी उपकलै। मन थीर कऽ बच्चाकेँ दुनू हाथे उठा लेलक। उठा कऽ पेटमे साटि,

बामा हाथे बच्चाकेँ थाम्हि दहिना हाथे खढ़-पात पोछए लगल। बच्चा ओहिना पूर्ववते कनैत रहए। खढ़ पोछि गंगाराम कान्हपर सँ गमछा उतारि बच्चाकेँ ओइमे लपैट लेलक। तरकारीक झोरा कान्हमे टाँगि छाती लगौने बच्चाकेँ अपना ऐठाम अनलक।

आँगन आबि गंगाराम हँसैत घरवालीकेँ कहलक-

"आइ भगवान खुश भऽ एकटा बेटा देलैन!"

'बेटा देलैन' सुनिते भुलिया अकचकाइत दौगल आबि पतिक कोरासँ अपना कोरामे बच्चाकेँ लैत बच्चा दिस निंगहारि-निंगहारि देखैत बाजल-

"केतए ई बच्चा भेटल! आ-हा-हा, बच्चा तँ बड़ दीब अछि!"

"हाटसँ घुमैत काल बाटपर भेटल। एकर सेवा करू। जँ अप्पन बनि कऽ आएल हएत तँ जीबे करत, नहि तँ जहिना रस्ते-रस्ते आएल तहिना चलि जाएत।"

पतिक बात सुनि भुलिया मने-मन सोचए लगल, अपना तँ ने गाए अछि आ ने बकरी, जेकर दूध पिआ बच्चाकेँ पालब। अपने तँ दूध हेबे ने करत किएक तँ बुढ़ाड़ीमे सभ अंग सुखा गेल। भुलिया निराश भऽ गेल। मुदा थोड़े कालक पछाइत भुलियाकेँ आशा जगल। मनमे एलै- अपन ने छाती सुखि गेल मुदा पितियौत दियादनी तँ चिलकौर अछिए। ..मन पड़िते भुलिया भगवानकेँ धैनवाद दैत बाजल-

"जहिना भगवान सुखाएल बोनमे फूल फुलौलैन तहिना ओकर अहारोक ओरियान तँ वएह करथिन।"

पचास बर्खक गंगाराम। अड़तालीस बर्खक भुलिया। मुदा जेते थेहगर गंगाराम तइसँ कम भुलिया। अड़तालीस बर्खक भुलिया साठि बर्खसँ ऊपर बुझि पड़ैत अछि। झुनकुट बुढ़ जकाँ। बुढ़क सभ लक्षण भुलियामे आबि गेल अछि, मुदा कोरामे बच्चा देख भुलियाक शरीरमे जुआनीक खून दौगए लगलै। नव उत्साह, नव-जीवन। आनन्दित भऽ विह्वल होइत भुलिया पतिकेँ देखैत आ गंगाराम पत्नीकेँ। दुनूक मनमे खुशीक हिलोर उठए लगलै, पानिक गुब्बारा जकाँ खुशी मुहसँ निकलए चाहइ..। बच्चाकेँ चुप रहै दुआरे भुलिया अपन छातीमे लगा लेलक। कनी काल बच्चा छातीमे लागि मुँह बन्न केलक मुदा दूध नइ भेटने फेर ओहिना कानए लगल।

गंगारामक घरक बगलेमे पितियौत भाए-रूपलालक घर। बच्चाकेँ छाती लगौने भुलिया रूपलालक आँगन पहुँचल। रूपलालक स्त्री-कबुतरी अपना बच्चाकेँ दूध पिअबैत रहए। तीन मासक बच्चा रहइ। ..भुलियाक कोरामे बच्चाकेँ कनैत देख अपना बच्चाकेँ ओछाइनपर सुता कबुतरी भुलिया कोरासँ बच्चाकेँ लैत दूध पियाबए लगल। भूखल बच्चा, हपैस-हपैस कऽ दूध पीबए लगल। बच्चाकेँ दूध पिबैत देख भुलिया कबुतरीकेँ कहलक-

"भगवान तोरा सातगो बेटा औरो देथुन।"

भुलियाक बातकेँ हँसीमे उड़बैत कबुतरी बाजल-

"चारिए-टा मे तँ अकैछ गेलौं आ सातटा आरो पोसब पार लगत। अपन असिरवाद घुमा लौथु। जेतबे अछि तेकरे निमेड़ा होइ तहीसँ बहुत हएत।"

बात बदलैत कबुतरी फेर बाजल-

"दीदी, बुढ़ाड़ियोमे जे हिनका बेटा भेलैन से केहेन पोरगर छैन। हिनके जकाँ आँखि, मुँह, नाक लगै छैन। भैया जकाँ किछु ने बुझि पड़ैए।"

भुलिया-

"सभ दिन तूँ एक्के रंग रहि गेलें। कहियो तोरा बजै-भुकैक लूरि नइ भेलौ। जेठ-छोटक विचार तँ बुझबे ने करै छीही। केकरो किछु कहि दइ छीही। कोनो गत्तरमे लाज-सरम तँ छौहे नहि।"

हँसैत कबुतरी तेहरौलक-

"एँह दीदी, हिनका अखन की भेलैन हेन, एकटाकेँ के कहाए जे जोड़ो लगि जेतैन।"

कबुतरीक बातसँ भुलियाकेँ तामस नै उठइ। बच्चाक आनन्द हृदैकेँ पानि जकाँ कोमल बना देने छेलइ। बच्चाक उद्गार भुलियाक कोमल हृदैकेँ खोलि देलक-

"तोरे भैयाकेँ हाटसँ अबै काल रस्तामे ई बच्चा भेटलै।"

कबुतरी-

"भेटुआ बच्चाक मुँह हिनका मुहसँ किए मिलै छैन? ई हमरासँ छिपबै छैथ।"

खौंझाइत भुलिया बाजल-

"अच्छा हो, हमरे भेल। आब तँ मनमे सबुर भेलौ ने।"

बात बदलैत कबुतरी बाजल-

"दीदी, जहिना एकटा बच्चाकेँ दूध पीअबै छी तहिना अहू बच्चाकेँ दूध पिआ देबैन। कोनो कि हमरा घरमे मौसरी नै अछि जे बच्चाकेँ दूधकटू हुअ देबैन। लोकेक काज समाजमे लोककेँ होइ छै किने। हिनका अन्हार घरमे दीप जरलैन तइसँ कि हमरा खुशी नै होइए।"

कबुतरीक बात सुनि भुलियाक मन गदगद भऽ गेल। भुखाएल बच्चाकेँ पेट भरिते निन्न आबि गेलइ। बच्चाकेँ बिछौनपर सुतबैत कबुतरी बाजल-

"दीदी, बच्चाकेँ एतै रहए देथुन। राति-बिराति जहन भूख लगतै, पिया देबइ।"

"बड़बढ़ियाँ।"

कहि भुलिया अपना आँगन आबि पतिकेँ कहलक-

"आब बच्चा जीबे करत। बड़ दूध गोधनपुरवालीकेँ होइ छइ। दुनू बच्चाकेँ पालि लेत।"

बच्चा-ले गंगारामक मन कनैत। मुदा भुलियाक बात सुनि मन हरिया गेलै मुदा शंको उठलै। बाजल-

"बच्चाकेँ अपना अँगना किए ने नेने अएलौं। आन तँ आने छी।"

पतिकेँ चोहटैत भुलिया कहलक-

"अहाँ पुरुख छी, तँए की बुझबै जे माइक की मासचर्ज होइ छइ? से स्त्रीगणे बुझि सकैए। जे माए एक दिन बच्चाकेँ छातीसँ लगा लेत ओ जिनगीमे कहियो ओइ बच्चाक अधला नै सोचत।"

गंगाराम चुप भऽ गेल। एकटा बात मन पड़लै। पुछलक-

"अपने दुनू गोरे ने ओकर बाप-माए हेबै, तँए कोनो नाओं तँ रखि देबै किने।"

पतिक बात सुनि भुलियाक मनमे छठियारक दृश्य आबि गेलइ। मुस्कियाइत बाजल-

"आन बच्चाकेँ तँ स्त्रीगण सभ मिलि कऽ नाओं रखै छइ। मुदा से तँ ऐ बच्चाकेँ नइ भेल। अपने दुनू गोरे मिलि कऽ नाओं रखि दियौ।"

पत्नीक विचार सुनि गंगाराम बिहुँसैत बाजल-

"मंगल नाओं रखि दियौ।"

सात मासक पछाइत बच्चाक मुँहमे दाँतो जन्मए लगल आ ठाढ़ भऽ कऽ डेगा-डेगी चलौ लगल। अन्न सेहो चाटए लगल आ पानि सेहो पीबए लगल। बच्चाक सिनेह एते अधिक दुनू परानी-गंगारामक हृदैमे रहै जे कखनो आँखिक परोछ हुअए, से नै चाहए। भुलिया बोइन करब छोड़ि, अँगना-घरक काज सम्हारि साबेक जौड़ ओसारेपर बैस बाँटए लगल। ओकरे बेच-बेच दू पाइ कमा लइत। अपना तँ साबे नै रहै मुदा अधियापर बँटैले गाममे साबे भेटइ। दुनू परानी गंगाराम ओहन उत्साहित भऽ गेल जेना दस बर्ख पहिने होइत छल। भरि-भरि दिन काज करैत मुदा थाकैन बुझिए ने पड़इ। भुलियाकेँ जखन मंगल 'माए' कहैत तखन आनन्दसँ ओ उन्मत भऽ जाए।

पाँच बर्खक अवस्थामे मंगलक नाओं पिता स्कूलमे लिखा देलक। मंगल पढ़ए लगल। पाँचे किलास तक पढ़ाइ गामक स्कूलमे होइत रहइ। पँचमा तक मंगल पढ़ि लेलक। दस बर्खक भइयो गेल। मुदा दुनू परानीमे गंगारामक देह एते अब्बल भऽ गेलै जे काज करैले लोक अढ़ौनाइ छोड़ि देलकै। कहुना-कहुना दुनू परानी जौड़ बाँटि-बाँटि गुजर करए। जिनगी भारी लगए लगलै। मुदा दसे बर्खक मंगलमे ज्ञानक उदए कनी-मनी भऽ गेल। जहिना बच्चेमे हनुमान बाल सुरूजकेँ गीर गेल छला, तहिना। मंगल पिताकेँ कहलक-

"बाबू अहाँ दुनू गोरे काज करै-जोकर आब नइ रहलौं। हमरा मन होइए जे चाहक दोकान खोली। अपने डेढ़ियापर एकटा एकचारी बान्हि दिअ, दोकान खोलब।"

गंगारामक मनमे जँचलै। मुदा चाह तँ गामक लोक पिबैत नहि, तखन दोकान चलतै केना। मुदा तैयो एकचारी बान्हि देलक। बाड़ीमे एकटा जीमहर-गाछ रहै ओकरा पच्चीस रूपैआमे बेच, चाह बनबैक बरतन-बासन सेहो कीनि देलक।

चाहक दोकान मंगल शुरू केलक। नव वस्तुक दोकान गाममे। मुदा पहिल दोकानकेँ तँ मोनोपोली होइते छइ। शुरूमे गामक लोक नव चीज पेय बुझि सिहन्ते पिनाइ शुरू केलक। मुदा धीरे-धीरे दोकान जमि गेल। जइसँ एतेक कमाइ हुअ लगलै जे कहुना-कहुना गुजर चलि जाइ।

तीन साल बितैत-बितैत दुनू परानी गंगाराम मरि गेल। जाधैर गंगाराम

जीबै छला ताधैर गाममे मंगलक प्रति केकरो कोनो तरहक घृणा नै छेलै मुदा गंगारामक मरला पछाइत लोकमे घृणा जागए लगलै। मुदा तैयो दोकानक बिकरीमे कमी नै एलै, किएक तँ समाजक लोक चाह-पानि पीअब शुरू कऽ देने छल।

चाहक दोकान केला उपरान्तो मंगलक मनमे पढ़ैक जिज्ञासा जीविते। खाइ-पीबैसँ जे पाइ उगरै ओइसँ किताब-कागत-कलम कीनि-कीनि पढ़बौ करए आ लिखबो करए।

मरै काल गंगाराम मंगलकेँ जन्मक इतिहास सुना देने रहथिन। जइसँ समाजक कुरीति-कुबेवस्था जे करमी लत्ती जकाँ छाड़ने अछि, ओइ बिन्दुपर मंगलक नजैर पहुँच गेल छेलइ। तँए किताबक अध्ययनक संग-संग समाजक बेवहारक अध्ययन सेहो करए लगल। मंगल चाहक दोकान चलबैत तँए दस गोरे संग गप-सप्प करैक लूरि सेहो सीखि लेलक। तेतबे नहि, साँझू-पहर, जखन एक झोँक चाहक बिकरी खूब होइ, तेकर पछाइत, जखन गहिंकी पतरा जाइ तँ रूपचन मंगलक दोकानपर अबइ। अबिते दू गिलास चाह पिया मंगल रूपचनक दिमाग साफ कऽ दइ। रूपचन गामक खिसक्कर। मुदा बड़ गरीब। दू-चारिटा पछुएलहा गहिंकियो रहै, तैबीच रूपचन पुरना खिस्सा उठबै। एक घन्टा, दू घन्टा, तीन-तीन घन्टा तक रूपचन खिस्सा मंगलकेँ सुनबै। खिस्सा सभ दिन बदैल-बदैल कऽ कहइ। कहियो राजा-रानी, तँ कहियो रानी-सरंगा, तँ कहियो रजनी-सजनीक। तहिना कहियो गोनू झाक, तँ कहियो डाकक, कहियो अल्हा-रुदलक, तँ कहियो दीना-भदरीक, कहियो लोरिक, तँ कहियो सलहेसक।

ऐ तरहेँ मंगलक बुधिक बखाड़ीमे किताबक ज्ञान, समाजक ज्ञान आ खिस्साक ज्ञान जमा हुअ लगलै। रातिमे जे खिस्सा सुनै ओ दिनमे जखन समए भेटै, लिखि लिअए। लिखैत-लिखैत पाँति सेहो सोझ-साझ हुअ लगलै आ जिज्ञासो बढ़ए लगलै।

एक दिन बेर टगैत एक गोरे मंगलक ऐठाम चाह पीबए आएल। देह-दशासँ बिल्कुल साधारण। हाथमे एकटा चमड़ाक बैग रहइ। ओ आदमी "भारत जागरण" पत्रिकाक सम्पादक छला। गामक दशा-दिशाक अध्ययन करैले गाम दिस आएल रहैथ। ..मंगलसँ गप-सप्प करैत ओ सम्पादक जेना हेरा गेला। उन्मत्त भऽ गेला। जेना मंगलक हृदए आ सम्पादकक हृदए एकठाम भऽ केतौ सफरमे निकैल गेल हुअए, तहिना।

भक्क टुटिते दुनू गोरे हँसए लगला। सम्पादक कहलखिन-

"बौआ, चाह बनाउ। पहिने चाह पीअब अखन धरि नै पीने छेलौं। आइ हम रहब, निचेनसँ गप-सप्प करब।"

मंगल चाह बनबए लगल। चाह बना दुनू गोरे पीलैन।

खेला-पीला पछाइत, रातिमे दुनू गोरे एक्के बिछानपर बैस गप-सप्प करए लगला। जे किछु खिस्सा-पिहानी मंगल लिखने छल ओ हुनका आगूमे रखि देलकैन। उनटा-पुनटा सम्पादकजी देखए लगला। भाषा-शैली तँ नइ जँचलैन मुदा विषय-वस्तु हृदैकेँ पकैड़ लेलकैन...।

हँसैत सम्पादक बजला-

"बड़ सुन्दर वस्तु सभ अछि। एकरे तकैले हम आएल छी।"

कहि बैग खोलि किछु पत्रिका आ किछु किताब दैत कहलखिन-

"ऐमे लिखैक तौर-तरीका निर्धारित कएल अछि। एकरा ठीकसँ पढ़ि जे अधार निर्धारित अछि, ओइ अधारपर लिखब। हम सम्पादक छी। मासिक पत्रिका चलबै छी। अहाँक एक-एक कथा सभ मासक पत्रिकामे छापब आ एक कॉपी अहूँकेँ पठा देल करब।"

तीन-चारि घन्टा धरि सम्पादकजी मंगलकेँ बुझबैत रहलखिन। भोरे सुति उठि चाह पीब सम्पादक चलि गेला।

मंगलक कथा पत्रिकामे मासे-मास छापए लगल। मंगलक अनेको पाठकमे एकटा लड़की सेहो। नाओं सुनयना। दर्शन शास्त्रसँ एम.ए.मे पढ़ैत। पाँचम मासक पत्रिकामे सम्पादकजी मंगलक परिचए-मे एकटा उपन्यासक चर्चा सेहो कऽ देलखिन, नाओं छेलै "मरल गाम"। सुनयनाक पिता ओकील। सुनयनाक मन "मरल गाम" नाओं पढ़ि नाचए लगल। मनमे आबए लगलै, हमर देश तँ गामक देश छी। जहन गामे मरल अछि तहन देशकेँ की कहबै? ..ई विचार सुनयनाक मनमे उड़ी-बीड़ी लगा देलक। जे सुनयना, पिताक सोझाँमे भरि मुँह कहियो बजैत नहि, ओ सुनयना आइ पितासँ डिस्कस करैले तैयार भऽ गेल।

कोर्टसँ आबि ओकील साहैब चाह पीब टहलैले गेला। टहैल-बूलि कऽ दोसर साँझमे आबि कौल्हुका केसक तैयारी-ले फाइल निकाललैन। पत्नी चाह आनि कऽ देलखिन। चाह पीब, पान खा फाइल खोलैत रहैथ कि सुनयना आबि

कऽ आगूक कुरसीपर बैसते कहलकैन-

"बाबूजी, एकटा सवाल मनमे घुरिया रहल अछि। ओ कनी बुझा दिअ?"

"की?"

"आइ पत्रिकामे पढ़ने छेलौं जे सचमुच गाम मरल अछि। जँ गामे मरल अछि, आ देश गामक छी, तखन देशकेँ की कहबै?"

सुनयनाक प्रश्नक गंभीरतापर नजैर नइ दऽ ओकील साहैब बजला-

"ई साहित्यकार सबहक समझ छिऐन, तँए ऐ पर किछु नै कहि सकै छिअ।"

"साहित्यकारो तँ अही समाजक लोक होइ छैथ। हुनको आने लोक जकाँ जिनगी छैन। तहन ओ एहेन विचार किए लिखलैन?"

"साहित्यकारक बात साहित्यकारे बुझि सकै छैथ। हम तँ ओकील छी, कानूनक बात बुझै छिऐ। अखन तूँ जा, हम एकटा केसक तैयारी करब।"

सुनयना उठि कऽ चलि गेल। अपना कोठरीमे बैस कऽ विचार करए लगल। जइ देशक गाममे ने पानि पीबैक ओरियान छै, ने खाइले सभकेँ संतुलित भोजन भेटै छै, ने भरि देह कपड़ा भेटै छै आ ने रहैले घर छै, ओइ देशकेँ मरल नै कहबै तँ की कहबै? अखनो लोक सरल पानि पीबैए, कहुना किछु खा दिन कटैए, गाछक निच्चाँमे आगि तापि समए बितबैए, हजारो रंगक रोग-वियाधिसँ घेरल अछि। जइ देशक मनुखक जिनगी एहेन अछि ओइ देशकेँ की कहबै? तेतबे नहि, हजारो बर्खक मनुखक इतिहासमे जेतए अखनो धरि सरस्वतीक आगमन सभ मनुख धरि नइ भेल अछि, ओइ देशकेँ की कहबै..?

ढेरो प्रश्न सुनयनाक आगूमे ठाढ़ भऽ मनकेँ घोर-घोर कऽ देलकै। अचेत जकाँ सुनयना कुरसीपर ओंगैठ सोचए लगल। सोचैत-विचारैत अन्तमे ऐ प्रश्नपर आबि अँटकल जे 'मरल गाम' केँ पहिने पढ़ब। मुदा किताब भेटत केतए? फेर मनमे एलै- लिखनिहारे लग पहुँच किताबक भाँज लगाएब।

..पत्रिका निकालि सुनयना लेखकक पता पुरजीपर लिखलक।

दोसर दिन सुनयना मंगलक भाँज लगबैले विदा भेल। नअ बजेक समए। भिनसुरका गहिंकीकेँ सम्हारि मंगल केतली, टोपिया, ससपेन, गिलास इत्यादिकेँ दोकानक आगूमे रखि, चुल्हिसँ छाउर निकालि चुल्हि निपैत रहए। सुनयना चाहक दोकानपर ऐ दुआरे पहुँचल जे ऐठामसँ सौंसे गामक लोकक भाँज लगि

सकैए। ..दोकानपर पहुँच सुनयना मंगलकेँ पुछलक-

"ऐ गाममे 'मंगल' नामक एक बेकती छैथ हुनकर घर बता दिअ।"

अपन नाओं सुनि मंगल चौंक गेल। मुदा चुप्पे रहल। जेना मने-मन गाममे मंगलकेँ तकैत रहए। सुनयनो सएह बुझलक। कनी काल गुम्म रहि मंगल बाजल-

"बहिनजी, अगर मंगल ऐ गाममे हएत तँ जरूर भाँज लगा देब। मुदा अखन हमरा ऐठाम आएल छी तँए बिनु खेने-पीने केना जाएब, बैसू। ई तँ मिथिला छिऐ। जहिना घरवारी-ले स्वागत करब अनिवार्य अछि तहिना तँ अतिथो लेल...।"

मंगलक बात सुनि सुनयनाक मनमे जेना पियासलकेँ शीतल पानि भेट गेने होइत तहिना भेल। बाँसक फट्ठाक बनौल ब्रेंचपर सुनयना बैस गेल। हाथ धोइ मंगल सस्पेन अखारि, चुल्हि पजारि चाह बनबए लगल। ब्रेंचपर सँ उठि सुनयना चुल्हि लग जाए चाहलक कि कुर्तीक निचला कोण फट्ठीमे फँसि गेलै, जइसँ कनी फाटि गेलइ। मुदा तेकर चिन्ता नै कऽ सुनयना मंगल लग जा बैसए लगल। ..लगमे सुनयनाकेँ बैसैत देख मंगल बाजल-

"मंगलसँ कोन काज अछि?"

सुनयना-

"मंगल साहित्यकार छैथ। हुनकर लिखल एकटा उपन्यास 'मरल गाम' छैन। ओइ पोथीक भाँज हम बजारमे लगेलौं मुदा केतौ नइ भेटल, तँए लिखिनिहारेक भाँज लगबए एलौं।"

सुनयनाक बात सुनि मंगल नमहर साँस छोड़ैत बाजल-

"मंगलकेँ अहाँ केना जनै छी?"

सुनयना-

"हुनकर लिखल कथा 'भारत जागरण' मे पढ़ै छी। ओइमे 'मरल गाम' उपन्यासक चर्चा देखलिऐ। जेकरा पढ़ैक इच्छा मनमे भेल। तँए एलौं हेन।"

मंगल बुझि गेल। खुशीसँ मन ओलैर गेलइ। मनमे एलै, पियासलकेँ पानि देब ओहने आवश्यक होइए जेना भूखलकेँ अन्न। मुदा हमरा तँ एक्के कॉपी अछि जे लिखने छी। जँ ई कॉपी दऽ देबै तँ अपन साल भरिक मेहनत चलि जाएत। मुदा नै देनाइ तँ आरो महा पाप हएत। फेर मनमे एलै, कहि दिऐ जे जहिया हमर

दिन-दुनियाँ घुमत तहिया छपाएब, अखन एके कॉपी लिखलेहेटा अछि। हँ, छपेला पछाइत अहुँकेँ जरूर देब। ताबे ऐठाम रहि पढ़ि लिअ।

तैबीच चाह बनल। दुनू गोरे पीलक। चाह पीब सुनयना बाजल-

“मंगलक भाँज लगा दिअ।”

विस्मित भऽ मंगल बाजल-

“हमरे नाओं मंगल छी। हमहीं उपन्यास लिखने छी। मुदा छपौल नै अछि। खाली लिखलेहेटा अछि। तँए हम आग्रह करब जे ऐठाम रहि पढ़ि लिअ। जहिया छपाएब तहिया अहाँकेँ एक कॉपी जरूर देब।”

मंगलक बात सुनि सुनयना अचम्भित भऽ गेल। पैरसँ माथ धरि मंगलकेँ निंगहारए लगल। ..आगिक धुआँ आ चुल्हिक कारीखसँ मंगल बेदरंग भेल। देहक वस्त्र परसौतीक वस्त्र जकाँ, सौंसे देहसँ गरीबी झक-झक करैत। मंगलक बगए देख सुनयनाक आँखि नोरा गेलइ। नोर पोछैत सुनयना बाजल-

“ऐठाम रहि कऽ हम उपन्यास नै पढ़ि सकब। किएक तँ कोनो पोथी पढ़ैक मतलब होइए जे ओइ पोथीक विषय-वस्तुकेँ नीक जकाँ बुझब। से धड़-फड़मे केना सम्भव हएत?”

सुनयनाक विचारमे गंभीरता देख मने-मन मंगल सोचए लगल। आत्माक उत्साह बढ़ए लगलै। सुनयना दिस तकलक। सुनयनाक आँखिमे पढ़ैक भूख जोर पकड़ने देखलक। मनमे एलै, हमहूँ तँ अनके-ले लिखने छी। हँ तखन छपौलासँ हजारो हाथ जेतै मुदा अखन तँ एक्के हाथ जा रहल अछि। मनमे सबुर भेलै, कम-सँ-कम एक्कोटा पढ़निहारक हाथ तँ जाएत। तैबीच सुनयना बाजल-

“जहिना हम कॉपी ऐठामसँ लऽ जाएब तहिना पढ़ला पछाइत घुमा देब। तँए पोथी हेराइक कोनो सम्भावने ने अछि। ऐठाम रहि पढ़ैमे हमरो लाचारी अछि। लाचारी ई अछि जे भरि दिन तँ हम केतौ रहि सकै छी मुदा सूर्यास्तक पछाइत घर पहुँचब अनिवार्य अछि।”

मंगलक विचारमे स्वत: सिनेह एलइ। बाजल-

“बड़बढ़ियाँ, हम अहाँकेँ पोथी दऽ दइ छी। आगूक बात अहाँ जानी।”

हाथमे पोथी अबिते सुनयनाक मनमे खुशी एलइ। एक टकसँ पोथी देख मंगल दिस तकैत मुस्कियाए लगल। ..मने-मन मंगलो सुनयनाकेँ पढ़ैत रहल आ सुनयनो मंगलकेँ। हँसैत सुनयना विदा भऽ गेल।

सुनयना एम.ए. नीक जकाँ पास केलक। नारी अधिकारक सर्मथक ओकील साहैब। मुदा मन ओतए ओझरा जाइन जेतए देखैथ जे नारी खाली एक्के-आध बिन्दुपर नहि, जीवनक सभ क्षेत्रमे जकड़ल अछि। जेकरा मेटाएब धिया-पुताक खेल नहि। कठिन संघर्षसँ हएत। केतौ वैचारिक संघर्ष करए पड़त तँ केतौ बलक...। अही विचारमे ओझराएल ओकील साहैब कुरसीपर बैसल छला। साँझक समए। पत्नी चाह बनौने एलखिन। टेबुलपर चाह रखि, बगलक खाली कुरसीपर बैस पत्नी कहलकैन-

“अपना सबहक पढ़ल-लिखल समाजक परिवारमे सुनयना अछि तँए ने, मुदा जँ एहेन बेटी किसानक घरमे रहैत तँ लोक एना उन्मुक्त रहए दइतै!”

चाहक चुसकी लैत ओकील साहैब बजला-

“अहाँ जे कहए चाहै छी ओ कनी खोलि कऽ बाजू।”

“सुनयनाक बिआह कऽ लिअ, तहन तँ मनोज रहत किने ओ तँ बेटा धन छी। बेटा-बेटीक बिआह करब माए-बापक अनिवार्य कर्तव्य छी।”

“हमरा मनमे एकटा नव विचार अछि, ओ ई जे सुनयनाकेँ सेहो पुछि लिऐ?”

सुनयनासँ पुछैक बात सुनि पत्नी ढोढ़ साँप जकाँ हनहनाइत बजली-

“लोक की कहत? आइ धरि केकरा देखलिऐ जे माए-बाप बेटा-बेटीसँ पुछि कऽ बिआह करैए।”

पत्नीक विचार सुनि ओकील साहैब मने-मन सोचए लगला जे नारीकेँ मात्र पुरुखे नै नारियो दाबि कऽ राखए चाहैए। अजीब घेरा-बन्दीमे नारी फँसल अछि। मुदा अपन विचारकेँ मनेमे रखि ओकील साहैब सुनयनाकेँ हाक पाड़लखिन।

अपना कोठरीसँ निकैल सुनयना आबि कुरसीपर बैसल। बैसते सुनयना माए दिस देखए लगल। तामसे माए पति दिस तकैत...।

ओकील साहैब सुनयनाकेँ कहलखिन-

“बाउ, आब तूँ एम.ए. पास कैये लेलह। माए-बापक दायित्व होइ छै बेटा-बेटीक बिआह करब। तँए हमहूँ अपन भार उतारए चाहै छी। तोरो किछु बजैक छह?”

पिताक बात सुनि सुनयनाक देहमे कँप-कँपी आबि गेल। मनमे थोड़ेक

ओज सेहो। मुदा असथिरसँ बाजल-

“बाबूजी, बिआह तँ सभ पुरुख-नारी-ले अनिवार्य प्रक्रिया छिऐ। जइसँ सृष्टिक विकास प्रक्रियामे सहयोग होइ छइ। रहल बात जे बिआह केहेन हुअए। अखन जे देख रहल छी ओ नब्बे-पनचानबे प्रतिशत अनमेल बिआह होइए। केतौ धनक मिलानीसँ तँ केतौ दहेजक चलैत, केतौ कुल-मुलक चलैत तँ केतौ किछु। मुदा हमरा विचारे बिआह हेबा चाही मनक मिलानीसँ। जे टिकाउए-टा नहि, आनन्दमय सेहो हएत।”

सुनयनाक बात सुनि बिच्चेमे उत्तेजित होइत माए बजली-

“बेटी, हमरा सबहक मिथिलाक परम्परा रहल अछि जे ई काज माए-बापक विचारसँ होइ नइ कि बेटा-बेटीक विचारे। नहि जँ बेटा-बेटीक विचारसँ बिआह हएत तँ समाज ढनमना जाएत।”

सुनयना बाजल-

“बड़ सुन्नर बात कहलीही माए, मुदा परम्पराक भीतर जे दुरगुण छै ओहूपर नजैर देबए पड़तौ।”

मुँहपर हाथ नेने ओकील साहैब चुप-चाप सुनैत रहैथ। सुनयना तर्कक आगू माए कमजोर पड़ैत गेली। मुदा तैयो चुप होइले तैयार नहि।

सामंजस करैत ओकील साहैब सुनयनाकेँ कहलखिन-

“बाउ, तूँ अप्पन विचार दएह?”

सुनयना बाजल-

“अहाँ खर्च केते करए चाहै छी, बाबूजी?”

खर्चक नाओं सुनि ओकील साहैब चौंकला। मुदा अपनाकेँ अस्थिर करैत मद्धिम स्वरमे बजला-

“बाउ, अप्पन की ओकाइत अछि से तहूँ जनिते छह। मुदा जे ओकाइत अछि ओइमे हम कंजूसी नइ करबह। दू भाए-बहिन छह, ई सम्पैत तँ तोरे सबहक छिअ।”

सुनयना बाजल-

“बाबूजी, मनुख देहे आ धने पैघ नहि होइए, पैघ होइए ज्ञान आ कर्तव्यसँ। सभ स्त्री चाहैए जे हमर जीवन-संगी बुधियार आ कर्मठ हुअए।

अखन हम अहाँकेँ अन्तिम निर्णए नै दऽ रहल छी मुदा एते जरूर कहब जे सोनपुरमे मंगल नामक एकटा चाहक दोकानदार अछि। ओकरा कियो ने छइ। मुदा ओकर जे काज आ बुधि छै, ओ ओकरा एक दिन महान साहित्यकारक रूपमे दुनियाँक बीच आनत। अखन ओकरा गरीबी जर्जर बनेने छइ। गरीबीक जालमे ओ तेना ओझरा गेल अछि जइसँ निकलब कठिन छइ, किन्तु जँ ओकरा ओइ गरीबीक जालसँ निकालल जाए तँ ओ जरूर उगैत सुरूज जकाँ अकासमे चमकए लगत।”

ओकील साहैब-

“बाउ, यदि तूँ हृदैसँ ओकरा चाहै छह तँ हमरा दिससँ कोनो आपैत नहि। मुदा अखन समए रहैत नीक जकाँ विचारि लएह।”

सुनयना-

“अनेक विषमता रहितो हमरा दुनू गोरेक बीच आत्माक समता अछि। हमहूँ नारीक सम्बन्धमे किछु लिखए चाहै छी। किएक तँ अपना ऐठाम नारीक प्रति जे अदौसँ अखन धरि अन्याय होइत रहल अछि ओ हमरा हृदैकेँ दलमलित कऽ देने अछि। दुनियाँक सुन्दरसँ सुन्दर वस्तु हमरा फिक्का लगि रहल अछि।”

ओकील साहैब-

“बाउ, हम तोहर विचारकेँ मानि लेलियह। तूँ अपनेसँ जा कऽ देख आबह जे केते मदैतसँ मंगल उठि कऽ ठाढ़ हएत। हम ओते मदैत कऽ देब।”

पिताक विचार सुनि सुनयना हँसैत अपना कोठरि दिस विदा भेल। सुनयनाक विचारपर ओकील साहैब मने-मन गौर करए लगला। मुदा पत्नीक मनक तामस आरो बढ़िते गेलैन।

❍

शब्द संख्या : 3369

टूटा पाइ

हलहोरिमे फेकुओ दिल्लीक रैलीमे जाइक विचार केलक। परसू सौंझका गाड़ी सभ पकड़त। दिल्लीक लड्डूक बात फेकुआकेँ बुझल तँए खाइक मन रहइ। अवसर बुझलक, किएक तँ ने गाड़ीमे टिकट लगतै आ ने संगबेक कमी। मात्र चारि दिनक खेनाइटा अपन खर्च। ओना, गाड़ीमे लोक बेसी खाइतो नहियेँ अछि किएक तँ पेशाब-पैखानाक समस्या रहै छइ...।

फेकुआ माएकेँ कहलक-

"माए, परसू दिल्ली जेबौ, बटखर्चाक ओरियान कऽ दिहैँ?"

माए पुछलकै-

"की सभ लेबही?"

"दू सेर चूड़ा लऽ कऽ डाक्टर साहैब, नागेंद्रजी चलैले कहलखिन हेन। हमरो दू सेर चूड़ा कुटि दिहैँ।"

फेकुआक बातक बिसवास माएकेँ नइ भेलइ। मनमे एलै जे दू सेर चूड़ा तँ एक दिनमे लोक खाइए, चारि दिन केना पुरतै? ..फेर मनमे एलै, दू सेर चूड़ो आ चारि-दुना आठटा रोटियो पका कऽ दऽ देबइ। कहुना भेल तँ रोटी सिद्ध अन्न भेल।

गाड़ी अबैसँ पहिनहि जुलुसक संग फेकुआ स्टेशनपर पहुँचल। जिनगीक पहिल दिन फेकुआ टेन-गाड़ीमे चढ़त। प्लेटफार्मपर भीड़ देख फेकुआक मन घबरेबो करइ आ उत्साहो जगै जे एते लोक चढ़त से हेतै आ हमरा बुते की नै चढ़ि हएत।

निर्मली-सकरी बीच छोटी लाइन। गाड़ियो छोटकीए। मुदा सकरीसँ दिल्लीक गाड़ियो बड़की आ लाइनो बड़की। ..गाड़ीमे चढ़ि फेकुआ सकरी पहुँचल। दिल्लीक गाड़ी सकरीमे लगले रहइ। हाँइ-हाँइ कऽ निर्मलीक गाड़ीसँ उतैर दिल्लीवाली गाड़ीमे सभ चढ़ल। गाड़ी खुजल।

ओना सकरीसँ दिल्ली जाइमे चौबीस घन्टा लगैत। मुदा आइ से नइ

भेल, चालीस घन्टामे पहुँचल। मुदा चालीस घन्टा केना बीतल से फेकुआ बुझबे ने केलक। हलहोरिए-मे पहुँच गेल। ने एक्को बेर खेलक आ ने पानि पीलक। मुदा तैयो भूख बुझिए ने पड़ैए। गाड़ीसँ उतरै काल फेकुआ खिड़की देने प्लेटफार्म दिस तकलक तँ जेरक-जेर सिपाहीकेँ घुमैत देखलक। मुदा फेकुआक नजैर केतौ नै अँटैक मोटका सिपाहीपर अँटकल। ओकर मनही पेटपर नजैर गेलइ। तैपर सँ छह आँगुर चाकर ललका बेल्टपर सेहो। जे बेर-बेर निच्चाँ ससरैत। चानिपर सँ पसीनाक टघार। दस किलोक बन्दुक कान्हमे लटकल। मुदा तखने डाक्टर साहैबकेँ अपन छबो संगीक संग हाथसँ सभकेँ उतरैक इशारा दैत देखलक। देखते धड़फड़ा कऽ फेकुओ उतरल।

प्लेटफार्म टपि जहाँ फेकुआ मोसाफिर खाना प्रवेश करए लगल कि ममियौत भायपर नजैर गेलइ। ममियौत भाय- रतना चरिपहिया गाड़ीक ड्राइवर। अपना मालिककेँ गाड़ी पकड़बैले आएल।

भायपर नजैर पड़िते फेकुआ लगमे जा गोड़ लगलक। गोड़ लगि लालकिला मैदान दिसक रस्ता धेलक। पाछूसँ झटैक कऽ आगू बढ़ि रतना फेकुआसँ घरक कुशल पुछलक। कुशलक जवाब नै दऽ फेकुआ कहलक-

"काल्हि साँझ तक लालकिला मैदानमे रहब तँए ओतै अबिहह। अखन नै रूकबह।"

"कनी चाहो पीब ने ले?"

"नै अखन कुछो नै पीबह।"

फेकुआ बढ़ि गेल। मुदा रतनाकेँ पाछू घुमैक डेगे ने उठैत। फेकुए दिस तकैत रहल। मनमे उठलै जे हो-ने-हो काल्हि भेँट नै हुअए। ओते लोकमे के केतए रहत तेकर कोन ठीक। तहूमे सौंझका बात कहलक। दिल्ली छिऐ। कोन ठीक जे बिजलीक इजोत रहतै की नहि। एते लोकमे तँ दिनोमे अन्हराएले रहत। एक्को दिन मेजमानियोँ ने करौलिऐ। गाममे दीदी सुनत तँ की कहत। ओ की कोनो दिल्लीकेँ दिल्ली बुझैत हएत, ओ तँ गामे जकाँ बुझैत हएत। जहिना गाममे सभकेँ सभ चिन्है छै तहिना। मुदा ई तँ दिल्ली छी। भाड़ाक एक कोठरीमे सोहर गौल जाइ छै आ दोसरमे कन्नारोहट होइ छै...। विचित्र स्थितिमे रतना पड़ि गेल। आइ धरि रतनाक बुधिपर एहेन भार कहियो नै पड़ल। एकाएक मनमे एलै, कौल्हुका छुट्टी लऽ कऽ भोरे फेकुआसँ भेँट करब। भेँट भेलापर लालकिला, जामा मस्जिद देखा देबइ।

दोसर दिन भोरे रतना फेकुआसँ भेँट करए विदा भेल। लालकिला मैदान पहुँचते भेँट भऽ गेलइ। भेँट होइते दुनू भाँइ गामेक बसिया रोटी खा पानि पीलक। भरि दिन संगे, रैली समाप्त कऽ दुनू गोरे डेरापर आएल।

पैघ सेठक ड्राइवर रतना तँए डेरो नीक। सभ सुविधा। मुदा रतनाक डेरासँ फेकुआक मनमे खूब खुशी नइ भेलइ। मन पड़ि गेलै माइक ओ बात जे हरिदम बजैत-

"अनकर पहिर कऽ साज-बाज, छीनि लेलक तँ बड़ लाज। अपना जएह रहए ओइसँ सबुर करी।"

मुदा माइक बात फेकुआक मनमे बेसी काल नै अँटकल। किएक तँ तीन दिनसँ नहाएल नै छल। जइसँ देहमे एकोरती लज्जैत नइ बुझि पड़इ। रतनाकेँ कहलक-

"भैया, पहिने हम नहेबह। बिनु नहेने मन खनहन नै हएत। ओना ओंघियो लगल अछि, तँए नहा कऽ खेबह आ भरि मन सुतबह।"

फेकुआकेँ रतना बाथरूम देखा देलक। बाथरूममे बिजली जरैत, पानि चलैत...। बाथरूम देखा रतना गैस चुल्हि पजारि भानस करए लगल। ..भरि मन फेकुआ नहाएल। मन शान्त भेलइ। जहन दिल्ली आबि गेलौं तँ किछु लइए कऽ जाएब...। रतना लग आबि बैसल। भानसमे देरी देख रतना कहलकै-

"बौआ, ई दिल्ली छिऐ। ऐठाम लोक सोलह-सोलह घन्टा खटैए। दरमाहाक संग ओभरटाइमोक पाइ भेटै छइ। मुदा जिनगी जीबैक लूरि नइ रहने सभ चलि जाइ छइ। ने गामक कर्जसँ मुक्ति होइ छै आ ने अहीठाम चैनसँ रहैए। भुतलग्गु जकाँ हरिदम बुझि पड़तौ। तोरा ऐ दुआरे कहि दइ छियौ जे तूँ अपन छोट भाए छँह।"

रतनाक बात सुनि कनी काल गुम रहि फेकुआ बाजल-

"भैया, तूँ सभ तरहेँ पैघ छह। जखन तोरा लग छी तँ तोहीं ने हमर नीक-बेजाए बुझबहक।"

फेकुआक बातसँ रतनाकेँ अपन जिम्माक भार बुझि पड़लै। बाजल-

"देखही बौआ, अखन जे कहलियौ से स्टील फैक्ट्रीक स्टाफक बात कहलियौ। मुदा सभ एहने अछि सेहो बात नहि। एहनो लोक अछि जे अपन मेहनत आ लूरिसँ गरीब रहितो अमीर बनि गेल। अपने इलाकाक ढोरबा छी।

जेकरा हम तँ ढोरबे कहै छिऐ मुदा ओ ढोढ़ाइबाबू बनि गेल। जहन गामसँ आएल तँ बौआ-ढहना कऽ चारि दिनक पछाइत ऐठाम आएल, हमरा लग। ओकरा शैलूनमे नोकरी लगा देलिऐ। किछु दिन तँ काज करैमे लाज होइ। किएक तँ ओ धानुक छी। मुदा किछुए दिनक पछाइत तेहेन हाथ बैस गेलै जे लौओकेँ उन्नैस करए लगल। अपनो खूब मन लगए लगलै। दरमहो बढ़ि गेलइ। तीन सालक पछाइत जेना ओकरा ऐठामसँ मन उचैट गेलइ। सोचलक जे जहन लूरि भऽ गेल तहन तँ केतौ कमा कऽ खा सकै छी। से नहि तँ गामेक चौकपर दोकान खोलब। अपना जँ दू पाइ कम्मो हएत तइसँ की, समाजक उपकार तँ हेतइ। सएह केलक। ले-बलैया! गामक लोक कियो 'ठाकुर' तँ कियो 'नौआ' तँ कियो 'हजमा' कहए लगलै। तेतबे नहि, घरक जनिजातिकेँ 'नौआइन' कहए लगलै! सभसँ दुखद घटना तहन भेलै जहन कथा-कुटुमैती आ जातिक काजसँ अलग कएल गेलइ। मुदा ओहो कर्म-योगी। गामकेँ प्रणाम कऽ अपन परिवारक संग दिल्ली शहर चलि आएल। वाह रे वनक फूल! ऐठाम आबि कऽ अपन शैलूनक कारोबार ठाढ़ कऽ लेलक। अखन छअटा स्टाफ रखने अछि अखन। बहिनक बिआह इंजीनियरसँ केलक। हमहूँ बिआहमे रहिऐ।"

फेकुआ बाजल-

"हमरो कोनो लाज-सरम नै हएत। जे काजमे लगा देबह, हम पाछू नइ हटबह।"

रतना-

"परसू रवि छिऐ। हमरो छुट्टी रहत। ताबे दू दिन अरामे कर।"

फेकुआ-

"हमरा ओते सूतल नीक नै लगतह। चलि जेबह बुलैले।"

रतना-

"रौ बुड़िबक! गाममे लोक खिस्सा कहै छै जे फल्लाँ तेहेन काबिल छै जे एक्के पाइमे बेच लेतौ। मुदा ऐठाम सभ काबिले छइ। तँए देखबिही जे ऐठाम सभसँ पैघ कारबार मनुक्खेक खरीद-बिकरीक छइ। देहाती बुझि कोइ ठकि कऽ बेच लेतौ। कहतौ चल हवा-जहाजक नोकरी धड़ा देबौ आ चलि जेमए आन देश।"

रतनाक बात सुनि फेकुआ क्षुब्ध भऽ गेल। मुदा मनमे एलै, जेना हम

बेदरा रही तहिना भैया कहैए। किन्तु किछु बाजल नहि। दम साधि कऽ रहि गेल।

तीन दिनक पछाइत फेकुआ कपड़ा सिलाइक टेलरमे काज शुरू केलक। दू हजार रूपैआ दरमाहा। भिनसर छह बजेसँ राति नअ बजे धरिक ड्यूटी। बीचमे एक बेर अदहा घन्टा जलखै-ले आ एक घन्टा खाइ बेर छुट्टी होइ। फेकुआक मनमे उठल जे ड्यूटी तँ बीसो घन्टा कऽ सकै छी मुदा सुतैक जे आठ घन्टा छै से केना पुरत। मुदा फेर मनमे एलै, जहन दू पाइ कमाए चाहै छी तहन तँ सभ सुख-भोग कमबए पड़त...।

दोकानमे आठटा कारीगर। आठो नोकरे। फेकुआ अनारी, तँए दोकानक झाड़-बहारसँ काज शुरू केलक। कपड़ा काटब आ सिलाइ मशीन चलाएब सेहो कनी-कनी सीखए लगल।

दुइए माय-पुत फेकुआ। दस साल पहिनहि बाप मरि गेल। अपने दिल्ली धेलक आ माए गाममे। मुदा माइयो थेहगर। पुरुखे जकाँ बोनि-बुत्ता करैत। नोकरी होइते फेकुआकेँ माए मन पड़लै, माइए नहि, गामो मन पड़लै। मन पड़ल गामक स्मृति।

..माइक ममता जागि फेकुआक मनकेँ खोरए लगलै। मनमे उठलै, परदेशिया परिवारमे गेँटक-गेँट कपड़ा.., राशि-राशिक चीज-बौस.., रेडियो, घड़ी, टी.भी, मोबाइल इत्यादि। केकरा नै नीक वस्तुक सिहन्ता होइ छइ? मुदा ओहेन सिहन्ते की जेकरा पुरबैक ओकातिये ने रहए..?

दू हजार महिना रूपैआक गरमी फेकुआक मनमे तरे-तर चढ़ि गेल। केना नै चढ़ैत? मुदा आमदनियेँक गरमी चढ़ल, खर्चक पानि परबे ने कएल। सोचलक जे सभसँ पहिने माएकेँ चिट्ठी लिखि जना दिऐ।

आठ दिनक पछाइत फेकुआ रतनाकेँ कहलक-

"भैया, हमरा तँ लिखल-पढ़ल नै होइए। मुदा जहन नोकरी लगि गेल तँ माएकेँ जनतब देब जरूरी अछि। किएक तँ ओकरा होइत हेतै जे केतए वौआइ-ढहनाइए।"

रतनोक मनमे जँचल। वी.आइ.पी. बैगसँ पोस्ट-कार्ड निकालि रतना चिट्ठी लिखैले तैयार भेल। पुछलक-

"बाज की सभ दीदीकेँ लिखबीही?"

फेकुआ लिखबए लगल-

स्थान- दिल्ली
ता.- 05.06.2007

माए,

गोड़ लगै छियौ,

भगवानक दया आ तोरा सबहक असीरवादसँ तेहेन नोकरी भेटल जे कहियो मनमे नै आएल छल। दू हजार रूपैआ महिनाक तलब। अपना केते खर्च हएत। जे उगरत से मासे-मास पठा देबौ। बेंगबा काकाकेँ कहिऐन जे चिमनीपर जा कऽ ईंटाक दाम बुझि अबैले। पहिने घर बना लेब। अपना कलो नै छौ, सेहो गड़ा लेब। घरक आगू जे मलिकाबाक चौमास छै, ओहो कीनि लेब।

तोरे फेकुआ।

सात बजे भिनसर। मेघौन समए। कखनो-कखनो सुरूज देख पड़ैत आ फेर झँपा जाइत। झिहिर-झिहिर पुर्बा हवा चलैत। पान-छह गोरेक संग फेकुआक माए रामसुन्नैर धन-रोपनी करए विदा भेल। किछुए आगू बढ़लापर डाक-प्यूनकेँ देखलक। मुदा आन स्त्रीगण जकाँ रामसुन्नैर नहि जे दिनमे दू बेर मोबाइलसँ तीन पन्नाक चिट्ठी आ तैपर सँ जे समदिया भेटल ओकरा दिया समादो पठौत। मनमे कोनो हलचल नहि। रामसुन्नैरक आगूमे आबि हँसैत डाकप्यून कहलक-

"काकी, फेकुआक चिट्ठी एलौ हेन।"

कहि झोरासँ निकालि पोस्ट कार्ड देलक। छबो स्त्रीगण डाकप्यूनकेँ चारू भागसँ घेरि कऽ ठाढ़ भेल। ..हाथमे पोस्ट-कार्ड अबिते रामसुन्नैरक मन बिहाड़िमे उड़ैत ओइ सुखल पात जकाँ जे सरंगोलिया उठि अकासमे उड़ैत, तहिना उड़ि गेल। जिनगीक पहिल पत्र। मनमे एलै, पहिने केकरोसँ पत्र पढ़ा ली। ओना डाकप्यून लगमे सँ चलि गेल। मुदा तेकर अपसोच नइ भेलइ। किएक तँ जाधैर प्यून लगमे छल ताधैर पत्र पढ़बैक विचार मनमे आएलो नै छेलइ। फेर मनमे एलै, काज कामे नै करब। अखन खूटमे बान्हि कऽ रखि लइ छी आ जहन निचेन हएब तहन पढ़ा लेब। सएह केलक।

गोसाँइ डुमैत रामसुन्नैर निचेन भेल। निचेन होइते चिट्ठी पढ़बैले श्याम ऐठाम विदा भेल। श्यामोक घर लगे। पोस्ट-कार्ड हाथमे लऽ श्याम सत्यनारायण कथा जकाँ पढ़ए लगल। मुदा दोसरे पाँति- दू हजार रूपैआ महिना तलब- मे रामसुन्नैर ओझरा गेल। मने-मन सोचए लगल, छौड़ाकेँ घरक सोह एलइ। बुधियो फुटैक उमेर भेल जाइ छइ। आब कहिया चेतन हएत। ऐगला साल तक बिआहो कैये देबइ। असगरे राकश जकाँ अँगनामे रहै छी...।

मुदा रामसुन्नैरक विचार लगले बदैल गेलइ। बुदबुदाए लगल- केना लोक कहै छै जे मसोमातक बेटा दुइर भऽ जाइए।

..विचारमे डुमल रामसुन्नैर। तैबीच श्याम बाजल-

"सभ बात बुझलिऐ ने काकी?"

श्यामक पुछबसँ रामसुन्नैरक भक्क खुजल। बाजल-

"बौआ, चिट्ठी पढ़ल भऽ गेलह। की सभ छौड़ा लिखने अछि?"

काकीक मनक बात नै बुझि श्यामकेँ खौंझ उठलै। मुदा किछु बाजल नहि। चिट्ठीकेँ निच्चाँमे रखि मुहजुआनीए बाजए लगल। मुदा पोस्ट-कार्डकेँ निच्चाँमे राखल देख वेचारी रामसुन्नैरकेँ भेलै जे अपने दिससँ कहैए। बिसवासे ने भेलइ। मुदा झगड़ो करब उचित नै बुझलक। किएक तँ बेटाक पहिल चिट्ठी छी तँए अशुभ बेवहार नीक नहि।

दोसर दिन एकटा पोस्टकार्ड कीनि रामसुन्नैर चिट्ठी पढ़बैयो आ लिखबैयो-ले सोहन ऐठाम गेल। दुनू पोस्टकार्ड रामसुन्नैर सोहनकेँ दैत बाजल-

"बौआ, पहिने पढ़ि कऽ सुना दएह। तहन लिखियो दिहह।"

पत्र पढ़ि कऽ सोहन सुना देलकै। समाचार सुनि रामसुन्नैरक मन खुशीसँ उत्साहित भऽ गेल। बाजल-

"बौआ आब चिट्ठी लिखि दएह। सोहन चिट्ठी लिखए लगल-

परमानपुर
ता. 03.07.2007

फेकू।

असीरवाद।

अखन हम अपने थेहगर छी, तँए हम्मर चिन्ता जुनि कर। रहैले घरो

अछिए। एक चैल पानि स्कूलबला कलपर सँ लऽ अबै छी वएह भरि दिन चलैए। तँए पानियोँक दिक्कत नहियेँ अछि। नहाइले धारो आ पोखैरो अछिए। कहियो काल बर्खोमे नहा लइ छी। तँए ऐ सभले तूँ चिन्ता किए करै छेँ! अखन खाइ-खेलाइक उमेर छौ, तँए कमा कऽ जे मन फुरौ से करिहेँ। ऐगला साल धरि अबिहेँ, बिआहो कऽ देबौ। असगरे अँगनामे नीक नै लगैए।

माए, रामसुन्नैर।

साल बीत गेल। जहिना गाममे रामसुन्नैर अपन काजमे हेराएल तहिना दिल्लीमे फेकुओ। साले भरिमे फेकुआ कपड़ा सिलाइक कारीगर बनि गेल। अपना देहक कपड़ा-लत्ता किनैत-किनैत फेकुआक सालो भरिक दरमाहा सठि गेलइ। माइक जिनगी तँ जहिनाक तहिना रहल मुदा फेकुआक जिनगीमे बदलाउ आएल। दुब्बर-दानर फेकुआ फुटि कऽ जुआन भऽ गेल। कपड़ा सिआइक लूरि भेने आत्मबलो मजगूत भेलइ। मुदा गामक जिनगी आ दिल्लीक जिनगीक बीचक संघर्ष फेकुआक मनमे चलिते रहल।

रवि दिन। रतनो आ फेकुओकेँ छुट्टी अछि। सुति उठि दुनू ममियौत-पिसियौत विचारलक जे साल भरिसँ बगेरी नै खेलौं, से नहि तँ आइ बगेरीए आनब। तैबीच रोडपर देखलक जे पुलिसक गाड़ी एमहरसँ-एमहर कऽ रहल छइ। दुनू भाँइकेँ कोनो भाँजे ने लगइ। कोठरीसँ निकैल रतना चाहबला लग गेल आ पुछलक तँ भाँज लगलै जे महल्लासँ एकटा जुआन लड़की आ एकटा सेठक बेटाक अपहरण रातिमे भऽ गेलइ। समाचार सुनि दुनू भाँइ डरा गेल। बगेरीक विचार छोड़ि गामक गप-सप्प करए लगल।

रतना बाजल-

"बौआ, तोरा साल लगि गेलह। एक बेर गाम जा सबहक भेँट केने आबह।"

गामक नाओं सुनिते फेकुआक मन उड़ि कऽ दोसर दुनियाँमे पहुँच गेल। मन पड़लै- चिमनीक ईंटा.., चापाकल.., घरक आगूक चौमास...। फेकुआक मन गामक सीमानपर अँटैक गेलै, सीमानपर सँ अँगना पहुँचैक साहसे ने होइ। किएक तँ बाटेपर माएकेँ ठाढ़ भेल देखए। की कहैत हएत माए? साल भरि भऽ गेलै, ने एक्कोटा पाइ पठौलिऐ आ ने एक्को खण्ड साड़ी। कहियो काल जे अस्सक पड़ैत हएत तँ के दबाइयो आनि कऽ दैत हेतइ! पौरुकाँ जे एकटा चिट्ठी देलिऐ,

तइ दिनसँ दोसर चिट्ठियो ने देलिऐ..।

चिन्तित फेकुआ। मनमे फेर उठलै- छुच्छे चिट्ठीए लिखने की हेतइ। मने-मन बुढ़िया सरापैत हएत। कहैत हएत जे छौंड़ा ढहलेलक ढहलेले रहि गेल। मुदा हमहीं की करब। छुच्छे हाथे जेबो केना करब। टिकटो-जोकर पाइ नइए। ..चिन्ता आ सोगसँ फेकुआक मन दबा गेल। कोनो बाटे ने सुझइ। मनक भीतर बिर्ड़ो उठि गेलइ। मुदा थोड़े कालक पछाइत बिर्ड़ोक हवामे फेकुआक मन सोगक तरसँ निकलल। मनमे एलै, गाम तँ गाम छी, जैठाम लोक माघक शीतलहरी आगि तापि कऽ काटि लइए। बिनु कम्मर-सीरकक जाड़ बिता लइए, गाछ तर जेठक रौद काटि लइए। मुदा दिल्लीमे से हएत? साल भरिक कमाइ साल भरिक मौसमक अनुकूल कपड़ेमे चलि गेल! नइ लैतौं तँ सेहो नहि बनैत। लेलौं तँ गाम छुटि गेल। ..जहिना घनघोर वादलक फाँटसँ सुरूजक रोशनी छिटकैत तहिना फेकुओक मनमे भेल। रतनाकेँ कहलक-

“भैया, एकटा चिट्ठी लिखि दएह।”

लगेमे रतनाकेँ सभ किछु छेलइ। पोस्ट-कार्ड निकालि लिखैले तैयार भेल। फेकुआ लिखबए लगल-

दिल्ली

ता. 11.08.2008

माए,

गोड़ लगै छियौ।

मनमे बहुत रहल हेतौ जे हमरो बेटा दिल्लीमे नोकरी करैए। मुदा सभ हेरा गेल। खाली एक्केटा चीज बँचल जे ऐठाम- दिल्लीसँ, ओइठाम-गाम धरि जीबैक रस्ता धड़ा देत। तँए खुशी अछि। हाथ खाली अछि। गाम केना आएब?

फेकुआ।

चारिए दिनमे चिट्ठी माइक हाथ पहुँचल। चिट्ठी हाथमे अबिते रामसुन्नैर निंगहारि-निंगहारि देखए लगल। छौड़ा केतौ अछि जीबैत तँ अछि। बेटा धन छी। केतौ रहह। आब तँ फुटि कऽ जुआन भऽ गेल हएत। जहिना चाह-पान खा-पी बड़का लोकक धोधि फुटि जाइ छै, तहिना तँ फेकुओकेँ भेल हएत। किएक तँ ओहो ने चाह-पान खाइत-पिबैत हएत। गोराइयो गेल हएत। मोछो-दाढ़ी भऽ गेल हेतइ। जहिना भगवान घरसँ पुरुख उठा लेलैन, तहिना तँ फेर दैयो

देलैन। ..जुआन बेटापर नजैर पहुँचते रामसुन्नैरक मन खुशीसँ नाचि उठल। मने-मन बुदबुदाएल-

“दस बर्खसँ घरमे पुरुख नै छल तँए कि कोनो पुरुखक घरसँ हमर घर अधला चलल। संतोषे गाछमे मेबा फड़ै छइ...।”

परसुका बात मन पड़लै, चाहक दोकानपर पंडीजी कहैत रहथिन जे ऐ बेर शुरूहे अगहनसँ घन-घनौआ लगन अछि। हमहूँ फेकुआक बिआह कैये लेब। बिआह मनमे अबिते सोचलक, बहुत दिनसँ पाँच गोरेकेँ अँगनामे हाथो नै धुऐलौं, सेहो कैये लेब। समाजक भोजमे तँ नइ सकब मुदा जहाँ धरि सकरता हएत, तइमे पाछुओ नै हटब। लोक ई नै बुझै जे मसोमातक बेटाक बिआह होइ छइ। डफरा-बौसली हवागाड़ी सेहो लइए जाएब। अनका जकाँ एक ढकियाक मुँह नै पसारब। अपना बेटी-जमाए-केँ जे देत से देत। हम किए मंगयौ। जे आदमी पोसि-पालि कऽ एकटा मनुख देबे करत तेकरासँ फेर की मंगयौ? किछु ने मंगबै। लूरि रहत तँ कामधेनु बना कऽ राखब नहि तँ माटिक मुरूत रहत। ..एकाएक रामसुन्नैरक नजैर चिट्ठीपर पहुँचल। पोस्ट-कार्ड निकालि हियासि-हियासि फेर देखए लगल। फुटा-फुटा करिया अक्षर तँ नइ बुझैत मुदा कृष्ण जकाँ कारी मुरूत तँ जरूर बुझि पड़इ...।

चिट्ठी पढ़ाबैले रामसुन्नैर विदा भेल। अँगनासँ निकैलते मनमे उठलै, आब की कोनो पहिलुका जकाँ लोककेँ बारह बर्ख कटिया सोन्हबए पड़ै छइ। आब तँ साले भरिमे धिया-पुता भऽ जाइए। कहुना भेल तँ हमरो फेकुआ शहरे-बजारक भेल किने।

..एते बात मनमे अबिते रामसुन्नैरक मुहसँ हँसी निकलल। मुदा असगर रहनौं रामसुन्नैर जोरसँ बजैत, जेना दोसरकेँ कहैत होइ- ‘एह! फुसियहोक बेटी जुग जितलक। भाग तँ मुँह-कान नीक नइ छइ। नहि तँ जुगमे भूर करैत। बिआहक आठमे मासमे बेटी भऽ गेलइ। ई तँ धैनवाद ऐ समाजकेँ दी जे एक सूरे सभ बाजल जे सतमसुआ बच्चा छिऐ। जँ एना बिआहक बिदागरीमे हएत तँ केहेन होएत? मुदा ओ बच्चा सतमसुआ नहि। समाज झूठो बाजि ओकरा पालन-पोसन कऽ बँचेलक..।’

रबिक दरबज्जा लग अबिते रामसुन्नैरक नजैर चिट्ठीपर पहुँचल। रबि दरबज्जेपर बैस किछु लिखै छल। रामसुन्नैरकेँ लग अबिते रबि उठि कऽ चौकीपर बैसबैत पुछलक-

“काकी फेकू भैयाक बिआह कहिया करबीही? हमहूँ बरियाती जेबौ?”

रबिक बात सुनिते रामसुन्नैरक मन वृन्दावनक रास लीलापर पहुँच गेल। मुदा थोड़बे काल धरि कृष्णक रास-लीला देख घुमि गेल आ चिट्ठी पढ़बो आ लिखबो-ले रबिकेँ कहलक।

चिट्ठी पढ़ि कऽ रबि सुना देलक। पत्र लिखैले तैयार होइत रबि बाजल-

“की सभ लिखब?”

रामसुन्नैर लिखबए लगल-

परमानपुर

ता. 15.08.2008

बौआ फेकू।

हम तोरा कमाइक कोनो आशा केने छी जे पाइ नै छौ तँ गाम केना ऐमे। केकरोसँ पैंच-खोंइच लऽ कऽ चलि आ। तीन भुरकुरी धान-गहुम रखने छी, वएह बेच कऽ दऽ देबइ। आब तहूँ चेतन भेलें। लोक कलंक जोड़त। हमरो आब ऐ दुनियाँमे नीक नै लगैए। तँए सोचै छी जे अपन काज जल्दी पुरा ली। अगते अगहनमे चलि अबिहेँ। ताबे कनियाँ ठेमा कऽ रखबौ। अखन हमहूँ थेहगर छी मुदा ऐ जिनगीक कोन ठेकान। आब ई परिवारो आ दुनियोँ तोरे सबहक ने हेतौ। समैपर चलि आ जइसँ काज बिथुत ने हौउ।”

माए ।

माइक पत्र सुनि फेकुआ मने-मन खूब खुशी भेल। मनमे भेलै, हमरो काज ऐ दुनियाँ, ऐ समाजमे छइ। ..मुदा मनमे खुशी बेसी काल टिकलै नहि। लगले माघक कुहेस जकाँ फेकुआक बुधि अन्हरा गेलइ। कोन मुँह लऽ कऽ गाम जाएब। साल भरिक कमाइ माइक हाथमे की देबइ? ई बात सत्य जे हमरा भरोसे माए नै जीबैए। मुदा हमरा ओकर कोनो दायित्व नै अछि, सेहो तँ नहि। हे भगवान कोनो गर सुझाबह।

पनरहे दिनक पछाइत एकटा घटना घटल। फेकुआक नोकरी छुटि गेल। ओना, नअ गोरेक संग फेकुआ काज करैत मुदा आठो पुरना कारीगर समयानुसार अपनाकेँ बदलैत नव-नव डिजानिक कपड़ा सिबैक लूरि सिखैत रहए। फेकुआ अनाड़ी, तँए शुरूसँ सिलाइक काज सिखए पड़लै। साल भरिमे

कहुना कऽ पुरना दिल्लीक कारीगर बनल। मुदा फैशनमे बिहाड़ि एने फेकुआ उड़ि कऽ कातमे खसल। ओना मालिकोक मनमे बेइमानी घोंसियाएल रहइ। बेइमानीक कारण छल पाइबलाक चसकल मन। एकटा अठारह बर्खक लड़की कारीगर दू हजार दरमाहामे भेँट गेलइ...।

सबा बर्खसँ शहरमे रहैत-रहैत फेकुओक सूतल बुधि जागि कऽ करोट लिअ लगलै। जइसँ आत्मबलोक जन्म भऽ चुकल छेलइ। मुदा खिच्चा। सक्कत बनियेँ रहल छेलइ। जहिना मालिक नोकरीसँ हटैक बात कहलकै तहिना फेकुओ हिसाब मंगलक। हिसाब लऽ फेकुआ डेरा विदा भेल। पाइ रहबे करइ। रस्तेमे कॉफी पीब डेरा आएल। डेरा आबि पंखा खोलि पलंगपर ओंघरा गेल। ओंघराइते मनमे आबए लगलै- ई शहर छी, गाम नहि। शहरमे जइ तेजीसँ मशीन, फैशन आ जीवन-शैली बदैल रहल अछि, ओइमे हमरा सन-सन मुरूखक कोन बात जे पढ़लो-लिखल लोक ओंघरनियाँ देत। नवका मशीन पुरना इंजीनियरकेँ धक्का देत। पुरना बुधिकेँ नवका बुधि धक्का देत। मुदा नीक-अधला के बुझत? सभ भोग-विलासक जिनगीक पाछू आन्हर बनि गेल अछि। बाप रे! ई तँ भुमकमक लक्षण छी..!

फेकुआकेँ शंका भेलै जे नोकरी छुटने भरिसक हमर माथ तँ ने चढ़ि गेल! मुदा मनकेँ असथिर केलक। ओह! अनका विषयमे अनेरे ओझराइ छी। जेकरा भोगए पड़तै ओकरा सुआस बुझि पड़ै छै, तँ हमरे की। ठनका ठनकै छै तँ कियो अपना माथपर हाथ लऽ साहोर-साहोर करैए।

फेर मनमे एलै, हमहूँ तँ जुड़शीतलक नढ़िये जकाँ भेल छी। एक दिस चारूभागसँ कुकुर दाँतसँ पकैड़-पकैड़ तीड़ैए तँ दोसर दिस शिकारी सभ लाठी बरिसबैए। गामक लूरि सीखलौं नहि, सीखि लेलौं शहरक लूरि। तँ लिअ आब। क्विन्टलिया बोरामे भरि-भरि रखने जाउ!

फेकुआक मन औनाए लगल। दुबट्टीए-मे हेरा गेल। तिनबटिया-चारिबट्टिया तँ बाँकीए अछि। माएपर तामस उठलै। बुदबुदाए लगल-

“ई बुढ़िया गछा लेलक जे शुरूहे अगहनमे चलि अबिहेँ। कनियाँ ठेमा कऽ रखबौ। बिआह कैये देबौ।”

एक दिस केचुआएल कनियाँक बदलैत रूप तँ दोसर दिस माइक सिनेह, समुद्रक पानि जकाँ फेकुआक मनकेँ अस्थिर कऽ देलक। सोचए लगल जे माए नीक छोड़ि कहियो अधला नै केलक आ ने कहियो सोचलक, ओकरापर आँखि

उठाएब अनुचित छी। काल्हिए गाम चलि जाएब। बिआहो कैये लेब। दू गोरे ओहेन लोक एकठाम हएब जे किछु कऽ सकब...।

फेकुआ दू-पाइक आशा हृदैमे समैट सौंझका गाड़ी पकैड़, तेसर दिन गाम पहुँच गेल।

❍

शब्द संख्या : 3294

बोनिहारिन मरनी

छोट-छीन गाम छतौनी। तीनिए जातिक लोक गाममे। साइए घरक बस्तियो। छेहा बोनिहारक गाम। ओना, पास-पड़ोसक गामक लोक छतौनीकेँ प्रतिष्ठित गाम नइ बुझैत, किएक तँ ओइ गाम सबहक लोकक विचारे प्रतिष्ठित गाम ओ होइत जइमे छत्तीसो जातिक लोक बसैत। जइसँ समाजक सभ तरहक जरूरतक पूर्ति गाममे होइत। मुदा से छतौनीमे नहि, तँए छतौनी राजस्व गाम भऽ सकैए, प्रतिष्ठित नहि। मुदा ऐ विचारकेँ छतौनीक लोक मानैले तैयारे नहि। छतौनीक लोकक कहब जे जहियासँ हमर गाम बनल तहियासँ ने कहियो अपनामे झगड़ा-झंझट भेल आ ने मारि-पीट। जइसँ ने कहियो कियो कोट-कचहरी देखलौं आ ने थाना-बहाना। तेतबे नहि, तीनिए जातिक लोक रहितो सभ मिलि-जुलि एकठाम बैस खेबो-पीबो करै छी आ तीनू जातिक तीनू देवस्थानमे पूजो-पाठ करै छी संगे परसादियो खाइ छी। तेतबे नहि, सभ जातिक लोक संगे-संग कमेबो करै छी आ एक-दोसराकेँ मौका-मोसीबत पड़लापर संगो पुरै छी। आन-आन गामबला हमरा गामकेँ ऐ दुआरे गाम नै मानैए जे ओ सभ बहरबैया छी आ हमरा सबहक पूर्वज अदौसँ रहल अछि।

छतौनीवासी सभ दिनसँ बोनिहारे नइ रहल अछि। पहिने एकरो सभकेँ अपन-अपन खेत-पथार छेलइ। खेत-पथार गेलै केना? ऐ सम्बन्धमे छतौनीक बुढ़-बुढ़ानुस लोकक कहब छैन, हमरा सबहक पूर्वज रौदीक चलैत खेतक बाँकी[3] राज दरभंगाकेँ समैपर नइ दऽ सकलैन, तहीसँ ओ सभ जमीन निलाम कऽ अबधिया, छपरिया हाथे बेच लेलक। हमरा सबहक जमीनक मलिकाना हक खतम भऽ गेल। अबधियो आ छपरियो राजमे नोकरी करै छेलै जे ऐ इलाकामे आबि जमीनो हथिया लेलक आ मुखियो-सरपंच बनि मैनजनी करैए। मुदा एकटा चलाकी ओ सभ जरूर केलक जे जेना अंग्रेज आबि सत्ता हथियौलक तेना चलि नइ गेल बल्कि मुगल जकाँ बसि गेल।

[3] मालगुजारी

जहियासँ देश अजाद भेल आ सत्ता-ले भोँट-भाँट शुरू भेल, तहिए-सँ ने एक्कोटा कोनो पार्टीक नेता भोँट मंगैले छतौनी आएल आ ने एक्को बेर गौआँ भोँट खसौलक। किएक तँ आइ धरि छतौनीमे भोँटक बूथ बनबे ने कएल। तँए नेतो किए औत। गाममे ने चरिपहिया गाड़ी चलैक रस्ता छै आ ने सार्वजनिक जगह स्कूल-अस्पताल, जैठाम भाषण-भुषण हएत। जइ गाममे छतौनीक बूथ बनैत ओइ गामक लोक सभ छतौनियोँक भोँट खसा लइत। छतौनीक लोकक जिनगियो छोट। ने पढ़ै-लिखैक झंझट, ने चोर-चहारक झंझट आ ने रोग-बियादिक झंझट। किएक तँ गामक सभ बुझैत जे जेकरा कपारमे विद्या लिखल रहत ओ डुमियोँ-मरि कऽ पढ़िए लेत। चोर-चहार एबे कथीले करत। रोग-बियाधि-ले पूजो-पाठ आ झाड़ो-फूक अछिए। तहूसँ पैघ बात जे, जे ऐ धरतीपर रहैले आएल अछि ओ जीबे करत। पानि, पाथर, ठनका ओकर कथी बिगाड़ि लेतइ। आ जे नै रहैबला अछि ओकरा फूलोक गाछपर साँप काटि लेतै, मरि जाएत...।

तँए की, छतौनीबलाकेँ भगवानपर बिसवास नइ छइ? जरूर छइ। जँ से नै रहितै तँ देवस्थानमे सालमे एक बेर एते धुमधामसँ पूजा किए करैए? उपास किए करैए? दसनमो स्थान -देवस्थान- आ अपनो-अपनो घरमे गोसाउनिक पीढ़ी किए बनौने अछि? तैसंग साले-साल कामौर लऽ कऽ बैजनाथ किए जाइए?

सभ अभाव रहितो छतौनीक लोक हँसी-खुशीसँ जीवन बितबैए। अगर जँ कियो गाममे मरैत वा साँप-ताँप कटैत आकि आगि-छाइ लगैत तँ सभ कियो दासो-दास भऽ लगि जाइत...।

पचास बर्खक मरनी सेहो तइमे सँ एक। जे अपना आँखिसँ अपन पति, बेटा आ पुतोहुकेँ गाछक तरमे खून बोकैर कऽ मरैत देखने। आइ वेचारी पाँच बर्खक पोता आ आठ बर्खक पोतीक बीच आशाक संग जीब रहल अछि। कारी झामर एक हड्डा देह, ताड़-खजुरपर बनौल चिड़ैक खोंता जकाँ केश, आँगुर भरि-भरिक पीअर दाँत, फुटल घैलक कनखा जकाँ नाक, गाए-बरदक आँखि जकाँ बड़का-बड़का आँखि, साइयो चेफड़ी लगल साड़ी, दुरगमनियाँ आँगी फटला पछाइत कहियो देहमे आँगीक नसीब नइ भेल, बिनु साया-डेढ़ियाक साड़ी पहिरने। यएह छी मरनी।

चारि साल पहिने सुबध, मनोहर आ तौनकी धान रोपए बाध गेल। जाधैर तौनकीकेँ दोसर सन्तान नइ भेल ताधैर मरनीए पति आ बेटाक संग, माने सुबध

आ मनोहरक संग धनरोपनी, धनकटनी, कमठौन, रब्बी-राइ उखाड़ै-काटैले संगे जाइत आ तौनकी अँगनाक काज सम्हारैत। मुदा जहन दूटा पोता-पोती भेलै तहियासँ मरनी अँगनाक काज सम्हारए लगल। ओना, अँगनोमे कम काज नहि। भानस-भात करब, पोता-पोतीकेँ खेलाएब, खुट्टा परहक बाछीक सेवा करब इत्यादि। आने परिवार जकाँ मरनियोँक परिवार भरल-पूरल।

दस आँटीक जोड़ा। तीन-तीन जोड़ा बीआ उखाड़ि सुबध आ मनोहर पटैपर टँगलक आ राड़ीक जुन्ना बना तौनकी बीआक बोझ बान्हि माथपर लऽ कदबा खेत पहुँचल। कदबा एक दिन पहिनहि गिरहत करा देने छेलइ। तँए तीनू गोरेक मनमे खुशी होइत रहै जे सबेर-सकाल रोपि कऽ चलि जाएब। आन दिन कदबे दुआरे अबेर भऽ जाइ छेलए। ..मने-मन सुबध सोचैत, बेरू-पहर अपनो जे कट्ठा भरिक खेत अछि, ओहो सभ तूर मिलि कऽ हाथे-पाथे रोपि लेब।

कदबामे बीआ रखि सुबध आड़िपर बैस तमाकुल चुनबए लगल। मनोहर आ तौनकी खेतमे बीआ पसारए लगल। सौंसे खेत बीओ पसैर गेलै आ सुबधो तमाकुल खा लेलक। तीनू गोरे एक-एक आँटी खोलि खुज्जा पसाइर एक-एक खुज्जा रोपैले बामा हाथमे लेलक। आड़िक कात पच्छिमसँ तौनकी, बीचमे मनोहर आ पूबसँ सुबध पाहि धेलक। ..एक पाँति रोपि दोसर धेलक आकि पूब दिस एक चिड़की मेघ उठैत देखलक। मुदा मेघक छोट टुकड़ी देख केकरो मनमे बर्खाक शंका नै उठलै।

कनी-कनी सिहकी सेहो चलए लगलै। जहिना-जहिना हवा तेज होइत जाइत, तहिना-तहिना करिया मेघक टुकड़ी सेहो उधिया-उधिया ऊपर चढ़ए लगलै। ऊपर चढ़ि-चढ़ि ओ टुकड़ी एक-दोसरमे मिलए लगल, मुदा पच्छिम दिस रौद उगलै। कनीए कालक पछाइत सुरूज झँपा गेल। हवो तेज हुअ लगलै। बिजलोको चमकए लगलै। बुन्दा-बुन्दी पानि पड़ए लगलै। जेते मेघ सघन होइत जाइत तेते पानियोँक बून जोर पकड़ैत गेल। संगे बिजलोको बेसियाएल जाइत। थोड़बे कालक पछाइत घन-घनौआ बर्खा हुअ लगल...।

पानिमे भीजै दुआरे तीनू गोरे दौग कऽ आमक गाछ लग पहुँचल। खेतसँ बीघे भरि हटि कऽ आमक गाछ। खूब झमटगर। चारि हाथ ऊपरेमे दू फेंड़ भऽ गेल। सरही आम। ..गाछक पँजरेमे पच्छिमसँ तौनकी बैसल आ पूबसँ सुबध आ मनोहर। तौनकी साड़ी ओढ़ि दुनू हाथक मुट्ठी बान्हि काँखमे लऽ लेलक। मुदा सुबध आ मनोहर छुच्छे देहे। गमछाक मुरेठा बान्हि लेलक। मुदा तैयो जाड़े

दुनू बापूत थरथर कँपैत। नमहर-नमहर बून कखनो काल देहपर खसइ। सौंसे देहक रोइयाँ भुलैक कऽ ठाढ़ भऽ गेलइ। मुदा की करैत, कोनो उपाय नहि। पच्छिमो मेघ पकैड़ बरिसए लगल। जइसँ दूर-दूर धरि बर्खा हुअ लगलै। रहि-रहि कऽ मेघो गरजै आ बिजलोको चमकै। एक बेर खूब जोरसँ बिजलोका चमकलै। मुदा आन बेरक चमकसँ बिजलोकाक रंग बदलल। आन बेर पिरौंछ इजोत होइत जहन कि ऐ बेर लाल टुह-टुह।

दुरकाल समए देख तौनकी मने-मन खौंझा कऽ भगवानकेँ कोसैत, कोनो काजक समए होइ छइ। अखन पानिक कोन काज छइ! जहिना तगतगर लोक हरिदम बलउमकी करैए तहिना ई टिकजरौना इन्द्रो भगवान करैए! अनेरे काजकेँ बरदा जाड़े कठुअबैए! लोक सभ कहै छै जे देवता-पितरकेँ बड़का-बड़का आँखि होइ छै जे एक्केठीम बैसल-बैसल सगरे दुनियाँ देखैए। से आँखि अखन केतए चलि गेलइ। देवियो-देवता गरीबे-गुरबाकेँ जान मारै पाछू लगल रहैए! जन-बोनिहारक काज करैक दू उखड़ाहा होइए। भिनसुरका आ दुपहरिया। भिनसुरका उखड़ाहामे जँ एगारहो बजे पानि भेल वा कोनो बाधा भेल तँ गिरहत थोड़े बोइन देत। अगर जँ जलखै भऽ गेल रहलै तँ बड़बढ़ियाँ नहि तँ जलखैयो पार। यएह तँ ऐठामक चलैन अछि। ई टिकजरूआ भगवान गिरहतेकेँ मदैत करै छइ।

जाड़सँ कँपैत सुबध मनोहरकेँ कहलक-

“बौआ, सोचै छेलौं जे आन दिन रोपैन करैमे अबेर भऽ जाइ छेलए जइसँ अपन काज नै सम्हरै छल मुदा आइ सबेरे-सकाल रोपैन भऽ जाइत तँ अपनो बाड़ी रोपि लैतौं, से सभ भडैठ गेल। कखन पानि छुटत कखन नहि।”

दुनू बापूत गप-सप्प करिते छल कि तरतरा कऽ ठनका ओही गाछपर खसल। जैठमसँ दुनू डारि फुटल छेलै तहीठामसँ चिरैत माटिमे चलि गेल। चिरा कऽ गाछ दुनू भाग खसल। एक फाँकक तरमे तौनकी आ दोसर फाँकक तरमे दुनू बापूत- सुबध-मनोहर- पड़ि गेल।

पानि छुटल। सौंसे गाममे हल्ला हुअ लगलै जे बाधमे जे आमक गाछ छेलै ओ खसि पड़लै। भरिसक ओहीपर ठनका खसलै। ..एक्के-दुइए लोक देखैले जाए लगल। कातेमे ठाढ़ भऽ भऽ लोक देखैत। गाछोपर आ गाछक निच्चाँ जमीनोपर तेते घोरन पसैर गेल जे लोक गाछक भीर जाइक हिम्मते ने करैत। मुदा जीबठ बान्हि करिया गाछक जड़ि देखैले बढ़ल। घोरन तँ खूब कटै मुदा

तैयो हिम्मत करि करिया जड़ि लग पहुँचल। ठनकाबला आगिक चेन्ह ओहिना दुनू फाँकमे। ..जड़ि लग ठाढ़ भऽ करिया हिया-हिया देखए लगल। देखैत-देखैत मनोहरक टाँगपर नजैर पड़लै। टाँगपर नजैर पड़िते हल्ला करए लगल-

“एक गोरे तरमे पिचाएल अछि! दौग कऽ अबै जाइ जा, एकरा बहार करह?”

करियाक बात सुनि चारू-भरसँ लोक बढ़ल। देखैत-देखैत तीनू गोरेपर नजैर पड़लै। हल्ला करैत करिया कुरहैर आनए घर दिस दौगल। ..तीनू खून बोकैर-बोकैर मरल। मुदा तैयो सभ बँचा-बँचा कऽ डारि काटए लगल। डारि काटि शील उनटौलक तँ तीनूकेँ थकुचा-थकुचा भेल देखलक। पहिने तँ कियो नै चिन्ह सकलै, किएक तँ तीनू बेदरंग भऽ गेल। मुदा भाँज लगौलापर पता चललै जे दुनू बापूत सुबध काका छी आ पुतोहु छिऐ।

अखन धरि मरनी, अँगनेमे दुनू बच्चाकेँ खेलबैत रहए। गौरिया आबि कऽ कहलकै-

“दादी, तोरे अँगनाक सभ गाछक तरमे दबि कऽ मरि गेलौ।”

गौरियाक बात सुनिते मरनी अचेत भऽ खसि पड़ल। दुनू बच्चो चिचियाए लगलै। मरनीकेँ अचेत देख अलोधनी मुँहपर पानि छीटि बीऐन होंकए लगलै। कनीए कालक पछाइत होश भेलइ। होशमे अबिते मरनी फेर बपहारि काटए लगल।

बच्चाकेँ कोरामे लऽ अलोधनीक संग मरनी देखैले विदा भेल। गाछ लग पहुँचते तीनू गोरेकेँ मुइल देख मरनी ओंघरनियाँ काटए लगल। ओंघरनियाँ कटैत देख करिया पँजिया कऽ पकैड़ मरनीकेँ कात लऽ गेल। मरनीक दशा देख सभ बोल-भरोस दिअ लगलै। मुदा मरनीक करेज थीरे ने होइ! विचित्र स्थितिमे पड़ल। एक दिस परिवारकेँ नाश होइत देखए तँ दोसर दिस दुनू बच्चाक मुँह। बच्चाक मुँह देख कनी-मनी आशा मनमे जगए लगलै।

चारि साल पहिलुका नहि, अखुनका बदलल मरनी, नव मरनी। जहिना आगिमे तपैसँ पहिने सोनाक जे रंग रहैत आ तपलापर जहिना चमैक उठैत तहिना। ओना समाजोक बेवहार जे पहिलुका छेलै अहूमे बदलाउ एलइ। कियो खाइक बौस दऽ जाइत तँ कियो बच्चो आ मरनियोँ-ले नुआ-बस्तर। जहन केकरो भाँजमे कोनो काज अबै तँ ओ मरनियोकेँ संग कऽ लइत। जहिना परिवारमे बुढ़ आ बच्चाक प्रति जे सिनेह होइत, ओहने सिनेह मरनीक प्रति

समाजोक बीच हुअ लगल।

अपनो जीबैक आशा आ बच्चोक, मरनीकेँ नव स्फूर्ति पैदा केलक। एते दिन मरनीक हाथमे पुरने खेतीक औजारटा रहै छल मुदा आब ओ बढ़ि कऽ दोबर भऽ गेल। हँसुआ, खुरपी, टेंगारी, कोदारिक संग-संग हथौरी, गैंचा सेहो आबि गेल।

समए आगू बढ़ल। देशक विकासक गति सेहो, बहुत तेज नहि मुदा किछु गति तँ जरूर पकड़लक। गाम-गाममे बान्ह-सड़क, पुल-पुलिया, स्कूल-अस्पताल सेहो बनए लगल। जइसँ खेतीहरो बोनिहारक काज बढ़ल। मरनियोँ छिट्टामे माटि उघब, पजेबा उघब, गिट्टी फोरब, सुरखी कुटब सीखि लेलक। जइसँ बेकारी मेटाए लगलै। रोज कमेनाइ रोज खेनाइ धरि गरीबो लोक आबि गेल। भलेँ जिनगीमे बहुत अधिक उन्नैत नइ एलै मुदा जीबैक आशा जरूर जगलै। ओना, सभ काज छतौनीमे नहि, पास-पड़ोसक आन-आन गाममे। जइमे छतौनियोंक बोनिहार सभ काज करए लगल।

छतौनियोंक दिन घुमलै। सात किलोमीटर पक्की सड़क जे एन.एच.सँ लऽ कऽ रेलबे स्टेशनकेँ जोड़ैत, छतौनीए होइत बनब शुरू भेल।

जहिए-सँ “प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना” छतौनी होइत बनैक चर्चा भेल तहिए-सँ छतौनीक लोकक मनमे खुशी आबए लगलै। गामक लोकक तँ ओहेन दशा नहि जे बस-ट्रक किनैक विचार करितए। मुदा तैयो एते जरूर भेलै जे बरसातमे जे घरसँ बहराएब कठिन छेलै ओ समस्या आब नइ रहतै। ओना, किछु गोरेक मनमे ई बात जरूर उठै जे एते दिन बिनु जूत्तो-चप्पलसँ काज चलै छेलए, मुदा आब से नै चलत। आड़ि-धुर-माटिपर चललासँ, बेसीसँ बेसी काँट-कुश गड़ै छल मुदा पीच भेने शीशाक टुकड़ी, लोहाक टुकड़ी सेहो गड़त। जइसँ पैरक नोकसान बेसी हएत। मुदा फेर मनमे अबै, एते दिन कम आमदनी रहने जुत्ता-चप्पल नै कीनि पबै छेलौं से आब थोड़े हएत। नइ बेसी तँ एक्को जोड़ा जरूरे कीनि लेब। जइसँ पैरमे बेमाए-ओ ने फटत।

प्रधानमंत्री योजनाक सड़क बनए लगल। मुदा जेते आशा बोनिहारक मनमे छेलै तेते नइ भेलइ। किएक तँ माटिक काज शुरू होइते रंग-बिरंगक गाड़ी सभ पहुँचए लगलै। जे माटिक काज बोनिहार करैत ओ टेक्टर करए लगलै। ओना काजक गति तेज रहै, मुदा बोनिहारक बेकारी बरकरारे रहलै। सड़कपर माटि पड़िते रोलर आबि सेरियाबए लगल।

खेनाइ-पिनाइ छोड़ि धियो-पुतो आ जनिजातियो सभ भरि-भरि दिन देखते रहैत। ओना बुढ़ो-बुढ़ानुस देखैत मुदा घरक चिन्ता चिंघ कऽ काज दिस लऽ जाइत। पनरहे दिनमे सातो किलोमीटर सड़कपर माटिक काज सम्पन्न भऽ गेल। एकदम चिक्कन, उज्जर धप-धप, घरसँ ऊँच सड़क बनि गेल।

माटिक सड़क बनिते बड़का-बड़का ट्रक चिमनीसँ ईटा खसबए लगल। एह, अजीब-अजीब ट्रको सभ। एते दिन छह-पहिए ट्रकटा गामक लोक देखने मुदा ई सड़क बनने दस पहियासँ लऽ कऽ अठारह-अठारह पहियाबला ट्रक सेहो लोक देखलक।

तीनिए दिनमे सातो किलोमीटरक ईंटा खसा देलक। मुदा ईंटा पसारैक काज तँ इंजन नै करत। ओ तँ लोके करत। मुदा ओइले तँ अनुभवी माने एक्सपर्ट लोकक जरूरत हएत। जे छतौनीमे नहि। तँए बाहरेसँ अनुभवी मिस्त्री औत। ओना, तेहेन बड़का ठीकेदार सड़क बनबैत जे अनेको सड़कक काज एक संग चलबैत। एक्के दिन तेते अनुभवी मिस्त्री ईंटा पसारैले आएल जे सभकेँ बुझि पड़लै जे दुइए दिनमे सातो किलोमीटर ईंटा पसाइर देत। मुदा ईंटा उचैले तँ मजदूर चाही। पहिल दिन छतौनी गामक बोनिहारकेँ काज भेटलै। ईंटा पसरए लगल। धुरझार काज चलए लगलै। छतौनीक सभ बोनिहार खुशीसँ काज करए लगल। तैबीच ईंटापर पसारैले फुटलाहा ईंटा सेहो ट्रकसँ आबए लगल। दोहरी काज देख छतौनीक बोनिहारक मन खुशीसँ नाचए लगलै। किएक तँ गिट्टी फोड़ैले गामेक बोनिहारकेँ काज भेटतै किने। मुदा ठीकेदारक मुनसी, अपने खाइ-पीबै दुआरे सस्ते दरसँ गिट्टी फोड़ैक रेट लगा देलक। एक टेक्टर पजेबा फोड़ैक दर साठिए रूपैआ दइले तैयार भेल। एक-दू दिन तँ बोनिहार सभ गिट्टी फोरब बन्न केलक मुदा पेटक आगि मजबुरन सभकेँ लऽ गेलइ। मरनी सेहो गिट्टी फोड़ए लगल। एक टेक्टर गिट्टी फोड़ैमे वेचारीकेँ चारि दिन लगैत, मुदा की करैत।

ऐ सड़कसँ पहिने जे सड़क बनै ओ रियाइत-खियाइत रहि जाइ। माटिक काज भेलापर साल-दू-साल ईंटा बैसैमे लगइ। जइसँ माटि ढहि-ढुहि कऽ उबड़-खाबड़ बनि जाइ। बड़का-बड़का खाधि सड़कपर बनि जाइ। तहूमे तीन नम्मर पजेबा फुटि-भाँगि कऽ गरदा बनि जाइत रहइ। गामक धियो-पुतो उठा-उठा खेत-पथारमे फेक दइत। तेतबे नहि, कोठीक गोड़ा बनबैले स्त्रीगण सभ निकहा ईंटा उठा-उठा लऽ जाइत। मुदा ऐ बेर से नै हएत। दुइए मासमे सड़क बनबैक

शर्त ठीकेदारकें छइ। जाबे बर्खा खसत-खसत ताबे सड़क बनि जाइक छइ।

पचास बर्खक मरनी जे देखैमे झुनकुट बुढ़ बुझि पड़ैत। सौंसे देहक हड्डी झक-झक करइ। खपटा जकाँ मुँह। खैनी खाइत-खाइत ऐगला चारू दाँत टुटल। गांगी-जमुनी केश हवामे फहराइत। तहूमे सड़कक गरदासँ सभ दिन नहाइत। मुदा तैयो मरनी अपन आँखि बँचौने रहैत। जखन पुर्बा हवा बहै तँ पच्छिम-मुहेँ घुमि कऽ गिट्टी फोड़ए लगैत आ जखन पछबा बहैत तँ पूब-मुहेँ घुमि जाइत। बीच-बीचमे सुसताइयो लैत आ खैनी सेहो खा लइत। मुदा तैयो मरनीक मुँह कखनो मलिन नै होइ। किएक तँ हृदैमे अदम्य साहस आ मनमे असीम बिसवास हरिदम बनल रहइ। तँए हरिदम हँसिते रहए।

भिनसुरके उखड़ाहा। करीब नअ बजैत। पूब-मुहेँ घुमि मरनी गिट्टी फोड़ैत रहए। तैबीच पच्चीस-तीस बर्खक सुगिया माथ उघारने, छपुआ बनारसी साड़ी आ ओही रंगक आँगी पहिरने, घुमौआ केश सीटि जुट्टी लटकौने, मोजा लगा कऽ एँड़ीदार चप्पल पहिरने, मुँहमे पान-साए नम्मर पत्ती देल पान खेने, प्लोथिनमे नूनक पौकेट, करूतेलक शीशी, मसल्लाक पुड़िया आ साबुन लेने हाथमे लटकौने आबि लगमे ठाढ़ भऽ मरनीक मेहनत आ बगए देख दिल खोलि मने-मन हँसए लगल।

..मरनी गिट्टी फोड़ैमे मस्त, किएक किम्हरो ताकत। ..सुगियाक हृदैक खुशी मुहसँ हँसी होइत निकलए चाहैत, मुदा मुँहक पानक पीत ठोरक फाटककें बन्न केने, तँए पानक पीत फेकब सुगियाकें जरूरी भेलइ। जइ पजेबाक ढेरीपर बैस मरनी गिट्टी बनबैत रहए ओही ढेरीपर सुगिया अपन भरल मुँहक पीत फेक देलक। पीतक दू-चारि बून मरनीक देहोपर पड़लै। देहपर पड़िते ओ उनैट कऽ तकलक। टटका पीत चक-चक करैत। कनडेरिये आँखिए मरनी सुगियाक मुँह दिस तकलक। सुगियाकें पान चिबबैत देख मरनीक मनमे आगि पजैर गेलइ। पजेबाक ढेरीपर सेहो नजैर पड़लै, सौंसे थूक पड़ल देखलक। आब केना गिट्टी फोरब, ढेरियो आ देहो अँइठ कऽ देलक! ..आँखि गुड़ैर कऽ मरनी सुगियाकें कहलक-

“गइ रनडिया, तोरा सुझलौ नै जे ढेरीपर थूक फेकलेँ?”

गरीब मरनीक कटाह बात सुनि सुगिया तमैक कऽ उत्तर देलक-

“तोरे बान्ह छियौ जे हम थूक नै फेकब।”

सुगियाक बोलकें दबैत मरनी बाजल-

“एतेटा बान्ह छै, तइमे तोरा केतौ थूक फेकैक जगह नइ भेटलौ जे ऐठाम फेकलेँ।”

सुगिया-

“जदी एतै फेकलिऐ तँ तूँ हमर की करमेँ?”

मरनी-

“की करबौ। आँइ गइ निरलज्जी, तोरा लाज होइ छौ जे सात पुरखाकें नाक-कान कटौलही। जेहने कुल-खनदान रहतौ तेहने ने चालि चलमेँ।”

सुगिया-

“अपन देह-दशा नइ देखै छीही!”

मरनी-

“की देखबै। ई देह बोनिहारनिक छिऐ। तोरा जकाँ की हम कहियो बमैबला छौड़ा सेने तँ कहियो डिल्लीबला छौड़ा सेने वौआइ छी। एक चुरूक पानिमे डुमि कऽ मरि जेमे से नइ, तीमन चिक्खी नहितन..! जहिना सात घरक तीमन चिक्खै छँए तहिना सातटा मुनसा देखै छँए। हमर परतर सातो जिनगीमे हेतौ? जेकरा संगे बाप हाथ पकड़ा देलक, सहि-मरि कऽ तइ घरमे छी। छुछुनैर कहीं-के! आगि लगा-ले ऐ फुललाहा देहमे..!”

मरनीक बातसँ सुगिया सहैम गेल। मनमे डर पैस गेलै जे हो-ने-हो कहीं मारबो ने करए। मुँह सकुचबैत मुड़ी गोंति विदा भेल। ..सुगियाकें जाइत देख मरनी साड़ीक खूटसँ तमाकुल-चुन निकालि चुनबए लगल। मुदा तैयो मन असथिर नइ भेलइ। मुड़ी उठा-उठा सुगियो दिस देखै आ मने-मन बजबो करए-

“देह केहेन सीटने अछि, उढ़ड़ी। जेना रजा-महराजाक बौह हुअए! हाथ-पैरमे लुलही पकड़ने छैन जे कमा कऽ खेती। जेहने छुछुनैर छौड़ा सभ तेहने छौड़ी सभ।”

तमाकुल खा मरनी ईंटा फोड़ैले घुमल कि दादी-दादी करैत पोता दौगल आबि दुनू हाथे दुनू कान्ह पकैड़ पीट्ठीपर लटैक गेल। पाछूसँ पोतियो एलइ। पोताकें कोरामे उठा मुँहमे चुम्मा लऽ पोतीकें कहलक-

“दाइ, बौआकें रोटी नै देलही। दुनू गोरे चलि जाउ, मोरामे रोटी रखने छी, लऽ कऽ दुनू गोरे खा लेब। हम अखन काज करै छी। कनी कालमे आबि कऽ भानस करब।”

पोता-पोती, आँगन दिस विदा भेल। पूब-मुहेँ घुमि कऽ मरनी गिट्टी फोड़ए लगल।

चारिटा बन्दूकधारी बड्डी-गार्डक संग सड़कक ठीकेदार उत्तरसँ दच्छिन-मुहेँ सड़क देखैत जाइ छला। आगू-आगू ठीकेदार पाछू-पाछू बन्दूकधारी। ठिकेदारक नजैर मरनीपर पड़लैन। मरनीपर नजैर पड़िते ठिकेदारक डेग छोट हुअ लगलैन। ठिकेदारक आँखि मरनीपर अँटैक गेलैन। डेग तँ आगू-मुहेँ बढ़बैत रहैथ मुदा आँखिक ज्योति हृदैमे ढुकि कऽ हड़बड़बए लगलैन। मनमे जेना अन्हड़-तूफान उठए लगलैन। जइसँ मने-मन विचारए लगल जे जेकरा कमाइपर हमरा चारिटा बड्डी गार्ड अछि, करोड़ो-अरबोक आमदनी अछि, तेकर ई दशा! ओ तँ हमर ओहेन समांग जे कमासुत अछि, ओहेन तँ नहि जे ऐश-मौजक जिनगी बना कमेलहे सम्पैतकें भोगैए। मुदा अँटकला नहि। आगू-मुहेँ बढ़िते रहला। किछु दूर आगू बढ़लापर जेना मरनीक आत्मा आगूसँ रोकि देलकैन तहिना बिच्चे सड़कपर ठीकेदार ठाढ़ भऽ गेला। ठाढ़ भऽ एकटा सिपाहीकें अढ़ेलखिन-

“ओइ गिट्टी फोड़निहारिकें कनी बजौने आउ?”

ठीकेदारक बात सुनि एकटा सिपाही मरनी दिस बढ़ल। मरनी लग जा कहलक-

“मालिक बजबै छथुन, चलही?”

गिट्टी फोरब छोड़ि मरनी उनैट कऽ सिपाही दिस तकलक। सिपाहीकें देख मने-मन सोचए लगल, ने हम कोनो ममिलामे फँसल छी आ ने कोनो बैंकक करजा नेने छिऐ, तहन किए हमरा सिपाही बजबैए...।

मन सक्कत करि मरनी बाजल-

“तूँ नै देखै छहक जे अखन हम काज करै छी। जेकर बोइन लेबै ओकर काज नै करबै। अखन जा। काजक बेर उनैह जेतै तब एबह।”

मरनीक बात सिपाहियो आ ठीकेदारो सुनलैन। एक-दोसरकें देख आँखि निच्चाँ कऽ लेलैथ। ठीकेदारक मन पीपरक पात जकाँ डोलए लगलैन। कखनो मरनीक इमानदारीपर तँ कखनो ओकर अवस्थापर। जइ देशक श्रमिक श्रममे एते बिसवास करैए ओइ देशक विकास जँ बाधित अछि तँ जरूर केतौ-ने-केतौ संचालनकर्तामे बेइमानी छइ। ई बात मनमे अबिते ठीकेदार अपना दिस घुमि

कऽ तकला तँ अपन दोख सामनेमे आबि ठाढ़ भऽ गेलैन।

सिपाही कड़ैक कऽ मरनीकें कहलक-

“नै जेबही तँ पकैड़ कऽ लऽ जेबौ?”

सिपाहीक गर्म बोली सुनि मरनी बाजल-

“तोहर हम कोनो करजा खेने छिअ जे पकैड़ कऽ लऽ जेबह। अपन सुखलो हड्डीकें धुनै छी, खाइ छी।”

मरनीक बात सुनि सिपाहियोक मन उनटए-पुनटए लगलै। एक दिस मालिकक आदेश दोसर दिस मरनीक विचार। आखिर, एहेन लोकक बीच एहेन सक्कत विचार अबैक कारण की अछि? अनका देखै छिऐ जे खाली सिपाहीक वर्दी देख डेरा जाइए, भलें ओ सरकारक सिपाही नहियोँ रहए। मुदा हमरा तँ सभ किछु अछि तैयो ऐ बुढ़ियाकें डर नै होइ छइ। ..फेर मनमे एलै, हम किछु छी तँ नोकर छी मुदा ई किछु अछि तँ स्वतंत्र बोनिहारिन। स्वतंत्र देशक स्वतंत्र श्रमिक। जे देशक अधार छी। आखिर देश तँ एकरो सबहक छिऐ।

सिपाहीकें ठाढ़ देख ठीकेदारे पाछू ससैर कऽ मरनी लग एला। मरनियोँ सभकें देखैत आ मरनियोकें सभ। ठीकेदार मरनीक आँखिपर अपन नजैर देलैन। नजैर पड़िते मरनीक आँखिमे सुरूजक रोशनी जकाँ प्रखर ज्योति देखलैन। ललाटसँ आत्म-बिसवास छिटकैत देलखैन। ..मधुर स्वरमे ठीकेदार पुछलखिन-

“चाची, अहाँक परिवारमे के सभ छैथ?”

ठिकेदारक प्रश्न सुनि मरनीक आँखिसँ नोर खसए लगल। मन पड़ि गेलै अपन पति, बेटा आ पुतोहुक मृत्यु। टघरैत नोरकें आँचरसँ पोछि बाजल-

“बौआ, हमर घरबला, बेटा आ पुतोहु ठनकामे मरि गेल। अपने छी आ पिलुआ जकाँ दूटा पोता-पोती अछि।”

“बच्चा सभ स्कूलो जाइए?”

“नहि। एक तँ गाममे स्कूल नइ छइ। तहूमे पहिने गरीब लोकक धिया-पुताकें पेट भरतै तब ने जाएत। ने भरि पेट अन होइ छै आ ने भरि देह बस्तर, ने रहैक घर छै, तहन इसकूल केना जाएत।”

मरनीक बात सुनि ठीकेदार सहैम गेला। मने-मन सोचए लगला, जे आँखिक सोझमे देखै छिऐ ओ झूठ केना भऽ सकैए। एते भारी काज केनिहारक

देहपर कारी खट-खट कपड़ा छै, तोहूमे सैयो चेफड़ी लागल, काज करै-जोकर उमेर नइ छै, तैपर एते भारी हथौरी पजेबापर पटकैए..!

ठिकेदारक मन दहैल गेलैन। जहिना अकास आ पृथ्वीक बीच क्षितिज अछि, जैठाम जा चिड़ै-चुनमुनी लसैक जाइए, तहिना ठीकेदारक मन सुख-दुखक बीच लसैक गेलैन। जेना सभ किछु मनक हेरा गेलैन तहिना सुन्न भऽ गेला। ने आगूक बाट सुझैत रहैन आ ने पाछूक। मरनीसँ आगू की पुछब से मनमे रहबे ने केलैन। साहस बटोरि पुछलखिन-

"भरि दिनमे केते रूपैआ कमाइ छी?"

ठिकेदारक प्रश्न सुनि मरनीक मनमे झड़क उठलै। बाजल-

"केते कमाएब! जेहने बैमान सरकार अछि तेहने ओकर मनसी छइ। चारि दिनमे एकटा पजेबा ढेरी फोड़ै छी तँ तीन-बीस रूपैआ दइए। तइसँ तीन तूरक पेट भरत? भरि दिन ईंटा फोड़ैत-फोड़ैत देह-हाथ दुखाइत रहैए मुदा एकटा गोटियो कीनब से पाइ नै बँचैए।"

ठिकेदारक आँखिमे नोर आबि गेल। मनुखता जागि गेल। मुदा ई मनुखता केते काल जिनगीमे अँटकत? जिनगी तँ उनटल अछि।

❍

शब्द संख्या : 3412

हारि-जीत

चारिमे दिन दुनू परानी सोमन विचारलक जे आब ऐ गाममे जीयब कठिन अछि तँए गामसँ चलिए जाएब नीक हएत। दुनियाँ बड़ीटा छइ। जेतए जीबैक जोगार लागत तेतए रहब। ..समान सभ बान्हि, करेजपर पाथर रखि गामसँ जाइले दुनू परानी-सोमन तैयार भऽ गेल। भूखल पेट, सुखाएल मुँह आ निराश मने ओसारपर बैसल दुनू परानीक आँखिसँ दहो-बहो नोर टघरैत रहइ। दुनियाँ अन्हार देख, उठैक साहसे नै होइ। सोमनक मनमे बेर-बेर उठै- की छेलौं आइ की भऽ गेलौं! ..रंग-बिरंगक विचार पानिक बुलबुला जकाँ दुनू परानी सोमनक मनमे उठै आ विलीन भऽ जाइ! आगूमे मोटरी राखल रहै मुदा जहिना सीमा परहक सिपाही छातीमे गोली लगलासँ घाइल भऽ जमीनपर खसि छटपटाइत, तहिना दुनू परानी सोमन दुखक अथाह समुद्रमे डुमैत-उगैत। भिनसरसँ बारह बाजि गेलइ...।

सहरसा जिलाक गाम मैरचा। पूबसँ कोसी आबि गामक कटनियाँ करए लगलै। गर लगा-लगा गामक लोक जेतए-तेतए पड़ाए लगला। ओना सरकार पुबरिया बान्हक बाहर पुनर्वासक बेवस्था सेहो करैत रहै मुदा ओइसँ बोनिहारकें की हएत। ओकरा सबहक तँ रोजगारो छिना गेल रहइ।

बेटा, पुतोहु आ पत्नीक संग फुलचनो पण्डित गाम छोड़ि पच्छिम-मुहें विदा भेला। घराड़ी छोड़ि अपना एक्को बीत जमीन-जत्था नइ छेलैन। मुदा अपन बेवसायक सभ लूरि, तँए मनमे ओ चिन्ता नै रहैन, चिन्ता मात्र रहैन ठौरक रहैन। कखनो-कखनो मनमे होनि जे अपन गाम तँ बुझल-गमल छल, आन गाम केहेन हएत केहेन नहि। मुदा उपाइए की। जीबैले तँ मनुख सभ किछु करैए। ..पछबरिया बान्हसँ मील भरि पाछुए रहैथ कि बान्हपर नजैर पड़लैन। बान्ह देखते आशा जगलैन। किएक तँ बान्हक पच्छिम कोनो धार-धुर नइ अछि। मुस्कियाइत फुलचन पत्नीसँ पुछलखिन-

"भगवान रामक खिस्सा बुझल अछि?"

फुलचनक मुँह दिस देख मुनियाँ बजली-

"बहुत दिन पहिने सुनने छेलौं, आब ओते धियान नइए।"

"जहिना अपना सभ गाम छोड़ि कऽ जा रहल छी तहिना ओहो सभ गेल रहैथ। अपना सभकें तँ बटखर्चो अछि मुदा हुनका सभकें तँ सेहो नै रहैन।"

तैबीच फुलचनक पुतोहु कपली सासुक बाँहि पकैड़ पाछू-मुहें घुमा कहलकैन-

"एँड़ीकें डोका काटि देलक। खून बहैए। कनी केतौ बैसौथु जे लत्ता बान्हि देबइ।"

एँड़ी देख मुनियाँ कहलखिन-

"कनियाँ, केतौ गाछो ने देखै छिऐ जे कनी सुस्ताइयो लितौं। हमरो पियासे कण्ठ सुखैए।"

सासु-पुतोहुक बात सुनि फुलचन बजला-

"कनियाँ, जानिए-के तँ दैवक डाँग लगल अछि, तहन तँ कहुना-कहुना बान्ह धरि चलू। एक तँ रौदाएल छी तैपर सँ जेते काल अँटकब तेते रौदो बेसीए लगत।"

बान्हपर पहुँचते सभ निसाँस छोड़लैन। बान्हक पच्छिमसँ एकटा आमक गाछ रहइ। छाहैर देख सभ कियो ओही गाछ तर पहुँचला। एकटा बटोही पहिनहिसँ तौनी बिछा पड़ल छल। कनी काल सुस्तेला पछाइत बटोहीकें फुलचन पुछलखिन-

"भाय, तमाकुल खाइ छह?"

जेबीसँ चुनौटी निकालि फुलचनक आगूमे फेकैत ओ बटोही बाजल-

"कोन गाम जेबह?"

'कोन गाम जेबह' सुनिते फुलचनक हृदए सिहैर गेलैन। मिरमिराइत बजला-

"भाय, कोन गाम जाएब तेकर तँ ठेकान नै अछि मुदा मैरचासँ एलौं हेन। धारमे गाम कटि रहल अछि, तँए गाम छोड़ि जा रहल छी। जइ गाममे कुम्हार नै हएत तइ गाममे बसि जाएब।"

कुम्हारक नाओं सुनिते बटोही उठि कऽ बैसैत बाजल-

"हमरो गाममे कुम्हार नै अछि। चलह, हमरे गाममे रहि जैहह।"

आशा देख सोमन पुछलखिन-

"ऐठामसँ केते दूर अहाँक गाम अछि?"

"अढ़ाइ कोस। हमहूँ बहीने ऐठामसँ अबै छी, गामे जाएब।"

बेर झुकैत पाँचो गोरे विदा भेला। लछमीपुर पहुँचते बटोही-रतीलाल फुलचनकें कहलकैन-

"भाय, यएह हमर गाम छी।"

गाछी बँसबाड़ि देख फुलचन पण्डित मने-मन खुशी भऽ अँकलैन जे जारैनक अभाव कहियो ने हएत। गाममे प्रवेश करिते बीघा दुइए-क पोखैर देख फुलचन तँइ केलैन जे नै कतौं रहैक ठौर भेटत तँ पोखैर महार तँ अछिए। पोखैरक बगलेमे सभ कियो रुकि जाइ गेला। रतीलाल आगू बढ़ि गेल।

जहिना गाममे नट-किचककें अबिते धिया-पुता देखए अबैत तहिना फुलचनो सभ तूरकें देखए गामक धिया-पुता आबए लगल। गाममे कुम्हार अबैक समाचार पसरल। थोड़े कालक पछाइत फुलचन पण्डित बेटाकें हाथ पकैड़ कहलखिन-

"बौआ सोमन, तूँ सभ एतै बैसह। हम कनी गामक बाबू-भैया सभसँ भेँट केने अबै छी।"

कहि फुलचन गाम दिस विदा भेला। इजोरिया पख रहै तँए सूर्यास्त भेलोपर दिने जकाँ लगइ। जाधैर फुलचन घुमि कऽ एबो ने केला तइसँ पहिनहि गामक पनरह-बीसटा नवयुवक पोखैरक महारपर पहुँच गेल। सबहक मनमे नव उत्साह। किएक तँ अखन धरि जे अभाव कुम्हारक गाममे रहल ओ पूर्ति भऽ रहल अछि। जहिना आवश्यकताक वस्तु पूर्ति भेलासँ किनको मनमे खुशी होइ छै तहिना कुमहारक एलासँ गामक लोकक मनमे खुशी भेलइ। पोखैरसँ थोड़े हटि कट्ठा तीनिए-क परती छेलइ। सभ युवक विचारलक जे ओही परतीपर बसौल जाए। ताधैर गाम घुमि कऽ फुलचनो एला। फुलचन दुनू बापूत परती देखलैन। परती देख सोमन पिता दिस घुमि बाजल-

"कुम्हारक बसै-जोकर परती अछि, मात्र पिऐबला पानिक दिक्कत हएत।"

तैपर पिता फुलचन पण्डित जवाब देलैन-

"अखन ने पानिक दिक्कत हएत मुदा जहन अपने इनार खुनैयोक आ पाटो बनबैक लूरि अछि तहन दिक्कत किए रहत?"

घराड़ी पसिन होइते हो-हा करैत युवक सभ बाँस काटए विदा भेल। जे जेहेन बाँसबला, तिनकामे तइ हिसाबसँ बाँस काटि पच्चीसटा बाँस जमा भेल। फुलचनो दुनू बापूत संग दैत रहथिन। हाथे-पाथे सभ घरक काजमे जुटि गेला। रातिक बारह बजैत-बजैत तेरह हाथक घर ठाढ़ भऽ गेलइ।

प्रात भेने दुनू बापूत विचारलैन जे एक तँ नव गाम, तहूमे नव बास, काज तँ बहुत अछि तँए काजकेँ सोझरा कऽ चलए पड़त। रहै-जोकर घर भलैं नइ भेल मुदा दिन कटै-जोकर तँ भइए गेल। घर-आँगन बनबैसँ लऽ कऽ कारोबार धरिक काजमे हाथ लगबए पड़त। फुलचन सोमनकेँ पुछलखिन-

“बौआ, मैरचासँ कोन-कोन समान अनने छह?”

सोमन बाजल-

“बाबू, सोचलौं जे आन गाममे लगले सभ किछु थोड़े भऽ जाएत तँए चाक बनबैक शिला, तख्ता, फट्ठा, जौड़, बेलक कील सभ किछु अनने छी।”

बिच्चेमे फुलचनक मुहसँ निकललैन-

“बाह-बाह। चाकक ओरियान तँ भइए गेलह। आरो की सभ अनने छह?”

पिताकेँ गदगद होइत देख सोमन आगू बाजल-

“चकैठ, हथमैन, पिटना, पीरहुर, मजनी, छन्ना सेहो अनने छी।”

मुस्कियाइत फुलचन बजला-

“काजक तँ सभ किछु अछिए। आइए चाको बनबैमे हाथ लगा दहक। एक गोरे पात खरैड़ अनिहह, एक गोरे घरक लेबिया-मुनियाँमे हाथ लगा दहक आ हमरा तँ समचे सभ ओड़ियबैमे समए बीत जेतह।”

दस दिनक मेहनतसँ रहै-जोकर एकटा घर बनि गेल। चाको सुखा गेल। जारनोक ओरियान भऽ गेल। चाक गाड़ि, माटि बना सोमन चाक लग बैसल। जहिना उद्योगपतिकेँ नव कारखानाक उद्घाटन दिन मनमे खुशी रहै छै, तहिना आइ सभ परानी फुलचनोकेँ छैन। हँसैत फुलचन पण्डित बेटा दिस देखैत बजला-

“बौआ, जेते समान बनबैक लूरि अछि, सभ समान बना, पका कऽ खरिहाँनमे पसाइर, सौंसे गौंआकेँ हकार दऽ देखा देबैन। जिनगीक परीक्षा छी।”

आबा उघारि चारू गोरे खल लगा-लगा कूड़, हाथी, ढकना, कोशिया, दीप, पाण्डव, गणेश, लक्ष्मी, मटकूर, छाँछी, डाबा, घैल, सामा-चकेबा, पुरहर, अहिबात, कोहा, फुच्ची, सरबा, सीरी, भरहर, आहूत, धुपदानी, पातिल, तौला, मल्सी, बसनी, उन्नैसमासी, कोही, लाबैन, कलश, कराही, रोटिपक्का, अथरा, कसतारा, लग्जोरी, नादि, लोइट, माँट, टाड़ा, टाड़ी, बधना आ धिया-पुता खेलैक जात इत्यादि सभ वस्तुकेँ चारि-चारि खल लगा पाबैनक, बिआहक, उपनयनक, श्राद्धक, पोखैरक यज्ञ-कीर्तनक आ घरैलू काजक अलग-अलग सजा कऽ पसारलैन। पछाइत दुनू बापूत जा गौंआकेँ देखैक हकार देलैन।

चारू परानी फुलचनकेँ अपना लूरिक ठेकान नइ छेलैन किएक तँ सभ काज-ले एक बेर सभ समान कहियो नै बनौने छला। मुदा आइ सभटा एक संग बनौलैन। एक संग देखते सभकेँ ई बिसवास भऽ गेलैन जे जहिना बड़का वेपारीक दोकानमे अनेको किसिमक सौदा रहै छै तहिना तँ हमरो अछि।

समए बितैत गेल। अधिक बएस भेने दुनू परानी फुलचन शरीरसँ कमजोर हुअ लगला। सोमनोकेँ एकटा बेटा, एकटा बेटी भेलइ। परिवार बढ़लै। खरचो बढ़लै।

समए आगू-मुहेँ ससरैत गेल। दुनू परानी फुलचन मरि गेला।

..बेटीक बिआह सेहो सोमन कऽ लेलक। सोमनक बेटा रामदत दुर्गापूजा देखए मात्रिक गेल। ओतैसँ वौड़ गेल। माटिक बरतनक जगह द्रव्यक बरतन सभ परिवारमे धीरे-धीरे बढ़ए लगलै। जइसँ माटिक बरतनक मांग कमए लगल। घटैत-घटैत माटिक बरतन परिवार छोड़ि देलक। रहि गेल मात्र पाबैन, उपनयन, बिआह आ श्राद्ध।

अपन घटैत कारोबार आ टुटैत परिवारसँ दुनू परानी सोमन चिन्तित हुअ लगल। आगूक जिनगी अन्हार लगए लगलै। कोनो रस्ते नै देखाइ। सोचैत-विचारैत सोमनक नजैर एकटा काज ‘खपड़ा बनौनाइ’पर पड़लै। खपड़ापर नजैर पहुँचते मुस्कियाइत पत्नीकेँ कहलक-

“एकटा बड़ सुन्दर काज अछि जइमे कमाइयो नीक आ काजो माटिए-क।”

अकचकाइत कपली बजली-

“कोन काज?”

सोमन-

“खपड़ा बनौनाइ।”

कनी काल धरि गुम रहि कपली बजली-

“थोपुआ खपड़ा तँ हमहूँ बना सकै छी मुदा नड़िया नै हएत।”

जोर दैत सोमन बाजल-

“हँ, हएत! चाक परहक भलैं नै हुअए मगर मुंगरी परहक किए ने हएत।”

“हँ, से तँ हएत।”

दुनू परानी खपड़ा बनबए लगल। लोककेँ बुझल नै रहै तँए अगुरबार कियो खोज नै केलक। मुदा जखन एकटा भट्ठा लगौलक तखन गामक लोक देखलक। खपड़ो नीक, पाको बढ़ियाँ। गिनतीए हिसाबसँ खपड़ा बेचए लगल। बढ़ियाँ आमदनी हुअ लगलै।

बढ़ियाँ कारोबार चलल। मुदा सिमटीबला एस्बेस्ट्स अबिते खपड़ाक मांग कमए लगलै। खपड़ा बनौनिहारकेँ मन्दी आबि गेल। ओना सोमनक परिवारो छोट, मात्र दुइए गोरेक। मुदा तैयो गुजरमे कटमटी आबए लगलै जइसँ फेर जिनगी भारी हुअ लगलै।

हँसी-खुशीसँ जीवन-यापन करैबला परिवार एहेन स्थितिमे पहुँच गेल जे साँझक-साँझ चुल्हि नै पजरैत। दोसर कोनो लूरि नहि। अपन खसैत जिनगी देख कपली पतिक मुँह दिस तकैत बजली-

“एना केते दिन दुख काटब? जखन हाथ-पएर तना-उतार ऐछे आ काज करए चाहिते छी तखन की अही गामकेँ सीमा-नाँगैर छइ! चलू ऐ गामसँ।”

पत्नीक विचार सुनि सोमनक आँखि नोरा गेल। किछु बजैक हिम्मते ने होइ। मने-मन चिन्तित हुअ लगल जे जइ लूरिक चलते अखन धरि जीलौं ओ लूरि आब मरि रहल अछि। दोसर लूरि तँ अछि नहि। की करब..?

असमंजसमे पड़ल पतिकेँ देख कपली बजली-

“दुनियाँ बड़ीटा छइ। जेतै पेट भरत तेतै रहब। जहिना मैरचासँ आबि लछमीपुरमे एते दिन रहलौं तहिना ई गाम छोड़ि दोसर गाममे रहब।”

पत्नीक विचारसँ सहमत होइत सोमन बाजल-

“अहाँक विचार मानि लेलौं। ऐ गामसँ चारिम दिन चलि जाएब। बीचमे

जे दू दिन बाँचल अछि तइमे अहूँ आ हमहूँ गाममे टहैल कऽ सभकेँ जना दियौन जे जहिना एक दिन हँसी-खुशीसँ छाती लगेलौं तहिना आब जा रहल छी। चुपचाप गामसँ चलि जाएब नीक नहि। गामसँ तँ चुपचाप ओ भगैए जे अधला काज केने रहैए।”

दुआरिये-दुआरि दूनू परानी गाममे घुमि सभकेँ कहि देलकैन-

“गामसँ चलि जाएब।”

प्रात होइते दुनू परानी घरक सभ समानक मोटरी बान्हि ओसारपर रखलक। भूखल पेट! सुखाएल मुँह! निराश मन! आगू बढ़ैक डेगे नै उठैत।

ओसारापर बैसल एक-दोसराक मुहौं देखैत आ कनबो करैत। दुनूक करेज छहोँछीत भेल...।

सबा बजैत। टहटहौआ रौद। हवा शान्त। साफ मेघ। घामसँ तर-बत्तर, माथपर मोटरी, हाथमे वी.आइ.पी. बैग नेने सोमनक बेटा रामदत आँगन पहुँचल। माए-बापक दशा देख छाती काँपए लगलै। मेह जकाँ आगूमे ठाढ़। सोगे दुनूक आँखि बन्न। बन्न आँखिसँ नोर टघरैत। दुनू अधीर। करेजकेँ थीर करैत रामदत बाजल-

“बाबू।”

‘बाबू’ शब्द कानमे पड़िते दुनू बेकती सोमनक आँखि खुजलै। मुदा नोर टघरिते रहलै। किन्तु आब नोरक रूप बदलए लगल। अखन धरि जे नोर सोगसँ खसैत रहै ओ सिनेहमे बदैल गेलइ। अकचकाइत सोमनक मुहसँ निकलल-

“बौआ!”

बिच्चेमे झपैट कपली बजली-

“बे-ट-आ!”

ओसारापर बैग-मोटरी रखि रामदत पिताकेँ गोड़ लगैले झूकल आकि तखने कपली उठि कऽ दुनू हाथे पँजिया कऽ पकैड़ चुम्मा लैत बजली-

“भाग नीक छेलौ बेटा जे हम सभ भेँट भेलियौ, नहि तँ तूँ केतए रहितेँ आ हम सभ केतए रहितौं..!”

माएकेँ गोड़ लागि रामदत मोटरी खोलि दू किलो भरिक रसगुल्लाक पलोथिन, किलो भरि कटलेट आ किलो भरिक बीकानेरी भुजियाबला पैकैट

निकालि घुसका कऽ रखलक। ..दुनू परानी सोमनकेँ भुखसँ जरल मन। जहिना गाइक गौजरा बच्चा माइक थन दिस आँखि गड़ा देखैत रहैए तहिना रसगुल्ला, भुजिया दिस सोमन आ कपली नजैर एकाग्र केने छल। रामदत दुनू-ले नव वस्त्र सेहो निकालि फुटा-फुटा रखलक। तैसंग चमकैत स्टील थारी, लोटा, गिलास, बाटी एक भागमे आ चाह बनबैक केटली, कप, छन्ना, आयरन, नारियल तेलक डिब्बा इत्यादि आरो-आरो समान निकालि चद्दैरकेँ झाड़लक। जहिना चुल्हिक आगिमे ऊपर सँ थोड़बो पानि पड़लापर ठंढापन आबए लगैत तहिना दुनू परानी-सोमनक हृदए चीज-वौस देख शीतल हुअ लगलै, एकदम स्नानोपरान्तक शीतलता जकाँ। सोमनक शीतल मनसँ मधुर शब्द निकललै-

"बच्चा, गरमाएल छह पहिने नहा लएह तहन मन चैन हेतह।"

माए-बापक मुँह देख रामदत बाजल-

"बाबू हमरो भूख लगल अछि। पहिने कनी-कनी खा लिअ। पछाइत नहाएब।"

रसगुल्लाक पलोथिनक गिड़ह खोलि रामदत दू बाकुट निकालि स्टीलक थारीमे लऽ पिताक आगूमे आ दू बाकुट माइक थारीमे दऽ क्रमश: कटलेट आ भुजियाक गिड़ह खोलैत बाजल-

"जेते मन हुअए तेते खाउ। नहाइक कोनो औगताइ थोड़े अछि?"

अपनो मुँहमे रसगुल्ला लैत, बैग खोलि, मनी बैग निकालि रामदत पिता आगूमे रखलक। रूपैआ देख कपलीक मन टुकली जकाँ पहाड़पर चढ़ि गेल। धरतीकेँ गोड़ लगलक।

खाइत-नहाइत बेर टगि गेलइ। पछबरिया घरक छाहैर अदहा आँगन टपि गेल। घरक कोणमे जहिना मोथीक पुरना बिछान बिछौल छल तहिना बिछौले रहए। घरसँ बिछान निकालि कपली पछबरिया ओसार लगा बिछौलक। ऊपरसँ नवका जाजीम बिछौलक। नवका सिरमा रखलक। तीनू गोरे बैस गप-सप्प करए लगला। सोमन-

"बौआ, तूँ वौड़ केना गेलहक?"

मन पाड़ैत रामदत बाजल-

"बाबू, हम वौड़लौं कहाँ। मामा गाममे मुजफ्फरपुरक छलगोरिया दुर्गाक मुरती बनबैले आएल रहए। ओहो कुम्हारे, तीन गोरे रहए। ओकर छोटका बेटा

हमरे एतेटा रहइ। ओकरासँ हमरा दोस्ती भऽ गेल। ओकरे संगे चलि गेलियह।"

बिच्चेमे कपली बजली-

"रौ डकूबा, तोरा चिट्ठियो-पुरजी नै पठौल भेलौ।"

अपनाकेँ स्मरण करैत रामदत बाजल-

"माए, काज सिखैमे सभ किछु बिसैर गेल रहियौ। तोरो सबहक हालत तँ बढ़ियेँ रहौ किने, तहन चिन्ते कथीक करितौं।"

सामंजस करैत, बिच्चेमे सोमन बजला-

"जहिया जे दुख लिखल छल से भोगलौं। यएह तँ भगवानक लीला छिऐन। कखनो दुख तँ कखनो सुख।"

रामदत-

"बाबू, एहेन दशा भेलह केना?"

बेटाक बात सुनि सोमनक आँखि भरि गेलैन, बजला-

"बौआ, अखन धरिक जेते लूरि-बुधि छेलए से सभ पुरान भऽ गेल। नवका सिखलौं नहि...।"

पिताक बात सुनि रामदत नमहर साँस छोड़ि मुस्कियाइत बाजल-

"बाबू, हमरा तँ छुट्टिए नइ दैत रहए। बीस-बीस हजार रूपैआ मासमे कमाइ छी। तैपर सँ मूर्ति बनबौनिहारक कतार लगल रहैए।"

बिच्चेमे कपली पुछलखिन-

"बेटा, की सभ लूरि छौ?"

मुस्कियाइत रामदत बाजल-

"माए, माटिसँ लऽ कऽ सिमटी धरिक मुरती बनबै छी। तैसंग नाच-तमाशाक परदा, घर सभमे चित्र सभ बनबैक लूरि सेहो अछि।"

बेटाक बात सुनि सोमनक अहं जागल। बजला-

"बौआ, जहन एते कमाइक लूरि छह, तहन नोकरी किए करै छह?"

मुस्कियाइत रामदत बाजल-

"एते दिन जे नोकरी केलौं ओ नोकरी नइ भेल। साल भरि तँ माटिए सनैमे लगि गेल, तेकर पछाइत साल भरि खढ़ बन्हैमे आ पहिल माटि लगबैमे

चलि गेल। तेसर साल मुरती बनबैमे लागल। चारिम साल मुरतीक आँखि बनबैमे लागल। ऐ साल आबि माने पाँचम बर्खमे ऐ साल गुरु दैछना चुका एलौं हेन। आब अपन कारोबार करब। जखने अपन कारोबार हएत तखने ने दू-चारि गोरे सिखबो करत।"

अपन मजबूरी देखबैत सोमन बजला-

"बौआ, अपन चिन्ता जेते शरीरकेँ नै खेलक तइसँ बेसी तोहर। किए तँ हरिदम मनमे नचैत रहए जे वंश अन्त भऽ गेल। जाबे दुनू परानी छी ताबै धरि...। मुदा आइ सबुर भऽ गेल जे जाबे बीटमे बाँस चढ़न्त रहै छै ताबे उन्नैससँ बीस होइत जाइ छै मुदा निच्चाँ-मुहेँ होइते सरसरा कऽ कोंपरो सुखए लगै छइ। ओना, आब आशा भऽ गेल जे हमरो वंश एक-सँ-एक्कैस हएत।"

बेटाकेँ आधुनिक मुर्तिकार रूपमे पाबि सोमन गदगद भऽ गेला। हृदए अह्लादसँ भरि गेलैन। नजैर सहजे बेटाक नजैरमे गड़ि गेलैन। धियान बढ़ैत बाँसक बीटमे विचरण करए लगलैन..! सोमनक मनमे एलैन, बेटासँ नव गुण सीखब, अखनो दुनू बेकती बहुतो काज कऽ सकै छी।

❍

शब्द संख्या : 2373

ठेलाबला

टाबरक घड़ीमे बारह बजेक घण्टी बजिते भोलाक निन्न टुटि गेलैन। ओछाइनपर सँ उठि सड़कपर आबि हियासए लगला तँ देखलैन जे डण्डी-तराजू माथसँ थोड़बे पच्छिम झूकल अछि। मेघौन दुआरे सतभैयाँ झँपाएल। जेमहर साफ मेघ रहै ओम्हुरका तरेगन हँसैत मुदा जेमहर मेघौन रहै ओम्हुरका मलिन। गाड़ी-सवारी एक्कोटा नहि। सड़क सुनसान। मुदा बिजलीक इजोत पसरल। गस्तीक सिपाही टहलैत। सड़कपर सँ भोला आबि ओछाइनपर पड़ि रहला मुदा मन उचला-चाल करैत रहैन। सिनेमाक रील जकाँ पैछला जिनगी मनमे नचैत रहैन। जहिना चुल्हिपर चढ़ल बरतनक पानि तर-सँ-ऊपर अबैत तहिना भोलोक मनक खुशी हृदैसँ निकैल चिड़ै जकाँ अकासमे उड़ैत रहैन। किएक ने खुशी अबितैन, हेराएल वस्तु जे भेट गेल रहैन। मन गेलैन परसुका चिट्ठीपर, जे गामसँ दुनू बेटा पठौने। असम्भव काज बुझि बिसवासे नै होइत रहैन। पत्र तँ नइ पढ़ल होइत रहैन मुदा पढ़बै काल जे पाँति सभ सुनने छला से ओहिना आँखिक आगू नचैत रहैन। पत्र उघारि आँखि गड़ा देखए लगला-

"बाबू, पाँच तारीखकेँ दुनू भाँइ ज्वाइन करए जाएब। इच्छा अछि जे घरसँ विदा होइ काल अहाँकेँ गोड़ लागि घरसँ निकली। तँए पाँच तारीखकेँ दस बजेसँ पहिनहि अपने गाम पहुँच जाइ।"

पत्रक बात मनमे अबिते भोला गाम आ शहरक बीचक सीमानपर लसैक गेला। मनमे एलैन, समाजसँ निकैल छातीपर ठेला घिंच दूटा शिक्षक समाजकेँ देलिऐ, की ओइ समाजक आरो ऋण बाँकी अछि? जँ नहि तँ किएक ने छाती लगौता...।

जहिना गामसँ धोती गोल-गला आ दू टाका लऽ कऽ निकलल छेलौं, तहिना देहक कपड़ा, सनेस, चाह-पानक खर्च छोड़ि किछु ने ऐठामसँ लऽ जाएब...।

चिड़ै टाँहि देलकै, फेर ओछाइनपर सँ उठि भोला बाहर निकलला तँ देखलखिन जे बाँस भरि ऊपर भुरूकबा आबि गेल अछि। चोट्टे घुमि कऽ आबि

संगी-साथीकेँ उठा अपन सभ किछु बाँटि देलखिन, अपना-ले खाली मासुलक खर्च, सनेस आ पाँकेट खर्च मिला साए रूपैआ रखि, कपड़ा पहिर, धरमशालाकेँ गोड़ लागि हँसैत निकैल गेला।

जहन आठे बर्खक भोला रहए तहिए माए मरि गेलैन। तीनिए मासक पछाइत पिता चुमौन कऽ लेलखिन। ओना पहिलुको पत्नीसँ रघुनीकेँ चारिटा सन्तान भेल रहैन। मुदा खाली भोलेटा जीवित रहल। सतमाए-केँ परिवारमे एने भोलाकेँ सुखे भेलइ। ओना गामक जनिजातियो आ पुरुखोकेँ होइ जे सतमाए भोलाकेँ अलबा-दोलबा कऽ घरसँ भगा देतै, नहि तँ परिवारमे भिनौज जरूर कराइए देतइ। मुदा सबहक अनुमान गलत भेल। भोला घरसँ सोलहन्नी फ्री भऽ गेल। फ्री खाली काजेटा मे भेला, मान-दान सेहो बढ़िए गेलइ। दुनू साँझ भानस होइते माए फुटा कऽ भोलाले सीकपर थारी साँठि कऽ रखि दइ छेली। भलेँ भोला दिनुका खेनाइ साँझमे आ रौतुका खेनाइ भोरमे खाइत।

परोपट्टामे जालिम सिंह आ उत्तमचन्दक नाच जोर पकड़ने। सभ गाममे तँ नाच पार्टी नहि, मुदा एक गाममे नाच भेने चरिकोसीक लोक देखए अबैत।

भोलाक गामक नाच पार्टी सभसँ सुन्दर अछि। जेहने नगेड़ा बजौनिहार तेहने बिपटा। जइसँ पार्टीक प्रतिष्ठा दिनानुदिन बढ़िते जाइत। ..घरसँ फ्री भेने भोला नाचक परमानेंट देखनिहार भऽ गेल। नाचो एक-आध घन्टा, दू घन्टा आकि तीन घन्टाक नहि, भरि रौतुका। जेहने देखनिहार जिद्दी तेहने नचिनिहारो। गामक बुढ़-बुढ़ानुससँ लऽ कऽ छौड़ा-मारड़ि धरि भरि मन मनोरंजन करैत। मनोरंजनो सस्ता। ने नाच पार्टीकेँ रूपैआ दिअ पड़ैत आ ने खाइ-पीबैक कोनो झंझट। ओना गामक बारह-चौदह-अना लोकक हालतो रद्दीए। मुदा जे किसान परिवार छल ओ अपना ऐठाम मासमे एक-दू दिन जरूर नाच करबै छला। नटुआकेँ खैयो-ले दइ छेलखिन आ कोनो-कोनो समानो कीनि कऽ। भोलो नाच पार्टीक अंग बनि गेल, डिग्री सेदैक जिम्मा भेट गेलइ। डिग्री सेदैक जिम्मा भेटते भोलाकेँ काजो बढ़ि गेलइ। घूर-ले जारनोक ओरियान करए पड़इ। अपना काजमे भोला मस्त रहए लगल। मुदा एतबेसँ ओकर मन शान्त नइ भेलइ। काजक सृजन ओ अपनोसँ करए लगल। स्टेजक आगूमे जे छोटका धिया-पुता बैस पीह-पाह करइ। ओकरो सभपर निगरानी करए लगल। आब ओ चुपचाप एकठाम नै बैसए। घुमि- घुमि कऽ महफिलोक निगरानी करए लगल। आरो काज बढ़ैलक। नटुआ सबहक बीड़ी सेहो लगबए लगल। बीड़ी सुनगबैत-

सुनगबैत अपनो पीयब सीखि लेलक। किछुए दिनक पछाइत भोला नमहर बीड़ी-पियाक भऽ गेल। किएक तँ एक्के-दू दम जँ पीबए तैयो भरि रातिमे तीस-पैंतीस दम भऽ जाइ छेलइ। जइसँ भरि राति मूड बनल रहै छेलइ।

बीड़ीक कसगर चहैट भोलाकेँ लगि गेल। रातिमे तँ नटुए सभसँ काज चलि जाइ छेलै मुदा दिनमे जहन अमलक तलक जोर करै तँ मन छटपटाए लगइ, मूडे भडैठ जाइ। मूड बनबै दुआरे भोला बापक राखल बीड़ी चोरा-चोरा पीबए लगल। जइक चलैत सभ दिन किछु-ने-किछु बापक हाथे मारि खाइत।

एक दिन एक्केटा बीड़ी रघुनीकेँ रहैन। भोला चोरा कऽ पीब लेलक। कोदारि पाड़ि रघुनी गामपर एला तँ बीड़ी पीबैक मन भेलैन। खोलियासँ आनए गेला तँ बीड़ी नइ देखलैन। चोटपर भोला पकड़ा गेल। सभ तामस रघुनी भोलापर उतारि लेलैन। ..मारि खाए भोला कनैत उत्तर-मुहेँक रस्ता पकड़लक। कनीए आगू बढ़ल कि करिया कक्काक नजैर कनैत भोलापर पड़ल। कानबसँ ओ बुझि गेला जे भीतरिया मारि लागल छइ। ..पुचुकारि कऽ करिया काका पुछलखिन-

"की भेलौ भोला, किए हुचकै छँह?"

करिया कक्काक सिनेह पाबि भोला आरो हुचैक-हुचैक कानए लगल। हुचकैत भोला जे किछु काकाकेँ कहलकैन ओ हुचकीए-मे हेरा गेल। काका भोलाक बात नै बुझलैन। मुदा काका बिगरला नहि, भोलाक दहिना डेन पकैड़ रघुनीकेँ कहए बढ़ि गेला।

काकाकेँ देख रघुनियोँक मन पघिल गेलैन। लगमे आबि काका कहलखिन-

"रघुनी, भोला बच्चा अछि किएक तँ बिआह नइ भेलैए। तँए नीक हेतह जे बिआह करा दहक। अपन भार उतैर जेतह। परिवारक बोझ पड़तै अपने सुधरत। अखन मारने दोषी हेबह, समाज अबलट्ट जोड़तह जे बाप कुभेला करै छइ। जनिजातिक मुँह रोकि सकबहक ओ कहतह जे 'माए मुइने बाप पित्ती... ।"

करिया कक्काक विचार रघुनीक करेजकेँ छेदि देलकैन। आँखिमे नोर आबि गेलैन। अखन धरि रघुनीक जे आँखि करिया कक्कापर रहैन ओ भोलाक गाल परहक सुखल नोरक टघारपर पहुँच अँटैक गेलैन। ओना, मारिक चोट भोलाक देहमे निजाइए गेलै जे संग-संग बिआहक बात सुनि मनमे खुशियो

उपकलै। बुधिक हिसाबसँ भलेँ भोला बुड़िबक अछि मुदा नाचमे मेल-फीमेलक गीत तँ गबिते अछि।

पिताक हैसियतसँ रघुनी करिया काकाकेँ कहलखिन-

"काका, हम तँ ओते छह-पाँच नै बुझै छिऐ, काल्हिए चलह केतौ लड़की ठेमा कऽ बिआह कैये देबइ।"

"बड़बढ़ियाँ।"

कहि करिया काका रस्ता घेलैन।

भोलाक बिआह भेला आठे दिन भेल छेलै कि पाँच गोरेक संग समैध आबि रघुनीकेँ कहलकैन-

"बिआहसँ पहिने हम सभ नै बुझलिऐ, परसू पता लगल जे लड़िका नाच पार्टीमे रहैए। नटुआ-फटुआ लड़िकाक संग अपन बेटीकेँ हम नै जाए देब। ई सम्बन्ध नइ रहत। अपना सभमे तँ खुजले अछि। अहूँ अपन बेटाकेँ बिआहि लिअ आ हमहूँ अपना बेटीक दोसर बिआह कऽ देब।"

कहि पाँचो गोरे चलि गेला।

ससुरक बात सुनि भोलाक बुधिए हेरा गेलइ। जहिना जोरगर बिर्डो उठलापर सभ किछु अन्हरा जाइ छै तहिना भोलोक मन अन्हराए लगलै, दुनियाँ अन्हार लागए लगलै। ओना, तीन मास पहिनहि नाच पार्टी टुटि गेल छेलइ। एकटा नटुआ एकटा लड़कीकेँ लऽ पड़ा गेल जइसँ गाम दू फाँक भऽ दू ग्रुपमे बँटा गेलइ। सौंसे गाममे सनासनी चलए लगलै। तैपर सँ भोला आरो दू फाँक भऽ गेल। पाण्डु रोगी जकाँ भोलाक देहक खून तरे-तर सुखए लगलै। मुदा की करैत वेचारा। किछु फुरबे ने करइ। ग्लानिसँ मन कसाइन हुअ लगलै। मने-मन अपनाकेँ धिक्कारए लगल, कोन सुगराहा भगवान हमरा जन्म देलैन जे बहुओ छोड़ि देलक। विचारलक जे ऐ गामसँ केतौ चलिए जाएब नीक हएत।

घरसँ भोला पड़ा गेल। संगी-साथीक मुहसँ दिल्ली, कलकत्ता, बम्बइक विषयमे सुननहि रहए। जइसँ गाड़ियोक भाँज बुझले रहइ। मुदा ने जेबीमे पाइ रहै आ ने बटखर्चा। खाली दूटा टाका संगमे रहइ। अबधारि कऽ भोला कलकत्ताक गाड़ी पकैड़ लेलक।

हबड़ा स्टेशन गाड़ी पहुँचते भोला उतरल। टिकट नइ रहनौं एक्को मिसिया डर मनमे नहि। निर्मली-सकरीक बीच कहियो टिकट नै कटबै छल। एक बेर

पनरह अगस्तकेँ सिमरिया धरि बिनु टिकटे घुमि आएल छल। प्लेटफार्मक गेँटपर दूटा सिपाहीक संग टी.टी. टिकट ओसुलैत। भोलाकेँ देख टी.टी.क मनमे भेलै, दरभंगिया छी भीख मंगए आएल अछि। टिकट नै मंगलकै। सिपाहियोकेँ बुझि पड़लै जे जेबीमे किछु छै नहि। टिकटेबला यात्री जकाँ भोलो गेँट पार भऽ गेल।

सड़कपर आबि भोला आँखि उठा कऽ तकलक तँ नमहर-नमहर कोठा, चौरगर सड़क, हजारो छोटका-बड़का गाड़ी आ लोकक भीड़ देखलक। मनमे भेलै, भरिसक आँखिमे ने किछु भऽ गेल! जहिना आँखि गड़बड़ भेने एक्के चान सातटा बुझि पड़ैए तहिना ने तँ बुझि पड़ैए! ..दुनू हाथे दुनू आँखि मीड़ि फेर देखलक तँ ओहिना भीड़ देख मनमे उठलै, जहन एते लोकक गुजर-बसर चलै छै तँ हमर किए ने चलत। आगू बढ़ि लोकक बोली अकानए लगल। मुदा केकरो बाजब बुझबे नै करैत। अखन धरि बुझैत जे जहिना गाए-महींस सभठाम एक्के रंग बजैए तहिना ने मनुखो बजैत हएत। मुदा से नइ देख भेलै जे भरिसक हम मनुखक जेरिमे हेरा ने तँ गेलौं..! मुदा फेर मनमे उठलै, लोक तँ संगीक बीच हेराइए, असगरमे केना हेराएत।

..विचित्र स्थितिमे भोला पड़ि गेल। ने आगू बढ़ैक साहस होइ आ ने केकरोसँ किछु पुछैक। हिया हारि उत्तर-मुहेँ विदा भऽ भेल। सड़कक किनछैर सभमे खाइ-पीबैक छोट-छोट दोकान पतियानी लागल देखलक। भूख लगले रहै मुदा खाली जेबी आ लोकक बोलक कारण हिम्मते ने होइ। जेबी टोबलक तँ एकटा दू-टकही रहइ। मन पड़लै मधुबनीक स्टेशन कातक होटल, जइमे पाँच रूपैए प्लेट दइत। ई तँ सहजे कलकत्ता छी। ऐठाम तँ आरो बेसी महग हेबे करत। एकटा दोकानक आगूमे ठाढ़ भऽ गर अँटबए लगल जे नइ भात-रोटी तँ एक गिलास सतुए पीब लेब। ..बगे देख दोकानदारे कहलकै-

"आबह आबह, बौआ। ठाढ़ किएक छह?"

अपन बोली सुनि भोला घुसैक कऽ दोकान लग पहुँच पुछलक-

"दादा, केना खुआबै छहक?"

"तीन मास पहिने धरि आठे-अनामे खुअबै छेलिऐ। अखन बारह-अनामे खुअबै छिऐ।"

भोलाक मनमे संतोख भेलइ। पाइएबला गहिंकी जकाँ बाजल-

"कुर्रा करैले पानि लाबह।"

भरि पेट खेनाइ खा भोला आगू बढ़ल। ओना तँ रंग-बिरंगक वस्तु देखैत मुदा भोलाक नजैर खाली दुइए-ठाम अँटकै। देबाल सभमे साटल सिनेमाक पोस्टरपर आ सड़कपर चलैत ठेलापर। जइ पोस्टरमे डान्स करैत देखए ओइठाम अँटैक सोचए जे ई नर्तकी मौगी छी आकि मुनसा। गाम-घरमे तँ पुरुखे मौगी बनि डान्स करैए। फेर मन पड़लै संगीक-मुहेँ सुनल ओ बात जे कहने रहैए सत्य हरिश्चन्द फिल्ममे मर्दे मौगियोक रौल केने रहए...।

गुनधुन करैत भोला बढ़ल तँ अपने जकाँ छौड़ाकेँ ठेला ठेलने जाइत देख सोचए लगल, ई काज तँ हमरो बुते भऽ सकैए। गाड़ीक डरेवरी तँ करल नै अबैए। बिनु सिखने रिक्शो केना चलौल हएत। ततमत करैत आगू बढ़ल। सड़कक बगलेमे एकटा ठेलाबलाकेँ चाह पिबैत देखलक। ओइठाम जा कऽ ठाढ़ भऽ गेल। चाह पीब ठेलाबला पुछलक-

"कोन गाँ रहै छह?"

भोला बाजल-

"बिशौल।"

'बिशौल'सुनिते ठेलाबला कहलकै-

"हमहूँ तँ सुखेते रहै छी, चलह हमरा संगे।"

गप-सप्प करैत दुनू गोरे धरमतल्लाक पुरना धरमशाला लग पहुँचल, ठेलाकेँ सड़केपर छोड़ि दीनमा भोलाकेँ धरमशालाक भीतर लऽ जा कऽ कहलक-

"समांग, असगरे केतौ जैहह नहि। हेरा जेबह। एतै रहह, ताबे हम एक ट्रीप मारने अबै छी।"

टंकीपर हाथ-पएर धोइ भोला दीनमासँ बीड़ी मांगि पीब, पीलर लगा ओङैठ कऽ बैस रहल। आँखि उठा कऽ तकलक तँ झड़ल-झुरल देबालक सिमटी, तैपर केतौ-केतौ बर-पीपरक गाछ जन्मल देखलक। पैखाना कोठरी आ पानिक टंकीक आगूमे ठेहुन भरि थाल किचार सेहो देखलक, मन पड़लै गाम। नाच-पार्टी टुटि गेल! घरवाली छोड़ि देलक! दू पाटी गाम भऽ गेल! सोचिते-सोचिते भोलाकेँ निन्न आबि गेलइ। बैसले-बैसल सुति रहल।

गोसाँइ डुमिते बुचाइ (दोसर ठेलाबला) आबि भोलाकेँ जगबैत पुछलक-

"कोन गाम रहै छह?"

आशा भरल स्वरमे भोला बाजल-

"बिशौल।"

बिशौलक नाओं सुनिते मुस्कियाइत बुचाइ पुछलकै-

"रूपनकेँ चिन्है छहक?"

"उ तँ हमरा कक्के हएत।"

अपन भाइक ससुर बुझि भोलासँ सार-बहनोइक सम्बन्ध बनबैत बाजल-

"चलू, पहिने चाह पीबी। तहन निचेनसँ गप-सप्प करब।"

कहि टंकीपर जा बुचाइ देह-हाथ धोइ, कपड़ा बदैल भोलाकेँ संग केने दोकानपर गेल। आँखिक इशारासँ दोकानदारकेँ दू-दूटा पनितुआ, दू-दूटा समौसा दइले कहलक। दुनू गोरे खा, चाह पीब पानक दोकानपर पहुँच बुचाइ दूटा पान मंगलक। 'पान' सुनि भोला बाजल-

"पान छोड़ि दियौ, बीड़ीए कीनि लिअ।"

बीड़ी पिबैत दुनू गोरे धरमशालाक भीतर पहुँचल। समए भेने एका-एकी ठेलाबला सभ आबए लगल। बिशौलक नाओं सुनिते अपन-अपन सम्बन्ध सभ फरिछौलक। सम्बन्ध स्थापित होइते बेरा-बेरी चाह चलए लगलै। चाह पिबैत-पिबैत भोलाक पेट अगिया गेल। अखन धरिक जिनगीमे एहेन सिनेह भोलाकेँ पहिल दिन भेटलै। भेला ठेलाबला सबहक परिवारक अंग बनि गेल। सभ बेवस्था ठेलाबला सभ कऽ देलक। दोसर दिनसँ ठेला ठेलए लगल।

शनि दिनकेँ सभ ठेलाबला रौतुका शो सिनेमा देखए जाइत। ओइ शोमे एक क्लासक कन्सेशन भेटइ। भोलो सभ शनिकेँ सिनेमा देखए लगल।

चौदह मास बीतला पछाइत भोला गाम आएल। नव चेहरा नव विचार भोलाक। घरक सभ सदस-ले कपड़ा अनलक। धिया-पुताकेँ दू-दूटा चौकलेट देलक। धिया-पुताक हाथमे चौकलेट देख एका-एकी जनिजातियो सभ आबए लगली। झबरी दादी सेहो एली। भोलाकेँ देखते झबरी दादी बाजए लगली-

"कहू तँ ऐसँ सुन्नर पुरुख केहेन होइ छै जे सौंथ जरौनियाँ छोड़ि देलकै!"

दादीक बात भोलाकेँ बेधि देलक। आँखि नोराए लगलै। रघुनीक मन सेहो कानए लगलै। दोसरे दिन रघुनी लड़की ताकए घरसँ निकलल। ओना

लड़कीक तँ कमी नहि, मुदा गाम-घर देख कऽ कुटुमैती करैक विचार रघुनीक मनमे रहैन। लड़कीक कमी तँ ओइ समाजमे अधिक अछि जइमे भ्रूण-हत्याक रोग धेने छइ। समैयो बदलल। गिरहस्त परिवारसँ अधिक पसिन लोक नोकरिया परिवारकेँ करैए। बगलेक गाममे भोलाक बिआह भऽ गेल।

बिआहक तीनिए दिनक पछाइत कनियाँक बिदागरियो भऽ गेलै आ पाँचमे दिन भोला कलकत्तो चलि आएल।

सालक एगारह मास भोला कलकत्ता आ एक मास गाममे गुजारए लगल। गाम अबैत तँ अपनो घरक काज सम्हारि अनको सम्हारि दइत।

तेसर साल चढ़िते भोलाकेँ जौआँ बेटा भेलइ। नवम् मास चढ़िते भोला गाम आबि गेल। मनमे आशो बनले रहै जे पाइ-कौड़ीक दिक्कत तँ नहियेँ हएत। सभ ठेलाबला अपन संस्था बना पाइ-कौड़ीक प्रबन्ध केने अछि। मुदा पहिल बेर छी, कनियाँक देखभाल तँ कठिन अछिए। सरकारीक कोनो बेवस्थो नहियेँ छइ। मुदा समाजो तँ समुद्र छी, जेतए बिनु कहनौं सेवा भेटैए। जइसँ भोलोकेँ कोनो बेसी परेशानी नहियेँ भेल।

समए आगू बढ़ल। पाँच बर्ख पुरिते भोला दुनू बेटाकेँ स्कूलमे नाओं लिखौलक। शहरक वातावरणमे रहने भोलोक विचार धिया-पुताकेँ पढ़बै दिस झुकि गेल रहइ। मनमे अरोपि लेलक जे भलेँ खटनी दोबर किएक ने बढ़ि जाए मुदा दुनू बेटाकेँ जरूर पढ़ाएब। अपन आमदनी देख पत्नीक ऑपरेशनो कराइए नेने रहए। जइसँ परिवारो समटले रहइ।

पढ़ैमे जेहने चन्सगर रतन तेहने लाल। क्लासमे रतन फस्ट करैत आ लाल सेकेण्ड। सतमा क्लास धरि दुनू भाँइ फस्ट-सेकेण्ड स्कूलमे करैत रहल। हाइ स्कूलमे दुनू भाँइ आर्ट लऽ पढ़ए लगल जइसँ क्लासमे कोनो पोजीसन तँ नहियेँ होइत मुदा नीक नम्बरसँ पास करए लगल।

मैट्रिकक परीक्षा दऽ दुनू भाँइ कलकत्ता गेल। अखन धरि आने परदेशी जकाँ अपनो पिताकेँ बुझै छल, तँए मनमे रंग-बिरंगक इच्छा संयोगने कलकत्ता पहुँचल रहए। मुदा पिताक मेहनत, छाती बले ठेला घीचैत देख पराते भने गाम घुमैक विचार दुनू भाँइ कऽ लेलक। पितेक जोरपर तीन दिन अँटकल। मुदा किछु किनैक विचार छोड़ि देलक। मेहनतक कमाइ देख अपन इच्छाकेँ मनेमे दुनू भाँइ दाबि लेलक। मुदा तैयो भोला दुनू बेटाकेँ फुलपेन्ट, शर्ट, घड़ी, जुत्ता कीनि देलखिन।

तीन मासक पछाइत मैट्रिकक रिजल्ट निकलल। दुनू भाँइ, रतनो आ लालो प्रथम श्रेणीसँ पास केलक। फस्ट डिवीजन भेलोपर आगू पढ़ैक विचार मनमे नै अनलक। उपार्जन-ले सोचए लगल। नोकरीक भाँज-भुँज लगबए लगल। नोकरियो सबहक तँ वएह हाल। गामक-गाम पढ़ल बिनु पढ़ल नौजवानक फौज तैयार अछि। एक काज-ले हजार हाथ तैयार अछि। जइसँ समाजक मूल पूजी, मानवीय पूजी आगिमे जरैत सम्पैत जकाँ नष्ट भऽ रहल अछि।

समए मोड़ लेलक। पढ़ल-लिखल नौजवान-ले नोकरीक छोट-छीन दरबज्जा खुजल। गामक स्कूलमे शिक्षा-मित्रक बहाली हुअ लगलै। जइसँ नव ज्योतिक संचार गामोक पढ़ल लिखल नौजवानमे भेल। ओना, समैक हिसाबसँ शिक्षा मित्रक मानदेय मात्र खोराकी भरि अछि मुदा बेरोजगारीक हिसाबसँ तँ नीक अछिए। बगलेक गामक स्कूलमे रतनो आ लालोक बहाली भऽ गेलइ। पाँच तारीककेँ दुनू भाँइ ज्वाइन करत।

आगू नहि पढ़ैक दुख जेते दुनू भाँइक मनमे रहै तइसँ बेसी खुशी नोकरीसँ भेलइ। ओना, कोँपर सन बुधिमे कलुषताक मिसियो भरि आगमन नइ भेल छल। तथापि दुनू भाँइ बैस कऽ अपन परिवारक सम्बन्धमे सोचए-विचारए लगल। रतन लालकेँ कहलक-

"बौआ, कोन धरानी बाबू अपना दुनू भाँइकेँ पढ़ौलैन से तँ देखले अछि। अपनो सभ एक सीमा धरि पहुँच गेल छी, तँए अपनो सबहक की दायित्व बनैए से तँ सोचए पड़तह?"

रतनक बात सुनि लाल बाजल-

"भैया, अपना सभ ओइ धरतीक सन्तान छी जइ धरतीपर श्रवण कुमार सन बेटा भऽ चुकल छैथ। पाँच तारीखसँ पहिने बाबूकेँ कलकतासँ बजा लहुन। हम सभ ठेलाबलाक बेटा छी, ऐमे कोनो लाज नै अछि। मुदा लाजक बात तहन हएत जहन ओ ठेला घिंचता आ अपना सभ कुरसीपर बैस दोसरकेँ उपदेश देबइ।"

मुड़ी डोला स्वीकार करैत रतन बाजल-

"आइए बाबूकेँ चिट्ठी खसा दइ छिऐन जे पढ़िते गाड़ी पकैड़ घर चलि आउ। पाँच तारीखकेँ दुनू भाँइ ज्वाइन करए जाएब। दुनू भाँइक विचार अछि जे अहाँकेँ गोड़ लागि घरसँ डेग उठाएब।"

दुनू भाँइक विचार सुनिते माइक मन सुख-दुखक सीमानपर लसैक गेलैन। जरल घराड़ीपर चमकैत कोठा देखए लगली। आँखिमे नोर छिलैक एलैन। मुदा ओ दुखक नै सुखक...।

❍

शब्द संख्या : 2572

जीविका

शिवरातिक प्रात। मध्य मास। डेढ़ मासक शीतलहरीमे सुरूज मरनासन्न भऽ गेल छला मुदा जीबैक नव शक्ति आबि गेलैन। तँए रौदमे धीरे-धीरे गरमी आबए लगल। चारि बजे भोरमे उमाकान्तक नीन टुटल। निन्न टुटिते देबाल घड़ीपर नजैर देलक। चारि बजैत। ओछाइनेपर पड़ल-पड़ल उमाकान्त अपन आगूक जिनगी दिस देखए लगल। ओना काल्हिए दिनमे दुनू मित्र विचारि नेने छल जे दुनू गोरे टेम्पू कीनए भोरुके गाड़ीसँ दरभंगा जाएब। बदलैत जिनगीक संकल्प उमाकान्तक मनमे, किएक तँ जिनगी मनुखकेँ किछु करैले भेटैए। मनमे एलै, पाँच-पचपनमे गाड़ी अछि तँए पाँच बजे घरसँ निकलब। ओना अदहे घन्टाक रस्ता स्टेशनक अछि, मुदा किछु पहिनहि पहुँचब नीक। हलाँकी, कहियो कोनो गाड़ी अपना समैपर नहियेँ अबैए, एकाध घन्टा लेट रहिते अछि मुदा तइसँ हमरा की। हम समैपर जाएब। शुभ काज हरिदम समैसँ पहिनहि करैक कोशिश करक चाही। ..एते बात मनमे अबिते उमाकान्त ओछाइन छोड़ि उठि गेल। उठिते मनमे एलै, हमर ने नीन टुटि गेल मुदा जँ दोसक नीन नै टुटल होइ तहन तँ गड़बड़ हएत। से नहि तँ पर-पैखाना जाइसँ पहिने ओकरो जा कऽ उठा दिऐ। फेर मनमे एलै, दतमैन करिते जाएब, एकटा काजो तँ अगुआएल रहत। ..हाथमे दतमैन लइते उमाकान्तकेँ मनमे एलै, किछु खा-पी कऽ घरसँ निकलब। रस्ता-बाटक कोन ठेकान। तहूमे लोहा-लक्कड़क सवारी। कखन नीक रहत कखन बगैद जाएत तेकर कोन ठेकान। एक बेर अहिना भेल रहए किने। दरभंगे जाइत रही, मनीगाछी लोहनाक बीच रेलक इंजिन खराब भऽ गेलइ। भोरुके गाड़ी, तँए सोचने रही जे दरभंगे पहुँच किछु खाएब-पीब। ले-बलैया! दू बजे तक गाड़ी ओतै अँटैक गेल! करनो गाड़ीक डिब्बामे जा बैसी तँ करनो उतैर कऽ इंजिन लग पहुँच ड्राइवरकेँ पुछिऐ। ओहू वेचाराक मन घोर-घोर भेल रहइ। हमहूँ आशा-बाटीमे रहि गेलौं। से जँ पहिने बुझितिऐ तँ गाड़ी छोड़ि बिदेसर चौकपर चलि जइतौं आ बस पकैड़ सबेर सकाल दरभंगा पहुँच जइतौं। सेहो नै केलौं। तेकर फल भेल जे भूखे-पियासे खूब टटेलौं। तँए, बिनु किछु मुँहमे देने घरसँ नै निकलब। ..ई बात मनमे अबिते उमाकान्त पत्नीकेँ उठबैत

कहलक-

"जाबे हम दोस ऐठामसँ अबै छी, ताबे अहाँ चारिटा रोटी आ अल्लूक भुजिया बना लेब।"

कहि उमाकान्त शोभाकान्तक ऐठाम दतमैन करैत विदा भेल। दाँतमे घुस्सो दिअए आ मने-मन विचारबो करए, काजे एहेन छी जे मनुखकेँ मनुखो बनबैए आ जानवरो। ओना, दुनियाँक सभ मनुख तँ किछु-ने-किछु करिते अछि। मुदा कियो देव बनि जाइए तँ कियो दानव। तँए काजकेँ परखब सभसँ मूल बात छी...।

शोभाकान्त ऐठाम पहुँचते उमाकान्त रस्तेपर सँ बोली देलक-

"दोस छेँ रौ, रौ दोस?"

ओछाइनपर सँ उठैत शोभाकान्त बाजल-

"हँ दोस, छिऐ रौ, हमरो नीन टुटले अछि। अखन तँ अन्हारे छइ।"

उमाकान्त-

"सबा चारि बजै छइ। तैयार होइत-होइत पाँच बजिए जाएत। कनी पहिले स्टेशन जाएब।"

उमाकान्त आ शोभाकान्त एक्के बतारी। दुनूमे उमेरक हिसाबसँ के छोट आ के पैघ, से तँ ने अपने दुनू गोरे बुझए आ ने कियो टोले-पड़ोसक। किएक तँ टिप्पैन दुनूमे सँ केकरो नहि। बच्चेसँ दुनू गोरे बेसी काल एक्केठाम रहैत तँए समाजोक लोक बिसैर गेल। दुनू गोरेक माइयो-बाप मरिये गेल, आन मोने किएक राखत। मुदा दुनू गोरे ऐ मौकाक लाभ उठबैत। लाभ ई उठबैत जे दुनू एक-दोसराक स्त्रीसँ हँसी-चौल करैत। तइले दुनूमे सँ केकरो मलाल नहि। मुदा गामक बुढ़ो-बुढ़ानुस आ नवकियो कनियाँ, दुनू स्त्रीगणकेँ निरलज कहैत। किन्तु तेकर गम दुनूमे सँ केकरो नहि। किएक तँ सभ स्त्रीगणकेँ होइत जे अधिक-सँ-अधिक पुरुखक संग गप-सप्प-हँसी-मजाक हुअए।

बच्चेसँ उमाकान्त आ शोभाकान्त एक्केठाम गुल्लियो-डण्टा खेलए आ गामेक स्कूलमे पढ़बो करए। बच्चामे दुनू गोरे दुनूकेँ नामे धऽ-धऽ बजैत। मुदा चेष्टगर भेलापर, कनगुरिया ओंगरीमे ओंगरी भिरा दोस्ती लगा लेलक। मिडिल तक गामेक स्कूलमे संगे पढ़बो केलक। मुदा हाइ स्कूलमे उमाकान्तेटा नाओं लिखेलक। शोभाकान्त गरीब, तँए पढ़ाइ छोड़ि देलक। मुदा उमाकान्तकेँ दू-तीन

बीघा खेतो आ पितो गामेक स्कूलमे नोकरी करैत। ओना शोभाकान्त उमाकान्तसँ बेसी चरफरो आ पढ़ैयोमे नीक। तँए अपना क्लासक मेटगीरी सेहो करैत। मुनीटरक बात शिक्षको अधिक मानैथ आ चट्टियाक बीच धाखो। ..पढ़ाइ छोड़ला पछाइत शोभाकान्त नोकरी करए पटना गेल। गामसँ तँ यएह सोचि निकलल जे जएह काज भेटत सएह करब। मुदा रस्तामे विचार बदैल गेलइ। विचार ई बदललै जे ने चाहक दोकानमे नोकरी करब आ ने होटलमे, ने कोठीमे काज करब आ ने ताड़ी-दारूक दोकानमे। अगर जँ नोकरी नै हएत तँ रिक्शे चलाएब वा मोटिये-मे काज करब। सरकारी नोकरीक तँ कोनो आशे नहि, किएक तँ उमेरो नइ भेल हेन।

गामसँ शहर शोभाकान्त पहिले-पहिल पहुँचल। मुदा जे आकर्षण शहर-बजार देख लोककेँ होइ ओ आकर्षण शोभाकान्तकेँ नइ भेलइ। जहिना सोना-चानीक दोकान दिस गरीबक नजैर नै पड़ैए, तहिना। स्टेशनसँ उतैर शोभाकान्त उत्तर-मुहेँक रस्ता धेलक। कोठा-कोठीपर नजैर पड़बे ने करइ। किछु दूर गेलापर एकटा साइकिल मिस्त्रीक दोकान देखलक। रस्तापर ठाढ़ भऽ दोकान हियासए लगल। दोकानदारोक नजैर पड़लै। शोभाकान्तपर नजैर पड़िते दोकानदारक मनमे एलै जे छोटो-छोटो काजमे अपने बरदा जाइ छी जइसँ नमहर काज पछुआ जाइए। से नहि तँ ऐ बच्चाकेँ पुछिऐ जे नोकरी रहत। जँ रहत तँ रखि लेब। ..हाथक इशारासँ हाक पाड़ि मिस्त्री पुछलक-

"बाउ, की नाओं छी?

"शोभाकान्त।"

"केतए घर छी?"

"मधुबनी जिला।"

"केतए जाएब?"

"नोकरी करए एलौं।"

"ऐठाम रहब?"

"हँ। रहब।"

जहिना अतिथि-अभ्यागतकेँ दुआरपर अबिते घरवारी लोटामे पानि आनि आगूमे दैत, खाइक आग्रह करैत तहिना शोभाकान्तकेँ मिस्त्री केलक। आठ-अना पाइ दऽ आँगुरक इशारासँ मुरही-कचड़ीक दोकान देखबैत कहलकै जे ओइ

दोकानसँ जलखै केने आउ। ..झोरा रखि शोभाकान्त विदा भेल। ओना गाड़ीक झमारसँ देहो-हाथ दुखाइत रहै आ भूखो लगलै रहइ। किन्तु नोकरी पाबि देहक दरदो आ भूखो कमए लगलै। खाएर.., मुरही-कचड़ीक दोकानपर बैसते शोभाकान्तकेँ बगे-बाणि देख दोकानदार पुछलकै-

"बौआ, अहाँक घर केतए छी?"

"मधुबनी जिला।"

"गामक नाओं कहू।"

"लालगंज।"

"हमरो घर तँ अहाँक बगलेमे अछि, रूपौली। बीस-पच्चीस बर्खसँ हम ऐठाम रहै छी।"

बिनु पाइ नेनहि दोकानदार शोभाकान्तकेँ भरि पेट खुआ देलक। खा कऽ शोभाकान्त साइकिल दोकानपर आबि मिस्त्रीकेँ पाइ घुमबैत कहलक-

"दोकानदार पाइ नै लेलक।"

मुदा गहिंकी सबहक भीड़ दुआरे मिस्त्री आगू किछु नइ पुछलक।

पंचर साटब, छोट-छोट भंगठी केनाइसँ शोभाकान्त अपन जिनगी शुरू केलक। छोट-छोट काज भेने दोकानदारोकेँ आगू बढ़ैक अवसर हाथ लगलै। साइकिल, रिक्शाक संग मोटर साइकिल आ टेम्पूक मरम्मत केनाइ सेहो शुरू केलक। ..शोभाकान्तोकेँ मौका भेटलै। उपार्जनक लूरि आबए लगलै। दुनियाकेँ बिसैर रिंच-हथौरीमे मगन भऽ गेल।

छह मास बितैत-बितैत शोभाकान्त साइकिल-रिक्शाक मिस्त्री बनि गेल, संगे मोटर साइकिल आ टेम्पू चलौनाइ सेहो सीखि लेलक। मेहनत केने शरीरो फौदा गेलइ। साले भरिमे जवान भऽ गेल।

ड्राइवरीक लाइसेंस शोभाकान्त बना लेलक। लाइसेंस बनैबते शोभाकान्तक मनमे द्वन्द्व उत्पन्न हुअ लगलै जे ड्राइवरी करी आकि अपन दोकान खोलि मिस्त्रियाइ। मुदा अपन दोकान खोलैले घर भाड़ाक संग मरम्मत करैक समानो लिअ पड़त। फेर मनमे एलै, एक तँ मेन-रोडमे घर नइ भेटत, दोसर पैयो ओते नइए जे समानो कीनब। तइसँ नीक जे ड्राइवरीए करी। सएह केलक। ड्राइवरीमे दरमहो नीक आ बाइलियो आमदनी। महिना दिन तँ अ-बेवस्थिते रहल मुदा दोसर मास बितैत-बितैत असथिर भऽ गेल। दरमाहा जमा करए लगल

आ बाइली आमदनी घर पठबए लगल।

साल भरिक दरमाहासँ शोभाकान्त टेम्पू कीनि लेलक आ अपन सभ समान ओहीपर लादि सोझे गाम चलि आएल।

सेकेण्ड डिवीजनसँ उमाकान्त बी.ए. पास केलक। ओना पढ़लो-लिखल लोक कम मुदा ओहूसँ कम नोकरी। खेती-पथारी आ कारोबार कियो पढ़ल-लिखल करए नइ चाहैत। जइसँ गाम-सबहक दशा दिनो-दिन पाछुए-मुहेँ ससरैत। गामक लोको तेहने जे पढ़ल-लिखल लोककेँ खेती करैत देख दिल खोलि कऽ हँसबो करैत आ लाख तरहक लांछना सेहो लगबैत। जइसँ गामक पढ़ल-लिखल लोककेँ नोकरी करब मजबूरी भऽ जाइत।

नोकरीक भाँजमे उमाकान्त दौग-धूप करए लगल। मुदा मनमे संकल्प रखने जे घूस दऽ कऽ नोकरी नै करब। चाहे नोकरी हुअए वा नहि। दौग-धूपसँ मन विचलित हुअ लगलै, संकल्प डोलए लगलै, मनमे अनेको प्रश्न औँढ़ मारए लगलै। कखनो-कखनो मनमे होइ जे पाँच कट्ठा खेत बेच कऽ नोकरी पकैड़ लेब। मुदा फेर मनमे होइ जे जहन घूस दऽ कऽ नोकरी लेब तँ घूस लऽ कऽ लोकक काज किए ने करबै। फेर मनमे होइ जे तहन जिनगी केहेन हएत? अछैते जीबने मुर्दा बनल रहब। लोक शरीर तियागक पछाइत मृत्यु धारण करैए आ हम जीवितेमे मरल रहब। फेर मनमे एलै, पत्नी तँ जीवन-संगिनी छैथ तँए एक बेर हुनकोसँ पुछि लिऐन। उमाकान्तक मनमे शान्ति एलै, पत्नी लग जा पुछलक-

"बिनु घूस-घासक नोकरी भेटब कठिन अछि, से अहाँक की विचार?"

मुस्कियाइत पत्नी कहलकैन-

"आइक जुगमे नोकरी भेटब जिनगी भेटब छी, तँए हमरो गहना-जेबर अछि आ जँ ओइसँ नै पुरए तँ थोड़े खेतो बेच कऽ नोकरी पकैड़ लिअ। देखते छिऐ जे साले भरिमे लोक की-सँ-की कए लइए।"

एक तँ ओहिना उमाकान्तक मन घोर-घोर होइत रहै, तैपर सँ पत्नीक बात आरो मरनासन्न बना देलकै। जिनगीक आशा टुटए लगलै। आँखिक रोशनी क्षीण हुअ लगलै। आशाक ज्योति केतौ बुझिए ने पड़इ। जहिना अन्हारमे सगतैर भूते-प्रेत, चोरे-चहार आ साँपे-छुछुनैर बुझि पड़ैत तहिना उमाकान्तकेँ हुअ लगलै। मुदा डुमैत जिनगीक आशामे कनी टिमटिमाइत इजोत बुझि पड़लै। इजोत अबिते शक्तिक संचार हुअ लगलै। मनमे संकल्पक अंकुर अंकुरित हुअ लगलै। जइसँ दृढ़ताक उदए सेहो हुअ लगलै। मने-मन विचार करए लगल,

जिनगीक किछु लक्ष्य हेबा चाही। मनुख तँ चुट्टी-पिपड़ी नहि ने छी जे साधारण केकरो पएर पड़लासँ मरि जाएत। मनुख तँ ब्रह्मक अंश छी, जइमे विशाल शक्ति छिपल छइ। जिनगीमे अहिना हवा-बिहाड़ि अबै छै तइसँ की मनुख मनुखता गमा लेत। मनुखते तँ मनुखक धरोहर सम्पैत छी। जेकरा लोक ओहिना केतौ फेक देत? कथमपि नहि..! उमाकान्तक मनमे उठलै। मने-मन तँइ केलक जँ हमरा नोकरी नइ भेटत तँ की हाथपर हाथ दऽ कऽ बपहारि काटब? एते कमजोर छी? की हमरामे मनुखक सभ गुण मरि चुकल अछि, हमरा बुते किछु कएल नै हएत? जरूर हएत..!

नोकरी दिससँ नजैर हटा उमाकान्त राशनक दोकान चलबैक विचार केलक। विचार ऐ दुआरे केलक जे जीबैले अर्थक उपार्जन जरूरी होइत। जिनगीक अधिकांश काज अर्थेसँ चलैत, तँए बिनु अर्थे जिनगी जिनगी नै रहि जाइत। हँ ई बात जरूर जे अर्थक उपार्जन आ उपयोगक ढंग नीक हेबा चाही। राशनक दोकानक जरूरत सभ गाममे ऐछे, सरकार आ समाजक बीचक कड़ी सेहो छी। ओना डीलरीक लाइसेंसो बनबैमे पाइयेक खेल चलैए। मुदा तैयो जी-जाँति कऽ उमाकान्त लाइसेंस बनबै दिस बढ़ल।

डीलरीक लाइसेंस बनौला पछाइत उमाकान्त समान उठबैसँ पहिने मिश्रीलालसँ कारोबारक तौर-तरीका बुझैले गेल।

मिश्रीलाल पुरान डीलर। मुदा जहिना गाममे अपन इज्जत बनौने तहिना सरकारियो ऑफिसमे। इज्जत बनबैक अपन तरीका मिश्रीलालक। तँए ब्लौकक पैंतालिसो डीलर मिलि मिश्रीलालकेँ यूनियनक सेक्रेट्री बनौने। जहिना सभ डीलर मिश्रीलालकेँ मानैत तहिना मिश्रीलालो सभकेँ। ..यएह बुझि उमाकान्त भेँट करब आवश्यक बुझलक। मिश्रीलाल ऐठाम उमाकान्त पहुँचल तँ देखलक जे चारि-पाँचटा धिया-पुता रजिस्टरपर दसखतो करैए आ निशानो लगबैए। किएक तँ पैछला मासक समान बँटबारा भऽ गेल छेलै, तँए बिनु रजिस्टर तैयार भेने ऐगला समान थोड़े उठत। जरूरी काज बुझि मिश्रीलाल मगन भऽ अपन काज करैत। ..उमाकान्तकेँ देखते मिश्रीलाल रजिस्टरक बिच्चेमे, जइ पेजमे निशान आ हस्ताक्षर करबैत रहए, तही पेजमे पेनो आ कार्बनो रखि मोड़ैत बेटाकेँ कहलक-

"बौआ, चाह बनबौने आबह?"

उमाकान्त दिस होइत पुछलक-

"किमहर किमहर एनाइ भेलै बौआ।"

निर्विकार भऽ उमाकान्त बाजल-

"भैया, अहाँ पुरान डीलर छी। डीलरीक सभ किछु जनै छिऐ। बी.ए. केला पछाइत हम दू साल नोकरीक पाछू वौएलौं मुदा केतौ गर नै धेलक। आब तँ नोकरीक उमेरो ओराएले जाइए, तँए नोकरीक आशा तोड़ि डीलरीक लाइसेंस बनेलौं हेन।"

नोकरीक गर नै लागब सुनि मिश्रीलाल पुछलकै-

"बौआ, जहिना कोनो परिवारमे चारि-पाँच भाँइक भैयारी रहैए। सभ किछु शामिले रहै छइ, मुदा सभ भाँइक पत्नीकेँ अप्पन-अप्पन सम्पैत सेहो छइ, जइमे भाइयो सभ चोरा-नुका शामिल भऽ जाइए, जेकर फल होइ छै घरमे आगि लागब, तहिना नोकरियो सभमे भऽ गेल अछि। जे कुरसीपर अछि ओ अपने सार-बहनोइक जोगारमे रहैए। कहीं केतौ बिकरियो होइ छइ। जेकर परिणाम बनि गेल अछि जे नोकरी केनिहारोक वंश बनि गेल अछि। देशक विकास केहेन अछि से तँ तूँ पढ़ले-लिखल छह, सभ किछु जनिते छहक। जँ कनी-मनी एक रत्ती आगूओ बढ़ि रहल अछि तँ ओइसँ बेसी ओइ नोकरिहाराक वंशमे नोकरी केनिहार बढ़ि रहल अछि। तँए देखबहक जे डाक्टरेक बेटा डाक्टर बनत। इंजीनियरेक इंजीनियर। केते कहबह। जे जेतै अछि ओ बपौती बुझि ओकरा पकड़ने अछि। तैबीच तेसरकेँ जे गति हेबा चाही सएह तोरो भेलह। तहूसँ बेसी जुलुम अछि जे किछु गनल-गूथल लोक अछि जे नोकरियो करैए, खेतो हथियौने अछि आ जे कोनो सरकारी योजना बनै छै ओकरो हड़पैए। जइसँ देखबहक जे केकरो सम्पैत राइ-छित्ती होइ छै आ कियो सम्पैत-ले लल्ल अछि।"

उमाकान्त-

"भैया, दुनियाँ-दारीक गप छोड़ू। अपना काजक विषयमे कहू।"

मिश्रीलाल-

"बौआ, अखन तूँ जुआन-जहान छह। मुदा जे काज करि कऽ अपना जीबए चाहै छह ओ गलती भेलह। तोरा सन आदमीकेँ डीलरी नइ करक चाही। हम तँ सभ घाटक पानि पिनाइ सीखि नेने छी। की नीक की अधला से बुझिते ने छिऐ। बुझह तँ नढ़ड़ा-हेल हेलै छी, तँए हमर कारबार ठीक अछि। मुदा तोरा बुते नै हेतह।

उमाकान्त-

“किए?”

तैबीच चाह आएल। दुनू गोरे हाथमे गिलास लेलक। एक घोंट चाह पीब मिश्रीलाल बाजला-

“देखहक, डीलरी दू दुनियाँक सीमा परहक काज छी। एक दिस सत्ताक दुनियाँ अछि आ दोसर दिस आम लोकक। गड़बड़ दुनू अछि।”

उमाकान्त-

“से की?”

मिश्रीलाल बुझबैत बजला-

“पहिने पब्लिकेक बात कहै छिअ। राशनक वस्तु चीनी-मटियातेल तँ हिसाबेसँ भेटैए। नामे छिऐ कोटा। जँ मनमाफित भेटैत तँ खुल्ला बजार रहितै, से तँ नइ अछि। गाममे किछु एहेन-एहेन रंगबाज सभ बनि गेल अछि जेकरा खाइ-पीबैले नै देबहक तँ भरि दिन अपनो आ अनको उसका-उसका रग्गड़े करैत रहतह। रग्गड़केँ तँ कोनो सीमा नै होइ छइ। जँ कहीं गोटे दिन लाठीए-लठौवैल भऽ जेतह तहन तँ लेनीक देनी पड़ि जेतह। दू पाइ कमाइले धन्धा करबह आकि कोट-कचहरीक फेड़मे पड़बह। बुझिते छहक जे कोट-कचहरी लोकेक पाइपर ठाढ़ अछि। ओइ साला रंगबाज सभकेँ की अछि। अपने किछु करतह नइ आ अनका काजमे हरिदम टाँगे अड़ौतह। गामक उत्पातसँ लऽ कऽ थाना-पुलिस, कोट-कचहरीक दलाली भरि दिन करैत रहतह। आब तोंही कहह जे बरदाश हेतह? नीक लोक-ले ऐ दुनियाँमे केतौ जगह नइ अछि। ओइ साला सभकेँ की छै, भरि दिन ताड़ी-दारू पीब ढहनाइत रहैए। ने छोट-पैघक विचार छै आ ने गारि-मारिक। तैपर सँ पंचायतक मुखियो आ वार्डो-मेम्बर सभकेँ कमीशन चाहबे करिऐ। पब्लिको तेहने अछि। देखबहक जे केतेक एहेनो परिवार अछि जेकरा कोटाक वस्तुक जरूरत नइ छै जेना चीनी। मुदा ओहो कोटासँ चीनी उठा दोकानमे किछु नफा लऽ कऽ बेच लइए। जहन कि किछु परिवार एहेनो अछि जेकरा कोटाक वस्तुसँ खर्च नै पुरै छइ। अपनो आँखिसँ देखबहक जे दस-बीस कप चाह आने पीबै छइ। की ओकरा सभकेँ फाजिल नै देबहक? जखने एक गोरेकेँ फाजिल देबहक तँ दोसराक हिस्सा कटबे करत। एहेन स्थितिमे डीलरे की करत। आखिर ओहो तँ समाजेक लोक छी किने...।”

उमाकान्त-

“सभ गोरे तँ कोटा उठैबतो नै हेतइ?”

मिश्रीलाल-

“हँ, सेहो होइए। मुदा ओ तहन होइए जहन कोटाक वस्तुक दाम आ खुल्ला बजारक दाममे अन्तर नै रहैए। मुदा जहन दुनूक दाममे अन्तर रहैए तहन जेकरो ने अपना पाइ रहै छै ओहो दोकानदार सभसँ अदहा-अदही नफापर पाइ लऽ कऽ समान उठा लइए आ बेच लइए। तेतबे नहि, ओहो चाहतह जे किछु फाजिले कऽ समान भेटए।”

मुँह बिजकबैत उमाकान्त बाजल-

“तब तँ बड़ ओझरी अछि।”

उमाकान्तक सोचकेँ गहराइ दिस जाइत देख मुस्कियाइत मिश्रीलाल-

“बौआ, एतबेमे छगुन्ता लगै छह। ई तँ एक दिसक बात कहलियह। अहूमे केते ओझरी छुटिए गेलह। जँ सेरिया कऽ सभ बात कहबह तँ सैंकड़ो ओझरी आरो अछि। आब सुनह ऑफिस, बैंक आ एफ.सी.आइ. गोदामक सम्बन्धमे। दौग-बरहा जे करए पड़तह ओकरा छोड़ि दइ छिअ। किएक तँ मोटा-मोटी यएह बुझह जे एक दिनक काजमे पनरहो दिनसँ बेसीए लगतह। जइमे समैक संग पच्चीस-पचास पौकेटो खर्च हेबे करतह।”

उमाकान्त-

“तब तँ बड़ लफड़ा अछि?”

मिश्रीलाल-

“लफड़ा की लफड़ा जकाँ अछि। जखने ब्लौक पएर देबहक आकि गीध जकाँ चारू-भरसँ अफसरसँ लऽ कऽ चपरासी धरि, नोंचए लगतह। कियो कहतह जे चाह पिआउ तँ कियो कहतह पान खुआउ। कियो कहतह सिगरेट पियाउ तँ कियो मिठाइ खुआउ। सुनि-सुनि मन मौहुरा जेतह। मुदा की करबहक। भीखमंगोसँ गेल-गुजरल चालि देखबहक। जेना अपना दरमाहा भेटते ने होइ। मुदा डीलरे की करत। अगर जँ सभकेँ खुशी नै राखत तँ काजे लटपटेतै। काजो तेहेन अछि जे एक्के टेबुलसँ नै होइ छइ। जेते टेबुल तेते खर्च। ..अखन हमहू औगताएल छी तँए नीक-नहाँति नै कहि सकबह। देखते छहक जे रजिस्टर तैयार करै छी, ब्लौक जाएब। मुदा तैयो एक-दूटा बात कहि दइ

छिअह। सबहक तड़ी-घटी ने हम बुझै छिऐ।”

उमाकान्त-

“कनी-कनी सबहक बात कहि दिअ?”

मिश्रीलाल-

“औगताएलमे की सभ बात मनो पड़ै छइ। मुदा जे मन पड़ैए से कहि दइ छिअ। पहिने बैंकक सुनह। कोरियापट्टीमे दुनियाँलाल डीलर अछि। वेचारा बड़ मुँहसच्च। जहिना-जहिना समान बिकाएल रहै तहिना-तहिना पाइ रखने रहए। खुदरा समानक बिकरी तँए खुदरा पाइ। ऐगला कोटा-ले जहन बैंकमे जमा करए गेल तँ खुदरा पाइ देख बैंकमे लेबे ने केलकै। कहलकै जे ओते हमरा छुट्टी अछि जे भरि दिन तोरे पाइ गनैत रहब।

भरि दिन वेचारा छटपटा कऽ रहि गेल। बैंकसँ निकलबो ने करए जे पौकेटमार सभ ने कहीं पाइ उड़ा दिअए। दोसर दिन आबि कऽ हमरा कहलक। तामस तँ बड़ उठल। किएक तँ जेना मोटका पाइ सरकारक होइ आ खुदरा नहि! जहन पाइयेक लेन-देन बैंकमे होइ छै तँ गनैले स्टाफ राखह। मुदा की करितिऐ। दोसर दिन गेलौं। मनेजरकेँ कहलिऐ। तहन दू प्रतिशत कमीशनपर फरियाएल। आब तोंही कहह जे ई दू प्रतिशत कोन बिलमे चलि गेल? तहिना दोसर बात लएह- सप्लाइ इन्सपेक्टरक। इन्सपेक्टरक बदली भेल। नव इन्सपेक्टर बुझि पनरह-बीसटा डीलर ओकरा पाइ नै देलकै।

ओना पचास रूपैए प्रति डीलर प्रति मास इन्सपेक्टरकेँ दइए। सभकेँ मनमे भेलै, नव हाकिम छैथ तँए छह मास तँ इमानदारी रखबे करता। ले-बलैया! जहाँ डीलर दोसर कोटाक सभ समान उठौलक आकि पराते भेने बिसनाथ डीलर ऐठाम पहुँच गेल! बिसनाथोकेँ कोनो डर मनमे नहि। किएक तँ समान ओहिना पड़ल छेलइ। घरपर अबिते इन्सपेक्टर चीनी काँटा करैले बिसनाथकेँ कहलकै। बिसनाथो तैयार भऽ काँटा करए लगल। पाँचो बोरा मिला कऽ चौदह किलो चीनी कमि गेलइ...।”

बिच्चेमे उमाकान्त-

“किए, चीनी तौल कऽ नइ नेने रहइ?”

मिश्रीलाल-

“ई एफ.सी.आइ. गोदामक खेल छिऐ। एफ.सी.आइ. गोदाम तँ ब्लौके-

ब्लौके ने अछि। तँए देखबहक जे डीलर सबहक नम्मर लगल अछि। सभकेँ औगताइ करैत देखबहक। किएक तँ अपन टाएर गाड़ी तँ सभ डीलरक रहै नइ छइ। अधिक डीलर भड़ेपर गाड़ी लऽ जाइए। तँए मनमे होइत रहै छै जे जेते जल्दी समान हएत तेते कम भाड़ा लगत, तँए कियो समान तौलबैत नै अछि। हँ, जँ कियो पच्चीस रूपैए बोरा मनेजरकेँ दऽ देने रहलै ओकरा तँ नीक समानो आ पुरल बोरो देलक आ जे पाइ नै देने रहल ओकरा समानो दब आ घटल बोरो देलक। चोर-पर-चोर अछि!”

क्षुब्ध होइत उमाकान्त बाजल-

“हद लीला सभ अछि।”

मिश्रीलाल-

“आब मार्केटिंग अफसर एम.ओ.क बात सुनह। अखुनका जे एम.ओ. अछि ओ पिआक अछि। ओना काज करैमे भुते अछि। रस्तो-बाटमे मोटर साइकिल लगा फाइलपर लिखि दइए, मुदा ओहिना नहि। पहिले एक बोतल पिआ देबहक, तखन।”

उमाकान्त-

“अफसर भऽ कऽ रस्ता-बाटपर बोतल पीबैए?”

ठहाका मारि हँसि मिश्रीलाल-

“बौआ, तूँ गाम-घरक बात बुझै छहक। गाम-घरमे जे छोट-पैघ आकि इज्जत-आबरूक विचार अछि ओ केतए पेबह। मुदा तैयो ओकरामे दूटा गुण जरूर छइ। पहिल गुण छै जे आन कोनो स्त्रीगण दिस नै तकैए। आ दोसर गुण छै जे केकरोसँ एक्को पाइ नै लइए। मुदा ऐसँ पहिलुका एम.ओ. जे रहए ओ भारी पइ-खौक। सभ काजक रेट बनौने रहए। जे सभ बुझइ। तँए जेकरा जे काज रहै ओ ओइ हिसाबसँ पाइ दऽ दइ आ लगले काज करा लिअए।”

मुस्कियाइत उमाकान्त-

“तब तँ पक्का नटकिया सभ अछि।”

मिश्रीलाल-

“नटकिया कि नटकिया जकाँ अछि। रंग-बिरंगक चोर सभ पसरल अछि। कियो धनक चोर अछि तँ कियो धर्मक। कियो बुधिक चोर अछि तँ कियो विवेकक। केते कहबह। तेसराक सुनह। अन्दाज करीब पचपन छप्पन

बर्खक उमेर ओकर रहइ। मुदा फीट-फाटमे जुआनक कान कटैत। जेहने हीरोकट कपड़ा पहिरैत तेहने हिप्पीकट केश रखैत। रंग-बिरंगक तेल आ सेंट लगबै। हरिदम ऊपरका जेबीमे ककही देखबे करितहक। रातियोमे कएक बेर केश सीटइ। चौबीस घन्टामे दू बेर दाढ़ी बनबै। ओ एम.ओ. भारी नरचोप, जेहने अपने तेहने बहुओ। दिन भरिमे पच्चीसो बेर कपड़ा साड़ी-ब्लाउज आ जूत्ता-चप्पल बदलै। केशमे केते रंगक क्लीप लगबै तेकर ठेकान नहि। भरि दिन रिक्शापर ऐ डेरासँ ओइ डेरा आ ऐ बजारसँ ओइ बजार घुमिते रहै छल। संयोगो ओकरा नीक भेटलै। एक्के बेर बी.डी.ओ., सी.ओ.क बदली भऽ गेलइ। ओकरे दुनू गोरे चार्ज दऽ कऽ गेल। ओही बीच शिक्षा मित्रक भेकेन्सी भेल। लड़की सभकेँ आरक्षण भेटलै। जइमे जाति प्रमाणपत्रक जरूरत पड़इ।"

अपसोच करैत मिश्रीलाल आगू बाजल-

"बौआ की कहबह, ओइ सालाक डेरा बेश्यालय बनि गेल! कखनो ब्लौक ऑफिसमे नै बैइसै। जहन बैसबो करै तँ आन-आन कागत देखै मुदा एक्कोटा जाति प्रमाणपत्रपर हस्ताक्षर नै करइ।"

बिच्चेमे उमाकान्त बाजल-

"परिवारक कियो किछु ने कहइ?"

"स्त्रीक विषयमे तँ कहिए देलियह। जेठकी बेटी बी.ए.मे पढ़ैत रहइ। ओकरो चालि-ढालि बापे-माए जकाँ। कौलेजेक एकटा छौंड़ा जे आदिवासी क्रिश्चन छल तेकरा संग भागि गेल।"

उमाकान्त-

"बाप-माएकेँ लाज नइ भेलइ?"

"लाज तँ तेहेन भेलै जे राता-राती ऐठामसँ भागल।"

"अहूँकेँ बहुत काज अछि आ हमरो मन भरि गेल। आखिरीमे एकटा बात बुझा दिअ।"

मिश्रीलाल-

"की?"

उमाकान्त-

"अहाँ केना अप्पन प्रतिष्ठा समाजो आ ऑफिसोमे बना कऽ रखने छी?"

मिश्रीलाल मुस्कियाइत-

"समाजमे जेकरा ऐठाम सराध, बिआह, उपनैन, मूड़न, भनडारा वा आन कोनो तरहक काज होइ छै तँ ओकरा हम जरूर चीन्नियोँ आ मटियो तेलक पूर्ति कैये दइ छिऐ। भलेँ अपना लग नहियोँ रहल तैयो जेतए-तेतएसँ आनि पुराए दइ छिऐ। जइसँ समाजक सभ खुशी रहैए। ऑफिसक बात तँ पहिने कहि देलियह।"

उमाकान्त-

"हमरा की करक चाही? किएक तँ जइ हिसाबे अहाँ कहलौं तइसँ हम्मर मन भटैक रहल अछि।"

मिश्रीलाल-

"बौआ, जहन लाइसेंस बना लेलह तहन कम-सँ-कम एक खेप समान उठा कऽ बाँटि लएह। जइसँ समाजोक चालि-ढालि आ ऑफिसोक चालि-ढालि देख लेबहक। बेवहारिक ज्ञान भऽ जेतह। बेवहारिके ज्ञान असली ज्ञान छिऐ। अखन हम एते मदैत जरूर कऽ देबह जे तोरा केतौ अड़चन नै हेतह। मुदा दोसर खेपक भार हम नै लेबह। किएक तँ बुझिते छहक जे बिलाइ जे मूससँ दोस्ती करत तँ खाएत की? तोरो सीखैक अवसर भेट जेतह।"

उमाकान्त-

"बड़बढ़ियाँ! जहिना अहाँ कहलौं तहिना करब।"

मिश्रीलाल-

"बाउ, आब तँ हम बुढ़ भेलौं। जहिया हम सोल्हे बर्खक रही तहिए-सँ डीलरी करै छी। मुदा पहिलुका आ अखुनकामे अकास-पतालक अन्तर भऽ गेल अछि। जेते धन आ शिक्षाक प्रसार भेल जा रहल छै ओते घटिया मनुख सेहो बढ़ि रहल अछि। पहिने इमानदार लोक बेसी छल मुदा आब आँगुरपर गनए पड़तह। हम तँ डीलरीमे रमि गेलौं। सभ घाटक पानि पिनाइ सीखि नेने छी तँए नीक छी।"

उमाकान्त-

"चलैत-चलैत किछु..?"

"जहिना आमक गाछ होइ छै जे आमक आँठीसँ जनमैए तहिना तँ मनुखोक होइ छइ। दुनियाँमे जेते मनुख अछि, सभ तँ मुरूखे भऽ कऽ जन्म

लइए। मुदा ऐठाम जेकरा जेहेन परिवार, समाज आ वातावरण भेटै छै ओ ओहेन बनैए। जहिना आमक छोट-छोट सरही गाछकेँ नीक-नीक कलमी आमक गाछक डारिमे बान्हि कलम लगा नीक-नीक आम बनौल जाइए। तहिना मनुखोक होइत। मुदा नीक परिवार, नीक समाज ऐछे केतेक। अधिकांश तँ गेले-गुजरल अछि। ने सभकेँ भरि पेट खेनाइ भेटै छै आ ने नीक बात-विचार। तहन नीक मनुख बनत केना? जाधैर नीक मनुख नै बनत ताधैर नीक समाज केना बनत? तहन तँ जएह अछि तइमे अपनाकेँ जेते नीक बना जीब सकी, वएह संतोखक बात। तहूँ अखन सादा कागत जकाँ साफ छह, तँए हम चाहब जे गन्दा नै हुअ। जेहेन विचार, हाथ होइत कर्म बनि निकलतह तेहेन जिनगी हेतह। कियो शरीरांतकेँ मृत्यु बुझैए आ कियो आत्माक हननकेँ। मनुखमे असीम शक्ति छिपल छै, ओकरा जगबैक अछि, जे हमहूँ सेरिया कऽ नहियेँ बुझै छिऐ।"

जहिना तेज हथियार हाथमे एलासँ सक्कत-सक्कत वस्तु काटैक हूबा बनि जाइत तहिना उमाकान्तोकेँ भेल। विचार केलक जे आब बैलगाड़ीक जुग नइ रहल। मशीनक जुग आबि गेल तँए हमहूँ अपना हाथसँ इन्जिने चलाएब।

❍

शब्द संख्या : 3655

रिक्साबला

"ओ रिक्शा, ओ रिक्शा।"

कनी फरिक्केसँ जीबछ जोरसँ बाजल।

हाथमे बम्बैया बैग, जिन्स पेन्ट आ शर्ट पहिरने, दहिना हाथमे चौड़गर घड़ी। फुल जुत्ता, मौजा सेहो लगौने। बम्बैए हिप्पी कट केश, बुच्चा मोछ आ आँखिपर चश्मा। रिक्शाबला-बचनू अपन ताशक संगीक संग ताश खेलैत। ताशो ओहिना नइ खेलैत, एक सेटपर चारू गोरेक चाह-पानक खर्च, हारलाहा पार्टीकेँ देबए पड़ैत। पाँचटा लाल ;बचनूक जोड़ाकेँ, तँए एक्कोटा सेठ होइमे बाँकी। मात्र एकटा लाल हएत, चाह-पानक जोगार लगि जाएत। तँए एकाग्र भऽ बचनू लालक पाछू दिमाग लगौने। ..ताशक चौखरी लग आबि जीबछ दुइभेपर बैग रखि रूमालसँ मुँह लग होंकए लगल। कनी काल होंकि रिक्शाबलाकेँ चरियबैत कहलक-

"हौ भाय, हमरा बहुत दूर जाइक अछि, झब-दे चलह?"

ताशपर सँ नजैर उठा, जीबछ दिस देख बचनू बाजल-

"भाय, केहेन सुन्दर ठंढा छै, कनी सुसता लएह। तोरो देखै छिअ जे पसीनासँ तर-बत्तर भेल छह। हमरो एक्कोटा लाल बाँकी अछि, दू-तीन खेपमे भइए जाएत। अगर जँ अपन लाल नहियोँ हएत आ विरोधीए-केँ दूटा कारी भऽ जेतै तैयो जीत हेबे करत।"

बचनूक बात सुनि जीबछ शर्टो आ गंजियो निकालि कऽ रौदमे पसाइर देलक। आसीन मास। तीख रौद। तैपर सँ गुमकी सेहो। रेलबे स्टेशनसँ जीबछ पएरे आएल। किएक तँ स्टेशनक बगलेमे तेहेन हच्चा बाढ़िमे बनि गेल जे रिक्शो आ टमटमोक रस्ता बन्न भऽ गेलइ। पएरे लोक कहुना-कहुना थाल-पानिमे टपैए। बाढ़ि तँ तेहेन आएल छेलै जे जँ स्टेशन ऊँचगर जमीनपर नै रहैत तँ ओहो भँसि कऽ केतए-कहाँ चलि जाइत। मुदा तैयो स्टेशनक पुबरिया गुमती, पुल आ आध किलोमीटर रेलबे लाइन दहाइए गेल। तैसंग, रेलबेक दच्छिन तेहेन मोइन

फोड़ि देलकै जे गाड़ियो बन्न भऽ गेल। डेढ़ मासमे पुलो बनल आ गाड़ियो चलब शुरू भेल।

भरि गाममे बचनूए-टाकेँ रिक्सा। जइसँ कोनो तरहक प्रतियोगिता नहि। प्रतियोगिता तँ शहर-बजारमे होइए, जैठाम सैंकड़ो-हजारो रिक्शा अछि। अनेरो रिक्शाबला सभ रिक्शापर बैस, एमहरसँ ओमहर घुमबैत बजैत रहैए-

"कोट-कचहरी.., बैंक.., पोस्ट ऑफिस.., कौलेज.., स्कूल.., स्टेशन.., बस स्टेण्ड.., अस्पताल.., बड़ा बजार.., सिनेमा चौक.., डाकबंगला.., भगत सिंह चौक.., अजाद चौक...।"

मुदा से तँ गाममे नहि। तँए कि गामक रिक्शाबलाकेँ कमाइ नइ होइए? खूब होइए। एक तँ गामक कच्ची रस्ता, तैपर सँ जेतए-तेतए टुटलो आ गहुम पटौनिहार सभ कटनौं। एहेन सड़कमे दोसर कोन इंजनबला सवारी सकत, तँए गामक सवारी रिक्शा। जइसँ गामक बेटी-पुतोहुक बिदागरी निमहैत। ..धैनवाद तँ रिक्शेबलाकेँ दी जे वेचारा छातीपर भार उठा, कखनो चढ़ि कऽ तँ कखनो उतैर कऽ पार लगबैत कठिन मेहनतक पाइ कमाइत।

अखन धरि ताशक खेल नै फरियाएल। किएक तँ कखनो लाल कमि जाए तँ कखनो कारी। ..धड़फड़ाइत जीबछ फेर बाजल-

"भाय, ताश नै फरियेतह। बहुत दूर जाइक अछि, झब-दे चलह। नहि तँ अन्हार भेने तोरो दिक्कत हेतह आ हमरो अबेर भऽ जाएत। कहुना-कहुना तँ ऐठामसँ सुग्गापट्टी पाँच कोस हएत।"

बचनू-

"हँ, से तँ पाँच कोससँ कम नहियेँ हएत। मुदा तइसँ की। ई की कोनो शहर-बजार छिऐ जे रातिक कोन बात जे दिने देखार पौकेटमारी, डकैती, अपहरण होइ छइ। ने रस्तामे भीड़-भड़क्का आ ने कोनो चीजक डर। निचेनसँ जाएब।"

गामक बीचमे चौबट्टी। जैठाम पान-सातटा छोट-छोट दोकान। जइसँ गामोक आ आनो गामक लोक चौक कहए लगल। चौकक पछबरिया कोणपर एकटा खूब झमटगर पाखैरक गाछ अछि जैपर हजारो चिड़ैक खोँता छइ। दिन भरि चिड़ै सभ चराउर करए बाहर जाइत आ गोसाँइ निच्चाँ होइते पतियानी लगा-लगा गाछपर आबए लगैत। केतेको रंगक चिड़ै, तँए सभ जातिक चिड़ै

अपन-अपन संगोर बना-बना अबैत। तेतबे नहि, गाछक डारियो बाँटि नेने अछि। जहिना एक जातिक चिड़ै एक डारिपर खोँता बनौने अछि तहिना दोसर-तेसर दोसर-तेसर डारिपर। तँए एक जातिक चिड़ैसँ दोसर जातिक चिड़ैक बीच ने कहा-कही होइत आ ने झगड़ा-झंझट। ओना, अपनामे एक जातिक बीच नीक-अधलाक गप-सप्प जरूर होइ। कथा-कुटुमैतीसँ लऽ कऽ रामायण-महाभारतक खिस्सा-पिहानी सेहो होइ। तैसंग पान-पुनक चर्चा सेहो करैत आ अधला काज केनिहारकेँ डाँटो-फटकार दैत आ जुरिमनो करैत। ..ओही गाछक निच्चाँमे बाटो-बटोही रौदमे ठंढाइत आ पानि-बुनीमे सेहो जान बँचबैत आ ताशक चौखरी सेहो जमैत।

बचनूक बात सुनि जीबछ पेन्टक पैछला पौकेटसँ सिगरेटक डिब्बा आ सलाइ निकाललक। एकटा सिगरेट अपनो लेलक आ एकटा बचनूओंकेँ देलक। दुनू गोरे सिगरेट लगा, रिक्शापर चढ़ि विदा भेल। कनीए आगू बढ़ल कि बचनू जीबछकेँ पुछलक-

"भाय तूँ बम्बैमे रहै छह?"

"हँ"

"मन तँ हमरो बहू-दिनसँ होइए मुदा पलखैते ने होइए जे जाएब।"

"ओइठीम मन तँ खूब लगैत हेतह?"

"एँह भाय मन! की कहबह! जखैने डेरासँ निकलबह आकि रंग-बिरंगक छौड़ी सभकेँ देखबहक। उमेरगरो सभ जे कपड़ा लगौने रहतह से देखबहक तँ बुझि पड़तह जे कुमारिये अछि। मुदा छौड़ो सभ की ओइसँ कम अछि। एक तँ ओहिना छौड़ी सभ दामी-दामी कपड़ा पहिरने अछि आ सौंसे देह झक-झक करै छइ। तैपर सँ छौड़ो सभ करीक्का चश्मा पहिर लेतह आ निंगहारि-निंगहारि देखैत रहतह। चश्मो की कोनो एक्की-दुक्की रहै छइ। जखैने आँखिमे लगेबह आकि देहपर कपड़ा बुझिए ने पड़तह।"

"ओहेन चश्मा हमरा सभ दिस कहाँ छै, हौ।"

"एँह, ओइठीन विदेशी चश्मा सभ बिकाइ छै किने। देहातमे ओहेन चश्मा के कीनत।"

चौकसँ कनीए उत्तर एकटा ताड़ीक दोकान। चारि-पाँच कट्ठाक खजुरबोनी। बीच-बीचमे ताड़क गाछ सेहो। उतरे-दछिने रस्ता। पछबारि भाग

ताड़ी दोकान। ताड़ी दोकान देख जीबछ बचनूक पीठमे आँगुरसँ इशारा करैत रोकैले कहलक। बचनूकेँ मनमे भेलै, भरिसक पेशाब करत। रिक्शा रोकि उतैर गेल। जीबछ बाजल-

"भाय, ताड़ी दोकान देखै छिऐ। चलह दू घोंट मारि दिऐ, तहन चलब। हमहीं पैयो देबइ।"

ताड़ीक नाओं सुनि बचनू कहलक-

"ओना ताड़ी हमहूँ पीबै छी मुदा ताड़ी पीब कऽ ने रिक्शा चलबै छी आ ने ताड़ी पीनिहारकेँ रिक्शापर चढ़बै छी। तँए अखन ताड़ी-दारू बन्न करह। जहन घरपर पहुँचबह तहन जे मन हुअ से करिहह।"

"भाय, ओतए भेटत की नइ भेटत, अखन तँ आगूमे अछि।"

"तब अखन नै जाह। ताड़ी कीनि कऽ नेने चलह। गामेपर दुनू गोरे पीब लेब आ रातिमे रहि जैहह।"

"ऐठाम केतए रहब?"

"किए, हमरा घर-दुआर नै अछि। ओतै रहि कऽ राति बिता लिहह। भोरे पहुँचा देबह।"

"अच्छा, ठीक छै, चलह।"

दुनू गोरे ताड़ी दोकान दिस बढ़ल। दोकान लग पहुँचते जीबछ घैलक-घैल ताड़ी फेनाइत देखलक। घैलक पतियानी देख मने-मन सोचए लगल जे अपना होइ छेलए जे शहरे-बजारक लोक ताड़ी पीबैए। मुदा से नहि, गामो-घरक लोक खूब पीबैए।

पच्चीस-तीस गोरे दोकानक भीतरो आ बाहरो ताड़क पातक चटाइपर बैस ताड़ियो पिबैत आ चखनो खाइत। कियो-कियो असगरे पिबैत आ कियो-कियो दू-दू, तीन-तीन, चारि-चारि गोरेक संगोरमे, कियो खिस्सा कहैत, तँ कियो गीत गबैत आ कियो अन्ना-गाहिंस गारिये पढ़ैत। सभ उमंगमे। जहिना ताड़ीक फेन उधियाइत तहिना सबहक मन। ..ताड़ीक खटाइन गन्ध लगिते जीबछकेँ होइ जे कखन दू गिलास चढ़ा दिऐ।

ताड़ी दोकानसँ कनी हटि दूटा बुढ़िया चखनाक दोकान पसारने। एकटा दोकानमे मुरही, घुघनी, कचड़ी आ दोसरमे चारि पाँच रंगक माछक तरूआ। ओंगरीक इशारासँ मझोलका डाबा देखबैत जीबछ बचनूकेँ कहलक-

"भाय, दुइए गोरे पीनिहार छी, तँए यएह डाबा लऽ लएह।"

बचनू-

"पहिने दाम पुछि लहक?"

डाबाक कान पकैड़ जीबछ पासीकेँ दाम पुछलक। तोड़-जोड़ करैत पैंतीस रूपैआमे पटलै। पेन्टक जेबीसँ नमरी निकालि जीबछ देलक। नमरी पकड़ैत दोकानदार बाजल-

"ताड़ीए टाक दाम कटै छिअ। डाबा घुमा दिहह।"

"बड़बढ़ियाँ।"

कहि बचनू डाबा उठा लेलक। डाबाकेँ चखना दोकानक आगूमे रखि बचनू मने-मन सोचए लगल जे औझुका तँ कमाइयो ने भेल। धिया-पुता की खाएत। से नहि तँ तेना कऽ मुरही-कचड़ी कीनि ली जे सभ तूरकेँ भऽ जाएत।

जेहने झुर कचड़ी बनौने तेहने माछक कुटिया। एकदम लाल-बुन्द। माछक कुटिया देख जीबछकेँ मुँहमे पानि आबए लगलै। मन चटपटाए लगलै। बचनूकेँ कहलक-

"भाय, केते चखना लेबह?"

मने-मन बचनू हिसाब जोड़ए लगल। दू-दूटा कचड़ी आ दू-दूटा माछ दुनू बच्चा-ले आ अपना सभ-ले चारि-चारिटा। किएक तँ गरम चीज होइ छै, तँए बेसी अपकारे करत...। बाजल-

"भाय, एक किलो मुरही, एक किलो घुघनी, सोलहटा कचड़ी आ सोलहटा माछक कुटिया लऽ लएह।"

सएह केलक। ताड़ीक डाबा उठा जीबछ विदा भेल। रिक्शा लग आबि बचनू चखनाबला मोटरी सेहो जीबछेकेँ दऽ देलक।

चौकक रस्ता छोड़ि बचनू घर दिसक रस्ता धेलक। घरो लगेमे। दुइए हन्नाक घर बचनूकेँ। रिक्शा रखैले एकचारी भनसे घरक पँजरामे देने। एकटा घरमे भानसो करए आ जरनो-काठी राखए। दोसरमे सभतूर सुतबो करए आ चीजो-बौस राखए। अपना दरबज्जा नहि। मुदा घरक आगूमे दस धूरक परती, जैपर सरकारी चबुतरा बनौल। ..घर लग अबिते बचनू रिक्शा ठाढ़ कऽ बाढ़ैन आनए आँगन गेल। बचनूकेँ देख घरवाली कहलकै-

“आइ जे भाड़ा नै कमेलौं, तँ राति खएब की? अपना दुनू गोरे तँ ओहुना सुति रहब मुदा बच्चा सभ केना रहत?”

बिनु किछु उत्तर देनहि बचनू बाढ़ैन लऽ अँगनासँ निकैल गेल। चबुतराकेँ दोहरा कऽ बहारलक। चबुतराक बनाबट सुन्दर तँए बहारिते चमकए लगल। चबुतराक चमकी देख जीबछ बाजल-

“भाय, जेहने मजगूत चबुतरा छह तेहने सुन्दरो, संगमरमर जकाँ चमकै छह।”

जीबछक बात सुनि बचनूकेँ ओ दिन मन पड़लै जइ दिन ठीकेदारकेँ गरियौने रहए। मुस्कियाइत बाजल-

“भाय, ओहिना एहेन सुन्दर बनल अछि। जे ठीकेदार बनबैक ठीकेदारी नेने रहए ओ नमरी चोर। तीन नम्बर ईंटा आ कोसीकातक बालुसँ बनबए चाहैत रहए। हम गामपर नै रही। जहन एलौं तँ देखलिऐ। देखते सौंसे देह आगि लगि गेल। मुदा ऐठाम रहए कियो ने। दोसर दिन न्योँ कोरए ठीकेदारो आ जनो आएल। हमरा तँ गरमी चढ़ले रहए। जखने कोदारि लगौलक कि जनक हाथसँ कोदारि छीनि ठीकेदारकेँ गरियाबए लगलौं। जहाँ गारि पढ़लिऐ आकि ठीकेदारो गहुमन साँप जकाँ हुहुआ कऽ उठल। जहाँ ओ जोरसँ बाजल आकि हमहूँ गरिऐबते दुनू हाथे कोदारिक बेंट पकैड़ कहलिऐ, ‘सार न्योँ लइसँ पहिने तोरे काटि देबह।’ मुदा सभ पकैड़ लेलक। डरे ठीकेदारो थरथर कँपए लगल। तहन जा कऽ एक नम्मर सभ किछु, ईंटा-सिमटी-बाउल आनि बनौलक।”

जीबछ बाजल-

“बाह!”

बचनू-

“कनी ऊपर आबि कऽ देखहक जे की सभ बनबौने छी। देखहक ई खेलाइले पच्चीसी घर छी, कौड़ीसँ खेलाएल जाइए। मुदा ई खेल समैया छी। एकर चलती खाली आसिनेटा मे रहैए। कोजगरा दिन तँ लोक भरि राति खेलते रहैए।”

दोसरकेँ देखबैत-

“ई मुगल पैठानक घर छी। हमरा गाममे लोक एकरा ‘मुगल-पैठान’ कहै छै मुदा आन-आन गाममे एकरा ‘कौआ-ठुट्ठी’ कहै छइ। गोटीसँ खेलाएल

जाइए।”

तेसर घर देखबैत-

“आ ई बच्चा सबहक छिऐ। एकरा ‘चैरखी-चैरखी’ घर कहैए। झुटकासँ खेलल जाइए।”

जीबछ बाजल-

“हौ भाय, तूँ तँ बड़ खेलौड़िया बुझि पड़ै छह।”

बचनू-

“हौ, जिनगीमे आउर छै की? खाइत-पिबैत, हँसी-चौल करैत बिता ली। सभ दिन कमेनाइ, सभ दिन खेनाइ। कोनो हर-हर-खट-खट नहि। धिया-पुताले तँ हम अपने स्कूल खोलि देने छिऐ। खेती-पथारीक काजसँ लऽ कऽ रिक्शा चलौनाइ, ईंटा बनौनाइ सभ लूरि हमरा अछि। धिया-पुता तँ देखिए-कऽ सीखि लेत।”

ओना, जीबछ बचनूक गपो सुनैत मुदा मन ताड़ीक खटाइन गन्धपर अँटकल। होइ जे कखन दू गिलास चढ़ाएब। नहि तँ कम-सँ-कम आँगुरमे भीरा नाकक दुनू पुड़ामे लगा ली। ..तैबीच जीबछकेँ बचनू कहलक-

“भाय, ताबे तूँ सभ किछु सेरियाबह, हम घरमे रिक्शा रखि दइ छिऐ। काजसँ निचेन भऽ जाएब।”

जीबछ सभ समान सेरियाबए लगल। रिक्शाकेँ गुड़कौने बचनू एकचारीमे रखि आँगन जा दुनू बच्चो आ पत्नियोकेँ कहलक-

“दुनू बाटियो आ दुनू छिपलियो नेने चलू।”

कहि बचनू आगू बढ़ि गेल। पत्नीक मन खुशीसँ झूमि उठल। दुनू बच्चा दुनू बाटी नेने आगू बढ़ल। दुनू छिपली नेने पत्नी डेढ़िया लग ठाढ़ भऽ मुँहपर नुआ नेने कनडेरिये आँखिए दुनूकेँ देखैत। ..अपना दुनू गोरे-ले बचनू चारि-चारिटा तड़ल माछक कुटिया आ चारि-चारिटा कचड़ी आ तैसंग अदहा किलो करीब मुरही-घुघनी मिला कऽ रखि, दुनू बच्चाकेँ एक-एक कचड़ी, एक-एक माछक कुटिया आ दू-दू मुट्ठी मुरही-घुघनी मिला कऽ देलक। दुनू बच्चा देख कऽ चपचपा गेल। अपन-अपन बाटी बामा हाथे उठा दहिना हाथे खाइत विदा भेल। माए लग पहुँच दुनू बच्चा अपन-अपन बाटी देखए देलक। बाटीमे घुघनी-टुकड़ीबला मिरचाइकेँ देख माए कहलकै-

“बौआ, मिरचाइ बीछि कऽ रखि लिहँ, कड़ु लगतौ।”

तैबीच बचनू गमछाक एक भागमे मुरही-घुघनीकेँ मिला, चारि-चारिटा कचड़ी आ चारि-चारिटा माछक कुटिया फुटा, दुनू गोरे-ले रखलक। चबुतरेपर सँ बचनू घरवालीकेँ हाक पाड़ैत बाजल-

“ई सभ लऽ जाउ।”

अदहा मुँह झँपने बचनूक सरधा चबुतरापर पहुँच दुनू छिपली बचनूक आगूमे रखि देलक। एकटा छिपलीमे मुरही कचड़ी आ दोसरमे घुघनी-माछ बचनू दऽ देलक। झुर माछक तरूआ देख सरधाक मन हँसए लगलै। मनमे एलै, कौल्हुका जलखै तकक ओरियान भऽ गेल। दुनू छिपली तरा-ऊपरी रखि दुनू हाथसँ छिपली उठा आँगन विदा भेल।

एमहर जीबछ आ बचनू दुनू भाग बैस बीचमे ताड़ीक डाबा, गिलास आ चखना रखलक। दुनू गिलासमे जीबछ ताड़ी ढारि, आगूमे रखि आँखि मूनि कऽ ठोर पटपटबैत मंत्र पढ़ए लगल। कनी काल मंत्र पढ़ि, आँखि खोलि तीन बेर ताड़ीमे आँगुर डुबा निच्चाँमे झाड़ि बाजल-

“हुअ भाय, आब हुअह।”

छगाएल दुनू, तँए एक लगाइते तीन-तीन गिलास पीब लेलक। मन शान्त भेलइ। शान्त होइते जीबछ सिगरेट निकालि एकटा अपनो लेलक आ एकटा बचनूओंकेँ हाथमे देलकै। दुनू गोरे सिगरेट धड़ा पीबए लगल। पिबैत-पिबैत दुनूकेँ निशाँ चढ़ए लगल। निशाँ चढ़िते गप-सप्प करैक मन हुअ लगलै। एक मुट्ठी मुरही आ एक टुकड़ी माछ लऽ जीबछ मुँहमे लेलक। बचनूओं लेलक। मुँह महक घोंटि जीबछ बाजल-

“भाय, तोरा रिक्शा चला कऽ परिवार चलि जाइ छह?”

कचड़ी तोड़ि मुँहमे लैत बचनू उत्तर देलक-

“किए ने चलत। हमरा की कोनो कोठा बनबैक अछि जे गुजर नै चलत। तहूमे की हम रिक्शा बारहो मास थोड़बे चलबै छी। भरि बरसात चलबै छी। जहाँ बर्खा बन्न भेलै आकि महाकान्त भाइक चिमनीमे काज करै छी।”

“नोकरियो करै छहक?”

“एहेन नोकरी तँ भगवान सभकेँ देथुन। अलबेला लोक छैथ महाकान्त भाय। हुनकर खाली पूजीटा छिऐन। असली कारोबारी हम दू गोरे छी। सरूप

मुनसी आ हम। पजेबाक खरीद-बिकरीसँ लऽ कऽ कोइला मंगौनाइ, ओकर हिसाब-बारी केनाइ हुनकर काज छिऐन आ हमर काज पथेड़ीक देखभाल केनाइ, समैपर दमकल चला खाधिमे पानि देनाइसँ लऽ कऽ बजारसँ समान कीनि कऽ अननाइ आ चिमनीपर सँ घरपर दौग-बरहा केनाइ धरि हमर।”

“तब तँ खूब कमाइ होइत हेतह?”

“कमाइ जँ करए चाही तँ ठीके खूब हएत। मुदा से नइ करै छी। एक साए रूपैआ रोज होइए। ओ घरवालीक हाथमे दऽ दइ छिऐ। बाँकी खेलौं-पीलौं। किएक तँ नजाइज पाइ जँ घरमे देबै तँ ओइसँ भाभन्स नै हएत।”

दुनू गोरे डबो भरि ताड़ियो पीब गेल आ चखनो खा लेलक। ..एक दिस निशाँसँ दुनूक देह भँसियाइत, दोसर दिस जोरसँ पेशाब लगि गेलइ। उठैक मने ने होइ। मुदा पेशाबो जोरे होइत गेलइ। दुनू गोरे उठि कऽ पेशाब करए गेल। जाबे पेशाब करैले बैसै-बैसै ताबे बुझि पड़ै जे कपड़ेमे भऽ जाएत। मुदा कहुना-कहुना कऽ सम्हारि पेशाब करए बैसल। पेशाब बन्ने ने होइ। बड़ी कालक पछाइत पेशाबो बन्न भेलै आ भक्को खुजलै।

चबुतरापर दुनू गोरे आबि कऽ बैसल। बैसते जीबछ बाजल-

“भाय, हमरा डान्स करैक मन होइए।”

जीबछक बात सुनि बचनू पल्था मारि बैस, ठेहुनपर दुनू हाथसँ बजबए लगल। मुदा ओइसँ अवाज नै निकलै, अवाज निकलै मुहसँ। जहिना-जहिना मुहसँ बोल निकलै तहिना-तहिना दुनू ठेहुनपर हाथ चलबै। तैबीच दुनू बच्चो चबुतरापर आबि थोपड़ी बजबए लगल। अँगनाक मुहथैरपर सरधो बैस कऽ देखए लगली। जीबछ डान्स करए लगल। थोड़े कालक पछाइत बचनूक मुँह दुखा गेलइ। मुदा जीबछ डान्स करिते रहल आ दुनू बच्चो थोपड़ी बजैबते रहल। जहिना बाढ़िक रेतपर हेलिनिहार चीत गरे सुति केतौ-सँ-केतौ भँसिया कऽ चलि जाइत तहिना बैसल-बैसल सरधाक मन भँसियाइत रहैन। तैबीच बचनू उठि कऽ आँगन गेल आ चैलची परहक चैल उठा, पानि फेक नेने आबि उल्टा कऽ रखि, दुनू हाथे चैलक पेनपर बजबए लगल। आँगुरमे औंठी रहबे करइ, लाजवाब बाजा। ..नचैत-बजबैत दुनू गोरे थाकि गेल। सुति रहल।

भोर होइते दुनू गोरे उठि, मुँह-हाथ धोइ रिक्सा लऽ विदा भेल।

ऐ बेर आसिन अपन चालि बदैल लेलक। किएक तँ आन साल अधहा

आसिनक पछाइत हथिया नक्षत्र चढ़ै छल से ऐ बेर नइ भेल। पहिने हथिये चढ़ल। दू दिन हथिया बीतला पछाइत आसिन चढ़ल। ओना बुढ़-बुढ़ानुसक कहब छैन जे दुर्गापूजामे हथिया पड़िते अछि, मुदा से नइ भेलइ। आसिनक इजोरिया पखक परीवकेँ दुर्गा पूजा शुरू होइत, जइमे हथियो नक्षत्र रहैत। ऐ बेर अमाबसिये दिन हथिया चलि गेल। तहिना बर्खोक भेल। जइ दिन आसिन चढ़ल ओइ दिन घनघनौआ बर्खा भेल आ तेकर पछाइत फुहियो ने पड़ल। झाँटक कोन गप। हथिया-ले ओरियौल जरनो-काठी आ अनो-पानि सबहक घरमे रहिए गेल। मुदा तैयो किसान सबहक मनमे खुशी नै कमल। किएक तँ जँ हथियामे धानक खेतमे ठेंगाक हूर गड़त तँ धान हेबे करत। मुदा किछु गोरेक मनमे शंका जरूर होइ जे निचला खेतमे ने पानि लागल अछि मुदा ऊपरका खेतक धान केना फुटत? किएक तँ ऊपरका खेतक पानि टघैर कऽ निचला खेतमे चलि गेल। किछु खेतक पानि काँकोड़क बोहैर देने तँ किछु खेतक पानि मूसक बिल देने बहि गेल। जइसँ बर्खाक तेसरे दिन ऊपरका खेत सभ सुखि गेल। ओना दशमीक मेलो देखनिहारक आ मेलामे दोकानो-केनिहारक मनमे खुशी। किएक तँ रूख-सुखमे नाचो-तमाशा जमत आ देखनिहारोक भीड़ जुटत। ओना पैछला सालक सभ छगाएल। किएक तँ जइ दिन सतमी मेला शुरू भेलै ओही दिन तेहेन झाँट आ पानि भेलै जे मेलाक चुहचुहीए चलि गेलइ।

सुखार समए रहने महाकान्त ओछाइनेपर पड़ल-पड़ल सोचए लगल। जहियासँ चिमनी शुरू केलौं तहियासँ एहेन समए नै पकड़ाएल छल। आन साल दियारीक पछाइत चिमनीक काजमे हाथ लगबै छेलौं, से ऐ बेर भगवान तकलैन। कहुना-कहुना तँ दियारी अबैत-अबैत दू खेप भट्ठा जरूर लागि जाएत। सरकारोक योजना नीक पकड़ाएत। एक दिस खरन्जाक स्कीम तँ दोसर दिस इन्दिरा आबासक घर। तेतबे नहि, स्कूल आ अस्पताल सेहो बनत। आ सेहो अपने गामटा मे बनत से नहि, आनो-आन गाममे बनत। सालो भरि ईंटाक महगीए रहत। ओते पुराइए ने पाएब। ..एते बात मनमे अबिते महाकान्तक मुहसँ हँसी निकलल। तखने पत्नी रागिणी बेड-टी नेने आबि चुप-चाप सिरमा दिस ठाढ़ भऽ पतिकेँ मुस्कियाइत देखली। पतिक मुस्की देख रागिणी मने-मन सोचए लगली, की बात छिऐ जे ओछाइनेपर पड़ल-पड़ल मुस्कुरा रहल छैथ। मुदा बिनु किछु बजनहि रागिणी टेबुलपर चाह रखि, ओरिया कऽ नाक पकैड़ डोला देलकैन। नाक डोलैबते महाकान्त उठि कऽ बैस रहला। आगूमे रागिणीकेँ ठाढ़ देख चौअन्नियाँ मुस्की दैत आँखिक इशारासँ पलंगपर बैसैले रागिणीकेँ

कहलक। पतिक मूड देख रागिणी ससरिये जाएब नीक बुझली।

महाकान्त आ रागिणी, संगे-संग कौलेजमे पढ़ने। जहिए दुनू गोरे बी.ए.मे पढ़ै छल तहिए दुनूक बीच प्रेम भऽ गेल। दुनूक सम्पन्न परिवारक। ओना पढ़ैमे दुनू ओते नीक नै जेते दुनूक रिजल्ट नीक होइ। दुनूकेँ मैट्रिको आ इन्टरोमे फस्ट डिविजन भेल रहइ। तेकर कारण मेहनत नहि पैरबी छल। नीक रिजल्ट दुआरे संगियो-साथीक बीच आ शिक्षकोक बीच दुनूक आदर होइत। दुनूक बीच सम्बन्ध बी.ए. आनर्सक क्लासमे भेलइ। किएक तँ आनर्समे कम विद्यार्थी रहने गप-सप्प करैक अधिक समए भेटइ। दुनूक बीच सम्बन्ध गप-सप्पसँ शुरू भेल। तेकर पछाइत किताबक लाथे डेरोमे एनाइ-गेनाइ शुरू भेल। सम्बन्ध बढ़िते गेलइ। संगे बजार बुलनाइ, किताब-कॉपी खरीदनाइसँ लऽ कऽ कपड़ा, जुत्ता-चप्पल खरीदनाइ धरि संगे हुअ लगलै। पछाइत मेटनियों शोमे सिनेमा देखए लगल। जइसँ आंगिक सम्बन्ध सेहो शुरू भऽ गेलइ। एकटा डबल बेडक रूम लऽ दुनू गोरे डेरो एकठाम कऽ लेलक। दुनूक बीचक सम्बन्धक चर्चा खाली विद्यार्थीए आ शिक्षके धरि नै रहि दुनूक पिता धरि पहुँच गेल। मुदा दुनूक पिताक दू विचारक तँए बुझियो कऽ दुनू अनठा देलैन। ..महाकान्तक पिता सुधीर जुआन-जहानक खेल बुझैत तँ रागिणीक पिता रमानन्द सम्पन्न परिवार आ पढ़ल-लिखल लड़िका बुझि बेटीक भार उतरब बुझैथ।

एम.ए. पास केलापर दुनूक बिआह भऽ गेल। सुधीरक परिवार एक-पुरखिया। अपनो भैयारीमे असगरे आ बेटो तहिना। ओना, बेटी चारिटा जे सासुर बसैत रहैन। परिवारक काजसँ महाकान्तकेँ कम्मे सरोकार। तँए भरि-भरि दिन चौखरी लगा जुओ खेलैथ आ शराबो पिबैथ। जे पितो बुझैत रहैन। महाजनीक कारोबार, तँए भरि दिन सुधीर रूपैए-क हिसाब-बारी आ धनेक लेन-देनमे व्यस्त रहै छला। ..महाकान्तक क्रियाकलाप देख एक दिन खिसिया कऽ सुधीर कहलखिन-

“बौआ, बड़ कठिनसँ धन होइ छइ। एना जे भरि-भरि दिन वौआएल घुमै छह तइसँ कएक दिन लछमी रहथुहुन। किछु उद्यम करह।”

पिताक बात महाकान्त चुपचाप सुनि लेलक, किछु बाजल नहि। बेटाकेँ चुप देख फेर सुधीर बजला-

“पाँच लाख रूपैआ दइ छिअ, चिमनी चलाबह। उत्तरबरियो बाधमे अपन बीस बीघा ऊँच जमीन छहे, ओहीमे चिमनी बना लएह।”

“बड़बढ़ियाँ।”

कहि महाकान्तो चुप भऽ गेल। पिताक मनमे रहैन जे जखने काजमे लगि जाएत तखने चालि-ढालि बदैल जेतइ। किएक तँ काज ओहेन कारखाना होइए जइमे मनुख पैदा लइत, मनुख मनुख बनैत।

आने साल जकाँ अपन काज बचनू करए लगल। पथेड़ीक देखभालसँ लऽ कऽ हाट-बजार आ महाकान्तक घरपर जा रागिणीकेँ ब्राण्डीक बोतल पहुँचबै धरि...।

महाकान्तो अपन आने साल जकाँ निअमित काज करए लगला। सबेरे आठ बजेमे जलखै खा मोटर साइकिलसँ चिमनीपर चलि अबैथ। चिमनीपर आबि तीनू गोरे–महाकान्त, सरूप, बचनू–भरि मन गाँजा पीबए। पीला पछाइत महाकान्त अपन कार्यालयमे सुति रहैथ। बारह बजेमे बचनू उठा दैन। उठिते महाकान्त मुनसीसँ रूपैआ मांगि बचनूकेँ ब्राण्डी किनैले बजार पठा अपने मुँह-हाथ धोइ खाइले घरपर विदा भऽ जाइथ। घरपर पहुँच धड़फड़ करैत खेनाइ खा पुन: घुमि कऽ चिमनीपर आबि सुति रहैथ, जे एक्केबेर चारि बजे उठैथ। बचनूओं बजारसँ शराब खरीद महाकान्तक घरपर जा रागिणीकेँ दऽ दइत...।

कौलेजे जिनगीसँ दुनू परानी–महाकान्त-रागिणी–शराब पिबैथ। ओना रागिणी ब्राण्डीए-टा पिबथिन मुदा महाकान्त सभ किछु–गाँजा, भाँग, इंग्लिश, पलोथिन, अफीम, ताड़ी इत्यादि जखन जे भेटल तखन सएह।

आइ जखन बचनू ब्राण्डीक बोतल लऽ रागिणी लग पहुँचल तँ बचनूकेँ देखते रागिणीक नजैरमे नव विचार उपकलैन। आन दिन रागिणी बचनूसँ बोतल लऽ रखि लैत रहैथ, मुदा आइ आदरसँ बचनूकेँ हाथक इशारासँ पलंगेपर बैसैले कहलखिन। बचनू बैसल। दुनू आमने-सामने।

रागिणी बजली-

“बहुत दिनसँ मनमे छेलए जे अहाँसँ भरि मन गप करितौं। मुदा अहाँ तेते धड़फड़ाएल अबै छी जे किछु कहैक मौके ने भेटैए।”

बचनू-

“गिरहतनी, हम तँ मुरूख छी, अहाँ पढ़ल-लिखल छी। अहाँक गप्पक जवाब हमरा बुते थोड़े देल हएत।”

रागिणी-

“कोनो की हम अहाँसँ शास्त्रार्थ करब जे जवाब देल नै हएत। अपन मनक बेथा कहब। जे सभकेँ होइ छइ।”

मनक बेथा-दे सुनि बचनू मने-मन सोचए लगल जे हम सभ गरीब छी, हरिदम एकटा-ने-एकटा भूर फुटले रहैए। मुदा रागिणी तँ सभ तरहेँ सम्पन्न छैथ। नीक भोजन, नीक रहन-सहन तैसंग दुनू परानी पढल-लिखल.., तहन की मनमे बेथा छैन जे हमरा कहती। मुदा तैयो मनकेँ असथिर करैत बचनू रागिणी दिस देखए लगल। मनमे उत्सुकतो बढ़ैत रहइ। मुदा रागिणीक चेहरामे डुमैत सुरूज जकाँ मलिनता अबैत गेलइ।

रागिणी बजली-

“हमरासँ अहाँ बहुत नीक जिनगी जीबै छी।”

अपन प्रशंसा सुनि बचनू गदगद भऽ गेल। आँखि चौकन्ना हुअ लगलै। मनमे ओहेन-ओहेन विचार सेहो उपकए लगलै जेहेन आइ धरि कहियो ने आएल छेलइ। मुदा किछु बाजए नहि।

बचनूकेँ चौकन्ना होइत देख रागिणी बाजए लगली-

“जहिना अकासमे चिड़ैकेँ उड़ैत देखै छिऐ तहिना अहूँ छी। मुदा हम पिजरामे बन्न चिड़ै जकाँ छी। जखन पढ़ै छेलौं तखन यएह सोचै छेलौं जे कोनो कौलेजमे प्रोफेसर बनि जिनगी बिताएब मुदा से सभ मनेमे रहि गेल। भरि दिन अँगनामे घेराएल रहै छी। ने केकरोसँ कोनो गप-सप्प होइए आ ने अँगनासँ निकैल केतौ जा सकै छी। तहूमे असगरूआ परिवार अछि। लऽ दऽ कऽ सासुटा छैथ, ने दोसर दियादनी आ ने कियो तेसर। भरि दिन पलंगपर पड़ल-पड़ल देह-हाथ दुखा जाइए। जाधैर पढ़ै छेलौं ताधैर दुनियाँ किछु आर बुझाइ छल। मुदा आब किछु आर बुझाइए। कखनो मन होइए तँ किछु पढ़ै छी नहि तँ टी.बी. देखैत रहै छी। पढ़िए कऽ की हएत। ने दोसरकेँ बुझा सकै छी आ ने अपना कोनो काज अछि, जइले सीखब। जानवरोसँ बत्तर जिनगी बनि गेल अछि। जहिना गाए-महींस भरि पेट खेलक आ खुट्टापर बान्हल रहल, तहिना भऽ गेल छिऐ। मुदा मनुख तँ मनुख छी। जाधैर अपना मनक बात दोसरकेँ नै कहत आ दोसरक पेटक बात नै सुनत ताधैर नीक थोड़े लगत। मनमे सदिखन उठैत रहैए जे जँ लकीरक फकीरे बनि जीबैक छइ तँ अनेरे लोक किए पढ़ैए।?”

सुखल मुस्की दैत बचनू बाजल-

“गिरहतनी, अहाँकेँ कोन चीजक कमी अछि जे कोनो तरहक दुख हएत।”

रागिणी-

“अहाँ जे कहलौं ओ ठीके। किएक तँ एहनो बुझनिहारक कमी नै अछि। एहनो बहुत लोक अछि जे धनेकेँ सभ किछु बुझैए। मुदा धन तँ खाली शरीरक भरण-पोषण कऽ सकैए, मनक नहि। तीन सालसँ बेसी ऐठाम एला भऽ गेल मुदा ने एक्कोटा सिनेमा देखलौं आ ने एक्को दिन केतौ घुमै-फिरैले गेलौं। जाधैर बेटी माए-बाप लग रहैए ताधैर सभ किछु माने धन-सम्पैत-कुटुम-परिवार इत्यादि अपन बुझि पड़ै छै, मुदा सासुर पएर दैते जहिना सभ बीरान भऽ जाइ छइ तहिना माए-बापक बीच जे अजादी बेटीकेँ रहै छै ओ सासुर एलापर एकाएक बन्न भऽ जाइ छइ।

बचनू-

“जँ केतौ जाइक मन होइए वा देखैक मन होइए तँ नैहर किए ने चलि जाइ छी?”

रागिणी-

“जहिना सासुर तहिना नैहरो भऽ गेल। जहिना सासुरमे पुतोहु बनि जीबै छी तहिना नैहरोमे पाहुन बनि जाइ छी। जेना हम्मर किछु रहिते ने अछि। जे घर अप्पन नइ रहत ओइ घरमे केकरा कहबै जे हम फल्लाँ-ठाम जाएब। जन्म देनिहारि माइयो आने बुझैए। तैपर सँ भाए-भौजाइक जुइत...। ई तँ नैहरक गप कहलौं आ ऐठामक जे होइए से हमहीं बुझै छी। बुड़हा जहन आँगन औता तँ बुझि पड़त जे जेना अस्सी मन पानि पड़ल छैन। बुड़ही तँ कनी हँसियो कऽ गप्प करता मुदा हमरा देखिए-कऽ झड़कबाहि उठि जाइ छैन। जँ कहियो माथपर नुआ नइ देखलैन तँ बुढ़हीकेँ अगुआ की कहता की नहि, तेकर कोनो ठेकान नहि। पहाड़ी झरना जकाँ भरि-भरि दिन आँखिसँ नोर झहरैत रहैए। कियो पोछनिहार नहि।”

बचनू-

“गिरहतनी, हमरा बड़ देरी भऽ गेल। महाकान्त भाय बिगड़ता।”

रागिणी-

“अच्छा, चलि जाएब। कहै छेलौं, हरिदम तरे-तर मन औंढ़ मारैत रहैए जे

लछमी बाइ जकाँ तलवार उठा परदा-पौसकेँ तोड़ि दी, मुदा साहस नै होइए। केराक भालैर जकाँ करेज डोलए लगैए। आइ जहन अपन मनक बात अहाँकेँ कहलौं तँ मन कनी हल्लुक बुझि पड़ैए।”

बचनू-

“तहन तँ गिरहतनी हमहीं नीक छी।”

रागिणी-

“बहुत नीक। बहुत नीक। एते काल जे अहाँसँ गप केलौं से जहिना पाकल घाउक पीज निकललापर जे सुआस पड़ै छै तहिना भऽ रहल अछि। आब सभ दिन एक घन्टा गप्प कएल करब। अहाँ कियो आन छी, घरेक लोक छी।”

एक टकसँ जहिना बचनू रागिणीक आँखि-पर-आँखि दऽ हृदए देखए लगल, तहिना रागिणियोँ बचनूक हृदए पढ़ए लगली।

❍

शब्द संख्या : 3963

चुनवाली

नीन्न टुटिते मखनी मोथीक बिछान समैट ओसारक उत्तरबरिया-पुबरिया कोणमे ठाढ़ कऽ निच्चाँ उतरए लगल कि सीढ़ीपर पिछैर गेली। पएर पिछैरते हाथसँ ओसार पकड़ए चाहली। मुदा जाबे सेरिया कऽ ओसार पकड़ैथ-पकड़ैथ ताबे ओलतीमे खसि पड़ली।

झलफल रहने कियो दोसर उठल नहि। थोड़बे पहिने एकटा छोटकी अछार भेल रहइ। घरक चारसँ ठोपे-ठोप पानि चुबिते छेलइ। सीढ़ीपर सँ खसिते मखनीक दहिना ठेहुनक जोड़ छिटैक गेलैन। तत्काल छिटकब तँ नइ बुझलैथ, मात्र एतबे बुझलैथ जे ठेहुन कट दऽ उठलैन हेन। मनमे एलैन, कियो देखलक तँ नहि, तँए हाँइ-हाँइ उठए लगली। जोशमे उठि तँ गेली मुदा ठेहुनक कचकबसँ फेर ओसार पकैड़ सीढ़ीए-पर बैस रहली। बैसते मनमे आबए लगलैन- केना मटकुरियाक परबरिस चलतै..! ढेरबा बेटी छै बिआह कन्ना करत..! अपना कमाइक कोनो लूरि नइ छै.., बहुओ धमधुसरीए छै..! अपना खेत-पथार नइ छै..! गामक लोको तेहेन अछि जे केकरो कियो नीक नै करैत..! हे भगवान कोन बिपैत दऽ देलह..!

कनी काल गुम्म रहि मखनी जोरसँ बेटाकेँ हाक पाड़ली-

“मटकुरिया, रौ मटकुरिया?

मटकुरिया दुनू परानी अपनो आ दुनू धियो-पुतो निसभेर रहए। तँए ने मटकुरिया उठल आ ने कियो दोसर-तेसर। ..पुनः दोहरा कऽ मखनी जोरसँ शोर पाड़ली-

“रौ बौआ, बौआ रौ। हम पिछैर कऽ खसि पड़लौं से उठिए ने होइए।”

धड़फड़ा कऽ उठैत मटकुरिया बाजल-

“माए! माए! अबै छी।”

ताधैर फुलियो, कबुतरियो आ बेटोक नीन टुटल। केबाड़ खोलि मटकुरिया दौगल माए लग आबि पुछलक-

“केना कऽ खसलेँ?”

पाछूसँ स्त्रियो आ बेटो-बेटी पहुँचल। बेटा तँ पाँचे बर्खक मुदा तैयो माए-बापक देखा-देखी करैत दादीकेँ पकड़लक। चारू गोरे उठा मखनीकेँ ओसारपर लऽ गेलैन। बिछान बिछा सुता देलकैन। कनी-कनी ठेहुन फुलए लगलैन। फुलब देख फुलिया पतिकेँ कहलक-

“अहाँ पहिने डाकदर बजा लाउ। हम ताबे करूतेलसँ ससारि दइ छिऐन।”

पतिकेँ कहि फुलिया बेटीकेँ अढ़ौलक-

“बुच्ची घरसँ तेलक शीशी नेने आ।”

मटकुरिया डाक्टर ऐठाम विदा भेल। तेलक शीशी आनए कबुतरी घर गेल। तैबीच मंगनियाँ दादीकेँ पुछलक-

“आँइ गइ बुढ़िया, एतने ऊपरसँ...।”

बेटाक मुँहपर फुलिया हाथ दऽ आगू बाजब रोकि देलक। मुदा पोताक बातसँ मखनीकेँ एक्को मिसिया दुख नइ भेलैन। मुस्कियाइत बजली-

“बिलाइ खसा देलक।”

शीशीक मुन्ना खोलिते कबुतरी आएल। दुनू मायधी तरहत्थीपर तेल लऽ लऽ मिलबैत जाँघ सहित दहिना पैरमे ओंसए लगल। मखनीक ठेहुनक दर्द बढ़िते जाइत। जइसँ दुनू गोरेकेँ ससारब छोड़ि दइले कहलक। ताबे डाक्टरक संग मटकुरीया सेहो पहुँचल। मखनीक ठेहुन देखते डाक्टर बजला-

“हिनका ठेहुनक जोड़ छिटैक गेल छैन। पलश्तर करबए पड़त। ताबे दर्द कम होइले इन्जेक्शन दऽ दइ छिऐन। पलश्तरक समान सभ मंगबए पड़त।”

एक्के-दुइए गामक जनिजाति पहुँचए लगल। जनिजातिक संग धियो-पुता आएल। लोकसँ मटकुरियाक आँगन भरि गेल। पलश्तरक समान मंगा डाक्टर पलश्तर करैत बजला-

“चिन्ता करैक बात नै अछि। पनरह दिनमे ठीक भऽ जेतैन।”

कहि अपन फीस लऽ डाक्टर चलि गेला। मुदा लोकक आबा-जाही लगले रहल। रंग-बिरंगक गपसँ अँगना गनगनाइत रहल।

भरि दिन सभ तूर मटकुरिया भुखले रहि गेल। ने भानसपर धियान गेलै

आ ने केकरो भूखे बुझि पड़लै। घरमे चूड़ा रहै, जे मंगनियाँ खेलक। बेर झुकैत-झुकैत अँगना खाली भेल। खाली अपने पाँचो गोरे अँगनामे रहल। सबहक मनो असथिर भेल।

असथिर होइते मटकुरियो, फुलियो आ कबुतरियो अपना-अपना ढंगसँ सोचए लगल। ओना कहियो काल, सासुकेँ मन खराब भेने वा केतौ गाम-गमाइत गेने, फुलिये चुन बेचए जाइत। सभ काज बुझले तँए मनमे बेसी चिन्ता नहि। चिन्ता खाली एतबे जे कहुना सासुक परान बँचि जाइन। मुदा खुशी बेसी। सोलह बर्खसँ सासुर बसै छी मुदा अखन धरि घरक गार्जन नै बनलौं। लोककेँ देखै छिऐ जे सासुर अबिते अपन जुइत लगबए लगैए। भगवान हमरो दहीन भेला। आब हमहूँ गार्जन बनब। घरक गार्जन तँ वएह ने होइत जे कमाइए, आ जे उपारजने नइ करत ओ घरक जुतिए-भाँति की लगौत। अगर जँ लगेबो करत तँ चलतै केना। छुच्छ हाथ थोड़े मुँहमे जाइए। काजक अपन रस्ता होइ छइ, जे केनिहारे बुझैत। बिनु केनिहार जँ जुतिए लगौत तँ ओ या तँ दुरि हेतै वा गरे ने पकड़तै...।

ओना अखन फुलियाक घरोबला आ साउसो जीविते, तँए गार्जनियोँ हाथमे आएब कठिन। मुदा तैयो आशा रहइ। अखन धरि सिनुरो-टिकली-ले खुशामदे करै छल, से आब नै करए पड़तै.., फुलिया तँए खुशी।

कबुतरीक मनमे ऐ दुआरे खुशी होइत जे जेते लूरि दादीकेँ छै ओते लूरि गाममे केकरो ने अछि। मुदा कमाइक तेहेन भूत लगि गेल छै जे जइ दिन मरत तही दिन छोड़तै। सभ लूरि संगे चलि जेतइ। तँए नीक भेलै जे अबाह भऽ गेल, आब तँ अँगनामे रहत। जखने अँगनामे रहए लगत तखने एका-एकी सभ लूरि दादीसँ सीख लेब। मुदा दादीए-केँ की दोख देबइ। भरि दिन दस सेरक छिट्टा माथपर नेने बुलैए, तँए देह-हाथ तँ दुखेबे करतै। साँझ खिन-के थाकल-ठेहियाएल अबैए आ असुआ कऽ पड़ि रहैए। से आब नै हेतइ। निचेनसँ पाबैनो-तिहारक विधि-विधान आ गीतो-नाद सीखब। एतेटा भऽ गेलौं, ने अखन तक एक्कोटा गीत अबैए आ ने बिआह-दुरागमनक अरिपन बनौल होइए। केता दिन मनमे अबैए जे मालतीए जकाँ हमहूँ अपन गोसाँइ घरक ओसारमे पुरैनक लत्ती, कदमक गाछ लिखी। से लूइरो रहत तब ने। साँझू-पहरमे, जेते काल दादीकेँ जँतै छिऐ तेते काल समैयो भेटैए तँ नहियेँ होइए। किएक तँ बिछानपर पड़िते ओंघा जाइए। जँ पुछबो करै छिऐ तँ ऐ गीतक पाँति ओइ गीतमे आ ओइ गीतक भाष

ऐ गीतमे कहए लगैए। जइसँ किछु सीखि नै पबै छी।

मटुकलालकेँ ऐ दुआरे खुशी होइत जे बेटा-पुतोहुक रहैत बुढ़ माए एते खटए से उचित नहि। मुदा कहबो केकरा करबै। हमरा कोनो मोजर दइए। दूटा धिया-पुता भेल। बेटियो बिआह करै-जोकर भऽ गेल मुदा हमरा बच्चे बुझैए। हम की करूँ। तँए भगवान जे करै छथिन से नीके करै छथिन। भने आब भारी काज करै-जोकर माए नइ रहल। जे अपनो बुझत आ मनाही करबै तँ मानियोँ जाएत। मरैक डर केकरा ने होइ छइ। तहूमे बुढ़-बुढ़ानुसकेँ...। मटकुरिया तँए मने-मन खुश। लोक हमरा तड़िपीबा बुझि बुड़िबक बुझैए। तँए की हम बुड़िबक छी। कियो बुझैए तँ बुझह। जहिया बाबू मुइला तहिया जेते भार कपारपर आएल, से कियो आन सम्हारि दइए आकि अपने करै छी। ..पसिखन्ने जाइ छी तँ की लुच्चा-लम्पटक संग बैस पीबै छी जे चोरी-छिनरपन्नी सीखब। या तँ असगरे बैस कऽ पीबै छी या बड़का लोक लग बैस कऽ पीबै छी। बड़का लोकक मुँहमे हरिदम अमृत रहैए। रमानन्द बाबूसँ गियनगर लोक ऐ इलाकामे दोसर के अछि। हुनकासँ हमरा दोस्ती अछि। हुनकर ओ बात हम गिरह बान्हि नेने छी जे जहिना कियो जनमैए, बढ़ि कऽ जुआन होइए। जुआनसँ बुढ़ भऽ मरि जाइए। ई तँ दुनियाँक निअमे छिऐ। सभकेँ हएत। जे नै बुझत ओ नै बुझह। मुदा हम तँ वएह मानै छी...।

फेर मटकुरियाक नजैर माए दिस घुमलै। मने-मन सोचए लगल, माइक पएर टुटब कोनो अनहोनी थोड़े भेलै, ई तँ भगवानक लीले छिऐन। भगवान कखनो अपना सिर अजश लेता। कोनो-ने-कोनो कारण भइए जाइए। तइले हमरा दुखे किए हएत। जहिना एते दिन बीतल तहिना आगुओ बीतत। एते दिन जहिना माएकेँ, बेच कऽ घुमै काल आगूसँ पथिया आनि दइ छलिऐ तहिना आब घरोवालीकेँ आनि देबइ। कियो हमरा देखा दिअ तँ जे एक्को दिन हमरा काजमे नागा भेल। गोसाँइ डुमै बेर, केतौ रही, केतबो पीब कऽ बुत्त रही मुदा तँए की अपन काज कहियो छोड़ै छी..?

मटकुरियाक परिवारक खानदानी जीविका चुनक। महिला प्रधान रोजगार। किएक तँ चुनक बिकरी अँगने-अँगने होइत। शुद्ध गमैआ बेवसाय। ने चुन बनबैक समान बाहरसँ आनए पड़ैत आ ने बेचैक असुविधा। गामक अधिकांश परिवारमे चुनक खर्च। कियो पान खाइत तँ कियो तमाकुल। दुनूमे चुनक जरूरत। चुन बनाएबो कठिन नहि। डोका जरा कऽ बनैत। अन्नेक कोठी

जकाँ डोको जरबैक कोठी होइत। मुदा अन्नक कोठीक ऊपरमे छोट मुँह, अन्न ढारैले बनौल जाइत, जखन कि चुनक कोठीक ऊपरका भाग खुलल रहैत। निच्चाँक मुँह दुनूक एक्के रंग...।

चुन बनबैले कच्चो मालक कमी नहियेँ। किएक तँ गरीब-गुरबा लोक डोकाक मौस खाइत। मौसो पवित्र। किएक तँ डोका माटि खा जीवन-बसर करैत। डोकेक ऊपरका भागसँ माने खपलौइयासँ चुन बनैत।

चुनक बजारो गामे-घर। बिरले गोटेक घरमे चुनक खर्च नै होइत, नहि तँ सबहक घरमे होइत। पहिने मटकुरियाक दादी-परदादी चुन बेचै छेली, मुइला पछाइत माए बेचए लगलैन। सात दिनक सप्ताहमे पाँच दिन मखनी गामे-गामे भौड़ी करैत छेली। एक-एक गाममे एक-एक दिनक पार बनौने। आठ दिन खर्चक हिसाबसँ सभ कियो चुन किनैत। सभ काज अन्दाजेसँ। अन्दाजेसँ चूनो दैत आ अन्दाजेसँ धान-मरूआ बेचो लइत। कोनो हरहर-खटखट नहि। किएक तँ मनक उड़ान छोट। ने कोठा-कोठीक इच्छा, ने सुख-भोगक। बान्हल मन तँए मात्र मनुख बनि जीबैक इच्छा।

बजारोमे प्रतियोगिता नहि, कारोबारमे छीना-झपटी नहि। किएक रहतै। जहिना जातिक शासन तहिना समाजक दण्डात्मक रूखि। समाजमे निसचित जाति निसचित काजसँ बान्हल। एकक काज दोसर नै करैत, तँए लक्कड़-झक्कड़ कम। जेना डोम, नौआ, धोबि, बरही कुम्हार इत्यादिक अपन-अपन जीविकाक धंघा, जेकर कड़ाइसँ पालन होइत। दुनू बिन्दुपर। करौलो जाइत आ करबो करैत। सीमित क्षेत्रक बीच कारोबार। कियो अतिक्रमण नै करैत। जँ कहीं केतौ अतिक्रमण होइत तँ जातिक बीच ओकर फरिछौट होइत, तँए सभ अपन-अपन सीमाक भीतर रहैत। हँ, ई बात जरूर होइत जे सीमाक भीतर भैयारीक बँटबारासँ विभाजित होइत। मुदा मटकुरियाक परिवार एक-पुरखिया, तँए एहेन प्रश्ने नहि। रोजगारो-ले तहिना। सबहक अपन-अपन सीमित क्षेत्र। एक क्षेत्रमे दोसरक प्रवेश बर्जित। मुदा बेर-बेगरतामे एक-दोसराकेँ भार दऽ समाजक काजमे बाधा उपस्थिति नै हुअए दइत।

चुन बेच मखनी खाली परिवारे नै चलबैत, महाजनियोँ करैत। किएक तँ सोल्होअना श्रमे पूजी। मेहनत कऽ डोका एकत्रित करैत, डोका जरा कऽ चुन बनबैत आ अन्नसँ बदलैत। चुनक कीमतो अलग-अलग। जैठाम गरीब लोक चुनक कम कीमत दैत तैठाम सुभ्यस्त किछु बेसीए दइत। पाँचे गोरेक परिवार

मखनीक। केते खाएत। तँए फजिलाहा अन्न सबाइपर लगबैत। सेहो बिनु लिखा-पढ़ीक। मुँह जवानी। जइसँ किछु ऊपरो होइत किछु बुड़ियो जाइत...।

पाँच गाममे मखनीक कारोबार। अगर जँ ऐसँ आगू कारोबार बढ़बए चाहती तँ सम्हारले ने हेतैन। किएक तँ डोका जमा करैसँ चुन बनबै धरिमे दू दिन समए लगि जाइत। आठे दिनपर बिकरीक बीट घुमैत, तँए पाँच गामसँ बेसी गाम सम्हारब कठिन।

टाँग अबाह होइते मखनी चुन बेचब छोड़ि देलैन। मुदा परिवारक रोजगार बन्न नइ भेलइ। आब फुलिया बेचए लगल। चिन्हार गाम चिन्हार गहिंकी। तँए केतौ बाधा नहि। मुदा मखनीक महाजनी बुड़ि गेलैन। किएक तँ पाँचो गाममे पाँच गोरे ऐठाम अपन धान-मरूआ रखै छेली आ ओहीठामसँ ओइ गाममे सबाइ लगबै छेली। अपन आवाजाही बन्न भेने बिसैर गेली। लेनिहारो बिसैर गेल। मुदा तइले मखनीक मनमे दुख नइ भेलैन। खुशीए भेलैन। खुशी ऐ दुआरे भेलैन जे जाबत देहमे तागत छेलए ताबे अपनो, परिवारो आ दोसरोकेँ खुऔलौं। जिनगीक सार्थकता ऐसँ बेसी की हएत। यएह ने धरम छी। धर्ममय जिनगी बना बुढ़ाड़ी धरि जीब लेलौं, ऐसँ बेसी की चाही। तँए मने-मन खुशी।

समए आगू बढ़ल। कारोबारक रूपो बदलल। केना नै बदलैत? समैयोक तँ कोनो ठेकान नहि। कोनो साल अधिक बर्खा होइत तँ कोनो साल रौदी। अधिक बर्खा भेने तँ अधिक डोकाक वृद्धि होइत मुदा रौदीमे कमि जाइत। बिसवासू कारोबार-ले वस्तुक उपलब्धि अनिवार्य। जे आब नै भऽ पबैत। मुदा समैयो तँ पाछू नहि आगू-मुहेँ ससरत। पत्थल-चूना बजारमे आबि गेल। पर्याप्त वस्तुक उपलब्धि भऽ गेल। बजारो बढ़ल। जैठाम उमरदार लोक तमाकुल-पान सेवन करै छला तैठाम आब स्कूल-कौलेजक विद्यार्थी सेहो करए लगल। तेतबे नहि, बाल-श्रमिक सेहो करए लगल। गामे-गाम चौक-चौराहा बनि गेल। जइसँ चाहो-पान खेनिहार बढ़ल। ओना तमाकुल-पानक अतिरिक्त पान-पराग, शिखर, रंग-बिरंगक गुटका सेहो बढ़ि गेल। तेकर अतिरिक्त सार्वजनिक उत्सव सेहो बढ़ल। परिवारक मांगलिक काज जेना- बिआह, मूड़न, सराध, सेहो नमहर भेल। जइसँ पान-तमाकुलक खर्च बढ़ल। तँए चुनोक खर्च केतेको गुणा बढ़ि गेल।

मखनीक जगह फुलिया लेलक। ओना घरक रोजगार तँए फुलियोकेँ किछु सीखैक जरूरत नहि। सभ सीखले-बुझले। सासुक रहितो, कहियो काल

फुलियो बेचए जाइ छल। किएक तँ जइ दिन मखनी नैहर जाइत तइ दिन फुलीये बेचैयो-ले जाइत आ डोका आनि-आनि चुनो बनबैत। मुदा आब तँ चुन बनबैक रूपे बदैल गेल। लोको डोकाक चुनक बदला पत्थल-चूना खाए लगल। ओना अखनो बुढ़-बुढ़ानुस सभ पत्थल-चूनाकेँ घटिया बुझैत। जे तेजी डोकाक चुनमे होइत ओ पाथरक चुनमे नहि। मुदा हारल नटुआ की करत...।

चुन बेचैयोक रूपो बदलल। अखन धरि जे अन्दाजसँ बिकरी होइ छल ओ आब तौल कऽ हुअ लगल। बेचक जगह पाइ लेलक। ओना अन्नोक चलैन सोलहन्नी समाप्त नहियेँ भेल हेन। आब ओतबे अन्न पड़ैत जे आनठाम रखैक जरूरत फुलियाकेँ नै होइत। पाइ बौगलीमे रखैत आ अन्न पथियामे। ओना कर्जखौक सेहो कमल। किएक तँ समए आगू बढ़ने खाइ-पीबैक उपाय सेहो लोककेँ भेल। बोइन सेहो सुधरल। पाइक आमदनी किसानोकेँ हुअ लगल। लोकक पीढ़ि सेहो बदलल जइसँ विचारोमे बदलाउ आएल।

समए आगू बढ़ने कारोबार असान भेल। जइसँ मटकुरियाक परिवार सेहो आगू-मुहेँ ससरल। मुदा मटकुरिया जहिना-के-तहिना रहि गेल। पहिने जे मटकुरिया माइक संग डोका आनै छल ओ आब एक्केठाम बजारसँ चुन कीनि कऽ लऽ अबैए। सुखल चुन। सुखल चुनकेँ गील बनबैमे सेहो अधिक फीरिसानी नहियेँ...।

फागुन मास। शिवरातिक तीन दिनक पछाइत। धुरझार लगन चलैत। मेला जकाँ बरियाती चलैत। अंग्रेजीबाजा आ लॉडस्पीकरक अवाजसँ वायुमण्डल दलमलित। आन दिन चारि बजे मुदा आइ सबेरे मटकुरिया पसिखाना विदा भेल। समैयो सोहनगर। झिहिर-झिहिर हवा चलैत। अकासमे जहिना चिड़ै गीत गबैत तहिना हवामे गाछ-बिरीछ नचैत।

..पसिखाना पहुँचते मटकुरियाकेँ पासी कहलक-

"भैया, आइ निम्मन बसन्ती माल अछि, खजुरिया नै ताड़क।"

पासीक बात सुनि मटकुरियाक मनमे खुशी उपकल। मने-मन सोचलक, दू गिलास आरो बेसी चढ़ा देबै, बाजल-

"तब तँ आइ जतरा नीक बनल अछि।"

"अहाँ तँ हमर पुरान अपेछित छी भैया, तँए दू गिलास ओहिना मंगनीए पिआएब।"

दू गिलास मंगनी सुनि मटकुरिया सोचलक जे पहिल दिन छिऐ तँए आन दिनसँ कम केना लेब। यात्रा तँ पहिलुके दिन नीक होइ छइ। वेचाराकेँ सगुन केना दुरि करबै। मुस्कियाइत मटकुरिया बाजल-

"बड़बढ़ियाँ। अपनो मिला कऽ नेने आबह।"

वसन्ती ताड़ी, पिबते मटकुरियाकेँ रंग चढ़ए लगल। ताड़ी पीब मटकुरिया सोझे, पसिखन्नेसँ, पत्नीकेँ माथ परहक पथिया आनए दच्छिन-मुहेँ विदा भेल। गामक दछिनबरिया सीमानपर ठाढ़ भऽ आगू तकलक। जेते दूर नजैर गेलै तैबीच केतौ पत्नीकेँ अबैत नइ देखलक। कनी काल पाखैरक गाछ लग ठाढ़ भऽ सोचए लगल जे आगू बढ़ी वा एतै रुकि जाइ। ..अंग्रेजी बाजा आ लॉडस्पीकरक फिल्मी गीत कानमे पैस-पैस मनकेँ डोलबैत रहइ। मन पड़लै अपन बिआह। बिआह मन पड़िते फुलियाक रूप आगूमे ठाढ़ भऽ गेलइ। गुनधुन करैत सोचलक जे ऐठाम ठाढ़ भऽ कऽ समए बिताएब, तइसँ नीक जे आरो थोड़े बढ़ि जाइ। आगू बढ़ल। किछु दूर आगू बढ़लापर पत्नीकेँ ऐगला गाम टपल अबैत देखलक। बाधो कोनो नमहर नहि। फुलियाक नजैर सेहो मटकुरियापर पड़लै। दुनूक डेग तेज भेल। तेज होइक दुनूक दू कारण। मटकुरियाक मनमे जे जेते जल्दी लगमे पहुँचब तेते जल्दी भार उतरतै। जखन कि पसीनासँ नहाएल फुलियाक मनमे शान्ति। शान्ति अबिते पथिया हल्लुक लगए लगलै। दुनूक मनमे केतेको नव-नव विचार आबए लगलै...।

पत्नीकेँ लग अबिते मटकुरिया धोतीक ढट्ठा सेरियौलक। किएक तँ माथपर भारी एलासँ डाँड़क धोती डाँड़मे बैस जाइत। ढट्ठा सेरिया गमछाक मुरेठा बान्हि दुनू हाथसँ पकैड़ फुलियाक माथ परहक पथिया अपना माथपर लेलक। माथपर लइते किछु कहैक मन भेलइ। मुदा किछु बाजल नहि। किएक तँ मनमे एलै, वेचारी थाकल अछि, तँए मन अगियाएल हेतइ। हो-ने-हो किछु करूआएल बात बाजि दिअए...।

जखन कि एकाएक माथ परहक भार उतरलासँ फुलियाक मन हल्लुक भेल। मुदा ओहो किछु बाजल नहि, ओहिना देह कठियाएल। आगू-पाछू दुनू बेकती घर दिस विदा भेल। जेते आगू बढ़ैत तेते फुलियाक मन हल्लुक होइत आ मटकुरियाक मन भारी। पत्नीसँ किछु कहैक विचार मटकुरियामे कमए लगल। जेना मुँह खोललासँ भार बढ़तै। मुदा जेना-जेना आगू बढ़ैत तेना-तेना फुलियाक देहो-हाथ सोझ होइत आ पतिकेँ किछु कहैक इच्छा सेहो बढ़इ, मुदा किछु

बाजए नहि। किएक तँ पति-पत्नीक बीच गप्पक आनन्द तहन होइत जहन दुनूक मन सम रहत माने ने बेसी सुख आ ने बेसी दुख। से अखन धरि दुनूक बीच नइ भेल छेलइ। एते काल फुलियाक माथपर पथिया रहने मन पीताएल रहै आ आब मटकुरियाक हुअ लगल। ने फुलिया पतिकेँ किछु कहैत आ ने मटकुरिया पत्नीकेँ। मुदा बाटक बीच बाधमे अबैत-अबैत दुनूक मुहसँ हँसी निकलल।

पथिया नेनहि मटकुरिया पाछू घुमि कऽ तकलक तँ देखलक जे फुलिया मुस्किया रहल अछि। फुलियोक नजैर मटकुरियाकेँ मुस्कियाइत देखलक। एक टकसँ एक-दोसरपर आँखि गड़ौने अपन जिनगी देखए लगल।

❍

शब्द संख्या : 2452

डीहक बटबारा

अमानतक दिन। चारि बजे भोरेसँ पुड़ी-जिलेबी-तरकारी इत्यादिक सुगन्ध गामक हवामे पसैर गेल। सौंसे गामक लोककेँ बुझले तँए केकरो सुगन्धसँ आश्‍चर्ज नहि। भोरे श्रीकान्तो आ मुकुन्दोक पत्नी फूल तोड़ि नहा-सोना कऽ बरहम स्थान पूजा करए गेली।

हलुआइ दू-चुल्हियापर तरकारियो बनबैत आ जिलेबियो छनैत। कुरसीपर बैसल श्रीकान्त मने-मन बरहम बाबाक कबुला केलैन जे जँ हमरा मनोनुकूल नापी भेल तँ जोड़ा छागर चढ़ेबह। तहिना मुकुन्दो बरहम बाबाकेँ छागर कबुललैन।

गामक सुगन्धित हवामे सबहक मन उधियाइत। चाह बनबैबला चाह बनबैमे आ पान लगबैबला पानमे व्यस्त। दुनू दिस कट्ठा-कट्ठा भरिक टेन्ट लगल, दड़ी आ जाजीम बिछौल। एक भागमे गाँजा पीनिहारक बैसार आ दोसर भागमे दारूक। जहिना बुचाइ कुदि कऽ कखनो हलुआइ लग जा देखैत तँ कखनो दारूबलाक बैसारमे जा दू-गिलास चढ़ा लैत, तहिना सरूपो।

सभ कथूक ओरियान काल्हिए दुनू गोरे दुनू दिस कऽ नेने तँए अनतए जाइक जरूरते नहि। चाह-पानक इत्ता नहि। जेकरा जेते मन हुअए से तेतै खाउ-पीबू। जलखैमे पुड़ी-जिलेबी-डलना आ कलौमे खस्सीक मौस आ तुलसीफुलक भात। तँए भरि दिनक चिन्ता सबहक मनसँ पड़ाएल। जीविलाह सभ दुनू दिस टहैल-टहैल खाइत-पिबैत।

श्रीकान्तो आ मुकुन्दो इंजीनियर। दुनू एक्के वंशक। दुनूक परदादा सहोदरे भाए। पाँच कट्ठाक घराड़ी, जइमे दुनू गोरेक अदहा-अदहा हिस्सा। जहिए-सँ दुनू गोरे नोकरी शुरू केलैन, तहिए-सँ गाम छोड़ि देलैन। एक-पुरखिया वंश तँए परिवारमे दोसर नहि। पैंतीस सालक नोकरीक बीच कहियो दुनूमे कियो गाम नै एला। जइसँ पिताक बनौल घर दुनूक खसि पड़लैन। गामक स्त्रीगण सभ ठाठ-कोरो-धरैनकेँ उजाड़ि-उजाड़ि जरा लेलक आ ढिमका-ढिमकीकेँ सेरिया गामक छौड़ा सभ फील्ड बना लेलक। गामक जेते खेलौड़िआ छौड़ा सभ छल ओ सभ

अपन-अपन खेलक जगह बाँटि लेलक। एकटा फील्ड कबड्डीक, दोसर गुड़ी-गुड़ीक, तेसर चिक्का-चिक्काक, चारिम गुल्ली-डण्टाक आ पाँचम रूमाल चोरक बनि गेल। उकट्ठी छौड़ा सभ एक दोसराक फील्डमे राता-राती झाड़ा फीर दइ। मुदा खेल शुरू करैसँ पहिने दस-बीसटा गारि पढ़ि सभ अपन-अपन फील्ड चिक्कन बना लिअए। ओना दुनू गोरे–श्रीकान्तो आ मुकुन्दो–बाहरे घर बना नेने छैथ मुदा मरै बेरमे दुनूकेँ गाम मन पड़लैन। साले भरिक नोकरी दुनूक बाँचल तँए तीन मासक छुट्टी लऽ लऽ गाम एला अछि। गाम अबैसँ पहिने दुनू गोरे फोनक माध्यमसँ अबैक दिन निर्धारित कऽ नेने छला। किएक तँ परोछा-परोछी नापी करौलासँ आगू झंझटक डर दुनूक मनमे रहैन।

घराड़ी नापी होइसँ दस दिन पहिनहि श्रीकान्त गाम एला। अपना तँ घरो नहि, मुदा अबै काल एकटा रौटी आ सुतै-बैसैक समानक संग भानसो करैक सभ किछु नेने एला। गाम आबि पितियौत भाएकेँ कहि सभ बेवस्था केलैन। सभ गर लगला पछाइत भाएकेँ पुछलखिन-

"बौआ, गाममे के सभ मुँह-पुरखी करैए?"

भाए कहलकैन-

"गाममे तँ कियो राजनीति नहियेँ करैए मुदा बुचाइ आ सरूप सभ धन्धा करैए।"

"की सभ धन्धा?"

"जेना कियो खेत किनैए वा बेचैए तैबीचमे पड़ि किछु कमा लइए। तहिना गाइयो-महींसमे करैए तँसंग भोँट-भाँटसँ लऽ कऽ कथा-कुटुमैती धरिमे सेहो किछु-ने-किछु हाथ मारिए लइए।"

भाएक बात सुनि इंजीनियर साहैब कनी काल गुम्म भऽ गेला। मने-मन सोचि-विचारि कऽ बजला-

"कनी बुचाइकेँ बजौने आबह?"

"बड़बढ़ियाँ"

कहि भाए बुचाइकेँ बजबए विदा भेल। मने-मन श्रीकान्त सोचए लगला जे गाममे तँ सबहक हालत तेनाहे सन अछि। देखै छिऐ जे जेहने घर-दुआर छै तेहने बगए बानि। दू चारिटा जे ईंटो घर देखै छिऐ सेहो भितघरे जकाँ। तँए गाममे ओहेन घर बना कऽ देखा देबै जे गामक कोन बात, परोपट्टाक लोक देखए

औत। पुरान लोक सबहक कहब छैन जे जेहेन हवा बहै ओइ अनुकूल चली। जुग पाइक अछि, जेकरा पाइ रहतै ओ बुधियार आ जेकरा पाइ नइ रहतै ओ किछु नहि। असगर बरसपैतो फुसि। जेकरा पाइ छै वएह नीक घर बनबैए, नीक गाड़ीमे चढ़ैए, ओकरे धिया-पुता नीक स्कूल-कौलेजमे पढ़ैए आ ओकरे परिवारक लोक नीक लत्ता-कपड़ा पहिरैए आ तैसंग बेटा-बेटीक बिआह नीक परिवारमे होइ छइ। तेतबे नहि, आइक जे सुख-सुविधा विज्ञान करौलकहेँ ओकरो सुख भोगैए...। यएह ने जुगक संग चलब छी। समाजक बीच प्रतिष्ठा बनाएब तँ बामा हाथक काज अछि। अधलासँ अधला काज करि कऽ पाइ कमा लिअ आ समाजकेँ भोज खुआ दियौ, बस जशे-जश, प्रतिष्ठे-प्रतिष्ठा। हाथमे पाइ ऐछे, सभ किछु गौँआकेँ देखा देबइ। बेटो-बेटीकेँ पढ़ा-लिखा, बिआह-दुरागमन करा कऽ निचेने छी। तहन तँ एकटा काज मात्र पछुआएल अछि, समाजिक प्रतिष्ठा। सेहो बनाइए लेब।

मने-मन श्रीकान्त विचारिते रहैथ कि बुचाइक संग भाए पहुँचलैन। लगमे अबिते बुचाइ दुनू हाथ जोड़ि बाजल-

"गोड़ लगै छी काका। अहाँ तँ गामकेँ बिसैर गेलिऐ। सरकारक एयर कण्डीशन मकान भेटले अछि तहन कथीले थाल-कादोमे आबि मच्छर कटाएब?"

अपनाकेँ छिपबैत श्रीकान्त बजला-

"नै बौआ, से बात नइ अछि। जखने नोकरीक जिनगी शुरू केलौं तखने दोसराक गुलाम बनि गेलौं। जे-जे हुकुम देत से से करए पड़त। तूँ सभ कम उमेरक छह तँए नइ देखलहक, मुदा हम तँ अंग्रेजक शासन देखने छी किने। शासन तरे-तर चलै छै, जे सभ थोड़े बुझैए। अंग्रेजक पीठपोहू छल ऐठामक राजा-रजबार आ ओकरा सबहक फाँड़ी छी जमीनदार सभ। ओ सभ जे ऐठामक लोकक संग बेवहार करै छल आ करैए से तँ तहूँ सभ देखते छहक। मुदा ऐ सभ गपकेँ छोड़ह। तोरा जे बजौलियह से सुनह। साले भरि आब नोकरी अछि। नोकरी समाप्त भेला पछाइत गाममे रहब। तँए तीन मासक छुट्टी लऽ कऽ एलौं हेन जे घराड़ीक अमानत करा घर बनाएब। बिनु घरे रहब केतए।"

बुचाइ-

"हँ, ई तँ जरूरीए अछि, मुदा हमरा किए बजेलौं?"

पासा बदलैत श्रीकान्त बजला-

"मुकुन्दजीकेँ सेहो खबैर दऽ देने छिऐन। ओहो काल्हिसँ परसू धरि एबे करता। ऐठाम तँ दुइए गोरेक घराड़ी अछि, तँए दुनू गोरेक रहब जरूरी अछि। तोरा तँ नइ बुझल हेतह, हमर परबाबा आ मुकुन्दक परबाबा सहोदरे छला। अढ़ाइ-अढ़ाइ कट्ठाक हिस्सा जमीन दुनू गोरेकेँ अछि। तँए कोनो पेंच लगाबह जे हमरा तीन कट्ठा हुअए।"

श्रीकान्तक पेटक मोलि बुचाइ देख गेल। मुस्कियाइत बाजल-

"एँह, अहीले अहाँ एते चिन्तित छी। ई तँ बामा हाथक काज अछि। अमीनकेँ मिला लेब, सभ काज भऽ जाएत। किएक तँ अमीनक गुनियाँ-परकालमे पाँच-दस धूर जमीन नुकाएले रहै छइ। मुदा अइले खरचा करए पड़त। हम तँ जोगारे ने बैसाएब, खर्च तँ अहींकेँ करए पड़त।"

पाइक गरमी श्रीकान्तकेँ रहबे करैन। मनमे ईहो बात रहैन जे भलेँ मुकुन्दो इंजीनियर छैथ, दुनू गोरेक दरमहो एक्के रंग अछि मुदा पाइमे बरबैर कऽ लेता, से केना हेतैन। मुस्कियाइत श्रीकान्त बजला-

"बुचाइ, तोहर मेहनत आ हम्मर पाइ। सएह ने। जेते खर्च हएत, हएत। मुदा मैदानसँ जीति कऽ अबैक छह।"

श्रीकान्तक बात सुनि बुचाइ मने-मन खुश भेल। मनमे एलै, नीक मोकिर हाथ लागल। भरिसक राशि घुमल हेँ। ओह! बहुत दिनसँ अखबारो ने पढ़लौं जे कनी राशि देख लैतिऐ। खएर.., नहियोँ पढ़लौं तैयो शुभ बुझि पड़ैए। जोशमे बुचाइ बाजल-

"काका, रूपैआ-पुत पहाड़ तोड़ैए। ई तँ मात्र अमानते छी, जे चाहबै से हेतइ। खाली अहाँ कंजूसी नै करबै।"

कंजूसीक नाओं सुनि श्रीकान्त बजला-

"मरदक बात छिऐ। जे बाजि देब ओ बिनु पुरौने छोड़ब।"

बैगसँ पाँच हजार रूपैआ निकालि श्रीकान्त बुचाइकेँ देलखिन। रूपैआ जेबीमे रखि बुचाइ प्रणाम कऽ विदा भेल।

गामक पेंच-पाँचमे बुचाइ माहिर मुदा समाजमे अनुचित हुअए, से कखनो नइ सोचए। जहिया कहियो कोनो उकड़ू काज अबै तँ गुरु काकासँ पुछि लइत। ..बुचाइ मने-मन रस्तामे सोचए लगल जे ऐ बेर हिनका तेहेन सिखान सिखेबैन जे मरै काल तक मन रहतैन। सरकारी खजानासँ लऽ कऽ ठीकेदार

धरिसँ झिटलाहा रूपैआ केहेन होइ छै, से सिखता।

आँगन पहुँच बुचाइ चारि हजार पत्नीक हाथमे आ एक हजार अपना हाथमे रखलक। जहिना अगहनमे धानक ढेरी देख, दुनू परानी किसानक मन खुशीसँ गदगदा जाइत तहिना दुनू परानी बुचाइकेँ भेल। मुदा दुनूक खुशीमे अन्तर होइए। किसानक खुशी मेहनतक फल देख होइत जखन कि बुचाइक खुशी दलालीक। ..मुस्की दैत बुचाइ घरवालीकेँ कहलक-

"खिड़कीपर एकटा शीशी अछि, नेने आउ?"

मुँह चमकबैत घरवाली बाजल-

"खाइ-पीबै रातिमे शीशी की करब?"

बुचाइ-

"शीशियो नेने आउ आ खेनाइयो नेने आउ। दुनू संगे चलतै। जाबे भरि मन पीअब नइ ताबे मूड नै बनत। बहुत बात सोचैक अछि। अहाँ नहि ने हमर बात बुझबै?"

पत्नी-

"अहाँक बात बुझैक जरूरत हमरा कोन अछि। हमरा तँ अपने मन केनादन करैए, देह भँसियाइए।"

"अच्छा ठीक अछि, अहूँ दू घोंट पीब लेब।"

भोरे बुचाइ चौकपर पहुँचल। गामक बीचमे चौबट्टी। जइ चौबट्टीपर चारू-भरसँ तीस-पैंतीसटा छोट-छोट दोकान। दस-बारहटा दू-चारी घर, बाँकी कठघारा। ओना एक्कोटा नमहर दोकान नहि, मुदा सभ कथुक दोकान। जइसँ गामक लोककेँ हाट-बजार जाइक जरूरत कम पड़ैत। जहिया कहियो कोनो परिवारमे नमहर काज जेना बिआह, सराध इत्यादि होइत तखने बजार जाइक खगता पड़ैत। ओना भरि दिन चौकक दोकान खुजल रहैत मुदा गहिंकीक भीड़ साँझे-भिनसर होइत। भरि दिन लोक अपन-अपन काज-उदेम करैत आ साँझू-पहरमे दोकानक काज कऽ लइत। खाली चाहे-पानक बिकरी भिनसरु-पहरमे बेसी होइत।

चौकपर पहुँच बुचाइ दुनू चाहबलाकेँ एक-एक साए रूपैआ दऽ दोकानपर बैसल आ सभकेँ चाह पीअबैले कहलक। ..गाँजा पिआकक सेहो तीन ग्रुप चलैत। चाह पीब पान खा बुचाइ चिलमक ग्रुपमे पहुँच, दू दम लगा,

तीनू ग्रुपमे पचास-पचास रूपैआ गाँजा-ले दऽ देलक। सबहक मन खुशी भऽ गेलइ। मुस्कियाइत बुचाइ अमीन ऐठाम विदा भेल।

गाममे तीनटा अमीन। रामचन्द्र, खुशीलाल आ किसुनदेव। कहैले तँ तीनू अमीने मुदा पढ़ि कऽ अमीन रामचन्द्रेटा भेल। ..मिडिल पास केला पछाइत रामचन्द्र हाइ स्कूलमे नाओं नै लिखा सकल। आब तँ लगेमे हाइ स्कूल खुगि गेल छै, मुदा ओइ समैमे एक्कोटा हाइ स्कूल परोपट्टामे नै छल, जइसँ रामचन्द्र आगू नै पढ़ि सकल। बाहर पठा बेटा पढ़बैक ओकाइत रामचन्द्रक पिताकेँ नहि। सर्वे अबैसँ दस-पनरह बर्ख पहिने मुजफ्फरपुरक एकटा अमीन गाममे आबि अमानतक स्कूल खोललक। छह मासक कोर्स। चारि विषयक- पैमाइस, क्षेत्रमिति, कानून आ चकबन्दीक-पढ़ाइ। ओना समानो सभ जेना- गुनियाँ, परकाल, मास्टर, स्केल, लेन्स, राइटऐंगिल, प्लेन, टेबुल, कंघी, टाँक, थ्याजो रैटर, जंजीर, फीता इत्यादि रखने। पाँच रूपैआ महिना फीस लइत। मधुकान्तक दरबज्जेपर स्कूल खोललक। मधुकान्ते खैयो-ले दइ। जेकरा बदलामे मधुकान्तकेँ सेहो पढ़ा देलक। ओना गामोक आ गामक चारू-भरक गामक विद्यार्थी सेहो पढ़लक। कुल मिला कऽ पनरह गोरे पढ़लक। मुदा जमीनक नापी-जोखी कम होइत, तँए रामचन्द्र छोड़ि सभ अमीनी छोड़ि देलक।

सर्वे अबैसँ महिना दिन पूर्व बेगूसरायक एक गोरे आबि पँच-पँच साएमे अमानतक सर्टिफिकेट बेचए लगल। ओकरेसँ खुशीलालो आ किसुनदेवो सर्टिफिकेट कीनि लेलक। गामे-गाम सर्वे शुरू भेल। अमीन सबहक चलती आएल। नक्शा बनब शुरू होइते दलाली शुरू भेल। पाइ दऽ दऽ लोक अपन-अपन खेतक नक्शा बढ़बए लगल। लोकक दलाल अमीन आ सरकारक सर्वेयर। खुशीलालो आ किसुनदेवो उठि बैसल। मुदा रामचन्द्र कात रहल। गाए-महींस, गाछ-बिरीछ बेच-बेच लोक रूपैआ बुकए लगल। रामचन्द्र दबि गेल मुदा खुशीलाल आ किसुनदेव, नाओं कमा लेलक। जेमहर निकलैत तेमहर लोक सभ चाहो-पान करबै आ 'अमीन साहैब', 'अमीन साहैब' कहि परनामो करइ। दुनू गोरे सर्वेक नाँगैर पकैड़ किस्तवारसँ लऽ कऽ तसदीक खानापुरी, दफा-3, दफा-6,8,9 धरि दौग-बड़हा करैत रहल। जइसँ मोटर साइकिल मेण्टेन करए लगल।

खुशीलाल ऐठाम पहुँच बुचाइ श्रीकान्त दिससँ नापीक अमीन मुकर्रर कऽ लेलक। नापीक फीसक अतिरिक्त पक्ष लइक फीस सेहो गछि लेलक।

दोसर दिन मुकुन्दजी सेहो गाम पहुँचला। बाहरेसँ रहैक सभ ओरियान

केने एला। गाम अबिते दूटा जन रखि परती छिलबा रौटी ठाढ़ करौलैन। जखन जन जाए लगल तँ मुकुन्द पुछलखिन-

"गाममे के सभ नेतागीरी करैए?"

मुकुन्दजीक बात सुनि एक गोरे बुचाइक नाओं कहलकैन। बुचाइक नाओं सुनि मुकुन्द बजा आनैले कहलखिन। दुनू गोरे विदा भेल। दुनू कोदारि लऽ एक गोरे घरपर गेल आ दोसर गोरे बुचाइ ऐठाम। तैबीच मुकुन्दजी पत्नीकेँ कहलखिन-

"कनी चाह बनाउ?

पत्नी चाह बनबैक ओरियान करए लगली। गैस चुल्हिपर ससपेन चढ़ा बजली-

"केकरा-ले तीन महला मकान बनेलौं।"

पत्नीक बात सुनि मुकुन्दजीक करेज दहैल गेलैन। करेजकेँ दहैलते आँखिमे नोर आबि गेलैन। आँखि उठा पत्नी दिस देख नजैर निच्चाँ कऽ लेलैन। रूमालसँ नोर पोछि मुकुन्दजी मने-मन सोचए लगला जे अपन हारल केकरा कहबै! सपनोमे नै सपनाएल रही जे पढ़ल-लिखल मनुख एते नीच होइए। केते मेहनतसँ बेटाकेँ पढ़ेलौं..! नोकरी दिएलौं। नीक घर, नीक पढ़ल-लिखल कन्याँक संग बिआह करेलौं, मुदा फल उल्टा भेटल। पढ़ल-लिखल लोक जे अपन सासु-ससुरक संग एहेन बर्ताव करैए तँ लोक जीविए कऽ की करत? ऐसँ नीक मरब। मुदा मृत्युओ तँ ओते असान नहि, तहन तँ जे भाग-तकदीरमे लिखल अछि से भोगब। अगर जँ बुढ़ाड़ीमे गंजने लिखल रहत तँ कियो बाँटि लेत। ओ तँ विधाताक रेख छी, के बदैल देत..!

मुड़ी गोंतने मुकुन्द घुनघुना कऽ बजैत रहैथ। ..पत्नीक आँखि तँ ससपेनपर रहैन मुदा करेज पीपरक पात जकाँ, जे बिनु हवोक डोलैत, डोलैत रहैन। आँखिसँ समतल भूमिक पानि जकाँ नोर टघरैत रहैन...।

चाह बनल। दुनू गोरे आमने-सामने बैस पीबए लगला। एक-एक घोंट चाह पीब एक-दोसरक मुँह दिस तकैथ तँ मुदा कियो किछु बजैथ नहि। जेना दुनूक हृदैक भीतर विर्ड़ो उठैत रहैन। ..मुकुन्दजी दुइए घोंट चाह पीलैन, बाँकी सभ सरा कऽ पानि भऽ गेल। तही काल बुचाइ पहुँचल। अबिते बुचाइ दुनू हाथ जोड़ि, दुनू गोरेकेँ प्रणाम कऽ बैसल। बुचाइकेँ देखते मुकुन्द मनकेँ थीर करैत

पत्नीकेँ कहलखिन-

"भरि दिनक थकान देहकेँ खण्ड-खण्ड तोड़ैए। मन केनादन करैए। कनी एटैचीसँ एकटा बोतल नेने आउ। जाबे पीब नहि, ताबे कोनो बाते ने कएल हएत।"

पतिक बात सुनि पत्नी एटैचीसँ एकटा हजार एम.एल.क ब्राण्डीक बोतल आ दूटा गिलास निकालि कऽ आनि आगूमे रखि देलकैन। त्रिकोण जकाँ तीनू गोरे तीन दिससँ बैसल आ बीचमे लोहाबला मोड़ुआ टेबुल, जैपर गिलास बोतल राखल। ..बोतलक मुन्ना खोलि मुकुन्द अपनेसँ दुनू गिलासमे ब्राण्डी ढारलैन। एक गिलास अपने आ दोसर गिलास बुचाइ दिस बढ़ौलैन। ब्राण्डी देख बुचाइक मन चटपटाए लगल मुदा अनभुआर लोकक संग पीबैक परहेज करैत बाजल-

"काकाजी, ई सभ हम नै पीबै छी। गाममे हमरा केतए ई चीज भेटत। गरीब-गुरबा लोक छी, जँ कहियो मनो होइए तँ एक दम चीलममे लगा लइ छी। नहि तँ पीसुआ भाँगक एकटा गोली कहियो-काल चढ़ा दइ छिऐ।"

जिद् करैत मुकुन्द कहलखिन-

"ई तँ फलक रस छिऐ। कोनो की मोहुआ-दारू आकि पलोथिन छिऐ जे अपकार करतह।"

मुकुन्दक मनमे रहैन जे शराब पिआ बुचाइसँ सभ बात उगलबा लेब। जाबे गामक तहक बात नै बुझब ताबे किछु करब कठिन हएत। ..दुनू गोरे एक-एक गिलास पीलैन। गिलास रखि मुकुन्द सिगरेटक डिब्बा आ सलाइ निकालि, एकटा अपनो हाथमे लेलैन आ एकटा बुचाइयोकेँ देलखिन। दुनू गोरे सिगरेट पीबए लगला। सिगरेटक धुआँ मुहसँ फेकैत मुकुन्द बजला-

"बुचाइ, हम तँ आब बुड़हा गेलौं, तूँ सभ नौजवान छह। तोरे सभपर ने गामसँ लऽ कऽ देश तकक दारोमदार अछि। शहरमे रहैत-रहैत मन अकछा गेल। ओना, साले भरि नोकरियो अछि, तँए चाहै छी जे जल्दी नोकरी समाप्त हुअए जे गाम आबि अपन सर-समाजक बीच रहब। मुदा गाममे तँ अपना किछु अछि नहि। लऽ दऽ कऽ थोड़े घराड़ीटा अछि। जेकरा नपा कऽ घर बनबए चाहै छी। तइमे तूँ कनी मदैत कऽ दाए।"

बुचाइ-

"हमरा बुते जे हएत से जरूर कऽ देब। अहाँ तँ अपने तेतै कमा कऽ

टलिया नेने छी जे अनकर कोन जरूरत पड़त।"

मुकुन्द-

"तूँ तँ जनिते छहक जे सभ दिन नीक एयर कण्डीशन घरमे रहै छी, नीक गाड़ीमे चढ़ै छी, नीक लोकक बीच आमोद-प्रमोद करै छी, से केना हएत?

बुचाइ-

"अहाँ की कोनो खेती-पथारी करब आकि माल-जाल पोसब, जे तइले खेत-पथार चाही। लऽ दऽ कऽ रहैक घर चाही, से तँ घराड़ी अछिए।

मुकुन्द-

"कहलह तँ ठीके, मुदा रहैले तँ घर बनबए पड़त। बिजलियो तँ गाममे अछि नइ तइले जेनरेटर बैसबै पड़त, तहिना पानिक टंकी सेहो नहियेँ छै, तँए कलक संग-संग मोटर सेहो लगबए पड़त। गाड़ी रखैले घर आ साफ करैले जगह सेहो चाही। तहिना पैखानाक संग नहाइले सेहो घर चाही। तेतबे नहि, घरक आगूमे दसो धूरक फुलवाड़ी, बैसैले चबुतरा सेहो चाही। चारू-भर छहरदेवाली से बनबए पड़त। सभले तँ जमीने चाही।"

बुचाइ-

"हँ, से तँ चाहबे करी। मुदा हमरा की कहए चाहै छी?

मुकुन्द-

"तोरा यएह कहै छिअ जे अपना अढ़ाइए कट्ठा घराड़ी अछि तइमे सभ किछु केना हएत। कहुना कऽ दसो धूर बढ़बैक गर लगाबह।"

मुकुन्दक बात सुनि बुचाइक मनमे हँसी उठल। मुदा हँसीकेँ दबैत बाजल-

"देखियौ काका, पान-दस धूर जमीन अमीनक हाथमे रहै छै, मुदा ओ तँ तखने हएत जखन पंचो आ अमीनो पक्षमे रहत।"

मुकुन्द-

"तहीले ने तोरा बजेलियह। हमरा तँ केकरोसँ जान-पहचान नै अछि, तोरा तँ सभसँ छह। तँए, तूँ हमरा अप्पन बुझि मदैत करह।"

मने-मन बुचाइकेँ बुझि पड़लै जे ई पनहाएल गाए जकाँ छैथ, तँए सेरिया कऽ हिनका सिखबैक अछि। चपाड़ा दैत बाजल-

"देखियौ काका, गामक लोक गरीब अछि, ओ जे पक्ष लेत से ओहिना किए लेत। गौंआँक लिए जेहने अहाँ तेहने श्रीकान्त काका। तहन तँ कियो जे नेत घटौत से बिनु मीठ खेने किए घटौत?"

मुकुन्द-

"तइले हमहूँ तैयारे छी। जेना जे तूँ कहबह से हम देबह।"

बुचाइ-

"अच्छा हम भाँज-भूज लगबैले जाइ छी। मुदा काल्हि खन श्रीकान्त काका सेहो कहने रहैथ। ओना हम हुनका कहि देने रहिऐन जे अमानतक दिन हमहूँ रहब। तँए थोड़े दिक्कत हमरा जरूर अछि। मुदा तैयो दिन-देखार तँ हम अहाँक भेँट नै करब, साँझमे जरूर करब। जेना जे हेतै से सभ बात अहाँकेँ कहैत रहब आ अहूँ ओइ हिसाबसँ अपन गर अँटबैत रहब। ओना, गाममे अखन सरूपक संग बेसी लोक छै, तँए अहाँकेँ ओकरासँ भेँट करा दइ छी। ओ जँ तैयार भऽ जाएत तँ कियो ओकरा रोकि नै सकतै।"

"बड़बढ़ियाँ।"

कहि मुकुन्द बैगसँ दस हजार रूपैआ निकालि बुचाइकेँ दऽ देलखिन।

रूपैआ गनि बुचाइ बाजल-

"ऐसँ की हएत? हम ने गामक पेंच-पाँच बुझै छी। काजो तँ उकड़ूए अछि।"

"एते ताबे राखह। जेना-जेना काज आगू बढ़ैत जाएत तेना-तेना कहैत जैहह।"

"बड़बढ़ियाँ।"

कहि बुचाइ प्रणाम कऽ विदा भेल।

मने-मन मुकुन्द सोचए लगला जे भलेँ श्रीकान्तो इंजीनियरे छैथ मुदा जेते पाइ हम कमेलौं तेते हुनकर नन्नो ने देखने हेतैन। भऽ जाए पाइयेक भिड़न्त। मने-मन सोचबो करैथ आ खुशियो होथि।

मुकुन्द ऐठामसँ निकलला पछाइत रस्तामे बुचाइक छगुन्ता बढ़लै जाइ, मनमे अबै- आरौ बहिं, आइ धरि एहेन-एहेन बुढ़बा चोट्टा नइ देखने छेलौं। जिनगी भरि पाइए होंसतैत रहल मुदा सबुर नइ भेलइ। अच्छा, ऐ बेर दुनू

सिखता। जइ गामक लोक आइ धरि सहि-मरि अपन बाप-दादाक गाम आ घराड़ी धेने रहल, समाजक बेर-बिपैतमे संगे प्रेमसँ रहल ओइ गाममे जँ एहेन-एहेन चोट्टा आबि कऽ रहत तँ कए दिन गामकेँ सुख-चैनसँ रहए देत। सभकेँ टीकमे टीक ओझरा नाशे करत किने..!"

दोसर दिन, सबेरे सात बजे बुचाइ सरूप ऐठाम पहुँचल। दुनूकेँ बच्चेसँ दोस्ती, तँए धियो-पुता भेलोपर दुनूक बीच रउए-रउ चलैत। सरूपकेँ दरबज्जापर नइ देख बुचाइ हाक पाड़ए लगल-

"दोस छेँ रौ, रौ दोस?"

अँगनाक दछिनबरिया ओसारपर बैस सरूप दारूक बोतलक मुन्ना खोलैत रहए। बुचाइक अवाज सुनि, बाजल-

"हँ, दोस रौ, आ-आ, अँगने आ।"

घरक कोणचर लग अबिते बुचाइ सरूपक घरवालीकेँ देख बाजल-

"दोस रौ, दोस्तिनीक थुथुन बड़ लटकल देखै छियौ। रौतुका झगड़ा अखन तक लदनहि छेँ, फरियेलौ हेन नहि। हम तँ रौतुका झगड़ा रातिए-मे उठा-पटक करैत फरिया लइ छी आ तूँ अखन तक रखनहि छेँ।"

बुचाइक बात सुनि सरूप बाजल-

"धुर बुड़ि, सभ दिन एक्के रंग रहि गेलेँ। कहियो तोरा बजैक ठेकान नै हेतौ।"

बाजि सरूप पत्नीकेँ कहलक-

"एकटा गिलास नेने आउ?"

एकटा गिलास आनि पत्नी सरूपक आगूमे रखलक। दुनू गोरे एक-एक गिलास दारू पीलक। बोतलकेँ डोला कऽ देख सरूप फेर दुनू गिलासमे ढारए लगल। तैबीच बुचाइ बाजल-

"एक गिलास दोस्तिनियोँकेँ दहुन?"

बुचाइक बात सुनि कला बजली-

"हम नै गाइक गोंत पीबै छी।"

बुचाइ-

"कनी पी कऽ देखियौ जे केहेन ताउ चढ़ैए।"

कला मुस्कियाए लगली, तैबीच बात बदलैत सरूप बाजल-

"भोरे-भोर दोस किमहर एलेँ?"

जेबीसँ पाँच हजार रूपैआक गड्डी निकालि बुचाइ सरूपक आगूमे रखैत बाजल-

"ले, ई तोहर हिस्सा छियौ। गाममे दूटा मोकिर फँसलौ हेन। तँए सेरिया कऽ दुनूकेँ सिखबैक छौ। एकटाकेँ हम संग देबै आ दोसरकेँ तूँ दही। जहिना धिया-पुता दूटा मुसरीकेँ नाँगैर पकैड़ लड़बैए तहिना दुनू गोरे दुनूकेँ लड़ा।"

सरूपक आगूमे रूपैआ देख कलाक मुहसँ हँसी निकललैन। हँसी देख बुचाइ बाजल-

"एकटा बात बुझै छिऐ दोस्तिनी, लछमी दुइए-टा होइए। एकटा घरवाली आ दोसर रूपैआ। दोस, तोहर भाग बड़ जोरगर छौ। किएक तँ दुनू तोरा लगेमे छौ।"

बुचाइक बात सुनि कला पाछू दिस मुँह घुमा लेली। कलाकेँ पाछू-मुहेँ घुरल देख बुचाइ बाजल-

"मुँह घुमौने नै हएत दोस्तिनी। अहीमे-सँ रूपैआ लिअ आ दोकानसँ अण्डा नेने आउ। भुजल चूड़ा आ अण्डाक कोफ्ता खुआउ।"

एकटा पचसटकही लऽ कला अण्डा आनए दोकान विदा भेली। खाली अँगना देख बुचाइ सरूपकेँ फुसफुसाइत कहलक-

"दोस, दूटा जुएलहा चोर गाम एलौ हेन। दुनू जेहने 'चोर' तेहने 'लोभी' अछि। दुनू अपन-अपन घराड़ी नपौत। दुनूकेँ अढ़ाइ-अढ़ाइ कट्ठा जमीन छै, जे खतियानी छिऐ। किएक तँ दुनू एक्के वंशक छी। एक-पुरखिया अछि तँए दोसर-तेसर नइ छइ। दुनू चाहैए जे हमरा तीन कट्ठा हुअए तँ हमरा तीन कट्ठा हुअए। दुनूकेँ पाइक गरमी छै, तँए एक-दोसरकेँ निच्चाँ देखबै चाहैए। गामक लोक तँ दुनूक नजैरमे बोन झाँखुर छी। से थोड़े हुअए देबइ। पैयो खा जेबै आ सुपत-सुपत बँटबरो करा देबइ।"

कनी काल गुम्म रहि सरूप बाजल-

"आँइ रौ दोस, अपने सभ कोन नीक लोक छेँ रौ। भरि दिन झूठ-फूस बजै छी, ताड़ी-दारू पीबै छी, तहन नीक केना भेलौं रौ।"

बुचाइ-

"धुर बुड़ि, तोरा निशाँ चढ़ि गेलौ, तँए नइ बुझै छीही। तोहीं कह जे गाममे कोनो जातिक लोक किए ने हुअए मुदा जहन मरैए तँ कठियारी जाइ छिऐ की नहि? गरीबसँ गरीब लोक किए ने हुअए, कियो बिनु कफने जरौल गेल? अपना हाथमे जँ पाइ नहियोँ रहल तँ दू-चारि गोरेसँ मांगि-चांगि पूरा दइ छिऐ की नइ? तेसर सालक गप मन छौ की नहि, देखने रही किने जे मखनाक गाए बाढ़िमे भँसल जाइत रहै तँ भरि छाती पानिमे सँ पकैड़ अनलौं। मोतिया बेटीक बिआह कोन पेंचपर करा देलिऐ से बिसैर गेलही। खंजनमा-डोमक घरमे जे आगि लगल रहै तँ देखने रही की नै जे अपन घैलची परहक घैल लऽ कऽ सभसँ पहिने आगि मिझबैले गेल रहिऐ। हमरा देखलक तहन पाछूसँ सभ गेल। जइकेँ चलैत माए केते दिन तक गरियबैत रहल आ कहैत रहल जे तहूँ छुबा गेलेँ आ चैलो छुबा गेल। आँइ रौ, गारियो-फज्झैत सुनि कऽ जे सेवा करै छी उ धरम नइ भेल?"

मुड़ी डोलबैत सरूप बाजल-

"हँ, से तँ ठीके कहै छेँ।"

बुचाइ-

"हम श्रीकान्त कक्काक पछ लऽ कऽ रहब आ तूँ मुकुन्द काकाकेँ संग दहुन। जहिना इलेक्शनमे परचार करैक, ऑफिस चलबैक, चाह-पानक खर्च, लॉडस्पीकर आ सवारीक खर्च, तैसंग बूथपर दसटा कार्यकर्ता रखैक खर्च, एजेंटक खर्च, नेता सबहक सुआगत-ले मेहराउ बनबैक खर्च नेतासँ लइ छिऐ तहिना अखनसँ जाबे तक नापी हेतै ताबे तकक खरचा दुनू गोरेसँ दुनू गोरे लेब। हेतै तँ उचिते मुदा ठकसँ ठकब कोनो पाप थोड़े छी।"

सरूप-

"केना-केना पाइ लेबही से तँ प्लानिंग कऽ लेमे किने?"

बुचाइ-

"घबराइ छँए किए, इलेक्शनोसँ बेसी लेबइ। अमीनक घूस, पंचक घूस, चौक-चौराहाक चाह-पान-गाँजा-भाँग आ ताड़ी-दारूक, तैसंग लठैतक खर्च। केतेक कहबौ। जेना-जेना काज अबैत जेतै तेना-तेना टनैत जेबइ। अखन जे आएल हेन ओ सगुन छी। साँझमे जहन खूब अन्हार तेसर साँझ भऽ जेतै तहन चलिहेँ। तोरा दुनू गोरेकेँ मुँह-मिलानी करा देबौ। चौकपर दूटा चाहक दोकान छेबे करै, एकटा पर साँझ-भिनसर तूँ बैसिहेँ आ एकटा पर हम बैसब। तूँ

मुकुन्दजी दिससँ बजिहें जे हुनका तीन कट्ठा घराड़ी छैन आ दोसरपर हम बैस बाजब। मुदा एकटा बात मन रखिहें जे जहन श्रीकान्त काका चौकपर आबैथ, तखन अपने दिससँ चाह-पान खुआ, हुनके बात बजिहें आ जखन मुकुन्द काका औता तँ हमहूँ बाजब। जइसँ हुनका सभकें हेतैन जे सौंसे गौंआँ हमरे दिस अछि। अखन तँ गौंआँ सभकें चाहे-पान आ गँजो-ताड़ी पइर लगतै मुदा नापी दिन पुड़ी-जिलेबी जलखैमे आ मौस-भात कलौमे भोजन करा देबइ।"

सरूप-

"बड़बढ़ियाँ प्लानिंग छौ।"

बुचाइ-

"हम श्रीकान्त काका दिससँ खुशीलाल अमीनकें ठीक केलौं हेन, तूँ मुकुन्द काका दिससँ किसुनदेव अमीनकें ठीक करिहें। दुनू अमीन तँ दुनू पार्टीक हएत, मुदा एकटा मध्यस्त अमीन सेहो चाही। तइले रामचन्द्र भायकें पकैड़ लेब। तहिना गामोक लोक तँ दुनू दिस बँटाएल रहत, मुदा एक्कोटा तँ तेहल्ला पंच चाही, तइले गुरु काकाकें पकैड़ लेब। जखने गुरु काका पंच आ रामचन्द्र भाय अमीन रहता तखने एक्को तिल जमीन एमहर-ओमहर थोड़े हएत।"

दोसर दिन बुचाइयो आ सरूपो गुरु काका लग पहुँचल। गुरु काका दलानेपर बैसल छला। गुरु काकाकें प्रणाम करैत दुनू गोरे बैसल। दुनूकें एक संग देख गुरु काका बजला-

"की बात छिऐ हौ बुचाइ! दुनू भजारकें संगे देखै छिअ?"

बुचाइ-

"अहीं लग एलौ हेन काका। श्रीकान्तो काका आ मुकुन्दो काका घराड़ी नपौता, तहीमे अपनो रहबै।"

गुरु काका-

"की करता ओ सभ घराड़ी नपा कऽ। केहेन बढ़ियाँ तँ धिया-पुता सभ खेलाइए।"

सरूप-

"रिटायर केला पछाइत गामेमे रहता, नोकरियो लगिचाएले छैन। तँए अखने नपा कऽ घरमे हाथ लगौता।"

गुरु काका-

"सुनै छी जे दुनू गोरे शहरेमे घर बनौने छैथ, तहन गामोमे अनेरे किए बनौता, हुनका सभकें गाममे थोड़े बास हेतैन। जिनगी भरि तँ बड़का-बड़का होटल देखलैन, नीक रोडपर नीक सवारीमे चललैथ, दामी-दामी वेश्यालय देखलैन, से सभ गाममे थोड़े भेटतैन। अनेरे गाममे आबि कऽ किए थाल-कादोमे चलता आ मच्छर कटौता?"

गुरु कक्काक बात सुनि लपैक कऽ बुचाइ बाजए लगल-

"से नै बुझलिऐ काका, दुनू गोरे भारी चोट खा कऽ चोटाएल छैथ। तँए गाम दिस झुकला।"

अकचकाइत गुरु काका पुछलखिन।

"से की?"

बुचाइ कहए लगलैन-

"तेसर सालक घटना छिऐ। श्रीकान्त कक्काक पत्नी ड्राइवरकें संग केने बजार गेली। बजारसँ समान कीनि जहन घुमली तँ दोसर गाड़ी सेहो पछुअबैत रहैन। जहन पाँतरमे गाड़ी पहुँचलैन तँ पैछला गाड़ी आगू आबि रोकि देलकैन। गाड़ीसँ चारि गोरे उतैर हिनका गाड़ीमे बैस ड्राइवरकें दोसर रस्तासँ बढ़बैले कहलक। वेचारा की करैत। बढ़ल। थोड़े दूर गेलापर गाड़ी रोकि, काकीकें उतारि ड्राइवरकें कहलकै, मालिककें जा कऽ कहुन जे पाँच लाख रूपैआ नेने आबैथ आ पत्नीकें लऽ जाइथ। दू घन्टाक समए दइ छिअ। ..ड्राइवर विदा भेल। एमहर काकीकें चारि-पाँच ठूसी मुँहमे लगा देलकैन। जइसँ ऐगला चारिटा दाँतो टुटि गेलैन। ठोह फाड़ि कऽ कानए लगली। कनिते काल मोबाइल दऽ कहलकैन जे पतिकें कहियौन जे जल्दी रूपैआ लऽ कऽ आउ नहि तँ हम नै बँचब। ..ताबे ड्राइवरो पहुँच कऽ कहलकैन। अपना हाथमे दुइए लाख रूपैआ छेलैन, जे हालक आमदनी रहैन बाँकी रूपैआ सभ बैंकमे रहैन। वएह दुनू लाख रूपैआ लऽ कऽ गेला आ पएर-दाढ़ी पकैड़ कऽ पत्नीकें छोड़ा अनलैन।"

बुचाइक बात सुनि ठहाका दैत गुरु काका बजला-

"आ मुकुन्द किए औता?"

मुस्कियाइत बुचाइ-

"हुनकर तँ आरो अजीव बात छैन। एक दिन एकटा ठीकेदारक पार्टी

चललै। जेते बड़का-बड़का हाकिम आ ठीकेदार सभ छल, सभ रहए। मुकुन्द अपन पुरना गाड़ी छोड़ि नवका गाड़ी, जे बेटाकें सासुरमे देने रहैन, लऽ कऽ गेला। जहन पार्टीसँ घुमि कऽ एला तँ पुतोहु कहलकैन- पुतोहुक गाड़ीपर चढ़ैत केहेन लगल? ऐ बातक चोट हुनका खूब लगलैन। बेटा-पुतोहुसँ मोह टुटि गेलैन। तँए गामेमे रहता।"

बुचाइक बात सुनि गुरु काका गुम्म भऽ जेना किछु सोचए लगला। कनी कालक पछाइत बजला-

"गाम तँ गामे छी। शुद्ध मिथिला। भारत। जे स्वर्गोसँ नीक अछि। मुदा सभ गामक अपन-अपन चरित्र आ प्रतिष्ठा छइ। जे चरित्र आ प्रतिष्ठा गामक कर्मठ, तियागी लोकैन बनौने छैथ, अपन कठिन मेहनत आ कर्तव्यसँ सजौने छैथ। ओकरा जीवित राखब तँ अखुनके लोकक कान्हपर भार अछि। नोकरीक जिनगीमे किछु कियो केलैन तइसँ समाजकें कोन मतलब, अपना-ले केलैन। समाजक एक अंग होइक नाते हुनको सबहक कान्हपर किछु भार छेलैन जे अखन धरि थोड़बो नहि निमाहि सकला। मुदा तैयो जँ समाजमे आबि, समाज रूपी फुलवाड़ीमे फूल लगबए चाहता तँ बढ़ियाँ बात। मुदा से लक्षण-करणसँ नै बुझि पड़ैए। समाजमे रहैले समाजक चरित्रक अनुकूल अपन चरित्र बनौता तखने ने समाजमे अँटाबेश हेतैन। ई तँ नहि जे गदहा गेल स्वर्ग तँ छान-पगहा लगले गेलइ।"

गुरु कक्काक बात सुनि बुचाइयो आ सरूपो एक्केबेर पुछलकैन-

"काका, गामक विषयमे हम सभ किछु ने बुझै छी, से कनी बुझा दिअ?"

गुरु काका-

"अखन काजक बेर अछि तँए बहुत बात तँ नइ कहि सकबह, मुदा जहन बुझैक जिज्ञासा छह तँ दूटा बात जरूर कहबह। देखहक, गामक पढ़ल-लिखल वा बिनु पढ़ल-लिखल लोक, पेट भरै दुआरे नोकरी करैले बाहर जाइ छैथ, नीक बात। मुदा गामकें सोलहन्नी नै छोड़ि दैथ। अखन देखै छी जे अमेरिका, इंग्लैडसँ लोक तीन दिनमे गाम आबि सकै छैथ। तँए सालमे कम-सँ-कम एक्को बेर, नहि तँ हुनको गाम छिऐन, केतेको बेर आबि सकै छैथ। जइसँ गामक लोक आ खेत-पथारक संग सम्बन्ध बनल रहतैन। मुदा से नै कऽ गामकें सोलहन्नी छोड़ि, अनतहि घर बना रहए लगै छैथ, ओ गामक दुर्भाग्य छी। जेकर फल होइए गामक ज्ञान निर्यात भऽ जाइए। जइसँ सूतल गाम सुतले रहि जाइए। संगे

गामक बेवहार, कला-संस्कृति सभ टुटि जाइए। रिटायर केला पछाइत वा जिनगीक अन्तिम अवस्थामे, जँ कियो गाम आबि रहए चाहता तँ हुनका गाम केहेन लगतैन। डेग-डेगपर टक्कर आ बात-बातमे विवाद हेबे करतैन। ..दोसर बात सुनह, अपना गाममे वैदिकजी भेल छैथ। जिनके पोता शुभकान्त छिऐन। वेदक प्रकाण्ड विद्वान वैदिकजी। नाओं तँ छेलैन गंगाधर मुदा वैदिकजी नाओंसँ विख्यात भेला। अपनो राज्यमे आ आनो-आनो राज्यमे जहन पण्डितक बीच शास्त्रार्थ होइ तँ हुनकर जवाब देनिहार कियो ने ठहरैत। अनेको तगमा आ प्रशस्ति पत्र भेटलैन। अखनो परोपट्टाक लोक हुनके नाओंपर अपना गामक नाओं 'वैदिकजीक गाम' बुझैए। हुनके चलौल अपना गामक पानि छी। पहिने पानिक छुआ-छूत अपनो गाममे छल, मुदा ओ सभकें बैसार करा कऽ बुझा देलखिन जे दुनियाँमे जेते मनुख अछि, सभ मनुख छी, तँए मनुख-मनुखक बीच छुआ-छूत नै हेबा चाही। थोपड़ी बजा सभ हुनकर विचारक समर्थन कऽ देलक। ओइ दिनसँ पानिक छुआ-छूत गामसँ मेटा गेल। तहिना दोसर भेल जोगिनदर, भिखारी दासक पक्का चेला। अजीब कला हुनकोमे छेलैन। जहिना नचैमे अगिया-बेताल, तहिना गीत गबैमे। जे पार्ट लऽ कऽ स्टेजपर अबैत, धऽ कऽ झहरा दइत। एहेन बिपटा अखन धरि कोनो नाचमे नइ देखलिऐ। ओकरे परसादे गाममे भिखारी दासक नाच केतेको बेर भेल। जहन भिखारी दासक पार्टी छपरासँ पूब-मुहें असाम, बंगाल, नेपाल विदा होइ तँ अपने गाममे रूकइ। खाली खेनाइ आ इजोतक खर्च गौंआँक होइ। तहिना जब तीन-चारि मासमे घुमै तँ फेर अँटकै। तहिना भेल महावीर। वेचारा बड़ गरीब छल। नोकरी करैले कलकत्ता गेल। मुदा नोकरी नै कऽ रिक्शा चलबए लगल। अजीब संस्कार ओकरोमे छेलइ। रिक्शो चलबै आ गीतो-कविता बनबै। पहिने तँ लिखल-पढ़ल नै होइ, मुदा अ-आसँ सीखब शुरू केलक। किछुए दिनक पछाइत लिखबो आ पढ़बो सीखि लेलक। रिक्शापर जहन चलै तँ अपन बनौल गीत गाबए। एक दिन एकटा साहित्य प्रेमी रिक्शापर चढ़ल रहैथ आ महावीर रिक्शो चलबै आ गीतो गबइ। उतरै काल कवि पुछि देलखिन। सभ बात महावीर कहलकैन। ओ एकटा कवि गोष्ठीमे आमंत्रित कऽ देलखिन। ओइ गोष्ठीमे पहुँच महावीर तीनटा कविता आ दूटा गीत गौलक। तइ दिनसँ कवि गोष्ठीमे आमंत्रित हुअ लगल। बंगाल सरकार दस हजारक पुरस्कार आ प्रशस्तिपत्रसँ सम्मानित केलकैन। तहिना भेल कारी खलीफा। जेकरा इलाकाक लोक खलीफा मानैत। बड़का-बड़का दंगलमे पहुँच ओ आन-आन जिलाक केतेको खलीफाकें पटकलक।

ओकरा चलैत गाममे कियो केकरो बहु-बेटीकेँ खराब नजैरसँ नै देखैत। एक बेर एकटा घटना जमीनदारक सिपाहीक संग घटलै। एक साए लाठी सिपाहीकेँ समाजक बीचमे मारलकै। तही दिनसँ जमीनदार दू बीघा खेत ओहिना दऽ देलकै। एहेन-एहेन पण्डित, कलाकारक बनौल गाम छी, तेकरा हम सभ अपना जीबैत केना दुइर कऽ देबइ। आइ जँ गाम दुइर हएत तँ ऐगला पीढ़ी केकरा गारि पढ़तै। तँए जँ दुनू गोरे मनुख बनि गाममे रहए चाहता तँ बड़बढ़ियाँ, नहि तँ गाममे रहने कियो समाज तँ नहि बनि जाइत।"

अमानत भेल। कोनो बेसी झमेल रहबे नै करइ। पाँच कट्ठाकेँ दू भाग केनाइ। बँटवारा करि रामचन्द्र अमीन बजला-

"जिनका संदेह हुअए ओ चाहे कड़ीसँ वा फीतासँ वा लग्गीसँ आकि डेगसँ भजारि लिअ।"

❍

शब्द संख्या : 4789

भैयारी

मैट्रिक परीक्षा दऽ दीनानाथ आगू पढ़ैक आशसँ, संगियो-साथी आ शिक्षको ऐठाम जा-जा विचार-विमर्श करए लगल। बिनु पढ़ल-लिखल परिवारक रहने, कौलेजक पढ़ाइक तौर-तरीका नै बुझैत। ओना ओ हाइ स्कूलमे थर्ड करैत मुदा क्लासमे सभसँ नीक विद्यार्थी। सभ विषय नीक जकाँ परीक्षामे लिखने, तँए फेल करैक चिन्ता मनमे एक्को मिसिया रहबे ने करइ।

मुरूख रहितो माए-बाप बेटाकेँ पढ़बैमे जी-जान अरोपने। ओना घरक दशा नीक नहि, मुदा पढ़बैक लीलसा दुनू परानी रामखेलौनक ह्रदैमे कुट-कुट कऽ भरल। जखन दीनानाथ मैट्रिक परीक्षा दइले दरभंगा सेन्टरपर जाइक तैयारी करए लगल, तखन माए अपन नाकक छक, जे डेढ़-अना माने छह पाइ भरिक रहै, बेच कऽ देलकै। अगर जँ माए-बापक मन बेटा-बेटीकेँ पढ़बैक रहत आ थोड़बो मेहनतसँ ओ पढ़त तँ लाख समस्याक बावजूद ओ पढ़बे करत। तहीमे सँ एक दीनानाथो।

काल्हि एगरबजिया गाड़ीसँ दीनानाथ परीक्षा दिअ जाएत तँए आइए साँझमे रामखेलौन पत्नीकेँ कहलक-

"काल्हि एगारह बजे बौआ गाड़ी पकड़त तँए अखने केकरोसँ आध सेर दूध आनि कऽ पौड़ि दियौ, दहीक जतरा नीक होइ छइ।"

पतिक बात सुमित्राकेँ मनमे जँचलै। आध सेर दूध पौड़ैक विचार कऽ मने-मन बरहम बाबाकेँ कबुलो केलक जे 'अहाँ हमरा बेटाकेँ पास करा देब तँ कुमारि भोजन कराएब।' तैसंग सुमित्रा हाँइ-हाँइ कऽ चिकनी माटि लोढ़ीसँ फोड़ि अछींनजल दऽ सानि, दियारी बना, साफ पुरना कपड़ाक टेमी बना, दियारीमे करूतेल दऽ साँझ दिअ बरहम स्थान विदा भेल। रस्तामे मने-मन बरहम बाबाकेँ कहैत जे 'हे बरहम बाबा कहुना हमरा बेटाकेँ पास कऽ दिहक, तोरेपर असरा अछि।'

स्कूलमे सभसँ नीक विद्यार्थी दीनानाथ, मुदा नीक रहितो क्लासमे थर्ड करैत। एकर कारण रहै जे हाइ स्कूल सेक्रेट्रीक मातहत चलइ। जइसँ स्कूलक

सर्वेसर्वा सेक्रेट्रीए। इज्जतो दुआरे आ फीसोक चलैत स्कूलमे फस्ट सेक्रेट्रीए-क लगुआ-भगुआ करै आ जँ कहीं सेक्रेट्रीक समांग नै रहल तखन हेडमास्टरक समांग फस्ट करइ। मुदा ऐ बैचमे सेक्रेट्रियोक समांग आ हेडमास्टरोक समांग, तँए सेक्रेट्रीक समांग फस्ट करैत आ हेडमास्टरक समांग सेकेण्ड आ दीनानाथ थर्ड। जे फस्ट करैत ओकरा पूरा फीस आ सेकेण्ड-थर्डकेँ अदहा फीस माफ होइ। ओना, आन शिक्षक सभकेँ ऐ बातक क्षोभ होनि मुदा कैयो की सकै छला। किएक तँ आन शिक्षक सबहक गति कोठीक नोकरसँ नीक नहि, सात घण्टी पढ़ौनाइ आ डेढ़ साए रूपैआ महिना पौनाइ मात्र रहैन। मुदा तैयो ओ सभ इमानदारीसँ काज करैथ। असिसमेंटक चलैन सेहो रहइ। बीस नम्बरक हिसाबसँ सभ विषयक असिसमेंट होइत। खाली समाजे-अध्ययनक हिसाब अलग रहइ। असिसमेंटक नम्बर परीक्षाक नम्बरमे जोड़ि कऽ रिजल्ट होइत। जे असिसमेंटक नम्बर सेक्रेट्री आ हेडमास्टरक हाथक खेल छल। परीक्षाक तीन मासक पछाइत रिजल्ट निकलै छल।

मास दिन परीक्षाक बीत गेल। दू मास रिजल्ट निकलैमे बाँकी। माघक अन्तिम समए। सरस्वती पूजा पाँच दिन पहिनहि भऽ गेल। शीतलहरी चलैत रहइ। जइसँ मिथिलांचल साइबेरिया बनि गेल छल। रातिए जकाँ दिनो, दुनू एक्के रंग। बर्खाक बून जकाँ ओस टप-टप खसैत। सुरूजक दर्शन दू माससँ कहियो ने भेल। दिन-राति कखन होइ ओ लोक अन्हारेसँ बुझैत। सभ अपन-अपन जान बँचबै पाछू पड़ल।

खेती-पथारीक काज सबहक बन्न। रब्बी-राइ ठण्डसँ कठुआएल, जइसँ बढ़बे ने करैत। झोली ओढ़ोला पछाइतो माल-जाल थरथर कँपैत। जहिना महींसक बच्चा तहिना गाइक बच्चा कठुआ-कठुआ मरैत। बकरी-ले तँ फौतीए आबि गेल। गाछ सभ परहक घोरन सुड्डाह भऽ गेल। चिड़ै-चुनमुनीसँ लऽ कऽ नढ़िया, खिखिर, साँप इत्यादि मरि-मरि जेतए-तेतए गन्हकैत।

माघक पूर्णिमासँ दू दिन पूर्व रामखेलौनकेँ लकबा लपैक लेलक। सौंसे देहक अदहा भाग सुन्न भऽ गेलइ। क्रियाहीन। बिठुओ कटलापर किछु नइ बुझैत। चिड़ैक लोल सन टेढ़ मुँह भऽ गेलइ। ओना, उमेरो कोनो बेसी नहि, चालीस बर्खसँ भीतरे छेलइ। रौतुका समए। शीतलहरीक चलैत अन्हारो बेसी। ओना, पख इजोरिये रहै, मुदा भादबक अन्हार जकाँ अन्हार।

पिताक दशा देख दीनानाथक मन घबरा गेल, तहिना मैयोक। मुदा तैयो

मनकेँ थीर करैत दीनानाथ डाक्टर ऐठाम विदा भेल। किछु दूर गेलापर पएर तेना कठुआ गेलै जे चलिए ने होइ, बुझि पड़लै, बाबूसँ पहिने अपने मरि जाएब, घरोपर घुमि कऽ नै गेल हएत। ..असोथकित दीनानाथ बीच पाँतरमे असगरे। दुनू आँखिसँ दहो-बहो नोर खसए लगलै। मनमे एलै, आब की करब? मुदा फेर मनमे एलै, हाथसँ ठेहुन रगड़लापर पएर हल्लुक हएत। सएह करए लगल। जाँघ हल्लुक भेलइ। हल्लुक होइते डाक्टर ऐठाम विदा भऽ गेल।

डाक्टर ऐठाम पहुँचते रोगीक भीड़ देख दीनानाथ फेर घबरा गेल। बुझि पड़लै, सौंसे दुनियाँक रोगी एतै जमा भऽ गेल अछि। असगरे डाक्टर साहैब छैथ आ दूटा कम्पाउण्डर छैन, केना सभकेँ देखथिन। मुदा रोगो एकरंगाहे, तँए बेसी मत्था-पच्ची डाक्टरकेँ करैये ने पड़ैन। धाँइ-धाँइ इलाज करैत जाइथ। मुदा मेले जकाँ रोगी एबो करए। थोड़े काल ठाढ़ भऽ कऽ देख दीनानाथ सिरसिराइते डाक्टर लगमे जा बाजल-

"डाक्टर साहैब, कनी हमरा एठीम चलियौ। हमर बाबू एते बिमार भऽ गेल छैथ जे अबै-जोकर नै छथिन।"

दीनानाथक बात सुनि डाक्टर बजला-

"बौआ, ऐठाम तँ देखते छी, केना एते रोगी छोड़ि कऽ जाएब? जे ऐठाम पहुँच गेल अछि ओकरा छोड़ि कऽ जाएब उचित हएत।"

"समए रहैत जँ हमरा ऐठाम नै जाएब तँ बाबू मरि जेता।"

"अहाँ घबराउ नै तत्खनात दूटा गोटी दइ छी। हुनका खुआ देबैन आ एतै नेने अबियौन।"

दीनानाथक मनमे पिताक मृत्यु नाचए लगल। मन मसोसि दुनू गोटी लऽ विदा भेल। मुदा घर दिस बढ़ैक डेगे ने उठइ। एक तँ ठण्ढ, दोसर मनमे निराशा आ तेसर शीतलहरीसँ रातियो अन्हार। मुदा तैयो जिबठ बान्हि दीनानाथ विदा भेल। कच्ची रस्ता रहने जेतए-तेतए मेगर आ तैपर सँ केतेठाम टुटलो। जइसँ कए बेर खसबो कएल मुदा तैयो डूबा बान्हि उठि-उठि आगू बढ़िते रहल। घरपर अबिते, दुनू गोटी पिताकेँ खुऔलक। तैबीच माए गोइठाक घूर कऽ सौंसे देह सेदैत। अपना खाट नहि। एते रातिमे केकरा कहब। मुदा पितियौत भाइक खाट मन पड़लै। मन पड़िते पितियौत भाय लग जा दीनानाथ बाजल-

"भैया, खाटो दिअ आ संगे चलबो करू। एहेन समैमे अनका केकरा

कहबै, के जाएत?”

दीनानाथक बात सुनिते पितियौत भाय धड़फड़ा कऽ उठि खाट नेनहि बढ़ल। खाटपर एक पाँज पुआर बिछा सलगी बिछौलक। दुनू पाइसमे बरहा बान्हि खाट तैयार केलक। खाट तैयार होइते दुनू गोरे रामखेलौनकेँ उठा ओइपर सुतौलक। बड़हामे बाँस घोंसिया दुनू गोरे कान्हपर उठा विदा भेल। पाछू-पाछू सुमित्रो विदा भेली। थोड़े काल तँ दीनानाथ किछु नै बुझलक मुदा पछाइत कन्हा भकभकाए लगलै। कान्ह परहक छाल ओदैर गेलइ। जइसँ बाँस कान्हपर रखले ने होइ। लगले-लगले कान्ह बदलए लगल। मुदा जिबट बान्हि डाक्टर ऐठाम पहुँच गेल।

डाक्टर ऐठाम पहुँचते डाक्टर साहैब देखलखिन। बेमारी देखारे रहइ। धाँइ-धाँइ पाँचटा इन्जेक्शन लगा देलखिन। इन्जेक्शन लगा डाक्टर साहैब दीनानाथकेँ कहलखिन-

“हिनका खाटेपर रहए दियौन। बेसी चिन्ता नै करू। तहन तँ नमहर बेमारी पकड़नहि छैन, किछु दिन तँ लगबे करत।”

रामखेलौनकेँ नीन आबि गेलइ। खाटक निच्चाँमे तीनू गोरे बैसल। सुमित्रा मने-मन सोचैत, समए-साल तेहने खराब भऽ गेल अछि जे बेटा-पुतोहु केकरा देखै छइ। जाबे पति जीबैत रहै छै ताबे स्त्रीगण गिरथाइन बनल रहैए। पुरुखकेँ परोछ होइते दुनियाँ अन्हार भऽ जाइ छइ। बिनु पुरुखक स्त्रीगण ओहने भऽ जाइए जेहने सुखाएल गाछ। कहलो गेल छै जे साँइक राज अप्पन राज, बेटा-पुतोहुक राज मुँहतक्की। मुदा की करब। अपन कोन साध। ई तँ भगवानेक डाँग मारल छिऐन। हे माँ भगवती, कहुना हिनका नीक बना दियौन। जँ से नै करबैन तँ पहिने हमरे लऽ चलू...।

दोसर दिन डाक्टर रामखेलौनकेँ देख कहलखिन-

“हिनका घरेपर लऽ जैयौन। ऐठामसँ नीक सेवा घरपर हेतैन। बेमारी आब आगू-मुहेँ नै बढ़तैन मुदा इलाज बेसी दिन करबै पड़त। हमर कम्पाउण्डर सभ दिन जा-जा सुइयो देतैन आ देखबो करतैन। तैबीच जँ कोनो उपद्रव बुझि पड़त तँ अपनो आबि कऽ कहब।”

कहि दूटा सुइआ आरो डाक्टर साहैब लगा देलखिन। दबाइक पुरजा सेहो बना देलखिन। एकटा सुइआ आ तीन रंगक गोटी सभ दिन दइले कहि देलखिन। ..गप-सप्प सभ कियो करिते छला आकि तैबीच रामखेलौन पत्नीकेँ

कहलक-

“किछु खाइक मन होइए।”

खाइक नाओं सुनिते दीनानाथक मुहसँ हँसी निकलल। लगले दोकानसँ दूध आ बिस्कुट आनि कऽ देलक। पिताकेँ दूध-बिस्कुट खुआ दुनू भाँइ खाट उठा विदा भेल।

घरपर अबिते टोल-पड़ोससँ लऽ कऽ गाम भरिक लोक देखए आबए लगल। शीतलहरी रहबे करै मुदा तैयो लोकक अबैक ढबाहि लगले रहल। दू घन्टा धरि लोक अबैत रहल। ..दीनानाथ माएकेँ कहलक-

“माए, बड़ भूख लगल अछि। पहिने भानस कर। भुखे पेटमे बगहा लगैए।”

दीनानाथक बात सुनि सुमित्रा भानस करए विदा भेली। भूख तँ अपनो लगल रहैन मुदा बजती केतए, कहती केकरा। बेर-बिपैतमे तँ एना होइते छइ।

दीनानाथक बात पितियाइन सेहो सुनलक। वेचारी पितियाइन सोचलक जे सभ भुखाएल अछि, बेरो उनैह गेलइ। आब जे भानस करए लगत तँ साँझे पड़ि जेतइ। तहूमे सभ भुखे लहालोट होइए। से नहि तँ घरमे जे चूड़ा अछि से दऽ दइ छिऐ जइसँ तत्खनात् तँ काज चलि जेतइ। सएह केलक।

दुनू मायपुत चूड़ा भिजा कऽ खाइते छल कि दीनानाथक माम एला। भाएकेँ देखते सुमित्राक आँखिमे नोर आबि गेल। बिनु पएर धोनहि बहनोइ लग पहुँच देखए लगला। बहनोइक दशा देख मकसुदनकेँ दुनू आँखिसँ दहो-बहो नोर खसए लगलैन। नोर पोछि वेचारे सोचए लगला जे हम तँ सियान छी तहूमे पुरुख छी। जँ हमहीं कानबै तँ बहिन आ भागिनक दशा की हएत। ..धैर्य बान्हि मकसुदन बहिनकेँ कहलखिन-

“दाइ, ई दुनियाँ अहिना चलै छइ। रोग-वियाधि सह-सह करैए। जइठीम गर लागि जाइ छै पकैड़ लइए। अपना सभ सेबे करबैन किने मुदा...। रूपैआ दुआरे दबाइ-दारूमे कोताही नै होइन। आइ भोरे पता लागल। दौगल एलौं। अपने गाए बिआएल अछि। काल्हि गाइयो आ जहाँ धरि हएत तहाँ धरि रूपैओ आनि कऽ दऽ देबौ। अखन हम जाइ छी, काल्हि आएब।”

चारि दिनक पछाइत रामखेलौनक मुँह सोझ भऽ गेल। उठि कऽ ठाढ़ सेहो हुअ लगल। मुदा एकटा पएर नीक नइ भेलइ। कनी-कनी झखाइते डेग

उठइ।

सभ दिन भोरे आबि कऽ कम्पाउण्डर सूइयो दैत आ चला-चला देखबो करैत।

दू मासक पछाइत दीनानाथक रिजल्ट निकलल। फस्ट डिवीजन भेलइ। नम्बरो नीक। छह साए तीन नम्बर। हेडमास्टरक समांगकेँ सेहो फस्ट डिवीजन भेलइ। मुदा नम्बर कम। पाँच साए पैंतालिस आ सेक्रेट्रीक समांगकेँ सेकेण्ड डिवीजन भेलै, मुदा नम्बर बढ़ियाँ, पाँच साए चौंतीस।

आगू पढ़ैक आशा दीनानाथ तोड़ि लेलक। किएक तँ घरमे कियो दोसर करताइत नहि। एक तँ पिताक बेमारी, दोसर घरक खर्च जुटौनाइ, तैपर सँ छोट भाए अठमामे पढ़ैत। मुदा दीनानाथकेँ अपन पढ़ाइ छोड़ैक ओते दुख नइ भेलै जेते परिवार चलौनाइसँ लऽ कऽ पिताक सेवा करैक सुख मनमे जगलै। जे बेटा बाप-माइक सेवा नै करत से बेटे की। अपन पढ़ैक आश दीनानाथ छोट भाए कुसुमलालपर केन्द्रित कऽ देलक।

अधिक काल मकसुदन बहिने ऐठाम रहए लगला। गाइयोक सेवा आ खेतो-पथारक काज सम्हारए लगला। अपना ऐठामसँ अनो-पानि आनि-आनि दिअ लगलखिन। अपना घर जकाँ भार उठा लेलैन। अपन दशा देख रामखेलौन मकसुदनकेँ कहलखिन-

“हम तँ अबाहे भऽ गेलौं। जाबे दाना-पानी लिखल अछि ताबे जीबै छी। मरैक कोनो ठीक नै अछि तँए अपना जीबैत केतौ दीनानाथक बिआह करा दियौ। बेटा-बेटीक बिआह-दुरागमन कराएब तँ माए-बापक धरम छिऐ। मुदा हम तँ कोनो काजक नइ रहलौं। कम-सँ-कम देखियो तँ लेबइ।”

बहनोइक बात सुनि मकसुदन गुम्म भऽ गेला। मने-मन सोचए लगला, समए-साल तेहने खराब भऽ गेल अछि जे नीक मनुख घरमे आनब कठिन अछि। सभ खेल रूपैआपर चलि रहल अछि। मनुखक कोनो मोले ने रहलै। एहेन स्थितिमे नीक कन्याँ केना भेटत? हँ, तखन एकटा उपाय जरूर अछि जे रूपैआ-पैसाक भाँजमे नै पड़ि, गुणगर कन्याँक भाँज लगाबी। जइसँ घरक कल्याण हेतइ। पाहुन जहन हमरा भार देलैन तँ हम दान-दहेज नै आनि नीक कन्याँ आनि देबैन। ..बहनोइकेँ कहलखिन-

“पाहुन, रूपैआक पाछू लोक भँसियाइए। अगर अहाँ हमरा भार दइ छी तँ हम रूपैआक भाँजमे नै पड़ि नीक मनुख आनि कऽ देब। से की विचार?”

मकसुदनक बात सुनि बहिन धाँइ-दे बजली-

“भैया, रूपैआ मनुखक हाथक मोलि छिऐ। मुदा मनुख तपस्यासँ बनैए, तँए हमरा नीक पुतोहु हुअए। रूपैआक भूख हमरा नै अछि।”

बहिनक बात सुनि मकसुदनकेँ सबुर भेलैन। बजला-

“बहिन, जहिना तोरा सबहक पुतोहु तहिना तँ हमरो हएत किने। के एहेन अभागल हएत जे अपन घर अवाद होइत नइ देखत।”

अपन पढ़ाइक आशा तोड़ि दीनानाथ मने-मन अपना पैरपर ठाढ़ होइक बाट ताकए लगल। संकल्प केलक जे जहिना नीक रिजल्ट पबैले विद्यार्थी जी-तोड़ मेहनत करैए तहिना हमहूँ परिवारकेँ उठबैले जमि कऽ मेहनत करब।

बियौहती लड़कीक भाँज मकसुदन लगबए लगला। मुदा मनमे एलैन जे हम तँ वर पक्ष छी, तँए लड़की ऐठाम पहिने केना जाएब? कनी काल गुनधुन करैत सोचलैन जे बेटा-बेटीक बिआह परिवारक पैघ काज होइए तँए एहेन-एहेन छोट-छीन बेवहारपर नजैर नहियेँ देब उचित हएत। तहूमे हम लड़िकाक बाप नै माम छिऐ। पाहुन जहन भार देलैन तँ नहियोँ करब उचित नइ हएत।

अपना गामक बगलेक गाममे लड़कीक भाँज मकसुदनकेँ लगलैन। परिवार तँ साधारणे मुदा लड़की काजुल। काजमे तपल। किएक तँ माए हरिदम ओकरा अपने संग रखि खेत-पथारक, घर-आँगनक काजसँ लऽ कऽ अरिपन लिखब, दुआरिमे पुरैन, फूलक गाछ, कदमक फुलाएल गाछक संग-संग पाबैन-तिहारमे गीत गौनाइ सभ सिखबैत। ..बरद किनैक बहन्नासँ मकसुदन भेजा विदा भेला। पहिने दू-चारि गोरेक ऐठाम पहुँच बरदक दाम करैत कन्यागतक दुआरपर पहुँचला। कन्यागत दुआरपर नहि। मुदा लड़की बाल्टीमे पानि भरि अँगना जाइत। लड़कीकेँ देख मकसुदन पुछलखिन-

“बुच्ची, घरवारी केतए छैथ?”

बाल्टी रखि सुशीला बाजल-

“बाड़ीमे मिरचाइ कमाइ छथिन। अपने चौकीपर बैसियौ, बजौने अबै छिऐन।”

बाल्टी अँगनामे रखि सुशीला बाड़ीसँ पिताकेँ बजौने आएल। पड़ोसी होइ दुआरे दुनू गोरे दुनू गोरेकेँ चेहरासँ जाने-पहचानक मुदा मुहाँ-मुही गप नइ भेने अनचिन्हार। कन्यागत पुछलखिन-

"किनकासँ काज अछि?"

मुस्कियाइत मकसुदन-

"अखन दुइए गोरे छी, तँए मनक बात कहै छी। हमरो घर बीरपुरे छी। हमरा भागिन अछि। काल्हि-खन पता चलल जे अहाँकेँ बियौहती बच्चिया अछि, ओइठाम कुटमैती कऽ लिअ।"

कुटुमैतीक नाओं सुनि कन्यागत गुम्म भऽ गेला। कनी काल गुम्म रहि बजला-

"हम गिरहस्त छी। सेहो नमहर नहि, छोट। ऐठामक गिरहस्तक की हालत अछि से अहाँ जनिते छी। तँए ऐ बेर बेटीक बिआह नै सम्हरत।"

कन्यागतक सुखल मुँह देख मकसुदन कहलखिन-

"मनमे जे दहेजक भूत पकड़ने अछि से हटा लिअ। अहाँकेँ जहिना सम्हरत तहिना बिआह निमाहि लेब।"

मकसुदनक विचार सुनि कन्यागतक मुँह हरियाए लगलैन। दरबज्जेपर सँ बेटीकेँ हाक पाड़ि अढ़ेलखिन-

"बुच्ची, शर्बत बनौने आबह?"

बड़का लोटामे शर्बत आ गिलास नेने सुशीला दरबज्जापर आबि चौकीपर रखए लगल, तैबीच पिता कहलकैन-

"बुच्ची, ईहो कियो आन नइ छैथ, पड़ोसीए छिआ। बीरपुरे रहै छैथ। दहुन शर्बत।"

दुनू गोरे शर्बत पीलैन। शर्बत पीब पिता कहलखिन-

"बुच्ची, चाहो बनौने आबह।"

सुशीला चाह बनबए गेल। दरबज्जापर दुनू गोरे गप-सप्प करए लगला।

मकसुदन-

"जेहने अहाँक कन्याँ छैथ तेहने हमर भागिन। अजीब जोड़ा विधाता बना कऽ पठौने छैथ। काल्हिए अहूँ लड़िकाकेँ देख लियौ। संयोग नीक अछि तँए शुभ काजमे बिलम नइ करू।"

मकसुदनक विचारसँ जेते उत्साहित कन्यागतकेँ हेबा चाहिऐन तेते नै होथि। किएक तँ मनमे घुरियाइत रहैन, कहुना छी तँ बेटीक बिआह। फुसलेने

काज थोड़े चलत। मुदा कन्याँक माए दलानक भीतक भुरकी देने अढ़ेसँ गप्पो सुनैथ आ दुनू गोरेकेँ देखबो करैत रहथिन। मने-मन उत्साहितो होइ छेली जे फँसल शिकार छोड़ब मुरूखपना छी। माए-बापक सराध आ बेटीक बिआहमे केकरा नै करजा होइ छइ। जानियेँ कऽ तँ हम सभ गरीब छी। गरीबकेँ जन्मसँ लऽ कऽ मरै धरि करजा रहिते छइ। तइले एते सोचै विचारैक कोन काज। करजो हाथे बेटीक बिआह कैये लेब। फस्ट डिवीजनसँ मैट्रिक पास लड़िका अछि। एहेन पढ़ल-लिखल लड़िका थोड़े भेटत। कहबियो छै जे पढ़ल-लिखल लोक जँ हरो जोतत तँ मुरूखसँ सोझ सिड़ौर हेतइ। आइक जुगमे मुरूखो बरक बाप पचास हजार रूपैआ गनबैए। ..खुशीसँ मनमे होइ जे छड़ैप कऽ दरबज्जापर जा कहिऐन जे अगर अहाँ आइए बिआह करए चाही तँ हम तैयार छी। मुदा स्त्रीगणक मर्यादा रोकि दइत। तँए वेचारी अढ़ेमे अहुरिया कटैत। ..मुदा पतिक मन बदलल, मकसुदनकेँ कहलखिन-

"देखू, हम भैयारीमे असगरे छी, मुदा गृहिणी तँ छैथ। हुनकासँ एक बेर पुछि लइ छिऐन। किएक तँ हम घरक बाहरक काजक गार्जन छी ने, घरक भीतरी काजक गार्जन तँ वएह छैथ। जँ कहीं बेटी बिआह दुआरे किछु ओरिया कऽ रखने होथि तँ कैये लेब।"

कन्यागत भोला उठि कऽ आँगन गेला। आँगन पहुँचते पत्नी झपैट कऽ कहए लगलैन-

"दुआरपर उपकैर कऽ लड़िकाबला एलाहेँ तँए अहाँ अगधाइ छी। जहन लड़िकाक भाँजमे घुमैत-घुमैत तरबा खियाएत आ बेमाएसँ खूनक टघार चलत तहन बुझबै। तीन-तीन साल बेटीबला घुमैए तहन जा कऽ केतौ गर लगै छइ। जा कऽ कहि दियौन जे अखन हमर हालत नीक नै अछि मुदा जँ अहाँ तैयार छी तँ हमहूँ तैयार छी। वर देखैक दिन कौल्हुके दऽ दियौन।

पत्नीक बातसँ उत्साहित भऽ भोला आबि कऽ बजला-

"पत्नीक विचार सोल्होअना छैन। मुदा कहबे केलौं जे अखन हमर हालत बढ़ियाँ नै अछि।"

मकसुदन-

"काल्हि अहाँ लड़िका देख लियौ। जँ पसिन हएत तँ जहिना कुटमैती करए चाहब तहिना कऽ लेब। असलमे हमरा लोकक जरूरत अछि, ने कि रूपैआ-पैसाक।"

आठे दिनक दिनमे बिआह भऽ गेल। भोलाक बहिनो आ साउसो नीक जकाँ मदैत केलकैन। अपना घरसँ खाली एकटा सोनाक सुक्की -नअटा चौवन्नीक छड़- भोलाकेँ निकललैन।

पनरह दिनक पछाइत दीनानाथ पुबरिया ओसारपर बैस, पितासँ छीपि कऽ माएकेँ कहलक-

"माए, घरक दशा जे अछि से तहूँ देखते छीही। जेना घर चलैए तेना केते दिन चलत। साले-साल खेत बिकाइए। जइसँ किछुए सालक पछाइत सभ सठि जाएत। छोड़ैबला काज एक्कोटा ने अछि। जहिना कुसुमलालक पढ़ैक खर्च, तहिना बाबूक दबाइ आ पथ्य अछि। मुदा आमदनी तँ कोनो दोसर अछि नहि, लऽ दऽ कऽ खेती। सेहो डेढ़ बीघा। तहूमे, ने पानिक जोगार अपना अछि आ ने खेती करैक लूरि। एते दिन तँ बाबू कहुना-कहुना कऽ करै छला, आब तँ सेहो नइ हएत। हमहूँ जँ केतौ नोकरी करए जाएब सेहो नै बनत, किएक तँ बाबूक देखभाल सेहो करैक अछि। तहन तँ एक्केटा उपाय अछि जे घरेपर रहि आमदनीक कोनो काज ठाढ़ करी।"

बेटाक बात सुनि सुमित्रा गुम्म भऽ गेली! जइ घरमे आमदनी कम आ खर्चा बेसी हएत से घर केना चलत? ..एते बात मनमे अबिते माइक आँखिसँ दहो-बहो नोर खसए लगलैन। आँचरसँ नोर पोछि बजली-

"बौआ, हम तँ स्त्रीगणे छी, घर-अँगनामे रहैवाली मुदा तूँ जँ बच्चो छह तँ पुरुखे छह। जहन भगवाने बेपाट भेल छथुन तहन तँ किछु करए पड़तह।"

दुनू मायपुतक मुँह निच्चाँ-मुहेँ खसल रहल। ने बेटाक नजैर माए दिस उठैत आ ने माइक नजैर बेटा दिस। जहिना मरुभूमिमे पियासल लोकक दशा होइत तहिना दुनूक दशा भेल छल। केबाड़ लग ठाढ़ सुशीला दुनूकेँ देखैत। जोरसँ कियो ऐ दुआरे नै बजैत जे रोगाएल पिता वा पति जँ सुनता तँ सोगसँ आरो दुख बढ़ि जेतैन। केबाड़ लगसँ घुसैक ओसारपर आबि सुशीला बजली-

"माए चिन्ता केलासँ दुख थोड़े भगतैन। दुखकेँ भगबैले किछु उपाय करए पड़तैन। छोटका बौआ बच्चे छैथ, बाबू रोगाएले छैथ, मुदा अपना तीनू गोरे तँ खटैबला छी। खटलासँ सभ किछु होइ छइ।"

पुतोहुक बात सुनि सासु बजली-

"कनियाँ, कहलिऐ तँ बड़बढ़ियाँ मुदा ओहिना तँ पानि नै डेंगाएब।"

सासुक बात सुनि पुतोहु बजली-

"हमर एकटा पित्ती धानक कुट्टी करै छैथ। जहिना अपन परिवार अछि तहूसँ नचरल हुनकर परिवार छेलैन। तैपर सँ चारि-चारिटा बेटियो छेलैन। मुदा जइ दिनसँ धानक कुट्टी करए लगला तइ दिनसँ दिने-दुनियाँ घुमि गेलैन। चारू बेटियोक बिआह केलैन, बेटोकेँ पढ़ौलैन, ईंटाक घरो बनौलैन आ पाँच बीघा खेतो कीनि लेलैन। अखन हुनकर हाथ पकड़ैबला गाममे कियो ने अछि।"

पत्नीक बात सुनि दीनानाथक भक्क खुजल। भक्क खुजिते दीनानाथ खुशीसँ उछैल अँगनामे कूदल। दरबज्जापर आबि कागत-कलम निकालि हिसाब जौड़ए लगल। डेढ़ सेर धानमे एक सेर चाउर होइए। ओना, धानक बोरा अस्सीए किलोक होइए जखन कि चाउरक साए किलोक। चारि साए रूपैए बोरा धान बिकैए तँ पान साए रूपैए क्विन्टल भेल। एक क्विन्टल धानक सरसैठ किलो चाउर हएत। दू-चारि किलो खुद्दियो हएत जेकर रोटी पका कऽ खाएब। एक किलो चाउरक दाम साढ़े दस रूपैआसँ एगारह रूपैआ होइत। ऐ हिसाबसँ एक क्विन्टल धानक चाउरक लगधग सात साए रूपैआ भेल। पान साएक पूजीसँ सात साए आमदनी हएत। तैपर सँ तीस किलो गुरो। जेकर दाम साठि रूपैआ होइए। खर्चमे खर्च खाली जारैन, कुटाइ आ गाड़ीक भाड़ा पड़त। बाँकी सभ मेहनतक फल हएत। अगर जँ एक बोराक कुट्टी सभ दिनक हिसाबसँ करब तँ पाँच हजारक महिना आमदनी जरूर हएत।

..हिसाब जोड़ैत-जोड़ैत दीनानाथक मनमे शंका उठल जे हिसाबेमे तँ ने गलती भऽ गेल। कागत-कलम छोड़ि उठि कऽ टहलए लगल। मने-मन हिसाबो जोड़ैत। मनमे कखनो हिसाब सही बुझि पड़ै तँ कखनो शंको होइ। आँगन जा पानि पीलक। दू-चारि बेर माथ हसोंथलक। फेर आबि कऽ हिसाब जोड़ए लगल। मुदा हिसाब ओहिना कऽ ओहिना होइ। मनमे बिसवास जगलै, जइसँ काजक प्रति आकर्षण सेहो भेलइ। फेर आँगन जा माएकेँ पुछलक-

"एक बोरा धान उसनैमे केते समए लगतौ?"

"एक बोरा धान तँ दसे टीन भेल। दू-चुल्हियापर पाँच खेप हएत आ चरि चुल्हियापर अढ़ाइए खेप हएत। एक्के घन्टामे उसैन लेब।"

माइक बात सुनि दीनानाथ तँइ केलक जे हमहूँ यएह रोजगार करब। पूजी-ले पत्नीक सोनाक सुक्कीमे सँ पाँचटा निकालि सबा भरि बेच, धान कीनि कुट्टी शुरू केलक। जइसँ परिवारमे खुशहाली आबए लगलै।

कुसुमलाल बी.ए. पास कऽ मधुबनी कोर्टमे किरानीक नोकरी शुरू केलक। कोर्टेक बड़ाबाबूक बेटीसँ बिआह सेहो केलक। मधुबनीए-मे डेरा रखि दुनू परानी रहए लगल। तीन-चारि बर्ख तँ संयमित जीवन बितौलक। खाली वेतनेपर गुजर करए। मुदा तेकर पछाइत पाइ कमाइक लूरि सीखि लेलक। जइसँ खाइ-पीबैक संग-संग औरो लूरि भऽ गेलइ। घरोवाली पढ़ल-लिखल। जहिना कमाइ तहिना खर्च। शहरक हवामे उधियाए लगल। सिनेमा देखैक, शराब पीबैक, नीक-नीक वस्तु किनैक आदत बढ़ैत गेलइ। एक दिन पत्नी कहलकै-

"गाममे जे खेत अछि से अनेरे किए छोड़ने छी। ओइसँ की लाभ होइए। ओकरा बेच कऽ अहीठाम जमीन कीनि अपन घर बना लिअ।"

स्त्रीक बात कुसुमलालकेँ जँचल। रवि दिन छुट्टी रहने गाम आबि दीनानाथकेँ कहलक-

"भैया, हम अपन हिस्सा खेत बेच लेब। मधुबनीए-मे दू कट्ठा जमीन ठीक केलौं हेन। ओतै घर बनाएब। भाड़ाक घरमे तेते भाड़ा लगैए जे एक्को पाइ बँचबे ने करैए जे अहूँ सभकेँ देब।"

कुसुमलालक बात सुनि दीनानाथ बाजल-

"बौआ, अखन बाबू-माए जीविते छथुन, तँए हम की कहबह? हुनके कहुन।"

दीनानाथक जवाब सुनि कुसुमलाल पिताकेँ कहलक। रोगाएल रामखेलौन खिसिया कऽ बाजल-

"डेढ़ बीघा खेत छौ। दस कट्ठा हमरा दुनू परानीक भेल, दस कट्ठा दीनानाथक भेलै आ दस कट्ठा तोहर भेलौ। अपन हिस्सा बेच कऽ लऽ जो।"

खेत किनै-बेचैक दलाल गामे-गाम रहिते अछि। कुसुमलाल जा कऽ एकटा दलालकेँ कहलक। पाँच हजार रूपैए कट्ठाक हिसाबसँ दलाल दाम लगा देलकै। कुसुमलाल राजी भऽ गेल। मुदा बेना नै लेलक। तरे-तर दीनानाथो भाँज लगबैत। साँझू-पहर जखन कुसुमलाल मधुबनी विदा हुअ लगल तखन दीनानाथ कहलकै-

"बौआ, जेते दाम तोरा आन कियो देतह तेते हमहीं देबह। बाप-दादाक अरजल सम्पैत छी, आन कियो जे आबि कऽ घराड़ीपर भँट्टा रोपत से केहेन

हएत?"

मुदा दीनानाथक बात कुसुमलाल मानि गेल। पचास हजारमे जमीन लिखि देलक। मधुबनीए-मे कुसुमलाल घर बना लेलक। अपना गामक लोकसँ ओते सम्बन्ध नइ रहलै जेते सासुरक लोकसँ। सासुरक दू-चारि गोरे सभ दिन अबिते-जाइत रहइ। आदरो-सत्कार नीक होइ छेलइ।

बीस बर्खक पछाइत दीनानाथक बेटा मेडिकलक प्रवेश परीक्षा पास केलक। बेटी आइ.एस.सी.मे पढ़िते। पढ़ैमे दुनू भाए-बहिन ऊपरा-ऊपरी। तँए परिवारक सभकेँ आश रहै जे बेटियो मेडिकल पास करबे करत। माए-बापक सेवा आ बेटा-बेटीक पढ़ाइ देख दुनू परानी दीनानाथक मन खुशीसँ गदगद। परिवारोक दशा बदैल गेल। मुदा तैयो दीनानाथ धानक कुट्टी बन्न नै केलक। आरो बढ़ा लेलक। मनमे ईहो होइ जे धनकुटिया मील गड़ा ली मुदा समांग दुआरे नै गड़बैत। टाएरगाड़ी कीनि लेलक। जइसँ खेतियो करए आ भड़ो कमाए।

कुसुमलालकेँ सेहो दूटा बेटा। दुनू पब्लिक स्कूलमे पढ़ैत। जेठका अठमामे आ छोटका छठामे। मधुबनीए-मे डेरा रहितो दुनूक होस्टलेमे रखने। तैपर सँ सभ विषयक ट्यूशन सेहो पढ़ैत, तँए नीक खर्च पड़इ।

शराब पिबैत-पिबैत कुसुमलालक लीभर गलए लगलै। किछु दिन मधुबनीए-मे इलाज करौलक मुदा ठीक नइ भेने दरभंगाक अस्पतालमे भर्ती भेल। चारि मास दरभंगोमे रहल मुदा ओतौ लीभर ठीक नइ भेलइ। तहन पटना गेल। पटनोमे ठीक नइ भेलै, शरीर दिनानुदिन खसिते गेलइ। अन्तमे दिल्लीक एम्समे भर्ती भेल। ओत्तौ ठीक नइ भेलइ। शरीर एते कमजोर भऽ गेलै जे अपनेसँ उठियो-बैस ने होइ। हारि-थाकि कऽ मधुबनीक डेरापर आबि गेल। मुदा एते दिनक बेमारीक बीच दीनानाथकेँ जानकारियो ने देलक। सारे-सरहोजिक संग घुमैत रहल।

ओछाइनपर पड़ल-पड़ल सौंसे देहमे धाव भऽ गेलइ। ढाकीक-ढाकी माछी देहपर सोहरए लगलै। केतबो कपड़ा ओढ़बै तैयो माछी घूसि-घूसि असाय दऽ दइ। दिन-राति दर्दसँ कुहरैत। हरिदम घरवालीक मन तामसे लह-लह करैत। गरियेबो करैत। दुनू बेटामे सँ एक्कोटा लगमे रहैले तैयार नहि। जेठका बेटा कहइ-

"पप्पा जी, महकता है।"

जहन कखनो लगमे अबैत तँ नाक मूनि कऽ। छोटका बेटा सेहो तहिना।

हरिदम बजैत-

"पप्पा जी, अब भूत बनेगा। लगमे रहेंगे तो हमको भी पकड़ लेगा।"

जइ ऑफिसमे कुसुमलाल काज करैत ओइ ऑफिसक एकटा स्टाफ दीनानाथकेँ फोनसँ कहलक-

"कुसुमलाल अन्तिम दिन गनि रहल छैथ, आबि कऽ मुँह देख लियौन।"

फोन सुनि दीनानाथ सन्न भऽ गेल। जेना दुनियाँक सभ किछु आँखिक सोझहासँ निपत्ता हुअ लगल। सुन-मशान दुनियाँ लगए लगलै। मनमे एलै, कियो केकरो नहि। दुनू आँखिसँ नोर टधरए लगलै। नोर पोछैत मनमे उठलै- कियो झूठे ने तँ फोन केलक। फेर मनमे एलै, एहेन समाचार झूठ किए हएत। अनेरे कियो पैसा खर्च कऽ फोन किए करत। एहेन अवस्थामे कुसुमलाल पहुँच गेल मुदा आइ धरि किछु कहबो ने केलक। खएर जे हौउ, मुदा हमरो तँ किछु धरम अछि। अपना कर्तव्यसँ कियो मनुख ऐ दुनियाँमे जीबैए। अखन तँ अबेर भऽ गेल। काल्हि भोरुके गाड़ीसँ मधुबनी जाएब...।

एते विचारि माएकेँ कहलक-

"माए, एक गोरे मधुबनीसँ फोन केने छेला जे कुसुमलाल बहुत दुखित छैथ तँए आबि कऽ देखियौन।"

दीनानाथक मुँहक बात सुनिते माइक देहमे जेना आगि लगि गेलैन तहिना जरैत मने बजली-

"कुसुमा हमर बेटा थोड़े छी जे मुँह देखबै। उ तँ ओही दिन मरि गेल जइ दिन हमरा दुनू परानीकेँ छोड़ि चलि गेल। जँ ऐ धरतीपर धर्मक कोनो स्थान हेतै तँ ओइमे हमरो केतौ जगह भेटत। जँ कोनो शास्त्र-पुराणमे पतिव्रता स्त्रीक चर्चा हेतै तँ हमरो हएत। आइ बीस बरखसँ ऐ हाथ-पैरक बले बिमार पतिकेँ जीवित रखि अपन चूड़ी आ सिनुरक मान रखने छी।"

माइक बात सुनि दीनानाथ मने-मन सोचलक जे कुसुमलाल अगर हमरा कमा कऽ नहियेँ देलक तँ हमर की बिगरल। माइयो-पिताक दर्शन भोरे-भोर होइते अछि, बालो-बच्चा आनन्देसँ अछि। तहन तँ एक-वंशक छी, जा कऽ देख लिऐ।

दोसर दिन भोरुके गाड़ीसँ दीनानाथ मधुबनी पहुँच कुसुमलालक डेरापर पहुँचल। बाहरेक कोठरीमे कुसुमलाल पड़ल छल। चद्दैरसँ सौंसे देह झाँपल

रहइ। मुँह उघारिते कुसुमलाल बाजल-

"भइ-इ-आ..!"

'भइ-इ-आ' कहैत कुसुमलाल सदा-सदाक लेल आँखि मूनि लेलक।

दीनानाथ-

"बौआ कुसुम! बौआ..! बौआ..! बउआ..!!"

❍

शब्द संख्या : 4026

बहिन

“आब अधिक दिन माए नै खेपती। ओना उमेरो नब्बे बर्खक धतपत हेबे करतैन। तहूमे बर्ख पनरह-बीसेकसँ कहियो बोखार के कहए जे उकासियो ने भेलैन। एक तँ ओहिना पाकल उमेर तैपर सँ देहक रोगो पछुआएल, तँए भरिसक ऐ बेर उठि कऽ ठाढ़ हेबामे कम भरोस। किएक तँ एक-ने-एक उपद्रव बढ़िते जाइ छैन। अनो-पानि अरुइचे जकाँ भेल जाइ छैन।”

भखरल स्वरमे राधेश्याम पत्नीकेँ कहलखिन।

पतिक बात सुनि रागिणी कनी काल गुम्म रहि बजली-

“केकरो, औरुदा तँ कियो नहियेँ दऽ सकैए। तहन तँ जाधैर जीबै छैथ ताधैर हम-अहाँ सेबे करबैन किने?”

“हँ, से तँ सएह कऽ सकै छिऐन मुदा जिनगीक कठिन परीक्षाक घड़ी आबि गेल अछि। एते दिन जे केलौं ओकर ओते महत नहि जेते आबक अछि। किएक तँ कखनो पानि मंगती वा किछु कहती, तइमे जँ कनिको देरी हएत आ कियो सुनि लेत तँ अनेरे बाजत जे फल्लाँक माए पानि दुआरे किकिहारि कटैत रहै छथिन, मुदा बेटा-पुतोहु तेहेन छै घुमियोँ कऽ एको बेर तकितो ने छइ। केकरो मुँहमे ताला लगेबै? देखते छिऐ जे गाममे केना लोक झूठ बाजि-बाजि झगड़ो लगबैए आ कलंको जोड़ै छइ। तँए चैबीसो घन्टा केकरो-ने-केकरो लगमे रहए पड़त। जँ से नै करब तँ अन्तिम समैमे कलंकक मोटरी कपारपर लेब।”

“कहलौं तँ ठीके मुदा बच्चा सबहक हिसाबे कोन, तहन तँ दू परानी बचलौं। बेरा-बेरी दुनू गोरे रहब। अन्तुका काज अहूँ छोड़ि दियौ, किएक तँ अँगनेक काज बढ़ि गेल। बहिनो सभकेँ जनतब दइए दियौन।”

“अपनो मनमे सएह अछि। जँ तीनू बहिन आबि जाएत तँ काजो बँटा कऽ हल्लुक भऽ जाएत। ओना अँगनासँ दुआरि धरि काजो बढ़बे करत। जखने सर-सम्बन्धी, दोस्त-महिम बुझता तँ जिगेसा करए एबे करता। जहन दरबज्जापर औता तँ सुआगत-बात करइ पड़त”।

मुड़ी डोलबैत रागिणी बजली-

“हँ, से तँ हेबे करत।”

“अखन निचेन छी आ काजो करैयेक अछि, तँए अखने तीनू बहिनो आ ममोकेँ जनतब दइए दइ छिऐन। आन कुटुमकेँ अखन जनतब देब जरूरी नहि।”

कहि मोबाइलमे मामाक नम्बर लगौलैन।

“हेलो, मामा। हम राधेश्याम।”

“हँ, राधेश्याम। की हाल-चाल?”

“माए, बड़ जोर दुखित पड़ि गेली।”

“अखन हम एकटा जरूरी काजमे बँझल छी। साँझ धरि आबि रहल छीअ।”

मोबाइल बन्न कऽ राधेश्याम जेठ बहिन गौरीकेँ फोन लगौलक।

“हेलो, बहिन। माए दुखित पड़ि गेलखुन।”

“अखन हम स्कूलेमे छी आ अपनौं कौलेजेमे छैथ। छुट्टीक दरखास दइए दइ छिऐ। साँझ धरि पहुँच जाएब।”

मोबाइल बन्न कऽ छोटकी बहिनक नम्बर लगौलक।

“सुनीता। हम राधेश्याम।”

“भैया, माए नीके अछि किने?”

“अखन की नीक आ कि अधला। तीन दिनसँ ओछाइन धेने छथुन, तँए किछु कहब कठिन।”

“हम अखने छुट्टीक दरखास दऽ आबि रहल छी।”

“बड़बढ़ियाँ।”

कहि मैझली बहिन रीताक नम्बर लगौलक।

“हेलो, रीता। हम राधेश्याम। माए, बड़ जोर दुखित छथुन।”

“भैया, हम तँ अपने तेते फिरीसान छी जे खैयोक छुट्टी ने भेटैए। काल्हिए-सँ दुनू बच्चाक प्रतियोगिता परीक्षा सेहो छिऐ।”

बिनु स्विच ऑफ केनहि राधेश्याम मोबाइल रखि अकास दिस देखए लगला, ठोर पटपटबैत बड़बड़ाए लगला-

“बच्चाक परीक्षा.., मृत्यु सज्जापर माए..! केकरा प्राथमिकता देल जाए? एक दिस, जे बच्चा अखन धरि जिनगीमे पएरो ने रखलक, सौंसे जिनगी पड़ल छै, दोसर दिस कष्टमय जिनगीमे पड़ल वृद्ध माए। खएर, सभकेँ अपन-अपन जिनगी होइ छै आ अपना-अपना ढंगसँ सभ जीबए चाहैए। हम चारि भाए बहिन छी तँए ने दोसरपर ओंगठल छी। मुदा जे असगरे अछि, से केना माए-बापक पार-घाट लगबैए। ..किछु सोचिते छल कि नव उत्साह मनमे जगलैन। नव उत्साह जगिते राधेश्यामक नजैर पाछू-मुहेँ ससरलैन। चारू भाए-बहिनमे माए सभसँ बेसी ओकरे मानैत रहलखिन आ ओकर सेवो सभसँ बेसी भेलइ। कारणो छेलै जे बच्चेसँ ओ रोगा गेल छल। मुदा आश्चर्जक बात तँ ई जे जेकरा माए सभसँ बेसी सेवा केलैन वएह सभसँ पहिने बिसैर रहल छैन!”

गोसाँइ डुमैत-डुमैत मामो आ दुनू बहिनो-बहनोइ एला।

अबिते डाक्टर सुधीर (छोट बहनोइ) आला लगा सासुकेँ देख राधेश्यामकेँ कहलखिन-

“भैया, माए बँचती नहि। मुदा मरबो दस दिनक बादे करती। तँए अखन ओते घबराइक बात नहि। अखन हम जाइ छी, मुदा बहिन डाक्टर सुनिता रहती। ओना हमहूँ दू-दिन तीन-दिनपर अबैत रहब।”

डाक्टर सुधीरक बात सुनि सभकेँ क्षणिक संतोख भेलैन। तैबीच मामा बजला-

“भागिन, ओना हम केकरो छिट्टा-कस्सी नै करै छिऐन मुदा अपन अनुभवक हिसाबे कहै छिअ जे भरि दिन तँ स्त्रीगण सभ मुस्तैज रहथुन मुदा रातिमे नहि। ओना, हमरो गाम बहू-दूर नहियेँ अछि। अखन तँ धड़फड़ाएले चलि एलौं, तँए अखन जाइ छी। काल्हिसँ साँझू पहर-के एबह आ भोर-के चलि जेबह। भरि राति दुनू मामा-भागिन गप-सप्प करैत ओगैर लेब।”

दुनू बहनोइयो आ मामो चलि गेलखिन।

“आइ सातम दिन माएकेँ अन्न छोड़ना भऽ गेलैन। दू-चारि चम्मच पानि आ दू-चारि चम्मच दूध मात्र अधार रहि गेल छैन।” –आँगनसँ दरबज्जापर आबि रागिणी पतिकेँ कहलखिन।

पत्नीक बात सुनि राधेश्याम मने-मन सोचए लगला। मनमे उठलैन चारू भाए-बहिनक परिवारिक जिनगी। केतेक आशासँ माए-पिता हमरा चारू भाए-

बहिनकेँ पोसि-पालि, पढ़ा-लिखा, बिआह-दुरागमन करा परिवार ठाढ़ कऽ देलैन। जहिना गौरी जेठ बहिन एम.ए. पास अछि। तहिना एम.ए. पास बहनोइयो छैथ। हाइ स्कूलमे बहिन नोकरी करैए आ कौलेजमे बहनोइ छैथ। परिवारक प्रतिष्ठा, समाजोमे बढ़बे केलैन जे कमलैन नहि। तहिना छोटकियो बहिन अछि। बहिनो डाक्टर आ बहनोइयो डाक्टर। तहिना तँ पिताजी मैझलियो बहिनकेँ केलैन। दुनू परानी इंजीनियर अछि। बम्बइमे दुनू गोरे नोकरी करैत अछि।

जहिना तीनू बहिन पढ़ल-लिखल अछि, तहिना बहनोइयो छैथ। अद्भुत नजैर पिताजीक छेलैन, मनुखक पारखी छला। तँए ने बहिनक बिआह समतुल्य बहनोइक संग केलैन। एक माए-बापक तीनू बेटी, पढ़ल-लिखल, एक परिवारमे पालल-पोसल गेली, मुदा तीनूक विचारमे एते अन्तर केना आबि गेल..?

ऐ प्रश्नक जवाब राधेश्यामकेँ बुझैमे एबे ने करैन जइसँ मन घोर-घोर होइत रहैन। एक दिस माइक अन्तिम अवस्थापर नजैर रहैन, तँ दोसर दिस मैझली बहिनक बेवहारपर।

विचारक दुनियाँमे राधेश्याम औनाए लगला। प्रश्नक जवाब भेटबे ने करैन। अपन परिवारपर सँ नजैर हटा बहिन सबहक परिवार दिस दौड़ौलैन।

गौरीक ससुर ‘उमाकान्त’ हाइ स्कूलक शिक्षक छला। अपने बी.ए. पास मुदा पत्नी साफे पढ़ल-लिखल नहि। नाओं-गाओं लिखल नै अबैन। ओना, पिता पण्डित रहथिन। मुदा बेटीकेँ परिवार चलबैक लूरिकेँ बेसी महत देथिन। जइसँ कुशल गृहिणी तँ बनि जाएत, मुदा ने चिट्ठी-पुरजी पढ़ल होइ आ ने लिखल। ओना जरूरतो नहि। किएक तँ ने पति-पत्नीक बीच चिट्ठी-पुरजीक जरूरत आ ने कुटुम-परिवारक संग। मुदा दुनू परानी उमाकान्त आ सरिताक बीच असीम सिनेह रहैन। मास्टर साहैबकेँ अपन बाल-बच्चासँ लऽ कऽ विद्यालयक बच्चा सभकेँ पढ़बै-लिखबैक मात्र चिन्ता रहैन। जइ पाछू भरि दिन लगलो रहैथ। जखन कि सरिता परिवारक सभ काज सम्हारैत रहथिन। ओना, अखनुका जकाँ लोकक जिनगियो फल्लर नहि, समटल रहइ...।

गौरीक परिवारपर सँ नजैर हटा राधेश्याम छोटकी बहिन डाक्टर सुनिताक परिवारपर देलैन। जहिना बहिन डाक्टरी पढ़ने तहिना बहनोइयो। जोड़ो बढ़ियाँ। सुनिताक ससुर वैद्य रहथिन। जड़ी-बुटीक नीक जानकार। जहिना जड़ी-बुटीक जानकार तहिना रोगो चिन्हैक। जइसँ समाजमे प्रतिष्ठो नीक

आ जिनगियो नीक जकाँ चलैन। तँए अपन चिकित्साक वंशकेँ जीवित रखै दुआरे बेटाकेँ डाक्टरी पढ़ौलैन। पत्नियो तेहने। अँगनाक काज सम्हारि, बाध-बोनसँ जड़ियो-बुटी आनैथ आ खलमे कुटबो करैत रहथिन। दबाइ वैद्यजी अपने बनबैथ किएक तँ मात्राक बोध गृहिणीकेँ नइ रहैन...।

छोटकी बहिनक परिवारपर सँ नजैर हटा मैझली बहिनक परिवारपर देलैन। रीताक ससुर मलेटरीक इंजीनियरिंग विभागमे हेल्परक नोकरी करै छला। अपनहि विचारसँ मलेटरीक बेटीसँ बिआहो केने छला। मलेटरीक नोकरी, तँए पैयो आ रूआबो। हाथमे हरिदम हथियार तँए मनो सनकल। मुदा बेटा-बेटीकेँ नीक जकाँ पढ़ौलैन। जहिना रीता इंजीनियरिंग पढ़ने तहिना घरोबला। दुनू बम्बइक कारखानामे नोकरी करै छैथ। कमाइयो नीक खरचो नीक, तहिना मनक उड़ानो बेसी छैन। ..एकाएक राधेश्यामक मनमे उठलैन जे आब तँ माइक अन्तिमे समए छी तँए एक बेर रीताकेँ फेर फोन करि कऽ जनतब दऽ दिऐ। मोबाइल उठा रीताक नम्बर लगौलैन-

“हेलो रीता, हम राधेश्याम।”

“हँ भैया, अखन हम स्टाफ सबहक संग काजमे व्यस्त छी।”

रीताक जवाब सुनि राधेश्याम सन्न रहि गेला। रातिक दस बजैत, इजोरियाक सप्तमी। अन्हार-इजोतक बीच घमासान लड़ाइ चलैत। किछुए पहिने जइ चन्द्रमाक ज्योति अन्हारपर शासन करैत, वएह चन्द्रमा पछैड़ रहल छैथ। तेज गतिसँ अन्हार आगू बढ़ि रहल अछि। तैबीच छोटकी बहिन– डाक्टर सुनीता–आँगनसँ आबि राधेश्यामकेँ टोकलकैन-

“भैया, हम तँ भगवान नै छी, मुदा माइक दशा जइ तेजीसँ बिगैड़ रहल छैन, तइसँ अनुमान करै छी जे काल्हि साँझ धरि परान छुटि जेतैन।”

..एक दिस माइक अन्तिम दशा आ दोसर दिस रीताक विचारक बीच राधेश्यामक धैर्यक सीमा डगमगए लगल। विचित्र स्थिति। जिनगीक तीनि बट्टीपर राधेश्याम वौआए लगला। तीनि बट्टीक तीनू रस्ता तीन दिसक। एक देव मन्दिर दिस, तँ दोसर दानवक काल-कोठरी दिस। बीचक रस्तापर राधेश्याम ठाढ़। ..एकाएक निर्णए करैत सुनिताकेँ कहलखिन-

“कनी गौरियोकेँ बजाबह।”

आँगन जा सुनिता गौरीकेँ बजौने आएल। दुनू बहिनक बीच राधेश्याम

बजला-

“बहिन, जहिना हमर बहिन रीता, तहिना तँ तोरो सबहक छिअ। तँए, तहूँ सभ एक बेर फोन लगा माइक जनतब दऽ दहक। हम निर्णए कऽ लेलौं जे जहिना ऐ दशामे माएकेँ रहनौं, ओकरा अपन धिया-पुतासँ अधिक नइ सुझै छै तहिना हमहूँ ओकरा भरोसे नै जीबै छी। तँए जँ माइक जीवितमे नै औत तँ मुइला पछाइत नहो-केश कटबैक जनतब नै देबइ। हमरा-ओकरा बीच ओतबे काल धरि सम्बन्ध अछि जेते काल माइक परान बँचल छैन। कहलो गेल छै ‘भाए-बहिन महींसक सींग, जखने जन्मल तखने भीन।’ मन तँ होइए जे भने ओ अखन स्टाफ सबहक बीच ऐछे, तँए अखने सभ बात कहि दिऐ। मुदा कहनौं तँ किछु भेटत नहि, तँए छोड़ि दइ छिऐ।”

बाजि राधेश्याम भनभनाए लगला-

“जहिना अकासमे उड़ैत चिड़ैकेँ वंश रहितो परिवार नै होइ छै तहिना जँ मनुखोक होइ तँ अनेरे भगवान किएक बुधि-विवेक दइ छथिन। किए ने मनुखोकेँ चिड़ैए-चुनमुनी आकि चरिटंगा जानवरेक जिनगी जीबए देलखिन?”

बजैत-बजैत राधेश्यामो आ दुनू बहिनोक करेज जेना फाटए लगलैन, आँखिसँ नोर टघरए लगलैन। भाए-बहिनक टुटैत सम्बन्धसँ सभ अचम्भित हुअ लगला। सबहक हृदैमे रीता नाचए लगली। बच्चासँ बिआह धरिक रीताक जिनगी सबहक आँखिमे सटि गेलैन। एक दिस रीता बम्बइक घोड़दौड़ जिनगीक प्रतियोगितामे आगू बढ़ए चाहैए तँ दोसर दिस देबालमे टाँगल फोटो जकाँ सबहक हृदैमे चुहैट कऽ पकड़ने अछि। जहिना बाँसक झोंझसँ बाँस काटि निकालैमे कड़चीक ओझरी लगैत तहिना धिया-पुताक ओझरीमे रीता ओझराएल।

तीनू ननैद-भौजाइ माने गौरी, सुनिता आ रागिणी माए लग बैस मने-मन सोचए लगली। कियो-केकरो टोकैत नहि। तीनू गुमसुम। खाली आँखि नाचि-नाचि एक-दोसरपर जाइत। मुदा मन श्वेतवाण रामेश्वरम् जकाँ। एक दिस जिनगी रूपी भूमि, स्थल जकाँ विशाल भूभाग देखैत तँ दोसर दिस मृत्यु रूपी अथाह समुद्र। यएह छी जिनगी आ जिनगीक खेल। जइ पाछू पड़ि लोक आत्माकेँ बलि चढ़बैए। ..तैबीच माइक मुहसँ निकललैन-

“रीता...।”

रीताक नाओं सुनि तीनू गोरेक हृदैमे ऐहेन धक्का लगलैन जइसँ तीनू

तिलमिला गेली।

रातिक एगारह बजैत। गामक सभ सुति रहल। इजोरियो डुमैपर। झल-अन्हार। दलानक आगूमे, कुरसीपर बैस राधेश्याम आँखि मूनि अपन वंशक सम्बन्धमे सोचैत रहैथ। मनमे एलैन, आइ सप्तमीक चान डुमि रहल अछि, अन्हार पसैर रहल अछि, मुदा की कौल्हुका चान आइसँ कम ज्योतिक हएत? की ऐगला ज्योति पैछला अन्हारक अनुभव नइ करत? सभ दिनसँ अन्हार-इजोतक बीच संघर्ष होइत आएल अछि आ होइत रहत...। फेर मनमे उठलैन, आजुक राति हमरा-ले ओहेन राति अछि जे भरिसक माइक जिनगीक अन्तिम राति हएत। जिनका संग हजारो राति बीतल ओइपर विराम लागि रहल अछि। ..विचारक दुनियाँमे राधेश्याम उगैत-डुमैत रहैथ। तखने शबाना पोतीक संग पहुँचली। दलान-आँगनक बीच रस्तापर दुनू गोरे चुपचाप ठाढ़। दुनू डेराएल। राधेश्याम आँखि मुनने तँए नै देखैत...।

परोपट्टामे हिन्दु-मुसलमानक बीच तना-तनी, जइ डरसँ शबाना दिनमे नै आबि अन्हारमे आएल। किएक तँ सरोजनीक सिनेह खिंच कऽ लऽ अनलकै। रेहना शबानाकेँ कहलक-

“दादी, ऐठाम किए ठाढ़ छीही, अँगना चल ने?”

रेहनाक अवाज सुनिते राधेश्याम आँखि तकलैन तँ दुनू गोरेकेँ ठाढ़ देखलैन। पुछलखिन-

“के?”

शबाना बाजल-

“बेटा, राधे।”

“मौसी।”

“हँ।”

“एत्ती राति-के किएक एलैंहें?”

“बौआ, से तूँ नै बुझै छहक जे गाम-गाममे केहेन आगि लागि रहल छइ। पाँचम दिन सुनलौं जे बहिन बड़ जोर अस्सक छैथ। जखने सुनलौं तखने मन भेल जे जाइ। मुदा की करितौं? मन छटपटाइ छेलए। बेटाकेँ पुछलिऐ तँ कहलक ‘से तूँ नै देखै छीही रस्ता-बाटमे इज्जत-आवरूक की भऽ रहल छइ। मार-काट भऽ रहल छइ। एहेन स्थितिमे केना जेमए।’ ..मुदा मन नै मानलक।

जिनगी भरि दुनू बहिन संगे रहलौं, आइ वेचारी मरि रहल अछि तँ मुहों नइ देखब। जी-जाँति पोतीकेँ संग केने एलौं।”

कुरसीपर सँ उठि राधेश्याम शबानाक बाँहि पकैड़ आँगन दिस बढ़ैत बहिनकेँ शोर पाड़ैत कहलखिन-

“मौसी एलखुन। पएर धोइले पानि दहुन।”

राधेश्यामक बात सुनि दुनू बहिनो आ पत्नी-रागिणियोँ घरसँ निकैल आँगन एली। गौरी बाजल-

“मौसी, शबाना मौसी!”

“हँ।”

शबानो आ रेहनो पएर धोइ सोझे सरोजनी लग पहुँच दुनू पएर पकैड़ कानए लगली। कनैत देख सरोजनी पुछलखिन-

“कनै किए छैं। हम कि कोनो आइए मरब? एत्ती राति-के किए एलैंह?”

शबाना-

“बहिन, रस्ता-पेरा बन्न अछि। दू बर्खसँ भौड़ियो-बट्टा बन्न भऽ गेल। जखनसँ अहाँ दऽ सुनलौं तखनेसँ मनमे उड़ी-बीड़ी लगि गेल तँए दिन-देखार नै आबि चोरा कऽ अखन ऐलौं हेन।”

सरोजनी बहुत कठीनसँ बजली-

“धिया-पुता नीके छौ किने?”

शबाना कहलकैन-

“शरीरसँ तँ सब नीके अछि, मुदा कारबार बन्न भऽ गेल छइ।”

“गामो दिस गेल छेलैं?”

“नहि। कन्ना जाएब...। तेसर सालक बाढ़िमे अहूँक गाम कटि कऽ कमला पेटमे चलि गेल आ हमरो गाम कोसीमे। आब सुने छी जे हमरो गाम भरनापर बसल हेन आ अहूँक गाम कमलाक पछबरिया छहरक पछबरिया बाधमे। घनश्यामपुर तक तँ रस्ता ऐछे मुदा ओइसँ आगू रस्ते सभपर मोइन फोड़ि देने छइ। पौरुकाँ जे जाइत रही तँ लगमा लगमे डुमए लगलौं।”

सरोजनी गौरीकेँ इशारासँ कहलक-

“दाइ, बड़ राति भेलइ। मौसीकेँ खाइले दहक।”

शबाना बाजल-

"बहिन, पहिने हम केना खाएब? पहिने बौआ राधेश्यामकेँ खुआ दियौ। खा कऽ सुति रहत। हम भरि राति बहिनसँ गप-सप्प करब। बहुत दिनक गप्प पछुआएल अछि।"

शबानाक बात सुनि राधेश्याम मने-मन सोचए लगला जे दुनियाँमे बहिनक कमी नै अछि। लोक अनेरे अप्पन आ बीरान बुझैए। ई सभ मनक खेल छिऐ। हँसी-खुशीसँ जीवन बितबैमे जे संग रहए, वएह अप्पन। शवानाकेँ कहलक-

"मौसी, माए तँ ने खाली हमरे माए छी आ ने अहींक बहिन। सबहक अप्पन-अप्पन छिऐ, तँए कियो अप्पन करत किने?"

पुबरिये घरक ओसारपर राधेश्याम सूतल। बाँकी सभ पुबरिया घरमे बैस गप-सप्प करए लगली। गौरी मौसीकेँ पुछलकैन-

"मौसी, अहाँ दुनू बहिन तँ दू गामक छिऐ। दुनू गोरेमे चीन्हा-परिचए कहिया भेल?"

शबाना बाजल-

"जहिए-सँ ज्ञान-परान भेल तहिए-सँ। हमरा बाप आ तोरा नानाकेँ दोस्तियारे रहैन। कोस भरि पूब हमर गाम-झगड़ुआ अछि आ कोस भरि पच्छिम बहिनक। अखन तँ दुनू गाम उपैट कऽ दोसरठीम बसल अछि। मुदा पहिने बड़ सुन्दर दुनू गाम छेलइ।

गौरी-

"मौसी, हम तँ बच्चेमे, बहुत दिन पहिनहि गेल रही। तइ दिनमे तँ बड़ सुन्दर गाम रहइ।"

शबाना-

"हँ, से तँ रहबे करइ। मुदा आब देखबहक तँ बिसवासे ने हेतह जे वएह गाम छिऐ। हँ, तँ कहै छेलिय, काकाकेँ बहुत खेत-पथार रहैन। चारि जोड़ा बरद खुट्टापर रहैन, चारि-पाँचटा महींसो रहैन। मुदा हमरा बापकेँ खेत-पथार नइ रहए। गामेमे खादी-भण्डार छेलइ। सौंसे गामक लोक चरखो चलबै आ कपड़ो बीनै। सभसँ नीक कारीगर रहए हमर बाप। घरक सभ कियो सुतो काटी आ कपड़ो बनबैत रही। सलगा, चद्दैर, गमछी आ धोती बीनैमे हमरा बापक हाथ

पकड़निहार कियो नहि। बहिनक गामक सभ हमरे बापसँ कपड़ा कीनए। सौंसे गामसँ अपेछा रहए। पाँचे-सात बर्खक रही तहिए-सँ बहिनक ऐठाम जेबो करिऐ आ खेबो करिऐ।"

शबानाक बात सुनि गौरीकेँ अचरज लगलै। मने-मन सोचए लगल जे एक तँ गरीब, तहूमे मुसलमान। तैबीच दोस्ती..! ..मुस्कियाइत बिच्चेमे रागिणी पुछलकैन-

"कोन पुरना खिस्सा मौसी जोति देलखिन। ई कहथु जे दुनू बहिनक बिआह एक्के दिन भेलैन?"

"धुर्र कनियाँ! अहाँ की बजै छी। हमरासँ बहिन दू-तीन बरख जेठ छैथ। बहिनक बिआहसँ दू बरख पाछू हमर बिआह भेल। काका हमरा बापकेँ कहलखिन जे पुबरिया आ दछिनबरिया इलाका कोसिकन्हा भऽ गेल तँए आब कथा-कुटुमैती उतरे-भर करब नीक हएत।"

कनी गुम रहि शबाना पुन: बाजल-

"बेटी, कपारक दोख भेल। आब अपनो बुझै छी जे नैहरक काजक जे महौत छेलै से ऐ काजक- भौड़ीक- नै अछि। मुदा की करितौं। ऐ ठीम उ काज ऐछे नहि। ने खादी-भण्डार छै आ ने कारोबार अछि।"

मुस्कियाइत रागिणी-

"मौसी, अपना बिआहमे तँ हम कनीए-टा रही। सभ गप मनो ने अछि। हिनका तँ मन हेतैन, बिआहमे झगड़ा किए भेल रहए?"

कनी काल गुम रहि शबाना ठाहाका मारि हँसि, बाजल-

"अहाँक बाबू बड़ मखौलिया रहैथ। हँसी-चौलमे केकरो नै जीतए देथिन। घरदेखीमे एलैथ। हम दुनू बहिन खूब छकौलिऐन। पीढ़ी तरमे खपटा, बैसैले आ रूइआ तरि कऽ खाइले सेहो देलिऐन। खा कऽ जहाँ उठला कि एक डोल करिक्का रंग कपारपर उझैल देलिऐन। मुदा हुनका लिए धनि सन। तहिना बरियातीमे ओहो छकौलकैन। सबहक धोतीमे चारि-पाँच दिनक सड़लाहा खइर लगा देलकैन। पहिने तँ बरियाती सभ अपनेमे रक्का-टोकी केलक। मुदा जहन भाँज लगलै जे घरवारी सभकेँ सड़लाहा खइर लगा देलक। तहन बरियातियो सभ टुटल। मुदा कहे-कही भऽ कऽ रहि गेलइ। मारि-पीटि नै भेलइ।"

कहि हँसए लगल। सभ हँसल।

राधेश्याम ओसारपर सूतल रहैथ। मुदा एक्को बेर आँखि बन्न नइ भेलैन। किएक तँ मनमे शंका होइत रहैन जे अनचोकेमे ने माए मरि जाए। खिस्से-पिहानीमे राति कटि गेल।

भोर होइते शबाना राधेश्यामकेँ कहलक-

"बौआ, अपन मन अछि जे आब बहिनकेँ एक काठी चढ़ाइए कऽ जाएब। मुदा गामे-गाम जे आगि लगल देखै छिऐ तइसँ डर होइए!"

राधेश्याम-

"मौसी, ऐठाम कियो किछु नै बिगाड़ि सकै छौ। जहिया तक तोरा रहैक मन हौउ, निर्भीक भऽ कऽ रह।"

शबाना-

"बौआ, मन होइए जे बहिनक सभ नुआ-वस्तर हम खीचि दिऐ। फेर ई दिन कहिया भेटत।"

राधेश्याम-

"दुनू बहिनक बीच हम की कहबौ मौसी। जे मन फुरौ से कर।"

❍

शब्द संख्या : 2688

घरदेखिया

नीन्न टुटिते लुखियाक नजैर दिन भरिक काजपर पड़लैन। काज देख मनमे अबूह लगए लगलैन। असकता गेली। मुदा तैयो हूबा बान्हि कऽ उठए चाहली कि आँखि पुबरिया घरक छप्परपर गेलैन। ..बिहाड़िमे मठौठ परहक खढ़ उड़िया गेल। हड्डी जकाँ बत्ती झक-झक करैए। की कहता बरतुहार! कहता ने जे मसोमातक घर छिऐ तँए मठौठ उजड़ल छइ। ..लुखियाकेँ खौंझ उठलैन। ठोर पटपटबैत बजली-

"जेहने नाशी डकूबा बिहाड़ि तेहने झड़कलहा कारकौआ! जुट बान्हि-बान्हि औत आ लोलसँ खढ़ उजाड़ि-उजाड़ि छिड़ियौत...।"

नजैर निच्चाँ होइते दछिनबरिया टाटपर पड़लैन। बरसातमे टाटक आलन गलि कऽ झड़ि गेल। मात्र कड़ची-बत्तीटा झक-झक करैए। जइसँ ओहिना दछिनबरिया बँसबिट्टी देखै छी, बेपर्द आँगन अछि..!

लुखियाक मन खिन्न हुअ लगलैन। मनमे एलैन, पुरना साड़ी टाटमे टाँगि देबइ। मुदा बरतुहारक आँखिमे की कोनो गेजर भेल रहतैन जे नइ देखता। तहूमे साड़ीसँ केते अन्हराएत! ओहिना सभ किछु देखत। आरो मन निच्चाँ खसैत जाइत रहैन। बाप रे! की कहत बरतुहार..?

दिओर-नागेसरपर तामस उठए लगलैन। कोन जरूरी छेलैन जे कौल्हुके दिन दऽ देलखिन। घर-अँगना चिक्कन कऽ लैतौं तहन अबैक दिन दैतऽथिन। कोनो की हमर बेटा बाढ़िमे दहाएल जाइ छेलए। पाँच दिन आगुए-क दिन भेने की होइतै..? तामस बढ़लैन। तैबीच आँखि टाटपर सँ निच्चाँ उतरलैन। नजैर पड़लैन अँगनाक पनिबटपर। झक-झक करैत झुटका। उबड़-खाबड़ सौंसे आँगन। तहूमे जे झुटका सेरियाममे अछि ओ तँ नहि, मुदा जे अलगल अछि ओ तँ चुप-चुप गड़ैए। सौंसे अँगना सेरियबैमे कम-सँ-कम दस छिट्टा माटि लगत। दस छिट्टा माटि उघि, ढेप फोड़ि, सेरिया कऽ पटबैमे तँ भरि दिन लागि जाएत। तहन आन काज केना हएत..?

काजक तरमे लुखिया दबाएल जाइ छैली। तामस आरो लहरए लगलैन।

अबूहो बढ़िते गेलैन। ओछाइनेपर पड़ल-पड़ल भारसँ दबैत रहली। दुइए मायपुत की सभ करब? तहूमे आइ ऐ छौड़ाकेँ केना किछु करैले कहबै। ओकरे देखैले ने घरदेखिया औत। छौड़ाकेँ तँ अपनो मारिते रास काज हेतइ। कानी छँटौत। अंगा-धोती खीचत। आइरन करबैले गंजपर जाएत। गमकौआ साबुनसँ नहाएत। तेल लेत। बाबरी सीटत...। तैठाम कोदारि-खुरपी चलबैले केना कहबै? लोहे छिऐ, जँ किनसाइत लगिए जाइ। तहन तँ आरो पहपैट हएत। कथकिया जे हाथ-पैरमे पट्टी बान्हल देखथिन तँ की कहता? ..लुखियाक मनक तामस निच्चाँ-मुहेँ ससरए लगलैन। तामस उतैरते नजैर घरदेखियाक खेनाइ-पिनाइपर पहुँचलैन। आन काज तँ रहियो-सहि कऽ भऽ सकैए मुदा दूध तँ एक दिन पहिनहि पौड़ल जाइत। जँ से नै पौड़ब तँ दही केना हएत। शुभ काजमे जँ दहीए नै हएत तँ काजक कोन भरोस। एक तँ महींसबला सभ तेहेन अछि जे दूधसँ बेसी पानियेँ मिला दइए। नबका मटकुरियो ने अछि जे पानियोँ सोखि लेत। ..फेर मनमे खौंझ उठए लगलैन। मुदा नजैर चाउर-दालि दिस बढ़िते तामस दबलैन। बेटाक घरदेखिया औत, हुनका केना खेसारी दालि आ मोटका चाउरक भात खाइले देबैन। लोको दुसत आ अपनो मन की कहत। कियो किछु कहह कि नहि, मुदा कुल-खानदानक तँ नाको तँ नइ ने कटा लेब। जँ इज्जते नहि तँ जिनगीए की? ..मन पड़लैन घैलमे राखल कनकजीर चाउर। कनकजीर चाउरक भात आ नवका कुटुम मनमे अबिते लुखियाक हृदए पघिलल केरा जकाँ पलड़ए लगलैन। मने-मन भातक प्रेमी- दालिक मिलान करए लगली। मेही भातमे मेही दालिक मिलान नीक हएत। मुदा खेरही-मौसरी दालि तँ भोज-काजमे नै होइत। होइत तँ बदाम-राहैरक। मुदा राहैर तँ घरमे अछि नहि। बोंग-मरना बाढ़ियो तेना दू सालसँ अबैए जे एक्को डाँट राहैर नै होइए। ..तत्-मत् करैत लुखियाक मन फेर झुझुआए लगलैन। बिनु आमिले राहैरक दालि केहेन हएत? आमक मास रहैत तँ चारि फाँक कँचके आम दऽ दितिऐ, सेहो नै अछि। ..फेर मन आगू बढ़लैन, पहिल-पहिल समैध-समधीन बनब आ एगारहोटा तरकारी खाइले नै देबैन से केहेन हएत। गुन-धुन करए लगली। गुन-धुन करिते बर-बरीक आ अदौरी मन पड़लैन। एक्के दिनमे केना ओरियान हएत? घाइटे-बेसन बनबैमे तँ तीन दिन लागत। तहन केना हएत? फेर तामस पजरए लगलैन। मन फेर खौंझा गेलैन। बाजए लगली-

"ई सभटा आगि लगौल नगेसराक छी। जाबे ओकरा छितनीसँ चानि नै तोड़ब ताबे ओकरा बुधि नै हेतइ। तमसाएले नागेसरक आँगन दिस बजैत

बढ़ली। पुरुख छी आकि पुरुखक झड़। जइ पुरुखकेँ काजक हिसाबे ने जोड़ए औत ओहो कोनो पुरुखे भेल, ओइसँ नीक तँ मौगी।

नागेसर नदी दिस गेल छला। नागेसरकेँ नइ देख लुखिया डेढ़िये पर अनधुन बाजए लगली। मुदा नागेसरक पत्नी–भुरकुरिया चुप-चाप सुनैत। किछु बजैत नहि। किएक तँ मने-मन सोचैत जे दिओर-भौजाइक बीचक बात छी, तैबीच हम किएक मुँह लगबी। बजैत-बजैत लुखियाक पेटक बात सठलैन। सठिते तामसो उतरलैन। बोलीक गरमीकेँ कमैत देख भुरकुरिया बाजल-

"अँगना चलौथु दीदी। बीड़ी पीब लौथु, तहन जइहैथ।"

घरसँ बीड़ी-सलाइ निकालि दुनू गोरे ओसारपर बैस गप-सप्प करए लगली। सलाइ खर्ड़ैत भुरकुरिया बाजल-

"दीदी, आब पीहुओकेँ जुआन होइमे देरी नै लगतैन। कण्ठ फुटि गेलैन।"

भुरकुरियाक बात सुनि लुखिया हेरा गेली। जुआन बेटाक सुख मनमे नाचए लगलैन। लुखियाकेँ आनन्दित होइत देख फेर भुरकुरिया बाजल-

"भैयोसँ बेसी भीहिगर जवान पीहुआ हेतैन।"

खुशीसँ लुखियाक हृदए बमैक उठलैन, बजली-

"कनियाँ, खाइ-पीबैमे छौड़ाकेँ कोनो की कोताही करै छिऐ। एक तँ भगवान नउएँ-कउएँ कऽ एकटा बेटा देलैन। तेकरो जँ सुख नै होइ तँ एते खटबे केकरा-ले करै छी। बापक मन तँ परुँके बिआह करैक रहैन मुदा तैबीच अपने चलि गेला। आब साल लगलै तँए ऐ बेर जेना-तेना बिआह कैये देबइ।"

कहि आँगन दिस विदा भेली। अँगनासँ निकैलते मन नागेसरपर गेलैन। नागेसरे वेचाराक कोन दोख, ओहो की कोनो अधला केलैन। हुनको मनमे ने होइत हेतैन जे झब-दे पुतोहु घर आबैन। अखन तँ वएह ने बाप बनि ठाढ़ छथिन। मुदा काज औगताएल केलैन। गरीब छी तेकर माने ई नहि ने जे इज्जत नै अछि। इज्जतकेँ तँ बँचा कऽ राखए पड़ै छइ। नव कुटुमैती भऽ रहल अछि। नव कुटुम दुआरपर औता। हुनका जँ पाँच कौर खैयो-ले नै देबैन से केहेन हएत। स्वागत की कोनो धोतीए-टाकासँ होइ छै, आकि दूटा बोल आ दू कौर अन्नोसँ होइ छइ। जेहेन पाहुन रहता तेहने ने बेवहारो करए पड़त। ..लुखियाक मनमे तामस उठए लगलैन। एहेन पुरुखे की जिनका धियो-पुतोक बिआह करैक लूरि

नहि। तैबीच मन पड़लैन चाह-पान। चाहो-पानक ओरियान तँ करए पड़त। एहेन नहि ने हुअए जे एक दिस करी आ दोसर दिस छुटि जाए। चाहे-पानटा किए, बीड़ियो-तमाकुलक ओरियान करए पड़त ने। ई की कोनो शहर-बजार छिऐ जे लोक एक्के-आधटा अमल डेबैए। ई तँ गाम छिऐ, ऐठाम तँ एक-एक आदमी पनरह-पनरहटा अमल डेबैए। ..अपनहि विचारमे लुखिया ओझरा गेली। किछु फुरबे ने करैन। बुकौर लगए लगलैन। आँखि नोरसँ ढबढबाए लगलैन। मनमे उठए लगलैन जे घर तँ पुरुखेक होइए। ई बात मनमे अबिते लुखिया दूरापर आबि नागेसरक बाट देखए लगली। नदी दिससँ अबैत नागेसरपर नजैर पड़लैन। नजैर पड़िते बजली-

"काल्हि घरदेखिया औता आ अहाँ निचेनसँ टहलान मारै छी?"

नागेसर-

"अच्छा चलू। बैस कऽ सभ विचारि लइ छी।"

दुनू गोरे आँगन दिस बढ़लैथ। ओचान खर्ड़ैत पीहुआकेँ नागेसर कहलखिन-

"अखन तूँ ऐंठार चिक्कन करै छेँ की जा कऽ बाबरी छँटा एमे? काजक अँगना छियौ तँए पहिने बाहरक काज समैट लेमे की घरे-अँगनाक काज करै छेँ, जो जल्दी।"

खर्ड़ा रखि पीहुआ विदा भेल। लुखियाक नजैर बदललैन। जहिना चश्माक शीशाक रंग दुनियाँक रंगकेँ बदैल दइ छै तहिना लुखियाक नजैर नागेसरक बदलल रूपकेँ देखलक। बदलल रूप देखते सिनेह उमड़ए लगलैन। सिनेहसँ बजली-

"एते लगक दिन किए देलिऐन! चारि दिन आगूक दैतिऐन। भरिए दिनमे सभ काज सम्हारल हएत?"

लुखियाक समस्याकेँ हल्लुक बनबैत नागेसर बजला-

"आइ पहिल दिन छी घरदेखिया घर-बर देखए औत आकि खान-पीन करए? पसिन हेतैन तँ खेता-पीता, नहि तँ अपना घरक रस्ता धरता। अखन तँ ओ बटोही बनि कऽ औता। तँए हमरो ओते सुआगतक ओरियान करैक जरूरत नै अछि। जहन पीहुआ पसिन हेतैन, बिआह करब गछता, तहन ने किछु, आकि समधीन बनैले बड़ धड़फड़ाएल छी! होइए जे कखन समैधक संग होरी खेलाइ!"

'समैधक संग होरी खेलाएब' सुनि लुखियाक मन उड़ए लगलैन। बजली-

"हम की कोनो समैधे भरोसे फगुआ रखने छी, दिअर कोन दिनले अछि?"

लुखियाक मनसँ चिन्ता पड़ा गेल। मुस्कियाइत बजली-

"बाटो-बटोही जँ दुआरपर औता तँ एक लोटा पानियोँ ने देबैन?"

नागेसर-

"से तँ देबे करबैन। यएह इज्जत तँ हमरा सबहक बाप-दादाक देल अनमोल धरोहर छी।"

खुशीसँ भँसियाइत लुखिया कहलकैन-

"पुरुखक थाह हम नै पाएब।"

नागेसर-

"कनी कालमे बजार जाएब। जे सभ जरूरीक वौस अछि से सभ कीनि आनब। तइले एते माथा-पच्ची करैक कोन जरूरी अछि। अतिथिक सुआगत मात्र नीक-निकुत खुऔनहि होइत आकि प्रेम-पूर्वक तुकपर खुऔने होइत। बैसैले चद्दैर साफ केलौं? सिरमो खोल खीच लेब।"

"सिरमामे खोल कहाँ अछि। ओहिना पुरना साड़ीक बनौने छी। ओहूले दूटा खोल कीनने आएब।"

"बड़बढ़ियाँ।"

दोसर साँझ आँगनमे बैस नागेसर पीहुआकेँ पुछलक-

"तोरा जे नाओं पुछथुन्ह तँ की कहबुहुन?"

पीहुआ बाजल-

"से की हमरा नाओं नै बुझल अछि। बउओ, माइयो आ गामोक नाओं बुझल अछि।"

"ओते नै पुछै छियौ। अपनेटा नाओं बाज।"

"पीहुआ"

"धुर बुड़िबक। पीहुआ नै पुहुपलाल कहिहौन।"

"से हमर नाओं पुहुपलाल कहाँ छी। पहिने सभ कहैत रहए, मुदा आब तँ

सभ पीहुए कहैए। अहिना ने लोकक नाओं बदली होइत रहै छइ।"

मुँह बिजकबैत लुखिया कहलक-

"हँसी-चौलमे लोक तोरा 'पीहुआ' कहै छौ आकि जनमौटी नाओं छियौ।"

छठियार राति, दाइ-माइ पुहुपलाल नामकरण केलखिन। जहन ओ आठ-दस बर्खक भेल, तहन जाड़क मास बाधमे फानी लगबए लगल। गहींर खेत सभमे सिल्लियो आ पीहुओ आबि-आबि धान चभैत। जेकरा ओ फानी लगा-लगा फँसबैत। अपनो खाइत आ बेचबो करैत। कछु दिनक पछाइत स्त्रीगण सभ पीहुआबला कहए लगलै। फेर किछु दिनक पछाइत भौजाइ सभ पीहुआ कहए लगलै। मुदा तेकर एक्को मिसिया दुख ने पीहुए-कें होइत आ ने पीहुआ माइए-बापकेँ। तँए 'पुहुपलाल' बदैल 'पीहुआ' भऽ गेल।

मने-मन नागेसर विचारलैन जे ई पीहुआ एना नै सुधरत। अखन सिखाइयो देबै तैयो बजै कालमे बाजिए देत। से नहि तँ दोसर गरे काज लिअ पड़त। लुखियाकेँ कहलखिन-

"मोटरी खोलि सभ समान मिला लिअ।"

दुनू दिओर-भौजाइ सभ समान मिलबए लगल। धोती देख दुनूक बीच मतभेद भऽ गेलैन। कन्यागतक विदाइ-ले एक्के जोड़ धोती नागेसर कीनि कऽ अनने छला। किएक तँ बुझलैन जे बेटीबला धोती नै पहिरैए। मुदा से बात लुखिया बिसैर गेल छेली। तँए बजली-

"दू गोरे औता, तहन एक जोड़ धोतीसँ की हएत? कम-सँ-कम तँ जोड़ो भरि विदाइ करबैन किने। जेकरा बेसी रहै छै ओ पाँचो टूक कपड़ा विदाइ करैए।"

सामंजस करैत नागेसर बजला-

"हमरो सासुरक धोती रखले अछि। काज पड़त तँ दऽ देबैन।"

"गुलाबीए रंगमे रंगल अछि। एकरो गुलाबीए-मे रंगि लेब। रंगो कीनि कऽ नेनहि आएल छी।"

दोसर दिन, सबेरे सात बजे कन्यागत दुनू बापूत पहुँचला। कन्यागतकेँ अबैसँ पहिनहि नागेसर एकचारीमे बिछान बिछा, तैयार केने छला। नबका खोलक सिरमो सिरा दिस देने छला। कन्यागतकेँ अबिते नागेसर हुनका हाथसँ

ठेंगा-छत्ता लऽ दरबज्जापर रखि, पएर धोइले लोटा बढ़ौलकैन। चाह-पान आनए लुखिया पछुआरे बाटे लफरल चौक दिस विदा भेली। जाधैर दुनू बापूत– डोमन–हाथ-पएर धोइ कुशल-छेम करैत बिछानपर बैसला ताधैर लुखियो चौकपर सँ चाह-पान कीनि एली। नागेसरक दुनू आँखि दुनू दिस। तँए देख लेलैन जे चाह आबि गेल। पीहुआकेँ कहलैन-

"बौआ, चाह नेने आबह?"

"पानो।"

"पहिने चाह लाबह। पछाइत पान अनिहह।"

पीहुआक बोली डोमन सुनि लेलैन। तँए नाओं-गाओं पुछैक जरूरते ने रहलैन। दोहारा नमगर देह। मने-मन डोमन लड़िका पसिन कऽ लेलैन। आँखिक इशारासँ डोमन बुचनकेँ पुछलखिन। आँखिए-क इशारासँ बुचन सेहो स्वीकृति दऽ देलकैन। दुनू बापूतक मुँहमे हँसी नाचि उठलैन। मुदा लगले डोमनक मनमे एकटा शंका पैस गेलैन। शंका ई जे मरदा-मरदी परिवार नै अछि तँए हो-ने-हो कोनो छोट-छीन बाधा ने बीचमे आबि भंगठा दिअए। ..चाह पीब पान खा डोमन नागेसरकेँ कहलखिन-

"समैध, जाधैर भानस होइए ताधैर बाध दिससँ घुमि अबैले चलू। हँ, एकटा बात तँ कहबे ने केलौं, तीमन-तरकारी बेसी नै करब। सात-आठ दिनसँ लगातार माछ खेलौं, पेट गड़बड़ भऽ गेल अछि। गाममे रहितौं तँ मँड़बज्झू भात आ केरा चाहे भँट्टाक सन्ना संगे खैतौं। मुदा से तँ ऐठाम नै हएत। तँए दालि-भात एकटा तरकारी-सजमैन चाहे झिमनीक- बना लेब। तहूमे बेसी मसल्ला नहि।"

बीड़ी-सलाइ गोलगलाक जेबीमे रखि नागेसर लुखियाकेँ कहए आँगन गेला। ओना टाटक अढ़सँ लुखियो सुनि नेने छेली, तँए जवाब दइले मन उबियाइते रहैन। अवसर पाबि लुखिया बजली-

"एते रास जे तीमन-तरकारीक ओरियान केने छी से की हएत। अपने नै खेता तँ आँगनवाली-ले मोटरी बान्हि देबैन।"

अपियारीमे फँसैत माँछ जकाँ लड़िकाक माएकेँ फँसैत देख डोमन बजला-

"तइले की हेतै, हिनको मोटरी बान्हि कन्हापर नेने जेबैन।"

आँखि दाबि नागेसर लुखियाक बोली रोकए चाहलैन। मुदा लुखियाक

मुँहक बात बरतुहार दिस नै बढ़ि नागेसरे दिस खसलैन-

"बड़ बुधियार छैथ। बुझब जे बेटाक बिआह केलौं तँ गामो-घर आ समैधो नीक भेटला। तँए जेना-तेना कुटमैती कैये लेब।"

लुखियाक बात सुनि नागेसरक मन हल्लुक भेलैन। लुखियाकेँ अपन भार दऽ बाधा हटा लेलैन। नहि तँ बेर-बेर बाता-बाती होइत। ..समए पाबि डोमन जोरसँ बजला-

"समधीने लग नुरियाएल रहब आकि चलबो करब?"

लुखियाक मन भीतरसँ चप-चपा गेलैन। बजैले मन लुस-फुस करए लगलैन। बजली-

"हिनकेटा समधीन लघैरगर छैन, आनकेँ की किछु छइ?"

मुस्कियाइत नागेसर आँगनसँ निकैल बाध दिस विदा भेला। आँखि उठा-उठा डोमन गाम-घर देखैत जाइत रहैथ। टोलसँ निकैल पच्छिम-मुहेँ एक पेड़िया धेलैन। गाछी टपि हाथक इशारासँ पच्छिम-मुहेँ देखबैत नागेसर कहलकैन-

"पछबारि भाग जे चतरलाहा गाछ देखै छिऐ वएह गामक सीमा छी।"

दुनू बापूत देख मुड़ी डोलबए लगला। डोमन पुछलखिन-

"आ उत्तरबरिया सीमा?"

ओंगरीसँ देखबैत नागेसर कहलकैन-

"ओ ढिमका जे देखै छिऐ, सएह छी।"

"दछिनबरिया।"

"तीन चारिटा जे छोटका गाछ एकठाम देखै छिऐ ओ सीमेपर अछि। पीरारक गाछ छिऐ।"

बाधकेँ हियासि डोमन आँखिक इशारासँ बुचनकेँ सेहो देखेलकैन। दुनू गोरे मने-मन अन्दाजलैन जे दू साए बीघासँ ऊपरेक बाध अछि। तैबीच नागेसर बजला-

"समैध, बाबूक अमलदारीमे तँ सम्मिलिते छल मुदा हमरा दुनू भाँइमे बँटबारा भऽ गेल। उत्तरसँ हमर छी आ दच्छिनसँ भातिजक।"

डोमन-

"खोपड़ी केतए बनौने छी?"

नागेसरकेँ पैछला घटना मन पड़लैन। ओंगरीसँ देखबैत बजला-

"ओइ बँसबाड़ि आ गाछीक बीच एकटा खाधि छइ। जइमे बिसनारिक गाछ सभ छइ। भदबारिमे पानि भरि जाइए। बाँसोक पात आ गाछो सबहक पात ओइमे खसि-खसि सड़ैए। बिसनारियोक गाछ सभ सड़ि जाइए। जइसँ कारी खट-खट पानि भऽ जाइ छइ। ढाकीक-ढाकी मच्छर फड़ि जाइ छइ। ओही खाधिमे भैयाकेँ कालाजारक मच्छर काटि लेलकैन। केतबो दबाइ-बिरो भेलैन, मुदा नै ठहरला।"

डोमन पुछलकैन-

"अहाँ सभकेँ सरकारी अस्पतालमे दबाइ नै दइए?"

"से जँ दैतै तँ एते लोक मरबै करैत। बीस आदमीसँ ऊपरे हमरा गाममे कालाजारसँ मरल। अस्पतालमे किछु छै थोड़े, ओहिना ईंटाक घरटा ठाढ़ अछि। दबाइकेँ के कहए जे कुरसियो-टेबुल बेच नेने अछि।"

बजैत-बजैत नागेसरक आँखि नोरा गेलैन। गमछासँ आँखि पोछि आगू बढ़ि गेला। तीनू गोरे खोपड़ी लग पहुँचला। ..बाधक बीचमे कट्ठा दुइए-क परती अछि, ओही परतीपर दुनू फरीक खोपड़ियो बन्हने आ पाँचटा अनेरूआ गाछो छइ, जइमे दूटा साहोरक, दू-टा पितोहिया आ एकटा बजरकेरायक छइ। साहोरक गाछ सभसँ पुरान मुदा देखैमे सभसँ छोट अछि। तहिना बजरकेराय सभसँ कम दिनक मुदा सभसँ नमहर अछि। पितोहिया गाछक निच्चाँमे तीनू गोरे दुबिपर बैस गप-सप्प करए लगला।

डोमन पुछलखिन-

"राखी केना गिरहत सभ दइए?"

"बीघामे पाँच घुर धानो आ गहुमो।"

"आ, रब्बी-राइ माने दलिहन-तेलहन?"

"अन्दाजेसँ देलक। अपनो सभ उखाड़ि दइ छिऐ। जइसँ बोइनो भेल आ राखियो।"

दुनू बापूत डोमन मने-मन हिसाब जोड़ए लगला। अगर कट्ठामे एक क्विन्टल उपजत तँ पच्चीस किलो बीघामे भेल। जँ से नहि पचासो किलोक कट्ठा हएत, तैयो साढ़े बारह किलो बीघा भेलइ। साए बीघासँ ऊपरेक बाध अछि। तइसँ या तँ पच्चीस क्विन्टल, नहि तँ साढ़े बारह क्विन्टल धान सालमे जरूर होइतै

हेतैन। तेकर पछाइत गहुम भेल, मरूआ भेल, आरो-आरो दलिहन-तेलहन भेल। दुइए मायपुत केते खाएत? हमरो बेटीकेँ अन्नक दुख नै हेतइ। ..मुस्कियाइत डोमन बेटा दिस तकलैथ। बेटो बाप दिस ताकि आँखिए-सँ गप-सप्प कऽ लेलैन। कनी काल चुप रहि डोमन नागेसरकेँ पुछलखिन-

“कथी-कथीक खेती बाधमे होइए?”

“पान साल पहिने तक तँ अन्नेटा उपजै छल। टो-टा कऽ सेरसो-तोड़ीक खेती सेहो होइ। मुदा आब खेती बदैल रहल अछि।”

मुस्कियाइत पुन: आगू बजला-

“की कहब, बुझू तँ राजा छी। दू साए बीघाकेँ अपन बपौती सम्पैत बुझै छी। दुनू साए बीघाक मालिक छी। एक बेर टाँहि दइ छलिऐ तँ जुआन-जुआन घसवहिनी सभ नाँगैर सुटका कऽ पड़ा जाइ छल। मुदा आब से नै करै छी। खसल-पड़ल खेतक आ आड़ि परहक घास कटैले केकरो मनाही नै करै छिऐ...।”

किछु मन पाड़ि फेर बजला-

“हँ तँ कहै छेलौं जे जइ दिनसँ लोक बोरिंग गड़ौलक आ कोसियो नहैर एलै तइ दिनसँ तँ बुझि पड़ैए जे घरसँ बाध धरि लछमी सदिकाल नाचिते रहै छैथ। केकरो देखबै धानक बीआ पाड़ैए तँ कियो रोपैले बीआ उखाड़ैए। कियो कमठौन करैए तँ कियो धान कटैए, तँ कियो बोझ उघैए। कियो दाउन करैए, तँ कियो धान ओसबैए, तँ कियो अग्गो रखैए। कियो धन-उसनियाँ करैए तँ कियो पथार सुखबैए। कियो मीलपर धान कुटबैए तँ कियो चाउर फटकैए...। केते कहब।”

डोमन पुछलखिन-

“आनो-आनो चीजक खेती हुअ लागल हएत?”

नागेसर बजला-

“एँह की कहब! पचासो किसिमक तँ धानेक खेती हुअ लगल अछि। ओते धानक की नाउओं मोन अछि। धानक संग-संग खाद-पानि दऽ कऽ गहुम, दलिहनक खेती सेहो हुअ लगल अछि। एते दिन तँ सेरसौए-तोरक खेती होइ छल। आब सूर्यमुखीक खेती सेहो होइए। राशि-राशिक तीमन-तरकारी सेहो हुअ लगल अछि। बीघा दसेमे पनरह-बीस गोरे नवका आमक कलम सेहो लगौलक

अछि। एँह, की कहब, आन्ध्राक आम, मद्रासी आम सभ सेहो लोक लगौलक हेन। अजीब-अजीब आमो सभ अछि। ऐ बेर रोपू तँ पौरुकेँ सँ फड़ए लगत। जेहने देखैमे लहटगर लागत तेहने खैयोमे।”

डोमन नागेसरकेँ पुछलखिन-

“आमक ओगरबाहि केना दइए?”

“तीन आममे एक आम सरही आ चारि आममे एक कलमी। से जइ दिन तोड़ल जाएत तइ दिनक कहलौं, तैबीच खसल-पड़ल आमक हिसाब नहि। तेहेन आम सभ अछि जे टुकलेसँ धिया-पुता खाए लगैए। खटहो आमकेँ चुन लगा कऽ मीठ बना लइए। धियो-पुतो तेते बुधियार भऽ गेल अछि जे अँगनेसँ चुन नेने जाएत आ आममे लगा कऽ खाएत।”

डोमन पुछलखिन-

“आरो की सभ आमदनी बाधसँ अछि?”

“सभटा की मनो अछि। (ओंगरीसँ देखबैत) दछिनबारि भाग बीघा बीसेक गहींर खेत छल। चौरी। गोटे साल नहि, ने तँ पहिने सभ साल धान दहाइए जाइ छेलइ। मुदा आब, जहियासँ पानिक सुविधा भेल, सभ गिरहत अपन-अपन खेतकेँ आरो खुनि कऽ पोखैर जकाँ बना-बना माछ पोसए लगल हेन। आन्ध्र प्रदेशक एकटा माछ छै ‘इलिस’। एँह, की कहब, (मुँह चटपटबैत) अपना सभ कहै छिऐ रेहु, मुदा ओइ ‘इलिस’क आगूमे किछु ने छी। जहिना बढ़ैमे तहिना सुआद। हमरा की कोनो रोक अछि, हमहीं ओगरै छिऐ ने, जहिया मन भेल तहिया बन्शीमे दूटा मारि लेलौं आ सभ खेलौं। सभसँ मुश्किल आब बनौनाइ भऽ गेल। काजेसँ ने छुट्टी। के ओते मेठैन करि कऽ खाएत। आब सुरूज माथपर आबि गेल। चलू। भानसो भऽ गेल हएत। गरमे-गरम खाइमे नीक होइ छइ।”

तीनू गोरे बाधसँ घर दिसक रस्ता धेलैन। थोड़े आगू बढ़ला तँ बँसबाड़िमे एकटा चिड़ैकेँ बजैत सुनलैन। बाजबो अजीब ढंगक। मुस्कियाइत नागेसर डोमनकेँ पुछलखिन-

“कहू तँ ई चिड़ै की बजैए?”

कनी अकानि कऽ डोमन बजला-

“ई तँ ‘पान, बीड़ी, सिगरेट’ बजैए।”

बात सुनि नागेसर ठहाका दऽ हँसए लगला। कनी काल हँसि बजला-

“ई चिड़ै अहाँ गाम सभ दिस नै हएत। जहिया कोसीक बाढ़ि अबै छेलै तहिए-सँ ई चिड़ै हमरा गाममे अछि। ई बजैए- ‘बढ़मा, बिसुन, महेश।”

विचारक भिन्नताक कारणे डोमन पुनः चिड़ैक बोली अकानए लगला। बुचन सेहो अकानलैन। अपना बातमे मजबूती आनैले नागेसर सेहो अकानए लगला। दुनू चुप। दुनू अपन-अपन दुबिधामे। डोमन बुचनकेँ पुछलकैन-

“बौआ, तूँ तँ इसकुलो देखने छहक, तोंही बाजह।”

मामूली सवालमे हारि मानब केकरा पसिन्न होइत। डोमनक मन विचारकेँ मथैत।

डोमनक बात सुनि बुचन बजला-

“बाबू, हमरा बुझि पड़ैए जे ‘तुलसी, सूर, कबीर’ कहैए।”

तीनूक तीन मत, तँए विवादक प्रश्ने नहि, तीनू अपन-अपन रमझौआमे ओझराएल। तँए तीनू चुपचाप आगू-पाछू घर दिस विदा भेला।

घरपर अबिते डोमन बजला-

“लोटा नेने आउ। कनी डोल-डाल दिससँ भऽ अबै छी।”

नागेसर आँगनसँ दू लोटा पानि आनि कऽ देलकैन। लोटामे पानि देख बुचन पुछलखिन-

“बाबू, आगूमे कल-तल नइ छइ?”

बिच्चेमे लपैक कऽ डोमन बजला-

“अखन तूँ बच्चा छह, नै बुझल छह?”

कहि आगू-मुहेँ गाछी दिस विदा भेला। गाछी पहुँच एकटा सरही आमक गाछक निच्चाँमे दुनू बापूत बैस विचार-विमर्श करए लगला।

बुचन-

“बाबू, कुटुमैती करै-जोकर परिवार अछि। समलाइके मे बिआह-सादी आकि दुश्मनी-दोस्ती छजैए। लड़िकाक बाप नइ छैन तँ की हेतइ। गाम-घरमे लोक मइटुग्गरकेँ अधला बुझैए।”

डोमन बुचनक बातो सुनैत आ मुड़ियो डोलबैत रहैथ मुदा मने-मन परिवारक आमदनी आ ओइ आमदनीकेँ समटैक लूरिपर सोचैत रहैथ। जइ

हिसाबसँ आमदनीक जड़ि देख रहल छी ओइ हिसाबसँ सम्हारैक लूरि नइ छैन। जँ दुनू एक सतहपर आबि जाए तँ परिवारकेँ आगू-मुहेँ ससरैमे बेसी समए नै लगत। एतेटा बाध छइ। अलेल घास सभ दिन रहतै। बाध ओगरैमे की लगै छइ। एक-दू बेर ऐ भागसँ ओइ भाग घुमब मात्र। अगर जँ अपनो काज ठाढ़ कऽ लैथ तँ बैसारियो नइ रहतैन आ आमदनियोँ बढ़ि जेतैन। हमरा बेटीकेँ ऐ घर एलासँ एकटा काजुल आ बुधियार समांग बढ़तैन। जानकीकेँ सभ हिसाब-कनमा, अधपइ, पौआ, असेरा, सेर, अढ़ैया, पसेरी, धारा आ मनसँ लऽ कऽ बोरा-क्वीनटल धरि, जोड़ैक लूरि छइ। तहिना कौड़ी–बीस वस्तु, सोरे–सोलह, सोरहा–सोलह सोरे, दर्जन–बारह, ग्रुस–बारह दर्जन, जोड़ा–धानक आँटी दस, गाही–पाँच, गण्डा–चारि, जोड़ा–दू, आ पल्ला–एक, इत्यादि सभ हिसाब बुझैए। मनमे खुशी एलैन, बाजल-

“बौआ, ओना जानकी गिरहस्तीक काज सम्हारि दूटा गाइयोक सेवा कऽ लेत। मुदा तइसँ दूधेटा क आमदनी बढ़त। जरूरत छै खेतियो बढ़बैक। तँए नीक हएत जे एकटा गाए आ एकटा बरद दऽ दिऐन। एकटा बरद आ एकटा हरबाह भेने दू समांग अपन भऽ जेतैन। जइसँ बीघा-दू-बीघा खेतियो कऽ सकै छैथ।”

बुचन-

“अपना खेत जे नइ छैन?”

बुचनक बात सुनि डोमन हँसए लगला। हँसैत बजला-

“बौआ, समए एहेन आबि गेल अछि जे खेतोबला सभ खेती छोड़ि नोकरीए-क पाछू वौआ रहल अछि। जइसँ खेती केनिहारक अभाव भऽ रहल छइ। गिरहस्तीक हाल बिगैर गेल छइ। जबकि जरूरत अछि खेतमे मेहनतक। जे सभ किसान नै बुझि रहला अछि।”

बुचन-

“केना बुझत?”

डोमन गंभीर होइत बजला-

“बौआ, खेतीमे बड़ बुधिक काज छै मुदा खेती दिन-दिन मुरुखेक हाथमे पड़ल जाइ छै, से सोचलहक हेन?”

तर्क-वितर्क कऽ दुनू बापूत तँइ कऽ लेलैन जे कुटमैती करबे करब। मुदा

एकटा जटिल प्रश्न आबि कऽ आगूमे ठाढ़ भऽ गेलैन। ओ ई जे बिआह उट-पटाँग ढंगसँ नै भऽ रस्तासँ पाइक उपयोग केना होइ। यएह गुन-धुन करैत दुनू बापूत घर दिस विदा भेला।

जाधैर डोमन पैखाना दिससँ आबैथ ताधैर लुखिया चारि-पाँच बेर दौग-दौग आँगनसँ बान्हपर जा-जा देखलैन। मनमे उड़ी-बीड़ी जेना लगि गेल रहैन। जे कुटमैतीमे कोनो तरहक गड़बड़-सड़बड़ ने भऽ जाए, नहि तँ लोक पिक्की मारत। कहत जे मौगीक मुख्तियारी छी ने, बिनु मरदक मौगी बेलगामक होइते अछि। कहलो गेल छै 'राँड़ मौगी साँढ़'।"

फेर मनमे उठलैन जे किछु हौउ बिआह तँ हमरे बेटाक हएत। तँए केकरो ओंगरी बतबैक रस्ता नइ रहए देबइ। जहिना बरतुहार कहता तहिना हमहूँ करब। जँ दुनू गोरेक मिलान रहत तँ किए कोइ आँखि उठौत। एते बात मनमे अबिते बरतुहारकेँ लुखिया अबैत देखलैन। बान्हपर सँ दौगले आँगन आबि हाँइ-हाँइ कऽ थारी साँठए लगली।

हाथ-पएर धोइते नागेसर डोमनकेँ कहलकैन-

"पहिने भोजने कऽ लिअ।"

आगू-आगू लोटा नेने नागेसर आ पाछू-पाछू दुनू बापूत डोमन आँगन एला। पीढ़ीपर बैसते नागेसर थारी आनि आगूमे देलकैन। आँखि घुमा कऽ देख डोमन बजला-

"समैध, समधीनोकेँ अढ़मे बजा लियौन। बिआहक सभ गप पक्का-पक्की कैये लेब। बैसारपर जखने गप उठाएब आकि चारू दिससँ लोक आबि अन्टक-सन्ट गप चालिये देत।"

आँखिक इशारासँ नागेसर भौजाइकेँ हाक पाड़ि बैसैले कहलकैन। तैबीच डोमन बजला-

"समैध, समधीनकेँ पुछियौन जे केना बेटाक बिआह करती?"

नागेसरकेँ अगुआ लुखिया बजली-

"अहाँ सभ मरदा-मरदी गप करू। हमरा कोनो चीजक लोभ नइ अछि। नीक मनुख घर आबए, बस एतबे।"

मने-मन नागेसर सोचैत रहैथ जे हमर केतबो मोजर अछि, तइसँ की। कोनो की हमरा बेटा-बेटीक बिआह हएत। तँए हम अनेरे मुँह दुरि किए करब।

बजला-

"समैध, अहाँ अपने मुहसँ बजियौ जे केना करब?"

भात-दालि सनैत डोमन बजला-

"समैध, जहिना अहाँक भातिजक बिआह हएत तहिना तँ हमरो बेटीक हएत किने... ।"

लुखियाकेँ खुश करै दुआरे पुन: आगू बजला-

"हमर बेटी साक्षात् लछमी छी। साल भरि कि दसो-साल घुमि कऽ लड़की ताकब तँ ओहेन नइ भेटत, तहूमे आब! आब तँ लोक मनुख थोड़े घर अनैए, अनैए रूपैआ।"

नागेसर, टाटक अढ़मे बैसल भौजी दिस तकैत बजला-

"खर्च-बर्च करैले किछु तँ चाहबे करी किने.. ।"

नागेसरक बातकेँ कटैत लुखिया बजली-

"नहि! हम केकरो बेटीकेँ पाइ लऽ कऽ अपना घर नै आनब।"

नागेसर भौजीक गप्प सुनि चुप भऽ गेला।

मुस्कियाइत लुखिया बजली-

"जहन दुआरपर आबि बेटा मंगलैन तँ हम दऽ देलिऐन। आब हमरा की अछि। दू कर अन्न आ दू बित कपड़ाटा चाही। घर तँ आब ओकरे सबहक हेतइ।"

डोमन बजला-

"समैध, पाँच गोरे जे बरियाती चलब, हुनकर सुआगत हम नीक जकाँ करबैन। तैसंग बर-कनियाँ-ले जे नव घर ठाढ़ करैक वस्तु अछि से तँ देबे करब। तेकर अतिरक्ति एकटा बरद आ एकटा लगहैर गाए सेहो देब।"

सुनिते सबहक मुहसँ हँसी निकलल। बिआहक दिन तँइ भऽ गेल। मुस्कियाइत लुखिया बजली-

"आब की हम कहबैन जे समधीनो हमरे दऽ दोथु।"

ठहाका दैत डोमन उत्तर देलकैन-

"बाह-बाह, तब तँ दुनू रोटी चाउरेक।"

चारि बजे सुति-उठि चाह पीब, पान खा डोमन नागेसरकेँ कहलखिन-

"समैध, सभ बात तँ तँइ भाइए गेल। आब चलब।"

दुनू जोड़ धोती नागेसर आँगनसँ आनि आगूमे रखि देलकैन। धोती देख डोमन बजला-

"समैध, केतबो गरीब छी मुदा इज्जत बँचा कऽ रखने छी। बेटीक दुआरपर केना धोती पहिरब?"

टाटक भुरकी देने लुखिया देखैत रहैथ। डोमनक बात सुनि दोगसँ बजली-

"समैधकेँ कहियौन जे जहन बेटी औत तहन ने बेटीक घर हेतैन, ताबे तँ हमर छी किने, हम दइ छिऐन।"

ठहाका दैत डोमन बजला-

"जहन हमर बेटी ऐ घर औत तहन ने ओ समधीन हेती आकि अखने?"

तैबीच पीहुआ, सभकेँ गोड़ लगलक। एक्कैस रूपैआ डोमन पीहुआ हाथमे देलखिन।

थोड़े दूर अरियाति नागेसर घुमैत बजला-

"समैध, आब बढ़ियौ। नवम् दिनक दिन भेल। अहाँ काजमे लगि जाउ आ हमहूँ लगि जाइ छी।"

डोमन दुनू बापूत विदा भेला। आगू बेटीक बिआहक ओरियौन रहैन किन्तु मनपर नचैत रहैन लुखियाक गप्प-

"केकरो बेटीकेँ पाइ लऽ कऽ अपन घर नै आनब।"

देह सिहैर गेलैन, बेटा दिस देखए लगला। ओहो आब बिआह करै-जोकर भऽ गेल... ।

❍

शब्द संख्या : 4021

पछताबा

इंजीनियरिंगक रिजल्ट निकैलते रघुनाथ संगी-साथीक संग नोकरी करए अमेरिका जाइक तैयारी कऽ नेने छल। सासुरसँ गाम आबि पिताकेँ कहलक-

"बाबू, आइए रौतुका गाड़ी पकैड़ चलि जाएब। परसू दस बजे सुभाषचन्द्र एयरपोर्टसँ जहाज फ्लाइ करत।"

जहिना पाकल आम तोड़ैले कियो गाछपर चढ़ैए आ आम तोड़ैसँ पहिनहि खसि पड़ैए, तहिना शिवनाथोकेँ भेलैन। अचम्भित होइत पुछलखिन-

"किए? तोरा-जोकर काज अपना ऐठाम नइ छइ?"

पिताक बात सुनि कनी काल गुम्म भऽ रघुनाथ कहलकैन-

"ओइठाम अधिक दरमाहा दइए। संगे अपना ऐठामक रूपैआसँ ओतुका रूपैयो महग छइ।"

अमेरिकाक सम्बन्धमे शिवनाथ किछु नै जनै छैथ खाली एतबे बुझल छैन जे ओहो एकटा देश छी... । किछु काल गुम्म रहि बजला-

"तइसँ की, हम ओइ वंशक छी जे देशक गुलामी मेटबैले गोली खा स्वतंत्र देशक उपहार-भार देलैन। तोरा सन-सन पढ़ल-लिखल जँ देशसँ चलि जाएत तँ तोहर सन काज के करत आ केना हएत?"

पिताक बातकेँ अनसून करैत गोड़ लागि, बैग लऽ रघुनाथ चुपचाप विदा भऽ गेल। शिवनाथ दुनू परानीक नजैर ताधैर रघुनाथक पीठपर रहलैन जाधैर ओ गाछीक अढ़ नइ भऽ गेल। अढ़ होइते दुनूक मन ऐ रूपे चूर-चूर भऽ गेलैन जहिना ऐनापर पाथरक लोढ़ी खसलासँ होइए। अखन धरि दुनूक मनमे पैघ-पैघ अरमान, पैघ-पैघ सपना छेलैन जे एकाएक फुटल बैलूनक हवा जकाँ वायुमण्डलमे मिलि गेलैन।

बाढ़िक पानिमे डुमल खेतमे जहिना पानि सुखिते नव-नव पौधक अंकुर उगए लगैए तहिना शिवनाथोक मनमे नव-नव विचार उगए लगलैन, अखन दुनियाँ भलेँ गामे-घरक रूपमे किएक ने बुझि पड़ैत हुअए मुदा बापो-बेटाक दूरी

हजारो कोस हटि रहल अछि। की हम सभ फेर गुलामीक रस्ता पकैड़ रहल छी आकि अजादीक रस्ता धऽ चलि रहल छी? एक दिस मातृभूमि-ले पिताक तियाग आ दोसर दिस बेटाक भटकल रस्ता...।

शिवनाथक आँखिक आगू नाचए लगलैन। भलें बेटाक आशा हुअए मुदा एहनो लोक तँ छैथ जिनका बेटा नइ छैन। मन पड़लैन पिताक ओ बात जे मृत्युसँ चौबीस घन्टा पहिने मृत्यु-सय्यापर कहने रहथिन-

“बाउ, हमर खून वीरक खून छी जे भारतमाताकेँ चढ़ौलिऐन। भलें अखन लड़ाइक दौड़ अछि मुदा ओ खून स्वतंत्रता लइए कऽ छोड़त। तूँ सभ स्वतंत्र देशक स्वतंत्र मनुख हेबह। तँए अपन देशकेँ परिवार बुझि सभकेँ भाए-बहिन जकाँ इमानदारीसँ सेवा करैत रहिहह। जइसँ हमर आत्मा अनवरत प्रसन्न रहत। सेवाक मतलब खाली एतबे नै होइत जे देशक सीमाक रक्षा करैए बल्कि ईहो होइत जे माथपर ईंटा उघि सड़क बनबैए आ हर-कोदारिसँ अन्न उपजबैए।”

पिताक बात मन पड़िते शिवनाथक हृदए तरल पानिसँ ठोस पाथर बनए लगलैन। नव-नव विचार मनमे जागए लगलैन। पत्नीक खसल मन देख पुछलखिन-

“अहाँ, एते सोगाएल किए छी?”

आँचरक खूटसँ दुनू आँखिक नोर पोछि रुक्मिणी कँपैत अवाजमे बजली-

“की सपना मनमे रहए आ कि देख रहल छी। जँ से बुझितिऐ तँ एते देहकेँ किए धौजैन करितौं। नढ़िया-कुकुर जकाँ अनेर छोड़ि दैतिऐ।”

पत्नीक बेथा सुनि शिवनाथक हृदए पसीज गेलैन। मुदा अपन बेथाकेँ मनेमे दबैत मुस्कियाइत बजला-

“अखन धरिक जे जिनगी रहल ओ कर्तव्यनिष्ठक रहल, अपन कर्तव्य इमानदारीसँ निमाहलौं। सभकेँ अपना-अपना आशापर अपन जिनगी ठाढ़ कऽ जीबाक चाही। जहिना बर्खाक एक-एक बून रस्ता धऽ चलैत-चलैत अथाह समुद्रमे पहुँच जाइए तहिना अपनो सभ अपन काजकेँ परिवारसँ आगू बढ़ा समाज रूपी समुद्रमे फेंट दी। बेटा अछि तँए बेटापर अपन भार देबए चाहै छी मुदा जिनका अपना बेटा नइ छैन ओ केकरापर अपन भार देथिन। तँए अपनो सभ वएह बुझू। बाबूजी एते अरैज कऽ दऽ गेलैथ जे इज्जतक संग हँसैत-खेलैत जिनगी जीबैत रहब।”

सन् 1942क असहयोग आन्दोलन सुनगैत-सुनगैत सौंसे देश पजैर गेल। जइमे मिथिलांचलोक योगदान केकरोसँ कम नै अछि। दसकोसीक लोकक मन एते उत्साहित भऽ गेलैन जे चान-सुरूजमे अजादीक झण्डा फहराइत देखैथ। सुतली रातिमे ओछाइनपर सँ चहा कऽ उठि नारा लगबैत सड़कपर आबि जाइ छला। जे मिथिला याज्ञवल्क्य, गौतम, नारद सन-सन ऋषि पैदा केलक ओ पंचानन झा आ पुरन मण्डल सन वीर अभिमन्यु सेहो पैदा केने अछि। दसकोसीक वीर सिपाही माथमे कफन बान्हि, लाठीमे झण्डा फहरा झंझारपुर सर्कल, रेलबे स्टेशन आ पोस्ट आफिसमे आगि लगबैले, रेल-लाइन तौड़ैले सर्कलक मैदानमे एकत्रित भेला। अंग्रेज पलटनक केन्द्र सर्कल छेलइ। आन्दोलनकारीकेँ एकत्रित होइत देख ओहो सभ अपन बन्दुकमे गोली भरि-भरि तैयार भऽ गेल। आन्दोलनकारी भारत माताक नारा जगबैत आगू बढ़ल। अनधुन गोली पलटन सभ चलौलक। एक नै अनेक गोली पंचानन आ पुरनक छातीमे लगलैन। दुनू गोरे नारा लगबैत दम तोड़लैन। खाली दुइए गोरेकेँ गोली नै लागल, अनेको गोरे गोलीसँ घाइल भेला। ओइ घाइलमे शिवनाथक पिता देवनाथो छला। देवनाथकेँ दहिना जाँघमे गोली लागल छेलैन। गोली तँ जाँघक माँस-चमराकेँ कटैत हड्डी तोड़ैत निकैल गेलैन, मुदा घाइल भऽ ओहो खसि पड़ला। पितियौत भाए हुनकर लटकल जाँघक माँसकेँ तौनीसँ बान्हि, हुनका पीठपर उठा घरपर अनलकैन। चिकित्साक समुचित बेवस्था नहि, तैपर गामे-गाम सिपाही दमन शुरू केलक। गामक-गाम आगि लगौलक। मर्द-औरतकेँ पकैड़-पकैड़ बन्दूकक कुन्दा आ पैरक बूटसँ मारि-मारि बेहोश केलकैन। ओछाइनपर पड़ल देवनाथक हृदैमे आगि धधकैत रहैन मुदा किछु करैक शक्ति नै रहि गेलैन। जीवन-मृत्युक बीच लटकल छला। तीसम दिन परान छुटि गेलैन।

दस बर्खक शिवनाथ 15 अगस्त 1947 ई. कें अजादीक समए पनरह बर्खक भऽ गेल। पतिक मुइने शिवनाथक माए-राधाक मन टुटलैन नहि, बल्कि आगिमे तपल सोना जकाँ आरो चमकए लगलैन, पाकल आमक आंठी जकाँ करेज आरो सक्कत भऽ गेलैन। गुलामीसँ मिझाएल दीपकेँ अजादीक नव तेल-बाती भेटल, जइसँ नव-ज्योति प्रज्वलित भेल। अखन धरिक अबेवस्थित परिवारकेँ दुनू माए-बेटा मिलि सुढ़ियाबए लगला, बेवस्थित बनबए लगला। अढ़ाइ बीघा खेतकेँ अपन दुनियाँ आ कर्मक्षेत्र बुझि दुनू माए-बेटा जी-जानसँ मेहनत करए लगला, जैपर परिवार नीक नहाँति घर ठाढ़ भऽ गेलैन। ओना, शिवनाथक बिआह बच्चेमे भऽ गेल छेलै मुदा दुरागमन पछुआएल रहइ।

परिवारक बढ़ैत काज देख बेटाक दुरागमन माए करा लेलैन।

देश अजाद होइते गामे-गाम स्कूल बनए लगल। ओना पढ़लो-लिखल लोक कम छला मुदा जेतबे छला ओ ओइ रूपे विद्या-दानमे भीरि गेला, जइसँ सभ गाममे तँ नहि, मुदा अधिकांश गाममे लोअर प्राइमरी स्कूल ठाढ़ भऽ गेल। केतौ-केतौ मिड्लो स्कूल आ हाइयो स्कूल बनल आ केतौ-केतौ कौलेजो ठाढ़ भऽ गेल। अखन धरि जे स्कूल ठाढ़ भेल ओ समाजिके स्तरपर, सरकारी स्तरपर बहुत कम बनल। स्कूल खोलैक पाछू लोकक मनमे धरमस्थानक बुझब छेलइ। गुरुओजी ओहने रहैथ जे मात्र भोजनपर सेवा करथिन। शनीचरा मात्र जीविकाक अधार छेलैन। पाइ लऽ कऽ पढ़ाएब पाप बुझल जाइ छेलइ। ओना मिडिल स्कूल, हाइ स्कूल आ कौलेजमे महिनवारी फीस लगै छल, जे संस्थागत सहयोग छल।

स्कूल-कौलेज खुजने विद्याक ज्योति प्रज्वलित भेल मुदा अन्डी तेलमे जरैत डिबियाक इजोत जकाँ, जखन कि जरूरी अछि हजार वोल्टबला बौलक इजोत जकाँ। ओना ठाम-ठीम संस्कृत विद्यालय सेहो अछि, मुदा...।

दुरागमनक तीन सालक पछाइत शिवनाथकेँ बेटा भेलैन। रघुनाथक जन्म होइते राधाक हृदए खुशीसँ सूप सन भऽ गेलैन। मनमे नाचए लगलैन बाँसक ओ बीट जइमे दिनानुदिन बेसी बाँसोक जन्म होइत आ नमगर, मोटगर सुन्दर-सुडौलौ होइत। मनक खुशीसँ दुनियाँ फुलवाड़ी सदृश बुझि पड़ए लगलैन। बाधक-बाध धानक फूल, गाछीक-गाछी आमक मंजर, जामुन, लताम इत्यादिक फूलसँ सजल ई दुनियाँ सोहनगर लगए लगलैन। मुदा जहिना आसिन मासक अकासकेँ करिया मेघ झँपने रहैए आ केतौ-केतौ मेघक फाटसँ सुरूजक इजोत निकलैए आ सेहो गाछे-बिरीछपर अँटैक जाइए, धरती-जमीन ओहिनाक-ओहिना अन्हार रहि जाइए, तहिना।

छबे मासक रघुनाथकेँ अपन मुँह चमका-चमका राधा ‘दा-दा-दा’ सिखबए लगली। ‘दा-दा’मे देवनाथक ओ रूप देखै छेली जे माथपर वीरक मुरेठा बान्हि, हरोथिया लाठीमे लाल झण्डा टँगने, हँसैत गोली खेने छला।

चारि बर्ख टपिते शिवनाथ रघुनाथक नाओं गामक स्कूलमे लिखा देलखिन साले-साल टपैत रघुनाथ गामक मिडिल स्कूल टपि केजरीवाल हाइ स्कूल झंझारपुरमे नाओं लिखौलक। रघुनाथकेँ जहिना विज्ञान विषय पढ़ैमे नीक लगै तहिना अंग्रेजियो, जइसँ ठाकुर बाबू आ लत्ती बाबू बेसी मानथिन।

चारि बर्खक पछाइत रघुनाथ प्रथम श्रेणीमे मेट्रिक पास केलक। बाढ़ि-रौदीक दुआरे उपजो-बाड़ी नीक नहि, जइसँ परिवारो लड़खड़ाइते चलैत। बाहर जा कऽ आगू पढ़ब असम्भव जकाँ रहइ। मुदा संजोग नीक रहलै जे जनतो कौलेजमे साइंसक पढ़ाइ शुरू भेल। रघुनाथो जनते कौलेजमे नाओं लिखौलक।

रघुनाथकेँ कौलेजमे नाओं लिखेलाक साल-भरिक पछाइत राधा-दादी-मरि गेली। पिताक श्राद्ध तँ शिवनाथ केनहि नै छला मुदा माइक श्राद्ध नीक जकाँ केलैन। जइसँ पाँच कट्ठा खेतो बिका गेलैन, तइले मन मलिन नइ भेलैन। किएक तँ भोजमे खूब जश भेलैन।

दू सालक पछाइत रघुनाथ फस्ट डिविजनसँ आइ.एस.सी. पास केलक। सत्तैर प्रतिशतसँ ऊपरे नम्बर एलइ। आइ.एस.सी.क रिजल्ट सुनि शिवनाथकेँ बेटा-पढ़बैक उत्साह बढ़लैन। खेत बेचब अधला नै बुझेलैन। मनमे एलैन जे रघुनाथ पढ़ि कऽ नोकरी करत आकि खेती करत। तहन खेतक जरूरते की रहतै। संगे हमहूँ समाजकेँ एकटा सक्षम मनुख देब।

इंजीनियरिंग, डाक्टरी पढ़बैमे केहेन खर्च होइ छै से तँ नीक जकाँ बुझैथ नहि। मनमे होनि जे पाँच-दस कट्ठा जमीन बेच बेटाकेँ पढ़ा देबइ। मनमे उत्साह रहबे करैन तँए महग बुझि घराड़ीए-क जमीनसँ दू कट्ठा बेच इंजीनियरिंग कौलेजमे बेटाक नाओं लिखा देलैन। नाओं लिखौलाक डेढ़ बर्ख बितैत-बितैत अदहा जमीन बिका गेलैन। आगूक अढ़ाइ बर्ख बाँकी देख चिन्ता घेरए लगलैन। मन मानि गेलैन जे सभ खेत बेचनौं पार नै लगत। सोचैत-विचारैत तँइ केलैन जे पढ़ैक खर्चपर रघुनाथक बिआह करा देबइ। बिआह भेनौं ओकरा पढ़ैमे बाधा थोड़े हेतै, पाँच बर्खक बादे दुरागमन कराएब। समस्याक समाधान होइत देख मनमे खुशी एलैन। फेर मोनमे उठलैन जे समैयो बदैल रहल अछि। पहिने माए-बाप बेटा-बेटीक बिआहकेँ अप्पन कर्तव्य बुझै छला तँए पुछब जरूरी नै बुझैथ। मुदा आब पुछब जरूरी भऽ गेल अछि। ..परिस्थिति देख रघुनाथो बिआह करब मानि लेलक मुदा शर्त लगा कऽ जे लड़की रंग-रूपमे सुन्दर हुअए। जँ गुणवानक शर्त रहितैन तहन तँ पिता ओझरा जइतैथ। मुदा से नइ भेलैन। बिआहक चर्च शिवनाथ चला देलखिन।

इंजीनियर वर तँए कथकियाक ढबाहि लगि गेल। मुदा कोनोक गाम अधला बुझि पड़ैन तँ कोनोक परिवारक कुल-गोत्र। केतौ लड़की दब तँ केतौ उमरगर लड़की भाँज लगैन। होइत-हबाइत एकठाम कथा पटि गेलैन। गाम तँ

नीक नहि, मुदा लड़कियो गोर आ पढ़ैक खर्चो गछि लेलकैन। रघुनाथक बिआह भऽ गेल। बिआहक पछाइत दुनू समैध विचारि लेलैन जे सालो भरि जे भाड़-दौड़क फेरीमे पड़ब से नीक नहि। तँए भाड़-दौड़क बेवहार छोड़िए दियौ। दुनू गोरे सएह केलैन।

इंजीनियरिंगक अन्तिम परीक्षा दऽ रघुनाथ सभ समान लऽ सासुर आबि गेल। ओना दुरागमन बाँकीए मुदा सासुर तँ सासुरे छी, तँए चलि आएल। रिजल्ट निकलैमे तीन मास लागत। काजो तँ अखन किछु नहियेँ अछि, तँए निसचिन्तसँ सासुरमे रहैक विचार रघुनाथ कऽ लेलक। दसे दिनक पछाइत विदेशमे इंजीनियरक भेकेन्सी खूब निकलल। सभसँ बेसी अमेरिकामे।

नव टेकनोलौजी एने नव जुगक आगमन भेल। नव मशीन नव इंजीनियरकेँ जन्म देलक। मुदा पुरना तकनीको आ इंजीनियरो, अछैते औरुदे, फाँसीपर लटकए लगला। जहिना गामक-गाम हैजासँ मरैए तहिना इंजीनियरक जमात पटपटाए लगला। मुदा दबाइक करखन्ने नहि, जे दबाइ बनौत..!

परीक्षाक पेपर रघुनाथक नीक भेल तँए फेल करैक अन्देशे नहि। हाइए स्कूलसँ अमेरिकाक उन्नैतक आ सुख-मौजक सम्बन्धमे किताबो-पत्रिकामे पढ़ने आ लोकोक-मुहेँ सुनने, तँए मनमे गुदगुदी लगैत रहइ। ई भिन्न बात जे आठ मासमे अस्सीटा बैंक अमेरिकामे दिवालिया भेल।

रघुनाथ फस्ट डिवीजनसँ पास केलक। एक तँ फस्ट डिवीजन रिजल्ट, तैपर अमेरिकाक नौकरी। खुशीसँ रघुनाथक मन उड़िया गेल। आवेदन केलाक आठे दिनक पछाइत चिट्ठी भेटलै। स्त्रीक गहना बेच दुनू परानीक टिकट बनबौलक। ससुर मात्र पढ़ै धरिक खर्चा गछने रहैन तँए टिकटक खर्च दइसँ इन्कार केलकैन।

मिशिगन राज्यक राजधानीक शहर लानसिंग। ठण्ढ इलाका। ने अपना सभ जकाँ छह ऋतुक मौसम बनैत आ ने ओकर हास-परिहास होइत आ ने एतुक्का जकाँ रंग-बिरंगक गाछ-बिरीछ। लानसिंगक सतरह तल्लाक छोट-छोट तीन कोठरीक आँगन। जइमे ने सभ दिन सुरूजक रोशनी अबैए आ ने भोरे कौआ आबि ओसारपर बैस सारि-सरहोजिक समाचार सुनबैए। रहैत-रहैत दुनू परानी रघुनाथकेँ पनरह बर्ख बीत गेलैन। जवानीक सभ सपना मने-मन गुमसैड़ रहल छेलैन।

रघुनाथकेँ अमेरिका गेने शिवनाथक जिनगीक गाछ मौलेलैन नहि, बल्कि

चतैर कऽ पाखैरक गाछ जकाँ झमटगर भऽ गेलैन। दुनू बेकतीक विचारो सुधरलैन। वंशगत सम्बन्ध क्षीण होइत-होइत सुखि गेलैन, समाजिक सम्बन्ध मोटा कऽ जुआएल गाछक शील जकाँ बनि गेलैन। जहिना कोनो समांगकेँ मुइलापर परिवारक लोक आस्ते-आस्ते बिसैर जाइए, तहिना रघुनाथोकेँ दुनू परानी शिवनाथ सोलहन्नी बिसैर गेला। साल भरिक छाया आ साएक-साए बरिषक बर्खी करैक खगते नइ रहलैन। वंश अन्त हएत से सद्यः आँखिसँ शिवनाथ देखै छला। स्वतंत्र देशक गुलाम बुधि, केना नै बिसैरतैथ? ने कहियो एक्कोटा पत्र लिखि मन राखए चाहलैन आ ने कोनो मनोरथ मनमे संजोगि कऽ रखने छला। पढ़ल-लिखल तँ शिवनाथ नहि, मुदा 'हरिवंश पुराण'क कथा, गप-सप्पक क्रममे बेसी काल दोसराक-मुहेँ सुनै छला।

स्वतंत्रताक पछाइत विकासपुरक लोकोक विचार सुधरलैन। केना नै सुधैरतैन। बुढ़-बच्चा छोड़ि गामक सभ लाठी-झण्डा लऽ झंझारपुर सर्कलमे आगि लगबए जे गेल छला, आँखिसँ सभ किछु देखने जे रहैथ। ओना हजार बीघा रकबाक गाम विकासपुर, जइमे साढ़े चारि साए परिवार हँसी-खुशीसँ कताक पुश्तसँ एकठाम रहैत आएल छला।

स्वतंत्राक पूर्व जमीनदारक मलिकाना गाम छल। मालगुजारीक लेन-देनमे सबहक जमीन निलाम भऽ जमीनदारक हाथमे चलि गेल छेलइ। ओना, कियो अपन खेतक दखल तँ हुनका नै देलकैन मुदा बँटेदार बनि उपजा बाँटि-बाँटि दिअ लगलैन। जागल गामक लोक देख जेतबे-तेतबे दाम लए मालिक खेत घुमा देलकैन। अपन खेतकेँ स्थायी पूजी बुझि ओइमे श्रमक पूजी जोड़ि लोक जिनगीकेँ ठाढ़ करए लगला। बाढ़ि-रौदीक प्रकोप सालो-साल होइते रहै छेलै मुदा विचार आ कर्म बदलने ओहो अभिशाप नै वरदान बनि गेल। बाढ़ि देख माथपर हाथ लऽ नै बैस, ओकर प्रतिकार करैक रस्ता अपनौलैन। तहिना रौदियोक प्रति केलैन। जइसँ बाढ़ि-रौदीसँ बँचैक उपाय कऽ लेलैन। सबहक एहेन धारणा बनि गेलैन। जे बाढ़िक उपद्रव मात्र सौन-सँ-कातिक चारि मास होइए बाँकी बारह मासक सालमे आठ मास तँ बँचैए। जँ आठ मास जमि कऽ मेहनत कएल जाए तँ बारहो मास हँसी-खुशीसँ गुजर चलि सकैए। तेतबे नहि, पानि तँ आगि नै छी जे सभ किछुकेँ जरा देत। पानि तँ उत्पादित पूजी छी, तँए जरूरत अछि ओकर उपयोग करैक। तहिना रौदियोक सम्बन्धमे धारणा बनौने छला। खेतमे रंग-बिरंगक अन्न, फल, तरकारी अछि। ने सभ अन्न-ले एक रंग पानिक जरूरत होइए आ ने फले-तरकारी लेल। अधिक बरखा भेने अधिक

पनिसहू फसल होइए आ कम बरखा भेने कम पनिसहू हएत। तैपर थोड़ेक सुविधा सरकारो देलक। नब्बे प्रतिशत अनुदानमे बोरिंग आ पचास प्रतिशत अनुदानमे पम्पसेट देलक। जइसँ पर्याप्त बोरिंग-पम्पसेट गाममे भऽ गेल। किसानक हाथमे पानि चलि आएल। समाजक किसानक कान्ह-मे-कान्ह मिला शिवनाथो चलए लगला। कम खेत रहितो हुनका अन-पानि उगरिये जाइ छैन।छह बजे भोरे रघुनाथ धीपल-सराएल पानि मिला अदहा-छिदहा नहा, कपड़ा पहिर, चाह-बिस्कुट खा ड्यूटी चलि जाथि आ असगरे श्यामा डेरामे रहि जाइ छेली। ने अंग्रेजी भाषाक बोध छेलैन जे दोकानो-दौरीक काज कऽ सैकतैथ आकि दोसरोसँ गप-सप्प करैत समए बितैबतैथ। ओना बगलेक फ्लैटमे आरो-आरो भारतीय–इण्डियन–सभ रहैए। मुदा ओहो कियो केरलक तँ कियो मद्रासक छैथ। भाषाक दूरी देख श्यामा मने-मन सोचए लगली जे मनुखसँ नीक पशु होइए जे अपन सोभावसँ एक-दोसरासँ मेलो रखैए। मनुख तँ मनुक्खे छी जे बोलेसँ राजा बनि जाइए... । जहिना पिजराक सुग्गा अकासमे उड़ैत सुग्गाकेँ देख कनैए तहिना कोठरीमे बैसल श्यामाकेँ मने-मन कुही होइ छेलैन। मनमे उठैन, कोन जन्मक पाप कएल अछि जे एहेन गति भऽ गेल अछि! नैहरसँ सासुर धरिक सभ किछु हेरा गेल..!

भिनसरे डेरासँ निकैल रघुनाथ कार्यालय पहुँच जाइ छैथ। कार्यालयेमे खाइ-पीबैक बेवस्था सेहो छैन। मशीनेक संग रघुनाथ बारह घन्टा बीतबै छैथ। बुधिसँ लऽ कऽ हाथ धरि मशीनेक संग भरि दिन रहैत-रहैत मशीन बनि गेलैन। संवेदनशून्य मनुख। जइमे दया, श्रद्धा, प्रेमक केतौ जगह नहि। मुदा आइ रघुनाथकेँ कार्यालय पहुँचते मनमे उड़ी-बीड़ी लगि गेलैन। काजक दिस एको-मिसिया धियाने नै जाइ छेलैन। छुट्टीक दरखास दऽ कार्यालयसँ डेरा विदा भेला। डेरा आबि, देहक कपड़ा आ जुत्ता बिनु खोलनहि पलंगपर, चारू-नाल चीत भऽ ओंघरा गेला। जहिना जेठ मासक तबल धरतीपर बिहरिया बर्खाक बून खसिते गरमी-सरदीक बीच घनघोर लड़ाइ शुरू भऽ जाइए तहिना रघुनाथक मनमे वैचारिक संघर्ष हुअ लगलैन। एहेन जोरसँ वैचारिक बिहारि मनमे उठि गेलैन जे बुधि चहकए लगलैन। चहकैत बुधिसँ अनासुरती निकललैन-

"हमरासँ सैयो गुना ओ नीक छैथ जे अपना माथपर पानिक घैल उठा मातृभूमिक फुलवाड़ीक फूलक गाछ सींचि रहल छैथ, अपन माए-बाप आ समाजक संग जिनगी बिता रहल छैथ। आइ जे दुनियाँक रूप-रेखा बनि गेल अछि ओ किछु गनल-गूथल लोकक बनि गेल अछि। जिनगीक अन्तिम पड़ावमे

पहुँच आइ बुझि रहल छी जे ने हमरा अपन परिवार चिन्हैक बुधि भेल आ ने गाम-समाजकेँ... ।"

दुनू आँखिसँ दहो-बहो नोर चुबि गालपर होइत पलंगपर खसए लगलैन। शिवनाथ हँसैत ओछाइनपर सँ उठि पत्नीकेँ हाक पाड़लखिन-

"केतए छी, कनी एमहर आउ?"

मुस्कियाइत लग आबि रुक्मिणी बजली-

"भोरे-भोरे की रखने छी जे हाक पाड़लौं।"

"मनमे आबि रहल अछि जे अपन दुनू परानीक श्राद्ध कैये लैतौं। जँ हम पहिने मरि जाएब तँ अहाँक श्राद्ध हएत की नहि, नइ जँ पहिने अहीं मरि जाएब तँ हमर श्राद्ध हएत की नहि।"

"अखन हम थोड़े मरैवाली भेलौं हेन जे मरब।"

"अपन बिआह बिसैर गेलिऐ? जहन अहाँ छह बर्खक रही आ हम सात बर्खक रही तहिए ने बिआह भेल रहए। मोन अछि कि नहि जे खड़हीसँ नापि कऽ जोड़ा लगौल गेल रहए।"

किछु काल गुम्म रहि रुक्मिणी बजली-

"अपन बिआह-दुरागमन आ माए-बाप जे लोक बिसैर जाएत तँ ओहो कोनो लोके छी।"

मुस्कियाइत शिवनाथ कहलखिन-

"हमरा आँखिमे अहाँ वएह छी जे दुरागमन दिन झाँपल पालकीमे बैस नैहरसँ सासुर आएल रही। अहीं कहू जे हमरा किए ने अहाँक चूड़ीक खनखनीक अवाजमे स्वर-लहरी आ माथक सेनूरमे जिनगीक मधुर फल देखाए पड़त। पचहत्तैर पार कऽ अस्सी बर्खक बीच दुनू गोरे पहुँच चुकल छी तँए खुशी अछि। आँखिक सोझमे देखै छी जे बिआहक पाँचे दिनक पछाइत चुड़ियो फुटि जाइ छै आ माथो धुआ जाइ छइ। तैठाम हम-अहाँ भाग्यशाली छी की नहि?"

पतिक बात सुनि रुक्मिणी मुस्कियाइत पतिक आँखिमे अपन आँखि गाड़ि पाछूसँ आगू धरिक जिनगी देखए लगली।

❍

शब्द संख्या : 2663

डाक्टर हेमन्त

सभ दिन चारि बजे भोरे उठैबला डाक्टर हेमन्त आइ छह बजे भिनसरमे उठला। अबेरे कऽ नीन टुटलैन। एना किए भेलैन? एना ऐ दुआरे भेलैन जे आन दिन परिवारसँ लऽ कऽ अस्पताल धरिक चिन्ता दबने रहै छेलैन, तँए कहियो भरि-भरि राति जगले रहि जाथि तँ कहियो-कहियो लगले-लगले निन्न टुटि जाइन। कोनो-कोनो राति अनहोनी-अनहोनी सपना देख चहा-चहा कऽ उठि जाथि तँ कोनो-कोनो राति पत्नीसँ झगड़ैत रहि जाइथ।

छह बजे नीन टुटिते हेमन्त घड़ी देखलैन। मुदा अबेरो कऽ निन्न टुटने मनमे एक्को मिसिया चिन्ता नहि। मन फुहराम, एकदम हल्लुक। मनमे जेना चिन्ताक दरस नहि। आन दिन ओछाइनेपर ढेरो चिन्ता घेरि लैन, अनेको समस्या, अनेको उलझन मनकेँ गछारि दैन। केसक की हाल अछि, बेटाकेँ नोकरी हएत की नहि.., क्लिनिकमे कम्पाउण्डरक चलैत रोगी पतरा रहल अछि.., चोट्टा सभ दारू पीब-पीब अन्ट-सन्ट करैत रहैए आ पाइयेक भाँजमे पड़ल रहैए.., जइसँ मुँह-दुबर रोगी सबहक कुभेला होइ छइ। तैसंग अस्पतालोसँ बेर-बेर सूचना भेटैए जे ड्यूटीमे लापरवाही करै छिऐ। बातो सत्य छै मुदा की करब? केस छोड़ि देब तँ पिताक अरजल सम्पैत बहि जाएत। क्लिनिकमे कम्पाउण्डर सभकेँ जँ किछु कहबै तँ क्लिनिके बन्न भऽ जाएत। जइसँ जेहो आमदनी अछि सेहो चलि जाएत। पुरान कम्पाउण्डर सभ अछि। सभ दिन छोट भाए जकाँ मानैत एलिऐ तेकरा किछु कहबै सेहो उचित नहि। मुदा हमहींटा तँ डाक्टर नइ छी, बहुतो छैथ। रोगीकेँ की, जैठाम नीक सुविधा हेतै तैठाम जाएत।

ओझराएल जिनगी डाक्टर हेमन्तक, तँए सोझ-साझ विचार मनमे अबिते ने रहैन। मुदा आइ अबेर कऽ उठनौं मनमे कोनो ओझरी नै रहैन। किएक तँ काल्हिए कोर्टमे लिखि कऽ दऽ देलखिन जे, 'पिताक सम्पैतसँ कोनो मतलब नै अछि, तँए केससँ अलग कएल जाए।' तैसंग बेटोकेँ नोकरी भऽ गेलैन जे ज्वाइन करए काल्हिए माए आ स्त्री संग गेल। पिताक देल सम्पैतक लड़ाइमे अपनो बीस

बर्खक कमाइ गेल रहैन। मुदा प्राप्तिक नाओंपर जान बँचा लड़ाइसँ अलग भेला...।

हेमन्तक मनमे उठलैन जे जहिना पिताक सम्पैतमे किछु नै प्राप्त भेल तहिना तँ रमेशोकेँ हमरा अरजल सम्पैतमे नइ हेतइ। मुदा हमरा आ रमेशमे अन्तर अछि। हम तीन भाँइ छी, जहिक बीच विवाद भेल मुदा रमेश तँ असगरे अछि...।

ओना हेमन्तक मनक चिन्ता काल्हिए समाप्त भऽ गेल रहैन मुदा काजक व्यस्तता मनकेँ असथिर हुअ नै देलकैन। एके बेर आठ बजे रातिमे असथिर भेला। तेकर पछाइत पर-पैखाना करैत, हाथ-पएर धोइत, खेनाइ खाइत नअ बजि गेलैन। भरि दिनक झमारल तँए ओछाइनपर पहुँचते तेना नीन आबए लगलैन जे रेडियो खोलि समाचार सुनए चाहलैन, सेहो नइ भेलैन, रेडियो बजिते रहल आ अपने सुति रहला।

नीन टुटिते डाक्टर हेमन्तकेँ चाहक तृष्णा एलैन। मुदा घरमे कियो नहि। असगरे। नोकर ऐ दुआरे नै रखने जे काल्हि धरि पत्नी, बेटा-पुतोहु सभ रहैन, जे सभ घरक काज सम्हारैत रहथिन। ओना चाहक सभ समचा घरेमे खाली बनौनिहार नहि अछि। ..बिछानपर सँ उठि नित्य-कर्म करैत मनमे एलैन जे चाह पीब। मुदा चाह औत केतएसँ। से नहि तँ पहिने दाढ़िये बना लइ छी आ क्लिनिक जाए लगब तँ रस्तेमे चाह पीब लेब। मुदा भोरे-भोर चाहक दोकानपर तँ ओ जाइए, जेकरा घर-परिवार नइ रहै छइ। हमरा तँ सभ किछु अछि। ओह! से नहि तँ अपने चाह बना लेब। चाह बना, कुरसीपर बैस पीबए लगला आकि तखने फाटकपर सँ अवाज आएल-

"डाक्टर साहैब, डाक्टर साहैब।"

टेबुलपर कप रखि, फाटक दिस बढ़ैत डाक्टर हेमन्त बजला-

"हँ, अबै छी।"

फाटकक बाहर डाकिया कन्हामे झोरा लटकौने हाथमे दूटा लिफाफ आ रसीद नेने ठाढ़। डाकियाकेँ देख मुस्कियाइत डाक्टर साहैब बजला-

"भोरे-भोर कोन शुभ-सन्देश अनलौं हेन?"

मुदा डाकिया किछु बाजल नहि। खाँखी शर्टक ऊपरका जेबीसँ पेन निकालि, रसीदो आ पेनो बढ़ा देलकैन। दुनू रसीदपर हस्ताक्षर कऽ दुनू लिफाफ

नेने फेर कुरसीपर बैस डाक्टर हेमन्त चाहक चुस्की लिअ लगला। एकटा लिफाफकेँ टेबुलपर रखि, दोसरकेँ खोलि पढ़ए लगला। सरकारी पत्रमे लिखल रहए-

"पत्र देखते डेरा छोड़ि दिअ। बाढ़िसँ बहुत अधिक जान-मालक नोकसान भेल अछि, तँए आइए लछमीपुर पहुँच जाइक अछि। तइमे जँ कोनो तरहक आना-कानी करब तँ पुलिसक हाथे पठौल जाएब। एक कॉपी पुलिसोक थानामे भेज देल गेल अछि।"

पत्र पढ़िते हेमन्तकेँ ठकमुड़ी लगि गेलैन। मने-मन सोचए लगला जे घरमे असगरे छी। केना छोड़ि कऽ जाएब। समए-साल तेहेन भऽ गेल अछि जे दिनो-देखार डकैती होइए। केतौ डकैती, केतौ चोरि, केतौ अपहरण तँ केतौ हत्या हरिदम होइते रहैए। एहेन स्थितिमे घर छोड़ब उचित नहि। मुदा जहन नोकरी करै छी तँ आदेश मानै पड़त। जँ से नै मानब तँ जहिना बीस बर्खक कमाइ कोट-कचहरीक ईंटा गनैमे गेल तहिना जे पाँच बर्ख नोकरी बँचल अछि ओहो ससपेण्ड-डिस्चार्जमे जाएत...।

डाक्टर हेमन्तकेँ कहियो जिनगीमे चैन नहि। घोर-घोर मन होइत रहैन। चाहो सरा कऽ पानि भऽ गेल। गुन-धुन करैत दोसर पत्र खोलला। पत्रमे लिखल रहए-

"डाक्टर हेमन्त! काल्हि चारि बजे पछबरिया पोखैरक पछबरिया महारमे जे पीपरक गाछ अछि, ओइ गाछ लग पहुँच हमरा आदमीकेँ दू लाख रूपैआ दऽ देबै, नहि तँ परसू ऐ दुनियाकेँ नइ देख सकब।"

पत्र पढ़िते केराक भालैर जकाँ हेमन्तक करेज डोलए लगलैन, सौंसे देहसँ पसीना निकलए लगलैन, थरथराइत हाथसँ पत्र खसि पड़लैन। मनक विचार विवेक दिस बढ़ए लगलैन...।

जहिना कियो सघन बोनमे पहुँच जाइत आ एक दिस बाघ-सिंहक गर्जन सुनैत तँ दोसर दिस सुरूजक रोशनी कम भेने अन्हार बढ़ैत जाइत, तहिना हेमन्तकेँ हुअ लगलैन। खाली मन छटपटा उठलैन। की करब, की नै करब से बुझबे ने करैथ। जहिना भोथहा कोदारिसँ सक्कत माटि नै खुनाइत तहिना हेमन्तोक विचार समस्याकेँ समाधान नै कऽ रस्तेमे विलीन भऽ जाइत। लगमे कियो दोसर नहि, जे मनक बात सुनितैन, जइसँ किछु मन हल्लुक होइतैन। तखने अस्पतालक एकटा कम्पाउण्डर रिक्शासँ आबि गेँटपर पहुँच बाजल-

"डाक्टर साहैब..?"

कम्पाउण्डरक अवाज सुनि हेमन्त धड़फड़ा कऽ उठि गेँट दिस बढ़ला। गेँटपर रिक्शा लागल। रिक्शापर दूटा काटुन लादल। कम्पाउण्डरो आ रिक्शोबला रिक्शासँ हटि, बीड़ी पिबैत। डाक्टर हेमन्तपर नजैर पड़िते कम्पाउण्डर हाथक बीड़ी फेक, आगू बढ़ि प्रणाम करैत कहलकैन-

"लगले तैयार भऽ चलू, नहि तँ पुलिस आबि कऽ बेइज्जत करत। बेइज्जत तँ हमरो करैत मुदा पुलिसकेँ अबैसँ पहिनहि हम काटुन रिक्शापर चढ़बैत रही, तँए किछु ने कहलक। रस्तामे अबै छेलौं तँ मोहनबाबूकेँ गरियबैत सुनलिऐन, तँए देरी नै करू। नबे बजे गाड़ी अछि आ सबा आठ बजैए। अपना दुनू गोरे एक टीममे छी।"

जहिना जुड़शीतलमे मुइलो नढ़ियापर लाठी पटकैत तहिना कम्पाउण्डरक बात सुनि हेमन्तकेँ भेलैन। मिरमिराइत बजला-

"दिनेश, हमरा तँ रातिए-सँ तेते मन खराब अछि जे किछु नीके ने लगैए। एक्को मिसिया देहमे लज्जैत नहि बुझि पड़ैए। होइए जे तिलमिला कऽ खसि पड़ब।"

कम्पाउण्डर-

"दबाइ खा लिअ, थोड़बे कालमे ठीक भऽ जाएब।"

हेमन्त-

"देहक दुख रहैत तहन ने, मनक दुख अछि। ओ केना दबाइसँ छुटत।"

हेमन्तक मन आगू-पाछू करैत देख कम्पाउण्डर कहलकैन-

"एक तँ ओहिना मन खराब अछि...।"

कम्पाउण्डरक बात सुनि हेमन्तक मन आरो मौला गेलैन। मनमे अनेको प्रश्न उठए लगलैन। देरी हएत तँ जवाबो देबए पड़त। मुदा घरो छोड़ब तँ नीक नै हएत। जखने घर छोड़ब तखने उचक्का सभ सभटा लूटि-ढँगेर कऽ लऽ जाएत। अपने नइ रहने क्लिनिको नहियेँ चलत। अखन जँ रमेशोकेँ अबैले कहबै सेहो केना हएत। काल्हिए तँ ओहो ज्वाइन केलकहेँ। अगर जँ ओकरा माइए-केँ अबैले कहबैन तँ ओहो जपाले। किएक तँ रोज देखै छिऐ अपहरणक घटना...। तैबीच हड़बड़बैत कम्पाउण्डर टोकलकैन-

"अहाँ दुआरे हमहूँ नै मारि खाएब। हम जाइ छी।"

अधमड़ू भेल हेमन्त बजला-

“दू मिनट रूकह, कपड़ा बदलै छी।”

हाँइ-हाँइ कऽ कपड़ा बदैल, बैगमे लुंगी, गमछा, शर्ट, पेन्ट, गंजी रखि हेमन्त विदा भेला। रिक्शापर चढ़िते रहैथ आकि पुलिसक गाड़ी पहुँच गेल। तेते हड़बड़ा कऽ विदा भेल रहैथ जे मोबाइल, घड़ी, दाढ़ी बनबैक वस्तु छुटिए गेलैन। पुलिसक गाड़ी देख जे हड़बड़ा कऽ रिक्शापर चढ़ैत रहैथ तखने चश्मा खसि पड़लैन। जेकर एकटा शीशो आ फ्रेमो टुटि गेलैन। पुलिसक गाड़ीकेँ घुमैत देख मनमे शान्ति एलैन। रिक्शापर चढ़ि थोड़े आगू बढ़ला कि डाक्टर सुनीलकेँ बच्चा सबहक संग बजारसँ डेरा जाइत देखलखिन। सुनील बाबूकेँ देख कम्पाउण्डरसँ पुछलखिन-

“सुनील बाबू सभकेँ ड्यूटी नइ भेटलैन अछि, की?”

कनी काल चुप रहि कम्पाउण्डर कहलकैन-

“नीक-नहाँति तँ नहि बुझल अछि मुदा बुझि पड़ैए, जे सभ अस्पतालमे बेसी समए दइ छथिन हुनका सभकेँ छोड़ि देल गेलैन अछि।”

कम्पाउण्डरक बात सुनि डाक्टर हेमन्तकेँ अपनापर ग्लानि भेलैन। मन पड़लैन सुनील बाबूक परिवार आ जिनगी। सुनील बाबू सेहो डाक्टर। दू भाँइक भैयारी। पितो जीविते। चारि बहिन। चारू सासुर बसैत। बहिन सबहक सासुर देहातेमे, जैठाम पढ़ै-लिखैक नीक बेवस्था नहि। ओना अपनो सुनील बाबू गामेमे रहि पढ़ने छला। डाक्टरी पास केलापर गाम छोड़लैन। हुनकर भैया दरभंगेक हाइ स्कूलमे शिक्षक। परिवारो नमहर। माए-बापक संग दुनू भाँइक पत्नी आ बच्चा। तैपर सँ चारू बहिनक पढ़ै-लिखैबला बच्चा सभ। सुनील बाबूक जिनगी आन डाक्टरसँ भिन्न। मात्र दू घन्टा अपन क्लिनिक चलबैथ। आ नित्य आठ घन्टा समए अस्पतालमे दैथ। अपना क्लिनिकमे चारिटा कम्पाउण्डर आ जाँच करैक सभ यंत्र रखने। जाँच करैक पाइमे सभ कम्पाउण्डरकेँ परसेनटेज दैथ। जइसँ काजो अधिक होइन। कम्पाउण्डरो सभकेँ नीक कमाइ भऽ जाइत, तँए इमानदारीसँ ओहो सभ श्रम करैत। ओना सभ काज कम्पाउण्डरे कऽ लैत मुदा हिसाब-बाड़ी आ जाँचक परताल अपनेसँ करैथ। जइसँ अस्पतालोमे जाँच करौनिहार दोहरा कऽ अबैत। आ आन-आन प्राइवेट खानगी जाँच घरक काज सेहो पतराएल। तेतबे नहि, डाक्टर सुनीलक चर्चा सीतामढ़ी, दरभंगा, सुपौल आ समस्तीपुर जिलाक गाम-गामक लोकक बीच होइत। जहिना धारक पानि

शान्त आ अनवरत चलैत रहैत, तहिना सुनीलक परिवार। कोनो तरहक हड़-हड़-खट-खट परिवारमे कहियो नै होइत...।

डाक्टर सुनीलक परिवारक सम्बन्धमे सोचैत-सोचैत डाक्टर हेमन्त अपनो परिवारक सम्बन्धमे सोचए लगला। मन पड़लैन पिता। पिता बंगालसँ डाक्टरी पढ़ि गामेमे प्रैक्टीस शुरू केलैन। किएक तँ सरकारी अस्पताल गनल-गूथल छल। मुदा रोगीक कमी नहि। कमी इलाज आ इलाज कर्ताक। नमहर इलाका। दोसर डाक्टर नहि। गाम-घरमे ओझा-गुनी, झार-फूक, जड़ी-बुटीसँ इलाज चलैत। ओना हेमन्तक पिता-डाक्टर दयाकान्त सभ रोगक जानकार, मुदा तीनिए तरहक रोगक–टुटल हाथ-पैरक पलश्तर, सँपकट्टी आ बतहपन्नी–इलाजसँ पलखैत नहि। तँए ओझो-गुनीक चलती पूर्ववते। कमाइयो नीक। जइसँ दू-महला मकानो आ पचास बीघा खेतो कीनलैन। तैसंग तीनू बेटोकेँ खूब पढ़ौलैन। जेठका ओकील, मैझला डाक्टर आ छोटका प्रोफेसर। जाधैर दयाकान्त जीबैत रहलखिन ताधैर गामो आ इलाकोमे सुसभ्य आ पढ़ल लिखल परिवारमे गिनती होइन। तीनू भैंयोक बीच अगाध सिनेह। जेठ-छोटक विचार सबहक मनमे। जइसँ माइयो-बापकेँ खुशी। ओना, माए पढ़ल-लिखल नहि, मुदा परम्परासँ सभ बुझैत। जखन कि पिता आधुनिक शिक्षा पाबि आधुनिक नजैरसँ सोचैबला। तीनू भाँइक मेहनत देख पिताकेँ ई खुशी होनि जे परिवारक गाड़ी आगू-मुहेँ नीक जकाँ ससरत। बेटा सबहक बिआह इलाकाक नीक-नीक परिवारमे पढ़ल-लिखल लड़कीक संग केलैन। दहेजो नीक भेटलैन।

दयाकान्त मरि गेलखिन मुदा स्त्री जीविते रहैन। तीनू भाँइ अपन-अपन जिनगीमे ओझराएल। अपन-अपन परिवारक संग रहैत, घरपर खाली माइए-टा। तीनू भाँइक परिवारक गारजनी स्त्रीक हाथमे। एक-दोसरसँ आगू बढ़ैक हरिदम परियास करैत। जइसँ गामक सम्पैतपर नजैर जाए लगलैन। गामक सम्पैत अधिक-सँ-अधिक हाथ लागए तइ भाँजमे बौद्धिक व्यायाम नीक-नहाँति शुरू भेल। मुकदमा बाजी भेल। एकटा कोठरी आ दू बीघा खेत माएकेँ कोटसँ भेटलैन। बाँकी घरो आ खेतो जप्त भऽ गेलैन। एक साए चौआलीस लगि गेलै जइसँ पुलिसक ड्यूटी भेल। बीस बर्खक पछाइत डाक्टर हेमन्त लिखि कऽ कोर्टमे दऽ देलखिन जे हमरा ऐ सम्पैतसँ कोनो मतलब नहि।

दरभंगा प्लेटफार्मपर डाक्टर हेमन्त देखलैन जे दर्जनो डाक्टर जा रहल छी। दर्जनो कम्पाउण्डरो छइ। मुदा सबहक मुँह लटकल। एक्को मिसिया मुँहमे

हँसी नहि। जहिना ठनका ठनकलापर सभ अपने-अपने माथपर हाथ रखि साहोर-साहोर करैत तहिना बाढ़िक इलाकाक ड्यूटीसँ सबहक मनपर भारी बोझ, जइसँ सभ मने-मन कबुला-पाती करैत। 'हे भगवान', 'हे भगवान' करैत। कियो-केकरो टोकैत नहि। आँखि उठा कऽ देख फेर निच्चाँ कऽ लइत।

निर्मली जाइवाली गाड़ी पहुँचल। गाड़ी पहुँचते सभ हड़बड़ करैत, अपनो आ समानो सभ उठा-उठा गाड़ीमे चढ़ौलैन। हेमन्तो चढ़ला। कम्पाउण्डरकेँ बीड़ीक तृष्णा चढ़लै। दुनू काटुन गाड़ीमे चढ़ा अपने उतैर कऽ पानक दोकान दिस बढ़ल। तखने पनरह-बीसटा तरकारीवाली आबि गाड़ीक डिब्बामे कियो छिट्टा चढ़बैत तँ कियो मोटा। तेसर यात्री सभ, तरकारीवालीक काँइ-कच्चर सुनि-सुनि आगू बढ़ि जाइत। कम्पाउण्डरो हाँइ-हाँइ कऽ चारि दम बीड़ी पीब दौगल आबि बोगीक आगूमे ठाढ़ भऽ गेल। तरकारीवाली सबहक झुण्ड देख कम्पाउण्डरकेँ मनमे हुअ लगलै जे हमरा चढ़िए ने हएत। चुपचाप निच्चाँमे ठाढ़। गाड़ीक भीतर बैसल एकटा पसिन्जर उठि कऽ आबि एकटा मोटाकेँ निच्चाँ धकेल देलक। जइ तरकारीवालीक मोटा खसल रहै ओ ओइ आदमीक गट्टा पकैड़ निच्चाँ उतारलक। निच्चाँ उतारिते घोरन जकाँ सभ तरकारीवाली लुधैक गेल। गारियो खूब पढ़लकै आ मारबो केलकै। तखने बोगीक मुँह खाली देख कम्पाउण्डर चढ़ि गेल।

गाड़ीकेँ पुक्की दैते सभ हाँइ-हाँइ कऽ चढ़ए लगल मुदा झगड़ा नै छुटलै। गारि-गरौवैल चलिते रहलै। जेते हल्ला सौंसे गाड़ीमे लोकक बजलासँ होइत रहै, ओते खाली ओइ एक्के डिब्बामे होइ। अकैछ कऽ डाक्टर हेमन्त सीटपर सँ उठि समान रखैबला ऊपरकापर जा कऽ बैगकेँ मुड़ी-तरमे रखि पड़ि रहला। ओंघराइते अपना जिनगीपर नजैर गेलैन। मने-मन सोचए लगला जे पिताजी तँ हमरे सबहक सुख-ले ने ओते सम्पैत अरजलैन। मुदा की हमरा सभकेँ ओइ सम्पैतसँ सुख होइए? अपनो कमाइ तँ कम नै अछि। मुदा चौबीस घन्टाक दिन-रातिमे चैनसँ केते समए बितैए? जहिना खाइ काल फोन अबैए तहिना सुतै काल। की यएह छी सुखसँ जिनगी बिताएब? ..मुदा ऐ प्रश्नक उत्तर सोचमे ऐबे ने करैन। फेर मन उनैट कऽ जिनगीक पाछू-मुहेँ घुरलैन। मनमे एलैन, जे धाकर सन-सन तीन बेटाक माए छी, ओइ माएकेँ कियो एक लोटा पानि देनिहार नहि। किएक ने वेचारीक मनमे उठैत हेतैन जे ऐ बेटासँ बिनु बेटे नीक। हमरो अहिना नइ हएत, तेकर कोन गारंटी।

गाड़ी घोघरडीहा पहुँचल। यात्री सभ उतरबो करए आ बजबो करए जे किसनीपट्टीसँ आगू लाइन डुमि गेल छै, तँए गाड़ी आगू नै बढ़त। कम्पाउण्डर उठि कऽ हेमन्तक पएर डोलबैत पुछलकैन-

“डाक्टर साहैब, नीन छिऐ।”

“नहि।”

“सभ उतैर रहल अछि। गाड़ी आगू नइ बढ़त। उतैर जाउ?”

कम्पाउण्डरक बात सुनि हेमन्तक मनमे अस्सी मन पानि पड़ि गेलैन। मुदा उपाय की? अधमड़ू जकाँ उतरलैथ। प्लेटफार्मपर रिक्शाबला, टमटमबला हल्ला करैत जे कोसीक पछबरिया बान्हपर जाएब?”

एकटा रिक्शाबलाकेँ हाथक इशारासँ कम्पाउण्डर हाक पाड़ि पुछलक-

“हम सभ लछमीपुर जाएब। तोरा बुझल छह?”

रिक्शाबला-

“हमरो घर लछमीएपुर छी। बाढ़ि दुआरे ऐठाम रिक्शा चलबै छी।”

कम्पाउण्डर-

“ऐठामसँ केना-केना रस्ता हेतइ?”

रिक्शाबला-

“ऐठामसँ हम बान्हपर दऽ आएब। आ ओतएसँ नाव भेटत, जे लछमीपुर पहुँचा देत। ऐठामसँ हम नेने जाएब आ अपने भैयाबला नावपर चढ़ा देब।”

कम्पाउण्डर-

“बड़बढ़ियाँ, काटुन चढ़ाबह।”

सभ कियो रिक्शापर चढ़ि विदा भेल। पुबरिया गुमती लग जैठाम चाउरक बड़का मिलक खंडहर अछि तेतए पहुँच रिक्शावलाकेँ हेमन्त पुछलखिन-

“लछमीपुर केहेन गाम अछि?”

रिक्शाबला-

“बड़ सुन्दर गाम अछि। सन्मुख कोसीसँ मील भरि पछिमे अछि। गामक सभ मेहनती। बाढ़िक समैमे हम सभ रिक्शा चलबै छी आ जखन पानि सटैक

जाइ छै तहन जा कऽ खेती करै छी। गाइयो-महींस पोसने छी। केते गोरे नाव चलबैए आ केते गोरे मछबारि करैए। हमरा गामक लोक पंजाब, डिल्ली नै जाइए। आन-आन गाममे तँ पंजाब, डिल्लीक धरोहि लागि जाइ छै, से हमरा गाममे नइए।"

माछक नाओं सुनि बिच्चेमे कम्पाउण्डर पुछलकै-

"तब तँ माछ खूब सस्ता हेतह?"

"हँ, कोनो की जीरा रहै छै, सभ अनेरूआ। एहेन सुअदगर माछ शहर-बजारमे थोड़े भेटत। शहर-बजारक माछ तँ सड़ल-सुड़ल पानिक डबरा महक रहैए।"

कोसीक पछबरिया बान्हपर पहुँचते रिक्शाबला अपन भौयाक घाटपर रिक्शा लऽ गेल। भाइक रिक्शा देखते भागेसर नावपर सँ बान्हपर आएल। दुनू भाँइ दुनू काटुन लऽ जा कऽ नावपर रखलक। अदहा नावपर तख्ता बिछौने आ अदहा ओहिना। तख्तापर पटेरक पटिया बिछौल, जैपर बैस हेमन्त पूब-मुहेँ तकलैन तँ बुझि पड़लैन जे समुद्रमे जा रहल छी। सौंसे देह सर्द भऽ गेलैन। मनमे डर पैस गेलैन जे केना ऐ पानिमे जाएब। मन पड़लैन दरभंगाक पीच परहक कार। मुदा एक्सिडेंट तँ ओतौ होइ छइ। ओतौ लोक मरैए। फेर मनमे एलैन जे महेन्द्रूक नाव जकाँ ऐ नावमे इंजनो नइ छइ। जँ कहीं बीचमे लग्गी छुटि-टुटि जेतै तँ भँसिए जाएब। केतए जाएब केतए नहि। अनासुरती मनमे एलैन जे अखन धरि कम्पाउण्डरकेँ नोकर जकाँ बुझै छेलिऐ ओ उचित नहि। ई तँ छोट भाए-तुल्य अछि। नव विचार मनमे उठिते कम्पाउण्डरकेँ कहलखिन-

"बौआ, धन्य अछि ऐठामक लोक। जे सचमुच देवीक पूजो करैए आ लड़बो करैए। किए ने जिबठगर हएत।"

नाव खुगलै, माँगि सोझ कऽ नैया–कमलेसरीक गीत उठौलक। नैयाकेँ लग्गी उठबैत आ पानिमे रखैत देख डाक्टर हेमन्त मने-मन सोचए लगला जे एहेन मेहनत केनिहारकेँ कोन जरूरत दबाइ आ व्यायामक छइ। मन पड़लैन रामेश्वरम्। समुद्रक झलकैत पानि। जइमे लहैर सेहो उठैत। तहिना तँ ओहूठाम पानिक लहैर अछि। फेर मन पड़लैन जेसलमेरक बाउल। अहिना उज्जर धप-धप केतौ-सँ-केतौ बाउल। कमलेसरीक गीत समाप्त होइते नाविक कोसी मैयाक गीत उठौलक। अजीब साजो। जहिना नावमे 'खट-खट'क अवाज तहिना लग्गीक। लग्गीक पानि देहोपर खसै मुदा तँए की ओकर पसीना निकलब थोड़े

रूकइ।

डाक्टर हेमन्तक मन फेर उनटलैन। मिलबए लगला समुद्रक लहैरकेँ कोसीक लहैरसँ। समुद्र रूपी समाजमे सेहो समुद्रे जकाँ लहैरो उठैए आ धारक वेग जकाँ वेगो, मुदा ओ धीरे-धीरे असथिर भऽ जाइए। मुदा कोसीक धार जकाँ जे वेग चलैत ओ पैघसँ पैघ पहाड़केँ तोड़ि धारो बना दैत आ समतल खेतो। तेतबे नहि, पुरानसँ पुरान गामक अधला परम्पराकेँ तोड़ि नवमे सेहो बदैल दइत। जहिना मौसम बदललापर गाछक पुरान पात झड़ि नव पातसँ पुनः लदि जाइत, तहिना। ..असीम विचारमे डुमल हेमन्तक मुँह अनासुरती नाविककेँ पुछलक-

"केते दूर अहाँक गाम अछि?"

नैया-

"छह कोस।"

"केते समए जाइमे लगत?"

"भट्ठा दिस जाएब, तँए जल्दीए पहुँच जएब।"

जल्दीक नाओं सुनि हेमन्तक मनमे आशा जगल। मुदा ओ आशा लगलेमे जाए लगलैन। किएक तँ सौंसे पानियेँ देखैथ, गाम-घरक केतौ पता नहि। चिन्तित होइत चुप भऽ गेला। ..अपना सुढ़िमे नैया गीत गबैत। मनमे कोनो विकारे नहि। मुदा हेमन्तकेँ कखनो गीत नीको लगैन आ कखनो झड़कबाहियो उठैन। तखने एकटा मुर्दा भँसल जाइत रहए। सबहक नजैर ओइ मुर्दापर पड़ल। मुर्दा देख हेमन्तक नजैर अस्पतालक मुर्दापर गेलैन। मुदा दुनूक दू कारण। एकक जिनगीक अन्त रोगसँ तँ दोसराक बाढ़िसँ। नब-नब समस्या उठि-उठि हेमन्तक मनकेँ घोर-मट्ठा कऽ देलकैन। मनक सभ विचार हेराए लगलैन। तैबीच एकटा किलो चारिए-क रौह माछ कुदि कऽ नावमे खसल। माछ देख हेमन्तोक आ कम्पाउण्डरोक मन चट-पट करए लगलैन। लग्गीकेँ माँगिपर रखि भागेसर माछकेँ पकैड़, पानि उपछैबला टीनमे रखैत बाजल-

"अहाँ सबहक जतरा बनि गेल!"

नैयाक शुभ बात सुनि हेमन्तक मन फेर ओझरा गेलैन। मनमे उठए लगलैन जे जतरा केकरा कहबै? घरसँ विदा भेलौं तेकरा आकि कार्यस्थल तक पहुँचैकेँ? आकि काज सम्पन्न कऽ घर पहुँचलाकेँ? तहूसँ आगू जे काजक बीचोमे नव काज उत्पन्न भऽ सकैए...। नैयाकेँ पुछलखिन-

"आब केते दूर अछि?"

हाथ उठा आँगुरसँ दच्छिन दिस देखबैत नैया कहलकैन-

"वएह हमर गाम छी। गोटे-गोटे जमुनीक गाछ देखै छिऐ? अदहा कोस करीब हएत।"

'अदहा कोस' सुनि कम्पाउण्डर चहैक उठल-

"डाक्टर साहैब, पाँच बजैए। अदहा घन्टा आरो लागत। साढ़े पाँच बजे तक पहुँच जाएब।"

"भने सबेरे-सकाल पहुँच जाएब।"

कहि डाक्टर हेमन्त देखए-सोचए लगला, अकासमे चिड़ै सभ नै उड़ैए। किएक तँ चिड़ै ओइठाम उड़ैत जैठाम रहैक ठौर होइत। मुदा से तँ नइ छै, सौंसे बाढ़िये पसरल अछि। मुदा तैयो गोटे-गोटे मछखौका चिड़ै जरूर उड़ैए...।

लछमीपुर दिस अबैत नावकेँ देख गामक धियो-पुतो, स्त्रीगणो आ गोटे-गोटे पुरुखो घाटपर ठाढ़ भऽ एक दोसरकेँ कहैत-

"चाउर-आँटाबला छिऐ।"

"नुओ-बसतर हेतइ।"

"तिरपालो हेतइ।"

"बड़का हाकीम सभ छिऐ।"

घाटपर आबि नाव रूकल। मुदा पेन्ट-शर्ट पहिरने डाक्टर आ कम्पाउण्डरकेँ देख जनिजाति सभ मुँह झाँपए लगल। मरद सभ सहैम गेल। धिया-पुता डेरा गेल। नावकेँ बान्हि नैया सुलोचनाकेँ कहलक-

"हे गइ सुलोचना, डाकदर साहैब सभ छथिन। बक्सामे दबाइ छिऐ। हम दबाइ उतारै छी तूँ टीन उतार। टीनमे एकटा नमहर माछ छौ। खूब नीक जकाँ माछकेँ तरि डाकदर साहैबकेँ खुआ दहुन।"

माछ उतारि सुलोचना अँगना लऽ गेल। टीन रखि बाड़ीक कलपर आबि हाथ धोलक, आँचरसँ हाथ पोछि, स्कूलक ओछाइन झाड़ि बिछबए लगल। बिछान बिछा, दौग कऽ आँगनसँ बड़का जाजीम आ दूटा सिरमा आनि लगौलक। हेमन्तो आ दिनेशो आगूमे ठाढ़। मुदा ओते लोकक बीच दुनू गोरेक नजैर सुलोचनेक देह आ काजपर नचैत रहैन। ..बिछान बिछा सुलोचना

हेमन्तकेँ कहलकैन-

"डाक्टर साहैब, बिछान बिछा देलौं, आब अराम करू।"

दिनेश चुप्पे। मुदा हेमन्त बजला-

"बुच्ची, देह भारी लगैए। ओना नावपर आरामे सँ एलौं। मुदा तैयो देह भरियाएल बुझि पड़ैए। पहिने नहाएब।"

"बड़बढ़ियाँ।"

कहि सुलोचना आँगन बाल्टी-लोटा आनए गेल। आँगनसँ बाल्टी-लोटा नेने कलपर पहुँचल। दुनूकेँ माटिसँ माँजि, बाल्टीमे लोटा रखि, पानि भरि, हेमन्तकेँ कहलक-

"डाक्टर साहैब, नहा लिअ।"

चहारदेबालीसँ घेरल टंकीपर नहाइबला डाक्टर हेमन्त खुला धरती-अकासक बीच नहाइले जेता। तँए किछु सोचै-विचारैक प्रश्न मनमे उठि गेलैन, मुदा बहुत सोचैक जरूरत नइ पड़लैन। अपना-अपना उमरबला सभकेँ डोरीबला पेन्ट, तैपर सँ केकरो लुंगी तँ केकरो चरिहत्थी तौनी पहिरने देखलखिन। ओहो सएह केलैन। मुदा बारह बर्खक सुलोचना कलपर सँ हटल नहि। मातृत्वक दुआरिपर पहुँचल सुलोचनामे फूलक टुस्सी जरूर अबि गेल छेलइ। मुदा हेमन्तोक मनमे डाक्टरक विचार। ओना डाक्टर हेमन्त शरीरक सभ अंगक गुण-धर्म बुझैथ मुदा एहनो तँ वस्तु अछि जे गर्म हवाक रूपमे रहैत। जइमे आनन्द आ सृजनक गुण होइत। सुलोचनोमे फूलक कोढ़ी जे सुगन्धक वाल्यावस्थामे प्रस्फुटित होइत, महमही हवामे...।

एक लोटा माथपर पानि ढारला पछाइत हेमन्तक मनमे एलैन जे अखन हम दुनियाँक ओइ धरतीपर छी जैठाम जीवन-मरण संगे रहैए। मुदा तैठाम एहेन सौम्य-सुशील-अल्हड़ वाला केते खुशीसँ चहचहा रहल अछि। तीन साल पहिलुका बात छिऐ। जइ बाढ़िमे केतेको गाम, केतेको मनुख आ केतेको सम्पैत नष्ट भेल छल। तँए की? जे बँचल अछि ओ ओइ गामकेँ छोड़ि देत। कथमपि नहि। मुदा बाढ़ि अनहोनी नइ रहए। बैरेजक फाटक खोलल गेल रहइ। फाटको खोलैक मजबुरी रहइ। किएक तँ बैरेजक उत्तर तेते पानिक आमदनी भऽ गेलै जे दुर्दशाक अन्तिम शिखरपर पहुँच सकै छल। मुदा सुदूर गाममे जानकारीक साधन नहि, आ ने बँचैक उपाय। कोसीक दुनू बान्हक बीच समुद्र जकाँ पानि

पसैर गेल। थाहसँ अथाह धरि।

कुनौलीसँ दच्छिन, कोसी धारक कातमे एकटा गाम। ओही गामक सुलोचना। जेकर सभ किछु मनुखसँ घर धरि दहा गेलइ। मुदा सुलोचना जे बँचल से पढ़ैले कुनौली गेल छल तँए। स्कूलसँ घर जाइ काल बाढ़िक दृश्य देखलक। दृश्य देख बान्हेपर बपहारि काटए लगल। तखने लछमीपुरक चारि गोरे बजारसँ समान खरीद नाव लग अबैत रहए। सुलोचनाकेँ कनैत देख जीयालाल पुछलकै-

"बुच्ची, किए कनै छेँ?"

कनैत सुलोचना-

"बाबा, हम पढ़ैले गेल छेलौं। तैबीच हमर गामे दहा गेल। आब हम केतए रहब?"

जीयालाल-

"हमरा संगे चल। जहिना बारहटा पोता-पोतीकेँ पोसै छी तहिना तोरो पोसबौ।"

जीयालालक विचार सुनि सुलोचनाक हृदैमे जीबैक आशा जगल। कानब रूकि गेलइ। मुदा करवनो काल हुचकी उठिते रहलै। नावपर सभ समान रखि चारू गोरे बान्हपर आबि चीलम पीबैक सुर-सार करए लगल। एक भागमे सुलोचनो किताब नेने बैसल। बटुआ खोलि रघुनी चीलम, कंकड़क डिब्बा आ सलाइ निकालि बीचमे रखलक, एक गोरे चीलमक ठेकी निकालि, चीलमो आ ठेकियोकेँ साफ करए लगल। दोसर गोरे डिब्बासँ कंकड़ निकालि तरहत्थीपर औंठासँ मलए लगल। चीलम साफ भेलइ। ओइमे ठेकी दऽ कंकड़बला हाथमे देलक। कंकड़बला चीलममे कंकड़ बोझि दुनू हाथसँ चीलमक पैछला भाग पकैड़ मुँहमे भिरौलक। मुँहमे भिरैबते रघुनी सलाइ खड़ैर कंकड़मे लगबए लगल। दू-चारि बेर मुँहक इंजनसँ प्रेशर दैते चीलम सुनैग गेल। चीलमकेँ सुनैगते तेते जोरसँ दम मारलक जे धुआँक संग धधरो उठि गेलइ। मुदा चीलमक दुषित हवासँ धधड़ा मिझा गेल। बेरा-बेरी चारू गोरे चीलम पीब मस्त भऽ नाव दिस विदा भेल। साँझू-पहरकेँ जहिना गाए-महींस बाधसँ घर दिस अबैत। जेकरा पाछू-पाछू छोट-छोट नेरू-पर्डू झुमैत, लुदुर-लुदुर मगन भऽ चलैत, तहिना सुलोचना लछमीपुरबला सबहक संगे पाछू-पाछू नावपर पहुँचल। नावपर चढ़िते लग्गा चलौनिहार कोसी महरानीक दुहाइ देलक। संगेमे सुलोचनो बाजल-

"जय।"

नाव खुगल। लछमीपुरक चारू गोरेक मन सुलोचनाक जिनगीपर। मुदा सुलोचनाक परिवारक बिछोहक दुखसँ सुख दिस जाए लगल। जइ सुलोचनाक गाम आ परिवारक केतौ अता-पता नहि, ओइ सुलोचनाक मनमे उठए लगल जे गाम-घर भलेँ दहा गेल मुदा माए-बाप जरूर जीबैत हएत। किएक तँ मनुख निर्जीव नै सजीव होइत। बुधि‍-विवेक होइत। तँए ओ दुनू गोरे जरूर केतौ जीबैत हएत। जे आइ-ने-काल्हि जरूर मिलबे करत। तँए सुलोचनाक मनमे जिनगी भरिक दुख नहि, मात्र किछु दिनक दुख। जे कहुना नै कहुना कटिए जाएत। नाव लछमीपुर पहुँचल। जीयालालक बारहोटा पोता-पोती दौग कऽ नाव लग आएल। पोता-पोतीकेँ देख जीयालाल बाजल-

"बाउ, तोरा सभले एकटा बहिन नेने एलिअयह।"

सुलोचना पोता-पोती सबहक पाहुन भऽ गेल। दोसर दिन जीयालाल एकटा घर बना, सुलोचनाकेँ गामक बच्चा सभकेँ पढ़बैले कहलक। गामक बच्चा सभकेँ सुलोचना पढ़बए लगल। वएह सुलोचना छी।

हेमन्तो आ दिनेशो नहाएल। नहा कऽ जाबे हेमन्त कपड़ा बदैल, केश सेरिया, तैयार भेला ताबे सुलोचनो आ जीयालालक जेठकी पोती कमलियो चूड़ा भुजि, माछ तड़ि लेलक।

दूटा थारीमे चूड़ा-भुजा आ तड़ल माछ साँठि दुनू बहिन दुनू थारी नेने हेमन्त लग पहुँच आगूमे रखि देलकैन। बड़का फुलही थारी तइमे चूड़ाक ऊपरमे माछक नमहर-नमहर तड़ल कुट्टिया पसारल। थारी रखि कमली पानि आनए गेल आ सुलोचना आगूमे बैसल। दुनू गोरे खाइत-खाइत दसो माछक कुट्टिया आ थारियो भरि चूड़ा खा लेलैन। शुद्ध आ मस्त भोजन। पानि पीब ढेकार करैत दिनेश बाजल-

"डाक्टर साहैब, आइ धरि हम एते नै खेने छेलौं।"

हेमन्त-

"से तँ हमरो बुझि पड़ैए।"

सुलोचना-

"डाक्टर साहैब, चाहो पीबै?"

हेमन्त-

"पीबै तँ जरूर मुदा दू घन्टाक पछाइत। ताबे किछु काज करब। ओना साँझ पड़ि गेल मुदा जाबे फरिच्छ छै ताबे दसो-पाँचटा रोगी जरूर देख लेब।"

सुलोचना-

"अच्छा, अहाँ तैयार हौउ, हम रोगी सभकेँ बजौने अबै छी।"

कम्पाउण्डर काटुन खोलि दबाइ निकालि पसाइर देलक। रोगी आबए लगल। रोगी देख-देख हेमन्त कम्पाउण्डरकेँ कहैत जाथिन आ कम्पाउण्डर दबाइ दैत जाए।

अस्पताल जकाँ तँ सभ रंगक रोगी नहि। किएक तँ बाढ़िक इलाका तँए गनल-गूथल रोग। दबाइयो तेहने। तीनिए दिनमे सौंसे गामक रोगीकेँ देख डाक्टर हेमन्त निचेन भऽ गेला। मुदा सात दिनक ड्यूटी। तहूमे कठिन रस्ता। मुदा पानि टुटए लगलै। पाँचम दिन जाइत-जाइत रस्ता सुखि गेल। मुदा थाल-खिचार रहबे करइ।

आठम दिन भोरे हेमन्त सुलोचनाकेँ कहलखिन-

"बुच्ची, आइ हम चलि जाएब।"

सुलोचना-

"ई तँ मिथिला छिऐ डाक्टर साहैब, बिनु किछु खेने-पीने केना जाएब?"

कहि सुलोचना चाह बनबए गेल। तखने एकटा दोस्तसँ भेँट करए कम्पाउण्डर गेल। असगरे हेमन्त। मने-मन सोचए लगला जे सात दिनक समए जिनगीक सभसँ कठिन आ आनन्दक रहल। ई कहियो नै बिसैर सकै छी। बिसरैबला ऐछो नहि। आइ धरि एहेन जिनगीक कल्पनो नै केने छेलौं, जे बीतल। तैसंग एहेन मनुखक सेवो करैक मौका पहिल बेर भेटल। मौके नइ भेटल, बहुत किछु देखैक, भोगैक आ सीखैक सेहो भेटल। आइ धरि हम एहेन रोगीकेँ जेकरा सचमुच जरूरत छै, सेवा नइ केने छेलौं, खाली पाइ कमेने छेलौं। गाम-घरमे जेकरा पाइ छै वएह ने दरभंगा इलाज करबए जाइए। जेकरा पाइ नइ छै ओ तँ गामेमे छरपटा कऽ मरैए।

तैबीच सुलोचना चाह नेने आएल। कप बढ़बैत बाजल-

"मन बड़ खसल देखै छी, डाक्टर साहैब।"

"नहि! कहाँ। एकटा बात मनमे आबि गेल तँए किछु सोचए लगलौं।"

सुलोचना-

"ऐठाम केहेन लगैए डाक्टर साहैब?"

सुलोचनाक प्रश्नक उत्तर नै दऽ हेमन्त चुप्प रहला।

हेमन्तकेँ चुप देख सुलोचना बाजल-

"हम तँ बच्चा छी डाक्टर साहैब, तँए बहुत नै बुझै छी। मुदा तैयो एकटा बात कहै छी। जहिना चीनी मीठ होइए आ मिरचाइ कड़ू। दुनूमे कीड़ा फड़ि ओइमे अपन-अपन जीवन-यापन करैए। मुदा चीनीक कीड़ाकेँ जँ मिरचाइमे दऽ देल जाए तँ एको क्षण जीवित नइ रहत, उचितो भेलइ। मुदा की मिरचाइक कीड़ा चीनीमे देला पछाइत जीवित रहत? तहिना गाम आ बजारक जिनगी होइए।"

सुलोचनाक बात सुनि डाक्टर हेमन्त मने-मन सोचए लगला जे बात ठीके कहलक। अहिना तँ मनुखोमे अछि। मुदा ओ हएत केना। जाबे समाजिक जीवनमे समरसता नै औत ताबे अहिना होइत रहत।

दस बजे भोजन कऽ दुनू गोरे लुंगी-गंजी पहिर सभ कपड़ो आ जूत्तोकेँ बैगमे रखि, पएरे विदा भेला। हेमन्तक बैग सुलोचना आ दिनेशक बैग कमली लऽ पाछू-पाछू विदा भेल। किछु दूर गेलापर हेमन्त कहलखिन-

"बुच्ची, आब तों सभ घुमि जा।"

हेमन्तक बात सुनि सुलोचनाक आँखि नोरा गेल। डाक्टर हेमन्तकेँ बैग पकड़बैत बाजल-

"अन्तिम प्रणाम, डाक्टर साहैब।"

एकाएक हेमन्तक हृदैसँ प्रेमक अश्रुधारा प्रवाहित हुअ लगलैन। मुहसँ 'प्रणाम'क उत्तर नै निकललैन। मुड़ी निच्चाँ केने आगू बढ़ि गेला। मुदा किछुए आगू बढ़लापर बुझि पड़लैन जे सुलोचना आ कमलीक आँखि रूपी चारू तीर पाछूसँ बेधि रहल अछि! पाछू उनैट कऽ तकलैन तँ देखलखिन जे दुनू गोरे ठाढ़े अछि। मन भेलैन जे हाथक इशारासँ जाइले कहि दिऐ, मुदा अपना रूपपर नजैर पड़ि गेलैन। खाली पएर जाँघ तक समटल लुंगी, देहमे सेन्डो गंजी, माथक केश फहराइत, तैपर सँ थालक छिटका घुट्ठीसँ लऽ कऽ माथ धरि पड़ल। ..हाथक इशारासँ सुलोचनाकेँ हाक पाड़लखिन। सुलोचनो आ कमलियो हँसैत आगू बढ़ल। लगमे देख हेमन्तोक हृदैमे हँसी उपकल। मुस्कियाइत बजला-

"बुच्ची, हम अपन दरभंगाक पता कहि दइ छिअ। अबिहह।"

सुलोचना-

"हम तँ शहर-बजारमे हेराइए जाएब, डाक्टर साहैब। अहाँ जाबे हमरा गाममे छेलौं ताबे बुझि पड़ै छल जे दरभंगा अस्पताल गाममे अछि।"

कहि सुलोचना डाक्टर हेमन्तक पएर छुबि गोड़ लागि घुमि गेल।

बान्हपर आबि दुनू गोरे थाल-कादो धोइ, पेन्ट-शर्ट पहिर स्टेशन दिस बढ़ला।

❍

शब्द संख्या : 4407

बाबी

दुर्गापूजा शुरू होइसँ एक दिन पूर्व घर छछारै आ दियारी बनबैले सिरखरियावाली बुढ़िया गाछीक मटि-खोभसँ मनही छिट्टामे चिक्कनि माटि नेने अँगना अबै छेली। रस्ते कातक चौमासक टाटपर बाबी करैला तोड़ैत रहैथ कि सिरखरियावालीक नजैर पड़लैन। नजैर पड़िते सिरखरियावाली एक हाथे छिट्टा पकड़ने आ दोसर हाथे चाइनिक घाम आँगुरसँ काछि कऽ फेकैत बाबीसँ पुछलक-

"बाबी, छठिकेँ केते दिन छइ?"

बाबीक नजैर जुआएल आ सड़ल करैलापर छेलैन। किएक तँ अजोह करैला तीतो बेसी आ सुअदगरो कम होइए। तेतबे नहि, पकैयोक डर रहै छइ। सड़ल करैला सभकेँ ऐ दुआरे लत्तीकेँ बिहिया-बिहिया ताकैथ जे जँ ओकरा तोड़ि नै लेती तँ दोसरोकेँ सड़ौत।

सिरखरियावालीक अवाज सुनि बाबी रस्ता दिस देख पुनः करैला ताकए लगली। किएक तँ माथपर भारी देख गप-सप्प करब उचित नइ बुझलैन। एक तँ भरल छिट्टा माटि आ तैपर खुरपी गाड़ल देखलखिन। मने-मन सोचए लगली- छठिक अखन मासोसँ बेसीए हेतै तहन एहेन कोन हलतलबी-बेगरता भऽ गेलइ। जँ महिना- परिव-तिथिकेँ जोड़ि कऽ कहए लगब तँ अनेरे देरी हेतइ। जेते देरी हेतै तेते भारियो लगतै। तँए बाबी आँखि उठा कऽ देख बिनु किछु कहनहि नजैर निच्चाँ कऽ लेलैन। मुदा सिरखरियोवाली रगड़ी। मनमे होइ जे अखने जँ नै बुझि लेब तँ फेर बिसैर जाएब। जँ बिसैर जाएब तँ किछु-ने-किछु छुटिए जाएत। संजोगसँ मटिखोभमे मन पड़ल जे पौरुका दशमीए-मेलामे तीनटा कोनियाँ एकटा सूप आ एकटा छिट्टा कीनि नेने रही। जइसँ छठि पाबैन केलौं। बाबीक नजैर निच्चाँ केने देख सिरखरियावाली दोहरा कऽ टोकलकैन-

"गरीब-दुखियाक बात आब थोड़े बाबी सुनै छथिन, जे सुनतीहिन।"

सिरखरियावालीक बात बाबीक करेजकेँ छुबि देलकैन। मुदा क्रोध नइ भेलैन सिनेह उमैड़ गेलैन। एकाएक बाबी अपन बोली बदैल चौअन्नियाँ मुस्की

दैत बजली-

"कनियाँ, मनमे आएल जे चारिटा करैला तोरो तरकारी-ले दिअ। तँए हाँइ-हाँइ करैला ताकए लगलौं। कनीए ठाढ़े रहह?"

सिरखरियावाली-

"जे पुछलयैन से कहबे ने करै छैथ आ करैला दऽ कऽ फुसलबए चाहै छैथ।"

विचित्र अन्तर्द्वन्द बाबीक मनकेँ घोर-मट्ठा करए लगलैन। एक दिस माथपर भारी देखथिन आ दोसर दिस आइसँ छठि धरि जोड़ैक समए। तहूसँ उकड़ू बुझि पड़ैन जे सोझ मासक सवाल नै अछि। दू मास बीचक बात छी। सेहो तेहेन मास जइमे लुंगीयाँ मिरचाइक घौंदा जकाँ पाबैनक घौंदा अछि! जाधैर सभ सोझरा कऽ नै कहबै ताधैर अपनो मन नै मानत आ ओहो नै बुझत। ..ताल-मेल बैसबैत बाबी बजली-

"कनियाँ, अखन जाउ। हमहूँ तीमनक ओरियानमे लगल छी, अहूँक माथपर भारी अछि।"

सिरखरियावालीक मनमे होइ जे छठि सन पाबैन छी, जँ हिसाबसँ ओरियान नै करैत जाएब तँ कएटा चीज छुटिए जाएत। आन पाबैन जकाँ तँ छठि हल्लुक नइ अछि। बड़ ओरियान, बड़ खर्च छै ऐमे। बजली-

"दशमी मेलामे जे कोनियाँ, सूप, छिट्टा कीनि नेने रहै छी तँ बुझै छिऐ जे एते काज अगुआएल रहैए।"

बाबी-

"कनियाँ, एकटा काज करू। छिट्टाकेँ निच्चाँमे रखि दियौ अहूँक देह हल्लुक भऽ जाएत आ हमरो हिसाब जोड़ि-जोड़ि बुझबैमे नीक हएत।"

"बाबी, भारी उठबैत-उठबैत तँ माथ सुन्न भऽ गेल अछि। ई माटि केते भारी अछि।"

"कनियाँ, बहुत हिसाब जोड़ि कऽ बुझबए पड़त।"

"ओते अखन नै कहौथु। खाली छठिए-टा कहि दौथ। गोटे दिन निचेनसँ आबि कऽ सभ बुझि लेब।"

आँगुरपर बाबी हिसाबो जोड़ैथ आ ठोर पटपटा कऽ बजबो करैथ-

"आइ आसिनक अमवसिये छी। आइए भगवतीकेँ हकारो पड़तैन आ बघा-सँपहाक निमिते खैयो-ले देल जेतइ। काल्हि कलशथापनसँ दुर्गा पूजा शुरू हएत जे नअ-दस दिन धरि चलत। दशमी तिथिकेँ यात्रा हएत। तेकर पाँचे दिनक पछाइत कोजगरा हएत। कोजगराक परातसँ कातिक चढ़त। कातिक अमवसियाकेँ दियाबाती.., लक्ष्मी पूजा.., कालीपूजा हएत। परात भेने गोधन पूजा, दोसर दिन भरदुतिया आ चित्रगुप्तो पूजा हएत। भरदुतियाक प्रातसँ छठिक विधि शुरू भऽ जाएत। पहिल दिन माछ-मरूआ बाड़ल जाएत... दोसर दिन नहा कऽ खाएल जाएत... तेसर दिन खरना... चारिम दिन छठिक साँझुका अर्घ आ पाँचम दिन भिनसुरका अर्घ भेलापर उसैर जाएत... ।"

आँगुरपर गनैत-गनैत बाबी बजली-

"कनियाँ, सबा मास करीब छठिक अछि।"

"सबा मास केते भेलै बाबी?"

"दू बीसमे तीन दिन कम।"

"हम तँ सभ बेर दशमीए मेलामे कोनियाँ, सूप, छिट्टा कीनि लइ छी। तेकरा कए दिन छइ?"

"सात पूजाकेँ भगवतीकेँ डिम्हा पड़लापर मेला शुरू भऽ जाइए। जेकरा आठ दिन छइ। मुदा एकटा बात पुछै छिअ जे एते अगता किए किनै छह? ताबे ऐ पाइसँ दोसर-तेसर काज करबह से नहि। जहन पाबैन लगिचा जेतै तहन कीनि लेबह?"

"पहिने कीनलासँ दू-पाइ सस्तो होइए आ एकटा चीजोसँ निचेन भऽ जाइ छी। एक बेर अहिना नै कीनलौं तँ भेबे ने कएल। आब की करितौं तहन पुरने कोनियोँ-सूपो आ छिट्टोकेँ चिक्कनिसँ धोइ देलिऐ आ ओहीसँ पाबैन कऽ लेलौं।"

सिरखरियावालीक बात सुनि बाबीक नजैर बेवहार दिस बढ़लैन। मनमे उठलैन- छठि पाबैनक महात्म्य बहुत बेसी अछि। खास कऽ किसान लेल। एक दिस पूर्वजक मिठाइ-पकवान तँ दोसर दिस डोमक बनौल कोनियाँ, सूप, छिट्टा। तेसर दिस कुम्हारक बनौल कूड़[4], ढकना, सरबा इत्यादि। तँ चारिम दिस अपन उपजौल फल-फलहरी, तीमन-तरकारीक संग मसल्लोक वस्तु, तैसंग आरो

[4] बिनु मोड़ल कानबला घैल, (पनिभरा घैलमेमे मोड़ल कान होइए) कुड़पर चौमुखी दीप जरैत।

बहुतो अछि। तैपर सँ डुमैत सुरूजक पहिल अर्घ...।

मने-मन विचारैत बाबी चुप्पे रहली। मनमे भेलैन जे ई तँ ओइ इलाकाक छी जइ इलाकाक स्त्रीगण रौद-बसातकेँ गुदानिते ने अछि, खेतक काज करैमे भूते। भगवानोकेँ हारि मनबैवाली। ..बाबीक मनमे होइन जे चुप भऽ गेलौं तँ वेचारी चलि जाएत।

मुदा ले-बलैया! ई तँ काग-भुसुण्डी जकाँ डुमि गेल। भानसकेँ अबेर होइत जाइत देख बाबीकेँ अकच्छ लगैन। जखन कि हेजाक मरीज जकाँ, सिरखरियावालीकेँ पियास बढ़ले जाइत। अचता-पचता कऽ बाबी पुछलखिन-

"कनियाँ, बेटी सबहक हालत की छह?"

बेटीक नाओं सुनिते सिरखरियावाली किछु मन पाड़ि बाजल-

"बाबी, हिनकासँ लाथ कोन। तीनूक हालत हमरासँ नीक छइ। भगवान गरदेन-कट्टी केलैन तँए ने, ने तँ की हमहीं अहिना रहितौं।"

बाबी-

"भगवान केकरो अधला थोड़े करै छथिन जे तोरा केलखुन?"

मुड़ी डोलबैत सिरखरियावाली-

"तँ केलैन नहि! हमरा पँच-पँच बरीसपर बच्चा देलैन। पाँच बरिसपर देलैन से नीके केलैन जे जहन एकटा छँटि जाइ छल तहन दोसर होइ छल। मुदा अगता तीनू बेटीए जे देलैन से गरदेन-कट्टी नै केलैन। जँ अगता तीनू बेटा रहैत, नहि तँ मेलो-पाँच करि कऽ तँ.., अखन ई भारी काज अपने करितौं की पुतोहु करितए। पचता बेटा भेल, जे अखन लिधुरिये अछि।

बाबी-

"जेठकी बेटीक सासुर केतए छह?"

"उत्तरभर। खुटौना टीशन लग। वेचारीकेँ खेत तँ कम्मे छै मुदा सभ तूर मेहनतिया अछि। एक जोड़ा बरद रखने अछि। दूटा लगहैर महींस खुट्टापर छै आ तीनटा पोंसियों लगौने अछि। अनो-पानि तेते उपजा लइए जे साल-माल लगिए जाइ छइ।"

बाबी-

"नाति-नातिन छह किने?

"हँ, तीनटा अछि। तीनू लिधुरिये अछि। तंग-तंग बेटी रहैए। तीनूक नेकरम करैत-करैत तबाह रहैए। तैपर सँ घर-गिरहस्तीक काज।"

"दोसर बेटीक सासुर केतए छह?"

"पूभर। कोसी कात।"

"कोसी कात किए केलह?"

"बाबी, जानि कऽ कहाँ केलिऐ। गाम तँ नीके रहइ मुदा केतए-सँ-ने-केतएसँ कोसी चलि एलइ। कोसियो एलै तँ अन-पानिक कोनो दुख नै होइ छइ। मुदा अपना सभ जकाँ चिष्टा नहि। गाममे महींस बेसी छै, जइसँ रस्ता-पेरा हेँक-हेँक भेल रहै छइ।

बाबी-

"छोटकी?"

"पच्छिम भर, पाही। ई हम्मर रानी बेटी छी। जेते दिन ऐठाम रहैए रंग-बिरंगक तीमन-तरकारी खुअबैए। भानस करैक एहेन लूरि दुनूमे केकरो नइ छइ। जहिना भानस-भात करैमे, तहिना बोली वाणी। गीतो-नाद जे गबैए से होइत रहतैन जे सुनिते रही, तहिना चिष्टो-चर्या आ ओढ़बो-पहिरब।"

बाबी-

"बड़ बेर उठलै। आब तहूँ जा।"

"आइ हमरा गंजन लिखल अछि। विचारने छेलौं जे माटि आनि कऽ धान काटि आनब। गरमा धान नहियेँ भेल। काल्हि फेर घरे-अँगना नीपैमे लागि जाएब।"

गामक सभ बाबीकेँ मेह बुझैत। छैथो। जँ केकरो मन खराब वा कोनो आफत-असमानी होइत तँ बाबी सभसँ पहिने आबि सेवा-टहलमे लागि जाइत। तहिना जँ कहियो बाबीक मन खराब होइत तँ गामक लोक जी-जानसँ लगि जाइत। किएक तँ सबहक मनमे ई अंदेशा बनल जे बाबीक मुइने गामक बहुत विधि-बेवहार समाप्त भऽ जाएत। ओना, बाबी पढ़ल-लिखल नहि, चिट्ठियो-पुरजी ने पढ़ल होइ छैन। जरूरतो नहि। किएक तँ सालो भरिक पाबैन आ ओकर विधि, संग-संग मांगलिक काज उपनयन, बिआह इत्यादिक विधि कण्ठस्थ छैन। कोन गीत कोन अवसरपर गौल जाएत, सभ जीपर राखल छैन। तहिना पूजाक आराधनासँ लऽ कऽ आरती धरि...।

सभ किछु रहितो बाबीक मनमे एकटा कचोट समरथाइयेसँ लगल रहि गेलैन। ओ ई जे एकटा बेटा भेला पछाइत दोसर सन्तान नइ भेलैन। अपन इच्छा रहैन जे एकटा बेटा, एकटा बेटी हुअए। मुदा बेटा तँ भेलैन मुदा बेटी नहि। जे कचोट सभकेँ कहबो करथिन। कहथिन जे सृष्टिक विकास-ले पुरुख, नारी दुनूक जरूरत अछि। नहि तँ विकास रूकि जाएत। ने एकछाहा पुरुषेसँ काज चलत आ ने एकछाहा नारीएसँ।

भरदुतियाक परात बाबी माछ-मरूआ बाड़लैन। काल्हि नहा कऽ खेती। परसू खरना करती। खरना पाबैन-ले बाबी सतरिया धानक अरबा चाउर सभ साल रखै छैथ। किएक तँ टोलक खरनासँ लऽ कऽ घाटपर हाथ उठबै धरिक काज बाबियेक जिम्मा। मुदा खरना दिन गज-पट भऽ जाइ छैन। किएक तँ कियो महिक्का धानक अरबा चाउर आ गुड़ दइ छैन तँ कियो मोटका धानक अरबा चाउर आ गुड़। अरबा तँ अरबे छी। मोटका-महिक्काक भेद नहि। तँए बाबीकेँ खीर रन्हैमे पहपैट भऽ जाइ छैन। फुटा-फुटा कऽ केना करती। तँए सबहक अरबा चाउरकेँ खाइले रखि लइ छैथ आ अपन सतरिया चाउरसँ खीर रान्हि खरना करै छैथ। खाली खरने नै करै छैथ, मनमे ईहो रहै छैन जे परिवारक हिसाबसँ एते खीर घुमा दिऐ जे घरमे चुल्हि नै चढ़इ।

आइ खष्ठी छी, आइए साँझका अर्घ हएत। तरगरे बाबी सुति उठि कऽ पाबैनक ओरियानमे लगि गेली। बहुत चीज भेबो कएल आ बहुत बाँकियो अछि। मुदा भरि दिन तँ ओरियबैक समए अछि। तैबीच डेढ़ियापर सँ 'बाबी, बाबी' सुनलैन। मुदा टाटक अढ़ रहने बोली नै चीन्हि सकली। मनमे भेलैन जे आइ पाबैन छी तँए कियो किछु पुछैले आएल हएत। ओसारेपर सँ कहलखिन-

"के छी। अँगने आउ।"

पथियामे दूटा नारियल, पान छीमी केरा, दूटा टाभ नेबो, दूटा दारीम, दूटा ओल, दूटा अडुआ, दूटा टौकुना, दूटा सजमैन, गाछ लागल एक मुट्ठी हरदी, एक मुट्ठी आदी नेने रहमतक माए आँगन पहुँच बाबीक आगूमे रखैत कहलकैन-

"बाबी, अपनो डाली-ले आ हिनको-ले नेने एलिऐन हेन।"

पथियासँ सभ वस्तु निकालि ओसारपर रखि निंगहारि-निंगहारि बाबी देखए लगली।

बच्चेमे रहमत बिमार पड़ल, ओकरे कबुला माए केने रहथिन। तँए पान सालसँ ओहो छठि पाबैन करै छैथ। जे बात बाबियोकेँ बुझल। ओना बाबी

अपने आँगनमे भुसबा, ठकुआ बनबैथ। मुदा तेकर दाम रहमतक माए दऽ दन्हि। ..पथिया लऽ रहमतक माए विदा हुअ लगली की बाबी कहलखिन-

"कनियाँ, कनी ठाढ़ रहू। रौतुका खरनाक नबेद नेने जाउ।"

घरसँ केरा पातपर खीर आनि रहमतक माएकेँ दऽ देलखिन। हाथमे नबेद अबिते रहमतक माइक मन खुशीसँ नाचि उठल। बेटाकेँ निरोग जिनगी जीबैक आशा सेहो भऽ गेलैन। मने-मन दिनकरकेँ गोड़ लागि विदा भेल। अँगनासँ निकैलते छेली कि एक पाँज कुसियारक टोनी नेने परीछन पहुँच गेल। एक टोनी बाबीकेँ आ एक टोनी रहमतक माएकेँ दैत सुरसुराएले आगू बढ़ि गेल। किएक तँ अँगनेमे सभले टोनी बना नेने छल। बाबीकेँ कुसियारक टोनी दैत रहमतक माए कहलकैन-

"हमरा आइ हाट छी बाबी, तँए कनी देरीसँ घाटपर आएब।"

बाबी-

"हम तँ छीहे कनियाँ, तइले तोरा किए चिन्ता होइ छह। दिनकर-दीनानाथ केकरो अधला करै छथिन, जे तोरा करथुन? अपना भरि निअम-निष्ठा रखैक चाही।"

रहमतक माए विदा भेली।

बाबी फुटा-फुटा सभ वस्तु रखए लगली। तखने दछिनबरिया अँगनामे हल्ला सुनलखिन। ओसारपर सँ उठि डेढ़ियापर ऐली की सुनलखिन जे खुशियाक बेटा केराक घौरसँ एकटा छीमी तोड़ि कऽ खा गेलै तइले माए चारि-पाँच खोरना मरलकै। बेटाकेँ कनैत देख खुशिया घरवालीपर बिगड़ए लगल। तेकरे हल्ला छेलइ। अपने डेढ़ियापर सँ बाबी कहलखिन-

"पाबैनक दिन छिऐ। तहन तूँ सभ भोरे-भोर हल्ला करै छह। दुधमुहाँ बच्चा जँ एक छीमी केरा तोड़ि कऽ खाइए गेलै तइले एते हल्ला किए करै छह।"

बाबीक बात सुनि दुनू बेकती खुशिया तँ चुप भेल मुदा छौड़ा हुचैक-हुचैक कनिते रहल। तही बीच सोनरेवाली आबि बाबीकेँ कहलकैन-

"बाबी, नीक की अधला तँ हिनके कहबैन किने। देखथुन जे पाइ दुआरे ने छिट्टा भेल आ ने कोनियाँ।"

सोनरेवालीक बात सुनि बाबी गुम्म भऽ गेली। कनी काल गुम्म रहि बजली-

“नइ पान तँ पानक डण्टियोसँ काज चलैए। जेकरा छै ओ सोना-चानीक कोनियाँमे हाथ उठबैए आ जेकरा नइ छै ओ तँ बाँसोक सुपतीसँ काज चलबैए। तइले मन किए ओछ केने छह। सभकेँ की सभ किछु होइते छइ। जेकरा जेते विभव होइए ओ ओते लऽ कऽ पाबैन करैए, तँए की दिनकर केकरो कुभेला करै छथिन।”

तैबीच दीपवाली पाँच बर्खक बेटाकेँ हाथ पकड़ने घिसियबैत पहुँच कहलकैन-

“बाबी, देखथुन जे ई छौड़ा तेहेन अगिलह अछि जे हाथीकेँ पटैक देलकै। ई तँ गुण भेल जे एक्केटा टाँग टुटलै, नहि तँ टुकड़ी-टुकड़ी भऽ जाइत।”

मुस्कियाइत बाबी कहलखिन-

“देखहक कनियाँ, ई सभ देखाबटी छिऐ। मनुखक मनमे श्रद्धा हेबा चाही। अइले बच्चाकेँ किए दमसबै छहक। छोड़ि दहक।”

सुरूज उगले सभ घाटपर पहुँच डाली पसारए लगली। नवयुवती सभ गीत गाबए लगली। हाथ उठौनिहारि पानिमे दुनू हाथ जोड़ि ठाढ़ भेली। एक्के तालमे ढोलिया ढोल बजबए लगल। पोखैरक चारू महार दीपसँ जगमगा गेल। परदेशियो सभ छठि पाबैन करए गाम आएल। एक गोरेकेँ नाच कबुला रहै ओ नाच करबए लगल। ताबे दूटा छौड़ा दारू पीब फटाका फोड़ए लगलै। दुनू बेमत। एक गोरेक फटाकामे कम अवाज भेलै की दोसर पिहकारी मारि देलक। अपन डुमैत प्रतिष्ठाकेँ जाइत देख ओ पिहकारी देनिहारक कालर पकड़लक। दुनू अपन-अपन परदेशिया भाषामे गारि-गरौबैल शुरू केलक। गारि-गरौबैलसँ मारि फँसि गेल। दुनू एक-दोसरकेँ खूब मारलक।

दोसर दिन भिनसुरका अर्घ। खूब अन्हरगरे सभ घाटपर पहुँचल। हाथ उठौनिहारि पानिमे पैसली। चौमुखी दीपसँ सौंसे प्रकाश पसैर गेल। सूर्योदय होइते दीपक ज्योति मलिन हुअ लगल। हाथ उठए लगल।

बच्चा-बुच्चीक संग रहमतक माए पोखैरक महारपर आँचर नेने दुनू हाथ जोड़ि बाबीपर आँखि गड़ौने। तखने मुसबा गिलासमे दूध नेने पहुँचल। किनछैरमे पैस एक ठोप, दू ठोप दूध सभ कोनियाँमे छिटए लगल।

हाथ उठा बाबी पानिसँ निकैल, साड़ी बदैल, छठिक कथा कहए लगलखिन। कथा कहि औंकरी छीटि पाबैनक विसर्जन केलैन।

अखन धरि जे ढोलिया एक तालमे ढोल बजबै छल ओ समदाउनिक ताल धेलक। नटुओ समदाउन गाबए लगल।

सभ अपन-अपन कोनियाँ समैट छिट्टामे रखि, ढोलियाकेँ एक-एकटा ठकुआ आ एक-एक छीमी केरा दऽ दऽ विदा भेल।

❍

शब्द संख्या : 2167

कामिनी

अन्हरगरे भैया काका लोटा नेनहि मैदान दिससँ आबि रस्तेपर सँ बोली देलैन...।

हमहूँ मैट्रिकक परीक्षा दइले जाइक ओरियान करैत रही। ओना हमर नीन बड़ मोट अछि मुदा खाइए बेरमे माएकेँ कहि देने रहिऐ जे कनी तरगरे उठा दिहें, नहि तँ गाड़ी छुटि जाएत। किएक तँ साढ़े पाँचे बजे गाड़ी अछि। आध घन्टा स्टेशन जैयोमे लगैए। तँए, पौने पाँच बजे घरसँ विदा हएब तखने गाड़ी पकड़ाएत। जँ ई गाड़ी छुटि जाएत तँ भरि दिन रस्तेमे रहब। निर्मलीसँ जयनगर-ले एक्केटा डायरेक्ट गाड़ी अछि। नहि तँ सभ गाड़ी सकरीमे बदलए पड़ै छइ। तहूमे बसबला सभ तेहेन चलाकी केने अछि जे एक्कोटा गाड़ीक मेले ने रहए देने छइ। जइसँ तीन-चारि घन्टा सकरीक प्लेटफार्मपर बैसू तहन दरभंगा दिससँ गाड़ी औत। तहूमे तेहेन लोक कोंचल रहत जे चढ़बो मुश्किल। तँए ई गाड़ी पकड़ब जरूरी अछि। तेतबे नहि, अपन स्कूलक विद्यार्थियो सभ वएह गाड़ी पकड़त। अनभुआर इलाका तँए असगर-दुसगर जाएबो ठीक नहि। सुनै छी जे ओइ इलाकामे उचक्को बेसी छइ। जँ कहीं कोनो समान उड़ौलक तँ आरो पहपैटमे पड़ि जाएब।..भैया कक्काक बोली सुनि चिन्हैमे देरी नइ भेल। किएक तँ हुनकर अवाज तेहेन मेही छैन जे आन केकरो बोलीसँ नै मिलैत। बोली अकानि हम दरबज्जेक कोठरीसँ कहलयैन-

“काका, आउ-आउ। हमहूँ जगले छी। पँचबजिया गाड़ी पकड़ैक अछि तँए समान सभ सेरियबै छी।”

रस्तापर सँ ससैर काका दरबज्जाक आगूमे आबि कहलैन-

“कनी हाथ मटिया लइ छी। तहन निचेनसँ बैसबो करब आ गप्पो करब।”

कहि पूब-मुहेँ कल दिस बढ़ला। हमहूँ हाँइ-हाँइ समान सेरियाबए लगलौं। कलपर सँ आबि काका ओसारक चौकी-तरमे लोटा रखि अपने चौकीपर बैसला। चौकीपर बैसते गोलगोलाक जेबीसँ बिलेती तमाकुलक पात

निकालि तोड़ैत पुछलैन-

“भाय साहैब कहाँ छथुन?”

कहलयैन

“काल्हिए बेरू-पहर नवानी गेला, से अखन धरि नै एला।”

हमर बात सुनि, भैया काका चुनौटीसँ चुन निकालि तरहत्थीपर लैत बजला-

“अखन जाइ छी, हएत तँ ओइ बेरमे फेर आएब।”

कक्काक आपस होएब हमरा नीक नै लागल। किएक तँ लगले एला आ चोट्टे घुमि जेता, तँए बैसै दुआरे बजलौं-

“अहाँ तँ काका गाममे दगबिज्जो कऽ देलिऐ। एते खर्च करि कऽ कियो कन्यादान नै केने छला। अहाँ रेकर्ड बना लेलिऐ।”

अपन प्रशंसा सुनि भैया काका मुस्कियाइत बजला-

“बौआ, जुग बदैल रहल अछि। तँए सोचलौं जे नीक पढ़ल-लिखल वरक संग बेटीक बिआह करब। हमरो बेटी तँ बड़ पढ़ल-लिखल नहियेँ अछि। मुदा रामायण-महाभारत तँ धुरझार पढ़ि लइए। चिट्ठियो-पुरजी लिखिए-पढ़ि लइए। घर-आश्रम-जोकर तँ ओहो पढ़नहि अछि। ओकरा की कोनो नोकरी-चाकरी करक छै जे स्कूल-कौलेजक सर्टिफिकेट चाही। अपना सभ गिरहस्त परिवारमे छी तँए बेटीकेँ बेसी पढ़ाएबो नीक नहि।”

“किए?”

“अपना सबहक परिवारमे गोंत-गोबरसँ लऽ कऽ थाल-कादो धरिक काज अछि। ओ तँ घरेक लोक करत। तइमे देखबहक जे जे स्त्रीगण पढ़ल-लिखल अछि ओ ओइ काजक भीड़ नै जाए चाहतह। आब तोंही कहह जे तहन गिरहस्ती चलतै केना?”

कक्काक तर्कक जवाब हमरा नै फुरल। मुदा चुप्पो रहब उचित नै बुझि कहलयैन-

“जहन जुग बदैल रहल अछि तहन तँ सभकेँ शिक्षित हएब जरूरी अछि किने? सभ पढ़त, सभ नोकरी करत, नीक तलब उठौत। जइसँ घरक उन्नैत आरो तेजीसँ हएत। तहूमे महिला आरक्षण भेने नोकरियोमे बेसी दिक्कत नहियेँ हएत।”

भैया काका-

“कहलह तँ बड़ सुन्दर बात मुदा एकटा बात कहह, जँ दुनू गोरे माने दुनू परानी एक्के स्कूल आकि ऑफिसमे नोकरी करत तखन ने एकठाम डेरा रखि परिवार चलौत। मुदा जखन पुरुख दोसर राज्य वा दोसर जिला वा दस कोस हटि कऽ नोकरी करत तखन केना चलतै। परिवार तँ पुरुख-नारीक योगसँ चलैए किने? परिवारमे अनेको ऐहेन काज अछि जे दुनूक मेलसँ हएत। मनुख तँ गाछ-बिरीछ नहि छी जे फलक आँठी केतौ फेक देबै तँ गाछ जनैम जाएत। आब तँ तहूँ कोनो बच्चा नहियेँ छह जे नै बुझबहक। मनुखक बच्चा नअ मास माने दू साए सत्तैर दिन माइक पेटमे रहैए। चारि-पाँच मासक पछाइत माइक देहमे बच्चाक चलैत केते रंगक रोग-वियाधिक प्रवेश भऽ जाइ छइ। किएक तँ माइक संग-संग बच्चोक विकास-ले अनुकूल भोजन, अराम आ सेवाक खगता होइत। तहन माए असगरे की करत? नोकरी करत आकि पालन करत? अइले तँ दोसरेक मदैतक जरूरत होइत।”

“आन-आन देशमे तँ मर्द-औरत सभ नोकरी करैए आ ठाठसँ जिनगी बितबैए।”

भैया काका-

“आन देशक माने की जेते दोसर देश अछि सबहक रीति-नीति जीवन शैली एक्के रंग छइ? नहि। एकदम नहि। किछु देशक एक रंगाहो अछि। मुदा फराक-फराक सेहो अछि। हँ, किछु एहेन अछि जैठाम मनुख सार्वजनिक सम्पैत बुझल जाइए। ओइ देशक बेवस्थो दोसर रंगक अछि। सभ तरहक सुविधा सभ-ले अछि। तैठाम-ले ठीक अछि। मुदा अपना ऐठाम, अपना देशमे तँ से नै अछि। तँए ऐठाम-ले ओते नीक नै अछि जेते अधला।”

अपनाकेँ निरुत्तर होइत देख बातकेँ विराम दइक विचार मनमे उठए लगल। तैबीच आँगनसँ माए आबि गेली। माएकेँ देखते हम अपन समान सेरियबए कोठरी दिस बढ़ि गेलौं।

भैया काकाकेँ देख माए कहलकैन-

“बौआ, अहाँ तँ गाममे सभकेँ उन्नैस कऽ देलिऐ। आइ धरि अपना गाममे कियो ने बेटी बिआहमे एते खर्च केने छला।”

अपन बहादुरी सुनि मुस्कियाइत भैया काका बजला-

“भौजी कामिनीकेँ असिरवाद दियौ जे नीक जकाँ सासुर बसए।”

माए-

“भगवान हमरो औरुदा ओकरे देथुन जे हँसी-खुशीसँ परिवार बनाबए। पाहुन-परक तँ सभ चलि गेल हेता?”

भैया काका-

“हँ भौजी। काल्हि सत्यनारायण भगवानक पूजा कऽ हमहूँ निचेन भऽ गेलौं। पाहुनमे-पाहुन आब सरहोइजेटा रहि गेल अछि। ओहो जाइले छटपटाइए। मुदा ओकरा पाँच दिन आरो रखए चाहै छी।”

माए-

“जहिना एकटा बेटीक बिआहक काजकेँ खेलौना जकाँ गुड़केलौं, तहिना सरहोजिकेँ आब गुड़कबैत रहू।”

सरहोजि दिस इशारा होइत देख काका बुझि गेलखिन। मकइक लावा जकाँ बत्तीसो दाँत छिटकबैत बजला-

“धरमागती पुछी भौजी तँ एते भारी काज, जइमे ने खाइक पलखैत होइ छल आ ने पानि पीबैक। तीन राति एक्को बेर आँखि नै मुनलौं। मुदा सरहोजिकेँ धैनवाद दिऐ जे घिड़नी जकाँ दिन-राति नचैत रहल। ओते फिरिसानी रहए तैयो कखनो मुँह मलिन नहि होइ, हरिदम मुहसँ लबे छिटकैत रहइ। तँए सोचै छी जे पाँच दिन पहुनाइ करा दिऐ।”

माए-

“बच्चा कएटा छैन?”

“एक्कोटा नहि। तीनिए सालसँ सासुर बसैए। उमेरो बीस-बाइस बर्खसँ बेसी नहियेँ हेतइ।”

“आब तँ लोककेँ बिआहे-साल बच्चा होइ छै आ अहाँ कहै छी जे तीनिए सालसँ सासुर बसैए!”

“एँह, हमरा तँ अपने पान सालक पछाइत भेल आ अहाँ तीनिए सालमे हदिआइ छी। अच्छा एकटा बात हमहीं पुछै छी, भैया ने हमरासँ साल भरि जेठ छैथ मुदा अहाँ तँ साल-छह मास छोटे हएब। अहूँ कोन-कोन गहबर आ ओझा-गुनी लग गेल रही...।”

अपनाकेँ हारैत देख बात बदलैत माए बाजल-

“सभ मिला कऽ केते खर्च भेल?”

भैया काका-

“धरमागती पुछी भौजी तँ हमहूँ कंजुसाय केलिऐ। मुदा तैयो पाँच लाखसँ ऊपरे खर्च भेल। तीन लाख तँ नगदे गनि कऽ देने छलिऐ, तैपर सँ डेढ़ लाखक समान, गहना, बरतन, लकड़ीक समान आ कपड़ा देलिऐ। पचास हजारसँ ऊपरे बरियातीक सुआगतमे लागल। तैपर सँ झूठ-फूसमे सेहो खर्च भेल।”

“एते खर्च केलिऐ तहन किए कहै छिऐ जे हमहूँ कंजुसाय केलिऐ?”

“देखियौ भौजी, हमरा दस बीघा खेत अछि। तेकर बादो केते रंगक सम्पैत अछि। गाछ-बाँस, घर-दुआर, माल-जाल इत्यादि। मुदा ऐ सभकेँ छोड़ि दइ छी। खाली खेतेक हिसाब करै छी। अपना गाममे दस हजार रूपैए कट्ठासँ लऽ कऽ साठि हजार रूपैए कट्ठाक जमीन अछि। ओना सहरगंजा जोड़बै तँ पैंतीस हजार रूपैए कट्ठा भेल। मुदा हम्मर एक्कोटा खेत ओहेन नै अछि जेकर दाम चालीस हजार रूपैए कट्ठासँ कम अछि। बेसियोक अछि। मुदा चालिसे हजारक हिसाबसँ जोड़ै छी तँ आठ लाख रूपैए बीघा भेल। दस बीघाक दाम अस्सी लाख भेल। तीन भाए-बहिन अछि। हमरा लिए तँ जेहने बेटा तेहने बेटी। अनका जकाँ तँ मनमे दुजा-भाव नै अछि। आब अहीं कहू जे कोन बेसी खर्च केलिऐ।”

बातक गंभीरताकेँ अंकैत माए बाजल-

“अहाँ विचारे बेटीक बिआहमे केते खर्च बापकेँ करैक चाहिऐ?”

भैया काका-

“देखियौ भौजी, जे बात अहाँ पुछलौं ओकर जवाब सोझ-साझ नइ अछि। किएक तँ जेते रंगक लोक आ परिवार अछि तेते रंगक जिनगियो छइ। मुदा अनका जे हौउ, हमरा मनमे ई अछि जे बेटा-बेटी एक-रंग जिनगी जीबए। मुदा समस्यो गंभीर अछि। धाँइ-दे किछु कहि देने नै हेतइ।”

“एते लोक सोचै छइ?”

“से जँ नै सोचै छै तँए ने एना होइ छइ। जँ अपने कोनो बात नै बुझिऐ तँ दोसरसँ पुछैयोमे नै हिचकिचाइक चाही।”

कामिनीक बिआह लालाबाबूक संग भेल। जेहने हृष्ट-पुष्ट शरीर

कामिनीक तेहने लालबाबूक। दुनूक रंगमे कनी अन्तर। जैठाम लालबाबू लाल गोर तैठाम कामिनी पिंडश्याम। ने अधिक कारी आ ने अधिक गोर, जइसँ दाइ-माइक अनुमान रहैन जे किछु दिनक पछाइत दुनूक रंग मिलि जाएत, माने एकरंग भऽ जाएत।

बिआहक तीन मासक पछाइत लालबाबूक बहाली कौलेजमे डिमोस्टेटरक पदपर भेल। नोकरी पबिते सासुरेक दहेजबला रूपैआसँ दरभंगामे डेढ़ कट्ठा जमीन कीनि घर बना लेलक। गामसँ शहर दिस बढ़ल। जइसँ जिनगीमे बदलाउ आबए लगलै। एक दिस बजरूआ आधुनिकता जोर पकड़ए लगलै तँ दोसर दिस ग्रामीण जिनगीक रूप टुटए लगलै। रंग-बिरंगक भोग-विलासक वस्तुसँ घर सजबए लगल। पाइक अभावे ने बुझि पड़इ। किएक तँ भैयारीमे असगरे, तँए गामक सभ सम्पैत बेच-बेच आनए आ मौज करए। मिथिलाक कन्याँ कामिनी, तँए पतिक काजमे हस्तक्षेप नै करए चाहैत। पति-पत्नीक बीच ओहने सम्बन्ध जेहेन अधिकांशक...।

शिक्षाक स्तर खसल। अजाति सभ सरस्वतीक मन्दिरमे प्रवेश केलक। जैठाम प्राइवेट ट्यूशन पढ़ाएब अधला काज बुझल जाइ छल, से प्रतिष्ठित भऽ गेल। परिणाम भेल जे ट्यूशनकेँ अधला आ पाप बुझनिहार शिक्षक स्वयं मुरूखक प्रतीक बनि गेला। अवसरक लाभ अज्ञानीकेँ बेसी भेलइ। पाइ-कौड़ीबला लालबाबू केना नहि अवसरक लाभ उठबैत।

बीसे हजारमे लालबाबू एम.एस-सी. फिजिक्सक सर्टिफिकेट कीनि लेलक। विश्वविद्यालैयोमे कानून पास केने जे नव शिक्षकक बहालीमे कौलेजक डिमोस्टेटरकेँ प्राथमिकता देल जाएत।

लालोबाबू फिजिक्सक प्रोफेसर बनि गेल। हाइ स्कूल वा सरकारी ऑफिस जकाँ प्रोफेसरकेँ ड्यूटियो नहि। सालमे कौलेज छह मास बन्ने रहैत बाँकी समैमे कहियो ड्यूटी हएत कहियो नै हएत। तैपर सँ अपन सी.एल. आ मेडिकल पछुआएले।

पाँच बर्ख बितैत-बितैत लालबाबूक माए-बाप मरि गेल। मरने लाभे। घराड़ी धरि बेच कऽ बैंकमे लालबाबू जमा कऽ लेलक। मुदा एकटा जरूर केलक, ओ ई जे घराड़ीक रूपैआसँ पाँचटा आलमारी आ जेते किताबसँ आलमारी भरत, ओते किताबो कीनि लेलक। एक तँ पाइक गरमी दोसर किताबक गरमी। ओना, अध्ययनक गरमी नहि देखलाहा गरमीसँ लालबाबूक

मति ऐहेन बदैल गेल जेहेन ठंढा पानि आ ठंढा दूधसँ चाह बनैत। अखन धरि, छह बर्खमे दूटा सन्तान सेहो भेलइ। अपन दुनियाँक बीच कामिनी नचैत तँए लालबाबूक जिनगी केना देखतए? उचितो नहि। किएक तँ हर युवाकेँ अपन जिनगीक बाटपर नजैर रखक चाहिऐ।

साँझू-पहर लालबाबू होटलसँ सीधे आबि कोठरीमे कपड़ा बदलए लगल। देहक सभ कपड़ा उतारि लेलक। ऊपर सँ लऽ कऽ भीतर धरि, शरीरमे आगिक ताव जकाँ लहकैत। भगवानक मूर्तिक आगूक जे कोठरीक दिवारक खोलियामे रखने छल, से बौल जरौने बिनु अपन कोठरीक बौल केना जरबैत, तँए पहिने ओ बौल जरौलक। पछाइत पंखाक बटन दबलक आ अपन कोठरीक बौल जरौनाइ बिसैर गेल। पियाससँ कण्ठ सुखैत। मुदा टंकीपर जाइक डेगे ने उठै। लटपटाइत। कहुना कऽ कुरसीपर बैसल आकि टेबुल तरक जगपर नजैर पड़लै। दिनुके पानि राखल। जग उठा पीब गेल। जग रखि कुरसीपर ओङैठ मने-मन अकासक चिड़ैकेँ हियासए लगल। उड़ैत मृगनयनीपर नजैर गेलइ।

..कौलेजक छात्रा मृगनयनीकेँ किछुकाल देख पत्नीपर नजैर एलइ। मनमे उठलै दू बेटीक जिनगी। मुदा फेर मनमे चहकैत मृगनयनी आबि गेलइ। निर्णए केलक जे अपना घर मृगनयनीकेँ जरूर आनब। रसे-रसे मन शान्त हुअ लगलै।

दोसर दिन कोर्ट होइत लालबाबू मृगनयनीक संग घर पहुँचल। मृगनयनीकेँ देख कामिनी घबराएल नहि। मन पड़लै दादी मुँहक सुनल खिस्सा, पुरुख-ले दूटा पत्नी होएब कोनो अधला नहि। अपन दुनियाँमे मस्त। काजक कोनो घटती नहि, कनी-मनी बढ़तीए। तँए जुआनीक आनन्द कामिनीमे।

बिआहक आठ बर्खक बाद जे लालबाबू डिमोस्टेटरसँ प्रोफेसर बनल, ओ आइ स्त्रीक खिलौना बनि गेल! एहेन-एहेन लोकक केते आश...।

आठ बजैत साँझ। बजारसँ दुनू परानी मृगनयनी आ लालबाबू मोटर साइकिलसँ उतैर कोठरीमे पहुँचल। अगल-बगलक कुरसीपर बैस ब्राण्डीक बोतल निकालि टेबुलपर रखलक।

अपना ऊपरमे बोतल देख टेबुल कहलकै-

"भाय सोझहा-सोझही बेइज्जत नै करह', हम किताब रखैबला छी, नइ कि बोतल।"

मुदा वेचाराक विचार, मिथिलाक कन्याँ जकाँ, तँए सभ किछु सहि

लइत। जहिना राज-दरबारमे मिथिलाक राजाकेँ जननिहार पण्डित सहि लैथ।

असेरी गिलाससँ दुनू बेकती एक-एक गिलास ब्राण्डी चढ़ा अपन दुनियाँमे विचरण करए लगल। प्रश्न उठल कामिनीक।

मृगनयनी-

"हम्मर एकटा विचार सुनू।"

"बाजू।"

"पत्नीक सभ सुख जँ एक पत्नीसँ पूर्ति हुअए तहन दोसर रखैक कोन खगता?"

"कोनो नहि।"

"तहन सौतीन कामिनीकेँ रखि कऽ की फेदा?

कनी गुम्म भऽ लालबाबू सोचए लगल। मन पड़लै कामिनी। निस्सकलंक, स्वच्छ, कोमल-कोमल पंखुड़ीबला गन्ध युक्त कामिनी।

दोहरा कऽ मृगनयनी बाजल-

"बस, यएह पुरुखक कलेजा छी। कामिनीकेँ रस्तासँ हटाएब हम्मर जिम्मा भेल।"

मृगनयनीक रूप देख विधातो अपन गल्तीपर सोचितैथ, नारी- पुरुखक बीच जेहेन थलथला पुल बनोलिऐ तेहेन नारी-नारीक बीच किए ने बनोलिऐ! खएर..।

मृगनयनी आ लालबाबूक बीचक बात कामिनियोँ सुनैत। जहिना मृगनयनीक करेजमे कामिनीक प्रति आगि धधकैत तहिना मृगनयनियोँक प्रति कामिनीक करेजमे आगि पजैर गेल। मुदा अपनाकेँ सम्हारैत ओ घरसँ निकैल जाएब नीक बुझलक। किएक तँ तीन जिनगीक प्रश्न आगूमे आबि ठाढ़ भऽ गेलइ। तहूमे दूटा ओहेन जिनगी जे दुनियाँमे अखन पएरे रखलक अछि। ..चुपचाप कामिनी अपन रहैबला कोठरी आबि दुनू बेटीकेँ एक टक देख, छह बर्खक रीताकेँ पएरे आ तीन बर्खक सीताकेँ कोरामे नेने घरसँ निकैल गेल। मनमे आगि लगल, तँए कोनो सुधि-बुधि नहि।

स्टेशन आबि कामिनी टेनक पता लगौलक। चारि घन्टाक पछाइत गाड़ी। दुनू बच्चाक संग कामिनी प्लेटफार्मपर गाड़ीक प्रतीक्षामे बैस रहल। मनमे

अनेको रंगक प्रश्न उठए लगलै। मुदा सभ प्रश्नकेँ मनसँ हटबैत ऐ प्रश्नपर आबि अँटकल- जे माए-बाप जन्म देलक ओ जरूर गड़ा लगौत। जँ नै लगौत तँ बड़ीटा दुनियाँ छै, बुझल जेतइ। तँए सभसँ पहिने माए-बाप लग जाएब।

डेढ़ बजे रातिमे गाड़ी पकैड़, दुनू बच्चाक संग भोरमे अपना नैहरक स्टेशन उतरल। भुखे तीनू लहालोट होइत। मुदा ऐठामक नारीमे सभसँ पैघ गुण ई होइते अछि जे धरती जकाँ सभ दुखकेँ सहि लइए। मुदा कामिनी दुनू बेटीक मुँह देख चिन्ताक समुद्रमे डुमए लगल। मनमे उठलै- की केकरोसँ भीख मांगि बच्चाकेँ खुआबी? कथमपि नहि। की बच्चाक जिनगीकेँ एतै अन्त हुअए दिऐ? अपन साध कोन! मुदा नाना ऐठाम तक पहुँचत केना?

जी-जाँति कऽ कामिनी एकटा मुरही-कचड़ीक दोकानपर पहुँच मुरही बेचैवाली बुढ़ियाकेँ कहलक-

"दीदी, हमर नैहर दुखपुर छी। ओतै जाइ छी। दुनू बच्चा रातिमे खेलक नहि, तँए भुखे लहालोट होइए। दू रूपैआक मुरही-कचड़ी उधार दिअ। काल्हि पाइ दऽ देब।"

बिनु किछु सोचनहि-विचारने बुढ़िया बाजल-

"बुच्ची, तोरा पाइ नै छह तँ की हेतइ। हमरो एहेन-एहेन चारिगो पोता-पोती अछि। हम बच्चाक भूख बुझै छिऐ।"

कहि दुनू बच्चाकेँ मुरही-कचड़ी देलक। तीनू खा कऽ विदा भेल।

कामिनीकेँ नैहर पहुँचैत-पहुँचैत सुरूज एक बाँस ऊपर चढ़ि गेल। दुखपुरक दछिनबरिया सीमानपर एकटा पाखैरक गाछ। पाखैरक गाछसँ आगू बढ़ैक साहसे ने कामिनीकेँ होइ। गाछक निच्चाँमे बैस ठोह फाड़ि कानए लगल।

दुखपुरक सैयो ढेरबा बचिया घास छिलैत बाधमे। कामिनीक कानब सुनि सभ पथिया-खुरपी नेनहि पहुँच गेल। दुनू बच्चाकेँ दू गोरे कोरामे लऽ कामिनीकेँ संग केने घरपर एली।

❍

शब्द संख्या : 2289

कथा लेखन क्रम

1. भैंटक लावा- शब्द संख्या : 3100, 2. बिसाँढ़- शब्द संख्या : 2516, 3. पीरारक फड़- शब्द संख्या : 2064, 4. अनेरुआ बेटा- शब्द संख्या : 3369, 5. दूटा पाइ- शब्द संख्या : 3294, 6. बोनिहारिन मरनी- शब्द संख्या : 3412, 7. हारि◌-जीत- शब्द संख्या : 2373, 8. ठेलाबला- शब्द संख्या : 2572, 9. जीविका- शब्द संख्या : 3655, 10. रिक्साबला- शब्द संख्या : 3963, 11. चुनवाली- शब्द संख्या : 2452,

12. डीहक बटबारा- शब्द संख्या : 4789, 13. भैयारी- शब्द संख्या : 4026, 14. बहिन- शब्द संख्या : 2688,15. घरदेखिया- शब्द संख्या : 4021, 16. पछताबा- शब्द संख्या : 2663, 17. डाक्टर हेमन्त- शब्द संख्या : 4407, 18. बाबी- शब्द संख्या : 2167 19. कामिनी- शब्द संख्या : 2289, 20. स्रष्टाक समग्र रचना- शब्द संख्या : 137, 21. प्रतिभा- शब्द संख्या : 154, 22. मर्म- शब्द संख्या : 142, 23. अधखरूआ- शब्द संख्या : 255, 24. समैयक बेरबादी- शब्द संख्या : 213, 25. पहिने तप तखनि ढलिहेँ- शब्द संख्या : 084, 26. खलीफा उमरक सिनेह- शब्द संख्या : 165, 27. जखने जागी तखने परात- शब्द संख्या : 103, 28. अस्तित्वक समाप्ति- शब्द संख्या : 218, 29. खजाना- शब्द संख्या : 388, 30. उग्रघारा- शब्द संख्या : 328, 31 बेवहारिक- शब्द संख्या : 218, 32. समर्पण- शब्द संख्या : 149, 33 उत्थान-पतन- शब्द संख्या : 138, 34. देवता- शब्द संख्या : 232, 35. पाप आ पुण्य- शब्द संख्या : 218, 36. परख- शब्द संख्या : 129, 37. आलसी- शब्द संख्या : 136, 38. प्रेम- शब्द संख्या : 293, 39. हैरियट स्टो- शब्द संख्या : 137, 40. बुझैक ढंग- शब्द संख्या : 142, 41. श्रमिकक इज्जत- शब्द संख्या : 093, 42. वंश- शब्द संख्या : 074, 43. तियाग- शब्द संख्या : 145, 44. सद्विचार- शब्द संख्या : 184, 45. साहस- शब्द संख्या : 103, 46. बरदास- शब्द संख्या : 133, 47. भूल- शब्द संख्या : 139, 48. धैर्य- शब्द संख्या : 099, 49. मनुखक मूल्य- शब्द संख्या : 099, 50. मदति नै चाही- शब्द संख्या : 209, 51. मेहनतिक दरद- शब्द संख्या : 281, 52. मैक्सिम गोर्की- शब्द संख्या : 146, 53. मूलधन- शब्द संख्या : 174, 54. कपटी मित- शब्द संख्या : 281, 55. भीख- शब्द संख्या : 118, 56. भगवान- शब्द संख्या : 098, 57. एकाग्रचित- शब्द संख्या : 261, 58. सीखैक जिज्ञासा- शब्द संख्या : 101, 59. अनुभव- शब्द संख्या : 092, 60. आसिरवादक विरोध- शब्द संख्या : 088, 61. धर्मक असल रूप- शब्द संख्या :

197, 62. सौन्दर्य- शब्द संख्या : 138, 63. स्तब्ध- शब्द संख्या : 257, 64. एकता- शब्द संख्या : 236, 65. विधवा बिआह- शब्द संख्या : 176, 66. देश सेवाक व्रत- शब्द संख्या : 134, 67. आत्मबल- 1- शब्द संख्या : 110, 68. स्वाभिमान- शब्द संख्या : 121, 69. कलंक- शब्द संख्या : 429, 70. बुलकी- शब्द संख्या : 211, 71. भद्रपुरुष- शब्द संख्या : 173, 72. झूठ नै बाजब- शब्द संख्या : 103, 73. आदर्श माए- शब्द संख्या : 097, 74. नारी सम्मान- शब्द संख्या : 100, 75. अनुशासन- शब्द संख्या : 190, 76. सादा जिनगी- शब्द संख्या : 127, 77. विचारक उदय- शब्द संख्या : 072, 78. पुष्ट इकाइसँ समर्थराष्ट्र बनैत- शब्द संख्या : 102, 79. डर नै करी- शब्द संख्या : 119, 80. आसिरवाद उलैट गेल- शब्द संख्या : 223, 81. रत्न गमेवाक दुख- शब्द संख्या : 226, 82. निशाँ- शब्द संख्या : 194, 83. सामना- शब्द संख्या : 124, 84. शिष्टाचार- शब्द संख्या : 171, 85. ठक- शब्द संख्या : 115, 86. पत्नीक अधिकार- शब्द संख्या : 128, 87. शिनीची सिनेह- शब्द संख्या : 211, 88. सिखबैक उपय- शब्द संख्या : 171, 89. कर्तव्यपरायन सुगा- शब्द संख्या : 171, 90. तस्वीर- शब्द संख्या : 134, 91. मितक प्रयोजन- शब्द संख्या : 359, 92. स्वार्थपूर्ण विचार- शब्द संख्या : 121, 93. संगीक महत- शब्द संख्या : 130, 94. उपहास- शब्द संख्या : 196, 95. महादान- शब्द संख्या : 176, 96. भाग्यवाद- शब्द संख्या : 171, 97. सद्गुति- शब्द संख्या : 150, 98. आश्रम नहि सोभाव बदली- शब्द संख्या : 281, 99. पुरुषार्थ- शब्द संख्या : 255, 100. नैष्ठिक सुधन्वा- शब्द संख्या : 274, 101. सद्गृहस्त- शब्द संख्या : 195, 102. सद्भाव- शब्द संख्या : 134, 103. आलस्य वनाम पिशाच- शब्द संख्या : 302, 104. स्वर्ग आ नर्क- शब्द संख्या : 265, 105. यथार्थक बोध- शब्द संख्या : 115, 106. विद्वताक मद- शब्द संख्या : 165, 107. अनन्त- शब्द संख्या : 128, 108. हँसैत लहास- शब्द संख्या : 184, 109. अनगढ़ चेतना- शब्द संख्या : 162, 110. सत्य विद्या- शब्द संख्या : 108, 111. समता- शब्द संख्या : 165, 112. जेते चोट तेते सक्कत- शब्द संख्या : 116, 113. परिष्कार- शब्द संख्या : 198, 114. कथनी नै करनी- शब्द संख्या : 176, 115. शालीनता- शब्द संख्या : 157, 116. मजूरी- शब्द संख्या : 140, 117. जीवन यात्रा- शब्द संख्या : 145, 118. ज्योति- शब्द संख्या : 081, 119. पवनक विवेक- शब्द संख्या : 180, 120. आत्मबल-2- शब्द संख्या : 105, 121. खुदीराम बोस- शब्द संख्या : 172, 122. शिष्यकेँ शिक्षेटा नै परीक्षो- शब्द संख्या : 187, 123. लौह पुरुष- शब्द संख्या : 124, 124. जंग लगल- शब्द संख्या : 150, 125. जीवकक परीछा- शब्द संख्या : 117, 126. तप- शब्द संख्या : 162, 127. उल्टा अर्थ- शब्द संख्या : 203, 128. जाति नहि पानि- शब्द संख्या : 142, 129. ऊँच-नीच- शब्द संख्या : 206, 130. पागलखाना- शब्द संख्या : 223, 131. दोहरी मारि- शब्द संख्या :

1368, 132. केना जीब? - शब्द संख्या : 1039, 133. नवान- शब्द संख्या : 2306, 134. तिलासंक्रान्तिक लाइ- शब्द संख्या : 2056, 135. भाइक सिनेह- शब्द संख्या : 1201, 136. प्रेमी- शब्द संख्या : 2526, 137. बपौती सम्पैत- शब्द संख्या : 2350, 138. डंका- शब्द संख्या : 2401, 139. संगी- शब्द संख्या : 1849, 140. ठकहरबा- शब्द संख्या : 2349, 141. अतहतह- शब्द संख्या : 2486, 142. अर्द्धांगिनी- शब्द संख्या : 3057, 143. ऑपरेशन- शब्द संख्या : 1616, 144. धर्मनाथ- शब्द संख्या : 1968, 145. सरोजनी- शब्द संख्या : 1810, 146. सुभद्रा- शब्द संख्या : 1922, 147. सोनमाकाका- शब्द संख्या : 1572, 148. दोती बिआह- शब्द संख्या : 1822, 149. पड़ाइन- शब्द संख्या : 1970, 150. केतौ नै- शब्द संख्या : 1203, 151. बिहरन- शब्द संख्या : 3300, 152. मायराम- शब्द संख्या : 2095, 153. गोहिक शिकार- शब्द संख्या : 2152, 154. मातृभूमि- शब्द संख्या : 1048, 155. भबडाह- शब्द संख्या : 2105, 156. परिवारक प्रतिष्ठा- शब्द संख्या : 1974, 157. फॉगु- शब्द संख्या : 2134, 158. लफ साग- शब्द संख्या : 1203, 159. तिलकोरक तरुआ- शब्द संख्या : 1835, 160. एकोटा ने- शब्द संख्या : 1149, 161. धोतीक मान- शब्द संख्या : 480, 162. साझी- शब्द संख्या : 998, 163. सतभैंया पोखैर- शब्द संख्या : 2999, 164. न्याय चाही- शब्द संख्या : 1311, 165. पनियाहा दूध- शब्द संख्या : 2152, 166. कर्ज- शब्द संख्या : 2949, 167. परदेशी बेटी- शब्द संख्या : 2515, 168. मान- शब्द संख्या : 648, 169. मनोरथ- शब्द संख्या : 1161, 170. कियो ने- शब्द संख्या : 3780, 171. सूदि भरना- शब्द संख्या : 922, 172. जन्मतिथि- शब्द संख्या : 2370, 173. इमानदार घूसखोर- शब्द संख्या : 2267, 174. पटियाबला- शब्द संख्या : 2395, 175. सनेस- शब्द संख्या : 1284, 176. उलबा चाउर- शब्द संख्या : 2630, 177. बलजोर- शब्द संख्या : 2410, 178. बेटी हम अपराधी छी- शब्द संख्या : 3341, 179. बगबाइर- शब्द संख्या : 1900, 180. मुइलो बिसेबैन- शब्द संख्या : 4288, 181. सड़ल दारीम- शब्द संख्या : 2577, 182. चुप्पा पाल- शब्द संख्या : 2572, 183. मइटुग्गर- शब्द संख्या : 9811, 184. शम्भुदास- शब्द संख्या : 9674, 185. फाँसी- शब्द संख्या : 10487, 186. कचोट- शब्द संख्या : 315, 187. काँच सूत- शब्द संख्या : 384, 188. बुधनी दादी- शब्द संख्या : 267, 189. खिलतोड़- शब्द संख्या : 395, 190. मुँह-कान- शब्द संख्या : 213, 191. अनदिना- शब्द संख्या : 307, 192. अपन काज- शब्द संख्या : 367, 193. दूरी- शब्द संख्या : 265, 194. पुरनी भौजी- शब्द संख्या : 117, 195. छुटि गेल- शब्द संख्या : 111, 196. काल्हि दिन- शब्द संख्या : 151, 197. अप्पन हारि- शब्द संख्या : 286, 198. कनफुसकी- शब्द संख्या : 132, 199. मुँहक बात मुहेँमे- शब्द संख्या : 134, 200. कनीटा बात- शब्द संख्या : 101, 201. गति-

गुद्दा- शब्द संख्या : 250, 202. बिसवास- शब्द संख्या : 316, 203. कचहरिया भाय- शब्द संख्या : 270, 204. गोहाइर- शब्द संख्या : 432, 205. शिवजीक डाक-बाक्- शब्द संख्या : 070, 206. सोग- शब्द संख्या : 341, 207. पनचैती- शब्द संख्या : 195, 208. कनमन- शब्द संख्या : 323, 209. अजाति- शब्द संख्या : 090, 210. पटोर- शब्द संख्या : 409, 211. फुसियाह- शब्द संख्या : 311, 212. गति-मुक्ति- शब्द संख्या : 238, 213. चौकीदारी- शब्द संख्या : 442, 214. झगड़ाउ-झोटैला- शब्द संख्या : 243, 215. घबाह ट्यूशन- शब्द संख्या : 244, 216. दादी-माँ- शब्द संख्या : 411, 217. पटोटन- शब्द संख्या : 350, 218. मुसाइ पण्डित- शब्द संख्या : 568, 219. भरमे-सरम- शब्द संख्या : 233, 220. देखल दिन- शब्द संख्या : 441, 221. फज्झैत- शब्द संख्या : 401, 222. अकास दीप- शब्द संख्या : 235, 223. बुधि-बधिया- शब्द संख्या : 267, 224. पहाड़क बेथा- शब्द संख्या : 216, 225. उमकी- शब्द संख्या : 321, 226. बजन्ता-बुझन्ता- शब्द संख्या : 147, 227. चर्मरोग- शब्द संख्या : 571, 228. शंका- शब्द संख्या : 325, 229. ओसार- शब्द संख्या : 210, 230. छोटका काका- शब्द संख्या : 398, 231. सीमा-सरहद- शब्द संख्या : 200, 232. रमैत जोगी बोहैत पानि- शब्द संख्या : 253, 233. गंजन- शब्द संख्या : 178, 234. सजए- शब्द संख्या : 090, 235. घटक बाबा- शब्द संख्या : 335, 236. आने जकाँ- शब्द संख्या : 046, 237. दान-दछिना- शब्द संख्या : 151, 238. उड़हैड़- शब्द संख्या : 504, 239. मत्हानि- शब्द संख्या : 258, 240. मेकचो- शब्द संख्या : 216, 241. झुटका विदाइ- शब्द संख्या : 359, 242. मुँहक खतियान- शब्द संख्या : 278, 243. कोसलिया- शब्द संख्या : 234, 244. हूसि गेल- शब्द संख्या : 204, 245. पोखला कटहर- शब्द संख्या : 154, 246. सरही सौबजा- शब्द संख्या : 269, 247. तेरहो करम- शब्द संख्या : 322, 248. डुमैत जिनगी- शब्द संख्या : 286, 249. चोर-सिपाही- शब्द संख्या : 202, 250. दूधबला- शब्द संख्या : 275, 251. टाइपिस्ट- शब्द संख्या : 263, 252. समदाही- शब्द संख्या : 295, 253. बुढ़िया दादी- शब्द संख्या : 332, 254. एक धाप जमीन- शब्द संख्या : 2505, 255. ओझरी- शब्द संख्या : 1970, 256. मुसहैन- शब्द संख्या : 2742, 257. केलवाड़ी- शब्द संख्या : 2685, 258. स्वरोजगार- शब्द संख्या : 2388, 259. घूर- शब्द संख्या : 2812, 260. कनियाँ-पुतरा- शब्द संख्या : 2335, 261. वारंट- शब्द संख्या : 1638, 262. गामक मुँह फेर देखब- शब्द संख्या : 3073, 263. पेटगनाह- शब्द संख्या : 236, 264. जनक हाथे खेती- शब्द संख्या : 238,

265. पाइक मोल- शब्द संख्या : 2412, तिथि : 22 दिसम्बर 2013

266. चोरुक्का झगड़ा- शब्द संख्या : 538, तिथि : 24 दिसम्बर 2013

267. अपसोच- शब्द संख्या : 548, तिथि : 26 दिसम्बर 2013

268. पतझाड़- शब्द संख्या : 2587, तिथि : 31 दिसम्बर 2013

269. झीसीक मजा- शब्द संख्या : 453, तिथि : 1 जनवरी 2014

270. मति-गति- शब्द संख्या : 1807, तिथि : 07 जनवरी 2014

271. अपन सन मुँह- शब्द संख्या : 5696, तिथि : 25 जनवरी 2014

272. रिजल्ट- शब्द संख्या : 2343, तिथि : 16 जनवरी 2014

273. सुमति- शब्द संख्या : 3072, तिथि : 30 जनवरी 2014

274. फेर पुछबैन- शब्द संख्या : 346, तिथि : 31 जनवरी 2014

275. माघक घूर- शब्द संख्या : 1683, तिथि : 06 फरवरी 2014

276. खर्च- शब्द संख्या : 330, तिथि : 07 फरवरी 2014

277. अखरा-दोखरा- शब्द संख्या : 342, तिथि : 10 फरवरी 2014

278. पेटगनाह- शब्द संख्या : 593, तिथि : 14 फरवरी 2014

279. बड़की माता- शब्द संख्या : 1224, तिथि : 18 फरवरी 2014

280. धरती-अकास- शब्द संख्या : 184 , तिथि : 19 फरवरी 2014

281. बकठाँइ- शब्द संख्या : 883, तिथि : 24 फरवरी 2014

282. चैन-बेचैन- शब्द संख्या : 936, तिथि : 09 मार्च 2014

283. हथियाएल खुरपी- शब्द संख्या : 645 , तिथि : 11 मार्च 2014

284. अलपुरिया बरी- शब्द संख्या : 287, तिथि : 12 मार्च 2014

285. नीक बोल- शब्द संख्या : 565, तिथि : 13 मार्च 2014

286. सुआद- शब्द संख्या : 624, तिथि : 14 मार्च 2014

287. गंगा नहेलौं- शब्द संख्या : 690, तिथि : 19 मार्च 2014

288. भौंटक गहमी- शब्द संख्या : 508, तिथि : 24 मार्च 2014

289. भँसैत नाह- शब्द संख्या : 597, तिथि : 26 मार्च 2014

290. पान पराग- शब्द संख्या : 1692, तिथि : 29 मार्च 2014

291. सिरमा- शब्द संख्या : 760, तिथि : 31 मार्च 2014

292. नौमीक हकार- शब्द संख्या : 1119, तिथि : 03 अप्रैल 2014

293. फोंक मकड़- शब्द संख्या : 1744, तिथि : 10 अप्रैल 2014

294. केते लग केते दूर- शब्द संख्या : 1252, तिथि : 14 अप्रैल 2014

295. अभिनव अनुभव- शब्द संख्या : 326, तिथि : 16 अप्रैल 2014
296. खोंटकर्मा- शब्द संख्या : 1184, तिथि : 19 अप्रैल 2014
297. किछु ने- शब्द संख्या : 503, तिथि : 22 अप्रैल 2014
298. झकास- शब्द संख्या : 1589, तिथि : 26 अप्रैल 2014
299. अप्पन-बीरान- शब्द संख्या : 2919, तिथि : 01 मई 2014
300. सजमनियाँ आम- शब्द संख्या : 611, तिथि : 04 मई 2014
301. अर्जुन रोग- शब्द संख्या : 1003, तिथि : 7 मई 2014
302. गरदैन कट्टा बेटा- शब्द संख्या : 575, तिथि : 10 मई 2014
303. नैहराक धाड़- शब्द संख्या : 885, तिथि : 14 मई 2014
304. अवाक- शब्द संख्या : 1041, तिथि : 17 मई 2014
305. पोखरिक सैरात- शब्द संख्या : 923, तिथि : 20 मई 2014
306. दनियाँ डाबा- शब्द संख्या : 409, तिथि : 22 मई 2014
307. धरम काँट- शब्द संख्या : 395, तिथि : 23 मई 2014
308. पल भरि- शब्द संख्या : 1116, तिथि : 24 मई 2014
309. किरदानी- शब्द संख्या : 5309, तिथि : 14 जुन 2014
310. सगहा- शब्द संख्या : 2860, तिथि : 22 जुन 2014
311. अकाल- शब्द संख्या : 1238, तिथि : 24 जुन 2014
312. उझट बात- शब्द संख्या : 1152, तिथि : 26 जुन 2014
313. कर्जखौक- शब्द संख्या : 1175, तिथि : 2 जुलाई 2014
314. उनटन- शब्द संख्या : 1187, तिथि : 6 जुलाई 2014
315. रेहना चाची- शब्द संख्या : 1307, तिथि : 9 जुलाई 2014
316. बुधनी दादी- शब्द संख्या : 1256, तिथि : 11 जुलाई 2014
317. अउतरित प्रश्न- शब्द संख्या : 1229, तिथि : 14 जुलाई 2014
318. हारि- शब्द संख्या : 1240, तिथि : 16 जुलाई 2014
319. सोनाक सुइत- शब्द संख्या : 1135, तिथि : 17 जुलाई 2014
320. मरूभूमि- शब्द संख्या : 1214, तिथि : 20 जुलाई 2014
321. असगरे- शब्द संख्या : 1557, तिथि : 24 जुलाई 2014
322. पुरनी नानी- शब्द संख्या : 1304, तिथि : 27 जुलाई 2014

323. कटा-कटी- शब्द संख्या : 1140, तिथि : 30 जुलाई 2014
324. केते लग केते दूर- शब्द संख्या : 1206, तिथि : 3 अगस्त 2014
325. गलती अपने भेल- शब्द संख्या :3386, तिथि : 06 अगस्त 2014
326. चोरक चोरबती- शब्द संख्या : 884, तिथि : 6 अगस्त 2014
327. घर तोड़ि देलिऐ- शब्द संख्या : 1527, तिथि : 10 अगस्त 2014
328. सजल स्मृति- शब्द संख्या : 2363, तिथि : 14 अगस्त 2014
329. सनेस- शब्द संख्या : 2654, तिथि : 16 अगस्त 2014
330. सए कच्छे- शब्द संख्या : 488, तिथि : 19 अगस्त 2014
331. एक मुठी घास- शब्द संख्या : 411, तिथि : 21 अगस्त 2014
332. करिछौंह मुँह- शब्द संख्या : 318, तिथि : 24 अगस्त 2014
333. पुरस्कार- शब्द संख्या : 2414, तिथि : 24 अगस्त 2014
334. गावीस मोइस- शब्द संख्या : 687, तिथि : 29 अगस्त 2014
335. मनकमना- शब्द संख्या : 6110, तिथि : 19 सितम्बर 2014
336. घरवास- शब्द संख्या : 4879, तिथि : 26 सितम्बर 2014
337. समधीन- शब्द संख्या : 6098, तिथि : 04 अक्टुबर 2014
338. चापाकलक पाइप- शब्द संख्या : 1616, तिथि : 7 अक्टुबर 2014
339. कलम हानि कऽ- शब्द संख्या : 2226, तिथि : 10 अक्टुबर 2014
340. लतियाएल जिनगी- शब्द संख्या : 1184, तिथि : 14 अक्टुबर 2014
341. गामक शकल-सूरत- शब्द संख्या : 2596, तिथि : 20 अक्टुबर 2014
342. जितिया पाबैन- शब्द संख्या : 3706, तिथि : 24 अक्टुबर 2014
343. सुखाएल सूरत- शब्द संख्या : 3690, तिथि : 30 अक्टुबर 2014
344. भैयारी हक- शब्द संख्या : 3131, तिथि : 4 नवम्बर 2014
345. ठकुआएल भुसवा- शब्द संख्या : 3335, तिथि : 13 नवम्बर 2014
346. खुदियाएल- शब्द संख्या : 2887, तिथि : 17 नवम्बर 2014
347. खटहा आम- शब्द संख्या : 3515, तिथि : 22 नवम्बर 2014
348. ढकरपेंच- शब्द संख्या : 3759, तिथि : 30 नवम्बर 2014
349. असहाज- शब्द संख्या : 2865, तिथि : 04 दिसम्बर 2014
350. समरथाइक भूत- शब्द संख्या : 3853, तिथि : 07 दिसम्बर 2014

351. विदाइ- शब्द संख्या : 5131, तिथि : 17 दिसम्बर 2014
352. खलओदार- शब्द संख्या : 735, तिथि : 19 दिसम्बर 2014
353. मनुखदेवा- शब्द संख्या : 1027, तिथि : 22 दिसम्बर 2014
354. उमेद- शब्द संख्या : 3643, तिथि : 31 दिसम्बर 2014
355. गलगर भैंस- शब्द संख्या : 3392, तिथि : 4 जनवरी 2015
356. जाड़ फाटि गेल- शब्द संख्या : 3328, तिथि : 9 जनवरी 2015
357. सुरता- शब्द संख्या : 3304, तिथि : 15 जनवरी 2015
358. असुध मन- शब्द संख्या : 2353, तिथि : 19 जनवरी 2015
359. धरमूदासक अखड़ाहा- शब्द संख्या : 1410, तिथि : 21 जनवरी 2015
360. ठोररंगू- शब्द संख्या : 1531, तिथि : 23 जनवरी 2015
361. लगबे ने कएल- शब्द संख्या : 1449, तिथि : 25 जनवरी 2015
362. उकडू समय- शब्द संख्या : 1467, तिथि : 27 जनवरी 2015
363. चास-बास दुनू गेल- शब्द संख्या : 1615, तिथि : 29 जनवरी 2015
364. चौरचनक दही- शब्द संख्या : 2095, तिथि : 31 जनवरी 2015
365. अपन मन अपन धन- शब्द संख्या : 1532, तिथि : 3 फरवरी 2015
366. टुटली मरैया- शब्द संख्या : 1951, तिथि : 7 फरवरी 2015
367. हकार- तिथि : 11 फरवरी 2015, शब्द संख्या : 1911
368. दहेजुआ गाए- शब्द संख्या : 1908, तिथि : 15 फरवरी 2015
369. मेटाइत जिनगी- शब्द संख्या : 2129, तिथि : 20 फरवरी 2015
370. धुर बुड़ि तोरा बजै ने अबै छौ!- शब्द संख्या:1996, तिथि : 23 फरवरी 2015
371. लेहाज- शब्द संख्या : 1906, तिथि : 26 फरवरी 2015
372. विचार हेरा गेल- शब्द संख्या : 1917, तिथि : 1 मार्च 2015
373. ओ दिन- शब्द संख्या : 1782, तिथि : 4 मार्च 2015
374. उरीन- शब्द संख्या : 3235, तिथि : 8 मार्च 2015
375. नहरकन्हा- शब्द संख्या : 1209, तिथि : 11 मार्च 2015
376. बटखौक- शब्द संख्या : 1272, तिथि : 14 मार्च 2015
377. पसेनाक धरम- शब्द संख्या : 1263, तिथि : 16 मार्च 2015
378. जेठुआ गरदा- शब्द संख्या : 1103, तिथि : 18 मार्च 2015

379. हँसीएमे उड़ि गेलौं- शब्द संख्या : 1243, तिथि : 20 मार्च 2015
380. बुड़िबकहा बुड़िबक बनौलक- शब्द संख्या : 1234, तिथि : 23 मार्च 2015
381. हमर बाइनिक विचार- शब्द संख्या : 1207, तिथि : 26 मार्च 2015
382. नोकरिहारा- शब्द संख्या : 1146, तिथि : 26 मार्च 2015
383. घसवाहि- शब्द संख्या : 1213, तिथि : 28 मार्च 2015
384. तेतर भाइक कविता- शब्द संख्या : 1319, तिथि : 1 अप्रैल 2015
385. छूआ- शब्द संख्या : 1223, तिथि : 6 अप्रैल 2015
386. दोसराइत- शब्द संख्या : 1270, तिथि : 9 अप्रैल 2015
387. लछनमान- शब्द संख्या : 1173, तिथि : 13 अप्रैल 2015
388. हमर कोन दोख- शब्द संख्या : 1527, तिथि : 17 अप्रैल 2015
389. मौसी- शब्द संख्या : 1393, तिथि : 21 अप्रैल 2015
390. नटकिया गति- शब्द संख्या : 1313 24 अप्रैल 2015
391. खाए चाहैए- शब्द संख्या : 1223, तिथि : 27 अप्रैल 2015
392. मधुमाछी- शब्द संख्या : 1892, तिथि : 07 मई 2015
393. दनगर घास- शब्द संख्या : 2775, तिथि : 13 मई 2015
394. सझिया खेती- शब्द संख्या : 3135, तिथि : 23 मई 2015
395. मुफतिया माल- शब्द संख्या : 3231, तिथि : 29 मई 2015
396. मथाहाथ- शब्द संख्या : 2923, तिथि : 02 जून 2015
397. पहपैट- शब्द संख्या : 1369, तिथि : 05 जून 2015
398. इजोरिया राति- शब्द संख्या : 1512, तिथि : 07 जून 2015
399. तीन जुगिया भाय- शब्द संख्या : 2010, तिथि : 12 जून 2015
400. अँगनेमे हेरा गेलौं- शब्द संख्या : 605, तिथि : 14 जून 2015
401. डकरा हाल- शब्द संख्या : 2529, तिथि : 17 जून 2015
402. जेतए जे हौउ- शब्द संख्या : 2062, तिथि : 21 जून 2015
403. गठूलाक गारि- शब्द संख्या : 1532, तिथि : 25 जून 2015
404. कनी हमरो सुनू- शब्द संख्या : 1983, तिथि : 29 जून 2015
405. गामक बान्ह- शब्द संख्या : 2437, तिथि : 03 जुलाई 2015
406. गुड़ा खुद्दीक रोटी- शब्द संख्या : 2443, तिथि : 08 जुलाई 2015

407. सीरक गाछ- शब्द संख्या : 3071, तिथि : 13 जुलाई 2015
408. हरदीक हरदा- शब्द संख्या : 2924, तिथि : 19 जुलाई 2015
409. जाम- शब्द संख्या : 3355, तिथि : 29 जुलाई 2015
410. गण्डा- शब्द संख्या : 2304, तिथि : 5 अगस्त 2015
411. हाथी आ मूस- शब्द संख्या : 3016, तिथि : 11 अगस्त 2015
412. मुसरी आ घोड़ा- शब्द संख्या : 3625, तिथि : 17 अगस्त 2015
413. फलहार- शब्द संख्या : 2350, तिथि : 25 अगस्त 2015
414. भोरक झगड़ा- शब्द संख्या : 2697, तिथि : 31 अगस्त 2015
415. क्रियाशील- शब्द संख्या : 3395, तिथि : 13 सितम्बर 2015
416. आइ एम शॉरी- शब्द संख्या : 2927, तिथि : 23 सितम्बर 2015
417. ओऽ होऽ होऽ हूसि गेल- शब्द संख्या : 1025, तिथि : 29 सितम्बर 2015
418. मीनी भ्रष्टाचार- शब्द संख्या : 825, तिथि : 5 अक्टूबर 2015
419. गजपट खेती- शब्द संख्या : 1171, तिथि : 8 अक्टूबर 2015
420. समुद्री विद्या- शब्द संख्या : 787, तिथि : 11 अक्टूबर 2015
421. राकशे रहि गेलौं- शब्द संख्या : 959, तिथि : 12 अक्टूबर 2015
422. निनिया देवीक आराधना- शब्द संख्या : 679, तिथि : 13 अक्टूबर 2015
423. बताहे बताह बनौलक- शब्द संख्या : 574, तिथि : 15 अक्टूबर 2015
424. धोखा- शब्द संख्या : 1172, तिथि : 17 अक्टूबर 2015
425. खसैत गाछ- शब्द संख्या : 2234, तिथि : 22 अक्टूबर 2015
426. वैष्णवी भगवती- शब्द संख्या : 2099, तिथि : 01 नवम्वर 2015
427. प्रिगर शत्रु- शब्द संख्या : 1087, तिथि : 26 दिसम्बर 2015
428. एगच्छा आमक गाछ- शब्द संख्या : 1172, तिथि : 31 दिसम्बर 2015
429. माघ नहाइले जाएब- शब्द संख्या : 2616, तिथि : 4 जनवरी 2016
430. एक घोंट पानि- शब्द संख्या : 2516, तिथि : 10 जनवरी 2016
431. एते दिन अपना-ले आब अनका-ले- शब्द : 3371, तिथि : 16 जनवरी 2016
432. माइक वचन- शब्द संख्या : 2999, तिथि : 21 जनवरी 2016
433. पान- शब्द संख्या : 3115, तिथि : 26 जनवरी 2016
434. आजुक जिनगीक आइ परीछा- शब्द : 1676, तिथि : 01 फरवरी 2016

435. शुभचिन्तक- शब्द संख्या : 3947, तिथि : 08 फरवरी 2016
436. करिछौन लाली- शब्द संख्या : 3000, तिथि : 13 फरवरी 2016
437. मोहरा- शब्द संख्या : 1223, तिथि : 15 फरवरी 2016
438. अपन पुरखाक डीह- शब्द संख्या : 1187, तिथि : 17 फरवरी 2016
439. जेना हाथी रही- शब्द संख्या : 1245, तिथि : 20 फरवरी 2016
440. कठफल- शब्द संख्या : 1294, तिथि : 22 फरवरी 2016
441. गामे उपैट गेल- शब्द संख्या : 1680, तिथि : 25 फरवरी 2016
442. झूठे- शब्द संख्या : 1969, तिथि : 29 फरवरी 2016
443. लाही- शब्द संख्या : 2335, तिथि : 3 मार्च 2016
444. परतीहा खढ़- शब्द संख्या : 1667, तिथि : 6 मार्च 2016
445. उजगी- शब्द संख्या : 1079, तिथि : 9 मार्च 2016
446. हाथक जिनगी- शब्द संख्या : 983, तिथि : 14 मार्च 2016
447. गाछपर सँ खसला- शब्द संख्या : 2000, तिथि : 20 मार्च 2016
448. केतौ ने रहलौं- शब्द संख्या : 2103, तिथि : 25 मार्च 2016
449. अपने केलहा- शब्द संख्या : 2314, तिथि : 31 मार्च 2016
450. बत्तु- शब्द संख्या : 2244, तिथि : 10 अप्रैल 2016
451. कछमछी- शब्द संख्या : 2322, तिथि : 15 अप्रैल 2016
452. गैत-वीध- शब्द संख्या : 2424, तिथि : 21 अप्रैल 2016
453. दियरबा-भैंसुर- शब्द संख्या : 2089, तिथि : 29 अप्रैल 2016
454. एक दिन- शब्द संख्या : 2063, तिथि : 5 मई 2016
455. दुधियाएल बरखा- शब्द संख्या : 2059, तिथि : 11 मई 2016
456. गलफूलू- शब्द संख्या : 2117, तिथि : 14 मई 2016
457. बिटगरहा- शब्द संख्या : 1992, तिथि : 19 मई 2016
458. आब नइ आगि लगैए?- शब्द संख्या : 1962, तिथि : 23 मई 2016
459. कटौज- शब्द संख्या : 1977, तिथि : 28 मई 2016
460. बाल बोध- शब्द संख्या : 2621, तिथि : 2 जून 2016
461. डभियाएल गाम- शब्द संख्या : 2483, तिथि : 6 जून 2016
462. एकबोलिया दादी- शब्द संख्या : 2189, तिथि : 11 जून 2016

463. मरियाएल मन- शब्द संख्या : 1921, तिथि : 17 जून 2016
464. त्राहि-कृष्ण- शब्द संख्या : 2900, तिथि : 23 जून 2016
465. कन्हा भैंट्टा- शब्द संख्या : 2539, तिथि : 30 जून 2016
466. जिगेसा- शब्द संख्या : 3977, तिथि : 8 जुलाई 2016
467. गुलेती दास- शब्द संख्या : 5993, तिथि : 12 अगस्त 2016
468. भोलानाथ बाबा- शब्द संख्या : 2359, तिथि : 17 अगस्त 2016
469. दुरकाल- शब्द संख्या : 3189, तिथि : 22 अगस्त 2016
470. कलंक- शब्द संख्या : 2763, तिथि : 27 अगस्त 2016
471. अड़िकट्टा चोर- शब्द संख्या : 2077, तिथि : 31 अगस्त 2016
472. बगदल गाम- शब्द संख्या : 2405, तिथि : 6 सितम्बर 2016
473. बत्तीसोअना- शब्द संख्या : 890, तिथि : 8 सितम्बर 2016
474. कचहरिया रोग- शब्द संख्या : 1651, तिथि : 12 सितम्बर 2016
475. दिन घटि गेल- शब्द संख्या : 2425, तिथि : 5 अक्टुबर 2016
476. मुड़ियाएल घर- शब्द संख्या : 2352, तिथि : 11 अक्टुबर 2016
477. गामक सुरता- शब्द संख्या : 2265, तिथि : 19 अक्टुबर 2016
478. खतियाएल घर- शब्द संख्या : 2057, तिथि : 09 नवम्बर 2016
479. बात-कथा सुनौलक- शब्द संख्या : 1889, तिथि : 15 नवम्बर 2016
480. अनका बेर ओंघी- शब्द संख्या : 2233, तिथि : 20 नवम्बर 2016
481. देव उठान- शब्द संख्या : 2297, तिथि : 24 नवम्बर 2016
482. नमहर घरक चोरि- शब्द संख्या : 2397, तिथि : 28 नवम्बर 2016
483. भोरक सपना- शब्द संख्या : 1013, तिथि : 1 दिसम्बर 2016
484. बालमण्डली- शब्द संख्या : 1288, तिथि : 6 दिसम्बर 2016
485. धोखा केतए भेल- शब्द संख्या : 1053, तिथि : 09 दिसम्बर 2016
486. माघक चाह- शब्द संख्या : 1330, तिथि : 12 दिसम्बर 2016
487. भँसियाएल बाल-बोध- शब्द संख्या : 1306, तिथि : 15 दिसम्बर 2016
488. माघक घूर- शब्द संख्या : 1812, तिथि : 18 दिसम्बर 2016
489. पाही पट्टी- शब्द संख्या : 2370, तिथि : 25 दिसम्बर 2016
490. बीरांगना- शब्द संख्या : 1551, तिथि : 30 दिसम्बर 2016

491. स्मृति शेष- शब्द संख्या : 1941, तिथि : 6 जनवरी 2017
492. मनकें फुसलबै छी- शब्द संख्या : 1023, तिथि : 10 जनवरी 2017
493. चहकल विचार- शब्द संख्या : 4173, तिथि : 20 जनवरी 2017
494. विदाइ-दैछना- शब्द संख्या : 2312, तिथि : 25 जनवरी 2017
495. बीरांगना : 2- शब्द संख्या : 1992, 29 जनवरी 2017
496. पकिया चेला- शब्द संख्या : 1976, तिथि : 06 फरवरी 2017
497. कान फुटल कप- शब्द संख्या : 1595, तिथि : 09 फरवरी 2017
498. वर्थ डे- शब्द संख्या : 2535, तिथि : 16 फरवरी 2017
499. जानक मोल- शब्द संख्या : 2782, तिथि : 23 फरवरी 2017
500. गामक कटान- शब्द संख्या : 3115, तिथि : 01 मार्च 2017
501. कर्ज- शब्द संख्या : 3252, तिथि : 07 मार्च 2017
502. बेटीक लिलसा- शब्द संख्या : 2621, तिथि : 11 मार्च 2017
503. अपन गारि अपन दुआरि- शब्द संख्या : 2546, तिथि : 17 मार्च 2017
504. बेटीक पैरुख- शब्द संख्या : 2735, तिथि : 26 मार्च 2017
505. बेटीक कुभेला- शब्द संख्या : 2767, तिथि : 31 मार्च 2017
506. अपन रोपल गाछी भुताहि- शब्द संख्या : 2619, तिथि : 7 अप्रैल 2017
507. बलधकेल कटौज- शब्द संख्या : 2100, तिथि : 11 अप्रैल 2017
508. जारैनक दुख मेटा गेल- शब्द संख्या : 2465, तिथि : 17 अप्रैल 2017
509. पढ़ल सुगा बौक- शब्द संख्या : 3775, तिथि : 26 अप्रैल 2017
510. हरवाहि- शब्द संख्या : 2784, तिथि : मजदूर दिवस (01 मई) 2017
511. क्रान्तियोग- शब्द संख्या : 3432, तिथि : 13 मई 2017
512. उचितवक्ता- शब्द संख्या : 3461, तिथि : 19 मई 2017
513. खेतक बँटवारा- शब्द संख्या : 3607, तिथि : 24 मई 2017
514. विघटन- शब्द संख्या : 3419, तिथि : 31 मई 2017
515. टुटल मनक जुटान- शब्द संख्या : 3456, तिथि : 06 जून 2017
516. बाबा बेलेश्वरनाथ- शब्द संख्या : 2420, तिथि : 11 जून 2017
517. भुतलग्गू आकि भविसलग्गू- शब्द संख्या : 2465, तिथि : 23 जून 2017
518. मर्माहत- शब्द संख्या : 2509, तिथि : 29 जून 2017

519. गुणहीन- शब्द संख्या : 3138, तिथि : 6 जुलाई 2017
520. समझौता- शब्द संख्या : 2280, तिथि : 13 जुलाई 2017
521. जेकर चुन तेकर पुन- शब्द संख्या : 2696, तिथि : 19 जुलाई 2017
522. त्रिकालदर्शी- शब्द संख्या : 2841, तिथि : 25 जुलाई 2017
523. नमहर फेरा- शब्द संख्या : 2902, तिथि : 29 जुलाई 2017
524. आशापर पानि पड़ल- शब्द संख्या : 2391, तिथि : 02 अगस्त 2017
525. कोढ़िया सरधुआ- शब्द संख्या : 2279, तिथि : 06 अगस्त 2017
526. बेटपन- शब्द संख्या : 3054, तिथि : 11 अगस्त 2017
527. छातीक हार- शब्द संख्या : 2291, तिथि : 16 अगस्त 2017
528. उमेरक लेहाज- शब्द संख्या : 2986, तिथि : 22 अगस्त 2017
529. पैंतीस साल पछुआ गेलौं- शब्द संख्या : 2472, तिथि : 05 सितम्बर 2017
530. पुरान साड़ी- शब्द संख्या : शब्द संख्या : 2453, तिथि : 24 अक्टुबर 2017
531. गाम बिसैर गेल- शब्द संख्या : 2482, तिथि : 28 अक्टुबर 2017
532. ऐँठ साड़ी- शब्द संख्या : 2925, तिथि : 01 नवम्बर 2017
533. किछु ने फुरैए- शब्द संख्या : 2095, तिथि : 12 नवम्बर 2017
534. महिरम- शब्द संख्या : 1984, तिथि : 20 नवम्बर 2017
535. बेर परहक भदवा- शब्द संख्या : 2726, तिथि : 29 नवम्बर 2017
536. सड़क-कातक खेत- शब्द संख्या : 2722, तिथि : 10 दिसम्बर 2017
537. दोहरी हाक- शब्द संख्या : 2700, तिथि : 21 दिसम्बर 2017
538. पाइक इज्जत- शब्द संख्या : 1999, तिथि : 05 जनवरी 2018
539. सेहन्ता- शब्द संख्या : 2014, तिथि : 11 जनवरी 2018
540. राक्षसक झड़- शब्द संख्या : 1649, तिथि : 15 जनवरी 2018
541. बेरपर- शब्द संख्या : 2585, तिथि : 19 जनवरी 2018
542. केकरा-ले केलौं- शब्द संख्या : 2649, तिथि : 23 जनवरी 2018
543. स्वाभिमानी जिनगी- शब्द संख्या : 2767, तिथि : 28 जनवरी 2018
544. बाबाक बाग-बगिया- शब्द संख्या : 3089, तिथि : 3 फरवरी 2018
545. अब-तब- शब्द संख्या : 2076, तिथि : 7 फरवरी 2018
546. अगिलह- शब्द संख्या : 2472, तिथि : 11 फरवरी 2018

547. कुकुरपन- शब्द संख्या : 2229, तिथि : 28 फरवरी 2018
548. हेराएल जिनगी- शब्द संख्या : 3107, तिथि : 5 मार्च 2018
549. आशापर पानि फेर गेल- शब्द संख्या : 2447, तिथि : 9 मार्च 2018
550. देखल दिन- शब्द संख्या : 2582, तिथि : 27 मार्च 2018
551. इज्जत उतैर गेल- शब्द संख्या : 1904, तिथि : 30 मार्च 2018
552. संकट- शब्द संख्या : 2593, तिथि : 4 अप्रैल 2018
553. एकतीस मार्च- शब्द संख्या : 2816, तिथि : 10 अप्रैल 2018
554. गेल माघ उनतीस दिन बाँकी- शब्द संख्या : 2391, तिथि : 15 अप्रैल 2018
555. बापक चलैत- शब्द संख्या : 2606, तिथि : 20 अप्रैल 2018
556. बेटाक चलैत- शब्द संख्या : 2889, तिथि : 25 अप्रैल 2018
557. प्रवल इच्छा- (जारी...)

❍

परिचय

नाओं : जगदीश प्रसाद मण्डल
जन्म : 5 जुलाई 1947 ई.,
माता : स्व. मकोबती देवी।
पिता : स्व. दल्लू मण्डल।
पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।
पता : गाम- बेरमा, भाया- तमुरिया,
प्रखण्ड- लखनौर, अनुमण्डल- झंझारपुर,
जिला- मधुबनी, (बिहार) पिन : 847410, **मो.** 9931654742

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा। **जीविकोपार्जन :** कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती) **शिक्षा :** एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र) **साहित्य लेखन :** 2001 ईस्वीक पछाइतसँ...। **सम्मान/पुरस्कार :** 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड', 'वैदेह सम्मान', 'यात्री सम्मान', 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार' तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सम्मानित/पुरस्कृत।

मौलिक रचना संसार- 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन- उपन्यास। 26. कल्याणी, 27. सतमाए, -28. समझौता, 29. तामक तमघैल, 30. बीरांगना- एकांकी। 31. तरेगन, 32. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 33. शंभुदास, 34. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 35. गामक जिनगी, 36. अर्द्धांगिनी, 37. सतभैंया पोखैर, 38. गामक शकल-सूरत, 39. अपन मन अपन धन, 40. समरथाइक भूत, 41. अप्पन-बीरान, 42. बाल गोपाल, 43. भकमोड़, 44. उलबा चाउर, 45. पतझाड़, 46. लजबिजी, 47. उकड़ू समय, 48. मधुमाछी, 49. पसेनाक धरम, 50. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 51. फलहार, 52. खसैत गाछ, 53. एगच्छा आमक गाछ, 54. शुभचिन्तक, 55. गाछपर सँ खसला, 56. डभियाएल गाम, 57. गुलेती दास, 58. मुड़ियाएल घर, 59. बीरांगना, 60. स्मृति शेष, 61. बेटीक पैरुख, 62. क्रान्तियोग, 63. त्रिकालदर्शी, 64. पैंतीस साल पछुआ गेलौं- लघु कथा संग्रह। ○ ○ ○



पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड न. 06,
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

₹ 251

ISBN : 978-93-87675-18-6

5th Edition

लजबिजी

जगदीश प्रसाद मण्डल



लजबिजी

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
निर्मली

ISBN : 978-93-87675-10-0

दाम : ₹ 251/-

पाँचम संस्करण : 2017

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल, बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : दी साहु प्रिन्टिग प्रेस. निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

LAGBIJI
Collection of Short Stories by Sh. Jagdish Prasad Mandal.

समर्पण

सगर राति दीप जरय'क नारी केन्द्रित गोष्ठी
(भपटियाही-सखुआ, मधुबनी)
कें
सेवा समरपित...

कथाक सत्तैर

अकाल

किरिण फुटिते सुगापटीवालीक माथपर दस-बारहटा छिट्टा-पथिया गेँटल देख बौकी दीदी पुछलखिन-

“आइ भोरे-भोर केम्हर दिन उगल हइ सुगापटीवाली?”

बौकी दीदीक बोल जेना सुगापटीवालीक मनकेँ हौंड़ देलक। ओना घन्टा-घन्टा भरि बौकी दीदी लग बैस सुगापटीवाली अपनो आ अपन परिवारोक संग-संग देशो-दुनियाँक गपो-सप्प करैत आ बाइस तेबाइस खेबो करैत। खास कऽ पाबैनक ठकुआ आ भोज-काजक लड्डू तँ अरबैध कऽ बौकी दीदी पुतोहु सभसँ चोरा कऽ सुगापटीवाली लेल रखबे करैत। दसो-बारहोटा छिट्टा-पथियाक गेँट माथपरसँ उतारि सुगापटीवाली अँगनाक मुहथैरपर रखलक।

भतझँक्का छिट्टासँ लऽ कऽ घस-छिल्ला, छौर-फेक्काक संग सगतोड़ा, सग-धुआ पथिया धरिक गेँट।

करीब महिना दिनक पछाइत बौकी दीदीकेँ सुगापटीवालीसँ भेँट भेल छेलैन, तँए मास दिनक गपो-सप्प बाँकीए रहैन, जे बात सुगोपटीवाली बुझैत आ दीदियो।

माथक छिट्टा उतैरते दीदीक नजैर सुगापटीवालीक मुँहपर पड़लैन। मन्हुआएल मन मौलाएल फूल जकाँ बुझि पड़लैन। मुदा बजली किछु ने। नै बजैक कारण भेलैन जे अपने मन कहलकैन जे जरूर कोनो वेर-विपैतमे वेचारी पड़ल अछि। आन दिन केहेन लहटगैर मुँह देखै छेलिऐ आ आइ किए धुमनाइन मौलाएल बुझि पड़ैए। केना वेचारीकेँ बेथाक बात पुछि आरो लटका दिऐ। तइसँ नीक किए ने दोसरे-तेसरे बात पुछि विचारक धारमे भँसिया दिऐ। अनेरे तँ अपने सभटा गप गुड़ घाउ जकाँ मुइलहा खून-पीजक संग खील निकैल जेतइ। तहूमे एक मासक कथा-पुराण पछुआएले अछि। जखने पैछला अन्तिम भेँटक गपक नाँगैर पकड़ा देबै आकि अनेरे ने बड़बड़ए लगत। तइमे जे अपना बुझैक अछि से परेख लेब।

सएह सोचि दीदी बजली-

“कनियाँ, केतए हराएल छेलह जे एते दिनक पछाइत नजैर पड़लह?”

बौकी दीदीक प्रश्नक उत्तर नै देब सुगापटीवाली उचित नै बुझलक। उचित ऐ दुआरे नै बुझलक जे प्रश्नक उत्तर बिनु पौने प्रश्नकर्तोक मनमे उठि जाएत जे भरिसक कोनो बातक कचोट हमरेसँ ने तँ भेल छै, जे तामसे नै बजैए।

मलिन मनक बात रखैत सुगापटीवाली बाजल-

“दीदी, हिनकासँ लाथ कोन? लोककेँ बेटा सोग सहल जाइ छै मुदा धनक सोग नै सहल जाइ छइ। ऐबेर भगवान हमरा सभकेँ जचनामे दऽ देलैन!”

कहि सुगापटीवाली गाल दिस टघरल अबैत नोरकेँ आँचरसँ पोछए लागलि। मुँहपर आँचर पड़िते आगूक बोल झँपा गेलैन। मुदा बौकी दीदीक मन ओतै लटकल जे बेथाक कथा कखन औत। मुदा से काते-कात वेदीक लाबा जकाँ छिड़िया गेल।

शिकार फँसैत नै देख बौकी दीदी दोसर वाण छोड़लैन-

“कनियाँ, आब तँ अदहा अखारो बीत गेल, आब किए भतझँक्का छिट्टा आ सगतोड़ा पथिया बीनै छह?”

भरि मुँह बौकी दीदी ऐ दुआरे ने बजैत जे जखन हमरा बुते केकरो नीक नै कएल होइए तखन अनेरे किए केकरो जिनगीक सोग-पीड़ा जगा पीड़ित करबै। मुदा बौकी दीदीक वाणि सुवाणि भेलैन। जहिना बीमारीमे पड़ल कियो कष्टसँ भीतरे-भीतर कुहरैत अपन बेथा अपने मनमे दाबि सहैत रहैए, मुदा रोगक निदानक- डाक्टर-कें देखते मन भुभुआ उठै छै तहिना सुगापटीवालीक मुँह भुभुआएल-

“दीदी, हिनका तँ अपन पेटक बात सभ दिन कहै छिऐन, तँए नै कहिऐन सेहो नीक हएत? बड़का अकालमे पड़ि गेने बुधिये बौआ गेल अछि!”

सुगापटीवालीक बात सुनि बौकी दीदी सहमली, मुदा जे मनमे छैन से अखनो नै बुझि पड़ैन। बजली-

“अकालोक कि जड़ि-पालो अछि!”

बौकी दीदीक बात सुनियोँ कऽ सुगापटीवाली अनठौलक। ओना जानि कऽ नै अनठौलक, भेल ई रहै जे जखने पथियाक चर्च दीदी केने रहथिन तखनेसँ सुगापटीवालीक मन अपन बेथामे तेना बंशी लगल माछ जकाँ नथा गेल रहै जइसँ सुधिये-बुधि घुसैक गेल छेलइ। मुदा दोसर प्रश्नक पछाइत वएह अपन हिस्सेदारी मंगैत आगू आबि बाजल-

“दीदी, महिना दिन पहिने, ई सभटा छिट्टा-पथिया बनेने छेलौं, किए तँ महिना दिनक रोजगार अमबेच्चा टोकरी बनबैमे लगै छल, नफगर काज रहए। चारिटा पेटी आ चारिटा कारामे टोकरी बनि जाइए। दिन-राति खटि कऽ पाँच-दस हजार हाथो-मुट्ठीमे बँचा लइ छेलौं। मुदा तइमे ऐबेर अकाल पड़ि गेल!”

सुगापटीवालीक बात बौकी दीदीक मनमे धँसलैन। मनमे धँसिते जेना फुन-फुनी धेलकैन। फुन-फुनी ई धेलकैन जे अपनो रौदियाह समैमे केते दिन आ केते राति अन्न बिनु कटल छेलैन। दिन तँ कटि गेल छेलैन मुदा ओकर तरियाएल जे सोग-पीड़ा अछि, से तँ कटबे ने केलैन। पाबैन-तिहारकेँ के कहए जे अनदिनो वेचारीकेँ एक मुट्ठी खाइले दैते छिऐ, पाबैनमे पबनौट दैते छिऐ।

जँ कहीं रातिमे भानस नै भेल होइ तँ केना आध मन-एक मन भारी पथियाक जाँक लऽ कऽ बेचए जाएत। तहूमे भतझँक्काबला बड़का छिट्टा आब के लेत। लगनो तँ ओराइए गेल। भदबरिया श्राद्धक भोजो तँ लोक उठाइए कऽ रखि लइए। मासे-मास सुइद[1] दैत सालक अन्त होइत-होइत भोज निबटा लइए। तेहने सग-धुआ पथिया सेहो अछि। एक तँ फड़ाएल साग दोसर कफ-ठेँरक घर सेहो बनियेँ जाइए। बौकी दीदी बजली-

“कनियाँ, गप-सड़क्का पाछुओ हेतै, पहिने ई कहऽ जे रौतुका खेलहा छह आकि भूखल?”

बौकी दीदीक बात सुगापटीवालीकेँ अनसोहाँत जकाँ बुझि पड़ल। अनसोहाँत ई जे अखन भोरे अछि, रौतुका भूखल छी आकि भरि पेट खेलहा! आब ने लोक मुहोँ-हाथ धुअत आ भानसक ओरियानो करत। अखन जे बाजिये देब जे भूखल छी, तँ दीदियो यएह ने कहती जे कनी बिलैम जाह, रोटी कि भुज्जा भुजबै छी, खा कऽ जइहऽ। मुदा लगले मन उनैट गेलै जे तीन-तीन, चारि-चारि दिनक पाबैनक ठकुआ आ भोज-काजक लड्डू तँ सेहो दीदी रखबे करै छैथ। सामंजस्य करैत सुगापटीवाली बाजल-

“हिनका ऐठाम खाइ-पीबैमे कोनो कि लाज-धाक होइए।

[1] छायाक भोज

जखन मन हएत मांगियोँ कऽ खा लेब।”

सुगापटीवालीक बात सुनि बौकी दीदीक मन थम्हलैन। मन थम्हिते आगूक बेथा-कथा सुनैक इच्छा भेलैन। मुदा वाह रे मिथिलांगना! कठिन-सँ-कठिन दुख-पीड़ाक बोझ माथमे समेट रखने रहै छैथ मुदा पति वा परिवारक बीच नहियेँ राखब नीक बुझै छैथ। ओना नीको तँ अछिए। पुरुख हुअए आकि नारी, जँ अपन दुख-पीड़ाक निराकरणक ओरियान अपने करए तँ ओ घीओसँ चिक्कन बाट चलब भेल। मुदा जँ ने अपने करी आ ने परिवारक बीच राखी तँ ओ दुखद जरूर भेल।

बौकी दीदी बजली-

“कनियाँ, कीदैन कहलहक जे बड़का अकाल?”

‘बड़का अकाल’ सुनि सुगापटीवाली चौंक गेल। चौंक ई गेल जे हवा-विहाड़िकेँ लोक ऐबतो देखैए आ जाइतो देखैए। मुदा भेल केतौ आ बजैर गेल अपना ऊपर। हजारो-लाखो बीघाक गाछी-कलम नै फड़ल, किसानक साल भरिक उपज मारल गेल। अपन तँ किछु ने नोकसान भेल मुदा तँए कि जिनगी नै मारल गेल? अपने नै परिवारो समाजोक जिनगी तँ मारले गेल अछि। भोरे-भोरे सकाल-अकालक चर्च लाधब नीक नहि। ई तँ दुकाल-तिकालक विषय छी।

मुदा बौकियो दीदी रगड़ाह तँ छैथे। रगैड़ कऽ सुनबे करती। विचित्र स्थिति देख सुगापटीवाली बाजल-

“दीदी, दुख-बेथा कि केतौ पड़ाएल जाइए, अभावी लोकक तँ भावीए छिऐ किने। अखन भिनसुरका समए छी, जँ पथिया बिका जाएत तँ बालो-बच्चा आ अपनो सबहक मुँहमे जाबी नै लगत। बेचि कऽ घुमैबेर खेबो करबैन आ अकालोक किरदानी सुना देबैन।”

सुगापटीवालीक विचार बौकी दीदीकेँ जँचलैन। मुदा तैयो मनमे

तेहेन बिसबिसी धेने रहैन जे पनचैती तँ मानै छी मुदा खुट्टा गाड़ब अहीठाम। फेर दोहरबैत बौकी दीदी पुछलखिन-

“कनियाँ, छाहोँ-छूँह जे कहि देने रहबऽ किने तँ अपनो विचारब आ तोरोसँ सविस्तर पछाइत सुनि लेब।”

बौकी दीदीक रगड़ देख सुगापटीवाली बाजल-

“दीदी, ऐबेर आम नै फड़ने, महिना दिनक आमो खेनाइपर आफत भऽ गेल आ रोजगारो चैल गेल। चारिटा पेटी, चारिटा कारा आ चारिटा कैमचीसँ एकटा टोकरी बनि जाइए। भरि दिनमे चालिस-पचासटा बना लइ छेलौं। दिन-राति काज पसरल रहै छल। रातिके डिबिया नेसि कऽ खाइबेर तक काज चलै छल। टोकरी दामक संग-संग किसानो आ वेपारियो तेते पाकल आम दइ छला जे सबतूर खेबो करै छेलौं। से ऐबेर नै भेल।”

बौकी दीदीकेँ सेहो तीन बीघा गाछी-कलम। ओना परिवारक हिसाबसँ बौकी दीदीकेँ बेसी गाछी-कलम छैन मुदा किसानी जिनगीमे सभ रंगक खेतीक अपन महत छइ। करताइत दुआरे बौकी दीदीकेँ बेसी-गाछी कलम छैन। सुगापटीवालीक सूर-मे-सूर मिलबैत बौकी दीदी बजली-

“कनियाँ, बिनु रहनौं जेहने तोहर भाग तेहने अपनो भाग ने भऽ गेल। तहिना रहने अपनो भाग आ तोरो एक रंग भेल किने। हमहींटा किए, जखन हजारो-लाखो किसान छातीमे मुक्का मारि जीविते छैथ तखन तोँ की मरि जेबह? समए केतौ दूर चैल गेल, फेर आम फड़त आ तोहर टोकरीक धन्धा चलबे करतह। भेल तँ बीचमे किछु दिन, तइले अनेरे सोग-पीड़ा मनमे किए रखने छह। बिसैर जाह।”

बौकी दीदीक बात सुनि सुगापटीवालीक करिछोंह मुँह ललिया

गेल। पथिया माथपर उठा गाम दिस डेग बढ़ौलक।

○○

24 जुन 2014, शब्द संख्या- 1238

उझट बात

चारि बैज कऽ पाँच मिनट भऽ गेल। राजमिस्त्रीक संग काज केनिहारि आने संगी-साथी जकाँ बुधनियोँ बहिन दरबज्जेक चापाकलपर देह-हाथ धो कऽ ओसारपर राखल झोरा लिअ एली। ओसारपर बैसल प्रोफेसर साहैब, मिस्त्रीकेँ कहलखिन-

"सभ कियो चाह-पीब लिअ तखन जाइ जाएब।"

चाह पीबैक प्रतिक्षामे दुनू मिस्त्री आ दुनू सहयोगी ओसारक आगूमे, जैठाम चबुतरा बनि रहल अछि, बैस गप-सप्प जे आइ केते काज भेल आ काल्हि की सभ करैक अछि, शुरू केलक। आठ बजे भिनसरसँ चारि बजे बेर तक काज चलैए। पाँच गोरेक मेरिया अछि।

ओना प्रोफेसर साहैबक नजैर बुधनी बहिनपर आठे बजे, जखन काजपर आएले छेली, पड़लैन मुदा बजला किछु ने। बजबे की करितैथ, रंग-रंगक विचार तँ मनमे रहबे करैन। बुधनीक उमेर जरूर पचास-पचपनक हएत, पचास-पचपनक उमेर जिनगी उतरैक समए भेल। परिवारोमे बेटा-पुतोहु हेबे करतै। मुदा हेबे करतै, तेकरो कोनो ठीक थोड़े अछि, नहियोँ भऽ सकै छइ। ओना, हाथक चुड़ी आ माथक सेनुर तँ किछु गवाही दैते अछि। मुदा ई गवाही तँ पतिक भेल, बेटाक नहि। जहिना कोनो काजक अपन समए होइए तहिना किछु बजबोक तँ अपन समए होइते अछि। तँए मिस्त्रीकेँ गिट्टी, सिमेन्ट, बालु इत्यादि

सभ समान सुमझा काज देखा अपना काजमे प्रोफेसर साहैब लैग गेला। मुदा बुधनी बहिन प्रोफेसर साहैबक मनकेँ पकैड़ लेलकैन।

लाली गोराइ, गठल देह, काज करैक वएह चुमकी जे जुआनीमे रहैक।

मुदा बिना गप-सप्प केने बुझ्झो तँ नहियेँ सकै छी। सभ अपन-अपन जिनगीमे काजक चक्कीक संग चैल रहल अछि तैठाम अनका बाधित कऽ गपो-सप्प करब नीक नहियेँ हएत।

ठेकनबैत प्रोफेसर साहैब बेरुका चाह पीबैक समैक गर अँटौलैन। गर अँटौलैन जे दस बजेमे कौलेज जाएब, अबैक कोनो ठेकाने ने अछि, चारि बजेक पछाइतो आबि सकै छी, आ लगलो आध घन्टाक पछाइत घुमि कऽ आबि सकै छी। अपनो परियास करब जे चारि बजेक चाह संगे पीब जइसँ चाहे पीबैकाल बुधनी बहिनकेँ लगेमे बैसा चाहो पीब आ गपो सभ करब।

ट्यूसनियाँ विद्यार्थी जकाँ प्रोफेसर साहैब अपन समैपर तैयार भऽ गेला। बुधनी बहिनकेँ अपनो संगी साथी आ रस्तो-पेरामे चिन्हारए सबहक संग-संग बजारक दोकानदारो सभ बुधनीए बहिन कहैत, मुदा प्रोफेसर साहैब गामक नाओं लऽ कऽ 'राधोपुरवाली' कहै छथिन।

झोरा लैतेकाल प्रोफेसर साहैब बुधनी बहिनकेँ कहलखिन-

"ऐ राघोपुरवाली, अहाँसँ किछु गपक काज अछि तँए अहाँ एतै बैस कऽ चाह पीबू।"

बुधनी बहिनक मनमे कोनो मेख-वृख नहि। दुनू परानी प्रोफेसर साहैब जहिना कुरसीपर बैसला तहिना बुधनियोँ बहिन चौकीपर बैसल। प्रोफेसर साहैबक बेटी चाह बना पहिने चारू मिस्त्री-हेल्परकेँ देलक। पछाइत, दुनू परानी प्रोफेसर साहैब आ बुधनी बहिन लेल चाह अनलक। एक घोँट चाह पीब प्रोफेसर साहैब मिस्त्रीकेँ कहलखिन-

"सिंहेसर, काजक पछाइत एकेठाम सभ हिसाब दऽ देब, जइसँ किछु आनो काज परिवारक भऽ जाएत।"

सभ दिन काज करैबला श्रमिक अपन जिनगी अपन कमाइपर ठाढ़ केने चलैए। मुदा जिनगी चलैले तँ सहयोगीक सहयोग पड़िते छइ। तँए बजारक सैयो दोकानक बीच लोक अपन कारोबार किछु सीमित तँ काइए लैत अछि। जैबीच अपन काज चलबैए। नगद-उधारक बीच तँ जिनगी चैलते अछि। तँए केकरो प्रोफेसर साहैबक विचार अधला नै लगलै। चाह पीब सभ-मिस्त्री, हेल्पर- चैल गेल।

बेटीक संग प्रोफेसर साहैब दुनू परानी आ बुधनी बहिनक बीच गप-सप्प शुरू भेल। प्रोफेसर साहैबक पत्नी- जूही- बुधनी बहिनकेँ पुछलखिन-

"बेटा-पुतोहु नै अछि जे अहाँ अहू उमेरमे एते भारी काज करै छी?"

पत्नीक बात प्रोफेसरो साहैबकेँ नीक लगलैन। नीक ई लगलैन जे कतारबंदी गप तँ ओतए ने चलैए जेतए पहिनेसँ निर्धारित रहैए। मुदा जैठाम से नै, तैठाम तँ रोटीक मुड़ी बनबैए पड़त।

जूहीक प्रश्न सुनि बुधनी बहिनक मनमे जेना रीश उठलैन। मुदा परिवारक बात सभठाम बजलो तँ नहियेँ जाइ छइ। तँए रीशकेँ दबैत बुधनी बहिन बाजल-

"बेटो-पुतोहु अछि आ पतियो छैथे। मुदा..?"

'मुदा' सुनि जूही चौँकैत पुछलखिन-

"मुदा की?"

विस्मित होइत बुधनी बहिन बाजल-

"जहिना अखन काज करैत देखै छी तहिना सभ दिन करैत एलौँ

हेन। मुदा जइ दिन पुतोहु कहलक, सासु सन कोनो लछने नै छैन, तही दिनसँ बेटा-पुतोहुकेँ छोड़ि अपन अपंग पतियोक भार उठा चैल रहल छी।"

बुधनी बहिनक उत्तर पाबि जेना प्रोफेसर साहैबकेँ बजैक गर भेटलैन। गर भेटते बजला-

"ओइ चारू गोरेकेँ रोज नै देलिऐ एकेबेर अन्तमे फरिछा देबइ। मुदा अखन तँ अहाँ असगरे रहि गेलौं। जँ पाइक जरूरी हुअए तँ अहाँकेँ औझका रोज सम्हारि सकै छी।"

प्रोफेसर साहैबक बात सुनि बुधनी बहिनक मनमे उठल, एक दिनक के कहए जे सालो भरि निरमलीक कोनो दोकानदारसँ उधार मांगब तँ एको बेर नै नहियेँ कहत। उधार लऽ लेब हिसाब फड़िछौट भेला पछाइत दऽ देबइ।

तँए बुधनी बहिनक मनमे मिसियो भरि चिन्ता नहि। मुदा जखन प्रोफेसर साहैब मुँह खोलि बजला तखन अपन कमाइक बोइन लेब कोन अधला भेल। बुधनी बहिन बाजल-

"भाय साहैब, अखन फुटा कऽ हमरा कहलौं मुदा जखन ओहो सभ छला तखन समए किए लऽ लेलिऐ?"

निभर, निरभय होइत अपन बात रखैत प्रोफेसर साहैब उत्तर देलखिन-

"आन प्रोफेसर जकाँ हम नै छी जे अनेरो दूधबलाक तगेदा, तरकारीवालीक तगेदा आ हित-अपेछितक तगेदा सुनैत रहब। ओना तगेदो सभ अधले होइए सेहो बात नहियेँ अछि। जेना केकरो कोनो विचार करैक समए बना लेलौं, मुदा काजक दवाबमे समैपर नै जा सकलौं, तैठाम जँ दोबारा-तेबारा तगेदो भेल तँ अधला नहियेँ भेल।"

प्रोफेसर साहैबक विचार बुधनी बहिन नीक जकाँ नै बुझि सकल। दोहरी बात बुझि पड़लै। एक दिस केकरो तगेदा नै दोसर काजक पछाइत हिसाब देब। बाजल-

"भाय साहैब, हमरा रोज दइक बात कहै छी आ संगी सभकेँ काजक पछाइतक बात कहलयैन?"

जेना अपन हृदए खोलि प्रोफेसर साहैब बजला-

"अहाँसँ लाथ कोन राघोपुरवाली। पान-सौ हजार बेर-बेगरता लेल हाथमे रखै छी, जँ अहाँकेँ दू सौ दाइए दइ छी तैयो तीन सौ बँचैए। मुदा पाँचो गोरेक नै पुड़ैत तँए बजलौं।"

प्रोफेसर साहैबक बात सुनिते बुधनी बहिनक मन मानि गेल जे हमरासँ कोनो कलछपन नै केलैन। बाजल-

"भाय साहैब, दोकानदार सभ हमरा ओहेन गहिंकी नै बुझै छैथ जे खैयो लइए आ दसटा गाइरो पढ़ि दइए। जखने दोकानपर जाइ छी तखने आन गहिंकीकेँ छोड़ि पहिने समान दइ छैथ।"

बुधनी बहिनक बात सुनि जूही टिपलैन-

"ई उचित भेल?"

जूहीक प्रश्न सुनि मुस्की दैत बुधनी बहिन बाजल-

"यएह तँ चलाकी छी। दोकानमे पचासो गहिंकी अछि, रंग-रंगक जिनगीक बीच चैल रहल अछि, जेकरा दोकानदार नै चिन्है-जनै छै, मुदा ओहेन चिन्हारकेँ तँ जनिते अछि जेकर बन्हौटा जिनगी छइ। अहाँ ऐठामसँ छुटब दोकानपर जाएब, रातिसँ काल्हि दिन धरिक खर्च होइबला चीज-वौस कीनब, दू कोस जैयो पड़त, गामपर जाएब तखन मुरही-कचड़ी पतिदेवकेँ जलखै करए देबैन। अपने चुल्हि-चिनवारक काजमे जुटि जाएब। जँ सबेर-सकाल खा-पी सूतब नै तँ दिनका ठेही

केना कमत।"

एके साँसमे बुधनी बहिनक गप सुनि प्रोफेसर साहैब सहैम गेला। बजला-

"केते दिनसँ ई काज करै छी?"

बुधनी बहिन-

"आठ बर्खसँ।"

प्रोफेसर साहैब-

"तइसँ पहिने?"

"घर-अँगनाक काजो सम्हारै छेलौं आ खेत-पथारमे बोइनो-बुत्ता करै छेलौं।"

"पति की करै छला?"

"तइसँ पहिने ओ बजारेमे रिक्शा चलबै छला। साँझू पहर दोकान-दौरीक काज केने घरपर पहुँचै छला। मुदा जइ दिन जीपक ठोकर रिक्शामे लगल आ जाँघ टुटलैन, तइ दिनसँ जीबै तँ छैथ मुदा चलै-फिड़ैक तागैत नै छैन।"

"बाल-बच्चा कएटा अछि?"

"तीन भाए-बहिन अछि। दुनू बहिन सासुर बसैए आ बेटा लगमे रहैए।"

"बेटा-पुतोहु भीन अछि?"

"अपने भीन भऽ गेलौं।"

"किए?"

"पुतोहुक ओ बात अखनो मन पड़ैए तँ ओहिना रीश उठैए। पुतोहु बाजल जे सासुक लछने ने छैन। बाजल-तँ-बाजल। अपन

बेटा-बेटी जकाँ थोड़े बाजल। मुदा बेटा ओकरा किछु ने कहलकै, तेकर आनि-पीड़ा बरदाश नै भेल। ओही दिनसँ बजारक काज पकड़लौं।"

"अपना खेत-पथार नै अछि?"

"नहि।"

 OO

26 जुन 2014, शब्द संख्या- 1152

कर्जखौक

आइ भोरे चाह पीला पछाइत करियाकाकाकेँ लालकाकीक संग तेहेन टक्कर भेलैन जे भेला पछाइत दुनूक मन हरदा बाजि निर्णयक सीमापर पहुँच गेलैन, भोरे-भोर एना टक्कर हएब नीक नै!

भेल ई जे करियोकाका आ लालोकाकी दुनू गोरे चाह पीविते रहैथ तखैने तरकारीवाली पहुँचल। दुनू परानी मिलि तरकारी कीनलैन। महगक समए तीनियेँ किलोक दाम अस्सी रूपैआ भऽ गेलैन। पाइ देबाकाल करियाकाका बजला-

"सात तारीककेँ दरमाहा उठैए। आठ तारीककेँ तोरा पाइ भेट जेतह।"

तरकारीवाली चुपे रहल। नगद-उधार गाममे चैलते अछि। वेपारो तँ वेपारे छी नगदो चलैए उधारो चलैए। मुदा पतिक बात लालकाकीकेँ नीक नै लगलैन। नीक नै लगैक कारण भेल जे जे तरकारीवाली मन भरि तरकारी माथपर नेने गाममे भोरेसँ बेचब शुरू करैए आ तेकर समान उधारी लैग जाए तखन ओकर कारोबार केना चलत।

तखन तँ यएह ने जे या तँ ओहो वेपारी वा गिरहतसँ उधार लिअए, वा तेना कऽ दाम लिअए जे सूदिखोर महाजनक सुइद

चुकबए। ओना नफ्फा ओइठाम नै होइ छै जैठाम अछि। जैठाम नै अछि तैठाम दोसरो विचार सम्भव अछि।

लोहैछ कऽ करियाकाकाकेँ लालकाकी कहलखिन-

"सभ दिन अहाँ कर्जखौके रहि गेलौं! आबो चलन-पियारा भेलौं, तैयो चालि नै छूटल?"

दुनू परानीक बीच विवाद बढ़ैत देख तरकारीवाली अपन छिट्टा उठा विदा भऽ गेल। मनमे एलै अनेरे कोन झमेलमे बरदाएल रहब। तहूमे दुनू बेकतीक झमेल छी। आइ नै पाइ देलैन तँ की हेतै, परसुए तँ सात तारीक छी चारिम दिन दइए देता।

तरकारीवाली चैल गेल, मुदा जहिना करिया-काकाकेँ तहिना लालोकाकीकेँ बघजर लैग गेलैन। तरकारी बीचमे राखल दुनू दिस दुनू परानी एक-दोसरापर नजैरो खिड़बैत आ नजैर नीचो करैत। दुनू अपन-अपन सीमामे घेराएल।

लालकाकीक मनमे उठैत रहैन- अनेरे तेहल्लाक बीच नीच-ऊँच बात बजलौं। जँ कहबे छल तँ परोछमे कहितिऐन अपन परिवारक नीक-अधला काज अपने नै सम्हारब तँ आन केकरा के सम्हारत, सभकेँ तँ परिवारो छइहे आ किछु ने किछु बक-झक होइते अछि।

मुदा लगले मन पाछू दिस घुसैक विचारक दुनियाँ–भव मण्डल–पहुँच गेलैन। पहुँच गेलैन ओइठाम जैठाम अपनो आर्थिक स्थिति देखैथ आ तरकारीवालीक सेहो। जेकरा हजारोसँ कम पूजी छै, भरि दिनक श्रमक मूल्य सेहो ओहीमे ने राखत, जँ दाम चढ़ा कऽ लेत तँ सौदोबला तँ बुझबे करत जे फल्लाँ तरकारीक दर ई छइ। तही हिसाबसँ ओहो दाम लेत। दुनू दिससँ तरकारीवालीक गरदैन फँसल रहैए...।

अपन ओहेन दब स्थिति नै अछि जे खाइ पीबैक वौस उधार

ली। किए लेब? जिनगीमे लोक कमाइ-खटाइ किए अछि, किए कियो केकरो कर्जखौक हएत...।

मुदा लगले लालकाकीक मन घुमि गेलैन। घुमलैन ई जे जेकरा हाथमे पाइ नै छै दिनका खेनाइक सवाल छै, तैठाम की कएल जाए! कएल की जाए, यएह ने भेल समाजिकता; जे सबहक दुख-सुख सभ बुझि सभकेँ सभ संग दैथ। मुदा हमर अपने कोन जोगदान समाजमे रहल? जँ किछु देलिऐ नै तँ लेबोक अधिकार तँ नहियेँ अछि! मन तरंगलैन। तरैंगते पैछला जिनगी दिस बढ़लैन- पैंतीस सालक नोकरीमे दरमाहाक संग उलफियो आमदनी छेलैन। तहूमे किरानीक नोकरी। मुदा कहियो एहेन नै रहल जे दूधवालीक उधार आकि तरकारीवालीक उधार, किराना दोकानक उधार नै रहल! जखन कि दरमहे ओते छेलैन जे मासो भरिक खर्चसँ किछु बेसीए भऽ जाइ छेलैन। मुदा जेकरासँ हम उधार लइ छी, जँ नगदे लेब, आकि अगुरवारे ओकरे लग जमा रखि ली जे मासो भरि तरकारी चलत, तहिना दूधोवालीक भऽ सकैए। तैबीच अपनाकेँ कर्जखौक बना जिनगी चलबैत रहलौं! हथ-उठाइ केकरा के दइ छै, बड़ दइ छै तँ एक कप चाह आ एक खिल्ली पान खुआ दइ छइ। जँ लेबालक अगुरवार पाइ वेपारी हाथ पहुँच जाए तँ ओकरा पूजीमे बढ़ोत्तरी हएत। जइसँ अहाँक अपन काज भेल आ दोसर परिवारकेँ जीबैक आशा भेटलै।

समाजक माने दस टोलक लोको सोझहे नै ने छी, ओ छी जिनगीक संगी आ कारोबारक संगी, विचारोक संगी...।

फेर लालकाकीक मन कड़कड़ेलैन। कड़कड़ेलैन ई जे कहू केहेन भुच्चरपना चालि जिनगी भरि पकड़ने रहि गेला जे सभ दिन अभावेमे रहि गेला। कहियो भाव बुझबे ने केलैन। नचनियाँ सभ ठीके गबै छै-

"दुख ही जन्म लेल, दुख ही गमौल सुख कहियो ने भेल...।"

हँ! समाजमे अखनो एहेन अछि जे केतेकेँ भरि पेट अहारो ने भेटै छै, उचित अहारक तँ चरचे बेसी। मुदा अपना तँ से नै अछि। जिनगीक पैंतीस बर्ख धरि पति सरकारी सेवामे रहला। तैपर सँ उलफियो कमाइ भेलैन। जँ से नै भेलैन तँ तीनू बेटीक बिआह, ओतेत धुम-धामसँ केना भेल? दुनू बेटाकेँ पढ़ैमे जेते खर्च भेल, ओते गाममे केते गोरे कऽ पबै छैथ? तैपर सँ नीक मकान, पानिक नीक बेवस्था, सभ किछु केना भेल? जेते दरमाहामे कटौती भेलैन तइसँ बेसी बैंकसँ सूइद अबिते अछि...।

मन घुमलैन, जइ काजे आइ हम हिनका लोहैछ कऽ कहलयैन ओ चालि तँ शुरूहोमे छोड़ौल जा सकै छल, मुदा अपनो नीक लागल।

बिनु पाइयोक कोनो चीजक अभाव कहियो ने भेल। ओह! गलती अपनो भेल। पति-पत्नीक बीचक जे सम्बन्ध अछि तइमे कमी जरूर भेल। मुदा जे दिन पाछू ससैर गेल, तेकरा केना मोड़ि सकब? जे आगू अछि ओकरा तँ मोड़ल जा सकैए। मुदा कोनो धार जे धारा रूममे प्रवाहित भऽ रहल अछि, ओइ धाराकेँ रोकैकाल तँ संघर्ष हेबे करत। लक्कड़-झक्कड़ हुअए आकि रस्सा-कस्सी, किछु-ने-किछु तँ हेबे करत। मुदा एहनो तँ नीक नहियेँ हएत जे धारक मुहेँ भोथिया जाए आकि धारे मरना भऽ जाए।

फेर मन घुमलैन, जे भेल से भेल, दिनक दोख छल, भेल। मुदा दिनोक दोख तँ एकरा नहियेँ कहल जाएत, भोरे-भोर भेल, तँए भोरुका दोख मानल जा सकैए। भोरुका माने बाल-बोधक, बाल-बोधक गलती गलती थोड़े होइ छै, तहूमे बारह बर्खक निच्चाँक...।

लालकाकीक मन पुलकलैन। पुलैकते पति दिस तकली। मुँह बीजकेने करियाकाका अपने छगुन्तामे पड़ल रहैथ।

करियाकक्काक छगुन्ता ई रहैन, जे जहियासँ मन अछि तहियोसँ

कहिया नै केकरोसँ उधार लेलौं। दरमाहा भेटै छल सबहक चुकती करै छेलौं, कियो मुँहपर कहि दिअए तँ जे एको पाइ बेइमानी केलिऐ...। ऑफिसेमे जेकरासँ पाइ लेलिऐ ओकर काज केकरो बाँकी रखलिऐ...।

जे काज नै होइबला रहै छेलै, तेकरासँ थोड़े एकोटा पाइ लेलिऐ। ओना परिवारे छी, शासनसँ सत्ता धरि तँ चैलते अछि। एक दिस परिवारक अनिवार्य काज, जइसँ परिवार आगू मुहेँ ससरत, दोसर दिस परिवारक श्रम-शक्तिक संग वौसक खाँहिस।

लगले लालकाकीक मन आगू घुसकलैन। आगू घुसैकते अपन सेवा निवृत्ति दिस बढ़लैन। पाइक आमदनी तँ ठीके-ठाक अछि, मुदा हाथक काज छीना गेल, भरिसक अकाजक तँ ने पत्नी बुझि रहली अछि? भऽ सकैए, अपन काज ने हाथसँ ससैर गेल, मुदा हुनकर काज तँ ठामक-ठामे छैन, भरिसक तँए ने ओ शासन करए चाहै छैथ। ईहो तँ भऽ सकैए जे ओ नोकरीक अवस्थामे अपनाकेँ अक्षम बुझि पौने हेती तँए नै रोकलैन।

मुदा आब तँ ओ सोल्हो-अना घरक कर्ता-धर्ता भऽ गेली। जँ कहीं हमर आदैत हुनका नीक नै लगैत होइन, तखन जँ कहली तँ उचिते कहली।

करियाकाकीक मन ठमकलैन! ठमैकते नजैर अपन चालिपर पड़लैन, जखन महिनाक दरमाहा उठा दोकानदारसँ, दूधवाली, तरकारीवाली तककेँ चुकती काइए दइ छेलिऐ, तखन जँ दरमाहाकेँ उनटा कऽ चलितौं तँ ओही पाइसँ ओकरो बाल-बच्चाकेँ चहरा भेटतै, से चुकती तँ भेबे कएल। मुदा उपए?

उपए यएह ने जे तरकारीवालीक सोझहामे पत्नी उझट बात कहि देलैन, मुदा तरकारियोवाली कियो आन तँ नहियेँ अछि, जहिना केतौ

पत्नी गुरु बनती केतौ शिष्या, तहिना ने हमहूँ जखन ओ गुरु बनती तखन शिष्य आ जखन शिष्या बनती तखन गुरु बनैत हँसैत-खेलैत चलैत रहब...।

चलू, मामला फड़िया गेल। घुड़छीक भत्ता खुजि गेल। मुस्की दैत करियाकाका लालकाकीकेँ कहलखिन-

“कान पकैड़ मानियौं लेलौं आ कानेपर कन्हेट कऽ रखनौं रहब जे ओहन काज सदिखन करब जे केकरो कर्ज अपना ऊपर नै आबए?”

पतिक सुमैत सुनि लालकाकी बजली-

“अहाँक चालि शुरूहेसँ रहल जे जेबीमे पाइ रहितो अनके खाइक ताकमे रहै छी। मुदा मरैयो बेर जँ बुझलौं तँ ऐगला जिनगीक बात बुझलौं तँए खुशी अछि।”

OO

2 जुलाई 2014, शब्द संख्या- 1175

उनटन

अधरतियामे करियाकाकीक नीन टुटलैन। भकुआएले मने लालकाकाकेँ उठबैत बजली-

“नीन छी की जागल। कनी उठू ते।”

ओना लालकाका जगले रहैथ। कौल्हका काज मनमे घुड़ियाइत रहैन। काल्हि बोरिंग गड़ाएब, मिस्त्री सबेरे सात बजे पहुँचैक समए देने अछि। तैबीच आरो जोगाड़ करैक अछि। काज करैबला, चीज-वौस, सभ किछु जगहपर जेतए बोरिंग गाड़ल जाएत ओतए पहुँचबैक अछि; जँ से नै मुसतैदी रखब तँ अनेरे काजमे लटपटी लगैत रहत, जेते लटपटी लगत तेते काज पछुआइत रहत। तहूमे आब कि दादाबला समए रहल जे काज करैबला बोनिहार मरल आकि जीबैए सेहो पुछनिहार नहि। आब तँ सत-सत बेर खुशामद करियौ, हार्ड लीकरबला चाह पीअबियौ, पान सौ नम्बर जर्दा पत्ती देल पान खुअबियौ, तैपर सँ चारिटा पुड़िया शिखरक दऽ दियौ, तखन ओकर आशा करियौ। मुदा से अपन लोक नै छैथ। एक जुआनक लोक तँ छैथे। ओ अपन भरि दिनक बोनियेँटा नै बुझै छैथ ओइ काजमे अपन भविसो देखै छैथ। एकटा बोरिंग जँ दस बीघा खेत पटबैक पानि दइक क्षमता रखैए तँ जैठाम बोरिंग हएत, तैठाम दसो बीघा खेतबलाकेँ आशा जगबे कएल।

मुदा फेर नजैर दोसर दिस बढ़लैन, पान सौ बीघाक गाम अछि, साए बीघासँ ऊपरे ओहेन जमीन अछि जे पानियेँमे सोलहन्नी डुमल रहैए। अन्नक उपजाकेँ पानि खा जाइए आ पानिकेँ केना उपजा कऽ खाएब से लूरिये ने अछि। तँए गामक चौथाइ ओहिना गेल। तेकर अतिरिक्त घर-घराड़ी, पोखैर-परती, गाछी-कलम सेहो भेल। अदहोसँ कम उपजाउ बँचल। बारहो मासक खेती लेल बारहो मास पानिक खगता होइ छइ। भलेँ ओ केतौ पटौनी, तँ केतौ सिंचाय, केतौ छीचा तँ केतौ उपछे किए ने हौउ!

करियाकाकीक बात सुनि लालकाका ऐ दुआरे अनठा देलैन जे भरिसक सिरमा तर सिंगहारक पात नै छैन तँए सपनए गेली अछि। जँ जागि कऽ बाजल हेती तँ फेर दौहरौती; नै जँ सपनाएल हेती तँ अनेरे ने भकुआ जेती...।

मुदा से भेल नहि। जहिना कोनो कोनो विद्यार्थीकेँ पढ़ैक कीड़ी माथमे कटैत रहै छै तहिना करियो-काकीक मनमे कटैत रहैन। कटैत ई रहैन जे किरिण डुमैबेर रस्तापर ठाढ़ छेली तँ एकटा अनठिया साइकिलपर चढ़ल बजैत जाइत रहए-

“तेते ने लोक लोहा पाइप धरतीमे गाड़ि-गाड़ि पतालक पानि सोंखने जाइए जे पताले सुखि जाएत। जखने पताल सुखत आकि जहिना सीता धरतीमे समा गेली तहिना धरती धँसि पतालमे समा जाएत। जखने से भेल कि उनटन हएत। उनटनमे के उनैट कऽ सुनैट जाएत आकि पुनैट जाएत, तेकर कोनो ठीक अछि। लोक तँ अपने तेहेन अगिमुतु भऽ गेल अछि जे जानि कऽ अँठि-अँठि मुतैए; तँ पड़तै केकरा देहपर!”

बीखक पुड़िया छिटैत ओ साइकिलबला चैल गेल। जहिना गाम-गामक चापाकलमे प्वाइजनक प्रयोग हुअ लगल अछि तइसँ

जिनगी एहेन दुभर दिशा दिस बढ़ि जाएत, जे मनुखक शकले-सुरत बिगैड़ जाएत...।

करियाकाकीक मनकेँ तेना साइकिलबलाक बात पकैड़ लेलकैन जे चैने ने हुअ दनि।

दोहरबैत करियाकाकी बजली-

"नीन छी, कनी जागू!"

करियाकाकीक बात सुनि लालकाका ऊँह-ऊँह करैत बजला-

"एतबो ने बुझै छिऐ जे काल्हि भरि दिन नमहर खटनी अछि। अखन जे नीक जकाँ नीन नै पुरा लेब तखन काल्हि अनेरे काजे बखतमे ओंघी लागत। झूकि-झूकि खसब, काजेमे बाधा हएत।"

लालकक्काक बात जेना करियाकाकीक कानमे पैसबे ने केलैन। ओ अपने ताले घुनघुनाइत रहली-

"परिवार तँ अपने छी ऐ परिवारमे जँ अधला हुअ लगतै आ अपने नै रोकब तँ की कियो आन आबि पुरा देत। एते दिन लोक बोरिंग नै करौने छल तँ उपजा होइ छेलै आकि नहि। लोक अन्न खाइ छेलै आकि नहि। जहियासँ लोक खाद-पानि खेतमे दिअ लगल, तहियेसँ एते बर-बेमारी गाम-गाममे पसैर गेल अछि।"

घुनघुनीपर पतिक धियान नै जाइत देख अपना विचारमे जोर लगबैत करियाकाकी बजली-

"अहाँ जेते जरूरी अपन सूतब बुझहै छिऐ ओते हम अपनाकेँ जागब। कियो घरकेँ मानैए, कियो जानैए आ कियो सुनबेटा करैए, तँए कहै छी।"

करियाकाकीक उझट बात सुनि लालकाका बजला-

"अखन सुतै बेर अछि। काजक बेर जखन काज औत तखन

बूझल जेतइ।"

लालकक्काक बात सठलो ने छल आकि बिच्चेमे करियाकाकी ललैक बजली-

"बूझल जेतै कपार! जेहने कपार रहत तेहने ने बुइधो हएत।"

अखन तक जे बात करियाकाकी बाजि कऽ काज रोकए चाहै छेली से बाते ने खुजल। तँए लालोकक्काक मन करियाकाकीक बातपर ओते नै पड़ैन जइ हिसाबे पड़क चाहिऐन। नै पड़ैक कारण रहैन जे संकल्पित मन चौकीदार जकाँ ओगरवाहि करैत रहैन। करैत ई रहैन जे जखन कोनो नव काजक शुरूआत करी तँ मनकेँ सोलहन्नी पकैड़ एकाग्र बना ओइ पाछू लगा दिऐ। जँ से नै आ काजक बिच्चेमे वौआ जाएब तखन तँ काज बिगड़ियो सकैए। जखने काज बिगड़त तखने ओ बेकावू भऽ जाएत। मन घुमलैन पत्नी दिस। कोन एहेन ताहीरी एते रातिमे बजैर गेल छैन जे एना कच्छर कटै छैथ? मुदा किछु बाजबो नीक नहियेँ हएत। भूतलग्गू जकाँ एकटा गपमे तीन दिन लगौती। तइसँ नीक चुपे रहब। मुदा एते रातिमे एना बजैले कछमछा किए रहली अछि..? ओह! भरिसक बाध-बोनमे केतौ सारा-गाड़ा नङ्हेलैन अछि। जँ घरक बात रहैत तँ एते चौहद्दी बन्हैक कोन जरूरी अछि, टुकड़ी-टुकड़ी काज छिड़ियाएल अछि, कोनो टुकड़ीक बात बैजतैथ। सेहो नहि।

लालकक्काक मन पछुएलैन। परसुका बात मन पड़लैन। केहेन बढ़ियाँ परसू जखन गाड़ीपर सँ बोरिंगक पाइप आ आरो समान दरबज्जापर अनलौं तखन वएह ने रस्तेपर रोकि कहने छेली-

"अखन गाड़ीपर सँ नै उतारू, पहिने एक लोटा जल आ दूबि-धानसँ जगह शुद्ध करए दिअ, तखन चीज-वौस उतारब।"

मानि तँ नेनहि छेलिऐन। कहाँ कोनो अशुभ बात मनमे छेलैन।

चीज- वौस उतारैसँ पहिने जगहकेँ पवित्र केलैन, उतरला पछाइत सिनुर-पीठार लगौने रहैथ। तखन बीचमे कोन अनहोनी बात आबि गेलैन? जँ अनठाएब तँ आरो झमाड़ि-झमाड़ि बजती तइसँ नीक जे किए ने पुछिये लिऐन जे की बात छिऐ। बजला-

"अनेरे किए नीनक पाछू पड़ल छी। अहाँ नै बुझै छिऐ जे कौल्हुका केहेन खटनी अछि।"

लालकक्काक विचारकेँ आगूए-सँ खोंटि करियाकाकी बजली-

"सएह तँ हमहूँ कहै छी।"

करियाकाकीक बात सुनि लालकक्काक मन ठमकलैन। ठमकलैन ई जे एकटा होइए कोनो काजकेँ करब आकि नै करब आ दोसर होइए काज करैक तरीकामे। दुनूक दू कारण छइ। ऐठाम दोसर कारण रहने काज विचारधारासँ जुड़ल अछि। लालकाका बजला-

"की सएह कहै छी?"

करियाकाकी-

"बोरिंग नै गड़ाएब।"

लालकाका-

"बोरिंग हम गड़बै छी आकि अहाँ जे नै गड़ाएब!"

लालकक्काक बात तीतहा मीठ छेलैन आकि मीठहा मीठ से तँ नै जानि मुदा बोरिंग गड़ौनाइ बदान[2] बनि गेल।

भोरगरे उठि लालकाका ओही खेत दिस विदा भेला, रस्तामे जे भेटैन संग कऽ लथि जे एकटा नव काज समाजमे ठाढ़ भऽ रहल अछि, एकर लाभ गाममे होइ। एहेन नै जे दियादी ताउ खेतेमे झाड़ि

[2] चैलेंज

दिअए जे चारि भाँइक भैयारीक हिस्साक जे कोण होइ तहीमे चारू भाँइ बोरिंग गाड़ि ली। आ तेतबे किए, ई इलेक्शन जे ने करए। पैछला बेर तेहेन भेल जे गामक पानियेँ रोका गेल। सभ बोरिंगक नाला रूकि गेल। अपनो खेत पटाएब मोसकिल भऽ गेल।

सभ भाँज-भूँज लगा लालकाका बोरिंग गाड़ैक सामान घरपरसँ आनए दू गोरेकेँ पठौलखिन। दुनू गोरेकेँ करियाकाकी समान नै उठबए देलकैन। सोझे डारिये कहलखिन-

"बोरिंग गड़ा हमहीं उनटनक दोखी नै हएब।"

करियाकाकीक बात दुनू गोरे नै बुझलक। चोटे घुमि कऽ आबि लालकाकाकेँ कहलकैन। पत्नीक रोकब सुनि लालकक्काक मन तरैंग गेलैन। जहिना नङ्गेराक संग डिगरी आगिक ताउ पबिते तरैंग तड़तड़ए लगैए तहिना भेलैन। बजला किछु ने। अपने घरपर विदा होइत काज केनिहारकेँ कहलखिन-

"ताबे अहाँ सभ खादि खुनि पानि भरू।"

दुनू गोरेकेँ संग केने लालकाका घरपर पहुँच पत्नीकेँ पुछलखिन-

"दुनू गोरेकेँ घुमा किए देलिऐ?"

पतिक विचारक बीच दृढ़ता देख करियाकाकी सहैम गेली। बजली किछु ने। मने-मन खूनक घोंट पीबए लगली आकि दूधक से तँ ओ जानैथ। मुदा लालकक्काक मनमे एते जरूर उठलैन जे परिवारक काजकेँ जँ दृढ़ बनि दृढ़तासँ नै पकैड़ चलब तँ हवा-विहाड़िमे कखन कोन झाँटसँ झटा कऽ घर खस्सू भऽ जाएब तेकर ठेकाने ने रहत!

○○

6 जुलाई 2014, शब्द संख्या- 1187

रेहना चाची

दिन लहसैत किशुन भाय लौफा हाटसँ घुमती बेर जखन दीप पहुँचला तँ बाटपर ठाढ़ रेहना चाचीपर नजैर पड़लैन। कोराक बच्चा-प्रपौत्रकेँ रेहना चाची बाजि-बाजि खेलबैत रहथिन।

रेहना चाचीक 'अवाज' सुनिते किशुन भायकेँ सात-आठ बर्ख पहिलुका बुझि पड़लैन मुदा सत्तैर बर्खक झूर-झूर भेल शरीर, धँसल आँखि, आमक चोकर जकाँ मुँहक सुरखी देख शंको भेलैन। ओना सात-आठ बर्खसँ किशुन भाय रेहना चाचीकेँ नै देखने रहैथ तँए हँ-नै दुनूमे मन फँसल रहैन। फँसबो उचिते छेलैन। एक दिनमे तँ राज-पाट उनैट जाइए, सात-आठ बर्ख तँ सहजे सात-आठ बर्ख भेल।

मुदा तैयो मन तरसैत रहैन, तरंगी होइत रहैन जे रेहना चाचीक अवाज छी। लग्गा भरि हटि बाटेपर साइकिल दहिना पैरक भरे ठाढ़ केने, रेहना चाचीपर आँखि गड़ौने मने-मन विचारिते छला आकि अनायास मुँह फुटलैन-

"रेहना चाची।"

'रेहना चाची' सुनि चाची बच्चापर सँ नजैर उठा चारू दिस खिरौलैन। दछिनवारि भाग साइकिलपर ठाढ़ भेलपर नजैर पड़लैन। चेहरासँ चिन्ह नै सकली। मुदा कानमे किशुनक अवाज ठहकलैन।

अवाज ठहैकते बोल फुटलैन-

"बौआ, किशुन।"

'बौआ किशुन' सुनि किशुन भायकेँ जीहमे जान एलैन। जान अबिते जीहपर राखल तीस बर्ख पहिलुका रेहना चाचीक रूप-रंग आ बोल ठहकलैन। वएह रेहना चाची जिनकर जिनगीक दुनियाँ दच्छिन भाग लखनौर, उत्तरमे बेरमा, पूबमे कछुबी आ पच्छिम सुखेत भरि छेलैन। यएह छेलैन हुनकर कर्मभूमि आ दीप छेलैन पतिभूमि। एक तँ अहुना दीप ओहन गाम अछि जइमे छोट घराड़ीक परिवार बेसी अछि। जइसँ बरो-बाट घराड़ीए बनि सुखसँ रहैए। पहिने घराड़ीपर घर तखन ने जाइ अबैले आकि चलै-फिड़ैले बर-बाटक खगता होइए। बाटक काज तँ एक पेड़ियो, खुरपेड़ियो आ धुरपेड़ियोसँ चैल सकैए मुदा घराड़ी बिना 'घर' बाँसक धूजा बनि थोड़े फहराएत...।

घराड़ी भरि जमीनमे बास करैवाली रेहना चाचीक जीविकाक बेवसाय छेलैन, भोरे अपन जवाबदेहीक अँगना-घरक काज सम्हारि, पथियामे अपन सौदा-बारी सैंति, चारू दिसक गामक पारक हिसाबसँ निकैल एक अनिया अलता, पैयाही डोरा, पैयाही सुइयाक संग आनो-आन वौस लऽ गामक सीमान टपि आन सीमानमे भरि दिन गमा साँझ पड़ैत फेर अपन सीमानमे पहुँच जाइ छेली।

मिथिलाक जे गौरव-गाथा अछि- दुआरपर आएल बाट-बटोही, भूखल-दूखल जँ खाइबेर पहुँचैत वा जलखैए बेर पहुँचैत आकि जखन जे समए रहल, पहिने हुनकर आग्रह करिऐन। ओना खाधुरोक अपन राज-पाट छइ। जँ से नै छै तँ ओइठामक भोजैतक कोटा हजार रसगुल्ला आ बीस किलो माछक ओरियानक पछाइत किए नतहारी ताकब छइ। ओहन नतहारी जकाँ तँ नै मुदा हिस्सामे बखरा तँ लोक निमाहिते अछि।

कोनो गाम अबैसँ पहिने रेहना चाची बिसैर जाइ छेली जे भरि दिन खाएब की आ रहब केतए। परिवार परिवारक बीच खाली कारेबारक सम्बन्ध नहि। घन्टा-घन्टा बैस रेहना चाची अपनो जिनगी आ परिवारो-समाजोक जिनगीक खिस्सा-पिहानी सुनैत अपन कारोबार करैत आएल छेली। साइकिलपर सँ उतैर किशुन भाय, स्टेण्डपर साइकिल ठाढ़ कऽ बजला-

"चाची गोड़ लगै छी?"

किशुन भाइक गोड़ लागब रेहना चाची सुनबे ने केली जे असीरवाद दितथिन, ले बलैया उनटा कऽ पुछि देलखिन-

"बौआ, माए नीके छह किने। जहियासँ गाम छूटल, कारोबार गेल तहियासँ चीन्हो-पहचीन गेल! के केतए जीबैए आ केतए मरि गेल...! मरि गेल मनक सभ सखी-बहिनपा...!"

रेहना चाचीक बात सुनि किशुन भाइक माथ चकरेलैन। जहिना एक-जनिया, दू-जनिया, बहु-जनिया ओछाइनो-बिछाइन चकराइत जाइए तहिना बुधिओ-बुधियारी आ चासो-बास तँ चकराइते अछि। तहिना किशुन भाइक मन चकरा गेलैन। चकरा ई गेलैन जे गाम छूटल! गाम किए छूटल? गुम-सुम भेल किशुन भाय रेहना चाचीक झूर-झूर भेल चेहरा देखए लगला, जेना खेसारी-बदामक बीड़िया झूर-झूर भेलो पछाइत गरदी तरकारीक रूप पकैड़ भोज्य भोग पबैक सुख पबैत अपन जिनगी चैनसँ गमबए चाहैए, तहिना चाचीक मन सेहो पुलकैत रहैन। मुदा बिनु बुझनौं तँ नइने लोक बुझैत। कोनो बात सूनब आ बुझब, दू भेल। बुझैले बेसी सुनए पड़ै छै, सुनै तँ लोक एकहरफियो अछि। भाय पुछलखिन-

"चाची, गाम केना छूटल?"

किशुन भाइक प्रश्न सुनि रेहना चाचीकेँ एको मिसिया बिसबिसी

नै लगलैन। जेना नीक जिनगी पाबि कियो नीक सिरासँ अपन जिनगीक बाट पबिते खुशी होइए तहिना भगिन-जमाए पाबि रेहना चाची खुशी छैथ। मुदा पेटमे पेटेले झगड़ा उठि गेलैन। झगड़ा ई उठलैन जे बीतल जिनगीमे जे घटल सत बात अछि ओ बाजल जा सकैए की नै? ओना आब ओइ बातक खगतो नहियेँ जकाँ अछि मुदा इतिहास तँ काल-खण्ड विहीन भाइए जाएत?

रेहना चाचीक मन बेकाबू भऽ गेलैन! मुदा बिसवास देलकैन। बिसवास ई देलकैन जे अबैया दिन सुखैया तँ ऐछे, तखन किए ने अपन जिनगीक बात भाइयो-भातीजकेँ कहि दिऐ। आब कियो जिनगी लूटि लेत।

बजली-

"बौआ, सात-आठ बर्खसँ गाम सभ छोड़लौं, ओना खटनी छुटने देहो हर-हरा गेल, मुदा मन अखनो कहैए जे जानि कऽ रोगा गेलौं...। गामे-गामे तेना ने छीना-झपटी हुअ लगल, जे आन गामक लोकक कारेबारेटा नै, चलैक रस्तो कटि-खोंटि गेल।"

एक संग किशुन भाइक मनमे रंग-बिरंगक अनेको प्रश्न उठि गेलैन, मुदा जहिना मुड़ी आ टाँग कटल लहासकेँ परखब कठिन भऽ जाइए तहिना चाचीक बात सुनि भेलैन। छीना-झपटी आकि झपटी-झपटा, वएह ने जे जहिना प्रखर वक्ता लोकैन अपन मेहिका चाउरमे मोटका चाउर फेँटि काज ससारि लइ छैथ आकि मोटके चाउरमे मेहिका फेँटि दइ छथिन..? मुदा अनेरे मन वौअबै छी। मनकेँ थीर करैत बजला-

"चाची, जहिया जे भेल, से भेल। आब नीके छी किने?"

किशुन भाइक बात सुनि रेहना चाची विस्मित भऽ गेली। 'विस्मित' ई भऽ गेली जे यएह देह छी, अपन गाम लगा पाँच गामक

लोकसँ हबो-गब करै छेलौं आ खेबो-पीबो करै छेलौं, कमाइयो-खटा लइ छेलौं, से तँ छिनाइए गेल! ओना आब अपन उमेरो ने रहल जे माथपर पथिया लऽ चारि गाम घुमि कारोबार करब। रेहना चाची बजली-

"अपन बेटा-पोता अल्ला हेरि लेलैन, मुदा फेर वएह ने देबो केलैन।"

रेहना चाचीक उत्तर किशुन भाय नीक जकाँ नै बुझि सकला। तेकर कारण भेलैन जे लगले सुनला जे 'बेटा-पोता हेरि लेलैन' आ लगले सुनला जे 'प्रपौत्र बच्चा छी' आ भगिन-जमाइक परिवारमे रहै छी...।

मनकेँ सोझरबैत किशुन भाय बजला-

"चाची, हमरा ओहिना मन अछि, जखन माइयो आ अहूँ एकेठीन बैस खेबो करी आ नीक-अधला गपो करी।"

किशुन भाइक बात सुनि रेहना चाचीक अपन सत्तैर बर्खक जिनगी बिजलोका जकाँ मनमे चमकलैन। करियाएल मेघ, बदरियाएल मौसम, सरदियाएल रातिमे जखन बिजलोका चमकै छै तखन ओ अपन इजोतक संग अवाज करैत कहै छै जे हम लाली इजोत छी नै कि पीड़ी। पीड़ी दूर-देशक होइ छै लाली लगक। प्रमाण असतक होइ छै आकि सतक? सत तँ अपने सत भऽ सौंसे फल फड़ जकाँ अछि।

रेहना चाचीक आगूमे ठाढ़ किशुन भाइकेँ ने 'अक' चलैन आ ने 'बक'। दिन सेहो लुक-झुका गेल। सुरूज तँ डुमि गेल मुदा लाली ओहिना पसरल छल। किशुन भाय बजला-

"चाची, अखन तँ दिन निसचित नै भेल मुदा अखने कहि दइ छी जे अहाँकेँ लिऔन करै छी।"

किशुन भाइक 'लिऔन' सुनि रेहना चाचीक मन ठहकलैन। मन ठहकलैन ई जे आब वएह जुग-जमाना रहल आकि ओइसँ नीको-अधला भेल?

नीक-अधलाक बीच रेहना चाची चपा गेली। जइसँ बोथिया गेली। बोथिया ई गेली जे की सम्बन्ध छल! कोरा-काँख तर केते दिन किशुनलालकेँ नेने छी, पाबैनमे पबनौट खुएलौं आ अपने केते खेलौं, तेकर कोन हिसाब। जिनगीए ओही भरोसे बीतल किने...।

आइ ओइ किशुनलालक बेटाक बिआह छी, की आब ओतए पहुँच पाइब सकै छी? केना पाबि सकै छी? जैठाम लोक अधला काज करै छल तैठाम गंगाजलसँ सिक्त कऽ नीक बनौल जाइ छल, आ अखनो बनौल जाइए। मुदा ओहन तँ जगहे खिया गेल। मुदा जैठाम गंगेजल अधला बनि जाएत, तैठाम की उपए...।

रेहना चाचीक मन ओझरा गेलैन। मुदा सौंझुका तारा जकाँ जेना मनमे भुक-दे उगलैन- जँ कहीं काजेक चर्च पाछू पड़ि जाएत आ अनेरूए गप साँझ पड़ा देत, तइसँ नीक जे काजक नाँगैर पकैड़ धार पार होइ। बजली-

"बौआ, ढौओ-कौड़ी लेलहक हेन?"

ढौआ-कौड़ीक बात सुनि किशुन भाइक मन पुलकलैन। बजला-

"चाची, बिआहक अखन गपे-सप उठल हेन, ओ सभ गप पछुआएले अछि, जखन बिआहमे एबे करब तखन सभ गप बुझा देब।"

किशुन भाइक झाँपल-तोपल बात सुनि रेहनो चाचीक मनमे उठलैन, जेते अल्ला-मियाँ परिवार सभकेँ झाँपन-तोपन दैत रहथिन तेते नीक। भगवान सभकेँ नीक करथुन। बजली-

"किशुन बौआ, देखते छह जे अथबल भेलौं। चलै-फिड़ै-जोकर नै रहलौं, मुदा पोताक बिआह देखैक मन तँ होइते अछि, से...।"

रेहना चाचीक बात सुनि किशुन भाय गुम भऽ गेला। गुम ई भऽ गेला जे की रेहना चाचीकेँ यज्ञ-काजमे लियनु करा लऽ जा पाएब? की समाज एकरा पसिन करत? जे दुरकाल समए बनल जा रहल अछि ओ भरियाएल जरूर अछि। मुदा जात तर पड़ल ओंगरी जँ निकालि नै लेब, तँ जातक काज केना चलत। कोनो एकेटा ने हएत या तँ पीसिया हएत वा ओंगरी पिसाएत। मुदा भविस...।

OO

9 जुलाई 2014, शब्द संख्या- 1307

बुधनी दादी

बारह-चौदह-अना बढ़ला पछाइत जहिना गाछ-बिरीछक रूपकेँ देख अनुमानित हुअ लगैत जे फूल-फल लगै-जोकर भऽ गेल। जेहने गाछ तेहने ने डाइरो-पात आ फूलो-फल हएत। ओना बुधियार बाबाक उमेर बेरानबेरम बर्ख टपि गेलैन, मुदा बुधनी दादीक नब्बे पुरि एकानबेमे प्रवेश करबे केलकैन, तइ बिच्चेक कथा छी। मुदा जहिना बारह-चौदह-अना पूर भेने आशाक फल फड़ै छै तहिना बारह-चौदह-अना नै भेने तँ निआशे कहल जेतइ। खाएर जे से। पचीसम दिन बुधियार बाबाकेँ जेठका बेटाक फोन अबिते मने चमैक गेलैन। मन चमैक गेलैन ई जे जेठ जन कहलकैन-

"बाबूजी, मझिलो, सझिलो आ छोटो जनक विचार अछि जे आब सभ कियो गाममे रहब। सबहक बीच विचार उठल जे काल्हिये चलू, मुदा रहैक घरक बेवस्था पहिने करए पड़त। चारू भाँइक रहै-जोकर घर तँ बनबए पड़त।"

जेठ जनक बात सुनि बुधियार बाबाक मनमे उठलैन जे ई गप पत्नीकेँ कहिऐन आकि नै कहिऐन? अखन मोबाइलेक गप छी, राता-राती लोक राखी काटि-काटि करोड़ोक वेपार ठाढ़ कऽ लेलक। भाय, मोबाइलेक कोन दोख छै, दोख तँ छै मोबाइल केनिहारक। मुदा ओकरे कोन दोख छै, जेना-जेना मन उनटै-पुनटै छै तेना-तेना अपनो

उनैट-पुनैट गेल। तत्-मत्-मे पड़ल बुधियार बाबा बुधनी दादीकेँ ऐ दुआरे नै कहथिन जे स्त्रीगणेक मुँह छी, एके धुनमे रामो आ राक्षसो कहैए। जँ कहीं गपेक लहकीमे ओहो अनधुन किछुसँ किछु बाजि जाथि तँ अनेरे एकटा झमेल ठाढ़ हएत, तइसँ नीक ने जे जे बेटा हमरा कहलक ओ माएकेँ किए ने कहत जे अनेरे हम भार उघू। मुदा जहिना रसे-रसे राही, बाते-बात बतही, घाटे-घाट घटवार आ धारे-धार धारा चलैए तहिना बुधियार बाबाक विचार चैलते रहैन आकि बुधनी दादीकेँ सेहो जेठकी पुतोहु उपराग दैत फोन केलकैन। पुतोहुक उपरागक भारसँ दबाइत बुधनी दादी पुतोहुकेँ कहलखिन-

"कनियाँ, कनी थम्हू। बुड़हाकेँ सेहो सुना दइ छिऐन।"

मोबाइल नेने बुधनी दादी बुधियार बाबाकेँ हाथमे देलखिन। मुदा पुतोहुकेँ बूझल बात रहबे करैन जे हिनका तँ बुझले छैन तँए मोबाइलक स्वीच ऑफ कऽ देलखिन। कोनो गप-सप्प नै सुनि बुधनी दादी जेठुआ टुकली जकाँ अकासमे उड़ए लगली। अपने मुहेँ अपने कानकेँ गीतो सुनबए लगली-

"कहू जे ई केहेन भेल। ससुरक हाथमे फोन देलिऐन, जे किछु कहैक छेलैन से हुनका ने कैहतथिन। हम के ऐ घरक भेलौं, जे हमरा किछु कहती!"

जहिना बुधियार बाबा चुपचाप बैसल रहैथ तेकर विपरीत बुधनी दादी बिढ़नी जकाँ नचैत रहैथ। मुदा कएले की जाएत। नअ हाथक घर आ नअ हाथक अँगनामे जँ एक दिस तीत गीत हुअए आ दोसर दिस मीठ, तखन अँगना-घरक सुननिहार की सुनत। अँगनो-घर तँ छोटे अछि, हल्ला छोड़ि सुनबे की करब। रमरौआ आ रमझौआ थोड़े बेरा कऽ सुनल हएत।

मुदा लगले दुनूक मन फरिच भेलैन। फरिचो की ओहिना भेलैन,

जखन माझिल बेटाक फोन बुधियार बाबाकेँ एलैन तखन बुधनियोँ दादी अपन मुँह बन्न कऽ कान खोलि देलखिन। बेटा फोनमे कहलकैन-

"पिताजी, दस लाख रूपैआक मकान बनबैक विचार चारू भाँइमे भेल, तइमे हम बारह लाख पठा देलौं। अपना विचारे, जेते जल्दी सम्भव हुअए बना लिअ, काजक भार अहींपर रहल।"

मोबाइल रैखते बुधनी दादी चमैक उठली। चमैक ई उठली जे मरैयो बेर तँ फेर वएह बेटा-पुतोहु ने लग औत। मुदा बुधियार बाबा गुमे रहला। बेरानबे बर्खक उमेर भेल, गुण अछि जे अपन ताक-हेर अपने रखने छी तँए आँखि तकै छी, मुदा जहियासँ चारू बेटा आँखि-पाँखि झाड़लक तहियासँ बिसैर गेल आकि मनमे रखलक? जखन मनेमे नै तखन..? मुदा जँ आबो सुबुधि एलै तँ नीक बात।

अहू उमेरमे अपन चारू बेटाक बीच प्राण छोड़ब बेसी नीक हएत किने। आखिर हमर जे परिवारक प्रति प्रण छल ओ भार जँ उठा लेत तँ परिवारक इतिहासक पन्ना खाली नै ने रहतै।

मन पैछला सीमा दिस बढ़लैन, बढ़ैत पहुँच गेलैन ओइ चरिखेता आड़िपर, जेतए-सँ चारू बेटाक प्रति बुधियार बाबाकेँ आड़ि पड़लैन। एकतुरिये चारू भाँइ, पैंतीस बर्ख पूर्व बिआह-दान भेला पछाइत, नोकरी करए जखन पत्नीक संग निकलल आ हमरा खर्चक हिस्सेदारी लगबए लगल, कहू जे हम बाप छेलिऐ, अपन खर्चक दुआरे कोनो बेटाकेँ कोनो बेटा लग मुड़ी झूकबए दैतिऐ। कहू! की हम नै बुझै छिऐ जे एकटा हाकिम अछि दोसर किरानी, की दुनूक दरमाहा एके हेतै? जँ हम हिस्सा लगा लैतिऐ तखन कम दरमाहाबला बेटाकेँ परिवार चलबैमे कट-मटी होइतै की नै? आइक जे पढ़ाइ-लिखाइक खर्च भऽ गेलैए तइमे अपन बाल-बच्चाकेँ पढ़ा-लिखा पबैत आकि बिआह-दान कऽ

पबैत? मुदा आइ खुशी अछि जे बेटाक पीढ़ी तेना तर-ऊपर भऽ गेल जे बेराएब कठिन भऽ गेल अछि। खुशी ओहू दिन होइत जँ चारू बेटा, मास-मासक वा साल-सालक हिस्सा लगैबतैथ। ई बात सत जे जे बेसी कमाइ छल ओ बेसी दैत आ जे कम कमाइ छल ओ कम दैत। मुदा कमोबलाक बाप तँ हमहीं ने छिऐ, नै बेसी तँ एते तँ कहैक अधिकारी छेलिऐ जे बौआ, अहाँ आन भायसँ पछुआएल छी, हमहीं दइ छी। अपन पेट अपने चला, ओइ बेटाकेँ दोसर बेटाक देल दऽ दीतिऐ आ ऊपर दिस थोड़े बढ़ा दैतिऐ। से तँ नै केलक। खाएर जे केलक ओ अपन केलक, खुशी अछि जे आबो चारूक विचार एक भेल।

जाबे बुधियार बाबा विचारिते रहैथ आकि तइ बिच्चेमे बुधनी दादी एक लपकन गाम बान्हि एली। दोहरा कऽ गाम बान्हए विदा भेली। गाम बान्हए ई जे चारिटा बेटा चारिटा पुतोहु, लग औथिन, केना नै ढोल पीटि गामक लोककेँ बुझौथिन। गामक लोक तँ गामेक लोक छी, ने नाँगैर छै आ ने सींग, तँए ने जानवरो भगौलकै। कियो दुधमुहोँ बाल-बच्चाकेँ सड़कपर छोड़ि दोसर स्त्रीक संग रमि जाइए, तँ कियो बेटो-पुतोहु ओछाइनपर पड़ल बेवस भेल बापो-माएकेँ तँ छोड़िते अछि।

बुधनी दादीक घरक बगलेमे रधियो दीदीक घर। पड़ोसिया जकाँ नै अपने अँगना जकाँ सभ बात बजै छैथ। ओना उमेरमे दुनूक बीच बहुत दूरी छैन मुदा जेना हरबाह दू दाँतक बच्छाकेँ बुढ़बा दूटा दाँतबलाक संग जोति अपन काज सम्हारि लइए तहिना बुधनी दादी रधिया दीदीक संग निमाहि रहल छैथ। संगी भेने दुनू गोरे सदिकाल नफ्फेमे रहै छैथ। अँगनासँ निकैलते बुधनी दादी टाँहि देलखिन-

"रधिया छेँ गइ, गै रधिया?"

रधिया दीदी हाँइ-हाँइ सिलौट-लोढ़ीक काज करै छल। अकलबेराक टाँहि ओहोमे बुधनी दादीक। सुनिते रधिया दीदीक मनमे भेल जे भरिसक मरैबेर जहिना लोकक बोल डिबिया जकाँ टनगर भऽ जाइ छै सएह तँ ने बुधनियोँ दादीक टनक छिऐन।

रधिया दीदीक मन नचिते रहै आकि बिच्चेमे बुधनी दादी लगमे आबि गेली। दादीक मन हलचल देख रधिया दीदी बाजल-

"दादी, मन बड़ हलचल देखै छी, केतो चलचलउ ने तँ छिऐ?"

रधिया दीदीक बात बुधनी दादीकेँ नीक लगलैन। नीक लगैक कारण दुनूकेँ अपन-अपन विचार मनमे नचैत रहैन। बजली-

"धुर बताहि, की बजै छेँ। एकटा नीक बात सुनबए एलियौ अछि?"

'नीक बात' सुनि रधिया दीदी सिहैर गेली। जहिना नहेला पछाइत चिड़ै-चुनमुनी पाँखि झाड़ि मन हल्लुक करैए तहिना रधिया दीदी झाड़लैन-

"की नीक बात दादी। निक्कोकेँ एतेकाल नुकौने छैथ?"

विस्मित होइत बुधनी दादी बजली-

"बुच्ची, चारू बेटा-पुतोहु एकठाम भऽ गाम औत।"

बुधनी दादीकेँ बधाइ दैत रधिया दीदी बाजल-

"दादी, भरि रातिक हेराएल लोक जँ भोरमे डेरापर पहुँच जाए तँ ओ हेराएब नै भेल। मुदा दादी, अपन हाथो-मुट्ठी बदैल दोसरक हाथ चैल जेतैन!"

अखन धरि बुधियार बाबा ई नइ बुझि सकला जे जखन सभ अपन-अपन शेष जिनगीक बेवस्था काइए नेने अछि तखन एना एकमुहरी विचार केना भेलै? नीक हएत जे छोटका बेटासँ सभ बात

पुछि लिऐ। मोबाइल लगौलैन। बजला-

“गौड़ी?”

गौड़ी-

“हँ, गोड़ लगै छी बाबूजी।”

“चारू भाँइक बीच एहेन सहमत केना बनलह, घर बनबैक खर्च केना जुटेलह?”

“बाबूजी, तीर्थस्थलक नओंपर घरक चन्दा भेल, हिस्सा-बखरा नै भेल।”

“बड़ बढ़ियाँ। मुदा सहमति?”

अचरजित होइत कहलकैन-

“बाबूजी, अहाँकेँ सभ बात तँ बुझले अछि जे कोन धरानी बेटा-बेटीकेँ पढ़ेबो-लिखेबो केलौं आ बिआहो-दान केलौं। जिनगी भाड़ा घरमे बितेलौं, आगुओ बिताएब। मुदा जखन सबहक बेटा-पुतोहु छोड़ि-छोड़ि पड़ेलैन, आ सेवा-टहलक कोन बात जे कियो भरि मुँह बोलो सुननिहार नै रहलैन तखन मन पड़लैन भाए-भैयारी, माए-बाप आ सर-समाज।”

गौड़ीक बात सुनि बुधियार बाबा चुपी लाधि देलैन। मुदा बुधनी दादी थोड़े से मानलखिन। पजेबा, सीमेन्ट खसा चारि बजे साँझमे घरक न्योँ लेबे करती। भोरेसँ कखनो किछु तँ कखनो किछु जोगाड़मे लगले रहती। भाय! दुइए दिनक ने जिनगी भेल ऐगला आ पैछला। जइमे पैछला कटिये गेल ऐगला बनबे करत किने।

OO

11 जुलाई 2014, शब्द संख्या- 1256

अउतरित प्रश्न

अधकैतका समए जकाँ मासक रोहानी भऽ गेल। ओना संक्राँतिक हिसाबसँ अदहासँ बेसी टपि गेल, मुदा पूर्णिमाक हिसाबे अदहासँ पछुआएल, तँए दियावाती पाबैन परसू हएत।

हँसौना-खेलौना समए देख दरबज्जापर बैसल किशुन भाय मने-मन छगुन्तामे पड़ल रहैथ। जे एहेन समैकेँ कोन समए कहबै, सालक अगता बरखा बेसी भेल, कम दिनुका आ कतिका धान तँ अदहा-छिदहा सुतरल मुदा अगहनी धान- सतरिया, तुलसीफूल, कनकजीर, वासमती, बाँसफूल इत्यादि पानिक अभावमे बौक भऽ गेल। भने नीक भेल, जानए जओ आ जानए जत्ता।

बैसले-बैसल समतल मन किशुन भाइक गामक चिमनीपर गेलैन। ओना गाममे चिमनी अछि आ चिमनी मालिकसँ नीक लाटो-घाट अछि, मुदा बाढ़िक हिलकोरमे जहिना हलुकाहा वौस सभ ऊपर फेका जाइए तहिना फेका गेल छी।

ओना दुनू गोरेक बीच परिवारिक नीक सम्बन्ध छैन्हें। गाममे उद्योग लागत, ओकातिक हिसाबे जे सहयोग हेबा चाही से परिवारसँ केनौं रहथिन, तँए जन्मौटी सम्बन्ध जकाँ सम्बन्ध बनल छैन्हें।

पचता बरखा नै भेल जइसँ रौदियाहक लक्षण समए पकैड़

लेलक। कोन घर कानए कोन घर गीत। अगता किसान गीत गबै छैथ, पचता पाबैनो-ले हाक्रोश करै छैथ।

समैक नारी पकैड़ चिमनी मालिक- फूलबाबू- गोटी सुतारलैन। अगते उत्तर प्रदेशक मजदूरकेँ बजा लेलैन। मिथिलांचलक श्रम-शक्ति तँ तेना चूड़ा-दहीमे सना गेल अछि जे नीन कहिया पतरेतै तेकर ठेकाने ने। मनसूबा रहबे करैन जे अगते कातिकसँ कारोबार करब। कातिकक अन्त होइत जँ दू बेर भट्ठा फुका गेल तँ गोटी लाल हेबे करत। भाय तीनफुके तँ माइटो सोना भऽ जाइ छै, चिमनीक तँ पाकल माटि छइ।

मेहनती श्रमिक पाबि फूलबाबूक मन चपचपाइते रहैन, काजो तेज हएत आ नीक चीजो बनत। कातिकक दियावाती लछमी दिन छी, ओना कालियो दिन छीहे, मुदा लछमी दिन मानि फूलबाबू चिमनी फूकता। पहिल फूक तँए शंखा जकाँ फुकैमे आ किछु कण्ठो सड़ास करैमे जेबे करतैन।

काँच पजेबाक पथार, पथेरी लगौने। तैबीच तेहेन बरखा भेल जे बलुआहा महादेव जकाँ पजेबा ढहि-ढूहि गेल...।

किशुन भाय चिमनीक जिगेसा जरूरी बुझि पत्नीकेँ कहलखिन-

“भिनसुरका समए छी, चाहक बेर अछि, तँए चाह पीयाउ। फूलबाबूक चिमनी देखए जाएब। काज अगते शुरू केने छला, की भेलैन की नहि।”

छोट गाम। टोलक काते-कात गामक सीमान चौबगली अछि। गामक सीमानेपर चिमनियोँ अछि। गाम आ चिमनीक बीच मुइल-माइल कोसी नहर सेहो अछि, तैसंग नहरेक भितापर स्टेट बोरिंग सेहो अछि, सबहक दर्शन काइए लेब। चिमनीक बगले सड़कपर सँ किशुन भाय आँखि उठा चिमनी दिस तकलैन तँ बुझि पड़लैन जे जेना फौती

आबि गेल होइ! जहिना कोनो गाममे जखन फौती अबै छै तखन सभ अपन-अपन घर पकैड़ लइए, तहिना डेरे-डेरे सभ- लेबर-मिस्त्री-पेटकान लधने। फूलबाबू सेहो डेरामे सिरमा पेटतर नेने पेटकान लधने। केतौ कोनो रोके-राक नै, तँए किशुन भाय डेराक केबाड़ लग पहुँच फूलबाबूकेँ पुछलखिन-

“की हाल-चाल अछि?”

जहिना कम शब्दमे पैघ बातकेँ बान्हि बाजल जाइ छै तहिना फूलबाबू बजला-

“की कहब, नीनक गोली खाइ छी तखन नीनो होइए, नै तँ बताह भऽ गेल रहितौं।”

कटाएलपर नून छीटब नीक नै बुझि किशुन भाय बजला-

“कनी टहैल-बुलि कऽ देख लइ छिऐ।”

कहि चोटे घुमि पजेबाक पथार दिस विदा भेला। ओना जेठुआ रौदमे जेते जल्दी पजेबा सुखैए, तइसँ बेसी दिन तँ जाड़क पजेबा सुखैमे लगिते छइ। तहूमे टाँट करि कऽ सुखबैमे तँ आरो बेसी रौदक खगता पड़ै छइ। हलाँकी समानो तँ नीके बनै छइ।

पथारक एकोटा पजेबाकेँ अपना शकल-सुरतमे नै देख किशुन भाइक मनमे उठलैन फेर सभटाकेँ समेट-समेट दोहरा कऽ बनबए पड़तै! सभ पथेरीक पथारक एके दशा। तँए जेते बेसी देखब ओते बेसी सोगे-पीड़ा बढ़त, तँए अँटैक गेला।

कँचका ईटाक ठाढ़ भेल एकटा घर। तैपर सिमटीक चदरा ऊपरमे। तीन हाथ ठाढ़ घर। घरक आगूमे किशुन भायकेँ ठाढ़ होइते, घरमे बैसल दुनू परानी भोजपुरी भाषामे गप-सप्प करै छल, किशुन भायकेँ देखते घरसँ बहराएल। ओना भोजपुरी, मगही आ मैथिलीक

बीच एतेक सानिध्य अछि, जइसँ छेहा जे गाम-घरमे रहैबला छैथ ओहो बेसी नै भुतियेता।

बासाक आगूमे जा किशुन भाय पुछलखिन-

“अहाँ सबहक घर केतए छी?”

घरक नाओं सुनि ओना फतिमा बाजए चाहली मुदा आँखिक इशारासँ दबैत रसुल कहलकैन-

“उत्तर परदेश।”

रसुलक जवाब सुनि किशुन भाइक मनमे एक संग अनेको प्रश्न उठि गेलैन। प्रश्न उठिते मन तमतमेलैन। चुल्हिपर चढ़ल इन्होर पानि जकाँ पेनीसँ खौल उठए लगलैन। एक तँ आइ धरिक किसानक उजरल-उपटल गाम, कहियो दाही तँ कहियो रौदीक मारि खाइत रहल अछि। गामक युवक गामसँ बाहर जा-जा अपन श्रम-शक्ति बेचि रहल छैथ। जइसँ दिनो-दिन गाम बीरान भेल जा रहल अछि।

एकर माने ई नहि जे गाममे ने काज अछि आ ने काजक सम्भावना। अखनो गामक बीच फीक्स चिमनी बनबए बंगालक मालदह जिलाक हजारो कारीगर, कपड़ा, प्लाष्टिक, स्टील, दवाइ इत्यादिक लाखो रोजगारी बाहरसँ आबि जीवकोपार्जन काइए रहला अछि। पजेबा सन, साधारण लूरिक वौस जे माटि-पानिसँ बनौल जाइए, तेतबो नै कऽ गाम छोड़ि-छोड़ि पड़ा रहला अछि। माटि-पानिसँ वञ्चित युवक भागि रहला अछि...।

किशुन भाइक नजैर आगू बढ़लैन, तँ पचास-साठि बर्खक उमेर दुनू-बेकती रसुलक बुझि पड़लैन। ओना पहिने मन झुझुएलैन। झुझुएलैन ई जे गरीब लोक, तहूमे जेकरा बेसी खटनी होइ छै, ओ तँ पचासेकेँ साए बुझि अपन औरुदा कबुल कऽ लइए। नै जँ कनियोँ होश करैत तँ साए बर्खक बात सोचैत। केतौ-केतौ बुइधो ने वियाधि

होइ छइ। गप-सप्पक क्रममे जखन फतिमा बजली जे बेटा अरबमे रहैए, पुतोहु गाममे तीन बच्चाक संग रहैए, तखन जोड़-घटाउ करैत किशुन भाय मानि लेलैन जे पचपनक करीबक दुनू बेकती छैथ। खिचड़ी केस दुनूक। बीस बर्ख पुरान भीत घर जकाँ केतौ बिढ़नी छत्ता, तँ केतौ मकड़ा जाल, तँ केतौ मूसक बीहैर जकाँ देहक रूप-रंग।

किसुन भाय रसुलकेँ पुछलखिन-

“दुनू परानी चिमनीमे काज करै छी आकि हमरे ऐठाम जकाँ एक परानी खटलौं बाँकी सभ पहुनाइ केलौं। देखै छी मेमो साहैब संगेमे छैथ।”

दुनू बेकतीक छातीक सिरखार अपन बगेओ-वाणि आ जिनगीक ऐना सेहो देखबैत। ‘मेम साहैब’ सुनि फतिमा बाजल-

“पुरुखसँ की जनाना कमजोर होइए।”

फतिमाक बातमे किशुन भायकेँ विचार भेटलैन। बजला-

“केना ने होइए?”

जेना फतिमाकेँ जिनगीक अनुभव सीखा देने होइ तहिना बाजल-

“पुरुख-जनाना मनुख नै मनुखक विचार छी। जेकरामे पुरुखपना रहतै, ओ मर्द हुअए आकि औरत, किछु करैक लीलसा रैखते अछि।”

फतिमाक साधल बात सुनि किशुन भाय सहमला। सहमैत बजला-

“कोन-कोन काज दुनू बेकती संगे करै छी आ कोन फूट-फूट?”

किशुन भाइक प्रश्न सुनि रसुल फतिमापर नजैर देलैन। अपना मुहेँ अपन बात बजैमे कनी-मनी कम बेसी भाइए जाइ छइ। उत्साहित

रहलौं तँ बेसी बजा गेल आ सोगाएल रहलौं तँ कमि गेल। फतिमाक मन जागल। जागल ई जे जखन घर छोड़ि बहार भेलौं तखन जँ मुँहकेँ दाबि राखब तँ काज चलत। गाम-घरमे जैठाम सभ सम्बन्धीए रहैए तैठाम तँ दिन-राति छह-पाँच होइ छै आ जैठाम असगर-दुसगर रहब तैठाम की हएत तेकर कोन ठेकान। घरसँ बहराइते लोक साढ़े तीन हाथक भऽ जाइए। देह छोड़ि किछु रहि नै जाइ छइ।

फतिमाकेँ बुझि पड़लैन जे किशुनक उमेर बीस-पचीस बर्खक हएत। बजली-

“बौआ, पजेबाक माटिसँ लऽ कऽ गढ़ै धरि दुनू परानी संगे करै छी आ जखन पथारमे ओ सुखि जाइए तेकर बाद काज बँटा जाइए। हम माथापर उघै छी आ अपने ईटा सेरिआ भट्ठा लगबै छैथ।”

किशुन-

“केते दिनसँ चिमनी भट्ठामे काज करै छी?”

“अपना खेत-पथार नै अछि, गामो सबहक ओहेन दशा दिशा नइए जे कोनो रोजगारो-बात करब। तखन दोसर उपऐ की? जहियेसँ सासुर एलौं, तहियेसँ करै छी।”

ओना फतिमाक बात किशुन भायकेँ कण्ठसँ निच्चाँ नै उतरलैन। किएक तँ मन ठमैक गेलैन। गाम बनौनिहारे जँ गाम छोड़ि दिअए तँ गाम केना बनत। मुदा जिनकर बात सुनै छी, ओ तँ सुनए पड़त। बजला-

“परिवारमे के सभ छैथ?”

“बेटी सासुर बसैए, अपने दुनू परानी भेलौं आ बेटा-पुतोहुक संग दूटा पोता-पोती अछि।”

“बेटा की करै छैथ?”

“ओ अरबमे नोकरी करैए। आठ बर्खक करार छै, पछाइत गाम औत।”

“कते महिना कमाइए?”

“अपन रूपैआ अस्सी-पचासी हजार।”

‘अस्सी-पचासी हजार’ सुनि किशुन भाइक मन तड़ैप गेलैन। बजला किछु ने, विदा भऽ गेला।

सड़कपर अबिते मनमे अनेको प्रश्न उठि गेलैन- जाबे परिवार असथिर भऽ बास नै करत ताबे परिवारक सुरक्षो आ बालो-बच्चाकेँ सम्हारि पाएब अकास कुसुम सदृश आइक समाजिक परिवेशमे जिनगी चुनौती बनि गेल अछि!

OO

14 जुलाई 2014, शब्द संख्या- 1229

हारि

बीस माघ। सालक बारहम मासमे दस दिन कम। ओना वसन्तक प्रभातक संग सरस्वती पूजा सेहो। आइ तक सरोसतिया दादी यएह बुझै छेली जे दिनक फल भोजन आ सालक फल उपजा होइ छइ। जेहेन नीक तेहेन नीक आ जेहेन अधला तेहेन अधला भेल। मुदा आइ माघक जाड़ दादीक हाड़कें कँपकँपा रहल छैन, अखन तकक अपन जिनगीक अनुभव अपने धिक्कारि रहल छैन जे जिनगी हारि गेलौं। मुदा, हारि-जीत तँ जीता-जिनगी होइ छै मुइला पछाइत केकरा के देखए अबै छइ। ठिठुरैत देह, सिहरैत मन अपन देहक वस्त्र लऽ बाँकी सभ किछुकें छोड़ि सरोसतिया दादी घरसँ ओइ समए बहरेली, जखन शुरूहे अगहनसँ लाधल कुहेस पलाइत-पलाइत आइ बर्खाक बुन्न जकाँ टप-टप खसि रहल अछि। एक तँ दिनो अन्हरोखे जकाँ, मुदा साँझ पड़िते अन्हारक मोट चद्दरि पसैर गेल। दोसैर साँझ करीब सात बजैत, सरोसतिया दादी घरसँ बहरा मनोहर ऐठाम पहुँचली। मनोहरक घर आ सरोसतिया दादीक घर अगले-बगल। ओना समाजिक सम्बन्धसँ मनोहर आ सरोसतिया दादीक बीच परिवारिक सम्बन्ध बहुत लग नै तँ बहुत हटलो नहियेँ छैन। घर-गामक सम्बन्ध मनोहर आ सरोसतिया दादीक जे रहल होन्हि मुदा अपनो बनौल सम्बन्ध तँ छैन्हें, तँए दादी अपन अधिकार बुझि मनोहर ऐठाम

पहुँचली।

गोरहाक धधकैत घूर लग मनोहर बैसल। घूरेक धधड़ाक ईजोतमे किछु देख पड़ैत बाँकी अन्हारे-अन्हार। हाथ-हाथ नै सुझैत। दू मास ऊपरेसँ ओस-पालाक प्रकोप उग्र रूप धेने अछि। दरबज्जाक ओसारपर अबिते सरोसतिया दादी बजली-

"बौआ मनोहर, जान बँचाबऽ आब नै जीब।"

सरोसतिया दादीक बात सुनि मनोहर चौंकैत बाजल-

"दादी, एना अशुभ बात मुहसँ किए निकालै छी।"

कहि उठि कऽ मनोहर सरोसतिया दादीकें बाँहि पकैड़ धूर लग आनि बैसौलैन। आगिक ताव लगिते सरोसतिया दादीक अंग-प्रत्यंग जेना सर्ड़ास हुअ लगलैन। बोलो टनमनेलैन। मनोहर सरोसतिया दादीसँ गीते-संगीत नै चित्रकारिता सेहो सीखने। पत्नीकें सोर पाड़ि मनोहर बाजल-

"घूरसँ दादीक देह ने गरमेलैन, मुदा पेट पटुआएल रहने मन मन्हुआएले छैन जे खेले-पीले पछाइत पुलकतैन। जेते पुलकतैन तेते फुदकतैन तँए गिलासमे दूध नेने आउ, एतै घूरपर गरमा लइ छी।"

अपन आगत-भागत देख सरोसतिया दादीक मन मानि गेलैन जे जहिना अपन बुझि मनोहरकें केलिऐ तहिना अन्तिम घड़ीमे वेचारा ठाढ़ो भेल। तैबीच सुचिता गिलासमे करीब पाभरि दूध नेने दरबज्जापर आबि पतिक हाथमे दऽ अपने सरोसतिया दादी लग पजरामे घूरे लग बैसली।

सरोसतिया दादी अपन जिनगीक देखल-भोगल शीतलहरीक खिस्सा सुचिताकें सुनबए लगली। जेहने समए अढ़ाइ-तीन मासक शीतलहरीक ऐबेर भेल अछि तेहेन-तेहेन केते बेर भेल अछि, मुदा

अपना शरीरोमे शक्ति छल आ शीतलहरीसँ बँचैक इलमो छल। कहियो नै गुदानलिऐ। मुदा आब ने ओ देहमे शक्ति अछि जे शमन करब आ ने हाथ-पैरमे ओते बुते अछि जे जीबैक ओरियान करब। साल जहिना बारहो मास होइ छै तहिना साल-सालक मासक समैयो होइ छइ। कहैले तीनटा मौसम होइ छै, जाड़, गरमी आ बरसात। मुदा तेतबे नै होइ छइ। तेतबेक माने भेल जे सभ सालक मास एके रंग हएत। कोनो साल गरूगर शीतलहरी भेल तँ कोनो साल ओइसँ कम। कोनो साल ओहूसँ कम, कोनो साल ओहूसँ कम आ कोनो साल सामान्य जे छिऐ तहिना भेल, तहिना गरमियोंक अछि, कोनो साल बरखा नै भेने प्रचण्ड भेल, तँ कोनो साल ओइसँ कम भेल, कोनो साल ओइहोसँ कम भेल। जेना-जेना पानि-हवाक प्रभाव भेल तेना-तेना मौसमो बनैत रहल। तहिना बरसातो अछि। एक तँ अपन इलाका पहाड़ी नदीक तलहटीक इलाका छी तँए ढालनुमा अछि। जँ एको रंग बरखा भेल तैयो सिराक पानि निच्चाँ मुहेँ ससैर-ससैर बेसियबैत जैठाम चपगर अछि तैठाम जलमग्न कऽ दइए। समैक यएह लीला अछि, तही बीचमे ने अपना सभकें हँसैत-मलड़ैत जिनगीक बाट टपैक अछि। मुदा मनोहरक नजैर दादीक ओझराएल जिनगीपर गेलैन। जहिना जालमे ओझराएल माछ ने छटपटा सकैत आ ने निकैल पबैत तहिना सरोसतिया दादी सेहो बेवस भेल छैथ। आगूक शेष जिनगीक प्रश्न अछि। जहिना सभकें अपन घर-दुआर, खेत-पथार, गाछी-कलम होइ छै जइमे अपना विचारे लोककें जे मन फुड़ै छै से करैए, तहिना ने मनुखोक सम्बन्ध मनुखसँ सर-समांगसँ लऽ कऽ सर-समाज धरि होइए। मनुखोक बान्ह तँ साधारण बान्ह नहियेँ अछि। जेकरा तोड़ब आकि काटब धिया-पुताक खेल हएत। ई बात सत् जे दादीक चारि पीढ़ी ऊपरका सम्बन्ध हमरा पीढ़ीसँ रहल। बीचमे तीन पीढ़ी आगू बढ़ल। जहिना एक बीटक बाँस रहितो कोंपराइत आगू बढ़ि एको दिस

बढ़ैत आ दोसरो दिस बढ़ैत, तहिना बाँस हुअए आकि केरा, खरही हुअए आकि शर्पत, जहिना चारू दिस कोंपराइत आगू बढ़ैए, तहिना ने मनुखोमे छइ। दू भाए-भैयारी चारिम पीढ़ीमे छल, एक पीढ़ीक चारिम सीढ़ीपर मनोहर आ दोसर पीढ़ीक तेसर सीढ़ीपर सरोसतिया दादी। सर-सम्बन्धीक हिसाबसँ दूर छैथ, दादीकें अपनो तीनटा बेटी छैन, तीनू तीन गामक सासुरमे बसै छैन। तैसंग गामोमे दोसर पीढ़ीक सम्बन्धी छैन, तेकरा ऐठाम नै पहुँच दादी हमरा ऐठाम पहुँचली। बाट-घाट दुनू बन्न जकाँ अछि। तैठाम की कएल जाए? तहूमे छुच्छे देहेक बात रहैत तैयो नीक रहैत, मुदा सेहो ने छैन। कहुना तँ दस कट्ठा खेत छैन्हें। जाबे दादी आँखि तकै छैथ, ताबे लगक सभ सम्बन्धी आँखि मुनने छैन आ जखन आँखि मुनती तब जा कऽ चारू दिससँ सभ आँखि तकतैन। खेत-पथारक प्रश्न अछि। जैठाम धूर-कट्ठाले लोक जानो गमबैए आ जानो लइए तैठाम प्रश्न तँ ओझराएल अछि। मुदा लगले मनोहरक मन घुसैक अपना दिस एलइ। बुढ़ दादी केते दिन जीती। ओना सम्भव अछि जे सालक तेहेन शीतलहरी अछि जे टपब मोसकिल छैन, मुदा मनुखोक औरुदा कि केकरो हाथमे अछि। सालक भीतरो मरि सकै छैथ आ पाँच-दस बर्ख आगुओ जा सकै छैथ। जेते दादीक सम्बन्धमे मनोहर सोचैत तेते रंग-रंगक बाट-घाट बनैत देखए। कजराएल मेघमे जहिना जहिना बिजलोका चमकै छै तहिना तहिना मनोहरक मन चमकल। चमकल ई जे दादी तँ कामधेनु गाए सदृश छैथ, असीम सम्पैत पेटमे रखने छैथ। अनेरे अपनो बौआइ छेलौं आ मनो बौआइ छल। दादी हमर जननी छैथ जे पैघ-पैघ कलात्मक बात जनौलैन। हुनके पाबि गीतकार, संगीतकार आ चित्रकार सेहो बनल छी। नमहर छी आकि छोट ई तँ अपन मनक ओकातिपर अछि, मुदा छी तँ जरूर। अनेरे दादीक खेत-पथारमे नजैर घोंसियेने छी। असल चास-बास दादीक गुरुत्वमे छैन। जे अखनो

सैयो गीत-भजन पेटमे रखने छैथ, दुनियाँक चित्रकारी रखने छैथ, भगवान करथु जे दादीक औरुदा असीम भऽ जानु जइसँ अपनेटा किए परिवारक बालो-बच्चा अवाद होइत रहत।

सरोसतिया दादीक जन्म शिक्षक परिवारमे भेल छेलैन। माता-पिताक संयोग एहेन जे दुनूक चालियो-ढालि आ गुणो-सोभाव एहेन मिलल-जुलल जे ऐगला पीढ़ी लेल अनुकूल मनसुन बनल। इस्कूली शिक्षा तँ दादीक ओते नै भेलैन, मुदा परिवारिक अनुकूल तँ शिक्षाक दिशा देलकैन। पढ़ै-लिखैक लूरि, साज-अवाज साधैक लूरि, चित्र काढ़ैक अनुकूल स्थिति पाबि दादी एकटा कुशल गृहणिक रूपमे अपनाकेँ दुनियाँक बीच रखलैन।

पिता शिक्षक रहितो सरोसतिया दादीक बिआह करैमे चुकला। चुकला ई जे अपन परिवारक कुल-मुलक अनुकूल कुल-मुलक जातिमे बिआह केलैन। मुदा परिवारक ढाँचा दुनूक दू रंग। सरोसतिया दादीक सासुरक परिवार एक कुल-मुल रहितो एकटा किसान परिवार आ दोसर शिक्षासँ जुड़ल शिक्षकक परिवार।

पैंतीस बर्खक अवस्थामे सरोसतिया दादीक पति, जे एकटा किसान छला, बेमारीक पकड़मे आबि मरि गेला। तैबीच तीनटा बेटी भऽ गेल छेलैन। बेटा नै भेल छेलैन।

पति विहीन जीवनक बीच सरोसतिया दादी अपन जिनगीक संग तीनू बेटीक पार-घाट सेहो लगौलैन। पार-घाट ई जे तरा-ऊपरी तीनू छोट-छोट बेटीकेँ पालि-पोसि घर-परिवारक लूरि सीखा-पढ़ा, बिआह-दान करैत तीनूकेँ सासुर बसौलैन। ओना अखन तीनू बेटीक बीच सातटा नाइत-नातिन छैन, मुदा जइ अवस्थामे दोसरातिक जरूरत पड़ै छै तइमे एकोटा ने ठाढ़ भेलैन।

मनोहरक मन फरिच भऽ गेलैन। तैबीच अपन जिनगीक केतेको

खिस्सा-पिहानी सरोसतिया दादी सुचिताकेँ सेहो सुना चुकल छेली। दादीक बोलक टनकसँ मनोहरक मनमे बिसवास बढ़लै जे कौल्हुका बिसवास केकरा छै जे हमरा रहत। मुदा आइ दादी टनैक गेली। काल्हि दिनले काल्हि अछि। समगम होइत मनोहर दादीकेँ पुछलकैन-

“दादी, मन नीक लगैए किने?”

दिलाशा पाबि सरोसतिया दादी बजली-

“बौआ मनोहर, जँ ऐठाम नै आएल रहितौं तँ रातियेमे ठिठुरि कऽ मरि जइतौं।”

मनोहर चुपे रहल, बिच्चेमे सुचिता बाजल-

“दादी, लोकेक आशा लोककेँ होइ छै, मुदा लोको-लोकक बात छै, एहनो लोक तँ ऐछे जे लोककेँ लोक बुझि जानो दइए आ एहनो तँ ऐछे जे कुलोक बुझि जान लइतो अछि।”

सुचिताक बात सुनि सरोसतिया दादी ठमैक गेली। अपन जिनगीक सभ किछु हेराएल देख हारि कबुलैपर आबि गेली।

००

16 जुलाई 2014, शब्द संख्या- 1240

सोनाक सुइत

जेना-जेना सुचित्राक बिआहक दिन लगिचाएल जाइ तेना-तेना निर्मला काकीक मनमे धएल विचारक टनकक टहकी सेहो बढ़ए लगलैन। जहिना गुड़ घाक टनक रसे-रसे रसिआ शरीरमे टहकी बढ़ा दइए, जेकरा खिल रूपमे निकालला पछाइत टनको कमैए आ धाओ छूटबाक आशा जगबैए, तहिना निर्मला काकीक मनक टहकी सेहो बढ़ि कऽ निकलैक मोड़पर आबि मन कबुल लेलकैन जे अनेरे मनक बात मनमे सड़बै छी, एकरा निकालबे नीक।

करियाएल मने निर्मला काकी बेटीक मनोरथक आशा निकालि निराल-निराश होइत अपन हृदैक हारिक संग मनक हारि कबुल करैत सुचित्राकेँ बुझबैत बजली-

“बुच्ची, तूँ बेटी छिअ। मनक बात तोरा नै कहबऽ तँ केकरा कहब। तहूमे तोरे धनक क्षय भेल अछि। किछु छिअ तँ कोखिक सन्तान तँ तोहीं छिअ। पुश्तैनी सोनाक सुइत..?”

सोनाक सुइत तँ निर्मला काकीक मुहसँ निकैल गेलैन मुदा धसनाक तर पड़िते कोनो धार जहिना रूकि जाइ छै तहिना निर्मलो काकीकेँ भेलैन। अनायास मुँहक बोल ठमैक कऽ रूकि गेलैन।

माइक अधखिजू बात सुनि सुचित्राक मनमे उठल जे चाउर

कुटैकाल धानो अधखिजू होइए, मुदा एहनो तँ होइते छै जे अधखिजुओ मारिक चोट नीजा जीवनो-जान लऽ लइ छइ। आखिर माइक मनमे कोन एहेन आँकर-पाथर पड़ि गेलैन जे कण्ठसँ ऊपर बकार नै आबि रहल छैन।

पताएल आगिकेँ जहिना खोरनीसँ खोड़िते जीताएल आगि ऊपर चैल अबैत तहिना खोड़ैत सुचित्रा बाजल-

“माए, मनक वौस आ हृदैक ऋषा दुनू दू सीमानक भीतर रहैए, छातीक दूध पीअल सन्तान हम छियौ, तखन लाथ किए करै छेँ। जखने गरीब माए-बापक घर कियो जन्म लइए तखने छाती मुक्का मारि बुझैए जे जिनगी भरि कजराएल आँखिक नोरक धार बहबे करत, तइले चिन्ते की? साँझे जेकर मृत्यु भेल तेकराले की लोक भरि राति कनिते रहत। बाज माए, बाजि कऽ हमरो बाजूगर बना दे। बाज माए बाज, तूँ माए छँह, तोरा नै कहबौ तँ अनका कहनौं की हएत।”

अपन हृदैक धाराक धार बेटीक हृदैमे ओहिना प्रवाहित होइत देख निर्मला काकीक मन धिक्कारि देलकैन। धिक्कारि ई देलकैन जे अपन मनक बातकेँ मनमे मारि राखब नीक नहि। कुसमैमे भलेँ ओ मटियामेट धुरा बनि पैरक तर किए ने रहए, मुदा इतिहास ने केकरो बिसरल आ ने बिसरत। ओ तेतबे धरि बिसराएल अछि जेते तक जन्मदाता विहीन अछि। जखने खोजी खोजए निकलै छै तखने खज-खजाना भेटते छइ। विशाल खजाना मटियामेट भऽ नुकाएल अछि...।

निर्मला काकीक विचार मोड़ लेलकैन। मोड़ लइते उठलैन हमरा तँ ओहेन माए ने बनक चाही जे भुखाएल बच्चाक भूख बुझि कनै वा बजैसँ पहिने खेनाइ दऽ दिऐ।

जहिना चिड़ै-चुनमुनी लोलमे लोल सटा बोलो आ घोलो घोरैए

तहिना घोरैत निर्मला काकी बजली-

"बुच्ची, तोराले सोनाक सुइत एकटा रखने छेलौं, बिआहक दिन माए देने छल। मुदा...।"

माइक अधखड़ू बोल सुनि सुचित्रा बाजल-

"बाज माए, पुरा करि कऽ बाज।"

सुचित्राक मनक झमार तेना निर्मला काकीकेँ झमारि देलकैन जे झूर-झमान होइत बजली-

"बेटी, बकार नै फुटैए। तोरा देख-देख आरो मन कलहन्तमे पड़ि लाजे कठुआ मन कँपैए।"

निर्मला काकीक बात सुनि सुचित्राकेँ सुनैक जिज्ञासा आरो बढ़ल। दोहरी झमार दैत बाजल-

"माए, तूँ जननी छीएँ, किए जनितो अन्जनी बनए चाहै छेँ। जहिना अपन देहक सभ किछु दऽ ठाढ़ केलेँ तहिना अपन मनक बात सेहो मथि कऽ किए ने खुआबए चाहै छेँ। जनाएबे ने जननीत्व भेल।"

सुचित्राक आँखिमे आँखि गाड़ि निर्मला काकी बेटीक लीलकेँ कलील करैत बजली-

"सुचित्रा, जे बूझल-जानल अछि से सुनि लएह। माए कहने रहए जे ई सुइत हमरो माइए देने छल। जेकरा जोगा कऽ तोराले रखने छेलिअ। मुदा बिच्चेमे तेहेन भुमकम भेल जे विरहा गेल।"

सोनाक सुइत विरहाएब सुनि सुचित्रा ठमैक गेल। ठमैक ई गेल जे एक तँ बिआहक बात पक्का भऽ गेल अछि, तैबीच सोनाक सुइतक गप अछि। किछु बाजब माइक माथपर बोझ देब हएत। बी.ए. पास सुचित्रा ओहेन नै जे घरसँ बाहरक कौलेजमे हजारो रूपैआ महिना खर्च कऽ पढ़लक, ओहेन सुचित्रा जे गामसँ पाँच किलोमीटर पएरे चैल

गमैआ कौलेजमे पढ़ने छल। पढ़ने छल समाजशास्त्र आ समाजशास्त्रक अर्थशास्त्र आ अर्थशास्त्रक इतिहास। निष्कलंक, निष्कपट सुचित्राक मन अपन कौलेजमे पढ़ल विषयमे पहुँचल। केना समाजक ढाँचाक संग लूट-पाट भेल, केना अर्थक लूट-पाट भेल आ केना इतिहास लूटाएल। मुदा प्रश्न नान्हिटा नहि। सुचित्राक मन ठमैक कऽ ठहैर गेल। कोन जरूरी वेचारीकेँ छेलै जे समाजक ढाँचाकेँ तोड़ि-मरोड़ि बुधियार अपन भोग-विलास केलक? कोन जरूरी छै जे केना छोट वेपारीकेँ, माछ जकाँ बड़का वेपारी ढप-ढप गिड़ैए। कोन जरूरी छै जे समाजकेँ शराबी, जुआरी, अपराधी बना समाजक नक्शे विगाड़ि दी..?

विचारक दुनियाँमे अपना मनकेँ हेराएल-भोथियाएल देख सुचित्राक ममत्व जागल। बाजल-

"माए, हमर चिन्ता तोरा एतबे धरि करक चाहिऐ जेते धरि अवोध बच्चासँ नव दुनियाँक मनुख बना बिआहि नव सृजनक दुनियाँक सीमानपर पहुँचा रहल छेँ। अनेरे कोन सोनाक हँसुलीक चर्च करै छेँ।"

सुचित्राक विचार निर्मला काकीक विचारमे ओहेन धक्का मारलक जे जिन्जीर खोलने बिना केबाड़ खुलि गेल। बजली-

"बेटी सुचित्रे, चीज गेल तँ गेल। मुदा मनमे रोपल जे मनोरथ छल, ओहो आइ चैल गेल। बाल-बच्चाक सुख-दुख माए-बाप नै बुझहै, माए-बापक सुख-दुख बेटा-बेटी नै बुझहै, तखन अनेरे किए इतिहासो आ समाजोशास्त्र परिवारक परिभाषा करैए। ओकरा कोन दरकार छै जे अनेरे अपन किताबक पन्ना दुरि केने अछि?"

निर्मला काकीकेँ हेराइत देख सुचित्रा भरि पाँज समेट बाजल-

"माए, चीजक चर्च नै, अपन सोग की छौ से कहि दे। आगू दिन

काज देत।"

सुचित्राक मधुआएल विचार सुनि निर्मला काकीक मन उमैड़ गेलैन! बजली-

"बुच्ची, बिच्चेमे बात हेरा-ढेरा जाइए तँए तीनटा बात कहबह। सएह पहिने कहि दइ छिअ, मन पाड़ि-पाड़ि दिहऽ।"

अपन हेराएल-भँसियाएल जिनगीक बात जहिना लोक बिसैर जाइए तहिना भरिसक माइयोकेँ भऽ रहल छेलैन।

सुचित्रा मने-मन विचारए लागलि, जहिना घाकेँ खील, पीज, खून निकालि साफ कएल जाइए तहिना बनौला पछाइत माइक विचार बुझि सकब। बातक जड़ि पकैड़ सुचित्रा बाजल-

"माए, अनेरे कोन सोग-पीड़ामे पीड़ाएल छेँ। तीनटा कोन बात छौ, से कहि दे।"

जहिना गुरुआइन अपन शिष्याकेँ छातीक हाड़ पहिरा असीरवाद दैत, तहिना निर्मला काकी बजली-

"बुच्ची, अखन धरिक पुश्तैनी परम्परामे बेटीक बिआहमे सोनक महत रहल अछि। तँए मनोरथ छल।"

माइक बात सुनि सुचित्राक मन मिसियो भरि विचित्र नै भेल। घा बहबैकाल माइयो जहिना बच्चाक भविस देख पाथर जकाँ छाती बना लइ छैथ, तहिना माइक बेथाक कथा सुनैले सुचित्रा छातीपर पाथर रखि बाजल-

"एतबेटा बातले तूँ एते बेथाएल छेँ? तूँ हमरा पढ़ल-लिखल आदमी बना दुनियाँक बीच ठाढ़ कऽ रहल छेँ, जेतए बनियौं-वेकाल बजैए जे 'साए भरि सोना नै नीक एकरती बुधि नीक।"

सुचित्राक तोष भरल बात सुनि निर्मला काकी बजली-

"बुच्ची, जे सुइत तोराले रखने छेलौं, ओ माए देने छल, माइयोकेँ माइए देने छेलखिन। धरोहर छल। अनका जकाँ अखन तक चोर-डकैतसँ भेँट नै हुअ देने छेलिऐ, मुदा वन्हकीदारक भाँजमे चीज चैल गेल।"

माइक विचारक तड़ी देख सुचित्रा आरो तरसँ बमकोला दैत बाजल-

"माए, इतिहास बजैए, आइए नै सभ दिनसँ धनक बैमानी-शैतानी होइत रहल अछि, तोरो भेलौ। हमरे दइतें किने, मन मानि गेल जे तूँ देलेँ, हम लेलौं।"

सुचित्राक विचार सुनि निर्मला काकीक मन चौदहो भुवनक सातम सीढ़ी पार कऽ गेली। आठम सीढ़ीपर पएर रखि बजली-

"बुच्ची, भुमकममे बुड़हाक देहपर घर खसि पड़लैन। ओही इलाज करबैमे सुइत बन्हकी लगेलौं। अही आशापर लगौने रही जे जहिया सुचित्रा बिआह करै-जोकर हएत तहिया ने काज हएत, ताबे बेगरता सम्हारि लइ छी। मुदा डकैती कहि सुइत बेइमानी कऽ लेलक।"

माइक बात सुनि सुचित्रा बाजल-

"अहीले एते सोग करै छेँ, चोर-बैमान चोरे-बैमान रहत, साउध-साउधे रहत।"

OO

17 जुलाई 2014, शब्द संख्या- 1135

मरूभूमि

जहिना मनुखक तीन अवस्था- सूतल, जागल आ सपनाएल- होइए, तहिना भूमिक सेहो होइ छइ।

कौलेजक छात्रा गीता जेहने जागल तेहने रीता मरियाएल, मुदा दुनूक दियादी परिवार तँए घनिष्ठता बेसी। बेसी घनिष्ठताक आरो-आरो कारण छै, एकठाम घर सेहो छै, बच्चेसँ, जहियेसँ स्कूल जाए-आबए लगल आ एक्के किलासमे नाओं लिखा पढ़ए लगल, तहियेसँ दुनू स्कूलक संगी बनि आरो घनिष्ठताक घनत्वकेँ बढ़ौलक। ओना दियादीक डाह सेहो होइ छइ। माने कटा-कटी, मारा-मारी, गारा-गारी, मुदा से रीता-गीताक परिवारक बीच कहियो ने रहल, तँए दुनू बहिन रीता-गीताक बीच किए हएत।

एक तँ ओहुना गामो-समाजमे बेटाक अपेक्षा बेटीक बीच घनिष्ठता बेसी होइए, तहूमे दुनू पढ़बो-लिखबो करिते अछि। ओना एकरंगाह वेपारियो आ गिरहस्तोक बीच जिनगीक दौड़मे मुँह फुल्ला-फुल्ली होइए जे से एक-दोसरसँ आगू बढ़ैले किछु उचित अनुचित भाइए जाइ छै, मुदा तैयो आगूक दिलाशामे प्रतियोगिक रूप पकैड़े लइ छइ। से एके दिस नै, दुनू दिस पकड़ै छइ। उचितो दिस पकड़ै छै आ अनुचितो दिस।

दुनूक अपन-अपन लक्ष्य सेहो छइ। तँए कि सभ वेपारियो

आकि सभ गिरहस्तोमे अहिना रहै छै? नै! एना रहबो केना ने करत? सभ दिनसँ होइत आएल अछि जे फनिगा[3]केँ चुट्टी बीछि-बीछि खाइ छै, चुट्टीकेँ बीछि-बीछि बेंग, बेंगकेँ बीछि-बीछि साँप आ साँपकेँ गरूड़, तँए ने पर्यावरण नियंत्रणमे अछि। तहिना जँ छोट वेपारीकेँ आकि गिरहस्तेकेँ मझोलका नै बीछि-बीछि खाए, मझोलकाकेँ पुरलाहा नै खाए, पुरलाहाकेँ परपुरलाहा नै खाएत, तखन पर्यावरण नियंत्रणमे रहत केना! बच्चेसँ दुनू दियादी बहिनक बीच रहल जे जखन जे काज करै छी तखन तहीपर नजैर गड़ा करब, जइसँ दीन दिन दिनो-दिन नीक बनैत जाएत। नीक आकि अधला केतौ एकेबेर हड़-हड़ा कऽ थोड़े भऽ जाइए, ओ तँ होइत-होइत होइए। दुनू दुनूक बीच सम्बन्ध बच्चेमे एहेन बनि गेल जे बिना संग केने इस्कूलो ने जाइत। भलेँ तैयार भेलो पछाइत किए ने एक-आध घन्टा बिलमए पड़इ। मुदा से कोनो अधला नहि। निरर्थक घोड़-दौड़मे समैक महते की रहैए, जे अनेरे कियो समैक नाँगैर पकैड़ दौड़ा-दौड़ीमे हकमैत रहत।

घरसँ बहराइते दुनूक बीच एहेन बनि गेल छै जे बाटमे जेकरे नजैर कोनो नव वस्तुपर पड़तै तँ ओ ओकरे जिनगीक खेलौना बुझि एक-दोसरकेँ पुछि, बक-झक करैत एक सीमापर अँटैक एक राय बना सीमान दऽ दइए।

जेना-जेना विद्यालय घुसकैत गेल तहिना-तहिना रीता-गीताक जिनगी आ जिनगीक विचार सेहो घुसकैत गेल। आब, दुनू कौलेजमे पढ़ैए। घरेक गोसाउनिक गीतटा नै भूगोल पढ़ि दुनियोँक गप-सप्प करए लगल अछि।

जहिना घरसँ स्कूलक रस्तामे निकैलते कोनो वस्तुकेँ ज्ञान बुझि धियानक करखानामे दुनू औंट-पौर दूधकेँ दही जन्मबैत। ओना बच्चेक

[3] छोट-छोटकेँ किड़ी-फतिंगी

विद्यालयसँ दुनू भूगोल पढ़ने, मरूभूमिक चर्च किताबोमे देखने आ कानोसँ सुनने। मुदा भूगोलमे दुनू ओही दिनसँ भरैम गेल जइ दिन किताबमे पढ़लक जे दुनियाँ गोल छै, आँखिक सोझमे उतरे-दछिने आकि पूबे-पछिमे खूब नमती धरती छइ। ऊपर अकास छै तँ ने ओकरे ठेकान छै जे केते ऊपरमे अछि आ ने तरे दिस पताल छै तँ केते तरमे अछि। एक भग्गू नाप, मानि दुनू एक राय बना नेने छल जे किताबक बात दोसर होइ छै आ आँखिक सोझक बात दोसर। तँए मरूभूमिकेँ किताबक बात मानि दुनू गोरे ओइ कौंपीक पन्नामे लिखि कऽ रखि लेलक जे भूगोलक छेलइ। दुनू आइ कौलेजक किलासमे नव सिरासँ मरूभूमि सुनलक।

ओना किलासक मरूभूमिक चर्च पहिल दिन भेल तँए प्रोफेसर साहैब मरूभूमिक भूमिके बान्हि वर्ग-विसर्जन केलैन। सेहो भूमिका साहित्यक भूमिका जकाँ नै, भूगोलक भूमिके की हएत। मुदा भूमिकेमे रीतो आ गीतो मरूभूमिक ऐंगले आखरमे चोन्हिया गेल, तँए नीक जकाँ दुनूमे सँ कियो ने बुझलक। मुदा तैयो मनमे सबूर बन्हलक जे आइ भूमिके ने छल, असल तँ आगू औत तँ अनेरे मनहूस किए करब। अखन हूसबे केते कएल हेन।

पहिने प्रोफेसर साहैब भूमिके देलखिन, आगू आरो कहथिन जे बुझैमे नै औत से पुछि लेबैन, पछाइत ने अन्तिम सीढ़ीपर पहुँचब। छुट्टी होइसँ पहिने दुनू दुनूक ताक ताकि आँखि-मिलौनी कऽ मनमे प्रश्न रोपि-गाड़ि लेलक। एक्केक नाओं रोपब आ गाड़ब दुनू छी। एकटा भेल कोनो गाछकेँ माटिमे गाड़ब, आ वएह भेल रोपब।

छुट्टीक घण्टी बाजल। दुनू किलाससँ निकलल। विद्यार्थीक जेरक बीचसँ जहिना रीता एकबाहि होइत गीता दिस बढ़ल तहिना दोसर दिससँ गीतो कनछियाइत रीता दिस भेल। एकठाम होइते दुनू

एकान्त बुझि गप-सप्प करैक स्थान चुनलक। एकान्ते स्थलमे ने जोगियो दुनियाँ देखैए आ भोगियो। मुदा से नै रीता-गीता दुनू संसारिक मनुख, तँए अपन जीवनक लेल सुनल प्रश्नक उत्तर तकै दिसक विचार करैत रहए। प्रश्नक उत्तर तकैमे बाट-घाट सेहो ताकए पड़ै छै, जे कोनो चिकनो होइ छै आ कोनो उबरो-खावड़बला।

ओना, जहिना रीता गीताक चेहरा देख-देख परखैत जे बात सुनै-जोकर मन खनहन छै आकि नै, तहिना गीतो रीताकेँ परैख लेलक। दुनूक अपन-अपन बात मनमे उज-मारि करै जे पहिने हम आगू हएब तँ पहिने हम। बात रहै जे रीताक मनमे 'भूमिका' शब्द ओझराएल आ गीताक मनमे 'मरूभूमि' शब्द। ओना प्रश्नोक दू सोभाव होइ छै, एक होइ छै जानैक खियालसँ आ दोसर होइ छै जँचैक खियालसँ।

मुदा से जहिना कोनो थलकमल गाछक डारि एके दिन जनैम संगे बढ़ैत संगे फुलाइए तहिना दुनू गोरेक बीचक सम्बन्ध, तँए दोसर कोनो मलिनता नहियेँ। दुनू अपन-अपन बजैक सूर मिला सुनिनिहार दिस देख आँखि उठा-उठा एक-दोसरकेँ देखलक। तानी-भरनी मिलते रीता बाजल-

"बहिन गीता, हम-तूँ तँ ओहिना ने छी जेना रीतक संग गीत चलैए आ गीतक संग रीत।"

रीताक बातमे गीता हूँहकारी भरलक। किएक तँ मन इशारा कऽ देलकै जे एके-हूँहकारीमे रीता गदगदा जाएत जइसँ अपन प्रश्न अगुआ लेब। गरो सुतरलै। हूँहकारीक हिल-हिली खतमो ने भेल छेलै तइ बिच्चेमे गीता बाजि उठल-

"मरूभूमि की?"

अपन पछुआइत प्रश्नक समए देख रीता बाजल-

"बहिन, जहिना तोहर प्रश्न तहिना हमरो मनमे एकटा उचड़ैए।"

जखने प्रश्नपर-प्रश्न लधाएत तखने कोन केहेन रहत आकि सभटा बेदरंग भऽ जाएत तेकर कोन ठेकान छइ। मुदा प्रश्नक उत्तर होइत जँ प्रश्न चलत तँ ओ चलन्त प्रश्न भेल जे उचितो छइ। अपन प्रश्नपर दोहरी जोर दैत गीता बाजल-

"बहिन, समए केतौ पड़ाएल नै जाइ छै, अखन कौलेजसँ निकलबे केलौं अछि, प्रश्ने केतेटा अछि जे घर तक पहुँचैमे नै फड़िछाएत।"

रीताक मनमे होइ जे पहिने भूमिकाक चर्च जँ नै हएत तब तँ गड़बड़ाएत, मरूभूमि तँ ऐगला भेल। पहिने कोनो चीज जन्मत तखन ने मरत। जँ मरले जन्मत तँ मरले-जन्म ने भेल। तँए अपन प्रश्नकेँ अगुआएब नीक बुझैत। गीताकेँ नै चाहितो रीता अपन प्रश्न रखलक-

"भूमिका की?"

प्रश्न सुनि गीता समगम होइत बाजल-

"बहिन, जेहने प्रश्न अहाँक तेहने हमरो। जहिना अहाँ सुनलौं तहिना हमहूँ सुनलौं। भरि बाट अहूँ औंटू आ हमहूँ औंटै छी, जेते औंट लागत तेते रस गढ़ाएत।"

समुचित बात सुनि रीता विचार मानि बाजल-

"बड़ बढ़ियाँ।"

कहि चुप होइत मरूभूमि दिस नजैर देलक। एक भेल जीवित भूमि, दोसर भेल मरूभूमि। मुदा अपन प्रश्न अछि भूमिका। पहिने भूमिक चर्च हएत तखन ने ओकर मरन-जिअनक।

जहिना रीता चुपी लाधि देलक तहिना गीतो लाधि लेलक। धिया-पुताक खेल जकाँ चुप्पा-चुप, धुप्पा-धुप पसैर गेल। मुदा मन

औना गेलइ। साँपक बीख झाड़निहार मनतरिया घरसँ निकैलते अपन देहकेँ भूमि मानि बान्हि बजैए, 'जल बान्हो, थल बान्हो, बान्हो अपन काया...।' आब ऐठाम की बुझब। दोसर दिस देखै छी जे भूमिके बान्हि घटक सभ दिन-राति गरदैनकट्टी करैए।

कौलेजसँ घर दुनू पहुँच गेल मुदा केकरो उत्तर भेटबे ने कएल। अँगनाक रस्ता जैठाम फुटै छै तैठाम आबि गीता बाजल-

"बहिन, उत्तर नै भेटल तँ नै भेटल, कौल्हुका समैयो तँ पछुआएले अछि। तइले विद्यालयकेँ थोड़े अबलट जोड़ब जे केकर मुँह देख विदा भेलौं जे जतरे खराप भऽ गेल। घरसँ विद्यालय गेलौं विद्यालयसँ घर एलौं, जँ अहिना जिनगी चलैत रहए, तँ ऐसँ आगू की चाही।"

गीताक विचार सुनि रीता हूँहकारी तँ भरि देलक मुदा मन झुरझुराइते रहलै। मनो केना नै झुरझुरइतै? पहिने जी आकि पहिने दाँत? देखलो पछाइत तँ लोक बजिते अछि जे जी-दाँत देख पसिन करू। मुदा तैयो मनकेँ थीर करैत रीता बाजल-

"बहिन, खुरपी लेमे आकि बेंट?"

रीता-

"हमरा-तोरा काल्हि कौलेजमे प्रोफेसर साहैबक सोझहामे अपन-अपन प्रश्नक हएत भेँट।"

मुस्कियाइत दुनू गोरे मुहथैरसँ आगू बढ़ल।

ooo

20 जुलाई 2014, शब्द संख्या- 1214

असगरे

साइठम बर्खक अन्तिम दिन आ एकसठम बर्खक पहिल दिनक सीमानपर बैस अभया दीदी असगरे अपन कोठरीमे सालक जन्म-मृत्युक उपलक्षमे साल गिरह मना रहल छैथ।

साठि सालक बीतल जिनगीमे दोसर परिवारकेँ अपना सन नै देख, मने-मन कुहसि रहल छैथ। जइसँ अपनापर क्षोभ भऽ रहल छैन जे जिनगीक चारिमपनमे पएर रोपि रहल छी, मुदा एतेटा जिनगीमे की पेलौं? तँ किछु ने। की केलौं? 'तँ सभ कुछ।' किए ने पेलौं? 'सएह ने बुझहै छी!'

अपन जिनगीक बीच अपन काज मनमे औंढ़ मारि रहल छैन। समाजक पहिल महिला छी, जे बी.ए. पास कऽ सरकारी कार्यालय सम्हारि चुकल छी, अपन अध्ययन-मनन एहेन रहल जे एक नै हजारो-लाखो परिवारकेँ बाट-घाट देखा बटोही बना भवसागर टपा सकै छी, मुदा भेल की? भरिसक ई ने तँ भेल जे चरित्रवानसँ आचारवान आ विचारकसँ विचारवान होइत एते ने कियो अगुआ जाइए जे असगरे गाछक फुनगी जकाँ सभसँ अलग भऽ टपि जाइए। मुदा सेहो तँ ओइ दिन ने विचारितौं जइ दिन समाजक बीच एकटा नव जिनगीक सूत्र-पात केलौं? मुदा पढ़ल-लिखल रहितो समैक गतिकेँ किए ने बुझि पेलौं? भऽ सकैए जे जइ सूक्ष्म दृष्टिसँ समैक गतिकेँ पकड़ल जाइए,

भरिसक से दृष्टिए ने खुजल। विचारसँ बिसबिसाएल अभया दीदीक मन घोर-मट्ठा भऽ गेलैन। मनमे किछु एबे ने करैन जे हारल जिनगीकेँ आब केना सम्हारब। तैबीच मनमे ईहो होइत रहैन जे फुटा कऽ घोर आकि मट्ठा पीबैसँ नीक दूधे पीब ली। मुदा बिनु बूझलमे हूसल तँ ओकरा माफो कएल जा सकैए। जानल-मानलमे हूसब तँ कायरता भेल। जेना-जेना कुशियारक रस पानिसँ गुड़ वा राब बनैए, गुड़सँ चीनी बनि सकताइत जाइए आ मिसरी बनैत-बनैत पाथर जकाँ सक्कत भऽ जाइए, तहिना ने अपनो लूरि-बूधि अछि। दोसर संग पुरैबला नै होइक कारण केतौ एहेनठाम ने तँ नुकाएल अछि जे नुकाएले-नुकाएल फगुआ जकाँ समाजोक संग धूर-खेल करैए। अभया दीदीक विचार ललकलैन-

"जीता जिनगी हारि मानि हटब रणभूमिसँ भागब भेल। जँ जिनगी रणभूमि नै पहुँच कर्मभूमिसँ हटि चलत तँ वीरभूमि केना पहुँचत? नै! पाछू नै हटब, सुचालि छोड़ि कुचालि नै चलब।"

छोट-छीन गाम अभयपुरमे अभया दीदीक जन्म भेल। माता-पिता एहेन जे परिवारक जे कोनो काज करैथ, दुनू परानी विचारि कऽ करैथ। ओना एहेन कोनो दिन आकि कोनो नव काज नै होइत जइमे माता-पिताक बीच रस्सा-कस्सी नै होइन। जे से परिवारक गाड़ीक धुरी पटरी पकैड़ चलैत। पाँच बर्खक जखन अभया दीदी रहैथ तखन माता-पिताक बीच एके दिन नै महिनो दिन फरिछाइमे लैग गेल रहैन जे अभयकेँ स्कूलमे नाओं लिखौल जाए की नै? दुनू बेकतीक अपन-अपन सोचक हिसाबसँ धारणा बनल। पिताक धारणा ई जे समाजिक परिवेश एहेन बनि गेल अछि, जे ज्ञानक कोनो मूल्य नै रहि गेल अछि। तँए बेटी-जातिकेँ अनेरे पढ़ाएब हएत। ऐना जकाँ विचार झलकैत

रहैन। विचारकेँ ई झलकबैत रहैन जे जे पिता पनरह-बीस लाख रूपैआ खर्च कऽ बेटीकेँ डाक्टर बना दुनियाँक बीच ठाढ़ करै छैथ, की हुनका तीस लाख रूपैआ बिआहमे नै खर्च करए पड़ै छैन? तखन तँ अनेरे ने पढ़ाएब भेल। मुदा माइक धारणा अलग रहैन। हुनकर धारणा रहैन जे जहिना पढ़ल-लिखल पुरुख बिनु पढ़ल-लिखल महिलाकेँ अपन मनोनुकूल बना परिवारकेँ आगू बढ़ा सकै छैथ तँ महिलो किए ने कऽ सकै छैथ। मुदा महिनो रस्सा-कस्सीक पछाइत फरिछा गेलैन जे अभयकेँ स्कूलमे नाओं लिखौल जाएत।

बच्चेसँ अभया दीदी पढ़ैमे चन्सगर। पढ़ैक प्रति आन विद्यार्थीसँ दीदीक बेसी झुकाउ। अठारह बर्खक अवस्थामे बी.ए. पास केलक। बी.ए. पास केला पछाइत माता-पिताक बीच फेर विचारक रस्सा-कस्सी शुरू भेलैन। रस्सा-कस्सी समयानुकूल रहैन तँए जड़ि सक्कत छल। हल्लुक-फल्लुक जड़िबला गाछ बिनु ओजारोक उखाड़ब असान होइए मुदा डभियाएल खेतक लजबिजीक गाछ उखारब तँ असान नहियेँ अछि। खड़ौआ जौर जकाँ दु-गुनियाँ बानि तँए दूटा प्रश्न दुनूक बीच लटपटाएल वा ऐंढ़ाएल छल। पहिल प्रश्न बिआहक उमेरक रहैन, दोसर नोकरीक। अभया दीदीक बिआहक गप जखन उठल तँ पिताक विचार पुरान पद्धति दिस दौगल रहैन। जहिना कन्याँक उमेर दस बर्खसँ ऊपर तहिना तँ बरोक अछि। ई प्रश्न चारि-पाँच साल पहिने उठि गेल रहैन, मुदा पढ़ाइक कारणसँ प्रश्न टरा गेल रहैन। आब तँ अभया दीदी जिनगीक एक सीमापर पहुँच गेल छैथ, तँए ऐगला-पैछला सभ विचार उठबे करत। उमेरक हिसाबमे माइक विचार अधुनातन छैन। अधुनातन ई छैन जे पढ़ै-लिखैक जिनगी पहिल भेल, मुदा पढ़ला-लिखला पछाइतक सीमा की हएत। जिनगी एक मोड़पर आबि जाइए। आइक समाजिक परिवेशमे कियो ई थोड़े बुझए चाहैए जे पढ़ै-लिखैक माने भेल, हम ओहेन मनुख बनि सकै छी जे दुनियाँक

कोनो कोणमे रहि जीवन बसर कऽ सकै छी। मुदा नोकरी पाछू दौगनिहारक नजैर थोड़े एतै अँटकै छइ। माइक विचार रहैन जे बेटा-बेटी जहिया अपन-अपन पैरपर ठाढ़ भऽ जाए से बिआहक सीमा भेल। जँ ऐसँ पहिने सीमा देब तँ पढ़ौला-लिखौला पछाइत बिआह कऽ देब, कमाइक गर नै लगने, जिनगी भरि माए-बाप गारि सुनैत रहह। जे बच्चासँ पोसि-पालि, पढ़ा-लिखा जवान बना दुनियाँक अखराहापर पहुँचा देलैन, से किछु ने केलैन आ दहेजुआ गारि जिनगी भरि सुनैत रहथु।

बिआहक प्रश्नपर दुनू गोरे राजी भेला जे बिआहक लगन ऐगला साल फागुनमे अछि, अखन सरकारी शिक्षा विभागमे जिला स्तरक अफसरक बहाली भऽ रहल अछि, महिला आरक्षण अछि। ओ खालीए किए रहत तँए अभयाकेँ नोकरी करए कहियौ। माता-पिताक विचार सुनि अभया दीदीकेँ ह्रदैमे चोट लगलैन। ओहेन चोट लगलैन जेहेन चोटक पछाइत वृन्दावनक कदमक गाछ डोलि जाइए। मन-मन्दिरक भगवान अभया दीदीक कलैप उठलैन। कलैप ई उठलैन जे जँ हम स्वतंत्र जिनगी जीबए चाहैत होइ तखन?

मुदा जइ धरतीपर बिनु पढ़लो-लिखल बेटी-जाति माए-बापक विचारक पालन आँखि मूनि करैत आएल अछि तैठाम बी.ए. पास छी। नै मानने पढ़ल-लिखल समाज कलंकित हएत। अभया दीदी नोकरी करैले राजी भऽ गेली। जिला पदाधिकारिणी रूपमे अभया दीदी नोकरी शुरू केलैन। मुदा मन-मन्दिरक ज्योति अवसरक ताकमे लैग गेलैन। नोकरी भेला पछाइत अभया दीदीक बिआहक गप उठल। अखन धरि माए-बाप तँ ई नइ बुझि पेलखिन जे अभयाक गरदैनमे फँसरी लैग रहल छइ। फँसरी ई जे जिला शिक्षा पदाधिकारिणीक बिआह केहेन बरसँ हौउ। तहूमे तेहेन-तेहेन तितम्हा अछि जे महिलाक

नोकरीक विरोधी सेहो अछि, ओ केना अपन नोकरनी[4]केँ सरकारी नोकरनी बनए दिअ चाहत। खाएर जे से...।

प्रोफेसरक संग अभया दीदीक बिआह भेलैन। अभया दीदी आठ बर्ख नोकरी कऽ चुकल छैथ। समैक संग उठा-पटक करैत अभया दीदीक माइयो-बाप बिआहक पछाइत बीरान जकाँ भऽ गेलैन। एकटा तीन बर्खक बेटा सेहो छैन। युनिभरसिटीक काजसँ घुमैकाल गाड़ी एक्सीडेन्टमे प्रोफेसर पतिक मृत्यु भऽ गेलैन।

ऑफिसमे बैसल अभया दीदी निर्णए केलैन जे आइ नोकरी छोड़ि देब। मुदा जाएब केतए आ रहब केतए। एकांगी परिवार भेने वैधव्य जीवनक दशा समाजमे की अछि, ओ तँ वएह बुझै छैथ। आनकेँ फिकिरे की? माए-बापक परिवारमे बेटीक की गति भऽ रहल अछि, ऐ बातकेँ अभया दीदी नीक जकाँ बुझै छैथ। कारण, केते शास्त्र-पुरान भीतरे-भीतर खिस्सा-पीहानी गाबि रहल अछि।

बुझै ई छैथ जे दिन-रातिक सीमानपर साँझ-भोर अवाज निकलैए जे 'धी-जमाए भगिना ई तीनू ने अपना।' 'धी' नाओं मनमे उठिते अभया दीदी अभयदानी जकाँ 'धी'केँ 'घी' बनौलैन। बनौलैन ई जे सासुरक बास अनुचित हएत। अनुचित ई हएत जे तीन भाँइक परिवारमे सासुर अछि। जमीन-जत्थाबला परिवार। अपन जमीन-जत्थाक[5] माश्चर्य ऐछे नै आ अनेरे सासुरक भैयारीमे फसाद ठाढ़ करब नीक नहि। जइ परिवारक जीवन-संगी हेरा गेला, ओइ परिवारक सम्पैत परिवारेकेँ भेलैन। हमरा कोनो मतलब नहि। फेर मन अपन जन्मभूमिमे माए-बापपर एलैन। जे कलंक बेटी-जातिकेँ नैहरक परिवार लगा चुकल ओकरो तँ नै बिसरल जा सकैए। तखन? एक तँ

[4] पत्नी-पुतोहु
[5] नोकरी

ओहुना माता-पिताक परोछ भेने नैहरक सम्बन्धमे कमी अबिते छइ। तहूमे तेहेन-तेहेन नवका-नवका कानून सभ बनि गेल अछि, जे अनेरे भाय-भौजाइक मनमे हेतैन जे कनूनिया एने कनसार बनबे करत जइसँ बलुआएल भूजाक दर्शन तँ हेबे करत, मुदा परिवारक सम्पैतमे उड़ी-बीड़ी लैग जाएत। अनेरे किए ओइ परिवारकेँ जे स्नातक बना अगुऔलक, तेकरा कोनो तरहक अवघात करिऐ। ओना, जे धारणा समाजक बनल अछि ओ धारणा भाए-बहिनक बीच सम्बन्ध बिगाड़ैबला अछि, जेकरा कोनो रूपमे नीक नहियेँ कहल जाएत। एक तँ ओहुना मनुख वंशक छी तैठाम सहोदर भाए-बहिनक बीच मलिनताक गाछ बीच बाटपर होइ तँ ओकरा हटा कात करबे नीक हएत। मन तुरुछलैन। तुरुछलैन ई जे बहिनक बास जँ अधले होइत हौउ, तँ कुलपूज बना किए बसौलो जाइए? अनेरे समुद्र उपछै पाछू मन बौआइए। अपन माए-बापक परिवारकेँ जेते लोक अधजरूआ खोंरनीसँ खोंचारत ओ खोंचारह, मुदा हम से नै करब। परिवारे नै समाजो तँ नैहरेक छी, समाजक बीच थोड़े कोनो सम्बन्धक विभेद अछि जे समाजमे रहैसँ मनाही करत। नैहरक परिवार, भाए, बहिन, बाप-पित्ती, दाद-दादीक सम्बन्ध स्थापित करैत, जखन कि सासुरक परिवार पत्नी-पुतोहु इत्यादिक। एक जेतए हास्य-विनोद स्थल अछि, दोसर तेतए हास-परिहासक। दुनियाँ बड़ीटा छै, बहुत रंगक माथा टेकने छै, अपन माथ किए ने सोझ-साझ रखि चली। मन थीर भेलैन। आगू जिनगीक नक्शा बनबए लगली।

मानि लइ छी आइ नोकरी छोड़ि देलौं। मनक लिलसा जे अछि ओकरा पुरबैले समाज दिस बढ़ए चाहै छी। नोकरी जाएत आमदनी जाएत। मुदा पतिक एक्सीडेन्टक जे सरकारी अनुदान भेटल ओ तँ अप्पन भेल। हँ, भेल। गामक बिच्चेमे पाहीपट्टीक झगड़ौआ कचहरीबला जमीन अछि, सस्तेमे पैटो जाएत आ मुराममे चासो बास

भऽ जाएत। कम्पन्न जेते कमैत जान्हि तेते मन थीर होइत जान्हि। अढ़ाइ-तीन बीघा जमीन भेने, तँ बहुत किछु आगू बढ़ि कएल जा सकैए। चारि बजे अभया दीदी नोकरी छोड़ैक कागत ऑफिसमे दैत सड़कपर एली। सड़कपर अबिते जेना नमहर साँस छुटलैन। दलालीक जुग छी, किछु लेन-देनमे हेरा-फेरी हएत, मुदा काजो तँ कम्प्यूटरेसँ होइ छइ। सएह भेलैन। तीन बीघा जमीन अभया दीदी कीनि लेलैन।

जमीन कीनला पछाइत अभया दीदीक नजैर खेत दिस बढ़लैन। बेटाकेँ किसानी जिनगी जीबैक लूरिक पाठ पढ़ौलैन। एग्रीकल्चर ग्रेजुएटक रूपमे बेटाकेँ देखए चाहली जइमे असीम सम्भवना भेटलैन। मुदा ओइ सम्भावना लेल तँ केतौ-ने-केतौ क्रियाक रूप धड़ए पड़ै छइ। जेते खेत छैन तेतेकेँ ओ समुचित बेवस्था करती। अपनासँ लऽ कऽ खेत-पटबैक ओरियान करती, नीक बीआ, नीक खाद आनि खेती करती। मुदा केते करती काजेमे हरा जेती।

जाबे धरि अभया दीदी अपन सभ बेवस्था गाममे ठीक केलैन ताबे धरि भाड़ाक घरमे रहली, पछाइत नैहरक समाजमे आबि बसि गेली।

आइ अपन जिनगीकेँ नियमित बनबैत अभया दीदी अपना बले गाए पोसि पचास किलो दूध प्रतिदिन पैदा कऽ रहली अछि, मुदा तेहेन अड़ोस-पड़ोसमे कहाँ कियो छैन। निठाही असगरे, गाछक फुनगी जकाँ असगरे...।

OO

24 जुलाई 2014, शब्द संख्या- 1557

पुरनी नानी

तीन माससँ पुरनी नानी ओछाइन पकड़ने छैथ। अपने तँ नै बुझि पाबि रहली अछि जे आब ऐ दुनियाँ सँ 'चलचलौ' भेल जा रहल छी। मुदा गाममे सबहक बीच चर्च होइत जे 'पुरनी नानी आब जे दिन छैथ से दिन छैथ।' अपने ऐ दुआरे नै बुझि पाबि रहल छैथ जे बुझिनिहार तँ ओ ने जिनका अपन जन्म कुण्डली आकि जन्म दिनक कोनो लिखल सबूत होइ। से तँ पुरनी नानीकेँ छैन नहि। भऽ सकैए जन्म पतरी होइन।

ओना सबूतो सभटा पकिये होइए सेहो बात नै छइ। सबूतो कचिया होइए। कोनो केसक 'कचिया नकल' थानामे भेटैए। ओना थानोकेँ दोख लगाएब बेइमानी भेल, जेकरा पकियाक अधिकारे ने छै ओकर तँ कचिये ने पकिया भेल। असल कचिया-पकिया तँ ओइठाम होइए जैठाम नोकरी दुआरे कियो, बिआह करै दुआरे कियो आकि अपन अरुदा छिपबै दुआरे कियो जन्म-कुण्डलीक तिथि आ विद्यालयक तिथिमे घटी-बढ़ी कऽ लइए। मुदा सेहो नै, असलमे पुरनी नानीकेँ उमेरक ठेकाने ने रहलैन। रहबो केना करितैन बेवहारक इतिहासक तारीक घटनाक हिसाबे लिखल जाइए, मुदा वैदिक विधि-बेवहारक तारीकक पता केना लागत। जहिना अधला बढ़ैत-बढ़ैत ढेर लैग जाइए तहिना ने नीकोक छइ। नीक तँ नीके भेल, तँए बेवहारो

नीक बनैत जाइए। पुरनियोँ नानीकेँ सएह भेलैन। तँए कि ओ अपन जन्मक आड़ि-धूर नै देने छैथ सेहो बात नहियेँ कहल जा सकैए। केतौ नापि कऽ किलोमीटरक पाथर गाड़ल जाइए, केतौ ठेकानियेँ कऽ बूझल जाइए, ठेकानोसँ तँ बुझले जाइए। पुरनी नानीक आड़ि-धूरक ठेकान ई छैन जे पैछला 'भुमकम' मन छैन जइमे नअ बर्खक रहैथ जे माए कहने रहैन। कहने ऐ दुआरे रहैन जे जखन भुमकममे घर खसि अँगना-वाड़ी सभ एकबट्ट भऽ गेल रहैन, आ माएकेँ सोगाएल बैसल देख पुरनी भुमकमक उथल-पुथल देख हँसैत आबि बाजल-

"माए, आब की हेतै?"

जेना माथपर मोटरी रहितो, दोसर-तेसर-चारिम मोटरी चढ़ए लगैत आ उठौनिहारकेँ जे गति होइत हौउ, तही गतिमे माए पड़ैत गेली। जेना-जेना 'पड़ैत' गेली तेना-तेना आँखिक सोझमे रौतुका तरेगन बेसियाइत गेलैन। बेसियेबो तँ उचिते छेलैन, जँ तृतीया अन्हारसँ चौठक अन्हार बेसी नै हुअए तँ तृतीया चौठ केना हएत। माएक मन पुरनीक मुँहपर पड़लैन। पड़िते दुनू ठोर विदैक गेलैन। जहिना नचारी, वेवसीमे केकरो होइ छइ। 'विदैक' ई गेलैन जे सभ किछु प्रकृति प्रदत्त चलैत रहत तखने पर्यावरण अनुकूल रहत, नै तँ जहिना कहियो भुमकम हएत, तँ कहियो अकाल पड़त। जखन बच्चा जन्म लइए तखन ओकर उचित देख-भाल हौउ, बच्चाक संग जच्चाकेँ होइन, तहिना विद्यालय जाइ-जोकर जखन बच्चा भऽ जाए, तखन ओकरा विद्यालयमे दाखिल करौल जाए। इत्यादि-इत्यादि।

भवलोकमे उमड़ैत-घुमड़ैत माइक मन पुरनीपर एलैन। पुरनी नअ बर्खक भऽ गेल, भुमकम सभ कुछ खसा-पड़ा, ढाहि-ढनमना देलक अछि। तीन मासक पछाइत पुरनीकेँ दसम बर्ख चढ़तै। दसम बर्खक पछाइत बालामे सियानापनक शक्तिक उदय होइ छइ। केना

पुरनीक बिआह करब पार लागत। भुमकममे जेते नोकसान भेल ओकरे पुरबैमे केते दिन लागत, बिना पुड़ेनौं जिनगीक गाड़ी आगू मुहेँ ससरत केना? तैबीच माइक दुनू ठोर विदकैत मसैक गेलैन। मसैकते मुँहक पट खुजलैन। पट खुजिते अपन मनक मोटरी मोनेमे रखि बजली-

"दाइ पुरनि, तोहूँ आब नअ बर्खक भेलह।"

माइक कहल वएह 'भुमकमक दिनक नअ बरख' जोड़ि पुरनी नानी अपन औरुदाक ठेकान केने छैथ। मनमे अस्सी बर्ख ऐबतैन तखन ने बुझि पड़ितैन जे अस्सीक पछाइत खस्सीक जान जाइते छै, हमरो जाएत। मुदा से तँ खुदरा-खुदरी हिसाब रहैन; 1934 ईस्वीमे भुमकम भेल..., तइ दिनमे नअ बर्खक रही..., अखन 2014 छी...। उमेरक थाहे ने रहैन, तँए रोग-सजिया नै बुझि अरम-सजियाक समए बढ़बए लगली। ओना अरम-सजिया देहक संग-संग मनोकेँ अरमबैत रहैन। करनीक धरनी रहै वा नै रहै मुदा अरमान तँ असमान दिस बढ़बे करत। जहिना सभ तहिना पुरनियोँ नानी ने छैथ तँए हुनको मनमे हुअ लगलैन। मुदा जेना-जेना बैसारी बढ़ैत गेलैन तेना-तेना काजक दुनियाँ 'घटबी' होइत गेलैन। मुदा चिन्तो अनेरे किए करितैथ, आब कि कोनो मनोरथ रहलैन जेकरा सवारी बना चढ़ितैथ। आब तँ मात्र पाँच कौर 'अन्न' आ पाँच हाथ 'वस्त्र' भेट जाए, भऽ गेल जिनगी। मुदा जिनगियो तँ धराह अछिए। दुनू दिस बहैए। एक दिस 'देवगण' गनगनाइए तँ दोसर दिस 'दानवगण'। बीचमे पड़ल मानव 'दानव दल'मे नाओं लिखौत आकि 'देवन दल'मे। दल तँ दले छी कखन हवा-विहाड़िमे उधिया कऽ उनट-पुनट भऽ जाएत तेकरो ठेकान नहियेँ अछि। जेना-जेना पूर्णिमा पबैले पनरहो दिनक तिथि नमैर-नमैर ठेंगी जकाँ बढ़ैत रहैए तहिना पुरनियोँ नानीक मन अपन जिनगीक खिस्सा-पिहानी

सुनबै दिस बढ़लैन। मुदा अमावसक अन्हार जकाँ नानीक ‘समए’ बदलए लगलैन। बदलए ई लगलैन जे मनक जे ‘मनियाँ’ रहैन ओ कमैत गेलैन। जहिना सभ लीलाधारी अन्तिम समैमे ‘राम नाम’पर पहुँच जाइत तहिना पुरनियोँ नानीक मन मानि गेलैन जे अनेरे एतेटा जिनगीमे समुद्र उपछलौं, जखन कियो ने किछु लऽ कऽ आएल आ ने लऽ कऽ जाएत, तखन अनेरे ने ‘हाइ-हाइ’ केलौं।

दू मास ओछाइन धेला पछाइत जखन पुरनी नानीक गिरह-गाँठ जकड़ए लगलैन तखन अपनो मन कनी-मनी मानए लगलैन जे भरिसक ‘बुढ़’ भऽ गेलौं। बुढ़केँ तँ एकेटा काज बाँकी रहैए, ओ छी ‘मरब’। जखन सभ मानिते अछि तँ हमहूँ मानि गेलौं, जे बुढ़ भऽ गेलौं, राजा दशरथकेँ कानक ऊपर, माथक पजरवाहिमे, एकटा केश पकिते तुलसी बाबा बुढ़ घोषित कऽ देलखिन आ हमर तँ सौंसे माथे पटुआक सोन जकाँ झलकैए। दरभंगा अस्पताल ताबे नै ने बनल रहै जे पाँच बर्खक धिया-पुताकेँ पाकल केश तुलसी बाबा देखतैथ। दू मास बीतैत-बीतैत पुरनी नानी अदहासँ बेसी जिनगीक खिस्सा-पिहानी बिसैर गेली। ओना अहू दुनू मासमे, जहियेसँ पुरनी नानी ओछाइन दिस बढ़लथि, गाम-समाजक लोक अपन-अपन असीरवाद लिअ पहुँचए लगली। जइसँ जेते बात मनमे रहैन ओइमे बँटैत-बँटैत घटबियो भेलैन। होइते छै किने खुरपी-टेंगारी तँ ओतबेकाल तक ने भेल जेतेकाल ओकरा धार रहै छै आ काजक रहैए। नै तँ कबारखानाक वौस भेल। आइ पुरनी नानीक तेसर मासक उनतीसम दिन छिऐन। भोरेसँ जिज्ञासा केनिहारिक भीड़ उमड़ए लगल। जे पहिने जिज्ञासा करैत घुमली, ओ भगवानक परसाद बँटिते गेली, ‘पुरनी नानी आब जे क्षण छैथ से क्षण छैथ।’

आरो जिज्ञासुकेँ नौत पड़ैत गेल। पुरनी नानीक ओछाइनिक

चारू भाग जिज्ञासु बैसल। भाय! जिज्ञासु तँ जिज्ञासु छी अनके बातमे अपन बात घोइड़ो दइए आ छानि कऽ निकाइलो लइए।

गामक बेटी सुलक्षणी, कौलेजमे पढ़ैत। गाम आएले छल। लोकक संग ओहो पुरनी नानी लग पहुँचल। ‘चुपा-चुप, धुपा-धुप’ देख सुलक्षणी पुरनी नानीक लगमे पहुँच बाजल-

“नानी, नीनक की हालैत अछि?”

सुलक्षणीक अपन ढंगक प्रश्न। नीनो निरोगक लक्षण छिऐ। मुदा पुरनी नानी आब ओइ अवस्थामे नै, जे सुलक्षणीक प्रश्नक उत्तर दितैथ। कानो बन्न भऽ गेल छैन, सोझे ठोर पटपटबैत सुलक्षणीकेँ देखलखिन, सुनलखिन किछु ने। मुदा अपन मनक बात मनमे उबियाइते रहैन बजली-

“बुच्ची, जे नीक कि बेजए केलौं से लिअ दुनियाँमे रहनिहार, मुदा अखनो एकटा बात नै बुझ्झ पेलौं?”

ओना पुरनी नानी जिनगीक सभ बात बिसैर गेल छेली। मुदा जेना मनक जड़िमे, जनेरक खुट्टी जकाँ रहबे करैन। मरै बखतमे कियो नीक ‘मिठाइ’, तँ कियो नीक ‘फल’, तँ कियो किछु तँ कियो किछु लऽ जिज्ञासा करए जाइते अछि। जँ से नै तँ मरैसँ घन्टा दू घन्टा पहिने एते दान-पुन किए होइए। पुरनी नानीक कानमे मुँह सटा सुलक्षणी पुछलकैन-

“की नै अखन तक बुझि पेलौं नानी?”

ओना कानमे मुँह सटा सुलक्षणी बाजल छल मुदा बहिराएल कान पुरनी नानीक, किछु ने सुनि पेली। अपन मनक मणि फुटलैन-

“बुच्ची, पैछलो भुमकम[6] मन अछि, आ किछु दिन पहिने[7] सेहो

[6] १९३४ ई.क

भेल। जँ एके रंग[8] भुमकम होइ, मुदा ओकर मास अलग-अलग होइ जेना अपना ऐठाम जाड़क समए माटि नमी युक्त रहैए, बरसातमे गील रहैए, आ गरमीमे नमी विहीन रहैए तखुनका, तँ एके रंग क्षति करत।”

एहनो तँ होइते अछि ‘जे बात’ लोक नै बुझैए ओकरा गोपलखतामे दऽ दइए। तहिना पुरनी नानीक बातकेँ जिज्ञासा करैवाली गोपलखतामे फेक, बाजल-

“बुढ़ाड़ीमे अहिना लोकक मन भऽ जाइ छै, जे अनेरो किम्हरोसँ किम्हरो मन छिड़ियए लगै छइ। नानीक माया छुटि रहल छैन। आब हिनकर बात असीरवाद बुझि सिर चढ़ा लिअ।”

मुदा नानीक नै बूझल बातकेँ प्रश्न बुझि सुलक्षणी ‘बारहो मास’ दिस तकलक। तीन साए पैंसैठ दिनक बर्ख होइए मुदा तँए कि ‘दूटा दिन’ एक रंग होइए आकि दू रंग। तही बीच पछुआएल जिगेसा केनिहारि सभ पहुँच गेली। बैसल जमात नानीक पएर छूबि-छूबि विदा भेली। मुदा सुलक्षणीक मन ठमैक गेल। ठमकला पछाइत मन कबुला करा लेलक जे बिनु प्रण-पणक जिनगी, केरा, अनरनेबाक फल जे उच्च कोटिक फल तँ छी मुदा आमक गाछ सन छाती थोड़े हेतइ? तखने मनमे उचरलै गोबरे गोइठा बनि आगिक रक्षा करैए! आकि मुहसँ हँसी फुटलै। मने-मन संकल्प केलक, ‘ऐगला पाठ कौलेजमे पढ़ब।’

OO

27 जुलाई 2014, शब्द संख्या- 1304

[7] १988 ई.क

[8] रेक्टर पैमाना

कटा-कटी

चैत मासक बेरुका समए। आने दिन आ आने जकाँ कामिनी काकी अँगना-घरक काज सम्हारि घासक बेर होइत जाइत देख धड़फड़ाएल छैथ। जाइक समए भेल जा रहल छैन। बेटी कबुतरी दिस तकलैन, तकलैन ई जे आन दिन ओसाराक छाहैर देख अपने रस्तापर पहुँच धूरा-गरदाकेँ बहारि चिक्कन बना, टोलक आनो-आन बच्चाक संग सभ दिन खेलाइए। आइ किए ने ससैर रहल अछि? मुँह फुलौने बैसल अछि! लगमे पहुँच कामिनी काकी बजली-

“कानिनी दायकेँ, आइ किए ने अँगनासँ आसन टुटै छैन। कखन आसन-बासनक ओरियान करती।”

धनियाँ-मिरचाइक संग पीसल मसाला जहिना चुल्हिक तौपर लोहियामे पड़िते आँखिमे कुट-कुटा कऽ लगैत तहिना बाल-बोध कबुतरीकेँ माइक बात कुट-कुटा कऽ धेलक। बाजल-

“खेलाइले नइ जाएब। कटा-कटी कऽ देलक।”

‘कटा-कटी’ बजिते जेना कबुतरीक वृन्दावन दहैल उठल। ठुनकए लगल। जेना केते भारी राज-पाट कबुतरीक छीना गेल होइ तहिना ठुनकी भरैत गेल। दुदिसिया माए कामिनी, आब की करती। बच्चा जखन घरसँ निकैल खेलाइले चैल जाइए आ टोलक बच्चाक

संग साँझ धरि किशुन-कन्हैया जकाँ खेलाइत रहैए, तखने हमरो बाध-बोन जाइक समए भेटैए। बाध-बोन नै जाएब से बनत, बाध-बोन जिनगी देने अछि तेकरा केना छोड़ि देब। मुदा जखन हँसैत बच्चा अँगनासँ निकैल रस्तापर खेलाइले जाइए तखन ई कहाँ बुझैए जे माए आँगनमे नै अछि। तँए बच्चाकेँ बिना वौसने कामिनी काकी केना निकलती। बजली-

“दाइकेँ की भेलैन जे एना फुफुआइ छथिन?”

माइक मुँहक बोल छीनि फुफुआ कऽ कबुतरी बाजल-

“हमरा कटा-कटी भऽ गेल। उ सब नइ खेलाय देत। हमर घर उजारि कऽ फेक देलक। आब केतए घर बनाएब?”

एके साँसमे कबुतरी अपन मनक सभ बेथा उगैल देलक। सुकुमारि बेटी कबुतरीक बोल जेना कामिनी काकीक ब्रज मण्डलकेँ हिला देलकैन। हिला ई देलकैन जे नान्हिटा बच्चा तहूमे अपन कोखिक, तेकरा जँ नै कखिया राखब तँ घरक जात-ढेकी केना चलत। मुदा कबुतरीक प्रश्न तँ तकलीक एकटा सूत नै जे खूस-दे टुटि जाएत। ओ तँ मशीन लागल चरखाक सूत जकाँ अछि जे एकेबेर महजाले तैयार कऽ लइए। टोलक सभ धिया-पुता घर उजारि देलकै। तेहेन-तेहेन हरम-जिद्दी धिया-पुता सभ भऽ गेल अछि जे केकर बात के सुनत। बात नै सूनत, कबुतरीकेँ खेलौ नै देतै, ओकर खेलाइक समए छिऐ केना ओ खेलेनाइ बिसैर जाएत। तखन तँ अपने खेलबियौ, अपने जँ खेलै-जोकर बच्चाकेँ खेलाएब तँ बाध-बोन केना चलत। नै बाध-बोन चलत तँ अन्नसँ लऽ कऽ जारैन धरि केतए-सँ औत।

कबुतरीक दोसर-तेसर बात तँ कामिनी काकीक मनमे पछुआएले रहैन जे पहिलुके प्रश्न तेहेन ओझरी लगा देलकैन जे सर्कसक बाघ जकाँ पिजरामे फँसि गेली। ‘फँसि’ ई गेली जे अखन

हमरेटा नै गामक सभकेँ बाध-बोन जाइक समए छी, बिना माए-बापे कोनो बच्चा केकरो बात सुनत, जखन बाते नै सुनत तखन अपने बाध-बोन केना जा हएत। मुदा आन बच्चा हमरा बच्चाकेँ रस्तापर नै खेलए देत, एकरा तँ कियो उचित नै कहि सकैए। मुदा ईहो तँ ऐछे जे जँ सभ बच्चाक माए-बापकेँ संगोर करि कऽ निवारण करब तखन तँ एकक चलैत सबहक समए लूटा जाएत। विचित्र द्वन्दमे कामिनी काकी उलैझ गेली। हँ-निहँस करैत कामिनी काकी पड़ोसिनीकेँ डेढ़ियापर सँ सोर पाड़ि कहलखिन-

“ऐ पड़ोसिनी, अहाँक बेटी हमरा बेटीक घर-अँगना उजारि कटा-कटी कऽ लेलक। बाध-बोनक समए भऽ गेल, अहूँ नै बरदाउ आ हमहूँ नै बरदाएब। अखन चैल कऽ दुनू गोरे दुनूकेँ बहिना लगा दियौ जे एके अँगना-घरकेँ कनी नमहरसँ घेरि दुनू खेलत।”

कामिनी काकीक विचारमे अपन विचार सटबैत पड़ोसिनी बजली-

“बाल-बोधक झगड़े की! तइले चेतनक समए नष्ट हुअए से नीक नहि।”

ओना पड़ोसिनीक उत्तर पबैमे कामिनी काकीक मन ठहकलैन। ‘ठहकलैन’ ई जे कोन गाम आ कोन समाज एहेन नै अछि जैठाम बाले-बोधक झगड़ामे सभ नै लागल रहैए...।

पड़ोसिनीक सुनटा बानि देख कामिनी काकीक मन खुशियेलैन। दुनू पड़ोसिनी कामिनी काकी अपन-अपन बच्चाक बीच बहीना लगा एके स्वरे कहलखिन-

“बुच्ची, अहाँ दुनू बहीना भेलौं, दुनू गोरेक सुख-दुख सझिया भऽ गेल तँए एक्के अँगना-घर बना दुनू गोरे खेलू।”

दुनू माइक दुनू बच्चा मुँहक बोल छिनैत एके सुरे बाजल-

“दुनू बहीना ओही अँगना-घरकेँ नहमर बना खेलाएब।”

दुनू बच्चासँ दुनू माएकेँ अपन जान हल्लुक होइत देख खुशी भेलैन। खुशी होइत कामिनी काकी पड़ोसिनीकेँ कहलखिन-

“कोन बाध दिस जाएब?”

कामिनी काकीक बोल सुनि पड़ोसिनीक मनमे उठलैन जहिना दुनू बच्चा बहीना लगा एके अँगना-घर बना खेलत, तहिना जँ चेतनो-सियान जिनगीक खेल खेलए तँ केहेन वृन्दावनक रास लीला हएत।

बाल-बोधक झगड़ा सभ बच्चा बिसैर गेल। बिसरबो वाजबीए ने भेल। आखिर बाल-बोधक मन ओते मलिन थोड़े अछि जे पचास-साठि बर्ख धरि सियान जकाँ रग्गड़ धेने रहत। ओ सभ धरबो केना नै करता, तेहेन बाँसक खुट्टामे खुटेसल छैथ जे हजारकेँ के कहए जे पाँचो हजारक उमेर जेना हाथेमे छैन तहिना...।

टोलक एगारहो बच्चा अपन-अपन हटवार जकाँ अपन-अपन अँगना पकैड़ हाथेसँ गरदा बढ़बैत अपन-अपन अँगनाक टाट छहरदेबाली जकाँ लगबए लगल। अपने-अपने तेहेन-तेहेन राज-पाट छै जे सभ अपने-अपने अँगनामे घेरा गेल। कबुतरीक डीह खालीए रहल। कबुतरीकेँ काल्हिये सभ मिलि घर-आँगन उजारि समाजसँ भगा देने रहै तँए ओइ समाजमे आब कबुतरी रहए नै चाहैत जे अपन पुरना-घर-घराड़ी काल्हि छोड़ि देने छल। मुदा दखलो केनिहार नहियेँ रहल। रहबो केना करैत जेते काज दिल्ली सरकारकेँ छै तइसँ की कम काज एक-एक परिवारकेँ छै, तँए सभ अपने-घर अँगनामे ओझरा गेल, जइसँ दुनू बहीना कबुतरी मिलि दुनू अँगनाकेँ जोड़ि एक बना लेलक। चारूकात सँ टाट लगैबते एगारहो अपन-अपन जिनगीक गाड़ी ठाढ़ करए लगल। कियो खेत-पथार, तँ कियो चूल्हि-चौका, कियो माल-जालक तँ कियो आनो-आनमे गथा गेल।

दू अँगनाकेँ एक भेने समाजमे जल्लाक जन्म होइए। तेकरे उछाहीमे दुनू बहीना कबुतरी समाजकेँ आइ भोज खुऔत। जखन भोज खुऔत तखन सभसँ जरूरी काज समाजकेँ नौतब भेलइ। जरूरी अइले भेलै जे आब कि भोजक कमी अछि आब तँ खेनिहारक कमी भऽ गेल अछि। सभ अपने बेथे तेहेन बेथाएल अछि जे कियो कोनो रोग तँ कियो कोनो, तेहेन-तेहेन सालतनी रोग पोसि नेने अछि जे लोक अपन जान बँचौत आकि भोज खाएत।

मुदा से बात कबुतरीक दुनू बहीनाक संग नै भेल। दुनू बहीना विचारि कऽ काज बाँटि लेलक। सुगिया नौत दैत बजै-

“घरवारी छी यौ, यौ घरवारी, औझुका निमंत्रण अछि।”

जँ कियो पुछै जे ‘कथीक भोज?’ तँ अकासमे उड़ैत सुगिया बाजए-

“बहीनदुतिया भोज।”

एक तँ ओहुना बेकतीगतो बात आ समुहिको बातमे अन्तर होइ छइ। बेकतीगत मुद्दा तखन सामुहिक दिस बढ़ै छै, जखन सामुहिकताक सम्बन्ध रहल। मुदा ने फड़िछौट भेल आ ने आरो-आरो बात सोझा आएल।

समए लहसल। भरि दिनक मेहनतिसँ दुनू बहीना कबुतरियो आ सुगियो समाजक भोजक ओरियान केलक। पुरना नवका अँगनाक बीचक खरिहाँनमे पंच सबहक बैसैक ओरियान भेल। भोजक सभ विन्यास पञ्चेक अनुकूल, अनुकूलो किए ने जखन सभ सामग्री माटियेक।

पंचकेँ बैसते सुगिया बाजल-

“हे पंच परमेसर, भोजनक सभ ओरियान अछि तँए धड़फड़ेबै

नहि।"

कहि चुटकीसँ बालु उठा पहिने पंचक आगू पवित्र केलक। भातक चङेरा नेने कबुतरी आँजुरसँ दैत बाजल-

"भाय-बोन, भात की आब कबीर दासक परसाद रहलैन आकि सोमनी दादीक बसिया भात, आब तँ ओ चाबल भऽ गेल तँए हम परसै छी अहाँ जे बुझिऐ।"

कबुतरीक बात सुनि एकटा पंच टोनलक-

"कहू भला एक कबुतर दोसर सुग्गा, तखन केतौ भोज अधला हुअए।"

माटियेक भात-दालि-तरकारी हाथसँ उठा-उठा नीचका दाढ़ीमे भिरा-भिरा निच्चेमे रखि भोजक जश दैत सभ पंच एक्के मुहेँ बाजल-

"घरबैयाकेँ धैनवाद।"

दिन खसल। कामिनी काकी बाधसँ आबि घूर पजारि रहल छेली, तखने कबुतरी लगमे पहुँच कहलकैन-

"माए, भोजमे खूब जश भेल।"

कबुतरीक खुशियाएल मन देख कामिनियोँ काकीक मन खुशियेलैन।

OO

30 जुलाई 2014, शब्द संख्या- 1140

केते लग केते दूर

जहलक भीतरो आ बाहरो मेला जकाँ लोकक करमान लागल। करमानो केना नै लगितै, बेटा-बेटीक पढ़ाइ जे मङ्गनीए सभकेँ भेटतै।

राजक सभ राजनीतिक पार्टी आन्दोलन केलक, तहीमे सभ चौअनियाँ नेतासँ लऽ कऽ नमरी, असरफी धरि जहलमे अछि।

भाय! चौअनियाँ माने ई जे अंगरेजिया जुगमे बड़को नेता चौअनीए सदस्य होइ छला। जखन मन मिठाएल रहै छै तखन मीठे नै तीतो मीठ लगै छै आ जखन मन तीताएल रहै छै तखन तीतक के कहए जे मीठो तीते लगै छइ।

मुदा से नै, सबहक मन मिठाएल तँए जहल जाएब उपलब्धि भेल नै कि प्रतिष्ठाक हनन बुझि गाम-गामक लोक जहल जाइले तैयार भऽ नारो देलैन आ जहलो गेला। ओना अखन धरि जहल जाएबकेँ लोक प्रतिष्ठाक हनने बुझैए। सबहक बाल बच्चाकेँ शिक्षाक जन्मसिद्ध अधिकार भेटतै। जहिना कलयुग अबैकाल शदूल हाथीकेँ कहलक-

"भाय, समए दुरकाल आबि रहल अछि। साढ़े तीनियेँ हाथक मनुख, जेकर देह अदहा चीरले रहतै, अदहे सौंस रहतै मुदा रहत तेहने अगिया-बताल जे तोरो साधि कऽ रखतह।"

शदूलक बातसँ हाथी घबड़ाएल नै, अपन शक्तिक बोध रहै,

उत्तर देलकै-

"तूँ केना बुझलहक? जँ कियो झूठे कहने हुअ तखन? अपन बाप-दादाक घर-घराड़ी छोड़ि पड़ाएब, जीनगानी नै मरगानी भेल। तँए जेहीठाम छी, तेहीठाम नीक जकाँ केना रहब, एतबे तँ काज भेल, सएह करब अछि। मुदा तोरा जकाँ एहेन देह-दशा राखियो कऽ पड़ाएब नहि।"

हाथियेक शक्ति जकाँ गाम-गामक देशभक्तकेँ शक्ति जगल। रावणक बान्हल सरस्वतीकेँ लंकासँ निकालैक विचार जगल। सबहक बेटा डाक्टर बनतै, इंजीनियर बनतै, प्रोफेसर बनतै, शिक्षक बनतै, हाकिम बनतै...।

सबहक मनमुराद मनोरथपर चढ़ि रणभूमिक लेल विदा भेल, जहल गेल। जहल गेने गाम-गाममे कचहरिया लोक फँसि गेल तँए दुनू गोरे असियो आ आशा पतिसँ भेँट करए, जहलक गेटपर बाहरक भीड़मे हराएल। मुलाकातीसँ भरल जगह।

दछिनवारि भाग असिया आ उत्तरवारि भाग आशा करीब पाँच लग्गाक दूरीपर।

जहिना हजारोक भीड़मे असियाक नजैर छिछलैत आशापर पड़ल तहिना आशाक नजैर सेहो असियापर पड़ल। दशको पछाइत दुनूक नजैर दुनूपर पड़ल। ओना चेहरामे दुनूकेँ कमी-बेसी आबि गेल छल मुदा चिन्हल मुँह कहीं अनचिन्हार भेलैए। हँ होइतो छै, बहुरूपिया नाच की छी? रंगे-रूप बदलब छी किने। दुनूक नजैर दुनूपर पड़ला पछाइत मनमे वैचारिक रग्गर उठि गेल। एक विचार कहै जे जोरसँ सोर पाड़ि छाती लगाएब, तँ दोसर कहै- अपन दू गोरेक बात छी, ऐठाम हजारोक भीड़ अछि, जखने बोलीमे ओज औत तखने लोकक कान ठाढ़ हेतइ। मुदा विषय की रहत तँ दू संगीक बीचक

बात, तँए चिकड़ब उचित नहि। मुदा मनक मणि फुटि ठोरक फाटक तोड़ि दुनूक निकलए चाहलक। पहिने असियाक ठोर पटपटाएल-

"भरिसक आशा छी।"

असियाक ठोरक सिरखार पकैड़ आशाक मुँह फुटल-

"भरिसक असिया बहीन छी।"

दुनूमे सँ कियो केकरो बात नै सुनि पौलक। मुदा गरु-जनक ठोर पटपटाइक कारण जरूर होइ छै? ई बात दुनूक मनमे घर कऽ नेने छल।

गाड़ल आँखि असियापर, आशाकेँ ओ दिन मन पड़ि गेल, जइ दिन गंगामे पैसि दुनू बहिन सप्पत खेने रही जे जिनगी भरि सम्बन्ध बना कऽ राखब मुदा से भेल कहाँ? भेल ई रहै जे जहिया असियो आ आशो महिला कौलेजमे पढ़ैत रहए, तहिये चारू धामक यात्राक प्रोग्राम महाविद्यालय दिससँ बनल जइमे ईहो दुनू गेल रहए। घुमतीकाल सिमरिया घाट उतैर सभ गंगो स्नान केलक आ जेकरा जे मनमे रहै सेहो ठनलक। तहीमे असिया आशाक बीच बहिना लागल।

तहिना असियाक नजैर ओइ दिनपर पड़ल जइ दिन दुनू एक होस्टलक कोठरीमे चारि बर्ख संगे रहल रही। दुनू मिलि खेनाइयो-पीनाइ बनावी आ पढ़बो-लिखबो करी आ संगे कौलेजो जाइ-आबी। केतए गेल ओ दिन? केतए गेल गंगाक संकल्प?

तही बीच जहलक भीतर जोरसँ हल्ला भेल। भीतरक अवाज बाहरो आएल। सभ मुलाकातीक कान ठाढ़ भेल। मुदा मुलाकातियो तँ रंग-रंगक, कियो पतिक, तँ कियो भाइक, कियो कुटुमक तँ कियो गताइतिक। भीतरक हल्ला छी, किछु बात हेतइ। बात ई रहै जे जहलक भीतर सैयो ग्रुपमे आन्दोलनी बँटल। सबहक अपन-अपन जिनगी तँए अपन-अपन सबहक देश भक्तिक फर्मूला। देशो भक्ति

की देश भक्ति छी, रंग-रंगक भक्ति अछि। कियो कोट-कचहरीकेँ जिन्दावाद करैत, तँ कियो तरुआरिक सानपर चलबकेँ जिन्दावाद करैत।

जहलक भीतरक हल्ला रहै जे कियो कुरसी, तँ कियो ठीकेदारी, तँ कियो जिनगीक मूल समस्याक चर्चमे उलझल। जइसँ कहा-कही हुअ लगलै, सएह हल्ला जहलक भीतुरका छेलइ। ओना सभ आन्दोलनी जन-मानसकेँ आँखि फोड़ैक जिज्ञासासँ शिक्षाकेँ जन्मसिद्ध अधिकार बुझि आन्दोलन केलैन, मुदा विचारो तँ जिनगियेक अनुकूल रहै छै, तँए जे जेहेन परिवारक तेकर तेहेन बुधि-अकील। ओना मनुख ओ शक्ति लऽ कऽ जन्म नेने अछि जे अधलासँ अधला वृतिसँ अपन निवारण करैत नीक बनि सकैए। तँए जे सबहक कल्याणक विचार होइ से सवोपरि भेल।

मुलाकातियो सबहक बीच तहिना रंग-रंगक विचार गनगनए लगल। गनगनेबो केना ने करैत। कियो जिज्ञासा करए आएल, तँ कियो मुँहछोहैन, कियो जहलसँ आन्दोलनकर्ताकेँ निकालैले आएल, तँ कियो फाटक तोड़ि संग दइले तनतनाएल। मुदा जहिना असियाक मन पतिपर लटकल तहिना आशोक। दुनूक मन दू-दिसिया भऽ गेल, एक दिस जहलक पति तँ दोसर दिस बालपनक हराएल बहिना।

मध्य वर्गीए परिवारमे दुनूक जन्म भेल। बाल-बच्चाक पढ़ाएबकेँ नीक बुझि माए-बाप बी.ए. तक पढ़ाइक बेवस्था केलखिन। ओही समए दुनू गोरे गंगामे पैसि संकल्प केने जे जीवन भरि सम्बन्ध बना कऽ राखब। ताधैर दुनूक अपनो मन कहै जे शिक्षिका बनि धरतीपर पएर रोपब। मुदा से भेल नै, ऐ दुआरे नै भेल जे बिआहक पछाइत जइ घर एली ओ परिवार महिला नोकरीक विरोधी, तँए गृहिणी बनि गेली। गृहिणी तँ बनि गेली मुदा परिवारक जाल तँ

विचारमे लागिये गेलैन। परिवारक जाल ई जे कोनो परिवारक सम्बन्ध चाहे समाजक हौउ आकि आन समाजक सभ सम्बन्धक अपन-अपन निअम छै, जे निअम प्रतिकूल भेने दुनूक सम्बन्ध छुटि गेल। एकरा टुटब नै कहल जा सकै छै, टुटब ओ भेल जइमे विचारक भिन्नता कारण होइ छइ। खाएर जे भेल, रहबो तँ नहियेँ कएल। ऐ दुआरे नै रहल जे अठारह बर्खक बाल-बोध जिनगीमे समैक संयोगसँ चारि बर्ख संगे रहल। दुनूक विचारधारामे समरूपता रहने निर्णयो भेल। मुदा परिवारिक बन्धन तँ किछु आरो होइ छइ।

तीस बर्खक पछाइत आइ असियो आ आशोक भेँट भेल, भेँट नै भेल, एक-दोसरपर नजैर पड़ल। जहलक मुलाकाती-फाटकक मुँह छोट रहने एका-एकी समए भेटै। समैयो बान्हल नै, घन्टा-घन्टा भरि एक-एक मुलाकाती समए लगबै। सिपाहियो भीड़क दुआरे थरथराइत, तँए जोरसँ बजबो ने करए।

साँझ पड़ि गेल। किछु मुलाकाती चैलो गेल, मुदा जेते गेल तइसँ बेसी एबो कएल। आशाक मनमे उठल- सोझाक रसिया परदेशी जकाँ बसिया भेल छैथ। हो-हा करैत सभ मुलाकाती विचारलक जे बिना भेँट-घाँट केने जाएब अन्याय हएत। अन्याय ई हएत जे समांग जहलमे अछि आ बाहरसँ हम तोषो-भरोष नै दिऐ, ई केहेन भेल। ओना अपन-अपन मननुकूल विचारो होइ छइ। मुदा जे हौउ, जहिना असिया तहिना आशा राति बितबैक निर्णए केलक। भरि दिन मरद-औरत सभ मुलाकातीक रूपमे संगे छल से आब फुट-फुट भेल। गर पाबि असिया-आशा एकाठाम भेल।

असिया-

"बहिन, परिवारमे दोसराइत नै अछि जे अपने एलौं?"

ओना मनमे ईहो ठहकै जे अपनो तँ सएह छी, एकठाम भेने

किछु लाड़-चाड़ तँ हेबे करत। सएह भेल। मुदा आशा असियापर नजैर रखि बाजल-

"बहीन, दोसराइत तँ छैथ बुड़हा मुदा परिवारमे रहितो परिवारसँ अलग छैथ।"

आशाक नव बात सुनि असिया, पिआसल चिड़ै जकाँ बाजल-

"से की, बहिन?"

आशा-

"जखन बुड़हाकेँ कहलयैन जे जहलक गेटपर जा बेटाकेँ भेँटो कऽ अबथुन आ ओकीलसँ जमानतो बात पुइछ लिहथिन।"

बिच्चेमे असिया-

"बात तँ असलीए कहलयैन।"

आशा-

"सबहक असली की सभले असलीए होइए। ठोहि फाड़ि कहलैन जे आब ऐ दुनियाँमे मरबेटा बाँकी रहल अछि, तँए पाँच कौर अन्न आ पाँच हाथ वस्त्रे टाक जरूरत रहि गेल अछि। परिवार अहाँक छी, दुनियाँ अहाँक छी, जेना करब से करू।"

असिया-

"बात तँ बड़ नीक भेल, मुदा जइ दिन सासुर एलौं, जँ तइ दिनमे ई छूट भेट गेल रहैत तँ की अपन मनक बात नै मेटाएल रहितए। मुदा...।"

OO

3 अगस्त 2014, शब्द संख्या- 1206

घर तोड़ि देलिऐ

पति-पुत्रक दुरघटनाक तीन मासक पछाइत प्रमिला कोठरीमे असगरे बैसल अपन भवितब दिस देख रहल छैथ। ओना अखन तक प्रमिलाकेँ एहेन विचार मनमे कहियो ने उठल छेलैन। नव-नव विचार मनमे उठलैन। ओना ईहो कहि सकै छी जे जहिना दुनियाँमे हजारो रोग-वियाधि (दैहिक, मानसिक) पसरल अछि, मुदा भेँट तँ तहिये ने होइए जइ दिन ओकर आक्रमण होइ छइ।

डाक्टर तँ बेवसायी भेला, तँए ओ अपन पूजी बढ़बै दुआरे अनको रोग-वियाधिक आ ओकर दवाइ-औषधिक अध्ययन करै छैथ, मुदा रोगीकेँ ओइसँ आकि जेकरा ओइसँ भेँट नै, तेकरा कोन मतलब छै जे अनेरे पेनक्रियाजक कैंसरक इलाज कथीसँ हएत, से बूझत।

ओना बुझब जरूरी छै कि नै छै ई अलग बात भेल। दुनू छइ। बुझब ऐ दुआरे अछि जे रोग-वियाधिक कोनो ठेकान अछि, केकरो भऽ सकै छै तँए बुझब जरूरियो अछि, मुदा नहियोँ बुझने हाइनो तँ नहियेँ अछि। हानि ऐ दुआरे नै अछि जे जँ ओइसँ भेँटे नै हुअए। ओना, जिनगी अमरलत्ती जकाँ जहिना बिनु जड़ि-मुड़ीक होइए तहिना दुनियोँ अछि। तखन तँ भेल जे ओतबे अध्ययनक ने जरूरैत अछि जेतेकक जरूरत जिनगी चलैक क्रियामे होइए। अखन तक जे प्रमिलाक जिनगी रहल ओ सपाट रहल। सपाट ई जे बिआहसँ पहिने

माता-पिताक आश्रयमे रहली, आ सासुर बासक दौड़ान सरकारी भवनमे रहली, तँए घर बनबैक ने जरूररैत पड़ल आ ने मन वौएलैन। मोने वौएला पछाइत ने लोक बाड़ी-झाड़ीमे रंग-रंगक साग तोड़ि पेटक आगि दबैए। जँ से नै तँ अनेरे किए कियो अल्लू-परोड़ छोड़ि, की-कहाँक साग खाएत। भलेँ पौष्टिक दृष्टिए सागो अपन ओहेन कुबत बनौने हुअए जइमे अल्लुओ-परोड़सँ बेसी सुआदो आ शक्तियो देहमे दाबि कऽ रखने हुअए। परसू जखन प्रमिला सरकारी भवनसँ निकालि देल गेली आ भाड़ाक घरमे एली तखन मनक अन्हरियाक एकादशी दिन विचार उठलैन। अनायास मुहसँ निकललैन-

“परिवार तेना राँड़-वाँड़ भऽ गेल जे केतए रहब। भाड़ा घर अपन थोड़े भेल चारि दिन चान फेर अन्हरिया राति। मुदा नहियोँ भेने की हएत, केतौ तँ रहए पड़त।”

आठ बीधाबला किसान जयकान्त छला। गामे नै आनो गामक किसान जयकान्तकेँ सचरगर किसान मानै छैथ। ओना आठ बीघा जमीनबला गाम छोड़ि दिल्ली-कलकत्ता ओगरने छैथ, मुदा से जयकान्तकेँ ने कहियो मनमे उठलैन आ ने ओइ दिस तकला। आठ बीघामे एक बीघा गाछी-कलमसँ लऽ कऽ घर-घराड़ीमे बाझल छेलैन, बाँकी सात बीघा जोतसीम छेलैन। सातो बीघा एकठाम रहने एकेटा बोरिंगसँ काज चैल जाइ छेलैन। चौमाससँ लऽ कऽ धनहर धरिक खेतक आकार छेलैन। जइसँ नगदीसँ लऽ कऽ जीवन-यापनक सभ फसिल उपजबै छला।

अपन घरमे अबिते प्रमिलाक विचार जगलैन। अपन घर अछि केतए? नैहर तँ ओही दिन छुटि गेल जइ दिन माए-बाप दान-दछिना दऽ डोलीमे बैसा अरियाइत गामक सीमान टपा देलैन। सासुरकेँ अपने आगि लगा जरा देलिऐ। भेल ई जे ससुरक अमलदारीमे आठे बीघा

जमीनक उपजासँ जयकान्त अपन सम्पन्न परिवार बनौने छला। सम्पन्न ई जे स्तरक हिसाबसँ खेनाइ-पीनाइ, लत्ता-कपड़ा, घर तँ स्थायी रूपे बनौनै छला जे अस्थायी रूपे बेमारीक इलाजो आ बाल-बच्चाकेँ पढ़ेबाएबो-लिखाएबक सम्पन्नता बनौने छला। तीनटा बेटा- गिरिधर, मुरलीधर आ श्रीधर। जेठ बेटा गिरिधरकेँ पढ़ब दिस बेसी झुकाउ। एक तँ अनुकूल परिवार (अनुकूल ई जे परिवारकेँ कौलेज धरि पढ़बैक ओकाइत) दोसर अपन लगन। गिरिधर ग्रेजुएशन कऽ प्रतियोगिता परीक्षा पास कए प्रशासनिक अफसर बनला। ओना अपना हिसाबे गिरिधरकेँ पढ़ल-लिखल कन्याक संग बिआह नै भेल छेलैन। मुदा चिट्ठी-पतरी तँ प्रमिलाकेँ पढ़ऽ अबिते छेलैन। बच्चेसँ मुरलीधरक झुकाउ परिवारक काज दिस बेसी रहने जयकान्त अपने संग बेसीकाल रखि खेती-पथारीक लूरि सीखा देलखिन। तेसर श्रीधर। ओना पढ़ै-लिखै दिस श्रीधरोक झुकाउ बेसी, मुदा दुनियाँ-दारीक विषयसँ कम आ भक्ति-भजनक बेसी तँए गीत-संगीतसँ बेसी सिनेह। जेकरा ने जयकान्ते आ ने मुरलीधरे अधला बुझै छला। अधला ऐ दुआरे नै बुझै छला जे जँ दरबज्जापर दस गोरे बैस कीर्तन-भजन करए ओ तँ साक्षात् देवालयक धरमशाला भेल। गिरिधरकेँ बी.डी.ओ. भेला पछाइत प्रमिलाक जिनगीमे एकाएक समुद्री लहैर जकाँ उछाल आएल। बदलल बदलल जिनगी।

सौंझुका चाह दुनू परानी प्रमिला-गिरिधर कुरसीपर बैस पीबैत अप्पन गप-सप्प उठौलैन। अपन गप-सप्पक माने ई जे अपन जिनगी अपन परिवार। प्रमिला बजली-

“गाममे जे अपन हिस्साक खेत-पथार अछि, ओइसँ जे उपजा-वाड़ी होइए तइसँ अपना की भेटैए।”

पैसा पाबि गिरिधर खाइ-पीऐ दिस ससैर गेल छला। भरि पेट

खेला पछाइत जहिना आरामक आवश्यकता बुझि पड़ैत तहिना ने सुरा संग सुन्दरीक सुन्दर बोलो। विहुँसैत गिरिधर बजला-

“अहाँक जे विचार हएत सएह ने हमरो हएत। आकि अपनसँ हटल बुझै छी।”

बंसी खेलनिहार जकाँ तड़ेराक खोंटी बुझि प्रमिला बजली-

“ई तँ देखते छी जे सात गोरेक परिवार माझिलकेँ आ छ गोरेक परिवार छोटकाकेँ छैन। ओही खेत-पथारक उपजासँ ने दुनूक गुजर होइ छैन। अपने एते दरमाहा उठबै छी, महिना जाइत-जाइत केतए चैल जाइए? तखन तँ ई ने भेल जे अपन जे हिस्सा अछि, से वएह सभ खाइ छैथ।”

जहिना एकिक निअम आ त्रैराशिक निअम अछि जे एके बातकेँ एकटा घुमा-फिरा जोड़ैत आ दोसर सोझहे जोड़ैत, तहिना प्रमिलाक जोड़ गिरिधरकेँ बुझि पड़लैन। हूँहकारी भरैत बजला-

“हँ से ते खाइते छैथ।”

“ई उचित भेल?”

‘उचित’ सुनि गिरिधर थकमकेला। थकमकेला ई जे ओ तँ खानदानी परिवारक चास-बास छी, चलैत आएल चलैत रहत। अखनो अपन परिवार छी आ आगुओ रहत। मुदा निशाएल मन, पत्नीक बातमे हूँहकारी भरलैन-

“उचित तँ नहियेँ भेल।”

प्रमिला-

“जखन उचित नै भेल, तखन उनुचितकेँ अंगेज रखब नीक भेल?”

गिरिधर-

“नहि।”

बातक धारमे गिरिधर तँ भँसि गेला मुदा विचार जखन जगलैन तखन भाए-भैयारी, कुटुम-परिवार, सर-समाज सभ सिनेमाक रील जकाँ मनमे चलए लगलैन। मुदा मनो तँ दुनू दिशामे, विकार रहितोमे आ विकार सहितोमे चैलते अछि। पतिक गम्भीरता देख प्रमिलाकेँ मनमे संशय जगलैन। संशय ई जगलैन जे हो-ने-हो कहीं अपन गलती कबुल कऽ विचार ने बदैल लथि। तँए अवसरकेँ गमाएब पछाइत पछताबाकेँ नौत देब हएत। तँए अवसरकेँ ओत्ते आगू ससारि ली, जे पाछू हटब पाछू उकड़ू हेतैन। बजली-

“ऑफिसमे छुट्टी लऽ लिअ आ गाम जा अपन हिस्सा बखरा कऽ लिअ।”

जहिना अधला वृत्ति कमबैत-कमबैत कियो खेतक घास जकाँ फसिलकेँ साफ बना लैत तहिना ने नीक वृत्तिकेँ कमबैत-कमबैत कियो घासेक खेत बना लइए। जहियासँ गिरिधर नोकरीक मोटा-मोटी दरमाहा आ ऊपरफटकी आमदनी पाबए लगला तहियासँ अपनो आ परिवारोक खर्चमे बढ़ोत्तरी हुअ लगलैन। दबसँ नीक दिस बढए लगला। मनो तँ मने छी, धारक पानि जकाँ केतौ पेटे-पेट चलैत तँ केतौ महार तोड़ि दोसर मुँह बना शकले बदैल लैत तँ केतौ पैछला आमदनी (धारक पैछला पानिक बेग जकाँ जे बरखो आ बरफोक रहैत) पर उछैल धारे जकाँ खेतो-पथारकेँ बना अपन शकले छिपा लैत। मुदा तइसँ फराक गिरिधरक मन चललैन। मन चललैन ई जे ‘साँपो मरि जाए आ लाठियो ने टुटए।’ परिवारक भैयारी अपन ने भेल, पत्नीक की भेलैन। मुदा तँए कि ओ हिस्सेदारिनी नै छैथ, सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। काजक गर देख गिरिधर बजला-

“अखन चुनावक समए आबि गेल अछि। तीनियेँ मास रहलैए।

शासनक रूप-रेखा बदैल गेल अछि, एको दिन के कहए जे एको क्षण छुट्टी भेटब कठिन भऽ गेल अछि। तँए अहीं जा कऽ अपन भैयारी हिस्सा बाँटि लिअ।"

अवसर पाबि प्रमिला मने-मन खुशी भेली। खुशियो केना ने होइतैथ, राहड़िक दालि आ दियाद जेते गलै छै तेते ने लोककेँ नीक लगै छइ। लोको तँ लोके ने जे लगले गदहा बनि जात लाधि लइए तँ लगले हँस बनि दूध-पानि बिलगा दइए।

पतिक बात सुनि प्रमिला मानि गेली। शनिकेँ पच्छिम मुहेँक यात्रा नीक होइ छै तँए परसू गाम जेबाक विचार पतिसँ मना लेलैन। ओना गिरिधरक मन गामक सम्पैतसँ हटि ऑफिसक काज दिस बढ़ि गेलैन, मुदा प्रमिलाकेँ जेना देवस्थानक डोर डोरिया लैत तहिना भैयारीक सम्पैत डोरिया लेलकैन। मनमे रंग-बिरंगक विचारक तरंग तरंगित हुअ लगलैन। सभ बेचि-बिकिन बैंकमे जका कऽ लेब, सुइदिक नीक आमदनी हएत। जँ से नै तँ खेतक उपजासँ अन्नक बेसाहे खतम हएत। तैयो भेल। ओना बेसाहमे पाइक खर्च नहियेँ छेलैन, डीलरे सभ उपहार पढ़बै छेलैन।

तेसर दिन, शनि दिन, प्रमिला सासुर पहुँचली। जेठ दियादिनी होइक नाते परिवारक पूज्य छेलीहे। दुनू भाँइ मुरलीधर आ श्रीधर दिअरे आ दुनू छोटकी दियादिनी। परिवारक सीढ़ियो तँ रूआबी होइते अछि। तहूमे आब माता-पिता परोछे भऽ गेलैन। खेला-पीला पछाइत प्रमिला दुनू दिअरकेँ कहलखिन-

"हम केतए एलौं, से अखन धरि कियो पुछलौं?"

संगतिया श्रीधर बजैमे फरकोर रहबे करैथ। बजला-

"ई थिक मिथिला रीत, ई थिक मिथिला गीत, सुनियौ यौ मीत, आगूसँ पुछैक नै छी रीत।"

श्रीधरक लयात्मक बोल जेना प्रमिलाकेँ छूबि देलकैन। तरेगन जकाँ आँखि तरंगलैन। मुदा दबने रहली। बजली-

"अखन कोनो बिआह दान आकि मूड़न नै छी जे गीत-नाद हएत। अपन हिस्सा बाँटए आएल छी।"

'अपन हिस्सा' सुनि श्रीधर बौआ गेला। बौआ ई गेला जे मनुखकेँ तँ अपन-अपन हिस्सा अपन-अपन गुण होइ छै ओ केना बँटाएत। केकरो देल जा सकैए। मुदा मुरलीधर सम्पैतक बात बुझलैन। अदौसँ परिवारमे बँटबारा होइत आएल अछि, सुहरदे मने किए ने बाँटि देबैन। किए अनकर देखौंस करब जे एक हाथ- आध हाथ खेत-ले कपर-फोरौबैल करब। बजला-

"परिवारमे आठ बीगहा जमीन अछि। दू बीगहा तेरह कट्ठा छ धूर दू पौआ, दू कनमा दस कनइ हिस्सा भेल, कागतपर नक्शा बना कऽ लऽ लिअ। कोनो मन-मलान नै अछि।"

अखन धरि मुरलीधरक मनमे यएह रहैन जे गिरिधर भैया थोड़े खेत-पथारक आड़िपर औता, तखन तँ कागजी बँटबारा भेल रहत। मुदा से भेलैन नहि। प्रमिला अपन सभ किछु अलग देखए चाहै छेली। बजली-

"हमर सभ किछु अलग करि दिअ।"

घरसँ लऽ कऽ वाड़ी-झाड़ी खेत-पथार सभ किछु प्रमिला अपन खँतिया लेली। खँतेला पछाइत छोटकी दियादिनी कहलकैन-

"दीदी, सब किछु तँ बँटाइए गेल। आन जे आबि घराड़ीपर भाँटा रोपत आ अनेरो साँझ-भोर आबि जे गरिऔत से केहेन हएत। मनहुण्डे सब खेतक उपजा साले-साल दइत रहबैन, अनका नै देथुन।"

जेना कोनो लाभ पौने लोककेँ खुशीए टा नै उत्साहो उमकै छै

तहिना प्रमिला उमकैत बजली-

"बाँटल भाए पड़ोसिया दाखिल। अपना हिस्साक घरमे जेकरा मन फूड़त तेकरा बसाएब, तइले अहाँकेँ किए छाती फटैए।"

जेठ दियादिनी, मातृ तुल्य प्रमिलाक बात सुनि सबरी आँखि निच्चाँ कऽ लेलैन। मन कहलकैन-

'एहेन लोकक मुँह देखब पाप छी।'

○○

10 अगस्त 2014, शब्द संख्या- 1527

सजल स्मृति

एक जनवरीक दिन। मासक अन्तिम दिन डाक्टर सोनी देवी इंगलैंडक अस्पतालसँ सेवा निवृत्ति हेती। रबि दिन, अस्पताल नै जेबासँ निचेन रहने ओछाइनो छौड़ैमे किछु बिलम भेलैन आ परिवारक काजोमे ढील-ढाल रहबे करैन। सुति उठि, बिनु मुँह धोने दू कुर्ड़ा पानि फेकि, बिजलीक चुल्हि पजारि डाक्टर सोनी देवी कॉफी बनौलैन। ठण्ढ मुल्क रहने चाह सोलहन्नी भरपाइ नै कऽ पबैए। आन दिन जकाँ दू गिलास बनबैक जरूरतो नहियेँ भेलैन।

एक तँ ओहुना मन असकताएल तैपर काजक सुभिता भेने अनुकूलता अबिते अछि। जे डाक्टर सोनी देवीकेँ सेहो भेलैन। आन दिन तँ अस्पतालक काज मनकेँ अपना दिस बहटारने रहै छेलैन से नै रहने मन अपन परिवार दिस घुमौलकैन। घुमिते मन पतिपर गेलैन। पति डाक्टर मनमोहन सेहो सर्जन पदसँ एकतीस दिसम्बरकेँ सेवा निवृत्ति भेला जेकरे हिसाब-किताब दइले तीन दिन पहिने अस्पताल गेला, अखन धरि किए ने एला। काल्हियेे तक तँ नोकरी छेलैन।

भरिसक केतौ हिसाब-किताबमे ने तँ लटपट भेलैन। पतिक काजक लटपटसँ सोनी देवीक मन गहियेलैन। गहियेलैन ई जे ऐ अबस्थामे काजक लटपट भेने काजो भरिया जाइ छइ। हाथोक काज अनका हाथ गेने जुति-भाँति बदैले जाइ छइ। जँ से भेल हेतैन तँ

पेन्शन जे लटपटेतैन से तँ लटपटेबे करतैन जे जिनगी भरिक सभ केलहा-धेलहा सेहो पानिमे चैल जेतैन। पानिमे ई जेतैन जे जइ कुरसीपर बैस आनक काज करै छेलौं, तैठाम आन बनि अपन काज हएत। तँए अपन किरदानी लोकर्कें अपने बिसाइ छइ। तहूमे सेवामे रहैत तँ किछु बँचितो छै जे सेवा निवृत्तिक पछाइत तँ ओहो धुआ जाइ छइ। मुदा उपए? 'उपए' लग अबिते सोनी देवीक मन ओहिना अड़ियेलैन जहिना कोनो बोहैत धारक आगू बान्ह पड़ने अड़ियाइ छइ। मुदा जहिना धाराक पानि पाछूसँ अबैत धारार्कें रोकैत ठमकैत फुलऽ लगै छै तहिना सोनी देवीक मन फुलेलैन। फुलाइते नजैर अपना दिस बढ़लैन। बुदबुदेली-

"एकतीसम दिन अपनो यएह गति हएत!"

मुहसँ अपन गति फुटिते सोनी देवीक मन जिनगीक स्मृतिमे डुमि गेलैन। हृदैक पुरना डायरीक पन्ना उनटए लगलैन। केतए गेल ओ गामक सखी-बहिनपा, पाबैन-तिहार, मेला-ठेला, खेनाइ-पीनाइ आ ओढ़ब-पहिरब? पाछू दिस बढ़िते डाक्टर सोनी देवीक मनक डायरीक पहिल पन्ना उनटलैन। जहिना किताब उनैटते पहिल पृष्ठ सोझहा अबैत तहिना सोनी देवीक सोझ स्मृतिक डायरीक पन्ना उनटलैन। उनैटते जन्मक कथा भेटलैन। मात्रिकमे जन्म भेल छल जे डेढ़-सालक पछाइत अपन गाम (माए-बापक) एलौं।

ओना दोसरो-तेसरो धी-बेटीक सन्तानक परम्परा नैहरक रहल, मुदा पहिल सन्तान तँ अनिवार्य रूपे रहबक परम्परा अदौसँ अबिते अछि। जन्म मन पड़िते, अपन नाना-नानी, मामा-मामी, भाए-बहिन, सर-समाज चौबगली घेरि लेलकैन। अनायास हाथक ओंगरी घुसैक दोसर पृष्ठपर पहुँचते उनैट गेलैन। पृष्ठ उनैटते डाक्टर सोनी देवीक नजैर बाप-माएपर पड़लैन। मन पड़लैन डाक्टर सोनी देवीर्कें, जखन दू

बर्खक रही आ चुल्हितर माए भानसो करै छेली आ हमरा खुआ-पीआ कऽ, अपने बीच (माने एक भाग सोनी देवी, दोसर भाग आगिक चुल्हि, तैबीच)मे आगूमे जहिना चिड़ै-चुनमुनी चहरा आनि अपना बच्चाक आगूमे छिड़िया दइ छै (ओना पहिने लोलसँ लोलमे दइ छै) जेकरा बीछि-बीछि बच्चार्कें खाइत देख माइक हृदैक धार बहए लगैत तहिना ने हमरो आगूमे धानक, रमदानाक, भैंटक, मलकोकाक आ खुभीक लाबा छीटि दइ छेली आ बीछि-बीछि खाइत देख मने-मन गंगा स्नान करैत रहै छेली। तही बीचमे ने भात, रोटी, तीनम, तरकारी सेहो सभ सीखबै छेली। कोनो कि अनाड़ी माए रहैथ जे सुतैकालक ओछाइन-बिछाइनिक नाओं नै सीखा खेबा-पीबा कालक सिखैबतैथ। चुल्हिये लग ने पहिने भात सिखौलैन पछाइत अरबा-उसना भात सिखौलैन। तइ पछाइत ने मोटका-मेहीका, बसिया-तेबसिया इत्यादि सिखौलैन। ओना सीखेबे नै केलैन, मुहसँ बोलो फोड़लैन। भलें ताबे कण्ठ, जीह, मसुहैर, दाँत इत्यादि नीक जकाँ सर्ड़ास नै भेल रहए तँए अधखड्ुए बोल मुहसँ निकलए। दाँतो अदहे-छिदहे भेल रहए।

ऐगला पृष्ठ उनैटते डाक्टर सोनी देवी ओ दिन देखलैन, जइ दिन पिताक संगे जा स्कूलमे नाओं लिखौलैन। चारि-पाँच बर्खक भऽ गेल रही। चारि बर्ख पुरि, पाँचम चढ़ि गेल रहए, मुदा पुरल नै रहए। गामेक स्कूल गामेक चटिया। सेहो टोले-पड़ोसेक। किए मिसियो भरि अनभुआर लगितए। अनभुआर तँ ओतए चटियार्कें लगै छै जेतए देशक कोण-कोणसँ आएल पाँच बर्खक बच्चाक बीच रंग-रंगक बोली, रंग-रंगक चालि-ढालि, रंग-रंगक खेनाइ-पीनाइ रहै छइ। जैठाम से नै तैठाम अनभुआरे की हएत। दुर्गापूजाक समए सखी-बहिनपाक संग केना चारि बजे भोरे उठि, फुलडाली लऽ सिंगहारक, अरहुलक, चम्पाक फूल लोढ़ि पूजा लेल दुर्गास्थान पहुँचबै छेलौं। पहिने फूल लोढ़ि फुलडाली आँगनमे रखि लइ छेलौं, पछाइत चिक्कनि माटिसँ

सबहक संग दुर्गास्थान नीपै छेलौं आ तेकर बाद आँगन आबि-आबि नहाइ छेलौं, नव वस्त्र पहीरि फूलक फुलडाली देवालय पहुँचबै छेलौं। भीतरे-भीतर डाक्टर सोनी देवी स्मृतिक डायरीक पन्ना पढ़ि-पढ़ि विस्मित होइत गेली।

मन पड़लैन पाबैनक उपास। रामनवमी-कृष्णाष्टमी, देवोत्थान, हरिवासय, नर्क निवारण चतुर्दशी। सभ छुटि गेल।

छुटिते मन उमकलैन। जहिना गाए-महींस उमैकते बोलियो दैत आ मलकबो करैत तहिना सोनी देवीक मन उमकैत बोली देलकैन। की नै छूटल? गामक परिवार छूटल, समाज छूटल, पाबैन-तिहार छूटल। उपास-व्रत छूटल, देवी-देवता छूटल, देववाणी छूटल! छुटि गेल अपन खान-पान, अपन ओढ़न-पहिरन! जैठाम छी तैठाम जे पाबैन-तिहार आ देवी-देवता छैथ, ओ भिन्न छैथ तइसँ नै जाइ छी। पाबैन नै करै छी। जहिना गामो-घरमे किछु पाबैन एहनो होइए जे सभ करै छैथ। आ एहनो होइए जे किछु गोरे करबो करै छैथ आ किछु गोरे नहियों करै छैथ। एहनो तँ हेबे करैए जे जँ साल दू-साल तीन-साल छुइटो जाइए तैयो फेर जान-पराण दऽ लोक जीआइए लइए। जँ से नै जीअबैए तँ तीनसला-चरिसला रौदी-दाहीक कहात् समए भेने नवान छुटि फेर कुशियारक गोभ जकाँ पनैप केना जाइए? लगले सोनी देवीक मन अगहनक नवान (ओना कातिकोमे नवान होइ छइ।) सँ पाछू डेगे ससरली तँ छैठ पाबैन कुदि कऽ आगूमे एलैन। छैठपर नजैर पड़िते मन चकोना भेलैन।

चकोना होइते एकटा कोणमे देखलैन छैठक सुरूजक अर्घ। मुदा वएह सजल कोनियाँ पहिलो दिन आ दोसरो दिन निवेदित होइत। ओकरे नवेद्य पड़ैत। ओना मिथिलांचलक पाबैनक पद्धति छी, पटनियाँ भलें सौंझुका कोनियाँ साँझेमे उसारि रखि भोरुका कोनियाँ अलगसँ

किए ने सजबैत। खाएर जे से। अदौसँ उदय-अस्त वा अस्त-उदयक नमस्कार निवेदित करबाक परम्परा रहल अछि, अखनो अछि। अखनो दुआरपर पहुँचैत पाहुनर्कें ऐबतो आ जाइतो हाथ जोड़ि नमस्कार निवेदन निवेदित होइते अछि। लगले मन फेर घुसैक चौमुखी दीप सजल कुड़पर गेलैन। केना बाँहिसँ पकैड़ आँगनसँ छैठक घाटपर लऽ जाइ छेलों आ घाटपर सँ जरैत दीपक कुड़ आँगन नेने अबै छेलौं। भलें ओ दुनू कुड़ो आ दीपो माइटेक बनल किए ने रहौ, मुदा आगिमे पकौल रहला पछाइतो तँ माटिपर खसने फुटबे करैत। केते होशियारीसँ काँखतर दबने जाइ छेलौं आ अबै छेलौं। लगले मन मुरैछ गेलैन। मुरछलैन ई जे अखन देखै छी जे एक घन्टा दारू पीबैमे बिलम भेने लोक पगला कऽ पगलपनी करब शुरू कऽ दइए आ केना सतरहे-अठारहे बर्खमे हरिवासय उपास, अन-पानि छोड़ि कऽ लइ छेलौं। (हरिवासय उपास अढ़ाइ दिनक होइ छइ।) सभ छुटि गेल। छुटि गेल मात्रिक, छुटि गेल नैहर, छुटि गेल सासुर (जे अपन घर होइत) छुटि गेल सभ समाज। एकाएक जेना मनमे तरसँ बमगोला छुटलैन। बमगोला छुटिते अवाज निकलल-

"जखन सभ किछु छुटि गेल तखन रहल की। यएह ने मृत्यु छी जे जड़-चेतनक विछोह भेल।"

जीवन-मृत्युक बीच झुलैत डाक्टर सोनीक मन कदमक गाछक ओइ झूलापर गेलैन, जेतए आस मारि झूलल रहैथ। तही बीच स्मृतिक डायरीक ओ पन्ना उनैट गेलैन जइमे मेडिकल कौलेजमे प्रवेशक चर्च छल। केना हाइए स्कूलमे डाक्टर बनैक मनकामना केने रही। जँ से नै केने रही तँ दसमेसँ किए बायोलौजी पढ़ब शुरू केने रही। जिनका इंजीनियर बनैक रहैन ओ गणित पढ़ै छला। त्रिवेणी जकाँ केते नीक संयोग छल, एक तँ महिला आरक्षित सीट, तैपर नीक नम्बरक संग

कौलेजक सम्बन्धित प्रोफेसर। एकाएक प्रवेश दिनक राखल पत्रपर नजैर पड़लैन। एक थाक पत्र एकटा ललका झोरामे थकियाएल परिवार, समाज, कुटुमक संग विभागक राज्ये नै देशोक आशा तँ हमर भविसपर छइहे...।

अपनो जखन कौलेजमे पढ़ैत रही तँ झण्डा उठौने रही जे जन-जन तक चिकित्सा भेटौ। मुदा भेल की? केतए गेल अपन संकल्प केतए गेल अपन व्रत। मुदा तइ समए कहाँ बुझै छेलौं जे एना देश छोड़ि आन देशमे जीवन बीतत। हमरासँ समाजकेँ कथी उपकार भेलइ। जइ दिन मेडिकल कौलेजमे नाओं लिखौने रही तही दिन केते गोरे डाक्टरक माला पहिरा असीरवाद देलैन। केतए गेल ओ असीरवाद। ओ अपन कर्तव्य पुरबैत असीरवाद देलैन। मुदा असीरवादक उत्तर हम कथी देलिऐन। केना समाजशास्त्री मनुखकेँ समाजिक जीव मानलैन। मुदा भेल एना किए?

नव प्रश्न उठिते डाक्टर सोनीक दहिना हाथ सेहो डायरीक ऐगला पृष्ठ उनटौलकैन। डाक्टरी डिग्री लेला पछाइत बिआहक गप-सप्प उठल।

साल भरि पहिने डाक्टर मनमोहन कौलेजसँ निकलल छला। छह मास धरि जहाँ-तहाँ नोकरीक लेल बौएला, मुदा केतौ गर नै लगलैन। तखन देश छोड़ि बाहर जेबाक विचार केलैन। इंगलैंडमे भेकेन्सी रहै, आवेदन केलैन नोकरी भऽ गेलैन। गामो-घरमे नव-नौतुक डाक्टरकेँ पहिलुका डाक्टर थोड़े बास हुअ दिअ चाहैए। तैसंग अपनो काजक प्रसार नहियेँ भेल रहए जे काज कुदि कऽ आगू आबि गवाही दइतै। तँ अहुना जहिना सभ अपना बेटाकेँ इंजीनियरे-डाक्टर बनबए चाहैए तहिना ने नोकरियो अमेरिका, इंगलैंड देतइ। जाइले सभ चाहैए। एक तँ अहुना डाक्टर बनि मनमोहन जेता, परोपट्टामे

चर्चक विषय बनि गेल छल। पितोकेँ बिआहैक रहैन। जुआक पाशा जकाँ अपन सम्पैत अरोपि बिआह कऽ देलैन। इंगलैंड एलौं। अपनो नोकरी भेल। तीनटा बालो-बच्चा भेल जेकरा पढ़ेलौं-लिखेलौं। मुदा बिआह केलक अपना विचारे। ओना सभ नोकरिहारा, तँए परिवार चलैक गर पकड़िये लइ छैथ। मुदा अपना किछु रहल कहाँ लगमे। (लगक माने अनुकूल जीवन। अनुकूल जीवन माने मिथिलाक जीवन-दर्शन।) आँखि जखन डायरीक नीचला पाँतिपर गेलैन तखन देखलैन जे केना सृष्टिक विकासमे पुरुष-नारीक योगदान होइ छइ। केना सन्तानोत्पति होइ छइ। की प्रसव पीड़ाकेँ बहलैत मनक सुख बुझि नारीक नारित्वकेँ निमुआँग कएल जाए? केना अपन जन्म मात्रिकमे भेल, माएसँ माए जोड़ल छेली। दुनू परानी अनुभवी शिकारी छला। (नाना-नानी सन्तानोत्पतिक) सम्बन्ध सूत्र तेना बनल अछि जे बाँस-केरा जकाँ ओधिसँ ओधि जुड़ल अछि। मुदा ऐठाम तँ सभ टुइटो गेल आ जे बँचल से छुइटो गेल। टुटल अपन परिवार-समाज आ छुटल ऐठामक नोकरीक जिनगी। जैठाम लोक कमाइ-ले जाइए आ समाज बनै छै, ओ भेल नोकरिहारा कमौआक समाज। मुदा सेवा-निवृत्तिक पछाइत ओ अनेको कारणे छुटए लगै छइ। छुटए की लगै छै जे जहिना दिन बढ़ने काज बढ़ै छै आ दिन घटने काज घटै छइ। तँए ने गरीबीकेँ दिन घटब आ अमीरीकेँ दिन बढ़ल कहल जाइ छइ।

मेलाक यात्री जकाँ धक्कम-धुक्का खाइत डाक्टर सोनीक मन ठेहियेलैन। मुदा लगले ठेही उतैर गेलैन। उतैर ई गेलैन जे डाक्टर छी, भेल तँ दस-बीस बर्ख आरो जीब, कहुना पेंशनोपर कटिये जाएत, तखन भेल मरैबेर। अपनो बुझै छिऐ आ आनो सभ बुझिते छैथ जे मरैबेर एहेन पीड़ा होइ छै जे लोक मरिये जाइए। मुदा युगोक तँ अपन धरम होइ छै, जखन लोकक मन मानि लइ जे दू-तीन दिनमे मरि जाएब तखने किए ने मतबैबला निशाँक सुइया लऽ लेत जे पीड़ा हेबो

करतै तँ बुझबे ने करत। जइसँ सुखेसँ मरब हेतइ। सभ तँ सएह ने चाहै छैथ। कनैत तँ सभ अबैए, हँसैत जाएब ने मुकद्दरक सिकन्दर भेल।

नअ बैज गेल। अखन तक डाक्टर सोनी ने मुँह-कानमे पानि नेने छेली आ ने अपन नित्यकर्मसँ निवृत भेल छेली। घड़ीपर नजैर पड़िते मन हरहरेलैन। जलखै बेर भऽ गेल, मुदा लगले मन बदैल गेलैन। छुट्टीक दिन छीहे, अनेरे किए चुल्हिमे हाथ घोंसियाएब, तइसँ नीक जे बिस्कुट संग चाहे पीब लेब। जहिना अगम पानिमे हेलनिहारक सभ किछु अगम भऽ अगमा जाइ छै, तहिना सुगम पानिमे हेलनिहारकेँ सेहो सभ किछु सुगमा जाइ छइ। डाक्टर सोनियोँकेँ सहए भेलैन।

चाह-बिस्कुट आगूमे डाक्टर सोनी रखिते रहैथ आकि डाक्टर मनमोहन पहुँचलखिन। सुखाएल मुँह, हदास उड़ल चेहरा। पतिकेँ देख डाक्टर सोनीक मनमे एकाएक जोड़क धक्का लगलैन। धक्का ई लगलैन जे जखन काजसँ अवकाश भेटलैन, तखन जान हल्लुक भेलैन की भारीए। जखन जान हल्लुक भेलैन तँ मनमे खुशी हेबा चाही किने, से किए ने छैन। मुदा किछु छी तँ परिवार छी किने, परिवारक सभकेँ अनुकूल बनि चलबे ने परिवार चलब भेल। कुशल-समाचार पुछब छोड़ि डाक्टर सोनी पतिकेँ कहलखिन-

"रस्ताक मारल आएल छी, भूख-पियास लागल हएत, पहिने किछु खा-पीब कण्ठ सर्ड़ास करि लिअ तखन कुशल-समाचार हेतइ।"

कहि अपने-ले आनल चाह-बिस्कुटमे सँ बाँटि दुनू गोरे, बिस्कुट तोड़ि मुँहमे लेलैन। मुदा जेना चिराकी चाउर खेने मुँह लठिआइ छै, तहिना डाक्टर मनमोहनकेँ होइन, मुदा गिलासक पानि पीब कण्ठ सर्ड़ास करैत बजला-

"पाँच साल आरो नोकरी करैक आवेदन देलिऐ। मुदा दोसर, जेकर परमोशन हेतइ, एहेन विरोध केलक, जे नै भेल।"

जेना डाक्टर सोनीकेँ बुझले रहैन तहिना टपैक पड़ली-

"तीनियेँ साल-ले दैतिऐ।"

मुदा डाक्टर मनमोहनकेँ थाहल-नापल काज तँए गम्भीर होइत बजला-

"तीनियोँ साल-ले देने काज थोड़े होइत। जे विरोध केलक ओकरा अढ़ाइए बर्ख नोकरी बँचल छइ।"

डाक्टर सोनी-

"जखन ओ जुनियरे भऽ काज करै छला तखन हुनके किए ने बुझा-सुझा देलिऐन।"

पत्नीक विचार सुनि डाक्टर मनमोहनक मन मड़कलैन। मड़कलैन ई जे सभ अपन पद, प्रतिष्ठा आ धन चाहैए, तैठाम कहब उचित होएत। मास दिनक पछाइत जखन डाक्टर सोनियोँ सेवा निवृत भेली तखन दुनू परानी अपन कपार मिलौलैन। साल भरि दुनू परहेज केने रहला। परहेज ई जे बिनु कमौआ पुतकेँ कमौआ घरवालीक आगू विधवे बूझल जाइए। तँए दुनूक बीच-सधवा-विधवाक सम्बन्ध बनि गेल छेलैन। भिनसुरका कॉफी पीब दुनू परानी मनमोहन-सोनी गद्दीबला आराम कुरसीपर मलड़ैत चीत गरे ओंगठि (जेना अखड़ाहापर खलीफा चीत होइए, तहिना) भविसवाणी करए लगला।

भविसवाणीक जरूरतो तँ रस्तेक मोड़पर ने होइत। नोकरी जिनगीसँ दुनू बेकती सेवा-मुक्ति भेल छला। जिनगी जीबैले सेवा आवश्यक अछिए। जँ सेवे नै तँ मेवा केतए फड़त। सेवाक विचार मनसँ हटिते अपन जिनगीक योग-क्रिया आ भोग-क्रिया टपैकते

अछि। मुस्की मारि डाक्टर मनमोहन बजला-

"मन होइए जहिना पहिलुका लोक ढाका-बङ्गालमे कमाइतो छल आ मिथिलाक भूमिकेँ पकैड़ घरो बनौने छल, तहिना ऐठामक सभ किछु बेचि-बिकीन गामे चैल जाइतौं।"

पतिक विचारमे बिठू कटैत डाक्टर सोनी बजली-

"गामक लोक पूछत?"

मजाके-मजाकमे दुनू बेकती विचार-मणि दिस विदा भेला। रस्ताक मोड़ टपिते जेना डाक्टर मनमोहनकेँ फुरलैन, बुदबुदेलथि-

"जेना गामक सुरता मनकेँ पकैड़ रहल अछि।"

पतिक मनक सुरता सुनि डाक्टर सोनी जिनगीक बाटमे हरा गेली। सिनेमाक रील जकाँ मातृकक जन्मसँ पटना हवाइ अड्डा तकक जीवन-यात्रा आगूमे ठाढ़ भऽ गेलैन। बजली-

"आब की करब?"

पत्नीक विचारकेँ डाक्टर मनमोहन जीवन संगीक प्रश्न बुझि गम्भीरतासँ लेलैन। बजला-

"अबैकाल किछु परिस्थितिवश आ किछु लोकोक मुँहक बोलसँ प्रभावित भऽ केलौं, अपनो जीबठ बान्हि अपने गाम-समाजमे अपन जिनगी ठाढ़ करितौं। मुदा से भेल नहि। मिथिला सन धरती जे त्रिगुण मौसमक बीच अपन अजर-अमर देह धारण केने छैथ, तइ धरतीकेँ छोड़ि ऐठाम एलौं। पैंतीस सालक जिनगी गामक जिनगीसँ अलग जिनगी बना अपनाकेँ ठाढ़ केलौं।"

कहि चुप भऽ गेला।

पतिकेँ चुप होइत देख डाक्टर सोनी बजली-

"चुप किए भेलौं? अपनो अनुभव कऽ रहल छी जे परिवारिक

जिनगीसँ समाजिके जिनगीटा सँ नै हटलौं, शरीर जलवायु अनुकूल अपनाकेँ अंगेज बना लइए। तेतबे नै, देहक क्रियासँ आगू समाजिक क्रिया सेहो अछि।"

पत्नीक विचार सुनि डाक्टर मनमोहन ठमैक गेला। ठमैक ई गेला जे रहैक घरसँ लऽ कऽ खेनाइ-पीनाइ, बजनाइ-भुकनाइ सभ किछु बदैल गेल। गाम जेबाक मनकेँ तँ बुझबए ने पड़त, जे जेठक रौदा, भादवक पानि, माघक जाड़केँ पचबैक शक्ति अछि किने। बजला-

"जँ मन गाम जाइक अनुकूलो हएत तँ शरीर नै गछत।"

"तखन?"

"तखन एतैसँ गामकेँ गोड़ लगैत रहू जे अहाँ बड़ सुन्नर छी, मिथिलामे बास करै छी। जेतए जनक सन राजा भेला सीता सन जगतजननी भेली। जामंतो रंगक फुलक फुलवारीसँ सजल फुलवारी छेलैन। गुरुक संग राम एला, धनुष तोड़ि चारू बहिन सीताक संग चारू भाँइक बिआह भेलैन। वएह मिथिला छी।"

OO

14 अगस्त 2014, शब्द संख्या- 2363

साए कच्छे

अबेर तक ओछाइनेपर पड़ल रही। भारी बरखा तँ नै मुदा हल्लुक मझोलका बरखा होइत रहइ। दुपहर आकि बेरूपहर जेहेन बर्खाक मद्दी लोक नै दइए, अपन काज-उदम करिते रहैए, मुदा ओहेन बरखा भिनसरू पहरकेँ गरूगर लगैए, सएह भेल रहइ। छह बजेक समाचारक समए भेने रेडियो खोललौं। खोलिते समाचार आएल जे कमलाक छहर टुटि गेल, केते गाममे बाढ़िक पानि पसैर गेल।

ऐगला समाचार की भेल से सुनबो ने केलौं, काने जेना भथा गेल। भथा ई गेल जे दस दिन पहिने तक रौदी-रौदीक घोल यएह रेडियो करै छल, जे आन सालसँ कम बरखा हएत। कम ऐ मानेमे जे बरसाती खेतीले जेते पानिक खगता होइ छै तइसँ कम बरखा हएत, तँए समए रौदियाह हएत। नमहर किसान तँ नै मुदा छोट-मोट किसान तँ छीहे। वैज्ञानिकक विचार केना नै मानितौं। मानैक माने ई भेल जे जे जेतै काज करै छैथ ओ ओतै ने अपन योजनाक कार्यक्रम ओइ हिसाबे बनौता, तहिना हमहूँ केलौं। बरसातमे जे खेत धानक होइए वएह खेत कम बरखा भेने तरकारीक वा कम पानिक खगताबला अन्नोक खेतीले अनुकूल भऽ जाइए। कियो अपन योजना अनुकूलते हिसाबे बनबै छैथ।

यएह सोचि धानक खेती कम केलौं। नहियेँ जकाँ भेल। नवका

धानक बीआ कीनि कऽ अनने छेलौं, जे बीस-पचीस दिनमे रोपल जाइए ओ बीरारे ने बुड़हा गेल। बुड़हेबो केना ने करैत, अगता सौनक रोपक खियालसँ बागु केने छेलौं। धुरिया सौन भऽ गेल। अपना बोरिंग नै, आँड़ि-पाटिमे जे बोरिंगो अछि ओ पैछला भोँटसँ कटा-कटी भऽ गेल। कटा-कटी होइक कारण भेल जे भोँटक गरमा-गरमीक बहसमे झंझट भऽ गेल, जइसँ कोट-कचहरीक पेँचमे पड़ि गेलौं। टटका दुश्मनी तँए खेती नै भेल तँ नै भेल मुदा मुँह खोलि खुशामद केना करितिऐ। जखन अन्न खाइ छी, पानि पीबै छी तखन जँ आइन-अपगराइन मनमे नै रहत तँ अनेरे किए दुनू (अन-पानि) केँ दुख दइ छिऐ। मनमे सएह रहए तँए धानक खेती नै भेल। मुदा अन्तिम भादोमे डूमा बरखा आ बाढ़ि एने मन सिहरैत रहए।

सिहरैत ई रहए जे जहिना कोनो मनुखोकेँ आ मालो-जालकेँ, आ गाछो-बिरीछकेँ होइ छै जे शुरूमे बाँझ जकाँ रहैए आ पछाइत ढेनुआर भऽ जाइए तहिना मेघोकेँ भेल अछि। हथिया तक बरिसत आकि चितरा तक बरिसत तेकर कोनो ठेकान छै, तहूमे तेहेन-तेहेन गोलगर बुन्नक बरखा होइए जे जँ आगूओ तक धेने रहल तँ ऐगलो खेती खेबे करत। मन बिसाइन-बिसाइन होइत रहए।

चाह नेने माए आबि बाजल-

"किए अखन तक मुहों-कानमे पानि नै लेलह।"

भोरे-भोरे केना दुखाएल बात बैजतौं, बात बदलैत कहलिऐ-

"कौल्हुका तेहेन चालि भेल रहए जे देह-हाथ दुखाइए।"

बेटाक बातक बिसवास माए नै करैथ, सेहो तँ नहियेँ। चौकीक कोनपर चाहक गिलास रखि बाजल-

"अच्छा सूतले रहह, देह-हाथ दाबि दइ छिअ।"

अपना केनादन लागल। झूठ बाजि माएसँ जँताएब उचित नै बुझि, उठि कऽ बैस झूठकें सत् बनबैत कहलिऐ-

“माए, कौल्हुका चालिक माने तूँ बीतलाहा काल्हि बुझ्झ गेलही। ओते तँ सभ दिन चैलते छी, तइसँ की देह-हाथ दुखाएत। आगूक काल्हिक चालिक बात कहलियौ।”

जेना पहिनेसँ माएकेँ जवाब तैयारे रहै तहिना धाँइ-दे बाजल-

“रौदीसँ दाही साए कछे नीक होइ छइ।”

माइक बात सुनि मन आरो औना गेल। चुपचाप चाहक गिलास उठा चाह पीबए लगलौं।

OO

19 अगस्त 2014, शब्द संख्या- 488

एक मुठी घास

छुब्द भऽ छगुन्तामे पड़ि गेलौं जखन नअ बर्खक भतीजी आबि कहलक-

“काका, हँसुओ आ पथियो छीनि लेलक आ गाइरो पढ़लक।”

बाध दिससँ टहैल कऽ आएले रही, एक तँ पानिक झमार दोसर भदबरिया रौद लगल रहए। मन पीताएल रहबे करए, पियास सेहो लगल रहए, रौदाएल दुआरे कलसँ कनी हटि लतामक गाछक छाहैरमे बैसल ठण्ढाइत रही जे ठण्ढेला पछाइत पानि पीब। तही बीच भतीजी आबि बाजल।

पुछलिऐ-

“के छिनलकौ?”

रेखा बाजल-

“जुगेसर काका।”

‘जुगेसर’ नाओं सुनि आरो चकित भऽ गेलौं। मन पड़ि गेल पहिलुका घटना। बीस बर्ख पूर्व जुगेसरक घरवालीकेँ अहिना खुरपी-पथिया मोहन बाबूक कमतिया छीनि नेने रहइ। जेकरा चलैत गारि-गरौबैलसँ लऽ कऽ मारि-पीट भऽ गेल। मारि-पीटक पछाइत मुकदमो भऽ गेल, जइमे मुद्दालह बनि हमहूँ आठ बर्ख कोट-कचहरीक चक्कर

लगौने रही। पुछलिऐ-

“की केने रही जे हँसुओ-पथिया छिनलकौ, आ गाइरो पढ़लकौ?”

सुनिते रेखा हुचैक-हुचैक कानए लगल। जहिना कोनो निरदोस फँसौल आदमी जहल जाइकाल कनैए तहिना कनैत बाजल-

“घासले गेल छेलौं, सौंसे बाधक आड़ि-धुर डुमल देखलिऐ। खाली गाछी कातक खेत सुखल देख घास कटैले बैसलौं। एके मुठी कटने रही आकि जुगेसर काका आबि कहलक जे घास किए कटै छेँ?”

थोड़-थाड़ घासोक खेती गाममे हुअ लगल अछि। पुछलिऐ-

“बगहा घास छेलै आकि अनेरूआ?”

रेखा बाजल-

“अनेरूआ।”

‘अनेरूआ’ सुनि मन तरँग गेल जे अखने जा कऽ पुछिऐ आ बलउमकी झाड़ि दिऐ। ताबे ठण्ढाइयो गेल रही, कल चला कऽ पानि पीलौं। पानि पीबिते मन आरो ठण्ढाएल। ठण्ढाइते मनमे उठल, एना जुगेसर केलक किए? आगू-पाछू उनैट-उनैट सोचलौं तँ किछु देखबे ने करिऐ। एकाएक नजैर पैछला भोँटपर गेल, शुरूहेसँ जइ पाटीमे भोँट दैत एलिऐ, तेकरे अहूबेर देलिऐ। मुदा सपनौर जकाँ जुगेसर चालि बदैल लेलक। अखन तक गमैया बात-विचारसँ लऽ कऽ पटना-दिल्लीक भोँटमे संगे रहैत आएल मुदा ऐबेर ओ ससैर कऽ दोसर पाटीमे चैल गेल।

एक तँ नहाइ बेर रहए दोसर जलखैयो ने केने रही। दू-दिसिया काज भऽ गेल रहए। दू-दिसिया ई जे नहाएब-खाएब आकि हाँसू-पथियाक बात बुझए जाएब। बर-बेमारी जकाँ हलतलबी नै बुझि

पड़ल। भतीजीकेँ कहलिऐ-

“बुची, अखन नहा-खा लइ छी, बेरूपहर तोहूँ चलिहेँ, जा कऽ पुछबै जे किए हाँसू-पथिया छीनलहक।”

रेखा मानि कऽ आँगन चैल गेल, मुदा मन गदमिशान करए लगल। गदमिशान ई करए लगल जे एना जे जहिना लोक रस्ताक मोड़पर आबि मोरा जाइए भरिसक तहिना जुगेसरो तँ ने भकमोड़मे फँसि, जाति-सम्प्रदाइक जालमे ओझरा एना केलक।

मन ठमैक गेल। ठमैकते कबुल लेलक जे काजक जवाब काज छिऐ, तँए ओकरो काजेसँ जवाब देब नीक हएत। जहिना हाँसू पुरान तहिना पथियो हेतै, की एक मुठी घास के प्रतिष्ठाक प्रश्न बनाएब उचित हएत? तोहूमे जैठाम जाति-मजहबक भूत मगज छुबि नेने छइ।

OO

21 अगस्त 2014, शब्द संख्या- 411

करिछौंह मुँह

बरखा मौसम अबैसँ पहिने हल्ला भऽ गेल जे ऐ बेरक समए रौदियाह हएत। माने भेल जे उचितसँ कम बरखा हएत। केते कम हएत से तँ समैए कहत। ओना पतराबला सबहक विचार अलग छैन। हुनका सबहक विचारे अस्सी बिसबा पानि हएत। जइसँ धनमण्डल हएत। मुदा रेडियो टी.बी.सँ तेते हल्ला भेल जे पतराबला सबहक विचार दबि गेलैन। दबबो केना ने करितैन, एक तँ एक-आध पतरा देखनिहार गामे-गाम छैथ, तैपर मुँहक बोल मशीनक आगू केना बढ़त।

पनरह दिनक बरखा गामे उजाड़ि कऽ देलक। बाधक-बाध डुमि गेल। तहूमे भादोक डुमल। अहुना कहबी छै जे भादव धोइ किछ-किछ होय। सेहो पानिसँ ऊपर हएत तखन ने। जँ पानिक तरमे रहत तँ गलबे करत किने। बाध दिस टहलैले पनरह दिनसँ नै गेल छेलौं। जेबो केना करितौं टहलैए बेर बरखा हुअ लगै छेलइ। मुदा सोलहम दिन उगरास केलक। रौद भेल। रौद देख दछिनबरिया बाध दिस विदा भेलौं।

अपना टोलसँ निकैलते दोसर टोलक मुहेंपर गेलौं आकि सुवधी काकीक घर टगल देखलिऐ। चोंगरा सभ लागल रहइ। ओसाराक टाट खसल रहइ। रस्तेपर सँ हिया कऽ देखैत रही आकि सुवधी काकीपर

नजैर पड़ल। आगू दिस ओहो बढ़ली आ हमहूँ बढ़लौं। घरक कोनचर लग पहुँचते सुबधी काकीक चेहरापर आँखि पड़ल। करिछौन मुँह देख पुछलयैन-

“काकी, कहिया घरक ओसारी खसल?”

‘ओसारी खसब’ सुनि सुबधी काकीकेँ बुकौर लैग गेलैन। बजली-

“बौआ, अपन जान तँ बँचि गेल मुदा तीन मासक छागरक टाँग टुटि गेल। मनमे छेलए जे दसमीमे कहुना तँ दू हजारक चीज हएत। से बिलैट गेल।”

हम पुछलयैन-

“काकी, बिलैट केना गेल, देखै छी छागर जीविते अछि।”

काकी बजली-

“ओसारीक टाट तेना खसल जे छागरक टाँगे टुटि गेल। अवाह छागर थोड़े कियो चढ़बैले लेत।”

ई गप सुनि अपनो बुझाएल जे ठीके कहै छैथ...। मुदा किछु तँ बैजतौं, कहलयैन-

“अपन जान आ बकरीक जान बँचल तँ आगू केते छागर हएत, तइले दुख किए करै छी।”

काकी बजली-

“एकेटा दुख नै ने अछि, आमद चैल गेल, आ खरचा बढ़ि गेल। घर दुरुस ओहिना हएत। बिना बोइनक के घर मरम्मत करि देत।”

OO

24 अगस्त 2014, शब्द संख्या- 318

परिचय

नाओं : जगदीश प्रसाद मण्डल
जन्म : 5 जुलाई 1947 ई.,
माता : स्व. मकोबती देवी।
पिता : स्व. दल्लू मण्डल।
पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।
पता : गाम- बेरमा, भाया- तमुरिया,
प्रखण्ड- लखनौर, अनुमण्डल- झंझारपुर,
जिला- मधुबनी, (बिहार) पिन : 847410, **मो.** 9931654742

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा। **जीविकोपार्जन :** कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती) **शिक्षा :** एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र) **साहित्य लेखन :** 2001 ईस्वीक पछाइतसँ...। **सम्मान/पुरस्कार :** 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड', 'वैदेह सम्मान', 'यात्री सम्मान', 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार' तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सम्मानित/पुरस्कृत।

मौलिक रचना संसार- 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन- उपन्यास। 26. कल्याणी, 27. सतमाए, -28. समझौता, 29. तामक तमघैल, 30. बीरांगना- एकांकी। 31. तरेगन, 32. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 33. शंभुदास, 34. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 35. गामक जिनगी, 36. अर्द्धांगिनी, 37. सतभैंया पोखैर, 38. गामक शकल-सूरत, 39. अपन मन अपन धन, 40. समरथाइक भूत, 41. अप्पन-बीरान, 42. बाल गोपाल, 43. भकमोड़, 44. उलबा चाउर, 45. पतझाड़, 46. लजबिजी, 47. उकड़ू समय, 48. मधुमाछी, 49. पसेनाक धरम, 50. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 51. फलहार, 52. खसैत गाछ, 53. एगच्छा आमक गाछ, 54. शुभचिन्तक, 55. गाछपर सँ खसला, 56. डभियाएल गाम, 57. गुलेती दास, 58. मुड़ियाएल घर, 59. बीरांगना, 60. स्मृति शेष, 61. बेटीक पैरुख, 62. क्रान्तियोग, 63. त्रिकालदर्शी, 64. पैंतीस साल पछुआ गेलौं- लघु कथा संग्रह। ○○○



पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड न. 06,
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

`251

ISBN : 978-93-87675-10-0